॥ यदुवंशीयपुस्तकालयस्यायंचित्रपटः ॥

एदग्राम, यजुर्वेदी, तैत्तरीयशाखा, भारद्वाजगोत्र, आश्वलायनसूत्र, श्रीमदाचार्यजी को वंशवृक्ष, सातों बालकन ईको

॥ श्री ॥

गोस्वामी श्रीगोकुलनाथजी कृत

श्रीआचार्यजी महाप्रभु (श्रीमद्वल्लभाचार्यजी) की

निजवार्ता, घरूवार्ता तथा चौराशी बेठकनके चरित्रादि

गद्यपद्यात्मक विविध विषयालंकृत

चौराशी वैष्णवनकीं वार्ता.

बहोत प्राचीन ग्रंथनपेतें बडे परिश्रमसूँ शुद्ध करिकें

यदुवंशीय गोवर्धनदास लक्ष्मीदास

प्राचीन ग्रंथप्रकाशक इननें

तैयारकरी, ताकी आवृत्ति दुजी.

प्रकाशक

एन डी महेताकी कंपनी कालकादेवी.

मुम्बइ

"तत्त्वविवेचक" छापेखानेमें छपवायके प्रसिद्ध करीं.

संवत् १९९९.

किंमत रु. (५) पाँच.

(श्रीः)

श्रीगोवर्धनधरो विजयते.

श्रीवल्लभो जयति.

❀ (प्रस्तावनॉ प्रथमावृत्तिकी.) ❀

प्रिय वैष्णव महाशय हो "यदायदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत॥ अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥१॥ परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृतां॥ धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगेयुगे॥२॥" या भगवत्संकल्पानुसार धर्मकी संस्थापनाके लियें भूतलपे धर्मप्रवर्तकाचार्यनके स्वरूपसों ईश्वरको प्रादुर्भाव होत हे॥ तद्वत दैवीजीवनके उद्धारार्थ आप श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको प्रादुर्भाव होयकें आपनेंया दास्यत्वभक्तिमार्गको प्रकाशकियो॥ तातें आपके गुणानुवादके संस्कृत ग्रंथ तो कितनेक हें॥ परंतु जासों संपूर्ण प्राकृतज्ञ लोगनकों बोध होय ओर आपके चरणारविंदमें दृढ भक्ति रहे ताके अर्थ आपके चतुर्थ पौत्रश्रीगोकुलनाथजीसों विनती करिकें कल्याणभट्टजीनें यह प्राकृत ग्रंथ विनके श्रीमुखसों प्रकट करवाये हते॥सो लेखनपरंपरासों विनको कितनोक रुपांतर व्हेगयो हे॥ तथापि एसे ग्रंथनकीहू आधुनिक कालमें अल्पबुद्धीवारनके लियें आवश्यकता हे॥तासों यथाशक्ति श्रम करिकें जितनी बने तितनी शुद्धतापूर्वक इन ग्रंथनकों प्रसिद्ध करिवेको संवत् १९४८ की सालमें विचार कियो हतो॥ परंतु कितनेक ग्रंथावलोकनसूं ओर लेखकनके स्वकपोलकल्पित अशुद्ध लेखसूं इन ग्रंथनके उपर मेरी श्रद्धा न रही॥ तासूं इनके बदलें मैंनें एतन्मार्गीय २३७ संस्कृत ग्रंथनको ३१३ विषयनके संग्रह सहित "बृहत्स्तोत्रसरित्सागर भाग २ रो" या नॉमको ग्रंथ पाच गोस्वामि बालकनकी सम्मतीसूं संवत १९४९ की सालमें छपवाय प्रसिद्ध कियो॥ जाकी अनुक्रमणिका या पुस्तकके अंतमें दीनीं हे॥ ता विषयमें जो कछु मोकूं श्रम भये हते॥ ताके वृतांतको कछुक संक्षेप उल्लेख मैंनें उक्त ग्रंथकी प्राकृत प्रस्तावनॉमें कियो हे॥ तातें यहॉ पुनरावृत्तिको प्रयोजन नाहीं॥ तामें इनमेंके चौराशीवैष्णवनकीवार्ताके विषयमेंभी मैंनें अश्रद्धा दर्शक लेख लिख्यो हतो॥परंतु कितनेक श्रद्धावान् लोगननें मोसूं आग्रहपूर्वक कह्यो जो सांप्रत वर्तमानकालमें विद्याकी वृद्धी तो बोहोत देखिवेमें आवेहे॥परंतु स्वधर्मकी तो सब लोगनमें हॉनीही होतजाति दीखेहे॥तातें कोमलांतःकरणपे कछुक दिन तो धर्मको निवास रहे तो आच्छो हे॥तातें धर्मग्रंथनको तो प्रचार होंनोंहीचाहिये॥तातें जिनकों संस्कृत ज्ञान नहीं होय तिनके लियें ये प्रचलितग्रंथको तुमारेही हाथसों पुनरुज्जीवन होयगो॥कारण भाषाको संपूर्णज्ञान ओरसंप्रदायके रहस्य जाने विनॉ

शुद्धतापूर्वक ग्रंथ छपवायवेको कार्यऔरसूँ न होयगो ॥ तातें विनके आग्रहसूँ फिर मैंनें यह ग्रंथ सुधारिवेको काम हाथ धर्यो ॥ तामें ज्योंज्यों अवलोकन करतो गयो॥ सोंसों मेरे मनमें आवतीगई ॥ जो आधुनिक लोगनकों कदाचित यह ग्रंथ अतिशयोक्तिके समुद्र लगेंगे ॥ परंतु जो मननपूर्वक विचार करेंगे ताकुं तो अवश्य जानिवेमें आवेगो ॥ जो संप्रदायप्रवर्तकाचार्य मूलपुरुषनमें सब कछू बात संभवनीयही हैं॥ तामें आप श्रीवल्लभाचार्यजीको तो स्वरूप एसो हतो ॥ जो "कश्चित्पांडित्यं चेन्न निगमगतिः सापि यदि न; क्रिया सासापि स्याद्यदि न हरिमार्ग परिचयः ॥ यदि स्यात्सोऽपि श्री व्रजपतिरतिर्नेति निखिलैर्गुणैरन्यः को वा विलसति विना वल्लभवरम् ॥ १ ॥ मायावादिकरीन्द्रदर्पदलनेनास्येंदुराजोद्धृतश्रीमद्भागवताख्यदुर्लभसुधावर्षेण वेदोक्तिभिः॥ राधावल्लभसेवया तदुचितप्रेम्णोपदेशैरपि श्रीमद्वल्लभनामधेयस दृशो भावी न भूतोऽस्त्यपि ॥ २ ॥" ओर श्रीभगवाँननें कह्यो हे जो "अहं भक्तपराधीनो" तातें कोइ बातसूँ धर्मग्रंथनपे अश्रद्धा न करनीं ॥ कोई शंका करेगो ॥ जो या ग्रंथनमें सेव्यस्वरूप मूर्तिमय हते सो मत्यक्ष अपनें सेवकनसों केसें मिलते ओर बोलते ॥ ताको समाधान ॥ जो हस्तिदंतन्यायवत् प्रभु सेवा तो मूर्तिस्वरूपसूँ लेते ॥ ओर खेलते बोलते तब अन्यस्वरूपसों क्रीडा करते॥ सो जो श्रद्धापुरःसर देखिये तो मर्यादामार्गके महापुरुषननें संतलीलामृत, भक्तलीलामृत, संतविजय, भक्तविजय, नाभाजीकीकरी भक्तमालादी ग्रंथनमें अपनें मिय भक्तनसूँ केसें प्रभुनें लीला करीं हें ॥ उदाहरण ॥ जो वनियाँ तुकाराँम भक्तके प्रेमल भजनमें आप श्री विठ्ठलनाथजी नृत्य करते ॥ सावत्यामालीके संग खेतमें जाय शाकभाजी उखेडते ॥ गोराकुंभारकेघर मृत्तिकाके वासन घडते ॥ जनाबाईके कपडा धोवते ओर वाके संग दरनों दलते ॥ चोखामेला अतिशुद्र भक्तके संग नीच ज्ञाति न जानिके वाके मनोरथ पूर्ण करे हे ॥ ओर ज्ञानेश्वरब्राह्मण, नाँमदेवछीपा, धनाजीकुनबी, रोहीदास, कबीर, कमाल, तो मुसलमाँनहे ॥ इत्यादि भिन भिन ज्ञातीके अनेक भक्त हते ॥ जिनके चारित्रनसुँ बडे भारी ग्रंथ भये हें ॥ तामें विन भक्तनसुँ प्रभुननें अनेक लीला करीं हें॥ तो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके कृपापात्र सेवक महाभगवदीय हते तिनसूँ श्रीठाकुरजीनें लीला क्यों न करी होयगी ॥ "प्रभुःसर्वसमर्थो हि" तातें मनमें संकल्प विकल्प न करनों ॥ मेंनें या विषयमें चारिवर्ष ताँई विचार करिके यह ग्रंथ प्रसिद्ध कियो हे ॥ न्यारे न्यारे स्थलनकी लिखीभई पोथी वैष्णवनके घरतें मँगवाय विनकी एकवाक्यता करि- ॥ परंतु कोई दोय पुस्तकनकी हू एकवाक्यता न भई ॥ तातें तिनमेंतें जो

आछोमो ग्रंथ लग्यो ताकों मूल राखिकें अन्य ग्रंथनके अभिप्रायमूँ जितनों मोमूँ संशोधन• कियो गयो तितनों यथाबुद्धि कियो हे ॥ अपनें या सम्प्रदायके ग्रंथनकी तामें विशेषतः प्राकृत ग्रंथनकी तो दुर्दशा लिखिया लोगननें अपनो पेट भरिवेके लियें करी हे ॥ ताको वर्णन तो मोमूँ कछू होत नाँहीं ॥ मेंनें ११६ वर्षताँईंकी न्यारे न्यारे स्थलनकी लिखीभई पोथीं उपलब्ध करिकें देखीं ॥ तो मूल २००० श्लोकनतें लिखियानने दसहजार श्लोक ताँई ग्रंथ बढायो हे ॥ सो जो वे एतन्मार्गी ग्रंथनमेंतें कछू विषय लेकें ग्रंथ बढावते तो मोकूँ बडो आँनंद होतो ॥ परंतु तेसें न करतें विननें अपनें गाँठिकी चतुराइ खर्च करिकें स्वकपोलकल्पित वाक्यनसूँ केवल आधे ग्रंथ भरिदिये हें ॥ तिनकों कहाँताँईं शुद्ध करें ॥ तामेंके वैष्णवनके तो न कोइ गाँमको न जातिको न संबंधको पतो ॥ कारण चाऱ्यो वर्णमें तो अनेक जातिहें ॥ परंतु यामें कोइको समाधान होय एसो लेख नहीं ॥ ओर तामें सांप्रत ग्रंथबाँचिवेवारे भगवदीयनमें एसी अंधपरंपरा चलिगई हे ॥जो कोई प्रसंग अथवा कोई विषय लेखकननें झूँठोई लिख्यो होय सो जो हम निकासें तो बाँचिवेवारे महात्माँ कहेंगे जो फलाँनों प्रसंग ओर फलानीं वार्ता तामें फलानों विषय नहीं हे ॥ तातें यह ग्रंथ तो अधूरो हे ॥ सो कछू कामको नाँहीं तातें मति लेओ ॥ सांप्रत धर्मग्रंथनकों तो उत्तेजन या रीतिको मिलेहे ॥ कहो केसें उत्तेजन आवे ॥ जो हम ग्रंथनपे बडे श्रम करिकें प्रसिद्ध करें ॥ ओर सांप्रत जो या संप्रदायके ग्रंथ अन्यद्वारा भाषांतर होयकें प्रसिद्ध होयवे लगे हें ॥ तिनको तो केवल भाजनोही धूरि होयहे ॥ ता विषयमेंभी मेंनें २३७ ग्रंथके समूह पुस्तककी भूमिकामें लिख्यो हे ॥ विनाँ प्राचीन भाषा ओर संप्रदायको रहस्य जाँने विनाँ हरकोइ संप्रदाय विषयके धर्मग्रंथ छपवावनें सो केवल ग्रंथ सुधारिवेके पुण्यके बदलें बिगाडिवेको पातक लेवेकोही कार्य हे ॥ ओर परलोकवासी ग्रंथकार वाकूं केवल श्रापही देवें तामें संदेह नहीं हे ॥ अस्तु. अब मेंनें जो यह ग्रंथ प्रसिद्ध कियो हे ॥ तामें बाँचिवेवारेनके डरसूँ संपूर्ण वार्ता तथा संपूर्ण प्रसंग ज्योंकित्यों प्राचीन पद्धती ओर भाषा राखिकें बडे परिश्रमसूँ जितनीं शुद्धभइ तितनीं करीं हें ॥ जो यामें व्याकरणके दोष विद्वानलोग बतावेंगे तो कर्ता कर्म क्रियापद विसेषण सर्वनामादिक विभक्तिअनुरुप अथवा समासांतपद वगैरेकी दुरुस्तीको केवलनयोही ग्रंथ लिखे विनां गरतंर न होयगो ॥ सो तेसें करिवेसूँ प्राचीन पद्धति तुटिजाय तोहू आधुनिक वैष्णवजन नयोग्रंथबन्यो जाँनिकें कोइ गुणकूँ तो न देखेंगे ॥ परि उलटो दोष लगावेंगे ॥ ओर उलटो कोइ

हाथभी न छुए ॥ जेमें अनेक यत्न करिकें विचारे ठाकुरदास सूरदासवैष्ण-
वनें कितनेंक एतन्मार्गीय ग्रंथ प्रसिद्ध किये ॥ ताकूं धन्यवादके बदलें
अपयशकी पोशाक मिली ॥ तेसीही यशकी पाग मोकूंहू मिलती ॥ परंतु इतनो
विचार तो अवश्य करनों उचित हे ॥ जो इतनों श्रम करिकें एसेभी सुधारे भये
ग्रंथ कहाँ मिलेंहें ॥ हमतो जानेंहें ॥ जो पदसमूहके जो ग्रंथ वैष्णव ठाकुरदासजी
सूरदासनें छपवाय प्रसिद्ध किये हें ॥ सो विननें एतन्मार्गिय वैष्णवनपे बडे उप-
कार किये हें ॥ यामें संदेह नही ॥ अस्तु ॥ अब या ग्रंथमें जो श्रीआचार्यजीको
जन्मचरित्र वनयात्रा तथा पृथ्विप्रदक्षणाँ गर्भित विषयनमें संततनको लेख हे ॥
तामेंभी में निःसंदेह भयो नहींहूं ॥ कारण वाको प्रसतर ओर जगेंसूं मिलिवेको
अभाव ॥ ओर या संप्रदायमें मेरो संदेह निवारण करें वेसो सामत या मुंबईशह-
रमे कोइ नहीं ॥ या शहरके अभाग्यसूं पंडितमुकुटमणि श्रीगट्टूलालजी आज-
काल यहाँ नहीं बिराजेंहे ॥ तासूं हमारी रंचरंचसी शंकाकोभी निवारण करिवे-
वारो कोउ नहीं ॥ ओर जासमें मेंनें २३७ ग्रंथसंग्रहको पुस्तक प्रसिद्ध कियो ॥
तासमें एक द्रव्यशुद्धि ग्रंथमेंसूं थोडोसो भाग खंडित हतो ॥ सो पूर्ण करिवेके
लियें १० दिन ताँई २० जगे फिर्यो ॥ परंतु कहूँसूं ग्रंथ मिल्यो नाहीं ॥ जहाँ
देखें तहाँ नायकाभेद नाटकनके ग्रंथनको संग्रह देख्यो ॥ अरे धिक्कार ॥ अरे अपने
या अति उज्वल मार्गमें केसे महासमर्थ धुरंधर पंडित गोस्वामी श्रीगोपेश्वरजी
तथा श्रीपुरुषोत्तमजी जेसे विद्वान आचार्य भये ॥ जिननें कियेभये नवार्थी
(वेदकेनवअर्थ) तथा वादग्रंथनको भी आजताँई कोउ खंडन नहीं कर सक्यो हे ॥
जिननें नवलक्ष श्लोक करिकें अपनि दिगंत कीर्ति करीही ॥ एसे समर्थ आचा-
र्यनकों तो कहा परंतु उनके ग्रंथनके नाँमनकोभी कोइ जानतो न होयगो ॥ एसे-
नके तो नाँमनकोभी लोप होतो चल्यो हे ॥ परंतु तत्तुल्य महासमर्थ विद्वान जो
आज या भरतखंडमें सूर्यकीसी नाईं प्रकाशित हे रहे हें ॥ जिनकों अनेक विद्वा-
ननकी आर्डीसूं भारतमार्तंडादिक अनेक उपपद मिले हें ॥ एसे महापंडित
श्रीगट्टूलालजी हू हमारे दुर्भाग्यसूं दूरि भये ॥ कहा करें विननेंहूं अपनों पश्चा
ताप मास्नशक्ति नाँमके ग्रंथकी भूमिकामें श्लोकरूपसूं धर्‍यो हे ॥ देखोतोसही ॥
जो अपनों या संप्रदायमें विद्वाननकी केसी चाहनाँ हे ॥ अरे अपनीं संपत्ति तो
सब पाश्चिमात्यननें लेलिनी हे ॥ जिनको राजकवी आज थोडे वर्षमें परलोक-
वासी होयवेसूं आखी विलायत रोय रहीहे ॥ ओर अपने कविवर्य जो आखे भरत-
खंडकु शोभा दे रहे हें ॥ विनकी तो उलटी अपने संप्रदायी निंदाही कर रहे हें ॥
धिक्कार हे ॥ उक्त पंडितजीकी कविताकी कृति तो समस्त भाषामें कहिये तो कोउ
दोय तीनलक्ष श्लोकनकी भइ होयगी ॥ परंतु प्रसिद्ध ग्रंथ जो सत्सिद्धांत-

मार्तंड, सहस्राक्षपर प्राकृतशक्ति, वल्लभस्तुतिरत्नावलीपर टीका वेदांतचिंतामणि हे ॥ सोतो बाँचो ॥ बाकी सांप्रत हमारे संप्रदायमें तो विद्वाननके परीक्षक ऐसे रहे हें ॥ जो "पानीका जंतु कहा पेहेचानत ग्रीषमके तपके गरदीका ॥ केसरकी करिहे कहा किंमत हे न परीख जहाँ हरदी का" अस्तु ॥ एसीही भगवदइच्छा होयगी ॥ अब या ग्रंथमें कितनेंक विषय जो दो दो तीन तीन बेर आये हें ॥ ताको कारण यह हे ॥ जो या पुस्तकमें मेंनें ४-५- पुस्तकनको इकठोरो समावेश किया हे ॥ तामें कछू न्यारे न्यारे पर्यायसूँ वेके वे विषय आये हें ॥ सो जो में एकही वेर लिखूँ तो वे न्यारे न्यारे ग्रंथ खंडित होयजायँ ॥ तातें वे विषय मेंनें वेसेही रहवेदिये हें ॥ तामें पुनरुक्ति दोष न जाँनिये ॥ या ग्रंथके संशोधनके लियें जिन जिन ग्रंथनकी सहायता लीनींगई हे तिनके नाँम- श्रीवल्लभाचार्यजन्मचरित्र संवत् १९२८ की सालको मुंबइमें छप्यो भयो ॥ श्रीवल्लभविलास संवत १९४१ की सालको मुंबइमें छप्यो भयो ॥ श्रीवल्लभदिग्विजय सने १८८१ की सालको श्रीकाशीजीमें छप्यो भयो ॥ चौराशीवैष्णवनकीवार्ता संवत १९४५की श्रीमथुराजीमें ओर संवत् १९४६की श्रीकाशीजीमें छापी भइ॥ओर न्यारे न्यारे स्थलनकी हस्तलिखित प्रती चौराशीवैष्णवनकी वार्ता ॥ तामें पुस्तक १ संवत १८३५ की सालको लिख्यो भयो ॥ तथा पुस्तक १ संवत् १८३९ की सालको लिख्यो भयो ॥ तथा पुस्तक १ संवत १८७९ की सालको लिख्यो भयो ॥ ओर जिनपे संवत् नहीं लिखे ऐसे पुस्तक ४ और संवत् १९३० की सालकी चौराशी बेठकनके चरित्रनकी पोथी एक॥इतनें मीलिकें १२ पुस्तकनकी सहायता लेकें यहग्रंथ शुद्ध कियो हे॥ तातें इतने ग्रंथनके देवेवारेनको में वडो एसान मॉनूं हूँ ॥ उक्त पुस्तकनमेंकी वार्तानको अनुक्रम देखतें कोइ पुस्तकमें कोई वार्ता कहाँ तो कोइ पुस्तकमें कोइ वार्ता कहाँ ॥ तातें तीन पुस्तकनको एक अनुक्रम मिल्यो ता अनुक्रमसूँ या पुस्तकमें वार्तानुक्रम लीनोंहे॥ उक्त ग्रंथनमें ८४ वैष्णवनकी वार्ताको तो नाँम मात्र दियो हे ॥ परंतु यथार्थ संख्या लिखें तो २०० वैष्णवनतें उपर होय हे ॥ तातें कितनेंक पुस्तकनमें ८७ की संख्या धरी हे॥ओर च्यारि सखा न्यारे धरे हें॥तातें मोकूँभी सोंही उक्त लग्यो सो वेसोइ प्रकार मेंनें हू राख्यो हे॥ पेहेलें तो मेंनें संस्कृत प्राकृत वार्ता एकत्र करिकें छपायवेको मनोरथ कियो हतो ॥ ओर प्रसिद्धिपत्रक मेंहुँ तेसोही लिख्यो हतो ॥ परंतु प्राचीन संस्कृत कहूँतें ग्रंथ न मिल्यो ॥ ओर होयवेकोहू संभव मोकूँ न दिख्यो ॥ तातें मेंनें वल्लभीयकल्पद्रुम नामके मरजूदासकृत ग्रंथमेंसूँ संस्कृत भक्तविटप लेवेको विचारिकें वाको अवलोकन कियो ॥ तब

जॉनिपरि ॥ वोहू ग्रंथ प्राकृतपेसूँ संक्षेपमात्र लेकें संस्कृत कियोगयो हे ॥ ओर तामें वा ग्रंथको या ग्रंथसूँ कछू मेळ न मिलबे लग्यो ॥ सो जो वामेंको संस्कृत भाग लेतो तो वाको पृथक भाषांतर करनों पडतो ॥ तो प्राचीन पद्धतीसुं न्यारो ग्रंथ पडजातो ॥ तोहू लोगनकी श्रद्धा उठिजाती ॥ ओर कहते ॥ जो ये तो न्यारो ग्रंथ कियो हे॥ओर वो संस्कृत कोइ बाँचभी न सकते॥ता भयतें मेंनें वो प्रकार नलेतें वाके बदलें अन्य विषय बढाय तिनकूँ शोधवेमें वडो भारी श्रम करिकें संस्कृतको बदलो दूनें हिस्सासूँ दियो हे॥ ताके लियें मोकूँ न्योछावर हू बढावनी पडी हे॥यह ग्रंथ सुधारतेमें जहाँ जहाँ मोकूँ संदेह आयो ॥ तहाँ तहाँ कितनीक जगे मोसुँ बन्यो तितनों शोध करिकें जितनो निःसंदेह होय सक्यो तितनों कियो हे ॥ या पुस्तकमें **श्रीआचार्यजीकी तथा श्रीगुसाँईजीकी जन्मपत्रिका** धरी हें॥तामेंके ग्रहलग्नानुसार आपके नाँम जगप्रसिद्ध नामसूँ नहीं आवे हें ॥ तातें कुंडलिपे अश्रद्धा न करनी॥ कुंडली तो यहही हे ॥ परंतु साँचे नाँमको मोकुं कोई द्वारा पत्तो अभी लाग्यो नाहीं॥तातें कदाचित आपहीनें वे नाँम गुप्त राखे होयगे ॥ अनुमाँनसूँ एसें लगे हे ॥ या ग्रंथके विषयमें जा जा कारणसूँ मोकूँ अश्रद्धा उत्पन्न भइ हती ॥ सो कारण इन पुस्तकनमें प्रसक्ष देखिवेमें आयें ॥ परंतु मोसों जितनों श्रम भयो तितनों करिकें यह ग्रंथ निःसंदेह कियो हे ॥ तथापि ओर जो यामें पुनरुक्ति व्यर्थ विस्तार वगैराको दोष रहगयो होयगो सो श्रीठाकुरजीकी कृपातें जो या ग्रंथकी पुनरावृत्ति करिवेको समय आवेगो तो यासुँभी ग्रंथ उत्तम छपेगो ॥ ता पूर्व जो कोइ महाशय यामेंके प्रमाँणपूर्वक दोष दिखावेंगे तिनको उपकार माँनिकें पुनरावृत्तिमें वेसो सुधारो अवश्य करूँगो॥ या ग्रंथकी मूलप्रती तथा छापेखाँनेके प्रुफ तपासिवेमें आठमहिनाँ ताँई मेंनें नित्य एकाग्रतासूँ १८ कलाक सतत काँम कियो॥ तासूँ मेरी प्रकृती अवश्य माँदी पडवेको पूर्ण भय हतो ॥ परंतु श्रीआचार्यजी आपनें हीं यह पुस्तक मेरे द्वारा संपूर्ण करवायो हे॥ तामें कछू संदेह नहीं हे॥ जेसो श्रम मोकुं २३७ ग्रंथसंग्रहको पुस्तक प्रसिद्ध करिवेमें भयो हतो॥तातें चोगुनों श्रम यह ग्रंथ प्रसिद्ध करिवेमें भयो हे ॥ यह ग्रंथ तो केवल आप श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके प्रताप बलतें हीं मेरे इकलेके हाथसूँ संपूर्ण भयो हे ॥ ओर आपहीनें शक्ति देकें मेरे द्वारा यह ग्रंथ प्रकट कियो हे ॥ ता व्यतिरिक्त मेरी शक्ति या ग्रंथकूँ सुधारिवेकी न हती॥सो बाँचिकें आप महाशय मेरे श्रमको परिहार करोगे ॥ यामेंकी ओरहू बोहोत शंकानको समाधाँन करिवेकी मेरे मनमें हती॥परंतु विस्तार भयसूँ इतनीहीं भूमिका लिखिकें आप सज्जनोपे क्षमाँ माँगतहूँ॥ सामत यह विज्ञापनाँ ॥

आपको दास

गोवर्धनदास लक्ष्मीदास. प्रा. ग्रं. प्र.

❀ (अंथश्रीवल्लभाचार्यजीकीनिजवार्ताकीअनुक्रमणिका) ❀

(अथश्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकीघरुवार्तानकीअनुक्रमणिका)

(अथश्रीआचार्यजीतथाश्रीगुसाँईजीकीजन्मपत्रिका)

❀ (अथ चौराशीबेठनकेचरित्रनकीअनुक्रमणिका) ❀

❀ (अथ चौराशीवैष्णवनकीवार्तानकीअनुक्रमणीका) ❀

अथानुक्रमणिका.

❀ (अथश्रीआचार्यजीकेसखानकीवार्तानकीअनुक्रमणिका) ❀

ग्रंथोक्त परम भगवदीय वैष्णवनको मेल

ब्राह्मण.	संन्यासी.	क्षत्रीय.	कायस्थ.	कुणबी.	भाट.	कुंभार.
४१	१	३०	३	१	२	१

सुतार.	छीपी.	गोरवा.	शूद्र.	अलिखितज्ञाती.	(कुल जनें)
१	१	१	१	८	(९१)

इत्यनुक्रमणिकासमाप्ता.

❀ (श्रीगोवर्धनधरोविजयतेतराम्) ❀

❀ ॥ (अथ श्रीवल्लभाचार्यजन्मचरित्रसमयादर्श) ॥ ❀

श्रीविष्णुस्वामीको जन्म विक्रमसंवतसुं ६०० वर्ष पेहेलें भयो हतो. श्रीविष्णुस्वामी संप्रदायमें सब मिलकें ७०० आचार्य भये हें. श्रीवल्लभाचार्यजीके पूर्वज प्रथमपुरुष यज्ञनारायणभट्टनें ३२ सोमयज्ञ किये हते. द्वितीयपुरुष गंगाधरभट्टनें २८ सोमयज्ञ करिकें देह छोडी हती. तृतीयपुरुष गणपतिभट्टनें ३० सोमयज्ञ करिकें देह छोडी हती. चतुर्थपुरुष वल्लभभट्टनें ५ सोमयज्ञ करिकें देह छोडी हती. पंचमपुरुष श्रीलक्ष्मणभट्टजीनें ५ सोमयज्ञ किये जासुं इनके वंशमें कुल १०० सोमयज्ञ पुरे भये हते.

संवत् १५३२ चैत्रशुक्ल ९ सोम. पुष्पन० श्रीलक्ष्मणभट्टजीके छेले सोमयज्ञको आरंभ.
संवत् १५३२ चैत्र मे. ....श्रीलक्ष्मणभट्टजी काशीयात्राकों पधारे.
संवत् १५३५ वैशाखकृष्ण ११ रविवार चंपारण्यमें श्रीइलंमागारुजीको गर्भश्रावभयो
संवत् १५४० चैत्रकृष्ण ९ रविवार.... .... श्रीवल्लभाचार्यजीकुं जनोइ पेहेराइ.
संवत् १५४६ चैत्रकृष्ण ९ श्रीलक्ष्मणभट्टजीनें श्रीबालाजीमें देह विसर्जन करी.
संवत् १५४८ वैशाखकृष्ण २ रोहिणीनक्षत्र. श्रीवल्लभाचार्यजीकी पेहेली परिक्रमारंभ.
संवत् १५४८ श्रावणकृष्ण ८ ....व्रजचोराशीकोशकी परिक्रमाकों पधारे.
संवत् १५४८ फाल्गुनशुक्ल ११ गुरुवार झाडखंडमें श्रीनाथजीकी आज्ञा भई.
संवत् १५४८ फाल्गुनशुक्ल २ ....यात्राकारे मथुरामें पधारे.
संवत् १५४८ फाल्गुनशुक्ल ६ रविवार........................ श्रीवृंदावन पधारे.
संवत् १५४९ श्रावणशुक्ल/११ गुरुवार श्रीगोवर्धननाथजीकों प्रथम पवित्राधराये.
संवत् १५५४ वैशाखशुक्ल ३ ....प्रथमपरिक्रमा संपूर्ण भई.
संवत् १५५५ चैत्रशुक्ल २ रविवार............ .... दूसरीपरिक्रमाको आरंभ.
संवत् १५६८ भाद्रपदकृष्ण १२..............प्रथमपुत्र श्रीगोपीनाथजीको प्राकट्य
संवत् १५७२ गु० मार्गशीर्षकृष्ण ९ शुक्रवार हस्तनक्षत्र. दू० पुत्रश्रीविट्ठलनाथजीप्रा०
संवत् १५८७ गु० वैशाखकृष्ण १०.........आप संन्यास लेवे श्रीप्रयागराज पधारे.
संवत् १५८७ आषाढशुक्ल २ उ. ३ ....श्रीकाशीजीमें आप निजधाम पधारे.

आप श्रीवल्लभाचार्यजी १२ वर्षकी वयसें पृथ्विपरिक्रमाको आरंभ किये. सो हर छे छे वर्षमें एक एक प्रदक्षिणा पूरी कारि ३० वर्षकी उमरितांइमें ३ परिक्रमा दिग्विजय युक्त करिकें अडेल पधारे. सो हरसालके चैत्रशुक्ल २ अथवा वैशाख शुक्ल २ कों १ सोमयज्ञ करते. तहाँ आप २१ वर्ष विराजे. कुल्ल ५२ वर्ष भूतलपे स्थिति करी हती. ता समयमें आपनें ३५ अपूर्वग्रंथ प्रसिद्ध कियेहे. सोप्रसिद्ध हें.

श्रीगोवर्धनधरोविजयतेतराम्.

श्रीनवनीतप्रियोजयति.

॥ अथ मंगलाचरणाष्टकम् ॥

वंदे श्रीकृष्णदेवं मुरनरकभिदं वेदवेदांतवेद्यं, लोके भक्तिप्रसिद्ध्यै यदुकुलजलधौ प्रादुरासीदपारः ॥ यस्यासीद्रूपमेव त्रिभुवनतरणे भक्तिवच्च स्वतंत्रं, शास्त्रं रूपं च लोके प्रकटयति मुदा यः स नो भूतिहेतुः ॥ १ ॥ कर्ता ज्ञः सकलस्य यो निगमभूः सर्वस्वरूपोपि सत, सर्वस्यापि विधारणो विजयते निर्दोषसर्वेष्टदः ॥ यो लीलाभिरनेकधा वितनुते रूपं निजं केवलः, सोयं वाचि ममास्तु पूर्णगुणभूः कृष्णावतारः पतिः ॥ २ ॥ श्रीगोवर्धननाथपादयुगलं हैयंगवीनाप्रियं, नित्यं श्रीमथुराधिपं सुखकरं श्रीविठ्ठलेशं मुदा ॥ श्रीमद्द्वारवतीशगोकुलपती श्रीगोकुलेन्दुं विभुं, श्रीमन्मन्मथमोहनं नटवरं श्रीबालकृष्णं भजे ॥ ३ ॥ श्रीमत्तैलंगविप्रोत्तमकुलमुकुटभ्राजमानाग्र्यहीरो, धीरो विद्वन्महेभोत्कटमददलने श्रीहरिर्दीप्ततेजाः ॥ विश्वग्विख्यातकीर्तिर्विमलतरमतिः शास्त्रषट्कैकवेत्ता, भेत्ता जीयादघानां हरिरिति वदतां वाङ्मनः कायजानाम् ॥ ४ ॥ श्रीवल्लभाचार्यपदाम्बुजाते, यदि प्रभाते स्मृतिवर्त्म याते ॥ चेतः पुनाते विपदं लुनाते, श्रियं ददाते सकलां तदा ते ॥ ५ ॥ चिंतासंतानहंतारो यत्पादांबुजरेणव ॥ स्वीयानां तान्निजाचार्यान्प्रणमामि मुहुर्मुहुः ॥ ६ ॥ यदनुग्रहतो जंतुः, सर्वदुःखातिगोभवेत् ॥ तमहं सर्वदा वंदे, श्रीमद्वल्लभनंदनम् ॥ ७ ॥ सायं कुञ्जालयस्थासनमुपविलसत्स्वर्णपात्रं सुधौत्रं, राजद्यज्ञोपवीतोपरितनवसनं गौरमम्भोजवक्रम् ॥ प्राणानायम्य नासापुटनिहितकरं कर्णराजत्सुमुक्तं, वन्देर्धोन्मीलिताक्षं मृगमदतिलकं विठ्ठलेशं सुकेशम् ॥ ८ ॥

अथ श्रीआचार्यजीमहाप्रभुजी श्रीमद्वल्लभाचार्यजी की

॥ ५१ प्रसंगकी निजवार्ता प्रारंभः ॥

(प्रसंग १ लो)

पुरुषोत्तमसन्मूलां, श्रीवैश्वानरमध्यमाम् ॥
अस्मदाचार्यपर्यंतां, वंदे गुरुपरंपराम् ॥ १ ॥

श्रीकृष्णायनमः ॥ श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप जिन दैवीजीवनके उद्धारार्थ भूतलपर प्रगट भए ॥ उन दैवीजीवनकों भगवानतें बिछुरे बहुतकाल भये हते ॥ सो गद्यके श्लोकमें आप श्री आ. र्यजी कहे हें जो (सहस्रपरिवत्सरः इत्यादि) ॥ जब श्री ठाकुरजीकों लीलामें दया उपजी ॥ तब अपने श्रीमुख सों एक तेजको स्वरूप कल्पकें विनकूं आग्यादीनी ॥ जो तुम श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको देह धारण करके भूतलपे प्रगट होय दैवीजीवनको उद्धार करो ॥ वे जीव बोहोतकालतें भटकत हें ॥ और अन्य मार्गमें पैठतहें ॥ परि कहूँ उनको स्वास्थ्य होतनाहीं ॥ सो याहि तें ॥ जो जावस्तुके वें अधिकारीहें ॥ सो वस्तु कहूँ विनकों दीसत नाहीं ॥ तातें वे जीव परिभ्रमण कररहे हें ॥ तिनके लिये आप प्रगट होयके विनको उद्धार करो ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप प्रगट भये ॥ सो या रीतिसों ॥ जो साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तमको ॥ जो तेजोमय धाम हे ॥ ताको आधार अग्नि हे ॥ ता अग्निकुंडमें तें आप प्रगट भए ॥ तातें सब कोई आपकों अग्निरूप कहत हें ॥ आप वा अग्नि जो साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तमके मुखारविंदमें जो आधिदैविकरूप अग्नि हे ता अग्निको स्वरूप आप श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको हे ॥ सो अग्निस्वरूप एसा हे ॥ जो जाके समीप जैये तो सीतलता होय ॥ और दूरि जैये तो ताप होय ॥ और लौकिकाग्नि तो एसी होय हे ॥ जो

जाके समीप जैये तो ताप होय ॥ ओर दूरि जैये तो सीतलता होय ॥ यह तो पूर्णपुरुषोत्तमके मुखारविंदकी अग्निहे ॥ तातें सब पदारथको भोग करतहें ॥ ताही तें श्रीआचार्यजी-महाप्रभुनको नाम श्रीगुसांईजी सर्वोत्तममें (यज्ञभोक्ता) कहेहें ॥ ओर श्रीगुसांईजी वल्लभाष्टकमें हूं कहेहें ॥ (वस्तुतः कृष्ण एव) ॥ यातें निश्चय करिकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों श्रीगोवर्धनधर जाननो ॥ यह श्रीगुसांईजी याहीतें कहें ॥ जो श्रीआचार्यजी आप मनुष्य देहको अंगीकार कियोहे ॥ ताको हेतु यह ॥ श्रीगुसांईजी सर्वोत्तममें (प्राकृतानुकृतिव्याजमोहितासुरमानुषः) कहेहें ॥ जो श्रीआचार्यजी आप साक्षात् श्रीगोवर्धनधर होइकें दरसन देई तो सब प्राणीमात्र शरणि आवें ॥ तामें आसुर हूं आवें ॥ तातें आप अपनो स्वरूप गोप्य राखें ॥ जातें सब जगंतकों मनुष्यको दर्शन होय ॥ ओर कहें जो ये बडे महापुरुष हें ॥ बडे पंडितहें ॥ इतनोही जाने ॥ ओर दैवीजीवनकों तो साक्षात् श्रीगोवर्धनधरके दरसन होंय ॥ जब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप ४० हाथके अग्निकुंडमेंतें चंपारण्यमें संवत् १५३५ चैत्र (व्रज वैशाख) वदी ११ रवीवारके दिन प्रगट भए ॥ तब श्रीलक्ष्मणभटजी ओर इलंमागारुजी इनकों लेकें घर पधारे ॥ जब आप पांच वर्षके भये तब संवत १५४० के चैत्र वदी ९ रवीवारके दिन यज्ञोपवीत धारण कियो ॥ पाछें चान्यो वेद, पुराण, सब शास्त्र, पढगये ॥ तातें लक्ष्मणभटजीकों आश्चर्य भयो ॥ तब लक्ष्मणभटजीसों श्रीठाकुरजीनें स्वप्नमें कह्यो जो तुम संदेह काहेकों करतहो ॥ में साक्षात् तुमारे घर प्रगट भयोहूं ॥ कितेक दिन पाछें श्रीबालाजीमें संवत् १५४६ चैत्र वदी ९ के दिन श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके ११ मे वर्ष श्रीलक्ष्मण-भटजीकूं श्रीठाकुरजीके चरणारविंदकी प्राप्ति भई ॥ ताको कारण

यह ॥ जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों तो पृथ्विप्रदक्षिणा कर देवीजीवनको उद्धार करनोहे ॥ ओर देवीजीव तो सब देशांतर-मेंहें ॥ तातें जो श्रीलक्ष्मणभटजी विराजत होंय तो आप उनकी आग्या विना केसें देशांतरकों पधारें ॥ ओर श्रीलक्ष्मणभटजी बालककों अकेले जाइवेकी आग्या केसें देहिं ॥ तातें यह स्वतंत्रता विना देवीजीवनको कार्य न होयगो ॥ ता पाछें श्रीआचार्य-जीमहाप्रभु संवत १५४८ वेशाखवदी २ रोहिणी नक्षत्रके दिन माताजीकी आज्ञा लेकें १२ वर्षकी उमरमें आप घरतें प्रथमहीं पृथ्वी परिक्रमा करनकों पधारे ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (वार्ताप्रसंग २ रो) ❀

सो प्रथम मार्गमें कोई एक महापुरुषको स्थल हतो ॥ वह महापुरुष बोहोत वृद्ध हतो ॥ सो आप ओरनकूं सेवक करतो ॥ तब वाने यह मनमें विचारी जो मोकों कोई एसो सेवक मिले ॥ जाकों यह कार्य सोंपों ॥ एसेमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप वाके आश्रममें पधारे ॥ सो देखतहीं वह महापुरुष अपने मनमें बहोत प्रसन्न भयो ॥ ओर मनमें कही ॥ जो में विचारत हतो सो श्रीठाकुरजीने मेरो मनोरथ सिद्ध कियो ॥ तब वा महापुरुषनें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों कह्यो ॥ जो तुम मेरे सेवक होउ तो यह सगरो मठ हे ॥ सो में आपकों सोंपों ॥ अब हों वृद्ध भयो हों ॥ तातें यह कार्य सब आप करो ॥ तब आप कहें ॥ जो बोहोत आछो ॥ श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आपतो ईश्वरहें ॥ सब जानत हें ॥ या कारणके लियें तो आप पधारेंहिहे ॥ पाछें आप रात्रिकों उहाँहीं वाके आश्रममें पोढे ॥ ओर वह महापुरुषहू सोयो ॥ तब वाकों श्रीठाकुरजी स्वप्नमें कहे ॥ जो अरे मूर्ख मेंने तो तेरे उद्धारके लिये इनकों इहां पठाये हुते ताकों तो तुं उलटो सेवक करतहे ॥ जो तोकों अपनो

कार्य करनो होई तो तूं इनकी शरणि आईयो ॥ एतो साक्षात् मेरो स्वरूपहें ॥ एतो भक्तिमार्गके उद्धारके लिये प्रगट भएहें ॥ सो यह सुनिकें वह महापुरुष तत्काल जागीपन्यो ॥ तब ऊठिकें आइकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों साष्टांग दंडवत करी ॥ ओर हाथ जोरिकें कह्यो जो महाराज मेरो अपराध क्षमा करो ॥ मेनें कालि आपसों अनुचित बचन कह्यो ॥ मेनें आपको स्वरूप नहीं जान्यो ॥ आपतो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तम हो ॥ मेरे उद्धारके लिए पधारे हो सो मेरो अंगीकार करोगे ॥ में आपकी शरणहूं ॥ तब श्रीआचार्यजी आप कहें ॥ जो हाँ हाँ तुमारो उद्धार करेंगे ॥ कहाभयो जो तुमने कछू कह्यो ॥ तब सवारे भये श्रीआचार्यजी आपनें वाकों नाम सुनायकें ॥ पाछे आप उहांते आगें पधारे ॥

❀ (वार्ताप्रसंग २ रो) ❀

सो आगें एक वडो नगर आयो ॥ वा ठोर एक वडो नगरसेंठि हतो ॥ ताकी देह छूटीही ॥ वाके चारि बेटा हे ॥ सो तीनि बेटा तो वडे हते ॥ ओर सबनतें छोटे दामोदरदास हुते ॥ तब उन वडे भाईननें विचार कीनो ॥ जो होईतो यह द्रव्य सब अपनो अपनो बांटि लेई ॥ काहेतें जो ॥ द्रव्येहे सोतो क्लेशको मूलहे तातें आपुसमें हमारो हित न रहेगो ॥ तब दामोदरदासजीतो छोटे हते ॥ तातें विनसों कहें ॥ जो क्यों बाबा तूं अपने बांटको द्रव्य लेयगो ॥ तब दामोदरदास कहें ॥ जो मेंतो कछु समझत नाहीं ॥ तुम बडेहो आछो जानो सो करो ॥ तब विननें द्रव्य सगरो घरमेंतें काढिके वा द्रव्यके चारि बांट करे ॥ ओर चार्‍योनके नामनकी चिठ्ठी लिखिकें वाके उपर डारी ॥ सो जा जा के नामकी चिठ्ठी आई ॥ सो सो वानें लियो ॥ तब दामोदरदाससों कहें ॥ जो तुमारो द्रव्य तुम जहां कहो तहां धरे ॥ वा समें दामोदरदास गोखमें बेठे हते ॥ ता समें श्रीआचार्यजी-

महाप्रभु आप वा मारग होयकें निकसे ॥ सो उपरतें ... दासकी दृष्टि परी ॥ तब उहांतें तत्काल ऊठिकें दोरे ॥ कछु द्रव्य घरकी सुधि न रही ॥ सो आवतहीं आपकों साष्टांग दंडवत कीनी ॥ तब आप श्रीमुखते कहें ॥ जो दमला तूँ आयो ॥ तब दामोदरदासनें कह्यो ॥ जो महाराज में तो कबको मारग देषतहूं ॥ तापाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके चरणारविंदके पाछें पाछें दामोदरदास चले ॥ पाछें तें ओर भाई कहनलागे जो दामोदरदास कहां गए ॥ तब काहूने कह्यो जो एक महापुरुषसं चले जात हते ॥ तिनके पाछें वेहू चले जात हते ॥ यह सुनिकें वे तीन्यों भाई उहाँते चले ॥ सो आगें वा नगरके बाहर एक स्थल हतो ॥ तहाँ श्रीआचार्यजीमहाप्रभु विराजे हे ॥ आगें दामोदरदास बेठेहे ॥ तब देखतही ए तीन्यो भाई चक्रत होईरहे ॥ विनकों श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको दरसन साक्षात् तेजोमय तेजके पुंजको भयो ॥ सो देखतही विनते कछू बोल्यो न गयो ॥ अपनें मनमेंही विचारे ॥ जो कदाचित् हम बोलेंगे ॥ तो यह अग्नि हमकों भस्म करिडारेगी ॥ तब दामोदरदास इनकों देषिकें कहे जो ॥ भाई तुम आउ ॥ वा समें उन भाईननें दामोदरदासको स्वरूप हू तेजोमय देख्यो ॥ सो भय पायकें पाछे फिरि आये ॥ जो दैवीजीव होते तो शरणि आवते ॥ श्रीआचार्यजी आपको तो नामहीहे ॥ जो (दैवोद्धारप्रयत्नात्मा) ॥ पाछें दामोदरदासकों संग लेकें आप श्रीआचार्यजी आगें पधारे ॥ तब दामोदरदासको तो कछू व्याह भयो न हतो ॥ जो इनकों स्त्री आइकें प्रतिबंध करे ॥ वे प्रभुनसों बहुत दिननके बिछूरे हते ॥ सो आइ मिले ॥ पाछें आपके संग दामोदरदास चले ॥ ७ ॥ ७ ॥

❀ (वार्ताप्रसंग ४ थो) ❀

आगें विधानगरमें कृष्णदेवराजा हतो ॥ तहां श्रीआचार्यजीमहा-

प्रभुनके माँमाँ विद्याभूषणजी रहते ॥ तहां आप पधारे सो वे माँमाँ देखिकें वोहोत पसन्न भये ॥ वहुत आदर सन्मान कीनों ॥ ओर कह्यो जो ऊठो भोजन करो ॥ तब श्रीआचार्यजी आप श्रीमुखतें कहें ॥ जो मेंतो कहूं भोजन करतूँ नाहीं ॥ अपने हाथ करिलेतूँ हों ॥ तब यह बात सुनिकें माँमाँकों रिस भई ॥ वोहोत बुरो लाग्यो तब कुटिके कहे ॥ जो हमारे घर भोजन नांहीं करत तो राजाकों देखें केसें मिलेगो ॥ राजाके दानाध्यक्षतो हम हें ॥ देनो दिवावनो तो हमारे हाथहे ॥ यह सुनिकें आपु कहें ॥ जो हमरेतो कछु चाहीयत नाही ॥ एसें कहकें आप कछू बोले नाहीं ॥ क्यों जो आपुतो ईश्वरहें ॥ आपुकी बराबरिके कोई होईतो वासों बोले ॥ तोहू आपुतो उहांई अपने हाथसुं पाक करिके श्रीठाकुरजीकों भोग समर्पि ॥ भोग सराई पाछें आप भोजन कीये ॥ तहां उनके घर सांझकों ब्राह्मण आये सो बातें करन लागे ॥ जो कालि मायावादी जीतेंगे ॥ तब श्रीआचार्यजी सायं संध्याकरत हते ॥ सो करकें कही जो मायावादी केसें जीतेंगें ॥ तब विन ब्राह्मणनने कही ॥ जो विनकी युक्तिबढिहे ॥ ता पाछे आप रात्रिकों पोढे ॥ इतनेमें अर्धरात्रीके समे श्रीगोवर्धननाथजी आप पधारे ॥ तब श्रीआचार्यजी आप तो निद्रामें हते ॥ तब श्रीगोवर्धननाथजीनें श्रीआचार्यजीके केस दाबे ॥ तब आप तत्काल जागिपरे ॥ सो देखेंतो श्रीनाथजी आप ठाढेहें ॥ तब आप ऊठिकें हस्त जोरिकें ठाढेभए ओर कही जो आप या समे केसें पधारें ॥ तब श्रीगोवर्धननाथजी कहें जो एसो गर्वित वचन सुनिकें आप या माँमाँके घर क्यों रहे ॥ मेंतो तिहारे पाछें पाछें डोलतहों ॥ एक छिनहू छोडत नाहीं ॥ यह माँमाँ तुमकों राजासों कहा मिलावेगो ॥ एसें राजा तो कोटानकोटि तुमारे चरणारविंदकी अभिलाखा करतहें ॥ ओर करेंगे ॥ आप ऊठो याके घर मति रहो ॥ तब

तत्काल श्रीआचार्यजीमहाप्रभु उहांते ऊठि चले ॥ सो वा नगरके बाहिर जलाशय हतो ॥ तहां आप पधारे ॥ देह कृत्य दंत धावन करिकें स्नान तिलक मुद्रा करी ॥ संध्या करिकें कृष्णदेवराजाकी सभाकों पधारे ॥ सो कृष्णदेव राजाके इहां आगे वैष्णव संप्रदायको और स्मार्त संप्रदायको आपुसमें झगडो बोहोत दिनातें चल रह्यो हतो ॥ तातें वैष्णव संप्रदायके बडे बडे आचार्य महंत बोहोत भेले भये हुते ॥ सो युक्तिमें स्मार्त जीते ॥ वादिन यह झगडो चूकवेपे हतो ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुके माँमाँनें आगेसों राजा कृष्णदेवसों कहीहो ॥ जो आज झगडा चूकवेपेहे ॥ तातें द्वारपालसों कहि राखो जो आज कोई नयो ब्राह्मण आवन न पावें ॥ तब राजाने कहीही जो दानाध्यक्ष तो आपहीहो ॥ देनो दिवावनो तो सब तिहारे हाथहे ॥ जाकों तुम बुलाओगे सोई आवेगो ॥ तापाछें राजा कृष्णदेवके इहाँ सब संप्रदायी आचार्य ब्राह्मण भेले भये ॥ जब सभा भेली भई ॥ ताहां राजा कृष्णदेवहु आयं बेठ्यो ॥ इतनेमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप पधारे ॥ तहां राजद्वारपे जाय द्वारपालतें खबर करिवाई ॥ द्वारपाल मनुष्य आपकों देखतहीं चक्रत भए ॥ जो मानों आकासतें सूर्य पधारेहें ॥ और तेजको पुंज देषिके द्वारपालने जाय राजासों कही ॥ जो एक वडो तेजःपुंज ब्राह्मण आयेहे ॥ सो सुनि राजाकृष्णदेव सब सभा सहित ऊठि ठाढो भयो ॥ और उराहने पायन आय दंडवत प्रणाम करि सभामें पधराय लायो ॥ वा समयकी कहा उपमा कहिये ॥ जो मानों राजा बलिकी सभामें श्रीवामनजी पधारे ॥ सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुके दरसन करिकें राजा बोहत प्रसंन भयो ॥ तब आपसों राजानें विज्ञप्ति कीनी ॥ जो महाराज आसनपे विराजिये ॥ मेरो वडो भाग्यहे ॥ तब तहां श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप विराजे ॥ तब राजा कृष्णदेवसों पुछी जो आपकी सभामें कहा

झगडो हे ॥ तब राजानें बीनती कीनी ॥ जो महाराज वैष्णव संप्रदायको ओर मायावादीनको आपुसमें झगडो हे ॥ सो वैष्णव संप्रदायवारे निरुत्तर भये हें॥ ओर मायावादीनकी युक्ति वढी हे ॥ यह सुनिकें श्रीआचार्यजी आप कहें ॥ जो एसो कोन हे ॥ जो वैष्णव संप्रदायकों जीतेगो॥ वैष्णव संप्रदायतो हमारो हे॥ सो हमसों चर्चाकरो ॥ वे कोनहें एसे जीतनवारे ॥ यह सुनिकें वैष्णव संप्रदायके आचार्य महंत बोहोत प्रसंन भये ॥ तब राजा कृष्णदेवने उन मायावादीनसों कह्यो ॥ जो आओ॥ तुमारे चर्चा करनी होई सो करो ॥ तब उनमें बडे बडे पंडित हते ॥ सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों चर्चा करन लागे॥ तब आप आज्ञा किये जो तुम सबनमें जो बोहोत पढेहोंय सो चार जने बडे होउ॥ सो जो वो चारजने जीतें तो मानों सब जीते॥ ओर जो वो चारजने हारें तो तुम सब हारे ॥ तब यह सुनिकें मायावादीननें चार मुखिया किये॥ ता मायावादीनमें विज्ञानानंदगिरि नामको महापंडित हतो ॥ तासों श्रीआचार्यजी आप वाद प्रश्नसों ब्रह्मकर्म इत्यादि पुछन लगे॥ सो २७ दिन वाद चल्यो ॥ आपतो साक्षात् ईश्वरहें॥चार्‍यो वेद[1], अठारे पुराण[2], षट्शास्त्र[3] जिनके जिह्वाग्रहें ॥ तातें उनकी कहा सामर्थ्य ॥ सो वे मायावादी तत्काल निरु-

---

१ ऋग्वेद, २ सामवेद, ३ यजुर्वेद, ४ अथर्ववेद.

२. १ ब्राह्मपुराण, २ ब्रह्मांडपुराण, ३ अग्निपुराण, ४ विष्णुपुराण, ५ गरुडपुराण, ६ ब्रह्मवैवर्तपुराण, ७ शिवपुराण, ८ लिंगपुराण, ९ नारदीयपुराण, १० स्कंदपुराण, ११ मार्कंडेयपुराण १२ भविष्यपुराण, १३ मत्स्यपुराण, १४ कूर्मपुराण, १५ वराहपुराण, १६ वामनपुराण, १७ पद्मपुराण, १८ श्रीभागवत.

३. न्यायशास्त्र, तर्कशास्त्र, योगशास्त्र, सांख्यशास्त्र, पूर्वमीमांसा, उत्तरमीमांसा (ब्रह्मसूत्र).

त्तर भये ॥ तब आपनें प्रत्येकनसों पुछी वेहु समस्त भये ॥ तब विन मायावादीननें जैन ओर बोध मतवारेनको किए॥ तब आप श्रीमहाप्रभुजी पीठि देकें वेठे॥ ओर कही जो हम इनसों संभाषण न करेंगे॥ कारण ये अनीश्वरवादीनसों भाषण करनो योग्य नहीं हे॥ तब राजानें वडो आग्रह कियो तब आपनें एक बीचमें आदमी राखके विनसों शास्त्रार्थ कियो तामें विन दोनोनके मतको खंडन कियो, ॥ ओरहु वा सभामें नॉनकपंथी, दादूपंथी, निरंजनी, कबीरपंथी, वगेरे सबनकों निरुत्तर किए ॥ तब विनने श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों साष्टांग दंडवत् कीनी ओर कहें ॥ जो महाराज कोई मनुष्य होइ तासों हमारी चले ॥ आपुतो साक्षात् ईश्वरहें ॥ जब श्रीआचार्यजीको माहात्म देखिके राजा कृष्णदेव बोहोत प्रसंन भयो ॥ तब राजाकों लोभ भयो ओर प्रधानकों आज्ञा दीनी॥जो यह ब्राह्मण मारगतें तुटे॥इननें वेद मार्गकों छोड्यो तातें इनकी वृत्ति बंद करदेउ॥तब श्रीआचार्यजीतों बडे दयालहें॥ताते आप राजासो कहें॥जो इननेतो अपनो धर्म छोड्यो, परंतु तुम अपनो धर्म मति छोडो ॥ तुमतो जो देतहो सो दीयो ही करो ॥ प्रतिबंध करवेको तुमारो धर्म नाहीं ॥ एसी राजा कृष्णदेवकों आज्ञा किये ॥ पाछें वैष्णव संप्रदायनमेंके रामानुज संप्रदायके हनुमंताचार्य, निंबार्क संप्रदायके केशवभट्टकाश्मीरी; ओर मध्वसंप्रदायके व्यासतीर्थस्वामी ॥ इत्यादि आचार्य महंत हुते ॥ विन सबननें कही जो हम श्रीआचार्यजीकों तिलक करेंगे ॥ जो आजतें हमारे वैष्णव संप्रदायवारे ब्राह्मण सबनके ये राजा भये ॥ ओर आचार्य पदवी दीनी ॥ जो हमारे सबनके सिरोमणि ए हें ॥ जिननें हमारी वैष्णवता ओर वैष्णवमार्ग राख्यो ॥ यह सुनिकें राजा बोहोत प्रसंन भयो ॥ ओर कह्यो जो बोहोत आछो ॥ तुम सबन एसे विचार्यीहे॥

तो मैं श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों कनकाभिषेक करूंगो ॥ तब सब वैष्णव संप्रदायके आचार्य महंत प्रसंन भये ॥ तब राजा कृष्णदेवनें आछो मुहूर्त देखिकें आपकों सात मण सुवर्ण जलमें डारिकें कनकाभिषेक करायो ॥ ब्राह्मण सबनने तिलक कीयो ॥ सब कोऊ श्रीवल्लभाचार्यजी कहवे लगे ॥ एसो नाम वा दिनतें प्रसिद्ध भयो ॥ प्रथम वाहीदिन माया मतको खंडन कीयो ॥ भक्तिमार्गको स्थापन कीयो ॥ तब राजानें वीनती कीनी जो महाराज मेरो अंगीकार करिये ॥ तब आपु अनुग्रह करिकें राजाकों नॉम सुनायो ॥ तब राजानें सुवर्णको थार सुवर्णद्रव्यसों भरिकें आगे धन्यो ॥ तब आपने वामेंते सप्तसुवर्णमुद्रा लेके काढि धरे ॥ तब राजानें कही ॥ जो महाराज सब द्रव्य अंगीकार करिये ॥ तब आप श्रीमुखतेंकहें ॥ जो हमारो इतनोही हे ॥ हमारे अधिक नहीं चहियत ॥ जब राजाने बोहोत वीनती करी ॥ जो महाराज स्नानको सुवर्णहे ॥ सो आपकोहे ॥ तब आप कहे ॥ जो यह हमारे कहा कामकोहे ॥ यह तो उचिष्ट जलवत हे ॥ तातें तुम ब्राह्मणन्कों बांटि देउ ॥ तोहू राजाने न मानी ॥ तब आपने कह्यो जो यामेंतें अर्ध द्रव्य तो ब्राह्मणनको बांटि देउ ॥ ओर अर्ध तुमरेही पास रहनदेउ ॥ काम पडेगो तब मँगाय लेंगे ॥ सो जब यज्ञ कियो तब राजाके जो अर्ध द्रव्य धर्यो हतो सो मंगाय लीनों हतो ॥ वो अर्ध सुवर्ण मेंतें तो श्रीजगन्नाथरायजीके लियें कटिमेखला बनाइ ॥ पाछे श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप अपने स्थलपे पधारे ॥ बहुरि रात्रिके समें मध्वाचार्य संप्रदायको व्यासतीर्थ नामको वृद्धसंन्यासी श्रीआचार्यजीके पास आयो ॥ तब वाने कह्यो जो तुम या मारगमें आओ तो तुमको यह सब संप्रदाय सोंपो ॥ तब आपने कह्यो जो विचारीकें कहेंगे ॥ तातें वो गये पाछे वही रात्रिको विष्णुस्वामिके संप्रदायके

विल्वमंगलभी आये ॥ ताने श्रीआचार्यजीकों मंत्रोपदेश देकें विष्णुस्वामीको पत्र दियो ओर विष्णुस्वामिके मारगकी सब वार्ता कही॥ ओर कह्यो जो मध्वाचार्य जो तुमेरपास आयो हतो तासों तुमने यों कह्यो जो हों विचारिके कहूंगो सो कहा ॥ तब आपनें विल्वमंगलतें कह्यो जो उनसों हूं कहा कहूं ॥ वे अपनो मारग न जानें ॥ अपनों स्वरूप न जानें ॥ मायावाद खंडन भयो तोहू उनकों ज्ञान न भयो ॥ तो में वासों कहा कहों ॥ तब विल्वमंगलने कह्यो जो महाराज तुमकूं तो बहुत कारज करनेंहें ॥ ओर विष्णुस्वामिको मारग उछिन्न भयो जातहे ॥ ताकी रक्षा करो ॥ नाहीतो पूजा मारगमें आवाहन विसर्जनकी पूजा होतहे ॥ निरंतर सेवाकों प्रकार तो विष्णुस्वामीतें चल्योहे ॥ तब आपनें कह्यो जो विष्णुस्वामीने जो मारग स्थापन कीयोहे ॥ तामें जो उत्तम पक्षहै सो लीनो हे ॥ ताकी तुम चिंता मतिकरो ॥ (विल्वमंगल ७०० वर्ष तांइ वायुरुप करिकें स्थीती करी हती ॥ सो यह बात कहिवेकेलिये विल्वमंगलकों श्रीठाकुरजीकी आज्ञा हती ॥ जो यह वात श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनतें कहिकें आइयो ॥ सो यह बात सब कहिकें विल्वमंगल गये) पाछें श्री आचार्यजीमहाप्रभु आप पोढे ॥ तब श्रीनाथजी पधारे ओर कह्यो जो तुम मध्वाचार्यके मारगको अंगीकार मति करीयो ॥ ताके प्रात· श्रीआचार्यजी विद्यानगरतें सब मतवादिनसों जयपत्र लेके चले ॥ सो श्रीव्रजके आडी पधारे ॥

❀ (वार्ताप्रसंग ५ मों) ❀

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप अपने मनमें विचारें ॥ जो सब देसांतरमें दैवीजीव हे ॥ तातें आपनकों तो सब ठोर जानों ॥ परि होयतो प्रथम व्रजकों चलें ॥ व्रजही सो हमारो निजधाम हे ॥ प्रथम श्रीगोकुल, श्रीगोवर्धन, वृंदावन, श्रीयमुना, इनकों देखिये ॥ ओर ८४ कोस की सबप्रदक्षणा करिये सो

दामोदरदासकों संग लेके संवत १५४८ श्रावण वदी ८ कों श्री आचार्यजी आप व्रजकों पधारे ॥ तब आवत मारगमें झारखंडमें आये ॥ वहां संवत १५४९ फाल्गुन सुदी ११ गुरुवारके दिन श्रीगोवर्धननाथजीनें जताई ॥ जो आप वेगी पधारो ॥ हम श्रीगोवर्धनपर्वतमें तीनि दमन हें ॥ नागदमन ॥ इंद्रदमन ॥ ओर मध्यमें देवदमन या तीन नामनसों हम प्रगट भये हें ॥ तातें आप वेग पधारिकें हमारी सेवाको प्रकार प्रगट करो ॥ सो यह आग्या सुनिकें श्रीआचार्यजी आप दामोदरदाससों कहें ॥ जो दमला श्रीठाकुरजीनें तो हमकों एसी आग्या दीनीहे ॥ तातें अब वेगि व्रजकों चलें ॥ सो झारखंडमेंतें केतेक दिनमें आप व्रजमें पधारे ॥ सो संवत १५४९ श्रावण सुदि ११ गुरुवारके दिन प्रथम श्रीगोकुलकों पधारे ॥ तादिन श्रावण सुदि ११ हती ॥ तातें श्रीआचार्यजी आप उपवास कीयेहते ॥ सो रात्रिकों गोविंदघाटउपर एक छोंकरहे ॥ ता ठोर एक चोतरापे आपपोढे ॥ ओर थोरीसी दूरि दामोदरदास सोये हते ॥ इतनेमें श्रीआचार्यजी आपकों चिंता उपजी ॥ जो श्रीठाकुरजीने आग्या दीनी ॥ जो भूतलपें दैवीजीवनको उद्धार करो ॥ तो उनसों मेरो संबंध होय ॥ ओर इहांतो सब जीव संसारसमुद्रमें पडेहें ॥ तातें अपनो स्वरूप ओर श्रीठाकुरजीको स्वरूप भूलिगयेहें ॥ श्रीठाकुरजीतो निर्दोषहें ॥ पूर्णगुणविग्रहहें ॥ ओर जीवतो अनेक संसारके दोष सों भरेहें ॥ तातें इनसों संबंध कोनरीतिसों होय ॥ यह चिंता करतही निद्रा आई ॥ तब अर्ध रात्रिके समय साक्षात् कोटि कंदर्प लावण्य पूर्ण पुरुषोत्तम श्रीगोवर्धनधर प्रगट होइकें श्रीमुखतें कहें ॥ जो तुम चिंता क्यों करतहो ॥ जिनकों तुम नाम देके ब्रह्मसंबंध करवावोगे ताको सकल दोष दुरि होय गो ॥ ओर मेरी प्राप्ति होइगी ॥ ब्रह्म संबंध विनाँ प्रेम-

लक्षणा भक्ति न होइ ॥ ओर प्रेमलक्षणा भक्ति विनॉ पुष्टि मार्गमें अंगीकार न होय ॥ पुष्टिमार्गमें अंगीकार भये विनॉ भगवत्सेवाको अधिकार न होइ ॥ ओर जीवतो एक भगवत् सेवा हीसों कृतार्थ होई जाय ॥ ताहीतें श्रीगुसांइजी आप सर्वोत्तममें श्रीआचार्यजीको यह नाम लिखें हैं (भक्तिमार्ग सर्वमार्ग वेलक्षण्यानुभूतिकृत) भक्तिमार्गतो प्रथमहु हुतो ॥ ओरहू भगवानकी प्राप्तिके मार्ग वोहोत हते ॥ परि व्रजभक्तनके स्नेहके मार्गमें अंगीकार न हतो ॥ ओर विना स्नेहकी सेवा नही. ॥ वहतो पूजा हे ॥ ओर पूजा हे सो मंत्रके अधीन हे ॥ ओर यह पुष्टिमार्गकी सेवाहे सो भावात्मक हे ॥ ताहीतें सूरदासजी गाऐंहे सो पद ॥

❀ (पद राग विहाग) ❀

भज राखि भावभाविक देव ॥ कोटि साधन करो कोऊ तोऊ न मानें मेव ॥ १ ॥ धूमकेतु कुमार मांग्यो कोन मारग प्रीति ॥ पुरुष तें त्रिय भाव उपज्यो सबें उलटी रीति ॥ २ ॥ वसन भूषण पलटि पहरे भाव सों संजोय ॥ उलटि मुद्रा दई अंकनि वरण सूधे होय ॥ ३ ॥ वेदविधिको नेम नॉहि न प्रीतिकी पहचान ॥ व्रजवधू वश किये मोहन सूर चतुरसुजान ॥ ४ ॥

एसो मार्ग प्रगट करवेकी श्रीठाकुरजीकी इच्छा हती ॥ तातें आपनें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों ब्रह्मसंबंधकी आग्या दीनी ॥ तव आपनें पवित्रा उपरनां ओर मिश्री सवारिके श्रावण सुद १२ केलियें सिद्ध करी राखें हते सो उठाय भोग धरे ॥ पाछें श्रीठाकुरजी पधारे ॥ तव श्रीआचार्यजी आप दामोदरदाससों कहें ॥ जो दमला तेनें कछू सुन्यों ॥ तव दामोदरदासनें वीनती कीनी जो महाराज श्रीठाकुरजीके वचन सुनेतो सही परि समझ्यो नाहीं ॥ तव आप श्रीमुखते कहें ॥ जो मोकों श्रीठाकुरजीनें आग्या दीनीहे ॥ जो जीवनकों ब्रह्मसंबंध करवावो ॥ जाते

तिनके सकल दोष दूरि होंयगे ॥ ओर में अंगीकार करूंगो ॥ तातें ब्रह्मसंबंध अवश्य करवावनों चाहिये ॥ श्रीठाकुरजीसों श्रीआचार्यजीकी जितनी वार्ता भई ॥ ताको आपने एक सिद्धांत रहस्य नामको ग्रंथ कीयो सो ग्रंथ नीचे लीखतहे ॥ ॥ ७ ॥

❀ (अथ सिद्धांत रहस्यम्) ❀

श्रावणस्यामले पक्षे एकादश्यां महानिशि ॥ साक्षाद्भगवतां प्रोक्तं तदक्षरश उच्यते ॥ १ ॥ (इस जगे ब्रह्मसंबंधको मंत्र हे सो गुप्तहे सो कह्यो नही) ब्रह्मसंबंधकरणात्सर्वेषां देहजीवयोः ॥ सर्वदोषनिवृत्तिर्हि दोषाः पंचविधाः स्मृताः ॥ २ ॥ सहजा देशकालोत्था लोकवेद निरूपिताः ॥ संयोगजाः स्पर्शजाश्च न मंतव्याः कथंचन ॥ ३ ॥ अन्यथा सर्वदोषाणां न निवृत्तिः कथंचन ॥ असमर्पितवस्तूनां

याकोअर्थ--श्रावण मासके शुक्लपक्षमें एकादशीके दिन अर्ध रात्रिके समय भगवान् साक्षात् प्रकट होयके जो आग्या दिनी सो हम अक्षरशः कहतहे ॥ १ ॥

आत्म निवेदन करणेही ते सर्व प्राणीनके देहके ओर जीवके जो जो दोषहे तीन सबनकी निवृत्ति होयगी, वे दोष पांच प्रकारके कहे हे ॥ २ ॥

वे पांचो भांतिके दोष लोकमें ओर शास्त्रमें निरूपण कीयेहे। १ सहज दोष, जो जन्मके साथही भयोहे। जेसे शूद्रत्वादि ॥ २ देशदोष। जेसे मगध आदिक देशमें जाके धर्म कर्म करने ॥ ३ कालदोष। जेसे अमुक कालमें करवेके कर्म दुसरे समयपें करने ॥ ४ ॥ संयोगजन्य दोष। जेसे जाको संयोग शास्त्रमें निषिध्ध कियोहे ताके संबंध हो जानो ॥ ५ स्पर्शजन्य दोष ॥ जेसे अमुकके स्पर्शादिसें जलादिकनकी अशुध्धि होयहे ॥ ये पांचो दोष ब्रह्मसंबंधभये पीछे, सेवामें मात्र बाधक होत नाहीं ॥ ३ ॥

निवेदन विना सर्वथा दोषकी रंचही निवृत्ति होत नाही ॥ वा-

तस्माद्वर्जनमाचरेत् ॥ ४ ॥ निवेदिभिः समर्प्यैव सर्वं कुर्यादिति स्थितिः ॥ न मतं देवदेवस्य सामिभुक्तसमर्पणं ॥ ५ ॥ तस्मादादौ सर्वकार्ये सर्ववस्तुसमर्पणं ॥ दत्तापहारवचनं तथा च सकलं हरे ॥६॥ न ग्राह्यमिति वाक्यं हि भिन्नमार्गपरं मतम् ॥ सेवकानां यथा लोके व्यवहारः प्रसिध्यति ॥ ७ ॥ तथा कार्यं समर्प्यैव सर्वेषां ब्रह्मतां ततः ॥ गंगात्वं सर्वदोषाणां गुणदोषादिवर्णना ॥ ८ ॥ गंगात्वेन निरूप्या स्यात्तद्वदत्रापि चैव हि ॥ ९ ॥ इतिश्रीवल्लभाचार्यविरचितं सिद्धांतरहस्यं समाप्तम ॥ ॥ श्री ॥ ॥ श्री ॥

स्ते असमर्पित वस्तुको सर्वथा त्याग करनो ॥ ओर भगवत्प्रसादी अन्नवस्त्रादिकनसें अपनो निर्वाह करनो ॥ ४ ॥

सब पदार्थको निवेदन करनो । जावस्तु मेंते कछुक पहिले अपने लिये खरचकर चूकेहे ॥ बाकी जो बच्यो ताको जो समर्पण करे सो देवके देव भगवान् अंगिकार करत नाहीं ॥ ५ ॥

ताते विवादिक सर्व काममें पहिले सर्व वस्तुको समर्पण करके पाछे प्रसादी वस्तु लेके अपनो काम करनो ॥ समर्पित वस्तुके स्वीकारमें दत्तापहार (देके फेर ले लेनो) दोष लगे एसे कोई कहे तो योग्य नहि । कारण सब वस्तु भगवानकी हे । वामें अपनो कछु नहि हे ॥ ६ ॥

ओर भगवानकी वस्तु न लेनी यह जो बातहे सो भिन्नमार्ग परहे ॥ जेसे देवालयके निर्वाहके लिये जोद्रव्य ओर ग्रामादिकन भेट कियो होय सो फेर न लेनो ॥ जेसे सेवकनको व्यवहार लोकमें चलेहे ॥ तेसे सर्व काम समर्पित वस्तुसें करनो ॥ ७ ॥

ब्रह्मसंबंधसेही सर्व वस्तुकी ब्रह्मकी तरह विशुध्धता होत हे ॥ जेसे अपवित्र जलहे सो गंगाजीमें मिलते सब गंगास्वरूप होजाय हे॥ ओर गंगास्वरूपसे वाके गुणदोष कहे जायहे ॥ ताही तरहंसो इहाँ ब्रह्मसंबंध हूमें दोषित वस्तुके पांचो प्रकारके दोष निवृत्त होत हे ॥८॥

यह ग्रंथ कीयो यह वार्ता सब एकादशीकी अर्धरात्रिकों भई ॥ ओर अर्धरात्रिकों ही मिश्री पवित्रा धराये ॥ तातें श्रीनाथजी ओर सातो स्वरूपनके इहां एकादशी द्वादशीको दोउ उछव मानतहें ॥ श्रावण सुदी द्वादशीके दिन श्रीआचार्यजीने प्रथम ब्रह्मसंबंध दामोदरदासकों करवायो ॥ प्रथम दामोदरदासनें जो श्रीठाकुरजीके वचन सुने परि समझे नाहीं ॥ ताको हेतु यह ॥ जो दामोदरदासकूं ब्रह्मसंबंध न हतो ॥ ओर समझें तो स्वामी सेवक भाव न रहे ॥ तो फेरी श्रीआचार्यजीमहाप्रभु इनकों ब्रह्मसंबंध काहेकों करवावें ॥ जेसें गोविंद दुवे श्रीरणछोडजीसों वातें करन लागे हते ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप श्रीसुबोधिनीजी कहत हते सो पोथी बांधीकें कह्यो जो तोसों श्रीठाकुरजी वातें करत हें ॥ तो हम तोसों कथा काहेकों कहें ॥ तातें स्वामी सेवक भाव राखिवेके लियें दामोदरदासने वचन सुने परि समझे नाहीं ॥ याको कारण दामोदरदासजीकों श्रीगुसांइजी आगे पूछेंगे ॥ जो तुम श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों कहा करिके जानताहे ॥ तब दामोदरदास कहेंगे ॥ जो हमतो जगदीश जो श्रीठाकुरजी तातें अधिक करि मानतहें ॥ तब श्रीगुसांईजी कहेंगे ॥ जो श्रीठाकुरजीतें अधिक काहेकों कहतहो ॥ तब दामोदरदास कहेंगे जो दान बडो के दाता बडो ॥ यामें यह सिद्ध भयो जो ॥ श्रीठाकुरजी श्री आचार्यजीमहाप्रभुनके वश हें ॥ तब व्रजमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक बोहोत भये ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ५ ॥

❀ (वार्ताप्रसंग ६ ठो) ❀

कृष्णदासमेघन सोरोमें रहते ॥ सो एक केशवानंद नामके योगीके शिष्य हते ॥ सो एकसमें व्रजमें आये ॥ तिनने श्रीआचार्यजीके दरसन करिकें यह मनमें लाये ॥ जो मेंतो इनको सेवक होऊं ॥ काहेतें ॥ जो विनकों श्रीआचार्यजीके दरसन साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके

भए ॥ तातें वे ओर प्रभुदासजलोटा क्षत्री तथा रामदासजी ये सब सेवक भये ॥ इन सबनकों आपने ब्रह्मसंबंध करवायो ॥ विन सब सेवकनकों संग लेकें आप श्रीआचार्यजी वृंदावन परासोली होईकें आन्योरमें सदू पांडेके घर पधारे ॥ तहां एक चोतरा हतो ॥ तापे आप विराजे॥ इतनेमें सब व्रजवासी देखिकें कहन लागे ॥ जो एतो कोई वडे महापुरुष हें ॥ एसो तेज काहू मनुष्यके मुखपरतो न होई ॥ कहा जानिये कहा स्वरूपमें हे ॥ एसे सबकोऊ कहें ॥ ता समें सदूपांडेने आयकें हाथ जोरिकें आपसों कह्यो जो स्वामी कछु खाउगे ॥ तब कृष्णदासमेघन बोले ॥ जो आपतो सेवक विना काहूको लेत नाहीं हें॥ तब सदूपाडेके एक भवानीस्त्री ओर एक बेटी हती वाको नाम नरो हतो॥ वापे श्रीगोवर्धननाथजी बोहोत कृपा करते ॥ सो वह सांझ सवेरे दोऊ बिरिया श्रीनाथजीकों दूध प्याइवेकों जाती॥ सो जब वह घरके काम काजमें होई तब जाई न सके॥ तब गिरिराज उपरसों वाको श्रीगोवर्धननाथजी पुकारें ॥ तबहूं न जाई तो श्रीनाथजी आप वाके घर आयकें मागिकें आरोगे ॥ जसें कोऊ घरको बालक होई ॥ तेसें आप वासों हिले ॥ सो जासमय कृष्णदासमेघननें सदूपांडेसों नाहीं कीनीं ॥ ताहीसमय श्रीगोवर्धननाथजी पुकारिकें कहें जो अरी नरो दूध लाऊ ॥ तब नरानें कही ॥ जो आजुतो मेरे पाहुनें आये हें ॥ तब आप कहें ॥ जो पाहुनें आये हें॥ सो तो भली भई॥ परि मोकों तो दूध लाउ ॥ तब नरानें कही जो हों वारी लाल लाई ॥ सो नरो दूधको कटोरा भरि पर्वतके ऊपर लेगई ॥ तासमय आप श्रीआचार्यजी दामोदरदाससों कहें ॥ जो दमला तेंने कछु सुन्यो ॥ तब दामोदरदासनें कही जो हॉ महाराज सुन्यो ॥ तब आप श्रीमुखतें कहे ॥ जो यह शब्द ओर झारखंडको शब्द एक मिलत हे ॥ तासों आप प्रभु यहांई प्रगट भये हें ॥ एसो जानि परतहे॥ तातें

सवारे ऊपर चलेंगे ॥ ऐसें आप श्रीमुखतें कहत भये ॥ इतनेमें नरो श्रीगोवर्धननाथजीकों दूध प्याइकें आई ॥ तब श्रीआचार्यजी आप वासों कहें जो यह हमकों दे ॥ यामें कछू बच्योहें ॥ तब नरोनें कही ॥ हा महाराज रंचक हे ॥ तब आप कहें ॥ जो रंचकही लाउ ॥ तब वाने कही जो महाराज घरमें दूध बोहोतहे ॥ सो लाऊं ॥ तब आप कहें ॥ जो ओरतो हमारे चहियत नाँहीं ॥ (सद्दू पांडेतो भगवदीयहे ॥ श्रीगोवर्धननाथजीके कृपापात्र हे ॥ जो साक्षात श्रीगोवर्धननाथजी इनसों बातें करते ॥ ओर जो चाहिये सो मांगि लेते ॥) सो वासमय सद्दू पांडेकों तो श्रीमहाप्रभूनके दरसन साक्षात् पूर्णपुरुपोत्तमके भये ॥ तब सद्दू पांडेनें कही ॥ जो महाराज हमकों कृपा करिकें नाम दीजिये ॥ तब आप अनुग्रह करिकें उनको अपनें कीये ॥ तब सबकछू उनको अंगिकार कीयो ॥ पाछें वा रात्रिकों सद्दू पांडे ओर उनके बडेभाई मानिकचंदपांडे ॥ ओर सद्दूपांडेकीस्त्री भवानी ओर वाकी बेटी नरो ओरहूं व्रजवासी बडे बडे वृद्ध हते ॥ सो सब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके चोतरा पास आय बेठे ॥ तब आप श्रीमुखतें कहें जो कहो सद्दूपांडे ये उपर देवदमन प्रगट भयेहें ॥ सो कोन रीतिसों प्रगट भयेहें ॥ इनकी सब बात तुम हमसों कहो ॥ तब सद्दूपांडेनें कही जो आपतो सब जानतहो ओर आपही पुछतहो तोहुँ कहतहूं ऐसें कहके ज्या रीतसों श्रीगोवर्धननाथजीको प्राकट्य भयो हतो ॥ ता भाँति सद्दुपांडे कहत भये ॥ ॥ ६ ॥

❀ (वार्ताप्रसंग ७ मों) ❀

महाराज हमारी गाइनको एक ग्वाल हतो ॥ वह सगरे गामकी गाई चरायवेकों जातो ॥ सो एक ब्राह्मणकी बोहोत बडी गाय हती सो वह गायहू चरवेकों जाती ॥ सो चरिकें घरकों आवे ॥ तब वह ब्राह्मण दुहिवेकों बेठे ॥ तब दूध रंचक देई

ओर सब चढाय राखे ॥ सो वह ब्राह्मण अपनें मनमें वोहोत कुढे ॥ जो मेरी एसी बडी गाय ओर दूध काहे नाहीं देत ॥ तब यह अपुनें मनमें निर्धार कीयो ॥ जो इईतो गायकों ग्वाल दुहि लेतहे ॥ जातें ग्वालसों कहनों ॥ जब सांझकों वो ग्वाल अपने घर आयो ॥ तब वह ब्राह्मण जायकें वासों खीज्यो ओर कह्यो जो क्योंरे भेया तूं मेरी गाय दुहि लेतुहे ॥ सो काहे तें ॥ तब वा ग्वालने कही ॥ जो भेया मेंतो या बातमें समझत नाहीं तूं वृथा बिनुदेखे मेरो नाँम लेतुहे ॥ सो आछो नाहीं ॥ ओर जो तेंनें इतनी कहीहे ॥ तो में कालि ठीक राखुँगो ॥ जब सवारे वह ग्वाल गाय चरायवेकों गयो ॥ तब सब गाय तो वनमें छोडि दीनी ॥ ओर वा गाईके पाछें पाछें डोले ॥ ओर नजरिमें राखे ॥ जो याको दूध कोंन दुहिकें पी जातहे ॥ तब इतनेमें वह गाय ग्वालकी दृष्टी बचाइकें गोवर्धनपर्वतके ऊपर चढी ॥ पाछेंतें वह ग्वाल हू पर्वत ऊपर चढ्यो ॥ ओर दूरितें देखे तो ऊपर एक बडी शिला हती ॥ वामें एक छेद हतो ॥ ताके ऊपर ठाढीहोइकें वह गाय श्रवेहे ॥ सो सबरो दूध वा ठोर डारिकें उतरि आई ॥ यह ग्वालनें दूरितें देख्यो ता पाछें वाठोर गयो ॥ तहां देखे तो एक शिला हे ॥ वामें एक छेद हे ॥ यह देखिकें ग्वालहू नीचे उतरि आयो ओर सगरोदिन गाई चराई ॥ पाछे जब घर आयवेको समय भयो ॥ तब वह गाय फेरि पर्वत ऊपर चढी ॥ तब वह ग्वालहू फेर वाके पाछें पाछें पर्वत ऊपर चढ्यो ॥ सो देखे तो जेसें सवारे वह गाय आपुतेही श्रवती ही ॥ तेसेंहीं श्रवती हे ॥ पाछे वह गाय श्रवकें पर्वत ऊपरतें उतरि आई ॥ तब वह ग्वालहू पाछेंतें उतरि आयो ॥ सो वा ग्वालनें ये सब समाचार वा ब्राह्मणसों कहे ॥ जो भेया तेरी गाय एसी रीतिसों दोऊ बिरियां आप जायकें पर्वत ऊपर श्रव-

ति हे ॥ जो तूँ न माने तो सवारे तूं मेरे संग चलियो ॥ हों तोइ दिखाइ देउँगो ॥ तब यह वात सुनिकें वा ब्राँह्मणकों वडो आश्चर्य भयो ॥ तब सवारे भये गाय बनकों चली ॥ तब वह ब्राह्मणहू गाईके पाछें पाछें चल्यो ॥ सो आगें जायकें वह गाय पर्वत ऊपर चढी ॥ तब वह ग्वाल ओर ब्राँह्मण ए दोउ वाके पीछें पर्वत ऊपर चढे ॥ सो दूरितें देखें तो वह गाय आपतें ठाढी ठाढी श्रवति हे ॥ तब वा ब्राह्मणके मनमें सांच आयो ॥ तब वाने विचार्‍यो जो या वातको अब कहा करनों ॥ पाछें वा ब्राँह्मणनें आयकें यह सब वात हमसों कही ॥ सो हमकोंहू सुनिकें वडो आश्चर्य भयो ॥ ओर आपुसमें विचार कियो जो कहो भैया यह कहा कारनहे ॥ तब हम सवनमें एक वोहोत वृद्ध हतो ॥ वानें कही ॥ जो भैया मेंनेतो एसो सुन्योहे ॥ जो जहां कछू धन होय ॥ तहां गाय आपतें श्रवे ॥ यह वात सुनिकें हम निश्चय करिकें पर्वत ऊपर गये ॥ सो देखें तो एक वडी शिलाहे ॥ वा शिलामें एक छेदहे ॥ तब हय सबनने विचार कियो ॥ जो या शिलाकों उठावें ॥ तब वह शिला हम सवननें उठाई ॥ ओर देखें तो वामें एक सुंदर लरिका बरस सातको ठाडोहे ॥ ओर वह शिलाको छेद हो सो वाके मुखकेऊपर हो ॥ सो वहांते दूध पीवत हो ॥ तब हम सवननें कही ॥ जो याके नीचे धनहे ॥ सो सांचोहे ॥ तादिनाँ पाछें हम वाकों दूध दही भोग धरें ॥ सो सब आरोगे ओर आप इहां सब लरिकानमें खेले ॥ जब आपको नाम हम सवननें पूछ्यो ॥ तब अपनो नाम देवदमन वतायो ॥ ओर हम एसें जान्यो जो यह पर्वतको देवताहे ॥ जब इंद्रनें वरसात करीही तब याहीनेही रक्षा करी हती तातें याकी सब मानता करो ॥ सो एसी रीतिसों यह प्रगट भए-हें ॥ ओर श्रीनाथजी आपके संग ओर तीन देवतानको हू

श्रीगिरिराजमें प्रागट्य भयो हे ॥ तामेंके संकर्पणकुंडमेंतें श्रीशंकर वनदेवताको प्रागट्य भयो ॥ गोविंदकुंडमेंतें श्रीगोविंददेवजीको प्रागट्य भयो ॥ ओर दॉनघाटीउपर दानीरायजीको प्रागट्य भयो ॥ तिनकीसेवा मतांतरमेंके वेष्णव करतहें ॥ अेसें चार्यों देवतानको प्रागट्य अेकही संग भयोहे ॥ आपतो ईश्वरहें ॥ सब जानतहें ॥ अपनी बात आपुही पूछतहें सो यातें ॥ जो सब जगतमें अपनो महात्म प्रगट न करें ॥ तो भगवदी कहा गुन गान करें ॥ ताहीतें गोपालदासजी गायेहें ॥ जो (आपनी लीला ते वदन पोतें करी, उचार आनंद अधिक दीधो) ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप यह बात सुनकें गदगद हो गये ॥

❀ (वार्ताप्रसंग ८ मों) ❀

पाछें सवारे उठिकें देहकृत्य करिकें स्नान करिकें सब वैष्णवनकों संग लेकें आप श्रीगिरिराज ऊपर पधारे ॥ तब श्रीगोवर्धननाथजी श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों देखिकें आप सामें पधारे ॥ तहां मिलिवेको अति हरख भयो ॥ सो गोपालदासजी गायेहें ॥ (हरखेंते सांमा आवियॉ श्रीगोवर्धन उद्धरण) जब श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों मिले ॥ तब बोहोत प्रसंन भए ॥ जो आपतो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके लिये प्रगट भयेहें ॥ ताको हेतु यहहे जो आपनें श्रीमहाप्रभुनकों आग्या दीनीहे ॥ जो तुम भूतलपे प्रगट होइकें देवीजीवनको उद्धार करो ॥ वे देवीजीव मोतें बोहोत दिननके बिछुरेहें ॥ तब आपश्रीआचार्यजी श्रीठाकुरजीकी आग्यातें मनुप्य देहको अंगिकार करिकें भूतलपे पधारेहें ॥ सो देवीजीवकों तो साक्षात् पूर्णपुरुपोत्तम श्रीनंदकुमारकोही दरसन होतहे ॥ जो सब जगतकों एसो दरसन होई ॥ तो सब जगत कृतार्थ होईजाई ॥ तातें मनुष्य देहको नाट्य कीये ॥ सो श्रीगुसांईजी आप वल्लभाष्टकमें लिखेहें (वस्तुतः

कृष्णएव) एसो श्रीआचार्यजी आपको स्वरूपहे ॥ जब श्रीठाकुरजीनें आप श्रीमहाप्रभुनकों आग्या दीनी ॥ जो तुम भूतल ऊपर पधारो तब आप श्रीकीआग्याते भूतल ऊपर पधारे ॥ श्रीठाकुरजीको आपतें बडो स्नेह हे ॥ ताहीतें आपकों नाम श्रीवल्लभहे ॥ श्रीयमुनाष्टक स्तोत्रके समासमें आपुही कह्योहे जो (वदतिवल्लभ· श्रीहरेः) श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको विरह सह्यो न जायगो एसें जानके आपुहूं श्रीगोवर्धननाथजी भूतलपे प्रगट भये ॥ भगवत लीलातो अनंतहें ॥ परंतु पूतनातें आदि देकें सब लीला नित्यहें ॥ श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें श्रीगोवर्धनधर प्रगट किये ॥ ताको कारण यह जो श्रीगोवर्द्धनधर परम कृपालहें ॥ इंद्रनें इतनो अपराध कीयो ॥ तोहू आप वाके ऊपर अनुग्रह कीये ॥ वाने गाइको ओर व्रजभक्तनको व्रजको श्रीगोवर्धनको द्रोह कियो ॥ परि श्रीगोवर्धननाथजी कछू मनमें न लाये ॥ वाकेऊपर उलटो अनुग्रह करिकें वाकों अपने लोककों पठायो ॥ ओर जो वानें अपराध कीनों हतो सो सब सेवा करिकें मानीं ॥ जो व्रजवासीननेंतो मोकों सामुग्री भोग धरी ॥ ओर इंद्रनें जलकी सेवा कीनी ॥ यह मानिकें अनुग्रहही कीये ॥ याहीतें श्रीगोवर्धननाथजी आप परम दयालहें ॥ एसी दया विना जीवको अंगिकार न होय ॥ पाछें श्रीगोवर्धननाथजीनें श्रीआचार्यजीमहाप्रभूनकों आग्या दीनी ॥ जो अब तुम मेरी सेवाको प्रकार प्रगट करो ओर मोकों पाट वेठावो ॥ सेवा बिनाँ पुष्टिमार्गमें देवीजीवनको अंगिकार न होईगो ॥ याहीतें में प्रगट भयोहूं ॥ तब आपनें श्रीगोवर्धननाथजीकों पाट वेठाएवेकों ॥ तत्काल एक छोटोसो मंदिर सिद्धि करवाई श्रीगोवर्धननाथजीको पाट वेठाये ॥

❀ (वार्ताप्रसंग ९ मों) ❀

अपछरा कुंडकेऊपर एक गुफाहे ॥ वामें रामदास चोहान रहते ॥

ओर सदा भजन करते ॥ तिननें श्रीआचार्यजीके दरसन कीये ॥ ओर वीनती कीये ॥ जो महाराज मेरो अंगिकार करिये ॥ मेंतो आपकेलियें वोहोत दिनातें श्रीगोवर्धनकी कंदरामें तपस्या करत हतो ॥ सो मेरो तप आज सफल भयो हे ॥ तब आप श्रीआचार्यजीने रामदासजीको अंगिकार कीये॥ पाछें आप रामदाससों कहें ॥ जो श्रीगोवर्द्धनपर्वत मेंतें श्रीगोवर्धननाथजी प्रगट भए हें ॥ सो इनकी सेवा तुम करो ॥ तब रामदासजी कहें जो महाराज मेंतो कबहू सेवा नाँही कीनी ॥ सो केसें करूँगो ॥ तब आप श्रीमुखतें कहें ॥ जो तुमकों सब सेवा श्रीगोवर्धननाथजी आप सिखावेंगे ॥ पाछें आपने मोरकी चंद्रिकाको मुकट सिद्धि करवायो ॥ ओर पीतांबर काछनी सिद्धि करवायकें आप श्रीआचार्यजीनें गोवर्धननाथजीको सिंगार कीयो ॥ तातें श्रीगोवर्धननाथजी आप वोहोत सुंदर दरसन दीये॥ तब आचार्यजी आप रामदाससों कहें ॥ जो नित्य तुम सवारे गोविंदकुंडमें स्नान करि आयो करियो ॥ ओर एक गडुवा जल भरि लायो करियो ॥ तासों श्रीगोवर्धननाथजीकों स्नान करवाईयो ॥ पाछें अंगवस्त्र करिकें यह सिंगार जो हमने कीयोहे ॥ एसो नित्य करियो ॥ ओर जो तुमकों भगवदइच्छातें आइ प्राप्त होई ॥ सो नित्य भोग धरियो ॥ तातें तूम निर्वाह करियो ॥ दूध दही माँखन तो ये व्रजवासी लोग धरतहीहें ॥ ओर नित्य नेग बताइदीयो ॥ पाछें आपनें सदुपाँडेसों तथा मानिकचंदपाँडेसों ओर आन्योरमें जो सेवक भये हते ॥ तिन सबनसों कही॥ जो मेरो यह सर्वस्वहे ॥ इनकी तुम सेवा सावधानतासों करियो ॥ चोकी पहराको उपद्रव होई तो ॥ सब बातसों सावधान रहियो॥ एसी आग्या देकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभू आप व्रज यात्राकोंपधारे॥२० वर्षताइ रामदासजीनें गिरिराजपे श्रीकीसेवा कीनी॥

❀ (वार्ताप्रसंग १० मों) ❀

सो संकेतवटके नीचे आपकी बेठक प्रसिद्धि हे ॥ सत्र कोऊ वेष्णव उहां दही भोग धरतहें ॥ तहां श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप विराजे ॥ तव आप अपनें मनमें विचारी जो या समें दही होयतो श्रीठाकुरजीकों समर्पें ॥ सो आपके मनकी प्रभूदास जलोटाक्षत्रीनें जाँनीं ॥ सो तत्काल उठकें ॥ गाममें गये ॥ सो गाममेंतें दही लेकें वाकों मुक्ति दीनी ॥ सो प्रभुदासकी वार्तामें प्रसिद्ध हे ॥ तहां श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आपनें सेवकको सिद्धांत प्रगट कीयो ॥ वो दही आपनें श्रीठाकुरजीकों समर्प्यों ॥ वह दही अति सवाद लाग्यो ॥ ओर श्रीआचार्यजीनें अपनें सेवकके हाथ मुक्ति दिवाई ताको कारन यंह जो आपके मनमें आई ॥ जो मेरे सेवकनको माहात्म्य जगतमें प्रगट करूं ॥ यामें यह सिद्ध भयो जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवकनमें यह सामर्थ्य हे ॥ जो मुक्ति देतहें ॥ जो ब्रह्मादिकनसों न दीनीं जाय ॥ सो भगवदी देतहें ॥ जेसें गदाधरदासनें माधवदासकों भक्ति दीनी ॥ एसें श्रीआचार्यजीनें अपने सेवकनको प्रभाव जगतमें प्रगट कीयो ॥

❀ (वार्ताप्रसंग ११ मों) ❀

ओर एकसमय आप श्रीगोवर्धनकी तरहटीमें श्रीगोवर्धनपूजाकी ठोर पुजनीं सिलाके पास एक छोंकरको वृक्षहे ॥ तहां पोढे हुते ॥ ओर दामोदरदासहरसानींकी गोदमें श्रीमस्तक धर्‌यो हतो ॥ इतनेंमें तहां श्रीगोवर्धननाथजी पधारे ॥ तव दामोदरदासनें हाथसों वरजे ॥ तातें आप उहांई ठाढे होईरहे ॥ तव श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप जागिपरे ॥ सो देखें तो श्रीगोवर्धननाथजी आप ठाढेहें ॥ तव आप श्रीआचार्यजीमहाप्रभु उठिके कहें जो पधारिये॥ तव श्रीगोवर्धननाथजी कहें जो तुमारो सेवक मोकों वरजेहे ॥ तव श्रीआचार्यजी आप दामोदरदा-

ससों कहें जो दमला तेनें क्यों बरजेहे ॥ तब वानें कह्यो ॥ जो महाराज आप जागिपरो ॥ ताकेलीयें बरजेहे ॥ तब आप दामोदरदाससों खीजे तातें श्रीगोवर्धननाथजी कहें ॥ जो में या केऊपर प्रसंनहों ॥ तुम यासों मति खीजो ॥ इनकों एसोही चाहिये सेवकको एसोही धर्म हे ॥ तब श्रीआचार्यजी आप दामोदरदासके ऊपर बोहोत प्रसंन भये ॥ दामोदरदास एसे भगवदीयहे ॥ तब आपसों श्रीगोवर्धननाथजी श्रीमुखसों कहें ॥ जो मोकों नूपुर बनवाई देऊ ॥ तब आप वाहि बिरियां तुरत जो राजा कृष्णदेवकी भेट मेंतें ७ सुवर्ण मोहोरें देवीद्रव्यकी हती ताको अंगिकार किये हुते ता मोहरनको सुवर्ण देकें एक वैष्णवकों मथुरां पठायो ॥ ओर वासों कह्यो जो याके वेगि नूपुर बनवाय लाउ ॥ तब वहो वैष्णव वेगि नूपुर बनवाय लायो सो नूपुर लेकें आपनें श्रीगोवर्धननाथजीकों समर्पे ॥ सो नूपुर बोहोत सुंदर बाजे ॥ तातें श्रीगोवर्धननाथजी बोहोत प्रसन्न भए ॥ सो बोहोत सुंदर दरसन दीये ॥ तेसो तो मुकट काछनीको सिंगार ओर तेसोंई नूपुरको शब्द ॥ दरसन करे ताको मन हरि लेई ॥ ओर व्रजवासीनके लरिकानमें आप खेलें ॥ जेसें वे लरिका खेल करें तेसें उनके संग अनेक क्रीडा संवत १५४५ की सालसों संवत १५७६ ताँई वर्ष ३० पर्यंत श्रीगोवर्धननाथजीनें करी ॥ ७ ॥ ७ ॥

❀ (वार्ताप्रसंग १२ मों) ❀

दूसरो साधूपाँडे करकें पास एक व्रजवासी गृहस्थ रहतो ॥ वाके घरमें समृद्धी ओर गाय भेंसें बोहोत हतीं ओर कुटुंबहू बोहोत हो ॥ बेटा बेटी बहू नाँती बहुत हुतीं ॥ सो सब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी शरणि आये ॥ वे आपके अनुग्रहतें केसे भगवदी भये ॥ जो जिनके घर श्रीगोवर्धननाथजी आप पधारें ॥ वाके घरमें एक डोकरी बोहोत वृद्ध हती ॥ जो सवारें वाकी बहू बेटी बिलो-

मनों करें सो सब माँखन भेलो करिकें वा डोकरीके आगें लाय धरें ॥ तब वह डोकरी घरमें जितनें बालक बहू वेटी हती ॥ तिन सबनकों कलेउ देइ ॥ वा डोकरीकों दृष्टिबल थोरो हतो ॥ सो जो लरिका आवे ताको नाँम पूछीकें देइ ॥ तब उन लरिकाँनके संग श्रीगोवर्धननाथजी हू आवें ओर आप कहें ॥ जो अरी मोकोंहू देरी ॥ तब वह डोकरी रोटीऊपर माँखन धरिकें देइ ओर पूछे जो अरे तेरो नाँम कहाहे ॥ तब आप कहें जो अरी मेरो नाँम देवदमन हे ॥ तब वह डोकरी कहे जो अरे तूं पर्वत उपर रहतहे सो हे ॥ तब आप कहें जो हाँ ॥ तब वह कहे जो अरे देवदमन तूं मेरे घर आयकें नित्य कलेउ करि जायो करि ॥ वह डोकरी श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी कृपातें एसी भागिशील भई ॥ जाकेउपर श्रीगोवर्धननाथजी एसो अनुग्रह करते ॥ ताको कारण यह ॥ जो वह डोकरी सूधी बहुत ही ॥ कछू अपनें मनमें प्रपंच तो संपनेहूमें समझे नाहीं ओर भक्तिमार्गकी तो यह रीतिही हे ॥ जो प्रपंच तें दूरि रहे ॥ तो श्रीठाकुरजी अनुग्रह करें ॥ जाकों प्रपंच सपनेहू नाँहीं ॥ वे परमाधिकारी हे ॥ तातें श्रीगोवर्धननाथजी आप वा डोकरी तें साक्षात वातें करते ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (वार्ताप्रसंग १३ मों) ❀

तापाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप श्रीगोवर्धननाथजी पे आग्या माँगि श्रीगोकुल पधारे ॥ आपके कृपापात्र दामोदरदास प्रभृती वैष्णव सब संग हे ॥ तब आप अपनें मनमें विचारें ॥ जो पृथ्वी पावनकों चलनों ॥ क्यों जो देवीजीव तो अनेक ठोर हें ॥ सर्वत्र दूर देशांतरमें हें ॥ तातें आप फिर पाछे पृथ्वीप्रदक्षिणाकों श्रीगोकुल पधारे ॥ सो गोविंदघाटके उपर छोंकरके नीचें एक चोतरा हे ॥ ताके उपर आप बिराजे ओर सब सेवक पास ठाढेहे ॥ इतनेंमें एक बेरागी आयो वाके पास सालिग्रामको बटु-

वा हतो ॥ सो वानें वटुवा छोंकरसों लटकायदीयो ॥ ओर कपडा श्रीयमुनाजीके तीर धरे ॥ ओर आप श्रीयमुनाजीमें स्नान करन लाग्यो ॥ इतनेंमें स्नान करिकें जव आयो ॥ तव देखे तो सालिग्रामके वटुवा तहाँ नाहीं ॥ तव वा वेरागीनें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों कह्यो ॥ जो महाराज इहाँ मेरो वटुवा हतो सो नाँहींहे ॥ काहू आपके सेवकनें लीयो होय तो मेरो दिवाई दीजिये ॥ तव आप कहें ॥ जो हमारो सेवक तेरो वटुवा काहेकों लेइगो ॥ तूं जाहां धन्योहोई तहां देखिले ॥ इतनेमें देखे तो सगरो छोंकर वटुवानसों भन्योहे ॥ तव फेरि आयकें वानें आप सों कह्यो जो महाराज छोंकरतो सव वटुवानसों भन्योहे ॥ तव श्रीआचार्यजी आप कहें ॥ जो तेरो तूं उतारि ले ॥ तव वह वेरागी वटुवा उतारिवे लाग्यो ॥ सो देखे तो एकही वटुवा हे ॥ सो वानें उतारि लियो ॥ वा वेरागीकों आपनें एसो माहात्म्य दिखायो ॥ परि वह देवीजीव हतोनाहीं ॥ जो देवीजीव होतो तो शरणि आवतो ॥ इतनों श्रीआचार्यजी आपनें अपनों माहात्म्य अपनें सेवकनकों हूं दिखायो ॥ वा छोंकरके वृक्षको नाँम ब्रह्मछोंकरहे ॥ वाके पात पात भगवदी रूप हें ॥

❀ (वार्ताप्रसंग ३४ मों) ❀

पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप विचारें ॥ जो होइतो प्रथम काशी चलें ॥ उहां मायावादी वाहोत हें ॥ ओर शिवकी पुरी हे ॥ सो सव जीव शिवमायातें मोहित होय भगवानतें वहिर्मुख हें ॥ तातें काशी चलकें ॥ विन मायावादीनको खंडन करें ॥ तव सव वेष्णवनकों संग लेकें आप काशी पधारे ॥ सो गंगातीरपे मणिकर्णिका घाट उपर स्नान करिकें विराजे ॥ ता समय उहां वडे वडे पंडित स्नान करिवेकों आये हे ॥ विननें जानी जो ये वडे पंडित हें ॥ तातें वे चर्चा करनलागे ॥ सो वा

चर्चामें आपनें सबनकों निरुत्तर कीये ॥ मायामतको खंडन कीयो ॥ भक्तिमार्ग सिद्ध कियो ॥ ता समें सेठि पुरुषोत्तमदास क्षत्री हू ठाढे हते ॥ सो उहांके वे नगरसेठि हते ॥ वे मणिकर्णिका उपर स्नान करवेकों आये हते ॥ तहां विनकों श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको दरसन साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमको भयो ॥ तातें सेठि पुरुषोत्तमदासनें आपकों साष्टांग दंडवत करिकें वीनती कीनीं ॥ जो महाराज मोंपर कृपा करिकें अपनों करिये ॥ तब श्रीआचार्यजीनें विनकों नाम दीयो ॥ ओर ब्रह्मसंबंध करवायो तब सेठिनें वीनती कीनी ॥ जो महाराज मोकों आपके स्वरूपकी सेवा पधराइ दीजीये ॥ तब आपनें श्रीगंगाजीमें श्रीहस्त डारकें एक श्रीठाकुरजीको स्वरूप निकासकें शेठि पुरुषोत्तमदासजीकों सेवाके लियें पधराय दीयो ॥ ओर कही जो यह मेरो स्वरूप हे वा स्वरूपकों जनोइ ओर पादुकाजी हें (सो स्वरूप अद्यापी मारवाडदेशके जोधपुर में विराजें हें) पाछें शेठजीनें कही जो महाराज मेरो गृह पावन करवेकों पधारिये ॥ तब आप अनुग्रह करिकें सब भगवदीनकों संग लेकें सेठके घर पधारे ॥ तब सेठिके घरके सब कुटुंबी सेवक भये ॥ सबनको आपनें अंगीकार कीयो ॥ तब सेठि बहुत प्रसंन भये ॥ सब पात्र सामग्री सिद्धि करिकें श्रीआचार्यजीके आगें धरी ॥ तब आप कृपा करिकें सेठिके घर श्रीमदनमोहनजीकों भोग समर्प्यो॥पाछे भोग सराय आप भोजन कीये ॥ तथा सब सेवकननेंहुं महाप्रसाद लीयो ॥ ओर उहांई सेठि पुरुषोत्तमदासके घरमें आप विराजे ॥ तातें सेठिके घरमें आपकी बेठक प्रसिद्ध भई ॥ सो सब पंडित उहांई चर्चा करिवेकों आवते ॥ सो बडे बडे स्मार्त ओर मायावादी उहां नित्य आयकें झगडा करें ॥ तिन सबनकों आप निरुत्तर करिकें पठावें ॥ तब एक दिन श्रीआचार्यजी आप

मनमें विचारें ॥ जो एसें तो मायावादी आयकें बहुत दुःख देत हें ॥ तातें कोन कोन सों माथो पचाईये ॥ तब आप एक "पत्रावलंबन" ग्रंथ कीयो ॥ सो ग्रंथ एक पत्रपर लिखिकें एक वेष्णवकों दीयो ॥ ओर कहें जो यह पत्र ले जाइकें विश्वेश्वर महादेवजी के मंदिरकी भीतिसों लगाय आउ ॥ ता पत्रके नीचें आप लीखे ॥ जो यापत्रकों बांचिकें ता पीछें हमसों चर्चा करिवेकों आईयो ॥ सो पत्र श्रीविश्वेश्वरजीके मंदिरपे लगायो ॥ सो उहां सब मायावादी दरसनकों आवें ॥ सो वो पत्र देखें तब जो उनके मनमें संदेह होई ॥ ताको प्रतिउत्तर ताहीमें मिले ॥ सो गोपालदासजी वल्लभाख्यानमें गाये हें (पत्रावलंबे पंडित जीत्या गज मायक मत्त मातंग, श्रीकृष्ण पूरणब्रह्म स्थाप्या जेनो रुप कोटि अनंग) सो वो पत्र बांचे पाछें कोई कोई मायावादी आपके पास जाय ॥ एक दिन श्रीआचार्यजीके सेवक विष्णुदासछीपा द्वारपालनें यह विचारी ॥ जो सब मायावादी आयकें आपकें श्रम करवावतहें ॥ सो वाकों आछो न लग्यो ॥ तातें मायावादी केसोई पंडित होई ॥ जो आवे वासों द्वारपाल पूछे जो तुम क्यों आयेहो ॥ तब वह कहें जो में श्रीआचार्यजीसों चर्चा करिवेकों आयोहूं ॥ तब विष्णुदास कहे ॥ जो तुम क्हा पढेहो ॥ तब वह बतावे ॥ तब ताहीकों श्रीमहाप्रभुनकी कृपावलोकनसों विष्णुदास दूषण देई ॥ तब वह पंडित निरुत्तर होईकें जातोरहे ॥ पत्रावलंबन ग्रंथहू याहीके लियें आप कियो ॥ जो बहिर्मुखनसों बेर बेर संभाषण करनों न पडे ॥ पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु सेठि पुरुषोत्तमदासके घर सुखसों विराजते ॥ सेठि पुरुषोत्तमदासके घर समृद्ध बहुत ही ॥ तासों वो आपकी सेवा बोहोत भली भाँतिसों करे ॥ ओर तेंसेंही आपके संग ॥ दामोदरदासहरसानी. कृष्णदासमेघन. प्रभृति बहुत भगवदी हुते ॥ तिनहूंकी

सेवा वो सेठि आछी भाँतिसों करे ॥ ओर तेसीही श्रीमदनमोहनजीकी सेवा बोहोत भली भाँति करे ॥ सेठिके उपर श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको एसो अनुग्रह हतो ॥ तीनि वस्तु जो चाहिये ॥ सो तीन्यों वस्तु आपनें वा सेठिकों दीनीं ॥ १ ॥ भगवत्सेवा ॥ २ ॥ गुरु सेवा ॥ ३ ॥ भगवदीकी सेवा ॥ पाछें काशीमें जो देवीजीव हते ॥ सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी शरणि आये ॥ सो काशीमें आप केतके दिन विराजे ॥ एसेमें जन्माष्टमीको उत्सव आयो ॥ तब आप अपनें मनसें विचारें ॥ जो अवतारतो श्रीठाकुरजीके सबही हें ॥ परि कृष्णावतार सब अवतारनको मूलहे ॥ सब अवतार इनहीं सों भये हें ॥ सो श्रीभागवतमेंकेंहेंहें ॥ (एते चांशकलाः पुंसः कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्) तातें श्रीकृष्णावतार सब अवतारनमें हमारो सर्वस्व हे ॥ ओर हमारे सेव्य हें ॥ पुष्टिमार्ग इनहीं तें प्रगट भयो हे ॥ सो पुष्टिमार्ग यह जो व्रजभक्तनको स्नेह तातें नंदमहोत्सव आपनें प्रगट करिवेकी इच्छा कीनीं ॥ सो काहेतें जो नंदमहोत्सव आप प्रगट न करे ॥ तो दैवीजीव कहा जाने ॥ जो श्रीनंदरायजीके घर केसो उत्सव भयो हो ॥ श्रीशुकदेवजीनें तो राजा परीक्षितसों कहिकें बतायो ॥ ओर श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आपनें तो अपनें सेवक दैवीजीवननकों साक्षात् नंदनमहोत्सवके दरसन करवाये ॥ ता समें शेठि पुरुषोत्तमदासके घरमें एक कुवा हतो ॥ तामें तें श्रीनंदरायजीवगेरे व्रजभक्तनके स्वरूप प्रगट भये ॥ ओर श्रीठाकुरजी तो पालनां झूलेहे ॥ श्रीजसोदाजी झुलावेहें ॥ ओर व्रजभक्त श्रीनंदरायजी समेत गोप संग नृत्य करे हें ॥ एसो उत्सव श्रीमदनमोहनजीके आगें आपने प्रथमही सेठि पुरुषोत्तमदासके घर प्रगट कीयो ॥ काहेतें जो बोहोत संमृद्ध विनाँ एसो उत्सव बनि न आवे ॥ सेठिके घर जो वस्तु चहिये सो सब सिद्धि ॥ तासों

नंदमहोत्सव उत्तम प्रकारसों भयो ॥ सेठिके उपर आपको एसो अनुग्रह हतो ॥ तासों सेठि पुरुषोत्तमदासकों आपनें ओरनकों नाम देवेकी आग्या दीनीं ॥ सो याते जो हमतो जब फेरि भगवद इच्छा होयगी तब आवेंगे ॥ ओर देवीजीवतो वोहोतहें ॥ तिन सबनको अंगीकार करनोंहे ॥ तातें सेठिनकों नॉम देवेको अधिकार दीयो ॥ सो आग्या देकें आप श्रीजगन्नाथरायजीके दरसनकों पधारवेकी इच्छा कीये ॥ कारण विन देसनमें हूँ देवीजीव वहुत हें ॥ तिनको हू उद्धार करनों हो ॥ ओर पृथ्वीको पावन करनी ही ॥ तीर्थनकों सनाथ करनें हे ॥ मायामत खंडन करनों हो ॥ ओर भक्तिमार्गको स्थापन करनों हो ॥ ताकेलियें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप श्रीकाशीतें मार्गसीर्षवदी ७ शनी वारके दिन श्रीजगन्नाथरायजीकेआडी पधारे ॥ ७ ॥　　॥ ७ ॥

❀ (वार्ताप्रसंग १५ मों) ❀

श्रीजगन्नाथपुरी सबते वडी पुरीहे ॥ पुरुषोत्तमक्षेत्र हे ॥ सब पृथवीमें प्रसिद्ध हे ॥ जहां पूजाको बडो प्रकार हे ॥ ओर वो देश मायावादीनसों आछादित हे ॥ तासों आप श्रीआचार्यजीमहाप्रभु श्रीजगन्नाथजी पधारे ॥ तादिनॉ एकादशीको दिन हतो ॥ सो आप जब पुरीमें मंदिरके निकट पधारे ॥ तब कोउएक महाप्रसाद ले आयो ॥ उहॉ महाप्रसादको माहात्म्य वोहोत हे ॥ तातें श्रीठाकुरजीके दरसन तो पाछें ओर महाप्रसाद पहलें ॥ ओर आपकीतो यह प्रतिज्ञा ही ॥ जो एकादशीके दिनतो जलहूं न लेंनों ॥ ओर वानेतो आयके महाप्रसाद दीयो ॥ सो आपनें श्रीहस्तमें लीयो ॥ आपतो साक्षात् ईश्वर हें ॥ तातें वेद पुराणनमें जहां जहांके महाप्रसादके माहात्म्यके श्लोक हते ॥ सो आप श्रीमुखते कहिवेलागे. ॥ सो कहत कहत एकादशीको दिन तथा सब रात्रि व्यतीत भई ॥ जब सवारो भयो ॥ तब

स्नान संध्याकी कछू मनमें बाधा न राखी ॥ ओर महाप्रसाद लीयो ॥ पाछें श्रीजगन्नाथरायजीके दरसन कीये ॥ सो वा पुरुपोत्तमपुरीमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको माहात्म्य देखिकें सबकोउ कहें ॥ जो एतो साक्षात् ईश्वर हें ॥ मनुष्यदेहमें तो यह विद्या न देखी न सुनी ॥ चार्‍यो वेद, पुराण, सब शास्त्र जिनके जिभ्याग्र हें ॥ एसें सबकोउ कहे ॥ सो ए समाचार उहांके राजा भोजदेवनें सुने ॥ तब आप आयकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके दरसन किये ॥ ओर बहुत प्रसंन भयो ॥ ओर कह्यो जो मेरो बडो भाग्यहे ॥ जो मोको यह दरसन भयो ॥ ओर आप श्रीआचार्यजीसों वीनती कीनी ॥ जो महाराज इहां हमारे देशमें ब्राह्मणनमें वैष्णवसंप्रदायी ओर मायावादीनको आपुसमें क्लेश हे ॥ सो मिटत नाहीं ॥ ए नित्य लरेंहें ॥ आप साक्षात् ईश्वर हें ॥ सो यह ब्रँह्मक्लेश मिटाय देऊ ॥ आप विनॉ एसी सामर्थ्य काहूकी नाहीं ॥ ओर काहूसों यह झगडो नहीं निवडेगो ॥ तब श्रीआचार्यजी आप कहें ॥ जो तुमारो मनोर्थ होइगो ॥ सो सब श्रीठाकुरजी सिद्धि करेंगे ॥ प्रभु सर्व सामर्थ्य सहित हें ॥ ओर भक्त मनोर्थ पूर्ण कर्ता हें ॥ यह बात सुनिकें राजा भोजदेव बहुत प्रसन्न भयो ॥ तब श्रीआचार्यजी आप राजासों कहें ॥ जो तुमारे इहां जितनें ब्रॉह्मण हें ॥ तिन सबनकों एकत्र करो ॥ ओर उनमें जो बडे बडे पंडित होंय ॥ सो आइकें हमसों चर्चा करें ॥ तब राजानें सब ब्रॉह्मण बुलाये ॥ सो सब आयकें श्रीजगन्नाथरायजीके मंदिरमें भेले भये ॥ वैष्णव स्मार्त ओर बडे बडे मायावादी पंडित ॥ ओर राजा भोजदेवहू आप आय बेठ्यो ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आपहू मंदिरमें पधारे ॥ तिनके सबनकों दरसन एसे भए जो साक्षात् सूर्य अग्निकोपुंज तेजोमय देखे ॥ तब विन ब्रॉह्मणनमें जो बडे बडे पंडित हते ॥ सो सब चकित होय श्रीआचार्यजी-

महाप्रभुनसों चर्चा करन लागे ॥ सो वे जो जो युक्ति लावें ॥ सो ता सबनको आप खंडन करें ॥ तब वे सब निरुत्तर होइँ ॥ सो सवारेके बेठे ॥ तीनि प्रहर तांई श्रीआचार्यजी आप विराजे ॥ ओर राजाहू बेठ्यो रह्यो ॥ परि दुराग्रहसों झगडा चूके नाहीं ॥ तब श्रीआचार्यजी आप उन ब्राँह्मणनसों कहें ॥ जो हमारे तुमारे वाद हे ॥ ताको श्रीजगन्नाथरायजी लिखि देइं सो प्रमाण ॥ तब राजा ओर ब्राँह्मण कहें ॥ जो महाराजाधिराज श्रीजगन्नाथरायजी केसें लिखेंगे ॥ तब आप श्रीमुखतें कहें ॥ जो तुम भोग धरतहो ॥ सो श्रीजगन्नाथरायजी आरोगत केसें हें ॥ तेसेंहीं आपके आगें कोरो कागद ओर लेखन द्वात धरि आवो ॥ ओर वीनती करि आवो जो महाराज साँचो मार्ग होय सो लिखोगे ॥ सो जो मार्ग साँचो होइगो सो आप लिखि देइंगे ॥ तब यह बात सुनिकें राजाकों आश्चर्य भयो ॥ तब श्रीआचार्यजी आप राजासों कहें ॥ जो मंदिरमें सेवक पंडा होइ ॥ तिन सबनकों बाहिर काढो ॥ ओर यह कागद लेखन द्वाति लेकें तुम जाइकें श्रीजगन्नाथरायजीके आगें धरि आओ ॥ वा पत्रमें चार प्रश्न आपनें लिखे हते सो प्रश्न ॥ १ परमार्थको साधनभूत मुख्यशास्त्र कोंन सो ॥ २ मुख्य सेव्य देवत्य कोंन ॥ ३ मुख्य मंत्र कोंन ॥ ४ मुख्य कर्म कोंनसो ॥ असे चार प्रश्न हे ॥ सो सबनकों दिखाय आप श्रीआचार्यजीनें राजा भोजदेव सों आग्या किये ॥ जो यह पत्र तुम श्रीजगदीशके आगें धरि उत्तरकी विनती करो ओर किंवार देकें तुम द्वारपे बेठो ॥ सो जब हम कहें ॥ तब तुम किंवार खोलियो ॥ सो जा भाँति श्रीआचार्यजी आपनें कह्यो ॥ ताही भाँति राजानें कीयो ॥ जब श्रीजगन्नाथरायजी लिखिचुके ॥ तब श्रीआचार्यजी आप राजासों कहें ॥ जो अब किंवार खोलो ॥ ओर वो पत्र ले आओ ॥ तब राजा

किंवार खोलिकें देखे तो श्रीजगन्नाथरायजीके आगें कागद लिख्यो धन्योहे ॥ तब श्रीआचार्यजी आप राजा भोजदेवसों कहे ॥ जो यह सब ब्राँह्मणनकों दिखाओ ॥ तब राजाभोजदेवनें वह कागद सब ब्राँह्मणनकों दिखायो ॥ जो वामें लिखे हते सो श्लोक—

एकं शास्त्रं देवकीपुत्रगीत-
मेको देवो देवकीपुत्र एव ॥
मंत्रोप्येकस्तस्य नामानि यानि,
कर्माप्येकं तस्य देवस्य सेवा ॥ १ ॥
वेदा श्रीकृष्णवाक्यानि, व्याससूत्राणि चैव हि ॥
समाधिभाषा व्यासस्य, प्रमाणं तच्चतुष्टयम् ॥ २ ॥

याको भावार्थ जो श्रीदेवकीजीके पुत्र भगवान् श्रीकृष्ण ताकी कथित जो श्रीमद्भगवद्गीता सोइ एक शास्त्र ॥ ओर श्रीदेवकीजीके पुत्र श्रीकृष्ण वोही एक देवता ॥ ओर वाहीको नॉम वोही एक मंत्र ॥ वोही एक कर्म हे जो वा देवताकी सेवा ॥ यामें प्रमॉण वेद, श्रीगीताजी, व्याससूत्र, ओर श्रीभागवत के हें ॥ यह लेख श्रीजगन्नाथरायजीके हस्ताक्षरको देखिकें सब प्रसन्न भये ॥ ओर कहें जो यह लिख्यो सांचो हे ॥ यह वचन हमारे माथेपर हें ॥ तब सबकोउ श्रीआचार्यजीकी स्तुति करन लागे ॥ ओर कहें जो धन्य ए हें ॥ जिनकी आग्यामें श्रीठाकुरजी एसे हें ॥ जो ए कहें सो करें ॥ तब वैष्णवमार्ग तो सत्य भयो ॥ ओर मायामतको खंडन भयो ॥ तब राजा भोजदेव बहुत प्रसन्न भयो ओर कह्यो जो महाराज आप, साक्षात् ईश्वर हो ॥ यह ब्रह्मक्लेश आप विनॉ काहुसों न मिटतो ॥ तब इतनेमें एक ब्राँह्मण बडो मायावादी हतो ॥ सो बोल्यो जो हमारेतो यह लिख्यो प्रमॉण नहीं ॥ हमारे तो परंपरा हे ॥ सो करेगे ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप वा राजासों कहें ॥ जो जाकों भगवद्वाक्य-

पर विश्वास न होई ॥ ताकों म्लेच्छ जानिये ॥ तातें तुम राजा हो सो निश्चें करो ॥ याकी मातासों पूछो जो यह कोनको वीर्य हे ॥ यह ब्रॅह्मवीर्यतो सर्वथा न होई ॥ ताको प्रमॉण श्लोक-

यः पुमान् पितरं द्वेष्टि, तं विद्यादन्यरेतसम् ॥
यः पुमान् भगवद्वेषी, तं विद्यादन्यरेतसम् ॥ १ ॥

यांको भावार्थ यह जो अपनें पिताको ओर भगवानको द्वेष करे वो सर्वथा दुसरे के वीर्यसे उत्पन्न भयो हे ओसें जाननो ॥ तव राजाकों वहुत वुरो लाग्यो ॥ तातें वाकी माताकों वुलाइ ॥ ओर एकांतमें पूछी जो तुँ सांच कहि ॥ यह तेरो वेटा कोनतें उत्पन्न भयो हे ॥ नॉतर तेरो प्रॉण जाइगो ॥ एसो वाकों भय दिखायो तव वानें धोवीको वीर्य वतायकें भयो हतो सो सव वृत्तांत कह्यो ॥ तव राजानें वा ब्रॉह्मणकों देशपार करवायादियो ॥ पाछें शाक्तमत्तवारे जो ॥ वहां भैरवीचक्रहे ओसें कहतहते तिन सवनको हू परास्त करकें भगवत् प्रसादको माहात्म्य विख्यात कियो तातें ओर सव ब्रॉह्मण कहें ॥ जो धन्य श्रीआचार्यजी महाप्रभु हें ॥ जिननें अपनों मार्ग श्रीजगन्नाथरायजी आपपेसुं स्थापन करवायो ॥ मायामतको खंडन कियो ॥ एसो आपको माहात्म्य देखिकें देवीजीव वहुत हुते ॥ सो सव शरणि आये ॥ जिनके लियें तो आप पधारेही हते ॥ सो कछूकदिन उहां रहिकें श्रीआचार्यजी आप विदा होइवेके लियें श्रीजगन्नाथरायजीके पास पधारे ॥ तव मंदिरमें मेघगर्जनांके जेसो वडो भारी घोर शव्द भयो ॥ सो सुनतेंही पंड्या ब्रॉह्मण सव मंदिरतें निकसि भागि ठाडे भये ॥ ओर मंदिरको द्वार वंद होगयो ॥ केवल श्रीआचार्यजी आप इकेले मंदिरमें रहे ॥ तिनसों श्रीजगन्नाथजी आग्या किये ॥ जो तुमनें सेवामार्ग प्रगट कियो सो मोकों वोहोत प्रियहे ॥ अव अपनें वंशद्वारा सेवामार्गको प्रचार वि-

स्तारपूर्वक प्रगट करो ॥ ओर जो तुमनें श्रीकृष्णप्रेमामृत ग्रंथ कियो हे सो हमारे प्रिय भक्त कृष्णचैतन्यकों देउ ॥ ओर जयदेवकृत गीतगोविंद ग्रंथको प्रचार अपनें मार्गमें करो ॥ ओर जो वैंताकको साक तुमनें निषिद्ध कियो हे ॥ सो प्रचलित करो ॥ तब आपनें आग्या प्रमाण कहके साष्टांग डंडोत करकें किंवाड खोल श्रीआचार्यजी आप बाहिर पधारे ॥ तब सबनकों बडो आश्चर्य भयो ॥ पाछें वहांतें आप पृथवी पावन करिवेकों आगें पधारे ॥

❀ (वार्ताप्रसंग १६ मों) ❀

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप दक्षणदेशकों पधारे ॥ तब भगवदी दामोदरदास, कृष्णदासमेघन प्रभृति ओरहू वैष्णव आपके संग हे ॥ सो एकदिन मार्गमें जात देखें तो एक बडो अजगर मऱ्यो पड्यो हे ॥ ओर वांकूं लक्षावधि चेंटां लगे हें ॥ सो वह आपकी दृष्टि पऱ्यो ॥ ताकों देखिकें आप आगें मार्गमें पधारे ॥ नित्य तो मार्गमें पधारते ॥ तब तो कथा वार्ता कहत पधारते ॥ ओर वादिन तो आप कछू बोले नाँहीं ॥ जहाँ उतारेको गाँम हतो ॥ तहाँ आप पधारे ॥ तहाँ स्नान करिकें पाककी सिद्धता कीये ॥ परि काहूसों आप बोले नाँहीं ॥ पाक सिद्धि भये पाछें श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यो ॥ पाछें भोग सराय आप भोजन कीये ॥ तोहू काहूसों बोले नाहीं ॥ तब दामोदरदासनें वीनती कीनीं ॥ जो महाराज आपके चरणारविंदसों ए सब सेवक लगेंहें ॥ एतो सब अपनें घर द्वार छोडिकें आपके संग आये हें ॥ सो आपके वचनाँमृत सींचें विनाँ केसें जीवेंगे ॥ तब श्रीआचार्यजी आप कहें ॥ जो दमला तेनें सवारे वह अजगर देख्योहो ॥ जो मऱ्यो पऱ्यो हो ॥ ओर वाकें चेंटा लगे हे ॥ तब वानें कह्यो ॥ जो महाराज हॉ देख्यो हो ॥ तब श्रीआचार्यजी आप कहें ॥ जो वह अजगर पीछले जन्ममें महंत हतो ॥

तानें उदर भरणार्थ जीविका चलायवेकों सेवक वोहोत किये हते ॥ परि उनकों कृतार्थ करिवेकी तो सामर्थ्य न हती ॥ भगवत्सेवा भगवन्नाम होयतो जीव कृतार्थ होइ ॥ सो यह तो केवल उदर भरणके लियेंहीं महंत भयो हतो ॥ सो मरे पीछें अजगर भयो हो ॥ ओर वे सब सेवक चेंटा भये हें ॥ सो वांकों खात हें ॥ ओर कहत हें ॥ जो अरे पापी तोमें कृतार्थ करवेकी सामर्थ्य न हुती ॥ तो हमकों सेवक काहेकों कीयो ॥ हमारो जमारो वृथा काहेकों खोयो ॥ सो वाकों देखिके मोकों ग्लानि आई हे ॥ तब दामोदरदासनें कही ॥ जो महाराज आप एसी काहेकों विचारत हो ॥ आप तो साक्षात् पूर्ण पुरुपोत्तम हो ॥ आपके नाँमको जो जीव एकवारहूँ स्मरण करेगो ॥ ताके पाप सब भस्म होई जाइँगें ॥ आपतो साक्षात् अग्निरूप हो ॥ अग्निके संबंधतें कछू दोप रहत नाँहीं ॥ यह बात श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप याहीकेलियें प्रगट कीयें ॥ जो जीव शरणि जाइ सेवक होइ सो गुरुने अपनो सामर्थ्य विचारकें सेवक करनें ॥ एसो सिद्धांत प्रगट करिवेकेलियें आपनें यह वार्ता प्रगट किये ॥ तातें सर्वगुणसंपंन गुरू तो एक श्रीवल्लभाधीश हें ॥ तातें श्रीगुसांइजीने आप सर्वोत्तममें श्रीआचार्यजी महाप्रभुनको नाम ॥ (श्रीकृष्णज्ञानदो गुरुः) एसो कह्यो हे ॥ तापाछें श्रीआचार्यजी आप आगें पधारे ॥ ॥ ध ॥ ॥ ध ॥ ॥ ध ॥ ॥ ध ॥ ॥ ध ॥

❀ (वार्ताप्रसंग १७ मों) ❀

श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप सिद्धपुर श्रीरणछोडजीके दरसनकों पधारे ॥ सो मार्गमें गुजराति हूं पधारे ॥ तब वैष्णवनको समाज बहुत साथ हतो ॥ तातें आप अपनों माहात्म्य प्रगट करिवेके लियें ओर अपनो ऐश्वर्य दिखायवेकेलियें आप चकडोलमें बिराजे ॥ सो गुजरातिके देशाधिपतिकी गोखके नीचें होईकें

पधारे ॥ वह देशाधिपति महादुष्ट हतो ॥ ओर धर्मको द्वेपी हतो सो वाके आगें होईकें कोई असवारीमें वेठिकें न निकसि सकतो ॥ सो आप पधारे तापें उपरतें खोजाकी दृष्टि परी ॥ तब वानें कही जो देखो साहिव केसी असवारी आतीहे ॥ तब वा देशाधिपतिनें देख्यो ॥ सो देखिकें वानें खोजासों कही ॥ जो अरे मूर्ख तूँ मोकूँ अग्नितें लरावत हे ॥ तेरो मोसूँ कछू वेरहे कहा ॥ यहतो अग्निहे ॥ अवहीं मोकों भस्म करिडारेगी ॥ तोकों दीसत नाहीं ॥ वा समय वा देशाधिपतिकों श्रीआचार्यजीको तेजोमय एसो दर्शन भयो ॥ सो देखिकें वो डरप्यो ॥ सो चूप होय रह्यो ॥ यह वा देशाधिपतिके प्रतिबंध तोडवेको प्रतापबल अपनें वेष्णवनकों दिखाय आप श्रीआचार्यजी श्रीसिद्धपुर पधारि श्रीरणछोडजीके दरसन सेवा करि ॥ पाछें आप द्वारिकाके आडी पधारे ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (वार्ताप्रसंग १८ मों) ❀

श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप श्रीद्वारिका पधारे ॥ तहँके ब्राह्मणननें कही ॥ जो महाराज यहांके ठाकुरजी वज्रनाभके स्थापित तो बुढाँनाँ भक्तके उपर प्रसंन होयकें डाकोरमें जाय विराजे ॥ अब यहाँको मंदिर खालीहे ॥ तातें आप कछु यत्न करो ॥ तब आप कहें ॥ जो आज विचारिकें काल कहेंगे ॥ पाछें आप रात्रिकों चिंताग्रस्त विराजे ॥ तब श्रीद्वारिकाधीश आप प्रगट होयकें आग्या किये ॥ जो हमारी मूर्ति १ श्रीरुक्मिणीजीकी सेव्य यहाँ रुक्मिणीवनमें पृथ्वीतलमें विराजेहे ॥ वाके पास वा समयके तीन रत्नहें ॥ सो एकतो दिव्यशंख ॥ २ माणिकको किरीट ॥ ३ कटार ॥ यह सब प्रगट करकें स्थापित करो ॥ यह मूर्ति दुर्वाशा रिषीके शापतें श्रीरुक्मिणीजीकों १२ वर्ष ताईं हमारो वियोग भयो हतो ॥ वा समें श्रीरुक्मिणी-

जीनें या मूर्तिको पूजन कियो हतो ॥ सो पाछो संयोग भयो ॥ तब वियोग समयमें जा स्थलपे श्रीरुक्मिणीजी विराजे हते ॥ वा स्थलपे वो मूर्ति पृथ्वीमें पधरायदीनीं हती सो पधराओ ॥ ऐसें कहिकें आप श्रीद्वारिकाधीश अंतर्धान भये ॥ पाछें आप श्रीआचार्यजीनें दुसरे दिन वहाँके ब्राँह्मणनकें हाथतें तीनों वस्तु समेत वो मूर्ति पृथ्वीमेंतें प्रगट करि वाहांके प्राचीन मंदिरमें स्थापित करी ॥ ओर सब सेवाको प्रबंध बांध्यो ॥ पाछें औरंगजेब बादशाहके समय फिर आप श्रीरणछोडजी वा प्राचीन मंदिरमेंतें उठकें संखोध्दारतीर्थपें पधारे सो अद्यापि तहांविराजत हें ॥ सो वहां श्रीद्वारिकामें गोविंददुबे नामके ब्रँह्मचारी जो श्रीरणछोडजीकी सेवा करत हते ॥ सो आप श्रीआचार्यजीके सेवक भये ॥ सो वे बडे पंडित हते ॥ जब श्रीआचार्यजी आप कथा कहें ॥ तब वे श्रोता होइकें बेंठें ॥ ओर "नवरत्नग्रंथ" आपनें उनहींके लियें प्रगट कियो हतो सो यातें ॥ जो एकसमय गोविंददुबेनें आप सों विज्ञप्ती कीनीं ॥ जो महाराज मेरो मन सेवामें नाँहि लागत ॥ तब आपनें वाकों "नवरत्न ग्रंथ" लिखि दियो ॥ ओर आग्या दिये.जो तुँम याको पाठ करो ॥ यातें तुमारो मन सेवामें लगेगो ॥ वा गोविंददुबेको आपनें अंगीकार कीयो ॥ तातें श्रीरणछोडजी आप साक्षात वासों वातें करते ॥ गोविंददुबेनें तो सब वेष्णवनके उपर अनुग्रह कियो ॥ जो वाकी बीनतीसों आपनें "नवरत्न" ग्रंथ कियो ॥ सो-जो वेष्णव वा नवरत्नग्रंथको पाठ करेगो ताकी चिंता निवृत्त होइगी ॥ चिंता हे सो महा दोषहे चिंतासों भगवन्नाममें भगवत्सेवामें जीवको मन रंच ही लगत नाहीं ॥ तातें आपनें अपनें सेवकनकी चिंता दूरि करिबेके लियें वह ग्रंथ प्रगट कीयो ॥ सो गोविंददुबेके ऊपर श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको.एसो अनुग्रह हतो ॥ सो ग्रंथ यह हे ॥

अथ नवरत्नस्तोत्रम् ॥

चिंता कापि न कार्या निवेदितात्मभिः कदापीति ॥ भगवानपि पुष्टिस्थो न करिष्यति लौकिकीं च गतिम् ॥ १ ॥ निवेदनं तु स्मर्तव्यं सर्वथा तादृशैर्जनैः ॥ सर्वेश्वरश्च सर्वात्मा निजेच्छातः करिष्यति ॥ २ ॥ सर्वेषां प्रभुसंबंधो न प्रत्येकमिति स्थितिः ॥ अतोऽन्यविनियोगेऽपि चिंता का स्वस्य सोऽपि चेत् ॥ ३ ॥ अज्ञानादथवा ज्ञानात् कृतमात्मनिवेदनम् ॥ यैः कृष्णसात्कृतप्राणैस्तेषां का परिदेवना ॥ ४ ॥ तथा निवेदने चिंता त्याज्या श्रीपुरुषोत्तमे ॥ विनियोगेऽपि सा त्याज्या समर्थोहि हरिः स्वतः ॥ ५ ॥ लोके स्वास्थ्यं तथा वेदे हरिस्तु न करिष्यति ॥ पुष्टिमार्गस्थितो यस्मात्साक्षिणो भवताऽखिलाः ॥ ६ ॥ सेवाकृतिर्गुरोराज्ञाऽबाधनं वा हरीच्छया ॥ अतः सेवापरं चित्तं विधाय स्थीयतां सुखम् ॥ ७ ॥ चित्तोद्वेगं विधायापि हरिर्यद्यत्करिष्यति ॥ तथैव तस्य लीलेति मत्वा चिंता द्रुतं त्यजेत् ॥ ८ ॥ तस्मात्सर्वात्मना नित्यं श्रीकृष्णः शरणं मम ॥ वदद्भिरेवं सततं स्थेयमित्येव मे मतिः ॥ ९ ॥

इति श्रीमद्वल्लभाचार्यजी विरचितं नवरत्नस्तोत्रं समाप्तम् ॥

❀ (वार्ताप्रसंग १९ मों) ❀

पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप शंखोद्धार पधारे ॥ तब गोविंददुबेहू आपके साथ शंखोद्धार आये ॥ सो एकदिन शंखोद्धार में श्रीआचार्यजी आप कथा कहत हते ॥ तहां दामोदरदासहरसानी, कृष्णदासमेघन, गोविंददुबे ओर राणाव्यास जो वा प्रांतमें रामानुज संप्रदायके वडे पंडित हते सो ॥ ओर बहुत भगवदी सेवक पास बेठ हुते ॥ ता समें कथामें असो रसावेश भयो ॥ जो जेसें चंद्रमाकों चकोर देखे ॥ एसें श्रीआचार्यजीको सब सेवक देखवे लगे ॥ आपको तो नॉमहीहे जो (श्रीभाग-

वतपीयूषसमुद्रमथनक्षमः) सो ता समें श्रीभागवतरूपी अमृतके समुद्रमें सब भगवदीनकों आपनें असे मग्न करिदीये ॥ काहूकों कछू देहानुसंधान न रह्यो ॥ एसि रीतिसों आप कथा कहिरहे हते ॥ एसेमें एक घटा उठी ॥ तासों सब आकाश छायगयो ॥ ओर बूँदहूं आइवे लागीं ॥ तब आप श्रीआचार्यजीमहाप्रभु मेघकों हाथसों बरजे ॥ तातें आप जहां विराजे हते ॥ ओर जहाँताँई आपके सेवक बेठे हते ॥ तहाँतें दूरि दूरि चाऱ्योआडी मेह बरस्यो ॥ ओर बीचमें एक चक्रसो सूखो रहिगयो ॥ वहां तो एक बूँदहु न परी ॥ ओर अन्यत्र वरखा बोहोत भई ॥ तब गोविंददुबेनें आप सों कही ॥ जो महाराज हमतो आपकों पूर्णपुरुषोत्तम करिकें जानत हें ॥ काहेतें जो आप अनुग्रह करिकें लीला दिखावतहो ॥ नाँहीतो आपको स्वरूप एसोहे ॥ जो वेदहू नेति नेति कहत हें ॥ तातें हम जीव कहा जानें ॥ तब आप श्रीसुखतें कहें ॥ जो तुम मेरो माहात्म्य जानों ॥ याके लियें मेंनें वर्षा नाहीं राखी ॥ मेंनेंतो यातें मेघकों बरज्यो ॥ जो कथा कहत बीच में उठनों परतो ॥ ताके लियें एसी कीनी ॥ न जानिये जो उठे पीछें एसो रसावेश होइ के न होइ ॥ तब भगवदी सब बोहोत प्रसन्न भये ॥ पाछें वहाँ श्रीशंखोद्धारमें आपके सेवक बहुत भये ॥ पृथ्वीपे ओरहू बडे बडे भगवद्धाॅम हें ॥ जेसें श्रीजगन्नाथजी, श्रीलक्ष्मणबालाजी, श्रीबद्रीनाथजी, श्रीरंगनाथजी ॥ परि तामेंतें श्रीशंखोद्धारमें तो आप पधारे पीछें वहां आपके सेवक श्रीरणछोडजीकी सेवा करनलागे हे ॥ तातें वहाँ अपनीं सत्ता जानिकें श्रीगुसाँइजी छे बेर श्रीद्वारिका पधारे ॥

❀ (वार्ताप्रसंग २० मों) ❀

पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप द्वारिकातें नारायणसरोवरकों पधारे ॥ उहाँ नारायणसरोवरके उपर दोई भाई पुष्करणा

ब्राँह्मण रहते ॥ सो वे आपकी शरणि आए ॥ वे दोऊ देवीजीव हते ॥ तिनके लिएँ आप वहां पधारे हते ॥ तामेंतें एकको नॉम तो बाला हतो ॥ और दुसरेको नॉम वादा हतो ॥ सो वालाको नॉम तो आप श्रीआचार्यजीनें वालकृष्णदास धन्यो ॥ ओर वादाको नाम वादरायणदास धन्यो ॥ ता पाछें उन दोऊ भाईननें आप सों वीनती कीनीं ॥ जो महाराज अंव हम निर्वाह केसें करें ॥ तव आप कहें ॥ जो तुम एक नयो वस्त्र ले आवो ॥ तव वे एक सुपेद वस्त्र ले आए ॥ तापे आपनें अपनें दोऊ चरणारविंदसों कुँमकुँम लगाईकें वा वस्त्रके उपर धरे ॥ सो उन दोनों भाइनपे अनुग्रह करिकें ॥ अपनें चरणारविंदकी सेवा पधराय दीनीं ॥ सो वे दोऊ भाई श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी कृपातें वडे भगवदी भये ॥ पाछें उहातें आप श्रीआचार्यजी सव वैष्णवनकों संग लेकें फेरि व्रजकों पधारे ॥

❀ (वार्ताप्रसंग २१ मों) ❀

एकसमय श्रीगोवर्धननाथजी आप विचारें ॥ जो मंदिरतो छोटो भयो ॥ ओर सम्रद्धि वहुत वढी ॥ वडे मंदिर विनॉ सेवाको मंडान केसें होई ॥ तव एक पूर्णमल्ल करकें क्षत्री अंवालयमें रहते ॥ तिनकी गॉठि द्रव्य वोहोत हतो ॥ सो वह देवीजीव हते ओर उनको द्रव्यहू देवी हतो ॥ तातें आप श्रीगोवर्धननाथजी वाके घर संवत् १५५६ चैत्रशुध्दी २ की रात्रिकों पधारे ॥ ओर वासों स्वप्नमें कहें ॥ जो हम श्रीगोवर्धनपर्वतपे प्रगट भये हें ॥ देवदमन हमारो नॉम हे ॥ सो तूं आइकें श्रीगोवर्धनपर्वत उपर हमारो वडो मंदिर वनंवाई ॥ तव वा पूर्णमल्लकों स्वप्नमें साक्षात् कोटिकंदर्पलावण्य एसे आपके दर्शन भए ॥ तासों सवारें उठतेंहीं वाकों चटपटी लागी ॥ सो सव काम काज छोडिकें द्रव्य संचय करि ॥ वो व्रजमें श्रीगोवर्धनकों आए ॥ सो

उहाँ आइकें पूछी जो यहां देवदमन ठाकुर कहां प्रगट भये हें ॥ तब एक व्रजवासीनें बताए जो पर्वतउपर हें ॥ तब पूर्णमल्लनें पर्वतउपर आइकें श्रीगोवर्धननाथजीके दर्शन कीये ॥ सो दर्शन करिकें वे वोहोत प्रसन्न भए ॥ ओर अपनें मनमें कहें ॥ जो अनुग्रह करिकें वा रात्रिकों मेरे घर पधारे ॥ ओर मोकों दर्शन दीए सो येही हें ॥ ता समय श्रीगोवर्धननाथजीकी सेवा रामदासजी चौहान रजपूत करत हते ॥ तातें विनसों पूर्णमल्लजीनें पूछी जो इहां सेवा तुमहीं करतहो के कोई ओर करत हे ॥ तब रामदासजी कहें ॥ जो इनके सेवक तो वोहोत हें ॥ यहां नींचें जो आन्योरे गॉम हे ॥ तामें जो रहत हें ॥ ते सब इनके सेवकही हें ॥ सो सेवा करत हें ॥ दूध, दही, माखन, जो चहियतहे ॥ सो ए सब लावत हें ॥ इनकों श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी आग्या हे ॥ इनहींकों सोंपिकें आप पधारे हें ॥ तब पूर्णमल्लनें पूछी जो वे श्रीआचार्यजीमहाप्रभुजी कोंन हें ॥ तब रामदासजी कहें जो जिनकेलियें आप श्रीनाथजी प्रगट भये हें ॥ सो श्रीआचार्यजी आप पृथ्वी परिक्रमा करिवेकों पधारे हें ॥ तब पूर्णमल्लनें रामदाससों कही जो मोकों श्रीगोवर्धननाथजी आप आग्या दीयेंहें ॥ जो तूं मेरो मंदिर समराय ॥ सो इनको मंदिर समरायवेकों में आयो हूं ॥ तातें तुम मंदिर बनवायवेको उद्यम करो ॥ तब रामदासजी कहें ॥ जो या गामके मुकदम सद्दूपांडे हें ॥ सो तुंम उनसों कहो ॥ तब पूर्णमल्लनें आयकें सब समाचार सद्दूपांडे सों कहे ॥ तब विननें उत्तर दीयो जो भेया यह मंदिर तो मेरें तेरे बनवाइवेको नाहीं ॥ ओर जिनके ए ठाकुर हें ॥ सो तो पृथ्वी परिक्रमाकों गये हें ॥ तातें जब वे आवेंगे ॥ तब जो वे आज्ञा देइंगे ॥ तो मंदिर बनेगो ॥ तब यह बात सुनिकें पूर्णमल्लनें विचारी जो श्रीठाकुरजीनें

मोकों आज्ञा दिनीं हे ॥ ओर आपनें जो मोकों घरतें बुलायो हे तातें फिर घरतों न जानों ॥ यह निर्धार करिकें पूर्णमल्ल आन्योरमेंहीं रहे ॥ ओर श्रीआचार्यजीको मार्ग देखें ॥ श्रीआ-चार्यजीमहाप्रभुनको तो स्वभावही हे ॥ जो (भक्तविरहकातर करुणामय डोलत पाछेंलागे ॥) ओर तामें श्रीगोवर्धननाथ-जींकी इच्छा तो मंदिर वनवाईवेकी भई ॥ तब श्रीआचार्यजीनें आपके मनकी जाँनिकें मंदिर वनवाइवेकें लियें व्रजमें पधारे ॥ सो आइकें श्रीगोवर्धननाथजीके दर्शन कीये ॥ ओर सब सेवक वैष्णव श्रीआचार्यमहाप्रभुनके दर्शन करिकें बोहोत प्रसंन भये॥ओर पूर्णमल्लहू श्रीआचार्यजीके दर्शन कारिकें बोहोत प्रसन्न भये ॥ ओर जान्यो जो ये साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तम हें ॥ इनमें ओर श्रीठाकुरजीमें कछू भेद नाहीं हे ॥ पाछें पूर्णमल्लनें आपसों वीनती कीनीं ॥ जो महाराज मोकों नाँम दीजिये ॥ ओर अपनों कीजिये ॥ तब आपनें अनुग्रह करिकें वाको अंगीकार कीये॥तब पूर्णमल्लनें आपसों वीनती करकें सब वृत्तांत कह्यों ॥ जो महाराज मोकों श्रीनाथजीकि मंदिर बनवाइवेकी आग्या भईहे ॥ तातें हों द्रव्य लेकें अंबालयतें आयोहूँ ॥ तब आप श्रीआचार्यजी कहें ॥ जो हाँ हम पूछेंगे ॥ तब आप श्रीगो-वर्धननाथजीसों पूछी ॥ तब आग्या भई जो मंदिर वेगी सिद्धि करो ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें श्रीगिरिराजसों पूछी ॥ जो आपके उपर मंदिर बनेगो टांकी बाजेगी ताकी कहा आज्ञा हे ॥ तब गिरिराजमेंतें ध्वनीभइ जो मेरे हृदेमें श्रीनाथजी विराजेंगे तातें मोकों टांकीको परिश्रम नहीं होयगो ॥ आप मंदिर सुखेन सिद्धि करवाओ ॥ तब श्रीआचार्यजीनें पूर्णमल्लसों कही ॥ जो भलें मंदिर वेगी समराउ ॥ तब वानें आगरेतें कारीगर बुलाए तामें एक हिरामण उस्ता करकें हतो ॥ ताकों श्रीजीनें स्वप्नहीमें

आज्ञाँ करी हती जो तुँ मेरो मंदिर निरमाण करिवे आव ॥ तब वानें गोवर्धनपे आय श्रीआचार्यजीसों आज्ञा माँगी ॥ ओर कही जो मोकों श्रीनाथजी आज्ञाँ किये हें ॥ सो आप आज्ञाँ करो तो हों मंदिर सिद्ध करों ॥ तब आप श्रीमुखसों आज्ञाँ किये जो तुँम मंदिरको चित्र कागदपे लिख लावो ॥ तब वानें सब मंदिरकी आकृती कागदपे उतारि लाय आपकों दिखाइ ॥ तामें आपनें शिखर देख्यो ॥ तब फेरि दुसरो उतारवेकी आज्ञा किये ॥ तामेंहू शिखर देख्यो ॥ तब तीसरो उतारवेकी आज्ञा किये ॥ तामेंहू शिखर देख्यो ॥ तब आप श्रीआचार्यजीनें दामोदरदाससों आज्ञा किये जो श्रीनाथजीकी आज्ञा शिखर वारे मंदिर पेहे ॥ तातें कितनेक काल या मंदिरमें विराजकें पाछें यवनको उपद्रव होयगो ॥ तब ओर देशमें श्रीजी पधारेंगे ॥ ओर कोई काल तहां विराजेंगे ॥ पाछें फेर व्रजमें पधारेंगे ॥ तब पूँछरीकी ओर पृथवीपे दुसरो मंदिर बनेगो ॥ श्रीगिरिराजके तीन शिखर हें ॥ १ आदिशिखर ॥ २ ब्रह्मशिखर ॥ ओर ३ देवशिखर ॥ तामेंतें श्रीकृष्णावतारमें आदि शिखरपे क्रीडा करी ॥ मध्यमें देवशिखरपर अब क्रीडा करतहें ॥ ओर पाछेंतें ब्रह्मशिखरपर क्रीडा करेंगे (आदिशिखर ओर देवशिखरतो सांप्रत पृथ्वीमें गुप्तहे ॥ ब्रह्मशिखर प्रगट दर्शन देतेंहे) आप तो श्रीगोवर्धनके नाथ हें ॥ तातें सदा श्रीगोवर्धनपेही क्रीडा करत हें ॥ एसें आज्ञा करि संवत् १५५६ वेशाख सुदी ३ रविवार रोहिणी नक्षत्रके दिन मंदिरकी नीम खुदवाइ ॥ ओर वोहोत त्वरातें काम चलायो ॥ तातें मंदिर थोडेही कालमें सिद्ध भयो ॥ सो सब पूर्णमल्लकी वार्तामें विस्तारसुं लिख्यो हे ॥ मंदिर सिद्धि भयो ॥ सो वोहोत वडो भयो ॥ जामें मणिकोठा, तिवारी, सब वनिकें सिद्धि भये ॥ तब श्रीगोवर्धननाथजीकों वा मंदिरमें संवत् १५७६ वेशाख सुदी ३(अक्षयतृतीया)के दिनों श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें पाट बे-

ठाए ॥ ओर सात ध्वजा मंदिरके उपर फहराई॥सो दर्शन करिकें पूर्णमल्ल वोहोत प्रसन्न भये ओर वोहोत द्रव्य खरच्यो ॥ ओर कह्यो जो धन्य मेरो भाग्य हे ॥ जो जेसी श्रीठाकुरजीने अनुग्रह करिकें मोंकों आग्या दीए ॥ तेसो मेरो मनोर्थ सिद्धि भयो ॥ तव श्रीआचार्यजीमहाप्रभु पूर्णमल्लके उपर वोहोत प्रसन्न भये ॥ ओर आप श्रीमुखतें कहे ॥ जो पूर्णमल्ल कछू मॉगो ॥जो मॉगो सो देउं ॥ तव वानें कही जो महाराज मेरो मनोर्थ यह हे ॥ जो एकवेर श्रीगोवर्धननाथजीके श्रीअंगकों अति उत्तम अरगजा अपनें हाथसों समर्पूं ॥ तव आप अनुग्रह करिकें कहे ॥ जो समर्पो ॥ जो तुमारो मनोर्थ होई सो पूर्ण करो ॥ तव वानें अति उत्तम सुगंधको अरगजा श्रीगोवर्धननाथजीकों समर्प्यो ॥ सो समर्पिकें अत्यंत प्रसन्न भये ॥ ओर वीनती कीनी जो महाराज मेरे पास एकलक्ष मुद्रा ओर कछूकसहस्र उपर हतीं ॥ तामेंतें एकलक्ष मुद्रा तो मंदिरमें लागि गई ॥ तोहू मंदिरमें कॉम रहगयो हे ॥ तातें कछुक मुद्रा रहीहें सो में लेकें दक्षिणकों जात हों ॥ तांहातें ओर द्रव्य कमाय लाय मंदिर पूर्ण सिद्ध करूंगो ॥ तव आप श्रीआचार्यजी प्रसन्न होयकें अपनों ओढ्यो उपरणॉ प्रसादी पूर्णमल्लकों दीये ॥ तव पूर्णमल्लनें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों साष्टांग दंडवत् प्रणाम करिकें आग्या मॉगिकें अपनें घर अंवालयकों गए ॥ तॉहॉतें दक्षणकों गए ॥ वहांतें रत्न लायकें विक्रय किये ॥ तामें तीनलक्ष मुद्रा पेदा भई ॥ तिनहीं मुद्रांनसों वीश वर्षपीछें आयकें वानें फेरि मंदिर संपूर्ण वनवायो ॥ तहां ताई यह मंदिर आधोही रह्यो हतो ॥ तामेंहीं श्रीजी विराजे हते ॥ व्रजवासींनमें क्रीडा करवेकी आपकी इच्छा हती ॥ तासों मंदिरके प्रतिबंध वीश वर्ष तांई श्रीजीनें किये हते ॥ तहांतांई रामदासचोहान रजपूतनें सेवा कीह्नी ॥ संवत् १५४५ आरंभ लेकें

संवत् १५७६ ताईं गोवर्धनकी खेमोगूजरी, गांठ्योलीकी पाथोगूजरी, अडिंगको गोपालग्वाल, आगरेके ब्राह्मणको छोरा, सखीतराको माडलियापांडे, इत्यादि अनेक व्रजवासीनसों अनेक प्रकारके खेल करते ॥ ताको विस्तारपूर्वक वर्णन श्रीनाथजीके प्रागट्यके ग्रंथमें हे ॥ याही प्रकार श्रीजीनें अनेक क्रीडा करीं ॥

❀ (वार्ताप्रसंग २२ मों) ❀

एकदिन श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप सद्दूपांडेकों बुलायकें आग्या दीए॥ जो श्रीगोवर्धननाथजीको मंदिरतो सिद्धि भयो परंतु एसे वडे मंदिरमे सेवकहू वहुत चाहियें ॥ तातें तुम ब्राह्मण हो सो श्रीगोवर्धननाथजीकी सेवा करो ॥ ओर यह मर्यादा हे॥ जो भगवत्सेवा ब्राह्मण करें तो आछो ॥ तब सद्दूपांडेनें आपसों कह्यो ॥ जो महाराज हमारी ज्ञातिके तो कछू आचार विचारमें समझत नाहीं ॥ सेवामे तो कछू समझतहोई तासों सेवा कराइये ॥ तब श्रीआचार्यजी आप मनमें विचारें ॥ जो श्रीकुंडपे ब्राह्मण रहत हें ॥ सो कृष्णचैतन्यके सेवक हें ॥ तिनकों राखिये ॥ तब आपनें उन वंगाली ब्राह्मणकों बुलाइकें सेवाकी आग्या दीनी ॥ तामें माधवेन्द्रपुरी मध्वसंप्रदायके आचार्य तेलंग ब्राह्मण कृष्णचैतन्यके गुरु हते ॥ जिनके पास श्रीआचार्यजीनें काशीमें वेदाध्ययन कियो हतो ॥ ता समें भगवत्सेवा देवेकी कही हती ॥ तिनकों मुखिया कीये ॥ ओर उनके शिष्यनकों सेवामें राखे ॥ कृष्णदासजीकों अधिकारी किये ॥ कुंभनदासकों कीर्तनकी सेवा दिये ॥ ओर अपनी रीति भांति सब सिखाई ॥ श्रीगोवर्धननाथजीको नित्यको नेग वांध्यो ॥ जो इतनीं सामग्री श्रीगोवर्धननाथजी नित्य आरोगें ॥ पाछें वंगालीनसों आप कहें ॥ जो इतनो नेग तो सद्दूपांडे तुमकों नित्य पोंहोचायो करेंगे ॥ ओर अधिक आवेतो अधिक उठाईयो ॥ परि या नेगमेंतें मति घटाईयो ओर ता

महाप्रसादमें तुम निर्वाह करियो ॥ एसी श्रीआचार्यजी आपनें आग्या दीनी ॥ ओर कह्यो जो इनको समों तुम मति चूकियो ॥ भोग जो भगवत इच्छातें होई सो धरियो ॥ परि श्रीठाकुरजीकों अवार न होई यातें सावधान रहीयो ॥ सो १४ वर्ष ताँई बंगालीननें श्रीनाथजीकी सेवा करी ॥ पाछें श्रीनाथजी बंगालीनकी सेवासों अप्रसन्न भये ॥ ओर विनकों निकासवेकी अवधूतदास ओर कृष्णदासकों आज्ञा दिये ॥ ओर कहि जो यह बंगाली मेरो द्रव्य चुराय ले जात हें ॥ सो इनकों निकासो ॥ श्रीआचार्यजीके पाछें तीन वर्ष उननें सेवा करी ॥ पाछें विनकों श्रीकी आज्ञानें श्रीगुसांइर्जीने निकासकें गुर्जर ब्राह्मण सेवामें राखेहते ॥

❀ (वार्ताप्रसंग २३ मों) ❀

एकसमय श्रीगोवर्धननाथजी आप श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों कहें ॥ जो मोकों गाय ले देउ ॥ तव आप कहें जो महाराज सिध्दि हे ॥ तव श्रीआचार्यजीनें सद्दूपाँडे सों कही ॥ जो श्रीनाथजी आग्या दीये हें जो मोकों गाय ले देउ ॥ तातें यह सुवर्णकी वींटी हे ताकों बेचिकें गाय लाय देउ ॥ तव सद्दूपाँडेने कही ॥ जो महाराज यह घरमें जितनों गोधन हे ॥ सो कोनको हे ॥ हमतो तन मन धन सव आपकों समर्प्यो हे ॥ हमारो रह्यो कहा हे ॥ तातें आप आग्या करो तितनीं गाय लाई देउँ ॥ तव आपनें कही जो तुम जो लावो सो तो तुमारी इच्छा ॥ ताकीतो हम नाँहीं करत नांहीं परि मोकों तो जो श्रीगोवर्धननाथजीनें आग्या दीनी हे ॥ तातें प्रथमतो हमारे या सुवर्णकी तुम गाय लाइ देउ ॥ तव सद्दूपांडे वा सुवर्णकी प्रथम गाय ले आये ॥ सो गाय श्रीआचार्यजी आप श्रीगोवर्धननाथजीके आगें लायं ठाढी कीनीं ॥ पाछें सद्दूपांडे तथा ओरहु व्रजवासी अपनें अपनें घरनसों कोइ एक गाय, कोइ दोय गाय, ले आए ॥

ओर वैष्णवनकें इहांतें हू बहोत गाय आई ॥ ता दिनतें आपने श्रीगोवर्धननाथजीको नाम गोपाल धर्‍यो ॥ ओर पाछेतें श्रीगुसांईजीनें गोपाल या नामको गोपालपुर गाम वसायो ॥ तातें भगवदी छीतस्वामी गाये हें सो पद-- ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (पद राग पूरवी) ❀

आगें गाय पाछें गाय इत गाय उत गाय ॥ गोपालकों गायनमें वसिवोई भावे री ॥ १ ॥ गायनके संग धावे गायनमें सुख पावे ॥ गायनकी खुर रेणु हीयेसों लगावे री ॥ २ ॥ गायनसों व्रज छायो वैकुंठ विसरायो ॥ गायनके हेत गिरि कर ले उठावे री ॥ ३ ॥ छीतस्वामी गिरिधारी श्रीविठ्ठलेश वपु धारी ॥ ग्वालियाको भेष कीये गायनमें आवेरी ॥ ४ ॥ ॥ ७ ॥

पाछें गायनकी समृद्धि बोहोत वढी ॥ ओर ग्वालहू बहुत राखे सो गाय चराइवेको ग्वाल जाइं ॥ तिनके संग आपहु श्रीठाकुरजी ओर श्रीवलदाउजी पधारे ॥ ताते उहांहीं छाक आवे ॥ सो श्रीवलदेवजी सबनकों बांटें ॥ सो श्रीगोवर्धननाथजी सब सखा मंडलीमें वेठिकें आरोगें ॥ तासों श्रीगुसांईजी आप छाक लेकें वनमें पधारते ॥ सो वार्तामें प्रसिद्ध हे ॥ गायनको दूध बहुत होइवे लाग्यो ॥ तासों श्रीगोवर्धननाथजी दूध दही मांखन बहुत आरोगें ॥ एसी रीतिसों श्रीगोवर्धननाथजीकी सेवा होई ॥

❀ (वार्ताप्रसंग २४ मों) ❀

श्रीआचार्यजीमहाप्रभु एक दीन श्रीगोकुल पधारे ॥ ताहां श्रीठकुराणीघाटके उपर स्नान करिकें अपनीं वेठकमें विराजे ॥ ओर सब भगवदी आगें ठाढे हते ॥ ता समय एक ब्राह्मण राघवदास या नामको साधू आयो ॥ सो वह पूजामार्गी हतो ॥ तानें श्रीयमुनाजीमें स्नान करिकें अपनी पूजा खोली ॥ सो वाके पास एक वंटी

हती ॥ तामें एक स्वरूप श्रीठाकुरजीको हतो ॥ ओर एक श्रीशालिग्रामजीको स्वरूप हतो ॥ सो धरिकें वह ब्राह्मण पूजा करिवेकों बेठ्यो ॥ धूप, दीप, नैवेद्य, धरिकें पाछें वानें फेरि श्रीठाकुरजीकों बंटीमें पधाराय दीनें ॥ ओर तिनकी छाती उपर शालिग्राम धरे ॥ ओर बंटीकों ढांकि दीनी ॥ ता समय श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी दृष्टि परी ॥ तब आप दामोदरदासहरसानींसों कहें ॥ जो तुम या ब्राह्मणसों कहो जो तूं शालिग्रामकों न्यारे धरि ॥ श्रीठाकुरजीके उपर मति धरे ॥ तब दामोदरदासनें वासों कही ॥ तब वा ब्राह्मणनें कही जो महाराज अबतो ये कछू ठाकुर हें नाहीं ॥ ठाकुरजीतो मेंनें विसर्जन करिदीये ॥ तब श्रीआचार्यजी आप श्रीसुखतें कहें ॥ जो अरे भगवत्स्वरूपतो हे ॥ परि वा ब्राह्मणनें माँनी नाँहीं ॥ पाछें वह अपनीं पूजाको साज बांधिकें चल्यो ॥ पाछो फेरि दूसरे दिनाँ वाहीठोर आयो ॥ सो स्नान करिकें जेसें पूजा करत हतो ॥ तेसें फेरि करिवेकोलियें सिद्ध भयो ता समय श्रीआचार्यजी आप संध्या - वंदन करत हते ॥ जब वा ब्राह्मणनें बंटी खोली ॥ तब देखे तो श्रीठाकुरजी तो पोढे हें ॥ ओर शालिग्रामके टूक टूक होइगए हें ॥ सो देखिकें वो बोहोत खेद पायो ॥ ओर श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों कही ॥ जो महाराज कालि मेंनें आपकी कही न मानी ॥ तो मेरे शालिग्रामके टूक टूक होइगये ॥ अब में कहा करूं ॥ तब आप कहें जो तूँ फेरी एसो काम न करे तो तेरे शालिग्राम आछे होइजाइं ॥ तब वानें कह्यो जो महाराज अब तो फेरि एसें कबहूँ न करूँगो ॥ तब आप श्रीमुखतें कहें ॥ जो तूं इन टूक टूकनकों जोरि ॥ सो तब वा ब्राह्मणनें विन टूक टूकनकों जोरे ॥ तब आप कहें जो तूँ इनके उपर जमुनाँजल डारि ॥ तब वानें शालिग्रामजीके उपर श्रीजमुनाजल डार्‍यो ॥ सो वे शालिग्राम जेसे हते तसे होइगए ॥

एसें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप अपनें सेवक दैवीजीव तिनके अपनों माहात्म्य दिखावत हे॥ ओर आपनें सेवकन उपर कृपा करतहे॥

❀ (वार्ताप्रसंग २५ मों) ❀

एकसमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु अपनें मनमें विचारें॥ जो हमकों श्रीठाकुरजीनें आग्या दीनीं हे॥ जो तुम भूतलपे दैवीजीवनको उद्धार करो॥ सो विनको उद्धार तो दोय वातसों होय॥ एकतो भगवत्स्वरूप सेवातें॥ ओर एक भगवन्नामतें॥ सो भगवत्स्वरूप तो श्रीगोवर्धननाथजी प्रगट भये॥ अब भगवन्नाम प्रगट करनों चाहिये॥ जेसें श्रीठाकुरजीनें श्रीनारदजी द्वारा श्रीशुकदेवजीकूं आग्या दीनीही॥ जो तुम श्रीभागवत प्रगट करो॥ तेसेंई आपनें मोकोंहू आग्या दीनीं हे॥ जो तुम श्रीभागवतकी टीका सुबोधिनी प्रगट करो॥ तातें लिखन वारो होई तब टीका होइ॥ सो एसेमें एक काश्मीरमें केशवभट्ट करकें बडो पंडित हतो॥ वानें अपनें देशमें सुन्यो॥ जो श्रीवल्लभाचार्यजी दक्षिणमें प्रगट भये हें॥ सो वडे पंडित हें॥ सब पृथ्वीके पंडितनकों जीतेहें॥ तातें चलो इनतें मिलिये॥ सो वो केशवभट्ट काश्मीरतें आयो (श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप सरस्वती उलंघन न करते॥ तातें काश्मीर पधारे न हते) सो वा केशवभट्टके संग सिष्य बहोत हते॥ तिनमें एक माधवभट्ट करके हतो॥ सो वह दैवीजीव हतो॥ मानो तिनकेही लियें केशवभट्ट आयो होय॥ सो वा केशवभट्टनें आयकें श्रीआचार्यसों वीनती कीनीं॥ जो महाराज आप दिग्विजय कीयेहो॥ ओर सब देशके पंडितनकों जीते हो॥ ओर आपकों आचार्य पदवी हे॥ श्रीभागवतके एकादशस्कंदमें श्रीठाकुरजीनें उद्धवजी प्रति कह्योहे॥ जो आचार्य हें सो मेरो स्वरूप हें॥ तातें आप भगवत्स्वरूप हो॥ सो मोकों कछू अनुग्रह करिकें सुनावो॥

तब श्रीआचार्यजी आप कथा कहते ॥ सो भगवदीनके संग केशवभट्ट ओर माधवभट्टहू सुनते ॥ तातें वा माधवभट्टकों तो भक्ति उत्पन्न भई ॥ कारण जो वो दैवीजीव हतो ॥ ओर केशवभट्ट तो, श्रीआचार्यजीकी विद्या देखिवेकों आयो हतो ॥ तातें वाकों कछू बोध न भयो ॥ पाछें केशवभट्ट अपनें स्थलपे आयकें अपनें सेवकनसों कथा कहतो ॥ तहां माधवभट्ट न जाते ॥ ओर अपनें मनमें यह विचारते जो मेरे तो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके चरन छोडिकें कहूं न जानो ॥ तब एकदिन केशवभट्टनें माधवभट्ट सों कही ॥ जो तूँ हमारी कथा छोडिकें उहां श्रीआचार्यजीके सेवकनमें जायकें हाँसी ठठोली करतहे ॥ तब माधवभट्टनें कही जो मोकों तो तुमारी कथातें उनकी हाँसी ठठोली आछी लागत हे ॥ तब केशवभट्ट माधवभट्टके वचन सुँनिकें अपनें मनमें बोहोत क्रुध्यो ॥ ओर विचारो ॥ जो यह तो मेरे काँमतें गयो ओर माधवभट्टनें तो एसे कठिन वचन याहितें कहे ॥ जो यह मेरो गोंहन काहूभाँति सों छोडे ॥ पाछें केशवभट्ट केतक दिन श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके पास रेहेके सीख माँगी ॥ ओर कही जो महाराज मेंनें आपके श्रीमुखतें कथा सुनी ॥ परि मोकों तो कछू बोध न भयो ॥ सो याको कारण कहा ॥ तब आप केशवभट्ट सों कहें ॥ जो तुमनें अभिमानी होइके कथा सुनी ॥ तातें तुमकों कछू बोध न भयो ॥ परंतु याको गूढ भाव तो ओर हतो ॥ सोतो, आपनें गोप्य राख्यो ॥ जो तूँ दैवीजीव होंतो तो तोकों बोध होतो ॥ यह बात कहिवेकी नाँहीं ही ॥ पाछें श्रीआचार्यजीसों केशवभट्टनें कही ॥ जो महाराज यह माधवभट्ट हे ॥ सो में आपकी भेट करत हों ॥ तब आप श्रीमुखतें कहें ॥ जो यहतो हमारे चहियतही हो ॥

सो बोहोत आछो भयो ॥ वे माधवभट्ट प्रथमके वडे पंडित हते ॥ ओर जव श्रीआचार्यजीकी शरणि आये ॥ तव वडे भगवदीय भये ॥ तातें आप माधवभट्टसों कहें ॥ जो माधवभट्ट हमारे श्रीभागवतकी सुवोधिनी टीका करनी हे ॥ सो तुम लिखोतो टीका होई ॥ तव वानें कहीजो महाराज ठीकहे ॥ तव आपतो कहत जॉई ॥ ओर वो माधवभट्ट लिखतजॉइ ओर जहॉ वो न समझे ॥ तहॉं लेखन छोडिकें वेठि रहे ॥ तव आप वाकों समझायकें कहें ॥ तव वो फेरि लिखे ॥ सो माधवभट्ट एसे भगवदीय हे ॥ जिननें श्रीसुवोधिनीजी रस्ताचलत लिखी ॥ अव दोउ वस्तु प्रगट भई ॥ श्रीगोवर्धनपर्वतमेंतें तो श्रीनाथजी प्रगट भए ॥ ओर श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके मुखारविंदमेंतें श्रीसुवोधनीजी प्रगट भइ ॥ सो माधवभट्टने लिखी ताते वाके अहो भाग्य ॥ निवंधमें श्रीआचार्यजी आप लिखे हें जो ॥ (रूप नाम विभेदेन जगत्क्रीडति यो यतः) ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

❀ (वार्ताप्रसंग २६ मों) ❀

अव एकसमय श्रीआचार्यजी आप दूसरी वेर पूर्वमें ओडछादेश पधारे ॥ तहॉ आगेसों मायावादीनको ओर वैष्णव संप्रदायीनको फेरि झगडा होत हतो ॥ वे मायावादी केसे हुते जानें साक्षात् देवी सरस्वती पूजिके अपनें वस करि राखी हुती ॥ सो वे मायावादी जा देशमें जॉयँ तहां एक सरस्वतीको घट धरें ॥ ताके उपर वस्त्र उढायकें सवनसों वाद करें ॥ ओर कहें ॥ जो यह साक्षात् सरस्वतीजीहें ॥ जाको यह सॉचो कहें सो सॉचो ॥ ता घटके वलते वे मायावादी जहॉ जॉय तहॉ जीतें ॥ तातें उनसों कोऊ चर्चा न करिसके ॥ सो वा ओडछा देशके राजा रामभद्रनारायणके इहां ब्राह्मणकी सभा इकठोरी भईही ॥ सो ए समाचार श्री आचार्यजीने सुनें ॥ तव आप वा राजाकी

सभामें पधारे ॥ सो राजा आपके दर्शन करिकें बोहोत प्रसन्न भयो ॥ ओर ऊंचे आसनपें पधराये ॥ तब आप राजासों पूछें ॥ जो तुमारे इहां ब्राह्मणनको कहा झगडो हे ॥ तब राजानें आपसों वीनती कीनीं ॥ जो महाराज वेष्णवमार्गवारे तो हारेहें ॥ ओर सक्तिवारे जीते हें ॥ तब आप कहें ॥ जो मायावादी केसें जीतें हें ॥ तब राजानें वीनती कीनी ॥ जो महाराज साक्षात् देवी इनसों बोलतिहे ॥ इनको मार्ग सत्य कहतिहे ॥ तातें ये जीतें हें ॥ तब आप कहें ॥ जो हम देखें देवी केसें बोलति हे ॥ तब राजानें उन मायावादीनसों कह्यो जो बावा अब तुँम इनसों चर्चा करो ॥ तब वे मायावादी ब्राह्मण स्थापित घटके पास श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों चर्चा करन लागे ॥ ओर कही ॥ जो महाराज यह साक्षात् सरस्वती हें ॥ जो यह कहें ॥ सो सांच हे ॥ तब आप कहें जो ठीक हे ॥ तुँम सरस्वतीजीकों बुलावो ॥ तब विन मायावादीननें घटसों वीनती करी जो कहो ॥ सो वह घट तो कछू बोले नहीं ॥ वे ब्राँह्मणतो बोहोतेरो बुलावें ॥ परि वह घटतें शब्द निकसे नाँहीं ॥ तब श्रीआचार्यजी आप राजासों कहें ॥ जो एतो पाखंडी हें ॥ वेष्णवमार्गके विषेतो साक्षात् श्रीकृष्णचंद्रने श्रीभागवतके एकादशस्कंधमें उद्धवजीप्रति कहे हें ॥ जो वैष्णव हें सो मेरो अँगहे ॥ ओर वेष्णवकों तो मेरोही स्वरूप जानियो ॥ वेष्णवनमें कुबुद्धि राखें सो महाअपराधी हें ॥ ठोर ठोर वैष्णवको माहात्म्य वेद शास्त्रनमें कह्योहे ॥ सो ए मायावादी वैष्णवमार्ग केसें जीतेंगे ॥ तब वे मायावादी निरुत्तर होयके वा देवीके उपर मरिवेंकें बेठे ॥ जो तेनें हमारो सभामें मान भंग क्यों कियो ॥ तूं बोली क्यों नाँहीं ॥ तब देवीने विनकों जताई ॥ जो अरे अपराधी वीनके तो में कंठाग्र हूँ ॥ सो उनके सामनें में लज्जा छोडी केंसें बोलूं ॥

कोऊ मनुष्य होइ ताके आगें में वोलुं ॥ वे तो साक्षात् पूर्ण-पुरुषोत्तम हें ॥ सो ये सव प्रकार वा राजानें देखे ॥ तव राजा अपनें मनमें विचारे ॥ जो धन्य मेरो भाग्य हे ॥ जो मेरे घर साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम फिरि पधारे हें ॥ पाछें वा राजानें वीनती कीनी जो महाराज मोकों अपनों कीनो ॥ तातें हों कृतार्थ भयो हूं ॥ पाछें ओरहू वोहोत देवीजीव शरणि आये ॥ तव वैष्णव मार्गीय जे ब्राह्मण हे ॥ ते सव वोहोत प्रसन्न भये ॥ जो हमारे धर्म तो श्रीआचार्यजी आप राखे ॥ तव वा राजानेंहू श्रीआचार्यजी-महाप्रभुनकों कनकाभिषेक करवायो ॥ वा स्नानके सुवर्णको द्रव्य ब्राह्मणनके वालकनकों यज्ञोपवीत ओर ब्राह्मणकुमारिकानके विवाह ओर यज्ञ करवायवेमें खर्च करिवेकी राजा रामभद्रसों श्रीआचार्यजी आप आज्ञा किये ॥ तव राजानें आपके आगें सहस्र मुद्रा भेटधरी ॥ ओर वाहां मायामतको खंडन भयो ॥ भक्तिमार्गको स्थापन भयो ॥ ९ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ ९ ॥

❀ (वार्ताप्रसंग २७ मां) ❀

पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप पृथ्वी पावनकों आगें पधारे ॥ सो मनकर्णित्रिलोकीनाथमें कृष्णचैतन्यको समागम भयो ॥ सो श्रीआचार्यजीके दर्शन करिकें वे वोहोत प्रसन्न भये ॥ ओर कहें जो मेरो वडो भाग्यहे ॥ जो मेनें महाराजके दर्शन पाये ॥ पाछें कृष्णचैतन्य श्रीआचार्यजीके आगें भगवन्नामको माहात्म्य कहें ॥ जो एक क्षणहूं श्रीठाकुरजीके चरणारविंदमें मन लगावे तो जीव कृतार्थ होय जाय ॥ तव श्रीआचार्यजी आप कहें ॥ जो हमारे मार्गमें तो एसी नाहीं ॥ हमारे मार्गमें तो एक क्षणहू जो श्रीठाकुरजीके चरणारविंदमेंतें मन काढे तो आसुरावेश होय जाय ॥ ताहीतें नवरत्नमें कह्यो हे ॥ (तस्मात्सर्वात्मना नित्यं श्रीकृष्णः शरणं मम) ॥ एसें जीवकों अहर्निश कहनों ॥

पुष्टिमार्गको स्वरूप तो एसो हे ॥ यह वार्ता सब भगवदीननें आपके श्रीमुखकी सुनि ॥ विनमेतें कृष्णदासमेघनके मनमें संदेह आयो ॥ जो एसेहू भगवदीय होंयगे जो अहर्निश भगवन्नाम लेत हें ॥ तब श्रीमहाप्रभुननें वाके मनकी जांनी जो कृष्णदासकों संदेह भयो हे ॥ परंतु वानें कछु पूछी नाहीं ॥ जो पूछतो तो आप उत्तर देते ॥ तातें श्रीआचार्यजी आप तो मार्गमें पधारे ॥ सो वा मार्गमें एक सरोवर बोहोत सुंदर देख्यो ॥ ओर वाके उपर वृक्ष बोहोत सुंदर हते ॥ तब आप दामोदरदाससों कहें ॥ जो दमला आज तो हम इहांई पाक करेंगे ॥ यह स्थल बोहोत सुंदर हे ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप उहांई उतरे ॥ सो नित्य कृत्य करिकें आपतो पाक करनकों बेठे ॥ ओर कृष्णदासमेघन पतोवा लेन गयो ॥ सो उहाँ जायकें देखे तो सरोवरके उपर एक जनावर बेठ्यो हे ॥ तहां कृष्णदासमेघन अकस्मात जाय ठाडे भये ॥ परि देखत भय लाग्यो ॥ तब विचारें जो भगवानकी इच्छा होयगी सो होयगी ॥ तातें भगवन्नाम लीजिए ॥ एसें विचारकें कृष्णदासमेघननें वा-जनावरसों श्रीकृष्णस्मरण कियो ॥ तब वा जनावरनें बुडकी मारिकें जल पियो ॥ तब दूसरीवेर फेरि श्रीकृष्णस्मरण कियो ॥ तब दूसरी बेर वानें बुडकी मारिकें जल पियो ॥ तब तीसरी बेर फेरि श्रीकृष्णस्मरण कियो ॥ तब फेरि तीसरी बेर वा जनावरनें जलमें बुडकी मारिकं जल पियो ॥ ता पाछें कृष्णदासमेघन तहां तें आगें पतोवा लेंन गए ॥ परि मनमें विस्मय भयो ॥ जो कछू समुझ तो परी नाँहीं ॥ जो यह कहा चमत्कार भयो ॥ जो मेनें तीन बेर श्रीकृष्णस्मरण कियो ॥ ओर वा जनावरने तीन्यो वार जलमें बुडकी मारिकें जल पियो ॥ परि कछू याको आशय जानि नांही पन्यो ॥ पाछें पतोवा लेकें कृष्णदासमेघन श्रीआ-

चार्यजीमहाप्रभुनके पास आए ॥ तब आप वासों पूछें ॥ जो क्यों कृष्णदास तेरो संदेह गयो ॥ तब वानें कह्यो जो 'महाराज संदेह तो आप अनुग्रह करिकें दूरि करोगे तब दूरि होइगो ॥ ओर जीवतो सदा संदेहसों भन्योहे ॥ जीवकी बुद्धि तो अल्प हे ॥ तब श्रीआचार्यजी आप कहें ॥ जो वह जो तेनें जीव देख्यो ॥ सो वोहोत दिनोंको प्यासो हतो ॥ ओर जलके तीर उपर बेठ्यो हतो ॥ तोहू वानें जल न पियो ॥ ताको हेतु यह हतो ॥ जो जल पीउँगो तो इतनी वेर मेरो भगवन्नाम छूटी जायगो ॥ सो जब तेंनें श्रीकृष्णस्मरण कियो तितनी बेर वो शब्द सुनतेही वानें जल पी लियो ॥ सो एसी भगवन्नामपे आसक्ति चहिये ॥ तब कृष्णदासमेघन बोहोत प्रसन्न भयो ॥ ओर सुनिकें कृष्णदासके मनको संदेह गयो ॥

❀ (वार्ताप्रसंग २८ मों) ❀

एकसमय श्रीआचार्यजीमहाप्रभु पंढरपुर पधारे ॥ तहां पांडुरंग श्रीविठ्ठलनाथजीको स्वरूप हे ॥ तिनके दर्शनकों आप पधारे ॥ जहाँ श्रीआचार्यजी आपकी बेठक भइ हे ॥ तहाँ आप विराजे ॥ तहाँ आपसों श्रीविठ्ठलनाथजी मिले ॥ ओर श्रीमुखतें कहें ॥ जो तुम विवाह करो ॥ सो पांडुरंग श्रीविठ्ठलनाथजीने यातें कही जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके मार्गकी स्थिति तो वोहोत दिन तांई हे ॥ ओर देवीजीवनको अंगीकार वोहोत कहें न ताँई करनों हे ॥ सो जो आप विवाह न करेंगे ॥ तो देवी तो जीनको अंगीकार सिष्यद्वारा होयगो ॥ जेसें सेठि पुरुषोत्तम-जो हमां नाँम देवेकी आग्या दिये सो नाम देते ॥ तेसें ओर जो श्रीठाहूँ नॉम देवेकी आग्या श्रीआचार्यजीकी हती ॥ तातें होय जाय । विचारें ॥ जो ए जो सांप्रत भगवदीय नॉम देत नित्य श्रीकृष्ण श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके परम कृपापात्र हें ॥ ओर

अंग हें ॥ तातें इनकूँ तो जीव कृतार्थ करिवेकी सामर्थ्य हे ॥ जेसें गदाधरदासनें भक्ति दीनी ॥ ओर प्रभुदासनें मुक्ति दीनीं ॥ परि आगें तो एसी सामर्थ्य काहूकी न होइगी ॥ जेसें ओर संप्रदायीनसों वेदमार्ग छूटि गयो ॥ तेसो या संप्रदायीनसुं हूँ छूटि जाय तो जीव कृतार्थ न होंई ॥ याही तें श्रीपांडुरंगविठ्ठलनाथजीनें श्रीआचार्यजीसों आग्या दीनी ॥ जो तुम विवाह करो तो में तुमेरे घर जन्म लेउँगो ॥ यहाँ कोऊ संदेह करे ॥ जो श्रीविठ्ठलनाथजी आग्या काहेकों दीये ओर श्रीगोवर्धननाथजी क्यों न दिये ॥ ताको कारण यह ॥ जो जा भगवत्स्वरूपकों श्रीआचार्यजीमहाप्रभु स्पर्श करें ॥ सो साक्षात् पुरुषोत्तम श्रीगोवर्धननाथजीही जॉनो ॥ तातें यह जानिये जो श्रीगोवर्धननाथजी ही आग्या दीये ॥ सो छीतस्वामीहू गाये हें ॥ (छीतस्वामि गिरिधरन श्रीविठ्ठल अेई तेइ तेइ अेइ कछु न संदेह) तातें श्रीगुसाँईजी साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तम प्रगटे ॥ सो केसे जो आगरेमें एक वैष्णव श्रीगुसांईजीकों पंखा करतो ॥ ताकों संदेह भयो ॥ सो वाकों श्रीगुसांईजी आप साक्षात् श्रीगोवर्धनधरके दर्शन दीने ॥ एसे दर्शन सबनकों न होंई ॥ जो एसे दर्शन सबकों होंई तो सब जगत कृतार्थ होय जांई ॥ ओर आप श्रीआचार्यजीको ओर श्रीगुसॉंईजीको प्रागट्य तो केवल दैवीजीवनके उद्धारार्थ हे ॥ ओर आप सेवामार्ग प्रगट कीये हें ॥ सो गोपालदासजी गाये हें ॥ जो (आप सेवा करी सीखवे श्रीहरि भक्तपक्ष वैभव सुदृढ कीधो) ॥ तातें आप साक्षात् ईश्वर हें ॥ परि आप सेवकभाव करिकें मनुष्यदेहको अंगीकार कीये हें ॥ पाछें श्रीविठ्ठलनाथजीसों आप कहें ॥ जो हम विवाह केसें करें ॥ हमकों कॅन्या कोंन देइगो ॥ हमारे कहूँ एकठोर वास नॉहीं ॥ ओर ब्रह्मचर्याश्रमको ग्रहण

कीयो हे ॥ ओर तामें हम पृथ्वी परिक्रमॉ करत फिरत हें ॥ तातें हम कोनसों कहें ॥ जो हमकों कन्या देऊ ॥ तब श्रीविठ्ठलनाथजी आप कहें ॥ जो हम सब सिध्दि करि राख्यो हे ॥ आप काशी पधारो ॥ उहां एक मधुमंगल नामको तेलंग ब्राह्मण हनुमॉनघाटपे तेलंग ब्राह्मणनकी ज्ञाती समुदायमें रहतहे ॥ ताकों एक महालक्ष्मीजी करकें कन्या हे ॥ वानें आपकी प्रथमतें कीर्ति सुनकें यह निश्चय कियो हे ॥ जो मे वरुँ तो श्रीवल्लभाचार्यजीकों ही वरुँ॥ तातें वो नित्य अपनीं माताके संग गंगास्नान करिवे जाय तहां गंगाजीपे यह मॅागे ॥ जो मेरे पती श्रीवल्लभाचार्यजी ही होंय ॥ ताकों श्रीगंगाजीनें स्वप्नमें कही हे ॥ जो आजसों पॉचमें दिन श्रीवल्लभाचार्यजी आयके तोकों वरेंगे ॥ ऐसें कहिकें सौभाग्यद्रव्य देकें गंगाजी अंतरध्यान भये ॥ सो वृत्तांत प्रातःकाल वानें अपनी मातातें कहि ॥ वह सौभाग्यद्रव्य दिखायोहे ॥ तातें वो दोनो स्त्रीपुरुष ओर वो कन्या ऐसे तीनों आपकी इच्छा कर रहे हें॥ तातें तुरंत वहॉ पधारो ॥ वे तुमारो मार्ग देखत हें ॥ सो तुमकों आपतें कॅन्या देइगें ॥ वा समें वहॉके पुंडरीक भक्तनें श्रीआचार्यजीसों वीनती कीनी ॥ जो महाराज मोकों व्रजकी लीलाके दर्शन करवावो ॥ तब उनोंकूं वाकी ऑखि मुॅदवायकें अपनी बेठकके पीछें वनमें लेगये ॥ ओर तहॉ नेत्र खुलवाये ॥ तब वा पुंडरीक भक्तकों संपूर्ण व्रजविहारके स्थल समेत श्रीठाकुरजीकी लीलाके दर्शन भये ॥ पाछें आप फिर वाके नेत्र मुॅदवाय निज स्थलपे लाये ॥ तब वह वडो प्रसंन होय श्रीआचार्यजीकों साष्टांग दंडवत् प्रणॉम करि अपने स्थल श्रीपांडुरंग विठ्ठलनाथजीके संग गयो ॥ पाछें जो श्रीआचार्यजीनें राजाकृष्णदेवकीभेट मेंतें ७ सुवर्णमुद्रा देवीद्रव्यकी लीनीं हतीं ताके श्रीविठ्ठलनाथजीकों नूपुर बनवाय अंगीकार कर-

वाय विदा भये ॥ पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप सब भगवदीन-कों संग लेकें काशीकी ओर पधारे ॥ वहाँ काशीमें मधुमंगल ब्राह्मण केसो हतो ॥ जो वाके घर कछू प्रजा न होत हती ॥ ओर आप वृद्ध हतो ॥ तब वानें श्रीठाकुरजीसों प्रार्थना करी जो महाराज मेरे घरमें प्रजा होय तो परमार्थ करूँ ॥ जो बेटा होय तो काहू महा-पुरुषकी भेट करि देऊँ ॥ ओर कॅन्या होई तो काहू अपूर्व नि-ष्कंचन निष्कलंक स्वज्ञाति ब्राह्मण सुपात्र होइ ताकों देउँ ॥ तब भगवदइच्छातें वा ब्राह्मणके घर कॅन्या भई ॥ सो कन्या एसी भई ॥ जो साक्षात् श्रीमहालक्ष्मीको अवतार ॥ तातें वा कॅन्याको नॉम हू वानें महालक्ष्मीजी धन्यो ॥ जो जिनके पति हू पुरुषोत्तम ओर पुत्र हू पुरुषोत्तम होंयगे ॥ सो जब वा कॅन्याको विवाहकाल आई प्राप्त भयो ॥ तब वा मधुमंगल ब्राह्मणकों आप श्रीविठ्ठलनाथजीने स्वप्नमें जताई ॥ जो श्री-वल्लभाचार्यजी भूतलपे दैवीजीवनकों कृतार्थ करिवेके लियें प्रगट भयें हें ॥ ताकों तेरी कन्या दीजियो ॥ तातें वह ब्राह्मण नित्य काशीके द्वार आय बेठे ॥ तब जो नगरमें मनुष्य आवें ॥ ताकों ज्ञाति नॉम पूछे ॥ सो नित्य एसेंही करे ॥ सो एसें पूछत केतेक दिन बीते ॥ तब जादिन श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप काशीमें पधारे ॥ सब भगवदी आपके संग हे ॥ सो जब आपनें श्रीकाशीद्वार प्रवेश कियो ॥ इतनेमें वह ब्राह्मण आय ठाढो भयो ॥ ओर वानें आप सों पूछी ॥ जो आप कोन ज्ञाति हो ॥ तब श्रीआचार्यजी आप कहें ॥ जो हम कॉकरवा-डके यजुर्वेदी तैत्तिरीशाखी भारद्वाजगोत्री तैलंग ब्राह्मण हें ॥ ओर पृथ्वी परिक्रमॉ करत हें ॥ तातें सांप्रत ब्रह्मचर्याश्रममें हें ॥ तब वह ब्राह्मण सुनिकें प्रसन्न होइकें कहे ॥ जो हमहूँ तैलंग ब्राह्मण हें ॥ ओर मेरे घर एक कन्या हे ॥ सो मेंनें आपकों

दीनी ॥ श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आपतो साक्षात् ईश्वर हें ॥ सब जानतही हे ॥ ओर ता उपरांत श्रीविट्ठलनाथजीकी आग्याहू भई हे ॥ तातें आप कहें ॥ जो बोहोत आछो ॥ तब वा मधु-मंगल ब्राह्मणनें अपने घर पधरायकें ॥ आछो मुहूर्त देखि श्री-आचार्यजी महाप्रभुनको विवाह करि दियो ॥ जेसे वे श्रीपूर्ण-पुरुषोत्तम तेसेई वे साक्षात् श्रीमहालक्ष्मीजी ॥ सो श्रीआचार्य-जीमहाप्रभुनसों विवाहे ॥ पाछें ओर घरमें जो कछू हतो ॥ सो सब वा मधुमंगलनें आपकों समर्प्यो ॥ पाछें अपनी स्त्री श्रीमहाल्क्ष्मीजीकों अपने सासरेके घर छोड श्रीआ-चार्यजी आप तीसरी बेर पृथ्वी परिक्रमॉ करिवेकों पधारे ॥ सो तीसरी परिक्रमॉ आपनें विवाह करे पीछें करी ॥ तब संगमें वासुदेवदासछकडा, दामोदरदासहरसॉनी, प्रभुदास जलोटा, कृष्णदासमेघन ये चार जने क्षत्री ॥ ओर एक माधव-भट्टकाश्मीरी ब्राह्मण हे ॥ जिनके भाइ केशवभट्टकाश्मीरी निं-बार्कानुयायी हे ॥ जिनके किये क्रमदीपिका आदि ग्रंथ स्फुट हें ॥ ऐसे पांच सेवक संगहे ॥ तिनमें वासुदेव दास तो निरक्षर हे ॥ परंतु वडे भगवदीयहे ॥ ओर अपनें मॉथेपे छकडा माफिक बोहोत बोझा उठावते ॥ तातें आप श्रीआचार्यजी वाकों छकडा कहते ॥

❀ (वार्ताप्रसंग २९ मों) ❀

पाछें आप श्रीआचार्यजीमहाप्रभु काशीतें प्रयाग आये ॥ तहॉ आपने ७ दिन निवास करि श्रीभागवतकी पारायण करि ॥ त-हॉ मधुसुदनसरस्वती दंडी वडे भारी विद्वान् हते ॥ वे हते तो मायावादी परंतु भगवद्भक्तिके अनुरागी हते ॥ तिननें गीता-जीकी व्याख्या करी हती ॥ ताके उपर मंगलाचरणको श्लोक श्रीभगवानपरको कियो भयो आपकों दिखायो सो श्लोकः—

वंशीविभूषितकरान्नवनीरदाभात्-
पीतांबरादरुणबिम्बफलाधरोष्ठात्
पूर्णेन्दुसुन्दरसुखादरविन्दनेत्रात् ॥
कृष्णात्परं किमपि तत्त्वमहं न जाने ॥ १ ॥

यह श्लोक देखतेंहीं आप श्रीआचार्यजी बडे प्रसन्न भये ॥ तापाछें वा मधुसूदनसरस्वतीनें आपनों कियो भयो भक्तिरसायन ग्रंथ आपकूं दिखायो ॥ तामेंके विषयमें किंचित् संभाषण भये पीछें आप प्रसन्न भये ॥ तहांते आप व्रजके आडी पधारे ॥

❀ (वार्ताप्रसंग ३० मो) ❀

श्रीआचार्यजीमहाप्रभु प्रयागसुं व्रजकी ओर पधारे ॥ ता मार्गमें कन्नोज गाँममें कान्यकुब्जब्राह्मण पद्मनाभ पंडित पौराणिक जो मायिक मतसों सब ग्रंथ लगावते ॥ तिनके मतको खंडन कियो ॥ तब वे दोंनो स्त्रीपुरुष आप श्रीआचार्यजीके शरणि आये ॥ तापाछें विनको नाँम पद्मनाभदास धर्यो ॥ तिनकों आपनें सेवाके लियें श्रीमथुरानाथजीको स्वरूप पधराय दियो ॥ ओर सब सेवा प्रकार दिखायो ॥ पाछें आप आगें पधारे ॥ सो व्रजमें आये ॥

❀ (वार्ताप्रसंग ३१ मों) ❀

एकसमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु चातुर्मास वर्षाऋतु करिवेकों संवत् १५४८ फाल्गुन शुद्ध ६ रवीवारकों श्री वृंदावन पधारे॥ तहां आप ४ महिनाँ विराजे ॥ तहॉ कृष्णचैतन्यको समागम भयो ॥ विनकों श्रीभागवतकी सुबोधिनी टीकाकी व्याख्या कहीं सुनाइ ॥ तहाँ भांडिरवटकी कुंजमें रुपसनातन ओर कृष्णचैतन्यके शिष्य जीवगोस्वामीके संग भगवत्चर्चा भइ ॥ वामें जीवगोस्वामीनें आपसों वाद कियो ॥ सो सुनकें कृष्णचैतन्यनें वाको त्याग कियो ॥ तब वानें श्रीजमुनाजीके तीरपे जाय दिन दोय तॉईं वालुकाकी दोय मुठि भरि भक्षण करि ॥ अनशनव्रत

ले बेठ्यो ॥ सो सुनिकें श्रीआचार्यजी आप वहाँ कृष्णचैतन्यकों संग लेकें पधारें ॥ तब विनकों तथा गुरुकों देखि जीवगोस्वामीनें अपने अपराधकी क्षमाँ माँगी ॥ तब आप श्रीआचार्यजीनें वाकों कृष्णचैतन्यके संग करिदियो ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

❀ (वार्ताप्रसंग ३२ मों) ❀

श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप तीसरी परिक्रमा पूर्ण करिकें गोवर्धनकों पधारे ॥ सो आयकें श्रीगोवर्धननाथजीके दर्शन कीनें ॥ तब श्रीआचार्यजीको विवाह भयो हो ॥ तासों श्रीगोवर्धननाथजी बोहोत प्रसन्न भये ॥ ओर आप आग्या दीए ॥ जो अब कहूं आप स्थळ सिद्धि करिकें विराजो ॥ क्यों जो अब आपनें ग्रहस्थाश्रमको अंगीकार कीयो हे ॥ तब आप कहें ॥ जो आपकी आग्या ॥ पाछें उहांतें श्रीगोवर्धननाथजीकी आग्या लेकें संवत् १५४८ फाल्गुन सुदी ६ रवीवारके दिन जो आप परासोली पधारेहे ॥ जाको नाम आदि वृंदावन हे ॥ सो उहां जायकें श्रीआचार्यजी आप देखे ॥ सो गोपालदासजी गाये हें (त्याँथी वृंदावन पाँउ धारियाँ ज्यों मधुप करे गुंजार ॥ कुसुम द्रुम नवमल्लिका मकरंदनों नहीं पार ॥ तरु तमाल अति शोभिता हॅम जूथिका संघोड ॥ ललनाँ ते सुभगा लटकती हींडे ते मोडा मोड ॥ ताँन धुनि सुनि मयूर रूपे सांभळे धरी ध्यॉन ॥ नित्य लीला गॉन श्रवणें करे ते मधुपॉन ॥ कुंज सदन सुहामणा शोभा तणों नहीं पार ॥ विविध रासमंडल रचि खेले श्रीनंद कुमार) । सो एसे वा परासोलीमें आपनें रास लीलाके दरशन कीये ॥ ताहीतें श्रीगुसाईजी सर्वोत्तममें कहे हें जो ॥ (रासलीलैकतात्पर्यः) जितनीं श्रीठाकुरजीकी लीला हें ॥ तिन सबनमें रास लीला फलरूप हे ॥ तातें सुबोधनीजीमें रासलीलाको नॉम फलप्रकरण धर्यो हे ॥ सो एसे दर्शन आप

श्रीआचार्यजीमहाप्रभु करिकें श्रीगोकुल पधारे ॥ सो जेसे आदि वृंदावनमें आपनें साक्षात् रासलीलाके दर्शन किए हे ॥ तेसेही श्रीगोकुलमें साक्षात् बाललीलाके दर्शन किये ॥ श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप तो साक्षात् ईश्वर हें ॥ सो रास लीलाहू आपकी हे ॥ ओर बाललीलाहू आपकी हे ॥ ओर आपही सब लीला करतहें ॥ परि इतनो जो भगवदी न्यारो करिकें न गावें ॥ तो आपको जस प्रगट केसें होई ॥ श्रीआचार्यजीमहाप्रभु या नामसों आप मनुष्य देहको अंगीकार कीये हें ॥ ओर श्रीठाकुरजी या स्वरूपसों सेव्य स्वरूप भये हें ॥ तातें जगतकूं दिखायवेंकों आप सेवक भावको अंगीकार कीये हे ॥ सो भगवदी गाए हें सो पद ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (पद राग सारंग) ❀

भक्ति श्रीगोकुलतें प्रगट भई ॥ पेहेलें करी श्रीवल्लभनंदन फिरि ओरन सिखई ॥ १ ॥ चार्यो बरन शरन अपने करि- विधिसों बांटि दई ॥ श्रीविठ्ठलनाथ प्रताप तेजतें तिन्यो ताप गई ॥ २ ॥ प्रकट हुते वे प्रेत अदीक्षित तिन्हूँ माँगि लई ॥ अब उधरे कहत अपने मुख पत्री लिखि पठई ॥ ३ ॥ श्रीवल्लभ श्रीविठ्ठल गिरधर एको दरश सही ॥ नव प्रकार आधार नारायण लोक वेद निबही ॥ ४ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

तातें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु ओर श्रीगुसांईजी ओर श्रीगोवर्धननाथजी ए तीनों एक स्वरूप हें ॥ ओर आप श्रीगुसांईजी सेवा करेंहे ॥ सो जीवनके शिक्षार्थ ॥ सो भगवदी गाए हें सो पद ॥

❀ (पद राग देवगंधार) ❀

आपुनपें आपुनी सेवा करत ॥ आपुन प्रभु आपुन ही सेवक हें आपुनों रूप उर धरत ॥ १ ॥ आपुन धर्म कर्म

सब जानत मरजादा अनुसरत ॥ छीतस्वामि गिरधरन श्रीवि-
ट्ठल भक्तवच्छल वपु धरत ॥ २ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

तहां श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें श्रीगोकुलमें श्रीवलदेवजीके संग क्रीडाकरत श्रीठाकुरजीके दर्शन कीये ॥ तब आप मनमें विचारें ॥ जो श्रीठाकुरजीकी एसी इच्छा दीसतहे ॥ जो हम दोऊ तुमारे घर प्रगट होइँगे ॥ सो आप एसी इच्छा जानिकें आपके मनमें बोहोत आनंद भयो ॥ श्रीवलदेवजी हें तिनको नाँम तो श्रीगोपीनाथजी धरेंगे ॥ वे साक्षात् वेदको स्वरूप हें ॥ सो वेदमार्गको विस्तार करेंगे ॥ ओर श्रीविट्ठलनाथजी सो तो नंदकुमार हें ॥ सो अपनें जो देवीजीव भगवदी हें ॥ तिनकों परमानंदको दाँन करेंगे ॥ सो याको भाव गोपालदासजी कहेहें (रंगे ते रमताँ दीठडा वलदेव श्रीगोविंद ॥ ए पुत्र भावें प्रगटसे मन ऊपनों आनंद ॥ वलदेव श्रीगोपीनाथ कहिये श्रीविठ्ठल नंद नंद ॥ एं वेद पथ विस्तारसे जन आपसे आनंद ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

❀ (वार्ताप्रसंग २२ मों) ❀

पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप मनमें विचारें ॥ जो श्रीगोवर्धननाथजी आप आग्या दीये हें ॥ जो अब एक ठोर विराजो ॥ तासों यह निरधार किये ॥ जो कहूँ स्वतंत्र वास करनों ॥ जामें काहूकी सत्ता न होय ॥ तब आप काशी जाय तहाँ प्रथम श्रीविश्वेश्वर तथा विंदुमाधवके दर्शन करे ॥ पीछें अपनी ससुरार पधारे ॥ ओर श्राद्धविधी करी ॥ तब आपके संगके वैष्णवनने ध्वजा ठाडी करि सूचित कियो ॥ जो जिनकों वाद करनों होय सो करें ॥ हमारे गुरुचरण राजा कृष्णदेवकी सभामें संपूर्ण मायावादीनकों जीति जयपत्र ले आयेहें ॥ तब काशीके रहे सहे पंडित वाद करिवे आये ॥ तिनमेंके मुख्यनके नाँम दिनकरभट्ट, लक्ष्मणभट्ट, नित्यानंदमहाशय, चंद्र-

शेखर ओर नीलकंठ ये शुद्धाद्वैत मत सुनिवेकी इच्छा राखि आयेहे ॥ तिनकों आपनें उत्तमरीतिसों समाधांन करि विनके केहेवेसुं आपने ध्वजाको उपसंहार करिवेकी सेवकनसुं आज्ञाकरीवेकी तैयारीमें हते ॥ इतनेमें एकदंड दंडी उपेन्द्राश्रम ओर प्रकाशानंदसरस्वती मायावादी मठधारी पंडिताभिमानीनें आयकें वाद चरचाको फिर आरंभ कियो ॥ तिनकों दोयमुहूर्तमें (कोइ २७ दिनभी लिखेंहें) परास्त करे ॥ तब विननें कही जो तुँमकूं संन्यास न होय ॥ तब आपनें कही जो हम संन्यास लेके काशीमें आयकें तुमकूं संन्यास धर्म बतावेंगे ॥ पाछे आप स्वस्थलकों सासरेके घर पधारे ॥ तॉहॉं कछुक दिन विराजे ॥ तब सब काशीके दुष्टलोगननें विन संन्यासीनके उपदेशसुं श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों लरिवेकी तैयारी करवेकी आपके सेवकननें सुनीं ॥ तब श्रीआचार्यजीसों वीनती करी ॥ जो महाराज अब आप कहूँ ओर स्थल निश्चय करिके विराजें तो ठीक ॥ तब आप आग्या किये जो हॉं ॥ श्रीठाकुरजीकीहू आज्ञा स्थल करिकें विराजवेकी हे ॥ ऐसें कही ॥ आप श्रीप्रयागराज पधारिवेकी, इच्छा किये ॥

❀ (वार्ताप्रसंग ३४ मों) ❀

पाछें आप प्रयाग पधारे ॥ तहां एक घर सिद्धकरकें, वामें विराजे ॥ ओर अपनें सेवकनकों एकांत स्थलतीर्थ तें दूरी ढुंढिवेकों पठाये ॥ विन सेवकननें आयकें वीनती कीनी ॥ जो महाराज अडेलगॉम उत्तम स्थल हे ॥ तब आप अपनी ज्ञाति सहित वहां पधारे ॥ ओर यथाक्रम सबनकों घर बँधवाये ॥ ओर आपहूँ घर करवाय रहे ॥ वा दिनतें वा गॉमको नॉम देवर्षिकरके विख्यात भयो ॥ तहॉं सब शंका समाधानके लियें आवते ॥ तथा उपदेशके लियें ओर पढिवेके लिये हूँ आवते ॥ प्रयागमें जो मधुसुदनसरस्वती विख्यात हते ॥ जिनसुं प्रथम हूँ समागम भयोहतो ॥

विनसों आपको स्नेह हतो तेहू आपके पास आवते ॥ वंगदेशतें कृष्णचैतन्य वृंदावन आवत अडेलमें आपको निवास सुनिकें श्रीआचार्यजीके पास आये ॥ तिनके शरीरमें श्रीकृष्णको निवास देखी आप श्रीआचार्यजीनें विनकों असमर्पित वस्तुमेंसुं सामुग्री दे जिमाये ॥ पाछें कछुक दिन आपकेपास रहे ॥ पाछें कृष्णचैतन्य अपने स्थल श्रीवृंदावन गये ॥ पाछें पद्मनाभदास ओर विनकी स्त्री जो प्रथम कन्नोजमें शरणि आए हते वह आपके पास आये रहे ॥ जब काशी तें श्रीमहालक्ष्मीजीकों संग लेकें आप अडेल पधारे ॥ तहाँ स्थल सिद्धि करिकें आप विराजे ॥ जो सब भगवत्सेवा आपके संग ही ॥ तिनकी तो सब सेवा आप करतही हे ॥ तामें श्रीमदनमोहनजी तो आपके बडेनके ठाकुर हे ॥ सो तो आपकी माता इलंमॉगारुजी दक्षणतें पधराय लाईहीं ॥ ओर श्रीगोकुलनाथजीतो आपके सासुरेतें श्रीमहालक्ष्मीजीके संग पधारेहे ॥ सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुको सुसर मधुमंगल जो पंचायतन पूजा करत हतो ॥ तिनमें श्रीगोकुलनाथजी विराजत हते ॥ सो जब श्रीआचार्यजी आप श्रीमहालक्ष्मीजीकों लेकें पधारे ॥ तब आपको सुसर जो पंचायतन पूजा करत हो सो संग दीनी ॥ ओर कही ॥ जो मेरे कछू प्रजातो हे नाहीं ॥ जो इनकी पूजा करे ॥ तातें आप ले पधारो ॥ अब हम वृद्ध भये ॥ हमतें सेवा नॉहीं वनत ॥ तब श्रीआचार्यजी आप सब स्वरुपनकों लेकें गंगाजीके तीर विषे पधारे ॥ सो चारि स्वरूप महादेव, सूर्य, भवानी, गणेश, इनकों तो आप गंगाजीमें पधराये ॥ ओर जो जुगलस्वरूप श्रीस्वामिनीजी सहित श्रीगोकुलनाथजीको हतो सो आप सेवाकों राखे ॥ जब विन चान्योनकों श्रीगंगाजीमें पधराये ॥ तब वे चान्यो स्वरुप बोले जो जब आपही हमकों न

मॉनोंगे ॥ तब जगतमें हमकों कोंन मानेगो ॥ ओर हमारी पूजा कोंन करेगो ॥ तब श्रीआचार्यजी आप कहें ॥ जो हम तुमकों प्रस्तावमें अवश्य मानेंगे ॥ तब तुमारो समाधान करेंगे ॥ तब वे बोहोत प्रसंन भये ॥ पाछें श्रीआचार्यजीनें जो श्रीगोकुलनाथजीको स्वरूप हतो ॥ तिनको नॉंम श्रीगोवर्धननाथजी राखे ॥ काहेतें जो श्रीगोकुलनाथजीके एक श्रीहस्तमे गोवर्धन हे ॥ ओर एक हस्तमें शंख हे ॥ सो शंख काहेतें धरेहे ॥ जो जलको आधिदेविक हे ॥ ओर दोय श्रीहस्तसों वेणुनाद करत हें ॥ वा वेणुनाद करिकें व्रज भक्तनकों आनंद देतहें ॥ या भांतिसों श्रीगोकुलनाथजीको स्वरूप हे ॥ सो एसी रीतिसों श्रीआचार्यजीमहाप्रभु अडेलमें वास करिकें सेवा करत हे ॥ जे भगवदीय सेवक हे ॥ तिनकों सुख देतहे ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

❁ (वार्ताप्रसंग ३५ मों) ❁

प्रथम श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें व्रजमें श्रीबलदेवजीके ओर श्रीठाकुरजीके खेलतमें दर्शन करे हते ॥ सो आपके घर श्रीबलदेवजी प्रथम प्रगट भये ॥ काहेतें जो श्रीबलदेवजी हें ॥ सो श्रीठाकुरजी धॉंम हें ॥ अक्षर ब्रह्म हें ॥ ओर साक्षात् शेस महानाग हें ॥ जब प्रथम सिंघासन सैया सिद्धि होइ ॥ तब श्रीठाकुरजी पधारें ॥ तातें श्रीबलदेवजी श्रीगोपीनाथजी होयकें अडेल में संवत् १५६८ भाद्रपद व्रज आश्वीन वदी १२ के दिन प्रगट भये ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु बत्तीसमें वर्षको अंगीकार कीयेहते ॥ आपको नॉंमतो (नित्य लीलाविनोदकृत् हे) सोतो सदा अखंड विराजमॉंन ही हें ॥ श्रीगोपीनाथजीतो प्रगट भये ॥ पाछें श्रीआचार्यजी आप कितेक दिनलों अडेलमें ही विराजे ॥ पाछें श्रीमहालक्ष्मीजी सहित चरणाट पधारे ॥ सो चरणाट गॉंम श्रीगंगाजी तीरपे हे ॥ ताहां साक्षात् श्रीभगवानके चरणा-

रविंदके चिह्न हैं ॥ तहाँ आप श्रीआचार्यजी स्थल करिके विराजे ॥ पाछें संवत् १५७२ मागसर वदी ९ व्रज पौष कृष्ण नोमी शुक्रवार हस्तनक्षत्रके दिन साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तम श्रीगोवर्धननाथजी श्रीनंदरायकुमार श्रीयशोदोत्संगलालित श्रीव्रजभक्तनके प्राँण आधार आप कस्तुरीके तिलक सहित श्रीगुसांइजी प्रगट भए ॥ सो ताही समय कोऊ ब्राह्मण श्रीविठ्ठलेशरायजीको स्वरूप पधरायकें आयो ॥ सो वाही समय श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों दीनों ॥ सो लेकें आप वडे प्रसंन भये ॥ ओर कहें जो हमारे घर सेव्य सेवक भाव या दोय रीतिसो श्रीठाकुरजी प्रगट भए ॥ श्रीठाकुरजीनें सेव्य सेवक भावको याहीतें अंगीकार कीयो ॥ जो दैवीजीवनकों सेवा करी वतावें ॥ सो जा समय श्रीगुसाँईजीको प्रागट्य भयो ॥ ता समय अलौकिक रीतिसों उत्सव भयो ॥ सो वा उत्सवको अनुभव दामोदरदासहरसानी, कृष्णदासमेघन प्रभृति भगवदीनकों हो ॥ सो गोपालदासजी गाय हें (सेरीयें वहेर सुगंध तेणें मोह्या अलीकुल आवीयाँ ॥ दासनुदास जाय वारणें वारणे रह्यो उछव- जूये) तहां फेरि भगवदी माँनिकचंदजीहू गाये हें सो पद ॥ ७ ॥ ७ ॥

❀ (पद राग आसावरी) ❀

सुनि सुतको जस लक्ष्मणनंदन ढाढी निकट वुलायो हो ॥
कंचन थार भरे मुक्ताफल भक्ति वसन पहरायो हो ॥ १ ॥
मनवांछित फल वहूविधि दीनों कीयो अजाची ढाढी हो ॥
मानिकचंद वलि वलि उदारता प्रीति निरंतर वाढी हो ॥ २ ॥

❀ (पद राग देवगंधार) ❀

वहोरि कृष्ण फिरि गोकुल प्रगटे श्रीविठ्ठलनाथ हमारे ॥
द्वापर वसुधा भार हन्यो हरि कलियुग जीव उधारे ॥ १ ॥ तव वसुदेव ग्रह प्रगट होयकें कंसादिक रिपु मारे ॥ अव श्रीवल्लभग्रह

प्रगट होयकें मायावाद निवारे ॥ २ ॥ एसो कविको हे कलि-
माँहीं यह वरने गुन जो तिहारे ॥ माणिकचंद प्रभुको शिव
खोजत गावत वेद पुकारे ॥ ३ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (पद राग आसावरी अथवा सारंग) ❀

पौष कृष्ण नोमींको शुभ दिन सुत अक्काजी जायो हो ॥
निजजन सुनि सुनि अती आनंदित हरखित करत वधायो हो ॥
॥ १ ॥ नारदादि ब्रह्मादिक हरखित शुकमुनि अति सचु पायो
हो ॥ श्रीभागवत विवेचन करिकें गूढ अर्थ प्रगटायो हो ॥ २ ॥
कलिके जीव उधारन कारन द्विजवपु धरि व्रज आयो हो ॥
अति उदार श्रीलक्ष्मणनंदन देत दाँन मन भायो हो ॥ ३ ॥
करत वेद धुनि विप्र महामुनि जातिकर्म करवायो हो ॥ मानिक-
चंद श्रीविठ्ठल प्रभुको विमलि विमलि जसु गायो हो ॥ ४ ॥

❀ (ओर विष्णुदासजी गाए हें सो पद राग देवगंधार) ❀

भयो जगतिपर जे जे कार ॥ भक्ति सुधा प्रगटे श्रीविठ्ठल
कलियुग जीव निस्तार ॥ १ ॥ महा अघोर कटे या कलिके
प्रगट कृष्णअवतार ॥ विष्णुदास प्रभु पर न्योछावरि तन मन
धन बलिहार ॥ २ ॥ ओर कृष्णदासजी गाये हे सो पद ॥

❀ (पद राग देवगंधार अथवा सारंग) ❀

श्रीगोकुलमें आनंद भयो हे घर घर बजत वधाई ॥ श्री-
वल्लभग्रह प्रगट भए हें श्रीविठ्ठल सुखदाई ॥ १ ॥ सब मिलि
संग चलो मेरे तुँम जो भावे सो लीजे ॥ भयो मनोरथ मन-
को भायो अपनों चीत्यो कीजे ॥ २ ॥ उदय भयो गोकुलको
चंद्रमाँ पूरी मनकी आश ॥ भक्तन मन आनंद भयो हे दुःख द्वंद
भयो नाश ॥ ३ ॥ देश देश के भिक्षुक गुनिजन रहसि वधायो
गावें ॥ एक नाचें एक करत कुलाहल जो मागें सो पावें ॥ ४ ॥ का
हे विलम करत भैया हो वेगि चलो उठि धाई ॥ श्रीवल्लभसुतको

दर्शन देखे जनम जनम दुःख जाई ॥ ५ ॥ अष्ट सिद्धि नव निधि लक्ष्मी ठाढी रहतिहे द्वारें ॥ ताकी ओर दृष्टि भरि करिकें नॉहिन कोऊ निहारें ॥ ६ ॥ श्रीवल्लभ करुणॉमय सागर बाँह पकरि गहि- लीनों ॥ कृष्णदास ढाढी अपनेंकों अभय दानॅ पद दीनों ॥ ७ ॥

❀ (ओर छीतस्वामी गाये हे सो पद राग सारंग) ❀

जे वसुदेव किये पूरण तप तेई फल फलित श्रीवल्लभ देह ॥ जे गोपाल हुते गोकुलमें तेई अब आय वसे करि गेह ॥ ॥ १ ॥ जे तब गोपवधूहीं व्रजमें तेई अब वेदरुचा भई एह ॥ छीतस्वामि गिरधरन श्रीविठ्ठल अेई तेई तेई अेई कछू न संदेह ॥ २ ॥ ओर नंददासजी आप गाये हें सो पद ॥ ॥ छ ॥

❀ (पद राग कानडो अथवा बिलावल) ❀

प्रकटित सकल सृष्टि आधार ॥ श्रीमद्वल्लभ राज कुमार ॥१॥ धेयं सदा पद अंबुज सार ॥ अगनित गुॅन महिमा ज्जु अपार ॥ २ ॥ धर्मादिक द्वारें प्रतिहार ॥ पुष्टि भक्ति को अंगीकार ॥३॥ श्रीविठ्ठल गिरधर अवतार ॥ नंददास कीनों बलिहार ॥ ४ ॥

या प्रकार सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक भगवदीयननें श्रीगुसांईजीके जन्म उत्सवके दर्शन करिकें अनेक प्रकारको यश वर्णन कीयो ॥ तहां कोऊ संदेह करे ॥ जो ए भगवदीय तो सब पीछें आयें हें ॥ ओर श्रीठाकुरजीको प्रागट्य तो श्रीनं- दरायजीके घर भयो हे ॥ तातें यहां अब केसें गाय हें ॥ ताको हेतु जो यहॉ संदेह न करनो ॥ काहेतें जो भगवल्लीला भगव- दजस ओर भगवदी नित्य हें ॥ तातें सूरदासजी ढाढी होयके यह बधाय गाय हें सो पद ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

❀ (पद राग धनाश्री) ❀

नंदजू मेरे मन ऑनंद भयो हों सुनि गोवर्धनतें आयो ॥ तुमरे पुत्र भयो हों सुनिकें अति आतुर उठि धायो ॥ १ ॥

बंदीजन ओर भिक्षुक सुनि सुनि देश देश तें आये ॥ एकहि पहले आशा लागी बोहत दिननके छाये ॥ २ ॥ तुम दीनें कंचन मणि मुक्ता नाँनाँ वसन अनूप ॥ मोहि मिले मारगमें माँनों जात कहूँके भूप ॥ ३ ॥ दीजे मोहि कृपा करि सोई जोई हों आयो माँगन ॥ जसुमतिसुत अपनें पायन चलि खेलन आवें ऑगन ॥ ४ ॥ कोटि देउ तो पन्यो रहूँगो विन देखे नहिं जेहों ॥ नंदराय सुनि विनती मेरी तबही विदा भले लेहों ॥ ५ ॥ तुम तो परम उदार नंदजू जो माँग्यो सो दीनों ॥ एसो ओर कोन त्रिभुवनमें तुम सरसाको कीनों ॥ ६ ॥ मदन मोहन मैया कहि बोले यह सुँनि कें घर जाउँ ॥ होंतो तिहारे घरको ढाढी सूरदास मेरो नॉऊं ॥ ७ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ५ ॥

जब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको प्रागट्य भयो ॥ तब इन सूरदासजीकोहू जन्म हे ॥ ओर श्रीनंदरायजीतो द्वापारके अंतमें हे ॥ तब श्रीठाकुरजी विनके घर प्रगट भये हते ॥ तातें या पदको भाव असो हे जो भगवदीहूँ नित्य हें ॥ सो जब भगवान् अवतार लेत हें ॥ तब भगवदीहू यश गाएवेके तॉइ अवतार लेत हें ॥ सोहु गोपालदासजी भगवदीनें गायो हे जो (नित्य लीला नित्य नोतन श्रुति न पामें पार) सो श्रीगुसांईजीको वर्णन कोई कहॉ तॉई करे गो ॥ सो छीतस्वामी ओर हुं गायेहें सो पद ॥

❀ (पद राग भैरव अथवा विलावल) ❀

जे जे जे श्रीवल्लभनंद ॥ कोटि कला श्रीवृंदावन चंद ॥ १ ॥
निगम विचारत न लहे पार ॥ सो ठाकुर श्रीअक्काजीके द्वार ॥ २ ॥
शेप सहस्र मुख करत उचार ॥ व्रजजनजीवनप्राणआधार ॥ ३ ॥
लीला ही गिरि धान्यो हाथ ॥ छीतस्वामी श्रीविठ्ठलनाथ ॥ ४ ॥
(ओर गोस्वामी श्रीद्वारकेशजी महाराजनें कियो भयो जन्मपत्रिका गर्भित पंद हू यहॉ लिख्योहे ॥ सो जोतीशचक्रानुसार हे सो पद)

❀ (पद राग सारंग) ❀

चक्षु मुनि तत्व विधु सहस भृगु असित निधि जामें गुण समय भुवि प्रगट वल्लभ तनुज ॥ ध्रु० ॥ धन्य चरणाद्रि धन्य धन्य देवी भाग्य सकल सौभाग्य गोपीश भ्राजत अनुज ॥ १ ॥ लग्न वृष मिथुन गुरु सहज गत राहु शुभ चंद्र पंचम सुत स्थान राजे ॥ भौम कवि मंद बुध भाँन युत वसू धर्म ग्रह केतु संकेत साजे ॥ २ ॥ हस्त सौभन योग करण तैतर धरत वर्ण नीरद अंग सोहें ॥ द्वारकेशाधिपति विठ्ठलेशाधीश प्रभु मन्द सुत प्रीतिकों ओर को हें ॥ ३ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

या भाँतिसों श्रीगुसांईजीको अलौकिक रीतिसों प्रागट्य भयो ॥ फेरि श्रीआचार्यजीमहाप्रभु सहकुटुंब श्रीगुसाँइजीकों लेकें चरणाटतें अडेलमें आय विराजे ॥ तब सेव्य स्वरूप तीनि भये ॥ श्रीमदनमोहनजी ॥ श्रीगोकुलनाथजी ॥ श्रीविठ्ठलनाथजी ॥

❀ (वार्ताप्रसंग २६ मों) ❀

आपके वडे पुत्र श्रीगोपीनाथजी श्रीचरणाद्रिमें आय रहे हे ॥ जहाँ श्रीगंगाजी वेहेतहें ॥ तहां चरणपहाडीपे श्रीभगवाँनके चरणचिह्न विराजतहें ॥ वासुँही चरणाद्रि नाँम विख्यात भयो ॥ वहाँके चरणचिन्हकी शिला औरंगजेब वादशाहके समयसुँ यवननके स्वाधीन होय गइ हे ॥ वाके आप श्रीगोपीनाथजीनें दर्शन करकें कछूक वा गाँमतें दूरि सुंदर स्थान बाँधिकें आपनें निवास कियो हो ॥ श्रीगुसाँइजीके प्रागट्यके पीछें आप श्रीचरणाद्रिमें ही थोडे दिन विराजे ॥ फिर पाछे अडेलके समीप देवर्षिगाँम आय अपने पिता श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके पास प्राचीन गृहमें विराजे ॥ वहाँ श्रीगुसाँइजीको उपनयन करे पीछें मधुसूदनसरस्वतीस्वामीके पास विद्या पढाइ ॥ तापाछें आप श्रीआचार्यजीमहाप्रभु देवर्षिगाँममें १५ वर्ष ताँइ विराजे ॥ पाछें

श्रीगीताजीकउपर भाष्य करवेकी प्रार्थनाँ श्रीगुसाँइजीनें अपने पिता श्रीआचार्यजीसों करी ॥ तव आपने कही जो श्रीगीताजीमें ५७४ भगवद् वाक्यहें सो सव प्रमाण हें ओर सरल हें ॥ तातें हमनें गीताजीपे कोइ व्याख्या नाँहीं करी ॥ परि-तुमारी इच्छा होयतो करिओ ॥ ओर व्याससूत्रके ४ थे अध्यायके सपादसेप एक अध्यायको भाष्य करनों वाकी रह्योहे सोहू तुँम करिओ ॥ इतनें तुमकुंहू आचार्यपदवी प्राप्त होयगी ॥ पाछें श्रीगुसाँइजी श्रीविठ्ठलनाथजीके घर ६ पुत्र अडेलमें प्रगट-भये ॥ विन सवनकों विभाग कर दिये ॥ पीछें आप श्रीगुसाँ-इजी श्रीगोकुलमें निवास करिरहे ॥ तहाँ दूसरी पत्नीतें सातमें लालजी श्रीघनःश्यामजी संवत् १६२३ मार्गसीर्ष कृष्ण १३ के दिन वैराग्य गुणको स्वरूप प्रगट भये हते ॥ तिनकों दायभागमें श्रीमदनमोहनजीको स्वरूप दियो ॥ ता समय ताँहाँ तोडरमल्लादिक राजा सेवक भये ॥ वीरवलराजा ओर अकवरवादशाहनें जो. आपश्री गुसाँइजीसों प्रश्न किये ताके आपनें तुरंतही समयोचित उत्तर दिये ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (वार्ताप्रसंग ३७ मों) ❀

यहाँ अडेलतें आप श्रीआचार्यजीमहाप्रभु नाशिक त्रिंवक पधारे ॥ तहाँतें आप श्रीउज्जेन पधारे ॥ तहाँतें कांची पधारि वहाँ वरदराजस्वामीके दर्शन किये ॥ पाछें वेंणानदीके उपर उडपी कृष्णानगरमें ॥ मध्वमतानुयायी गोविंदानंदतीर्थके संग वाद भयो ॥ पाछें आगें सिद्धेश्वर गाममें रामानंद ओर शंकरमिश्र दोनों भाइ शरणि आये ॥ तामेंके शंकरमिश्रको नाम आपनें प्रभुदास धर्यो ॥ पाछें आप श्रीआचार्यजी श्रीरंगजी पधारे ॥ तहाँ रामानुजमतानुयायी श्रीनिवासाचार्य तथा जनार्दनाचार्यजीसों विसिष्टाद्वैतके विषयमें वाद भयो ॥ तहाँ श्रीआचार्यजीनें आपनें

शुद्धाद्वैत मतको स्थापन कियो ॥ ओर तप्तमुद्रांको निषेध करि तुलसीमाला धारणको मंडन किया ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (वार्ताप्रसंग ३८ मों) ❀

अब एकसमय श्रीआचार्यजीमहाप्रभु व्रजमें पधारे ॥ सो आपतो श्रीगोकुलमें विराजते ॥ ओर श्रीनवनीतप्रियाजी ठाकुर आगरेमें गजनधावनक्षत्रीके घर विराजत हते ॥ तातें एकदिन श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें अपने मनमें यह विचारी ॥ जो सब स्वरूपनमें अधिनायक तो श्रीनवनीतप्रियाजी हें ॥ सो तो आगरेमें विराजतहें ॥ वे पधारें तो बोहोत आछो ॥ ओर हमहीनें श्रीनवनीतप्रियाजीकों गजनधावनकों पधराय दीनें हें ॥ ओर वासों तो श्रीनवनीतप्रियाजी बहुत हिले हें ॥ सो वे गजनधावन कछु नाहीं तो करेंगे नाहीं ॥ वेतो देइंगे ॥ परि उनकी श्रीनवनीतप्रियाजीके उपर आसक्ति बोहोत हे ॥ बिन बिनाँ छिनहूं उनसों रह्यो न जायगो ॥ तातें जब विनकी इच्छा होयगी तब आपुहीं पधारेंगे ॥ सो यह वात श्रीआचार्यजीके मनकी जानिकें श्रीनवनीतप्रियाजी विनके पास पधारिवेकों आप गजनधावनसों कहें ॥ जो तूं मोकों श्रीगोकुल श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके पास ले चलि ॥ सो वाही समय गजनधावन आगरेतें श्रीनवनीतप्रियाजीकों पधरायकें श्रीगोकुल ले आयो ॥ सो आयकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों दंडोत करकें कहे ॥ जो महाराज यह श्रीनवनीतप्रियाजी पधारे हें ॥ तब श्रीआचार्यजी आप कहें ॥ जो अबहींतो कछू सेया सिंघासनभी सिद्धि नाहीं ॥ ओर तुम केसें पधराये आये हो ॥ तब गजनधावननें कह्यो जो सोतो श्रीनवनीतप्रियाजी जानें ॥ मोकोंतो इननें जेसी आग्या दीनी तेसें मेंनें कीयो ॥ सेवकको तो आग्या ही प्रमाण हे ॥ ओर आपनेंहू मोकों प्रथमही आग्या दे राखीहे ॥ जो जेसें श्रीनवनीतप्रियाजी प्रसंन होंय तेसें क-

रियो ॥ सो मोकोंतो आपके अनुग्रहतें श्रीनवनीतप्रियाजी आप श्रीमुखतें आग्या करतहें तेसेंही में करतहूँ ॥ तबश्रीआचार्यजी आप वापे बोहोत प्रसंन भये ॥ वा गजनधावनकी जेसी आसक्ति श्रीनवनीतप्रियाजी पे ही ॥ तेसी ही श्रीनवनीतप्रियाजीकी आसक्ति गजनधावनपे ही ॥ श्रीठाकुरजी गीताजीमें हूँ कहेहें जो (ये यथा मां प्रपद्यंते तांस्तथैव भजाम्यहम्) जो जेसीं रीतिसों मेरो भजन करतहे ॥ तेसी रीतिसों में वाको भजन करतहों ॥ तातें गजनधावनकी ओर श्रीनवनीतप्रियाजीकी परस्पर तेसीही आसक्ति ही ॥ सो देखिकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु गजनधावनकों दामोदरदासहरसानी, कृष्णदासमेंघनकी नांही अपने चरणारविंदके निकट ही राखे ॥ ता पाछें आप श्रीनवनीतप्रियाजीकों पधरायकें अपने घर अडेल पधारे ॥ वहां श्रीनवनीतप्रियाजी आप सिंघासन उपर विराजे ॥ तहां श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनें गजनधावनकों आग्या दीनी ॥ जो तुम मंदिरके आगें सदा वेठे रहो ॥ काहेतें जो श्रीनवनीतप्रियाजी तुमसों हिले हें ॥ तुमारे बिनाँ वे छिनहूँ नाहीं रहत ॥ सो तहां श्रीनवनीतप्रियाजी गजनके संग अनेक भाँतिसों क्रीडा करते ॥ कवहूँ हाथी करते ॥ कवहूँ घोडा करते ॥ कवहूँ गाय करते ॥ कवहूँ वत्स करते ॥ सो यातें ॥ जो जब हाथी करते ॥ तबतो ग्रीवा उपर विराजते ॥ ओर जब गाय करते ॥ तब अपनें पीतांवरसों वाको मुख पोछते ॥ ओर जब वच्छ करते ॥ तब पकरि राखते ॥ ओर जब घोडा करते ॥ तब वाके पीठि उपर असवारी करते ॥ एसें करत करत वा गजनधावनके घोंटू घिसिगए ॥ ओरहूँ वाकों आप श्रीनवनीतप्रियाजी बोहोत सुख देते ॥ सो कहाँताँई लिखिवेमें आवें ॥ ध ॥

❀ (वार्ताप्रसंग २९ मों) ❀

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके घर चारि स्वरूप विराजे ॥१॥

श्रीनवनीतप्रियाजी ॥ २ ॥ श्रीगोकुलनाथजी ॥ ३ .श्रीविठ्ठलनाथजी ॥ ४ श्रीमदनमोहनजी ॥ ओर जो दामोदरदाससंभरवार कन्नोजमें रहते ॥ तिनकों श्रीद्वारिकानाथजी जो कन्नोजतें पधारे हते सो पधराय दिये हते ॥ सो ताकी सेवा वे करते ॥ सो आपके अनुग्रहतें दामोदरदास संभरवारने श्रीद्वारिकानाथजीकी भलीभाँति सों सेवा कीनी ॥ जेसी राजानके घर सेवा होय तेसी वे करते ॥ तातें श्रीआचार्यजी आप श्रीमुखतें कहते जो ॥ जानें राजा अंबरीष न देख्यो होइ ॥ सो ईन दामोदरदासकों देखो ॥ परि वे मर्यादामार्गी हे ॥ ओर ये पुष्टिमार्गी हें ॥ तातें ईनमें इतनीं अधिकता हे ॥ या भाँतिसों आप श्रीमुखते वा दामोदरदाससंभरवारकी सराहनाँ करते ॥ सो जब दामोदरदाससंभरवार श्रीठाकुरजीके चरणारविंदकों ·प्राप्त भए ॥ तब श्रीद्वारिकानाथजी नावमें विराजिकें अडेलमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके घर पधारे ॥ तब सिंघासनपे पांच स्वरूप विराजे ॥ सो या रीतसो जो ॥ १ श्रीनवनीतप्रियजी ॥ २ श्रीविठ्ठलनाथजी ॥ ३ श्रीद्वारिकानाथजी ॥ ४ श्रीगोकुलनाथजी ॥ ५ श्रीमदनमोहनजी ॥ सो ये पाँचो स्वरूप एक सिंघानसनपे विराजे ॥ ओर भगवदीय सब दर्शन करते ॥ ओर श्रीआचार्यजीमहाप्रभु, श्रीगोपीनाथजी ओर श्रीगुसाँइजी ये तीनों सेवा करते ॥ या भाँतिसों आप श्रीआचार्यजीमहाप्रभु अडेलमें विराजते ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

❁ (वार्ताप्रसंग ४० मो) ❁

अब श्रीगुसाँइजी श्रीविठ्ठलनाथजीके ४ ये पुत्र श्रीगोकुलनाथजी आप भगवदीयनतें इतनी कथा कहि विराम करतभये ॥ तब भगवदीयननें वीनती कीनीं ॥ जो महाराज आपनें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुजीको तीनि पृथ्वीपरिक्रमाके चरित्र संक्षेपसुं सुनाये परि या चरित्रामृततें हमकों तृप्ति नाहीं होत ॥ तातें ओरहू

आप श्रीआचार्यजीके चरित्र सुनायवेकी कृपा करकें आपके दासानुदासनकों कृतार्थ करोगे ॥ तब आप श्रीगोकुलनाथजी आग्या करत भये ॥ जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके चरित्र तो अनंत हें ॥ परि ओरहूँ कछु संक्षेपसों तुमकों सुनावतहों ॥ सो श्रवण करो ॥ ऐसें कहिकें आप ओरहूँ संक्षेपसों चरितामृतको अपनें भगवदीयनकों पाँन करावत भए ॥ जो श्रीआचार्यजी-महाप्रभुनको प्रागट्य जा चंपारण्यमें भयो ॥ सो चंपारण्यक्षेत्र नागपुरके आगें रायपुर नामको बडो भारी ग्राम हे ॥ तहांतें ७ कोस पूर्वकी आडी हे ॥ ताको नाम चंपाझर सांप्रत स्फुट हे ॥ आप श्रीआचार्यजीको प्रागट्य संवत् १५३५ में जो मेनें कह्यो वाको आंधार श्रीकृष्णचंद्र प्रगटे ता समें जेसे ग्रह अन्य राशी पेसुँ शुभस्थानपे चलके आय गये तेसेही यहां हू जाने हें ॥ परि कल्याँणभट्टजीनें अपनें कल्लोल ग्रंथमें आप श्रीआचार्यजी-को जन्म संवत् १५२९ को लिखे हें ॥ ताको कारण जोतिशच-क्रानुसार जानिपरत हे (आप श्रीवल्लभाचार्यजीके जन्मकाल समयको जन्मपत्रिका गर्भित पद गोस्वामी श्रीद्वारकेशजी महा-राजनें कियोहे ॥ सो जोतिशचक्रानुसार हे तातें यहां लिख्यो हे)

❀ (पद राग सारंग) ❀

तत्व गुणवाँन भुव माधवासित तरणि प्रथम सौभग दिवस प्रगट लक्ष्मणसुवन ॥ धन्य चंपारण्य मन्य त्रैलोक्य जन अन्य अवतार भुवि हे न ऐसो भवन ॥ १ ॥ लग्न वृश्चिक कुंभ केतु कवि इन्दु सुख मीन बुध उच्च रवि वैरि नाशे ॥ मंद वृष कर्क गुरु भौमयुत सिंहमें तमस के योग भुव यश प्रकाशे ॥ २ ॥ रिच्छ धनिष्ठा प्रतिष्ठा अधिष्ठान स्थिर विरह वदनानलाकार हरि को ॥ यहे निश्चय द्वारकेश इनके शरणि और को श्रीवल्लभा-धीश सरको ॥ ३ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (ओर रसिकस्वामीनें वधाइ गाइ हे सो पद राग देवगंधार) ❀

भूतल महा महोत्सव आज ॥ श्रीलक्ष्मण ग्रह प्रकट भये हें श्रीवल्लभ महाराज ॥ १ ॥ आज्ञा दइ दया करि श्रीहरि पुष्टि प्रकटवे काज ॥ कलिमें जन्म उधर्‍यो ततछिन वूडत वेद जहाज ॥ २ ॥ आनंद मुरति निरखत नेंनन फूले भक्तसमाज ॥ नाचत गावत विवस भए सव छांडि लोक कुल लाज ॥ ३ ॥ घर घर मंगल वजत वधाइ सजत नए सव साज ॥ मगन भये सव गिनतन काहू तीनलोक परगाज ॥ ४ ॥ लीलासिंधू अवर्तें बांधी ॥ भक्ति प्रेमकी पाज ॥ रसिकनके मन सदा विराजो श्रीवल्लभ महाराज ॥५॥

याभाँति अनेक भक्तजननें आपको यश वर्णन कियो हे ॥ आप श्रीआचार्यजीके पिता श्रीलक्ष्मणभट्टजीनें किये भये सोमयज्ञकी समाप्तिके निमित्त सवा लक्ष ब्राह्मण भोजनको जो संकल्प किये हते ॥ सो पूर्ण करिवेके लिये आप सहकुटुंब संवत् १५३२ के चैत्रमें काशीजी पधारे हते ॥ तहाँ आप श्रीलक्ष्मणभट्टजीके घरके पास सद्गुणदास करकें ढाढी रहत हते ॥ तिनको ऐसो नियम हतो जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुजीके दर्शन किये विना अन्न जल न लेते ॥ तातें आप श्रीआचार्यजी वाके घर नित्य खेलवे पधारते ॥ काशीमें आषाढ शुक्ल २ रविवार पुष्यनक्षत्र (पुष्यार्कयोग) में आप श्रीआचार्यजीकों श्रीलक्ष्मणभट्टजीनें माधवानंद नाँमके यतीके घर विद्या पढिवे भेजे हते ॥ तहाँ संपूर्ण विद्या पढे पाछें कार्तिक शुक्ल ११ के दिन अपनें विद्यागुरु माधवानंद स्वामीकों गुरुदक्षिणाँ माँगिवेकी वीनती किये ॥ ता विरियां विननें भगवत्सेवा माँगी ॥ तव आप कहे जो ओहत आछो ॥ अवश्य देइंगे ॥ सो स्मर्ण राखिकें विनकों आपनें श्रीनाथजीकी सेवा दिनी हती ॥ सो प्रथम कहीहे ॥ ता पीछें आप विद्या पढिकें कार्तिकशुक्ल १५

के दिन श्रीआचार्यजी अपनें पिता श्रीलक्ष्मणभट्टजीके पास पधारे ॥ ता पाछें आप सिए भये वस्त्र न पेहेरते ॥ तहां काशीमें जो ब्रह्मसमाज होती तामें पितासुं छाने जाय श्लोक लिखि धरि आवते ॥ सो कोउ सों न लगते ॥ असी लीला करते ॥ ओर संगमें पादुका पट्टा ओर करुवाही राखते ॥ पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें छट्ठी पेढीके पुरुष यज्ञनारायणभट्टके वारीके सेव्य श्रीरामचंद्रजीको मंदिर श्रीलक्ष्मणभट्टजीनें अपनें गाम कांकरवाडमें कराय ताकी सेवा अपने वडे पुत्र रामचंद्रभट्टकों दीनी ॥ ओर मदनमोहनजीको ओर शालिग्रामजीको स्वरूप हू जो यज्ञनारायणभट्टके वारीको हतो ॥ तिनकी सेवा करिवेकी आप श्रीलक्ष्मणभट्टजीनें अपने पुत्र श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों कही हती ॥ तिनकी सेवा आप श्रीआचार्यजी करते ॥ प्रथम परिक्रमाँ सवत् १५५४ के वैशाख शुक्ल ३ के दिन पूर्ण किये हते ॥ पृथ्वीपरिक्रमाँनको संकल्प न्यारे न्यारे स्थलपेसुं इतने पृथ्विकतीर्थपेसुं ओर श्रीठकुराणी घाटपेसुं ओर विश्रांतघाटपेसुं लिये हते ॥ आप परिक्रमाँके समें जितनें दिन विद्यानगरमें विराजे हते ॥ तितनें दिनमें वहाँ व्याससूत्रपें अणुभाष्य ओर स्वमार्गीय ॥ तत्त्वदीप* निबंध ॥ आदि ग्रंथ प्रकट किये ॥ ओर पुष्टिमार्गको स्थापन करि वहांही अपनी माताजी इलंमाँ गारूजीकूं अपनें मामाँ विद्याभूषणजीके घर राखिकें आप आगें पृथ्वि प्रदक्षिणाकों पधारे हते ॥ दूसरी परिक्रमाँ करिवेकों हू माताजीकी आज्ञा लेकें संवत् १५५५ के चैत्रशुक्ल २ रविवारके दिन पधारे ॥ सो रात्रकूं आप सोमेश्वर जायके रहे हते ॥ तब संगमें दामोदरदासहरसानी, कृष्णदासमेघन, गोविंददुबे, ओर माधवभट्टकाश्मिरी हते ॥ माधवभट्टकाश्मिरी श्रीआचार्यजीके संग रहिकें ॥ आप जो जो ग्रंथ

*यह तत्त्वदीप निबंध छापवेको शीघ्र कीयो है थोरे दिनमें प्रकट होय गो

करते सो वो रस्ता चलते लिखिते ॥ ओर एक गाडा जितनों बोझा उठावते ॥ तातें आप श्रीआचार्यजी वाकों हू छकडा कहते ॥ जब आप जगदीश पधारे हते ॥ तब एकादशीको दिन होयवेसुं कोई पंडानें सखडी महाप्रसाद सामनें लाय श्रीआचार्यजीकों दियो ॥ सो वंदनपूर्वक श्रीहस्तमें ले आप गरुडस्थंभके पास ठाढे रहे ॥ ओर महाप्रसादकों श्रीहस्तमें राख वाके माहात्म्यको वर्णन करते करते दुसरे दिन द्वादशी भइ ॥ तॉहाँ ताईं आप ठाढेही वर्णन किये ॥ तातें एकादशीको व्रत, रात्रको जागरण, ओर द्वादशीको पारणाँ यह तीनो हूँ आपनें महाप्रसादको अनादर न करते युक्तिसों साधे हते ॥ सो मेनें प्रथम संक्षिप्तमें कहीहे ॥ आपके पास जो कृष्णदासमेघन बडे कृपापात्र भगवदीय संग रहते सो प्रथम सोरोंके पास श्रीनंदगामके केशवानंद जोतीसीके शिष्यहते ॥ ओर विनके पास जोतीस पढत हते ॥ तिनकों जोतीसको आरंभ करिवेको मुहूर्त आपाढ शुक्ल २ पुष्य नक्षत्रकों करवायो हतो ॥ वे आप श्रीमहाप्रभुजीकी जनोइके समें काशीमें आय मिले हते ॥ सो सेवक होय यावत् आपके संग रहे ॥ ओर आपके संग जो दामोदरदासहरसानी बडे कृपापात्र भगवदीय हते ॥ वे श्रीआजार्यजी जब बालाजीतें ॥ विद्यानगर पधारे हते॥ तब बीचमें एक नगरमें शिष्य भये हते ॥ जब श्रीआचार्यजी आप गोंमतीजी पधारे हते ॥ तब वहॉंके ठाकुर श्रीद्वारिकॉनाथजीके सेवक गोविंददुवे ब्रह्मचारी हते वे श्रीआचार्यजी की बेर २ पारायण सुनिकें सेवक भये हते.॥ तातें सेवा अपनें शिष्यनकों सोपिकें वे आप श्रीआचार्यजीके संग पृथ्वी प्रदक्षिणाकों गये हते ॥ पाछें सदा आपकेही संग रहे ॥ तहॉंतें श्रीआचार्यजी आप कार्तिक कृष्ण २ के दिन जॉमनगर पधारे हते ॥ आप श्रीआचार्यजीके परम कृपापात्र सेवक प्रभुदासजलोटाक्षत्रीके मार्थे-जो मद-

नमोहनजीको स्वरूप सेवाके लियें पधराय दियो हतो ॥ सो वह स्वरूप सरस्वतीके प्रवाहसुं गिरिभइ रेती मेंतें प्रगट भये हते ॥ ताकी आख्याइका एसी हे ॥ जो श्रीआचार्यजीके प्रागट्यसुं ३२९ वर्ष पूर्व पृथीराजचौहाँन करकें बडो भारी रजपूत राजा हतो ॥ तिनके ये श्रीमदनमोहनजी सेव्य ठाकुरजी हते ॥ सो वो राजा बादशाहकी लडाइमें देवलोक भयो ॥ तातें विनके घरकेननें बादशाहके डरके मारें श्रीठाकुरजीकों सरस्वतीके प्रवाहमें पधराय दिये हते ॥ सो आप श्रीआचार्यजीकूं परिक्रमा करत पायेहते ॥ तीसरी पृथ्विप्रदक्षिणाके समें झाडखंडमें आप श्रीआचार्यजी आए तब तहाँ प्रभु आज्ञा भइ हती जो ॥ हम श्रीगोवर्धनमें प्रगट भये हें ॥ ताकों आप आयकें प्रगट करो ॥ तब वो परिक्रमा अधूरी छोड आप श्रीआचार्यजी संवत् १५४८ फाल्गुन शुद्ध २ के दिन व्रजमें पधारे ॥ सो मथुराजीमें उजागरचोबेके घर रहे ॥ ता समें मथुरामें विश्रांतघाटके उपर दिल्लीके बादशाहके प्रधाँन रुस्तमअल्लीनें जो हिन्दूनतें मुसलमाँन होयजायवेको यंत्र बँधवायो हतो ॥ ताको झुंठो करि अपनों मुसलमाँनते हिन्दू होयजायवेको यंत्ररुपी पत्र वासुदेवदास ओर कृष्णदासके संग दिल्ली भेजवाय वहाँके द्वारपे टंगवायो ॥ ताविरियाँ दिल्लीको बादशाह सिकंदरलोधी हतो ॥ तातें खबर भइ ॥ सो वानें रुस्तमअल्लीकूं धमकाय अपनो यंत्र मथुरातें उठवाय लियो ॥ ओर प्रेमानिधीमिश्र करकें बडे महात्मा भगवदीय आप श्रीआचार्यजीके सेवक भये हते ॥ जिनकी करीभइ छप्पय भक्तमालग्रंथमें प्रसिद्ध हें ॥ पाछें आप उजागर चोबेकूँ संग लेकें संवत् १५४८ फाल्गुन शुद्ध ६ के दिन श्रीवृंदावन पधारे ॥ तहँतें गिरिराज आय श्रीजीको प्रागट्य कर आपनें रामदास ओर कुंभनदासचौहानकों सेवा दीनी ॥ तब श्रीना-

थजीनें आप श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों विवाह क
किये हते ॥ ओर कही जो तुम अव यह पृथ्वी पे हो पाछें आप
करि विवाह करो ॥ तव आपनें कही जो आज्ञा ॥ ये
श्रीआजार्यजी उजागर चोवेकूँ संग लेकें चोन्याशीको ो व्रज
यात्रा करि ॥ पाछें झाडखंडतें छोडीभइ परिक्रमाकरि
करिवेकों आप झाडखंडके आडी पधारे ॥ (ओर एक औ ओर
नामको औदीचसहस्र ब्राह्मण हतो ताकों सेवा करिवेकरण किये
मंदिर चलायवेकी आज्ञा करि प्रथम मुखिआ वाहीकों दीआ
हते ऐसेंभी कोइ लिखेंहें) ॥ वा प्रदक्षिणाकी विरिआँही श्री
चार्यजीनें आप काशीमें आयकें संन्यास लेके संन्यासधर्म दिग वा
यवेकी प्रतिज्ञा करी हती ॥ झाडखंडके लियें मथुराजीसों आरे
आवत वीचमें गौघाटके उपर सूरदासजी रहत हते ॥ जिनकों
सव सूरदासस्वामी कहते ॥ सो वे वडे विरक्त ब्राह्मण हते ॥
ओर वडे भगवद्भक्त हते ॥ ओर वे पदकरते ताहाँ श्रीआचार्य-
जी आप पधारे ॥ तव विनके कियेभये पद सूनवेकी आप
इच्छा किये ॥ ता विरियां सूरदासजीनें गायो सो ॥ ॥ ७ ॥

❀ (पद राग सारंग) ❀

प्रभु में सव पतितनको टीको ॥ ओर पतित सव घोस चारके
मेंतो जन्मतहीको ॥ २ ॥ वधिक अजामिल गणिका तारी ओर
पूतनाहींकों ॥ मोहि छोडि तुम ओर उधारे मिटे शूल केसें
जीको ॥ २ ॥ कोउ न समर्थ सव करनकों खेंचि कहतहों लिको ॥
मेरि यत लाज सूर पतीतनमें कहत सवे मोंहि निको ॥ ३ ॥
यह पद सुने पाछें सूरदासजीकों श्रीआचार्यजी आपनें मंत्रोप-
देश कियो ॥ ता पाछें ओर सूरदासजीने गायो सो पद हे ॥

❀ (पद राग चारंग) ❀ मद-

आपुनपो आपुनही विसंन्यो ॥ जेसें श्वाँन काचके मंदि

भ्रमि भूँसि मन्यो ॥ १ ॥ दूरि सौरभ मृगनाभिं वसतहे तृण शोधि सन्यो ॥ ज्यों सुपनेमें रंक भूप भयो तस्कर अरी । ॥ २ ॥ ज्यों केहरी प्रतिविंब देखिकें आपुन कूप पन्यो ॥ गज लखि स्फटिक शिलाकों दुसासन जाइ अन्यो ॥ ३ ॥ सुठि छार नहीं दोंनो घर घर द्वारि फिन्यो ॥ सूरदास नलिनीको सूवा कहि कोंनें पकन्यो ॥ ४ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ फिरि पाछो सूरदासजीनें विज्ञप्तिको एक पद गायो सो पद ॥

❀ (पद राग मलार) ❀

तुम तजि ओर कोन पे जाउं ॥ काके द्वार जाय शिरनाउ पर हथ कहा विकाउँ ॥ १ ॥ एसो को दाता हे समरथ जाके दिये अघाउँ ॥ अंतकाल तुमरे सुमिरण विनु ओर नहीं कहूँ ठाउँ ॥ २ ॥ रंक सुदामा कियो अजाची दियो अभे पद ठाउँ ॥ कामधेनु चिंतामणी दीनी कल्पवृक्ष तरछाउँ ॥ ३ ॥ भवसमुद्र अति देखि भयानक मनमें अधिक डराउँ ॥ कीजे कृपा महाप्रभु मोपर सूरदास वलिजाउँ ॥ ४ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

यह पद सुनिकें आप श्रीआचार्यजीनें सूरदासजीको यमुनाजीमें स्नान करवायो ॥ ओर शरणमंत्र ओर निवेदनमंत्रको उपदेश देकें दिव्य चछु दिये ॥ तासों सूरदासजीको संपूर्ण व्रजलीलाको दर्शन भयो ॥ ता अनुभवसों वे पद करनलागे तामें प्रारंभ के दोय पद यहां लिखत हों ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

❀ (पद राग देवगंधार) ❀

व्रज भयो महरिकें पूत जव यह वात सुनि ॥ आनंदे सव लोग गोकुल गुनक गुनी ॥ १ ॥ व्रज पूरव पुण्य रोपि कुल सुथिर थुनी ॥ ग्रह नक्षत्रन सव शोधि कीहूनी वेद धुनी ॥ २ ॥ सुनि धाईं सवे व्रजनारि सहज सिंगार किये ॥ तन पेहेरे नुतन चीर काजर नेन दिये ॥ ३ ॥ इत्यादी ३० तुकहें ॥

थजीनें आप श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों विवाह क[illegible]
किये हते ॥ ओर कही जो तुम अब यह पृथ्वी प[illegible]
करि विवाह करो ॥ तव आपनें कही जो आज्ञा ॥[illegible]
श्रीआजार्यजी उजागर चोबेकूं संग लेकें चोन्याशीको[illegible]
यात्रा करि ॥ पाछें झाडखंडतें छोडीभइ परिक्रमाके[illegible]
करिवेकों आप झाडखंडके आडी पधारे ॥ (ओर एक[illegible]
नामको ओदीचसहस्र ब्राह्मण हतो ताकों सेवा करिवेक[illegible]
मंदिर चलायवेकी आज्ञा करि प्रथम मुखिआ वाहीकों
हते ऐसेंभी कोइ लिखेंहें) ॥ वा प्रदक्षिणाकी विरिआँही [illegible]
चार्यजीनें आप काशीमें आयकें संन्यास लेके संन्यासधर्म [illegible]
यवेकी प्रतिज्ञा करी हती ॥ झाडखंडके लिये मथुराजीसों [illegible]
आवत वीचमें गोघाटके उपर सूरदासजी रहत हते ॥ जिनक[illegible]
सव सूरदासस्वामी कहते ॥ सो वे वडे विरक्त ब्राह्मण हते ॥
ओर वडे भगवद्भक्त हते ॥ ओर वे पदकरते ताहाँ श्रीआचार्य-
जी आप पधारे ॥ तव विनके कियेभये पद सूनवेकी आप
इच्छा किये ॥ ता विरियां सूरदासजीनें गायो सो ॥ ॥ ७ ॥

❀ (पद राग सारंग) ❀

प्रभु में सव पतितनको टीको ॥ ओर पतित सव घोस चारके
मेंतो जन्मतहीको ॥ २ ॥ बधिक अजामिल गणिका तारी ओर
पूतनाहींकों ॥ मोहि छोडि तुम ओर उधारे मिटे शूल केसे
जीको ॥ २ ॥ कोउ न समर्थ सव करनकों खेंचि कहतहों लिको ॥
मेरि यत लाज सूर पतीतनमें कहत सवे मोंहि निको ॥ ३ ॥
यह पद सुने पाछें सूरदासजीकों श्रीआचार्यजी आपनें मंत्रोप-
देश कियो ॥ ता पाछें ओर सूरदासजीने गायो सो पद हे ॥

❀ (पद राग चारंग) ❀

आपुनपो आपुनही विसंन्यो ॥ जेसें श्वाँन काचके मंदि[illegible]

भ्रमि भूँसि मर्‍यो ॥ १ ॥ दूरि सोरभ मृगनाभिं वसतहे तृण शोधि सर्‍यो ॥ ज्यों सुपनेमें रंक भूप भयो तस्कर अरी पकर्‍यो ॥ २ ॥ ज्यों केहरी प्रतिबिंब देखिकें आपुन कूप पर्‍यो ॥ जेसें गज लखि स्फटिक शिलाकों दुसासन जाइ अर्‍यो ॥ ३ ॥ ...कट सुठि छार नहीं दोंनो घर घर द्वारि फिर्‍यो ॥ सूरदास नलिनीको सूवा कहि कोनें पकर्‍यो ॥ ४ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ फिरि पाछो सूरदासजीनें विज्ञप्तिको एक पद गायो सो पद ॥

❀ (पद राग मलार) ❀

तुम तजि ओर कोन पे जाउं ॥ काके द्वार जाय शिरनाउ पर हथ कहा बिकाउँ ॥ १ ॥ एसो को दाता हे समरथ जाके दिये अघाउँ ॥ अंतकाल तुमरे सुमिरण बिनु ओर नहीं कहूँ ठाउँ ॥ २ ॥ रंक सुदामा कियो अजाची दियो अभे पद ठाउँ ॥ कामधेनु चिंतामणी दीनी कल्पवृक्ष तरछाउँ ॥ ३ ॥ भवसमुद्र अति देखि भयानक मनमें अधिक डराउँ ॥ कीजे कृपा महाप्रभु मोपर सूरदास बलिजाउँ ॥ ४ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

यह पद सुनिकें आप श्रीआचार्यजीनें सूरदासजीकों यमुनाजीमें स्नान करवायो ॥ ओर शरणमंत्र ओर निवेदनमंत्रको उपदेश देकें दिव्य चक्षु दिये ॥ तासों सूरदासजीकों संपूर्ण ब्रजलीलाको दर्शन भयो ॥ ता अनुभवसों वे पद करनलागे तामें प्रारंभ के दोय पद यहां लिखत हों ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

❀ (पद राग देवगंधार) ❀

ब्रज भयो महरिकें पूत जब यह बात सुनि ॥ आनंदे सब लोग गोकुल गुनक गुनी ॥ १ ॥ ब्रज पूरव पुण्य रोपि कुल सुथिर थुनी ॥ ग्रह नक्षत्रन सब शोधि कीहूनी वेद धुनी ॥ २ ॥ सुनि धाई सबे ब्रजनारि सहज सिंगार कियें ॥ तन पेहेरे नुतन चीर काजर नेन दिये ॥ ३ ॥ इत्यादी ३० तुकहें ॥

(यह वडी वधाइ गाइहे सो ग्रंथविस्तार भयसुं यहाँ तीनही तुक लिखीहं) ओर पाछें दूसरो पद सूरदासजी गाए सो पद ॥

❀ (पद राग कानरो) ❀

आदि सनातन हरि अवीनासी ॥ सकल निरंतर घट घट वासी ॥ १ ॥ पूरणब्रह्म पुराण वखानें ॥ चतुरानन शिव अंत न जानें ॥ २ ॥ महिमा अगम निगम नहीं पावे ॥ ताहि जसोमति गोद खिलावे ॥ ३ ॥ (इत्यादी बहुतपद गाएहें)

या प्रकार गोस्वामी श्रीगोकुलनाथजीनें अपनें सेवकनसो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुजीकी परिक्रमाके चरित्र सुनायकें कहि ॥ जो या प्रसंगके चरित्र जो मेंनें कहे सो प्रथमके ३९ प्रसंग मेंको कहूं कहूं को भाग कहवेको रह्यो हतो सो तुमकू सुनायो ॥ अव इन तीनों पृथ्वीप्रदक्षणॉ मेंके ओर कछु चरित्र संक्षेपमें कहूँ हूँ सो सुनो ॥ एसें कहकें आप श्रीगोकुलनाथजी कहत भये ॥

❀ (वार्ताप्रसंग ४१ मो) ❀

अव श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप देवीजीवनके उद्धारार्थ भूतलपर प्रगट भए ॥ सो, देवीजीव दोय प्रकारके हे ॥ एकतो श्रीठाकुरजीसों वोत दिनके विछुरे हे ॥ विनकेलियें तो आप श्रीआचार्यजीनें अवतार लियोहो ॥ ओर एक देवीजीवतो श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके संगही आयेहे ॥ वे देवीजीव केसे हे ॥ जो उनके उपर श्रीठाकुरजी साक्षात् अनुग्रह कियेहे ॥ सो तो वह श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको समाज हो ॥ जिनकों तो श्रीआचार्यजी आप अपनें वचनामृतसों सिचिकें याही देहसों उनकों नीत्य लीलाके दर्शन करवावते ॥ सो उनके उपर जा भाँतिसों श्रीआचार्यजी आपनें अनुग्रह कियोहो ॥ ओर श्रीगोवर्धननाथजीको साक्षात्कार भयो हो ॥ सो घरुवार्ता, चोरासी वेठकनके चरित्र, तथा चोरासी वेष्णवनकी वार्तामें विस्तारपूर्वक वॉचवेमें आवेगो ॥

❀ (वार्ताप्रसंग ४२ मों) ❀

ओर एकसमय श्रीआचार्यजीमहाप्रभु गूजरात पधारे ॥ तहाँ रात्रकों एक गाममें ब्राह्मणके द्वार आगें चोतरापे वा ब्राह्मणकों पूछिकें आप विश्राम करे ॥ वा गाममें पानी भरिवेको कूवा गाम बाहिर हतो ॥ तातें पीछिली रात्रकों वा ब्राह्मणकी स्त्री ओर पुत्री ॥ दधिमंथन करिकें माँखन वाही वासनमें छोडिकें दोउ पानी भरिवेकों कूवापे गई ॥ सो विनके दोय पुत्र बालक हते तिनकों सोवतही छोडिकें वे गई ॥ वे दोनों बालक समान वयके हते ॥ वे पाछेंतें उठिकें वा मथाँनीमेंतें नवनीत काढिकें खाएवे लगे ॥ सो कौतुक के समें वो ब्राह्मण सोयकें उठ्यो ॥ तानें देखिकें वह ब्राह्मणनें बाहिर आयकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों कह्यो ॥ जो महाराज आपकों श्रीठाकुरजीको एक कौतुक दिखाऊँ ॥ तब आप भीतर पधारिकें दूरितें देखें ॥ तो वे बालक माँखन खाय रहे हें ॥ सो देखिकें आप पाछे पधारे ॥ तब आप कहें ॥ जो तोकों श्रीकृष्ण बलदेवजीको भाव एसो उपज्योहे ॥ तो तूं अपनी स्त्रीकों बरजियो ॥ जो इन बालकनकों कछू प्रहार न करे ॥ स्त्रीजनको स्वभाव अति दुष्ट होतहे ॥ तातें आवतहीं इन लरिकानकों लालन पालन करे ॥ परि इनसों कछू खीजे नाँही ॥ पाछें वा ब्राह्मणनें उन पनिहारिनके सन्मुख जायकें कही ॥ जो बालकननें एसो कौतुक कीयोहे ॥ तातें तूँ विनसों कछू कहियो मति ॥ चुचकारियो ॥ एसें कहिकें वह स्त्रीकों बरज्यो ॥ तब उननें आइकें पानीको बासन धरिकें उन बालकनकूँ गोदमें लेकें चुचकारिकें मुख चुँमिकें कह्यो ॥ जो भली करी जो तुमनें माँखन खायो ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनने यह चमत्कार साथके भगवदीय दामोदरदास आदि सबकों कह्यो ॥ जो सगरी

गूजरातमें या ब्राह्मणकों भगवल्लीला स्फुर्तिभई ॥ पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप प्रातःकाल भये आगें पधारे ॥ ॥ ७ ॥

❀ (वार्ताप्रसंग ४२ मों) ❀

एकसमय श्रीआचार्यजीमहाप्रभु व्रजमें पधारे ॥ व्रज हे सो तो आपको स्वधाॅम हे ॥ श्रीठाकुरजीनें जितनी लीला करीहें ॥ सो सब व्रजमेंहीं करीहें ॥ तातें आपकों व्रज वहुत प्रिय हे ॥ सो सर्वोत्तममें श्रीगुसाॅईजी कहेहें (प्रियव्रजस्थितिः) ॥ सो एक दिन आप श्रीगोवर्धननाथजीको सेवा सिंगार राजभोग आरती करि अनोसर कराये ॥ श्रीगिरिराजतें नीचे उतरिकें अपनी बेठकमें विराजेहते ॥ तब एक वाई वेष्णव जो अन्योरमें रेहेती ॥ ताकी आपके कृपा अनुग्रह तें श्रीगोवर्धननाथजीउपर वहुत आसक्ति हती ॥ सो वा वाईनें आयकें आपसों विनती कीनीं जो महाराज मोकों कृपा करिकें एक भगवत्स्वरूप सेवा पधराय दीजे ॥ सेवा विनॉ मेरो दिनॉ नॉहीं निकसतहे ॥ आपकी कृपा अनुग्रहतें जो श्रीगोवर्धननाथजी दर्शन देतहें ॥ परंतु मेरेउपर कृपा करिकें श्रीठाकुरजी पधराय देऊ तो हों श्रीठाकुरजीकी सेवा करूं ॥ तब आपनें वा वाईके माथें श्रीवालकृष्णजी पधराय दिये ॥ ओर श्रीमुखतें आग्या करी ॥ जो ए वालक हें ॥ तातें तूं इनकों जतनसों राखीओ ॥ जो इनकों अकेले छोडेगी तो ए डरपेंगे ॥ एसें समुझायकें कही ॥ तासों वा वाईको मन अहर्निश श्रीठाकुरजीकी सेवामेंही लग्यो रहे ॥ सो काहेतें जो मनको निरोध हे सोई मुख्यहे ॥ सो वा वाईको मन श्रीठाकुरजीके चरणारविंदमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें धर्‍यो ॥ तब तें वह वाई एक क्षणहू सेवामेंतें निकसे नाँही ॥ ओर जो कदाचित् वह वाई नेकहुं दूरि जाय तो वाकों श्रीठाकुरजी पुकारें ॥ जेसें लौकिक वालक अपनी माता विनॉ

दुःख पावे ॥ तेसेंई श्रीठाकुरजी वा वाईसों कहें जो अरी तूं कहाँ जातहे ॥ मेंतो डरपतहों ॥ एसो स्नेह बांध्यो ॥ जासों वह वाई श्रीठाकुरजीके पासतें कहूँ न जाती ॥ ओर वह वाई जब कछु सामुग्री समारे ॥ तब श्रीठाकुरजीके मंदिर आगें वेठिकें सब कार्य करे ॥ रंचकहु दूरि न जाय ॥ सो एसो स्नेहको दाँन श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें वा वाईकों कीयो ॥ एक समें कृष्णदासमेघननें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसूं प्रश्न कीयो ॥ जो महाराज श्रीठाकुरजीकों प्रियवस्तु कहा हे ॥ ओर अप्रियवस्तु कहा हे ॥ तब आप श्रीमुखसों कहें जो श्रीठाकुरजीकों भगवदीयनको स्नेह अति प्रिय हे ॥ गोरस अति प्रिय हे ॥ गोरसमें दूध, दही, माँखन, घृत, सबही आयो ॥ सो प्रथमजो श्रीआचार्यजीनें भक्तनको स्नेह कह्यो ॥ ता पाछें गोरस कह्यो ॥ ताको कारण यह हे ॥ जो स्नेह विनाँ जो कोऊ श्रीठाकुरजीकूँ कछू समर्पे ॥ वो अंगीकार न होई ॥ सो या मारगमें स्नेह ही मुख्य हे ॥ स्नेह सों जो कोऊ श्रीठाकुरजीकों रंचकहू करत हे ॥ ताकों वे वहुत करिकें मानतहें ॥ सो सूरदासजी गाएहे (राई जितनी सेवाको फल माँनत मेरु समाँन) ओर परमानंददासजी हूँ गाए हें (गोपी प्रेमकी ध्वजा) यामें सब आयो ॥ तातें स्नेह हे सो सबतें अधिक हे ॥ फेरि श्रीठाकुरजीकों अप्रिय वस्तु कहें ॥ जो जहाँ क्लेश रहे ताके हृदयमें श्रीठाकुरजी कबहूँ प्रवेश न करें ॥ सो काहेतें जो क्लेश हे सो चांडालको स्वरूप हे ॥ तातें भगवदीयनकों क्लेशतें दूरि रहनों ॥ ओर प्रभुनकों मिलनकी आतुरता राखनी ॥ ओर दूसरो श्रीठाकुरजीकों धूँआँ अप्रियहे ॥ तातें वेष्णवकूँ जहाँ धूआँ होय तहाँ श्रीठाकुरजीकों पधरावने नहीं ॥ तीसरो जो भगवदीयनको द्रोही होय सोऊ श्रीठाकुरजीकों वहुत अप्रियहे ॥ श्रीठाकुरजीकी तो

प्रतिज्ञाही हे ॥ जो मेरो द्रोह करेगो ताकी तो हुं क्षमॉ करूँ गो ॥ परंतु भगवदीयनको द्रोह जो करेगो ताकी तो मोसों क्षमॉ सर्वथा न होयगी ॥ सो श्रीभगवान्नें दुर्वासाके प्रसंगमें ही कहीहे (अहं भक्तपराधीनो) ॥ हूँ अपनें भक्तनके आधीन हूँ ॥ तातें भगवदीयनको द्रोही श्रीकूं अत्यंत अप्रिय हे ॥ सो या प्रकारको दॉन श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें वा बाईकों कन्यो हो ॥ सो वह बाई भलीभॉतिसो श्रीठाकुरजीकी सेवा करन लागी ॥ वह बाई सोवे तो रात्रकों श्रीठाकुरजीके निकटही सोवे ॥ ओर छिन छिनमें श्रीठाकुरजीसो कहे जो महाराज में बेठी हूँ ॥ आप डरपो मति ॥ सुखसों सोवो ॥ ओर कदाचित्त रंचकहूँ वा बाईकी ऑखि लगे तो तबहीं श्रीबालकृष्णजी वा बाईसों कहें ॥ जो अरी तूँ सोइगई सो में डरपतहूँ तूं जागत रहि ॥ एसो अनुग्रह श्रीठाकुरजी वा बाईपें करें ॥ एंसें करत वा बाईकों निरोध सिद्ध भयो ॥ सो एक दिन रात्रकों श्रीगोवर्धननाथजी बाईके घर पधारिकें कहें अरी ॥ बाई किंवार खोलि ॥ में आयो हूं ॥ तब वा बाईनें कह्यो जो महाराज आप पधारे सो तो बडी कृपा करी ॥ परि में जो उठूंगी तो मेरो बालक डरपेगो ॥ तातें आप सवारें पधारियो ॥ सो यह कहिकें वह उठी नांहीं ॥ तब श्रीगोवर्धननाथजी वा बाईके उपर बहुत प्रसन्न भए ॥ ओर श्रीसुखसों यह आग्या करी जो असुकही हूं तेरे ऊपर प्रसन्न भयो हूं ॥ सो तूं जो कछू मांगेगी सोई में देउंगो ॥ तब वा बाईनें श्रीनाथजीसों बीनती करी जो महाराज आपनें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी कृपातें सब कछू दीयो हे ॥ ओर जो आप प्रसन्न भएहो तो हूं एक वस्तु आपके पास मांगत हों ॥ जो इहां श्रीगोवर्धनपर्वत उपर बंदरी बहुत रहेतहें ॥ सो वे बालकनकों ले जातहें ॥ ओर यह मेरो लरिका तो निपट बालक हे ॥ तातें या बालककूं कहूं

न लेजाइं ॥ सो यह में आपके पास मांगतहूं ॥ तब एसे वचन वा वाईके सुनिकें श्रीगोवर्धननाथजी आप रोमांचित भए ॥ ता समें यहही कहें ॥ जो धन्य ए हे ॥ जिनको स्नेह मेरेउपर एसोहे ॥ सो याके उपर श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें एसो अनुग्रह कीयोहे ॥ तातें याके भाग्यको पार नांही ॥ याकों मे कहा देऊं ॥ एतो सब मेरेही सुखकी वांछना करतहे ॥ तातें हूं याके वस पर्योहूं ॥ इनते छिनहूं दूरि नाहीं हूं ॥ सो वह वाई श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी एसी कृपापात्र भगवदीय भई ही ॥ ७ ॥

❀ (वार्ताप्रसंग ४४) ❀

बहुरि एकसमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु श्रीगोकुल पधारे ॥ तब दामोदरदासहरसानी, कृष्णदासमेघन, प्रभृति सब भगवदीय आपके साथ हते ॥ तासमय एक वैष्णव पूरवतें मिश्री लेकें आयो ॥ सो सामुग्री वा वैष्णवनें श्रीआर्यजीके आगें धरि साष्टांग दंडवत् करी ॥ सो मिश्रीबहुत हुती ॥ तब आपनें सब भगवदीयनसों आग्या करी ॥ जो तुम यह सामुग्री देखिकें छोटे छोटे टूक करो ॥ जेसें श्रीठाकुरजीके श्रीमुखमें धरे जाँयँ ॥ तब सब भगवदीयननें वह सामुग्री नीकी भांतिसों टूक करिकें सिद्धि करी ॥ जेसें सुखसों श्रीठाकुरजी आरोगें ॥ श्रम न होइं ॥ सो कितनीक छाबे मिश्रीसों भरी गइं ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें सब मिश्री लेकें श्रीठाकुरजीकों समर्पी ॥ ओर कितनीक बची सो भोग धरिकें ठकुरानी गोविंदघाटपे श्रीयमुनाजी स्नानकों पधारे ॥ तहाँहूँ वह मिश्री श्रीयमुनाँजीकों समर्पी ॥ सो जलके प्रवाह मारग अंगीकार कराए ॥ तब जो वैष्णव वह सामुग्री लायो हतो तानें देखिकें आपनें मनमें खेद कीयों ॥ जो मेनें तो जॉन्यो जो बहुत दिनाँलों थोरी थोरी सामुग्री पाहुँचेगी ओर आपनें तो एकही बेर श्रीय-

मुनाँजीमें पधराय दीनी ॥ सो आप तो जो करतहें सो तो सब आछोही करतहें ॥ ओर जो अंगीकार भई सोऊ आछी भई ॥ या भांतिसों वह वैष्णवनें अपनें मनमें विचार्यो ॥ सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु तो अंतरजामी साक्षात् श्रीभगवान् हें ॥ तातें याके अंतःकरणकी जानीं ॥ तब वा वैष्णवकूं बुलाय आप श्रीमुखसों कहें ॥ जो एसो संदेह तोकूं काहेतें आयो ॥ वह तो सब मिश्री श्रीठाकुरजी आपही अंगीकार कीएहें ॥ तब वह वैष्णवनें वीनती करी ॥ जो महाराज जीवबुद्धिहे ॥ जेसें देखे तेसें मनमें आवे ॥ आप जो सामुग्री सिद्ध करिकें समर्पी सोऊ देखी ॥ ओर श्रीयमुनाजीमें पधराइ सोऊ देखी ॥ तातें मेरे मनकों एसो संदेह आयो ॥ आपतो हमारे मुकुटमणी हो ओर साक्षात् श्रीपूर्ण पुरुषोत्तम सच्चिदानंद हो ॥ ओर हमारे तो सर्वस्व श्रीठाकुरजी आपही हो ॥ तातें हमनें तो तन, मन, धन, आपहीकों समर्प्यो हे ॥ श्रीठाकुरजी तो आपहीके अनुग्रहतें कृपा करेंगे ॥ नाँतर श्रीठाकुरजी हमकों कहा जाँनें ॥ हम सारिखे तो कोटिक जीव परेहें ॥ यह तो आपके अनुग्रहतें मेरो भागि सिद्ध भयोहे ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु वाकी दीनता देखिकें वाके उपर प्रसन्न होयकें ॥ जो वस्तु काहूसों न दीनीजाय सोई आप कृपा अनुग्रह करिकें वाकों दीनें ॥ काहेतें जो आप कृपासिंधु हें ॥ सो सर्वोत्तममें श्रीगुसाँइजी आप कहेहे (अदयादानदक्षश्च महोदारचरित्रवान्) पाछें ताही समय श्रीआचार्यजी वा वैष्णवसों कहें ॥ जो वैष्णव तूं देखि तेरी सामुग्रीको कहा उपयोग भयोहे ॥ तब वह वैष्णवकों केसे दर्शन भये सो आपनें श्रीयमुनाँष्टकमें वरणन कीओ हे (सकल गोप गोपीवृते कृपाजलधिसंश्रिते) ॥ जो श्रीयमुनाजीमें सकल गोप गोपीन सहित श्रीठाकुरजी सामुग्री

अंगीकार कीए हें ॥ एसी ठोर श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें वाकी सामुग्री उपयोग कराई ॥ सो श्रीठाकुरजीकी लीला सहित दर्शन करिकें वह वैष्णव बहुतही प्रसन्न भयो ॥ अपनों परम भागि मॉनत भयो ॥ जो धन्य श्रीआचार्यजीमहाप्रभुजीहें ॥ जिननें मेरेउपर एसो अनुग्रह कीयोहे ॥ ओर आपनें श्रीयमुनाजीकों स्वरूप प्रगट कीयोहे ॥ तासों भगवदीयकों श्रीयमुनाजीकों एसोही जॉननों ॥ ताहीतें गोविंदस्वामी श्रीयमुनाजीमें पाँव न देते ॥ श्रीगुसाँईनें एसो दर्शन गोविंदस्वामीकूहुँ श्रीयमुनाजीको करवायो ॥ यामें वैरागको यह स्वरूप प्रगट कीए ॥ जो संग्रह न राखनों ॥॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (वार्ताप्रसंग ४५ मां) ❀

बहुरि श्रीआचार्यजीमहाप्रभु मथुरॉ पधारे ॥ तहॉ उजागरचोवेके घर विराजे ॥ तब फेरिकें श्रीकी आग्या भई जो आप वेगि पधारो ॥ एसें दोय आग्या जब भई ॥ तब आप मनमें कहें जो श्रीठाकुरजीतो बहुतही उतावल करतहें ॥ ओर इहॉ तो अबहीं कारज रह्योहे ॥ तातें यह हूँ आग्या श्रीकी न वनिआवेगी ॥ तातें जेसें वनें तेसें दसमस्कंध निरोधलीलाकी टीका सुबोधिनी होयतो आछोहे ॥ ताहीतें यह श्रीआचार्यजीको नॉमहे (भक्ताकृतर्थकृतकृष्णआग्याद्वयोलंघनायनमः) जो अपनें भगवदी देवीजीव उपर आपको एसो अनुग्रह हे ॥ जो श्रीठाकुरजीकीहु दोय आग्या उलंघन कीए ॥ ओर याको दूसरो अर्थ यह हे जो श्रीठाकुरजीको स्वरूप ओर नाम श्रीआचार्यजी आपकों प्रगट करनोंहें ॥ सो स्वरूप तो श्रीगोवर्धननाथजी प्रगट कीए ॥ ओर नाम तो जब श्रीसुबोधनीजी प्रगट होय तब होय ॥ तातें दोय आग्या श्रीठाकुरजीकी आपने न मॉनीं ॥ श्रीठाकुरजी आप श्रीआचार्यकों वेगी बुलावतहे ॥ ताको कारण कहा ॥

श्रीठाकुरजी आपहीनें तो श्रीमहाप्रभुजीकों. आग्या दीनी जो दैवी जीवनको उधार करो ॥ जो वे मोतें बहुत दिननके विछुरेहें ॥ एसी कृपा आप करिकें तो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको प्रागट्य करायो ॥ सो श्रीगुसाँईजी सर्वोत्तममें आप श्रीमहाप्रभुनको नाम कहेहें (दयया निजमाहात्म्यं करिष्यन्प्रकटं हरिः) सीतो श्रीठाकुरजीकी आग्या हूतें आप पधारेहें ॥ ओर आप तो श्रीठाकुरजी यह आग्या कीए जो आप वेगि पधारो ॥ सो ताको हेतु यहहे ॥ जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको नाम श्रीवल्लभ हे सो श्रीठाकुरजीकों बहुतही प्रियहें ॥ तातें श्रीआचार्यजीको नाम सर्वोत्तममें श्रीगुसाँईजी कहेहें (वेदभाष्य) ॥ एसो नाम कह्योहे ॥ ओर श्रीआचार्यजीनकों श्रीठाकुरजी अति प्रियहें ॥ एसो अनिर्वचनीय परस्पर स्नेह हे ॥ एसो स्नेह छोडिकें श्रीआचार्यजी भूतलपे केसें पधारे ॥ ताको यह कारण है जो आग्या उलंघन न करनी ॥ आपनकों दुःख सुख होय सो सेहेन करनों ॥ एसो स्नेहको धर्म हे ॥ सो तातें श्रीठाकुरजीतें विछुरिकें आप श्रीआचार्यजी विरहको अनुभव करतहें ॥ सो श्रीगुसाँईजी आप सर्वोत्तममें कहेहें (विरहानुभवैकार्थ सर्वथा गोपदेशकः) ॥ आपतो साक्षात् पूर्णानंदहें (वस्तुतः कृष्ण एव) तातें साक्षात श्रीकृष्णपूर्णपुरुषोत्तम हूँ श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप हें ॥ सो ठोर ठोर भगवदी गाएहें तामेंको पद ॥ ॥ ७ ॥

❀ (पद राग गोडी) ❀

श्रीलक्ष्मणनंदन जे जे जे ॥ भक्तहेत प्रगटे पुरुषोत्तम मनवांछित फल निजजन दे ॥ १ ॥ शुकमुखद्रवित सुधारस मथिकें गूढभाव दसविध कर दे ॥ मायावाद करिंद्र दर्प दल भूतल तीरथराज सबे ॥ २ ॥ परिक्रमा मिस परसि पूत कृत दैवी जीवन दान अभे ॥ वसो निरंतर मेरे हीयमें दास गोपाल पदांबुज द्वे ॥ ३ ॥

कदाचित् एसो कोइकों संदेह होय जो श्रीआचार्यजी आपही श्रीठाकुरजीहें ॥ तो आग्या कोंने कीन्ही ओर कोंनपे कीए ॥ ताको हेतु पंचध्याईमें श्रीशुकदेवजी कहेहें (अनुग्रहार्थभक्तानां मानुषींदेहमास्थितः ॥ भजते तादृशीक्रीडां यां श्रुत्वातत्परोभवेत्) तातें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आपही अपनें दैवीजीवनके उपर अनुग्रह कीएहें ॥ जो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमरूप धरिकें जो आप भूतलपे पधारते तो सब जगत शरणि आवतो ॥ सो सब जगतको उद्धार तो करनों नाहीं ॥ आपतो केवल दैवीजीवनके लियें पधारे हें ॥ सो अपनें भगवदीयनकों तो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमहीको दर्शन होतहे ॥ ओर सब जगत तो एसें जानतहे ॥ ॥ जो ए कोई वडे महापुरुषहें ॥ वडे तेजस्वीहें ॥ वडे पंडितहें ॥ दिग्विजय कीएहें सो उनको तो ईतनोही ग्यानहे ॥ परि आपतो श्रीठाकुरजीको स्वरूपहें ॥ सो ग्यान नाहीं ॥ सो श्रीगुसांईजी सर्वोत्तममें लिखेंहें (प्राकृतानुकृतिव्याजमोहितासुरमानुषः) ओर भगवदी कीर्तनमेंहु गाएहे जो (असुर वंचे मनुज माया मोह मुख मृदु हास) जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके मृदु हाससों सब जीवनकों मोह होतहे ॥ ओर दैवी जीवनकूं तो सकल लीलाविसिष्ट दर्शन होतहें ॥ जेसो जेसो भगवदीय मनोरथ करतहें ॥ तेसेही प्रकार सों आप विनकूं दर्शन देतहें ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (वार्ताप्रसंग ४६ मों) ❀

एक समें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु उज्जेन पधारे सो ॥ तहाँ क्षिप्रानदी हे ॥ ताके तीरउपर विराजे ॥ वह स्थल बहुत सुंदर हतो ॥ तहाँ आपके पास सब वेष्णव बेठे हते ॥ ओर आप संध्यावंदन करत हते ॥ ता समय बयारि चली ॥ तासों कहूंतें एक पीपरको पतोवा उडत चल्यो आयो ॥ वह पतोवा

श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके चरणारविंद आगें आयकें पऱ्यो ॥ तब ताकों आप संध्यावंदन करिकें आपनें हस्तकमलसों उठाय लियो ॥ जहाँ आप संध्यावंदन कीएहते ॥ तहाँ जल पंड्यो हतो ॥ ता जलसों वहाँ धरती भीजी हती ॥ तहाँ श्रीआचार्यजी अपनें श्रीहस्तसों वा पतोआकी डाँडी रोपी ॥ तब तत्काल वाही समे वामें तें नवपल्लव पतोंवा निकसिवे लगे ॥ सो देखत देखत तत्काल पीपरको वृक्ष होयगयो ॥ सो जहाँ आप विराजे हते तहाँ धूप ही ॥ वहां पीपरकी छाया होय ॥ गई ॥ या प्रकार देवी जीवन उपर अनुग्रह करिकें आप श्रीआचार्यजीनें अपनी ऐश्वर्यता प्रगट कीनीं ॥ तातें सब जगतमें माहात्म्य प्रगट भयो ॥ जो देखो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनमें एसो सामर्थ्य हे ॥ ये तो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तम हें ॥ सो देखिवें सब लोग केहेन लागे ॥ जो यह कार्य मनुष्यसों तो न बनेंगो यतो ईश्वरकेई काम हें ॥ सो जहाँ जहाँ श्रीआचार्यजीकी बेठक हें ॥ तहाँ तहाँ छोंकरके वृक्ष हें ॥ ओर यहाँ उज्जेनमें पीपरके नीचें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बेठक सिद्ध भई ॥ सो जब कबहूँ आप उज्जेन पधारते ॥ तब वा पीपरके नीचें बेठकमें विराजते ॥ सो वह आपके श्रीहस्तको लगायो पीपर नित्य हे ॥

❀ (वार्ताप्रसंग ४७ मो) ❀

एक समय श्रीआचार्यजीमहाप्रभु अयुध्या पधारे ॥ तब दामोदरदासहरसाँनी, कृष्णदासमेघन, प्रभुदासजलोटाक्षत्री, ओर पांच सात वैष्णव आपके संगमें हते ॥ तब आप सरजूकेतीर बागमें उतरे हते ॥ तहाँ श्रीरघुनाथजी आपकों मिलिवेकों पधारे वा समें श्रीजानकीजी श्रीलक्ष्मणजी तथा श्रीहनुमाँनजी ए चान्यो साथ हते ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु तत्काल ऊठिकें श्रीरघुनाथजीसों कही ॥ जो श्रीमर्यादापुरुषो-

त्तमाय नमः ॥ तब श्रीआचार्यजीको सन्माँन श्रीरघुनाथजीनें भलीभाँतिसों कीयो ॥ ओर,जो कछू श्री आचार्यजीमहाप्रभुननें कह्यो सो श्रीरघुनाथजीही समुझे ओर कोऊ समुझ्यो नाहीं ॥ तासों हनुमानजीकों बहुत बुरो लाग्यो ॥ जो इननें मेरे स्वामी श्रीरघुनाथजीसों मर्यादापुरुपोत्तमाय नमः ॥ एसी क्यों कही ॥ ओर दंडवत प्रणाँम तो कछु किये नाँहीं ॥ सो हनुमानजीके मनमें एसी काहेतं आई ॥ जो श्रीआचार्यजीके स्वरूपको हनुमानजीकों ज्ञान न हतो ॥ तहाँ कोई शंका करे जो हनुमानजी तो श्रीरघुनाथजीके अत्यंत कृपापात्र हे ॥ तातें इनकों श्रीआचार्यजीके स्वरूपको ज्ञान न हतो सो केसें संभवे ॥ ताको हेतु श्रीगुसाँईजी आप सर्वोत्तममें कहेहें (सर्वाज्ञातिलीलोतिमोहनः) श्रीआचार्यजीकी लीला अत्यंत गोप्यहे ॥ सो जाकों आप कृपा करिकें जनावें सोई जाँने ॥ ताहीतें भगवदीय गाएहें सो पद

❀ (पद राग कान्हरो) ❀

जोंलों हरि अपनवो न जनावें ॥ तो लों सकल सिद्धांत सुमरन बल पढे सुनें नहीं आवें ॥ १ ॥ मुनि विरंचि नारायण मुखतें नारदकों सिख दीनी ॥ नारद कही वेदव्याससों आपन सोधन कीनी ॥ २ ॥ वेदव्यास औषधकी न्याई पढि तन ताप नसावे ॥ तातें पढी सुनी सुकदेवहि परीक्षतकों जु सुनावे ॥ ३ ॥ यद्यपि नृप सुनी व्रजकी लीला दसम कही सुकदेवा ॥ परि सर्वात्मभाव नहीं उपज्यो, तातें करी न सेवा ॥ ४ ॥ श्रीभागवत अम्रत दधि मथिकें श्रीवल्लभ पुरुपोत्तम ॥ करि आवरण दूरि निज जनके हाथ दीए पुरुपोत्तम ॥ ५ ॥ साजि सिंगार भोग,नानाविध सेवारस प्रगटायो ॥ वृंदावन निज लीला जन हरिजीवन स्वाद चखायो ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

ओर वल्लभाख्यानमें गोपालदासजीहूं गाएंहे (नित्य लीला नित्य नौतम श्रुति न पामें. पार) सो तहाँ ओरहूं गाएंहे (गाए श्रुति गुण रूप अहरनिश धरे ध्यांन विचार ॥ आनंदरूप अनूप सुंदर पामे नहीं कोई पार) ओर वेद एसें कहतहें ॥ जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके स्वरूपको पार कोई न पावे ॥ तो या रूपकों हनूमानजी कहा जानेंगे ॥ ताहीतें विनकों ईर्षा आई ॥ तव वाही समय श्रीरघुनाथजीनें श्रीहनुमानजीके अंत:करणकी जानी ॥ जो याके मनमें दोप आयोहे ॥ सो यहतो मेरो सेवक हे ॥ तासों श्री रघुनाथजीनें हनुमानजीकों देखिकें समाधान करिवेकेलिये यह उपाय कियो ॥ जो आप श्रीहनुमानजीसों आग्या कीए जो तुम या वातमें जानत नाहीं॥ ता पाछें आपनें श्रीहनुमानजीसों आग्या करी जो तुम श्रीआचार्यजीके पास जायकें देखि आवो वे कहाँ विराजतहें ॥ ता समय श्रीसरयुगंगाजीके तीरउपर स्नान करिकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु विराजे हते ॥ तिनके पास भगवदीय वेठे हते ॥ ओर रसोईको सामान सिध्द कररहे हते ॥ वाही समय हनुमानजी आप श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके निकट आए ॥ तव श्रीआचार्यजीके दरशन हनुमानजीकों श्रीरघुनाथजीके भए ॥ सो दर्शन करिके साष्टांग दंडवत प्रणाम करि हाथ जोरिके ठाढेभए ॥ तव श्रीआचार्यजी आप श्रीमुखसो आज्ञा कीए जो हनुमानजी जाओ ॥ तुम श्रीरघुनाथजीके दर्शन करो ॥ तव हनुमानजीके मनमें संदेह भयो ॥ जो श्रीआचार्यजीनें श्रीरघुनाथजीकों स्वरूप केसें धन्यो ॥ एसें मनमें केहेत श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकूं दंडोत करिकें हनुमानजी श्रीरघुनाथजीके पास मंदिरमें आए ॥ तव श्रीरघुनाथजीनें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके समाचार पूछे ॥ जो हनुमानजी तुम श्रीआचार्यजीके दर्शन करिकें आवतहो ॥ तव

हनुमानजीनें विनती कीह्नी जो महाराज दर्शन करि आयो ॥ परंतु श्रीआचार्यजी तो साक्षात आपको स्वरूप धरिकें बिराजे हते ॥ तब श्री रघुनाथजीनें मुसिकायकें हनुमानजीसों कह्यो जो इनमें इतनी सामर्थ्य हे ॥ जो वे मेरो स्वरूप धरिलेंइ ॥ ओर हममें इतनी सामर्थ्य नाहीं जो श्रीआचार्यजीको स्वरूप धरि सकें ॥ याको कारण कहा ॥ जो श्रीरघुनाथजीसों श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको स्वरूप धऱ्यो न जाय ॥ सो ताको हेतु यह हे जो द्वितीयस्कंध श्रीभागवतकी सुबोधनीजीमें जहां चोवीस अवतारको श्रीआचार्यजीमहाप्रभु निर्णय किएहें ॥ तहां सब अवतारनके स्वरूप लिखेहें ॥ सो तो कोउ अंसको हे ओर कोउ कलाको हे ॥ कोउ आभरणको हे ॥ कोउ वस्त्रको हे ॥ ओर श्रीरघुनाथजीतो पूर्णपुरुषोत्तमके हास्यको स्वरूप हे ॥ तातें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुको स्वरूप तो श्रीगुसाँईजी सर्वोत्तममें कहेहें (श्रीकृष्णास्यं) जो साक्षात् श्रीकृष्ण पूर्णपुरुषोत्तमके मुखारविंदको स्वरूप हे ॥ जेसें श्रीकृष्णके मुखारविंदमें तें हास्य प्रगट होतहे ॥ परंतु हास्य मेंतें मुखारविंद प्रगट नाहींहोत हे ॥ सो ताहीतें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु तो श्रीरामचंद्रजीको स्वरूप धरिलेइँ ॥ परंतु श्रीरामचंद्रजीतें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको स्वरूप धऱ्यो न जाय ॥ क्यों जो वे वाकधीश हें ॥ ओर वाणी हू श्रीमुखमें रहेत हे ॥ ओर सर्व पदार्थको भोग करत हे ॥ तातें भगवदीय गाएहें (वागीशं अनुभव उभय एक गुण भासं ॥ अखिल धरा पद परासि पूत कृत ब्रज यमुना विहरत रुचि रासं ॥ १ ॥) तातें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको स्वरूप अति अगाधहे ॥ सो तो श्रीरामचंद्रजीही जानत हे ॥ ओर जे परम कृपापात्र देवीजीव हे सो तिनकों आप जनावतहे ॥ ओर सर्व लीला सहित साक्षात् श्रीगोवर्धननाथजीको

दर्शन करतहे ॥ श्रीआचार्यजीने श्रीरघुनाथजीको स्वरूप श्रीहनुमानजीको अनन्यव्रत पालवेकूं लियोहतो ॥ या रीतिसों श्रीहनुमानजीको संदेह निवर्तकीए ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (वार्ताप्रसंग ४८ मों) ❀

बहुरी श्रीआचार्यजीमहाप्रभुः अयोध्यामें पारायण करे ॥ तब हनुमानजीनेंहू आयकें आपसों विनती करी ॥ जो महाराज मोकों आग्या होयतो में हूँ आपकी कथा सुनिवेकों आऊँ ॥ तब आपनें कह्यो जो तुमतो नग्न हो तातें सभामें केसें बेठोगे ॥ अपराध पडेगो ॥ तब हनुमानजीनें विनती कीनीं जो हों तो आपके सन्मुख बेठकें सुनूँगो तातें आप मेरे बेठिवेकी ठोर एक परदनीं धराईयो ॥ सो हों पेहेरिकें सुनुँगो ॥ तबतें वहाँ श्रीआचार्यजीमहाप्रभु पोथी खोलें तब एक परदनी अपनें सन्मुख धरावें तब वह परदनी हनुमानजी पेहेरिकें कथा सुनते ॥ सो तहाँ एक पंडित श्रीआचार्यसों वाद करन आयो ॥ सो ता पंडितने श्रीआचार्यजीसों कह्यो जो तुम कृष्णभक्तिकों प्रमाणो हो के ॥ श्रीरघुनाथजीकी भक्तिको प्रमाणो हो ॥ तब आपनें पंडितसों कही जो हमतो दोउनकी भक्ति प्रमाणी हे ॥ जो यहतो हमारी ननसारि हे ॥ जो लक्ष्मणभटजी इहां व्याहेहे ओर श्रीकृष्ण लक्ष्मणाकोंहू या अयोध्यामें व्याहे हे ॥ तातें हमारे श्रीठाकुरजीकी यह ससुरारि हे ॥ तादिनतें अयुध्याहू हमारी हे ॥ सो तब यह वचन सुनिकें वह पंडित चूप करिरह्यो ॥ सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु अपनें मारगको पक्षपात करत नहि हे ॥ पाछें आप श्रीआचार्यजी चित्रकूट पधारे ॥ तहाँ वृद्ध ब्राह्मणको भेस कियेभये श्रीहनुमानजीके संग संभाषण भयो ॥ तहाँ कान्तानाथ पर्वतकी सीमा अति रमणीय देखि मन लगगयो ॥ तासुं एक मास तहाँ विराजे ओर वाल्मीकीरामायणकी पारायण करी ॥

पाछें हनुमानजी आप श्रीआचार्यजीकों कांतानाथ पर्वतके उपर पधराय गए ॥ वहाँ साक्षात् श्रीरामचंद्रजीके दर्शन भये ॥ तहाँ फिर श्रीमर्यादापुरुषोतमायनमः असें कहकें श्रीआचार्यजीनें प्रणाम कियो ॥ तब आप श्रीरामचंद्रजीनें कही ॥ जो हमहूँ हमारे अंश सों करिकें आपके घर प्रगट होंयगे ॥ सो पाछें गुसाँइजीके पंचम लालजी श्रीरघुनाथजी प्रगटे ॥ तिनकी बहूजीको नाँम भी श्रीजानकीजी धन्यो हतो ॥ सो सुनिकें महाभक्त श्रीतुळसीदासजीनें श्रीगोकुल आयकें अनुभव कीयो ॥ तहाँ गाये सो पद (बरनों अवध गोकुल गाँव ॥ वहाँ सरजु यहाँ यमुनाँ दोउ अेके ठाँव) ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

यहाँ श्रीआचार्यजी आपकी दोय प्रदक्षिणाँ पूरी भई ॥ पाछें अयुध्यासूँ आप नैमिषारण्य पधारे तहाँ तीन दिन रहेकें पारायण करी ॥ तहाँ ज्ञानानंद करकें विख्यात पंडित हते ॥ तासूं वाद विवाद भयो ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (वार्ताप्रसंग ४९ मों) ❀

एकसमय श्रीआचार्यजीमहाप्रभुजी थानेस्वर पधारे ॥ तहाँ आपको प्रभाव देखिकें राणाव्यास, गोविंददुबे, नारायणदास, वत्साभट्ट, अच्युताश्रमत्रिदंडी संन्यासी वगेरा आपकी शरणि आय सेवक भये ॥ सो थँनेस्वरके निकट सरस्वती हें ॥ तातें आप थानेस्वरहीमें बिराजते ॥ ओर आप सरस्वती उलंघन न करते ॥ ताको कारण यह हे जो श्रीसरस्वतीहें सो तो श्रीभगवाँनके मुखारविंदकी वाणीको प्रवाह हें ॥ ओर आप श्रीआचार्यजीतो वाको मँडन तथा स्थापन करिवेकेलियें प्रगट भयेहें ॥ सो उलंघन केसें करें ॥ उलंघन कियेसूँ तो भगवत्वाणीको खंडन करवे तुल्य होय ॥ तातें प्रायः कोइ आचार्य सरस्वती उलंघन नाहीं करत ॥ जों कोई देवीजीव होते सो यहाँहीं आयकें आपके पास नाम

समर्पण करावते ॥ सो एसें आप श्रीसरस्वतीके तीर विषें बिराजे हते ॥ ओर मात्र स्नान करते ॥ सो सिंहनदमें दोय सास वहु रेहेतीं ॥ उनकेउपर आपकी वडी कृपा हती ॥ उनसों श्रीठाकुरजीहू वहुतही स्नेह राखते ॥ तातें उनकी सराहना श्रीआचार्यजी आप श्रीमुखतें वोहोत करते ॥ ओर कहते जो कहा करूं मोकों सरस्वती उलंघनी नाहीं ॥ नॉतर तो विनके घर जायकें विनकों दर्शन देतो ॥ एसी कृपा उन सास वहूके उपर श्रीआचार्यजी करते ॥ सो एकसमय आप श्रीसरस्वतीके तीर विषें स्नान करिकें संध्यावंदन कीए ॥ तव संध्यावंदनके जलसों जो मृतिका भींजी देखि सो आपनें श्रीहस्तमें लेकें एक श्रीठाकुरजीको स्वरूप निर्माण कीयो ॥ उनको नाम श्रीवालकृष्णजी धर्यो अथवा वालमुकुंदजीहु नाम कहते ॥ ता समय एक सींहनदको वैष्णव आपके निकट ठाढो हतो ॥ वानें वीनती करी जो महाराज मोको एक श्रीठाकुरजीकी सेवा पधराय दीजीए ॥ में श्रीठाकुरजीकी सेवा करूंगो ॥ तव वो स्वरूप आपनें वा वैष्णवकों पधराय दियो ॥ स्वरूप वा वैष्णवके देखत आपनें निर्माण कियो हतो ॥ तातें वाकें मनमें संदेह उत्पन्न भयो ॥ तव वानें आप श्रीआचार्यजीसों विनती कीनी ॥ जो महाराज मेरो मन श्रीठाकुरजीकों अभ्यंग स्नान करायवेको हे ॥ सो में इनकों केसें कराउगो ॥ वा वैष्णवसूं आप कहे जो तुं एसो संदेह मति करे ॥ जो तेरो मनोर्थ होय सो तूं सव करियो ॥ तव वह वैष्णव श्रीवालकृष्णजीकों पधरायकें अपनें घर पाट वेठाये ॥ ओर अभ्यंग स्नान करवायो ॥ पाछें शृंगार करि भोग सिद्ध कीयो ॥ तव वडोई उछाह वा वैष्णवकें मनमें भयो ॥ तव श्रीठाकुरजी वा वैष्णवपर अनुग्रह करिकें सानुभावता जनावन लागे ॥ ओर जो चहीये सो मांगि

लेते ॥ जेसें कोई बालक क्रीडा करे तेसेंई श्रीबालकृष्णजी क्रीडा करते ॥ सो वो बडो कृपापात्र भगवदीय हतो ॥ जिनके भाग्यसों श्रीआचार्यजीमहाप्रभु अपने श्रीहस्तसों स्वरूप निर्माण कीए ॥ सो वह वैष्णव श्रीठाकुरजीकी सेवा भलीभांतसों करे ॥ ॥ छ ॥

❀ (वार्ताप्रसंग ५०)

एकसमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु बद्रिकाश्रम पधारे हुते ॥ तब साथ कृष्णदासमेघन, गोविंददुबे, जगन्नाथजोशी, रामदाससिकंदरपुरके ए चारी जनें आपके संग हते सो तादिन वामनद्वादशीको दिन हुतो ॥ तब श्रीआचार्यजीनें फलाहार बोहोत ढुंढवायो ॥ तब बद्रिनारायणजीहू फलाहार बोहोत खोजत फिरे परि कछु पायो नाही ॥ तब इतनेमें कृष्णदासमेघननें आय कह्यो ॥ जो महाराज फलाहारतो कछु मिलत नाही ॥ इतनें श्रीबद्रीनारायणजीनें हू श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनतें कह्यो जो मेनेंहूँ फलाहार बहुत खोज्यो परि कछु मिल्यो नाहीं ॥ तब श्रीआचार्यजी मनमें खेद करन लागे ॥ जो मेरेलियें श्रीबद्रीनारायणजीनें इतनो श्रम लियो ॥ तब श्रीबद्रीनारायणजीनें कह्यो जो (उत्सवांते च पारणं) तातें मेरी आज्ञा हे जो रसोई करिकें श्रीठाकुरजीकों धरिकें भोग सराय भोजन करो ॥ तबते वाँमनजयंतीमें द्वादशी उपरांत श्रीआचार्यजीमहाप्रभु भोजन करनलागे ॥ पाछें सब वैष्णव आपुसमें चर्चा करन लागे ॥ जो एतो श्रीबद्रीनारायणजीनें श्रम काहेकों कियो ॥ तब ऊन वैष्णवनतें कृष्णदासमेघननें कह्यो जो तुँम बावरे भयेहो ॥ श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकेलीयें श्रीनाथजी श्रम करतहे तो श्रीबद्रीनारायणजीकी कहा चलीहे ॥ एसो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको प्रकार लौकिक विषेहे ॥ पाछें एक गुफामें पधारिकें आप श्रीवेदव्यासजीके दर्शन करि आगें पधारे ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

❀ (वार्त्ताप्रसंग ५१ मों) ❀

एकसमय श्रीआचार्यजीमहाप्रभु गंगासागर पधारे ॥ तब श्रीठाकुरजीनें आपकों आग्या दिनी ॥ जो अब तुम मेरेपास आवो ॥ तब आप बिचारें जो श्रीठाकुरजीने तो यह आग्या दीनी ओर हमनें तो मनोर्थ वहुत विचार्‍यो हे ॥ ओर कारज तो वहुतही करनेहे ॥ ओर आग्या तो एसी भई ॥ तातें अब कहा करनों ॥ ताहीसमय आपनें श्रीभागवत तृतीयस्कंध चतुर्थस्कंधकी टीका सुबोधनीजी समाप्त कीनी ॥ वेसेईमें श्रीठाकुरजीकी आग्या भई जो वेग आवो ॥ तव आपनें श्रीभागवतके पंचमस्कंध, षष्ठस्कंध छोडिकें ॥ दसमस्कंधकी सुबोधनीजीको आरंभ करतभए ॥ जो दशमस्कंध वडो पदार्थ हें ॥ यामें निरोध लीलाहे ॥ सो सब स्कंधनमें फलरूपहे ॥ याहीमें भगवदीयनको विलास है ॥ लीलाको समुद्र हे ॥ श्रीसुवोधनीजीके आरंभमे कहेहें

॥ श्लोक ॥

एतन्निशम्य भृगुनंदन साधुवादम्
वैयासकिः स भगवानथ विष्णुरातम् ॥
प्रत्यर्च्य कृष्णचरितं कलिकल्मषघ्नम्
व्याहर्तुमारभत भागवतप्रधान ॥ १ ॥

श्रीआचार्यजीमहाप्रभु लिखेहें ॥ जो आपुही श्रीठाकुरजी कहेहे ॥ ओर आपही सुनेहें ॥ दशमस्कंधमें जन्मप्रकरणमें सब व्रजकी तथा श्रीनंदरायजी, श्रीयसोदाजी, ओर सब व्रजभक्तनकी कथा हे ॥ सो तिनकोही श्रीआचार्यजीमहाप्रभु प्रगट कीएहें ॥ सो वह मारग तो व्रजभक्तनको हे ॥ सो आपनें दैवीजीवनकेलियें प्रगट कीयो हे ॥ तातें यह विचारिकें वीचमेंके स्कंधनको छोडिकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु दशमस्कंधकी श्रीसुबोधनीजीको

आरंभ करत भये ॥ कितनेक अध्याय दशमस्कंधकी सुबोधनीजी भई ॥ सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आपुश्लोक केहेतजाँई ॥ ओर माधवभट्ट लिखतजाँइ ॥ जहाँ माधवभट्ट न समुझें ॥ तहाँ लेखन धरिराखें तब समुझायकें आप कहें ॥ तब वे माधवभट्ट फेरि लिखें ॥ जब भोजनकरिकें आप विराजते तब श्रीसुबोध-नीजी करते ॥ सो कितनेकदिनमें एसें चलत मारगमें वह ग्रंथ सिद्ध होत भयो ॥ पाछें आपश्रीआचार्यजीमहाप्रभुजी तो ती-सरीपृथ्विपरिक्रमाँ पूरी करि अडेल पधारे. ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ इति श्रीआचार्यजीमहाप्रभुजी (श्रीमद्वल्लभा-चार्यजी) की निजवार्ता संपूर्ण ॥

अथ श्रीआचार्यजीमहाप्रभुजी (श्रीवल्लभाचार्यजी) की

❀ ॥ घरूवार्ता प्रारंभः ॥ ❀

❀ (वार्ता १ ली) ❀

अब श्रीगोकुलनाथजी आग्या करतभये ॥ जो श्रीआचार्य-जीमहाप्रभु आप अडेलमें घरकरिकें विराजे ॥ ता पीछेंके कछुक चरित्र. संक्षेपसों कहतहों सो सुनो ॥ यह सुनिकें श्रोता बहुत प्रसन्न भये ॥ जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुजीनें १२ वर्षकी उमरमें पृथ्वी* प्रदक्षणाको आरंभकरि दर ६ वर्षमें एक एक प्रदक्षणा पूरी करी हती ॥ सो २० वर्षकी अवस्थामें ३ पृथ्वी प्रदक्षणा ओर ३ दिग्विजय किये हते ॥ तापाछें आप श्रीआचार्यजीमहा-प्रभु काशी आये ॥ तहाँ आवतें मायावादीननें एक पत्र दियो ॥ ताको उत्तर तुरतही आपनें दियो ॥ तब विननें कही जो उत्तर ठीक न भयो ॥ तब आपके संग जो माधवसरस्वती

* या ठिकाणीं पृथ्वीको अर्थ आर्यावर्त अथवा भरतखंड जाननो.

हते तिननें कही जो यहाँ मायावादीकी दुर्बुद्धि भइहे ॥ तातें आप इनतें बोलो मति ॥ पाछें आप श्रीआचार्यजीमहाप्रभु अडेल आय वसे ॥ पीछें भक्तिमार्गको हठसूँ निरूपण कियो ॥ आप तीनों परिक्रमा संपूर्ण कर अडेल पधारे हते ॥ ता दिनातें हरसाल चैत्रकृष्ण अथवा वैशाखशुक्ल पक्षमें दूजकों सोमयज्ञ करते॥ तातें आप स्वधाम पधारे तहाँ ताँइ न जाँनें आपने कितने सोमयज्ञ किये हते ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (वार्ता २ री) ❀

बहुरि एकसमय श्रीआचार्यजीमहाप्रभु विवाह करिकें पृथ्वि परिक्रमाकों पधारे हते ॥ तब संपूर्ण पृथ्वि परिक्रमा करिकें आप चरणाट जायवेकूँ श्रीकाशीजीमें सुसरके घर भोजन करिवेकों पधारे ॥ ता समय आपकी सास रसोई करत हती ॥ इलंमॉगारुजी वाको नॉम हतो ॥ मुखकी मुखरता हुती ॥ तातें वेटीकों वहुत दुख देत रहती ॥ सो वाके घर आयकें आप श्रीआचार्यजी ठाढे भए ॥ तब वानें अपनीं वेटीसों कह्यो जो द्वारें अतीत आयोहे ॥ ताकों तूँ नाज दे ॥ सो जब दाना लेकें अक्काई द्वारपे आए ॥ तब दूरितें आपकों देखे ॥ तब श्रीअक्काजी तो पाछे फिरे ॥ सो मातानें देखिकें कही जो तूँ पाछी क्यों फिरी ॥ कहा तेरो मनुष्य आयो हे ॥ तब श्रीअक्काजीनें मातासों कही जो तूँ उठिकें देखि ॥ तब वो आयकें देखे तो द्वारपें श्रीआचार्यजी ठाढेहें ॥ तब लज्जा पायकें आपकों घरमें ले गई ॥ फेरि कह्यो जो तुँम स्नान करिकें श्रीठाकुरजीकी सेवा करो ॥ तब वाके घरमें सेव्य स्वरूप वहुत हुते ॥ तिन पंचायतनमें श्रीगोकुलनाथजी हू बिराजत हते ॥ सो आसन वहुत वडो हतो तापर एक गायहू वेठती ॥ ओर स्वरूप हू स विराजते ॥ सो देखिकें आपनें सीस धुनायो ॥ तापाछें आ

श्रीमहाप्रभु सेवाकर भोजनकिये ॥ पाछें उहाँतें दूसरे दिन बिदाय होयकें चलवे लगे ॥ तब आपने अक्काजीसों कही जो तुमारी माताके पासतें यह जो श्रीगोकुलनाथजीको स्वरूप हे ॥ सो मागि लेऊ ॥ तब श्रीअक्काजीनें वह स्वरूप माता पासतें माँग्यो ॥ ओर कह्यो जो यह श्रीठाकुरजीको स्वरूप हे सो मोकों देउ तोमें भोजन करूं ॥ तब महतारीनें अपनें पती मधुमँगलसो कहकें श्रीको स्वरूप लेकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको पधराय दीए ॥ तब आपनें एक झाँपी मँगवाइ सो छोटी भइ ॥ ओर श्रीको स्वरूप बडो भयो ॥ तब आप श्रीगोकुलनाथजी छोटो स्वरूप धरकें वा झाँपीमें बिराजे ॥ पाछें श्रीआचार्य आप. श्रीअक्काजी सहित श्रीगोकुलनाथजीकों पधरायकें सब भगवदीयन सहित अपनें घर चरणाट पधारे ॥ तहाँ श्रीगोकुलनाथजीकों पंचामृत स्नान करायकें पाट बेठाय, सेवा करि, रसोई सिद्ध करि, राजभोग समर्पे ॥ सो प्रथम श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनें श्रीगोकुलनाथजीकी सेवा करी हती ॥ (सो सेवा श्रीगुसाँईजिनें अपनें लालजी श्रीगोकुलनाथजी तिनके माथें पधराय दीए सो सांप्रत चोथी-गादीके मालक हें) ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (वार्ता ३ री) ❀

एकसमय श्रीआचार्यजीमहाप्रभु अडेलमें बिराजत हते ॥ तब एक दिन भंडारीनें सवारें आयकें आपसों विनती करी ॥ जो महाराज आज भंडारमें कछू सामुग्री नहीं हे ॥ तब आपनें मंदिरमेंतें एक कटोरी सोंनेकी काढिकें भंडारीके हवाले कीनी ॥ ओर श्रीमुखसों आग्या करी ॥ जो या कटोरिकों गेहेनें धरिकें नित्य नेगकी आछुलायक सामुग्री ले आवो ॥ तब वह कटोरी भंडारी गेहेनें धरिकें सब सामुग्री ले आयो ॥ ताकों सम्हारिकें बीनि चुनिकें मंदिरमें पहुँचाई ॥ तब

आपनें रसोई सिध्धकरिकें मंगलातें राजभोगताँइकी सिध्धताकर राजभोग श्रीठाकुरजीकों समर्पे ॥ पाछें भोग सरायकें आरती करिकें अनोसर करिकें वह सब प्रसाद गायनकूँ खवायो ॥ ओर कछु श्रीयमुनाजीमें वहायो ॥ ओर आप भूकेही वेठी रहे ॥ फेरि उत्थापनको समय भयो ॥ इतनेंहीमें वासुदेवदास-छकडा सिंहनदतें आयो ॥ तानें आपकों दंडवत् प्रणाम कीयो ॥ ओर जो सिंहनदके वैष्णवननें तीस मोहर आप श्रीमहाप्रभु-नकी भेट पठाई हतीं ॥ सो आपके आगें धरिकें उनकी ओरकी साष्टांग दंडवत् करी ॥ तब आपनें सब वैष्णवनके समाचार पूछे ॥ ओर श्रीसुखतें कहें जो तुम इतनी मोहोर मारगमें कैसें करिकें लाए ॥ तब वासुदेवदासछकडानें आपसों विनती कीनी जो महाराज आप यह प्रकार सुनिकें मेरे ऊपर खीजोगे ॥ तब श्रीआचार्यजी आप कहें जो तूँ सॉच कहि ॥ हम तेरे उपर न खीजेंगे ॥ तब वासुदेवदासनें जो प्रकार कीयो हतो सो सब कह्यो ॥ जो महाराज इन मोहरनकों एक लखोटा (लाखको गोला) में धरिकें वापे चंदन चढावत मारगमें चल्यो आयोहूँ ॥ ओर जो कोउ मारगमें देखतो सो कहतो ॥ जो यह वेरागी हे सो शालि-ग्राम पूजत जातहे ॥ सो एसें थानेश्वरको चल्यो सो दिल्ली आयो ॥ तब तहॉके वैष्णवनके घर प्रसाद लियो ॥ फेरि मथु-रातें चल्यो आगेरे आयो ॥ तब तहाँ वैष्णवनके घर प्रसाद लियो ॥ तापाछें वीचमें दोयदिन वचे ॥ सो चेनेंनातें काम चलायोहे ॥ ओर गाम वाहिर सोवत आयो सो गोला फोडि मोहोरें ले आज आपके चरणारविंदके दर्शन पाए हें ॥ सो यह सुनिकें आप वासुदेवदाससों कहे जो अबतो कीयो सो कियो॥ फेरि कबहू भूले हू एसें मति करियो ॥ जामें स्वरूप भा-वना करीए ॥ तामें अन्य भावसो न विचार्यो जाय ॥ तब

वासुदेवदासनें फेरिकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों विनती कीनीं ॥ जो महाराज कछु प्रतिष्ठातो न करी हती ॥ ओर आपके चरण प्रतापतें हमकों कछु बाधक नाहीं ॥ वासुदेवदासतो वेसेंही ले आवते ॥ क्यों जो काहू मनुष्यमें तो इनकी बराबर बलहू नाहीं हतो ॥ जो मारगमें कोउ छिनाले ॥ परंतु रात्रकों कदाचित् सोइजॉइ ॥ तो निद्रावसतें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको द्रव्य कोई हरिलेय तो अपराध होई ॥ तातें वासुदेवदास वेरागी भेषसों ले आए ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु प्रसन्न होयकें भंडारीकों बुलाएकें वे मोहरें सोंपीं ॥ ओर कही जो पेहेलें तो तूं मंदिरकी कठोरी छुडाइ लाव ॥ पाछें ओर सब सामुग्री लेआव ॥ तब भंडारी मंदिरकी कटोरी छुडाय ओर सब सामुग्री लिवाय आयो ॥ ताही समय श्रीआचार्यजीमहाप्रभु उत्थापनतें लगाय सेंनभोग संगही कीए ॥ पाछें भोग सराय सेंनआरती करि ॥ श्रीठाकुरजीकों पोढाय ॥ पाछें आप सहकुटुंब (माजी दोनों लालजी तथा दोनोवहु समेत) भोजनकीए ॥ ता पाछें सब सेवक वैष्णवननें महाप्रसाद लियो ॥ ओर वासुदेवदासछकडाकों महाप्रसाद लिवायो ॥ फेरि श्रीमहाप्रभुजी पोढे ॥ पाछें सवारो भयो तब आप ऊठिकें देहकृत्य स्नान करिकें मंदिरमें पधारे ॥ तब श्रीनवनीतप्रियजीकों जगायकें मंगलभोग धऱ्यो ॥ पाछें मंगलाआरती करिकें स्नान कराय सिंगार करिकें राजभोग सिद्ध करिकें भोग समर्पे ॥ समयानुसार भोग सरायकें श्रीठाकुरजीकी राजभोगआरती करिकें अनोसर कराय आप भोजन कीए ॥ पाछें सब भगवदीय वैष्णवननें प्रसाद लीयो ॥ जब आप गादी तकियान उपर विराजे ॥ तब एक वैष्णवनें शंका कीनी ॥ जो महाराज कालि आपनें राजभोगतॉइको सब प्रसाद गौअनकों खवायो ओर श्रीयमुनाजीमें पधरा-

यो ताको कारण कहा ॥ तब आप कहें जो कटोरी घरिकें साँमुग्री आइ सो तो भोग श्रीठाकुरजी आपहीके द्रव्यको आरोगे सो तो आपहीको भयो ॥ जो श्रीठाकुरजीको द्रव्य खायगो सो मेरो नाहीं ॥ ओर मेरो सेवक भगवदीय होयगो सो देवद्रव्य कबहूँ न खायगो ॥ जो खायगो सो महा पतित होयगो ॥ तातें वा प्रसादमेंतें भोजन करवेको अपनों अधिकार नहतो ॥ वाके लियें गौअनकों खवायो ॥ ओर श्रीयमुनाजीमें पधरायो ॥ यह सुनकें सब वैष्णव चूप होय रहे ॥ पाछें वासुदेवदासनें आपसों विनती कीनीं जो महाराज मोकों पहुँच लिखि देउ तो में चलों ॥ तब आपनें अपनें सुख समचार लिखिकें उन मोहोरनको जवाब लिखि वासुदेवदासकूं दीए ॥ तब वासुदेवदास आपके पासतें विदा होयकें चले ॥ सो कछुक दिनमें सिंहनद आय पहूंचे ॥ ओर वह पहुँचको पत्र वैष्णवनकूं दियो ॥ तब सब वैष्णव वा पत्रकों माथेंचढाय वाँचिकें बहुत प्रसन्न भए ॥ ३ ॥

❀ (वार्ता ४ थी) ❀

बहुरि एकसमय श्रीआचार्यजीमहाप्रभु अडेलमें विराजत हते ॥ तहाँ आप बडे वैभवसों सेवा करतहे ॥ ता समें लोग बहुत वहाँ आयकें वसे ॥ तहाँ आपके मंदिरके मनुष्य जलघरिया टेहलुवा परचारग पात्रमाँजा सवही सेवामें रहते ॥ सो यह वैभव देखिकें वहाँ एक ब्राह्मणी जो आपहीकी न्यातिकी आयकें रही हती ॥ ताहूको निर्वाह श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके प्रतापतें आछें चल्यो जातो ॥ ओर जो कोई वैष्णव देस परदेसतें आपके दर्शनकों आवते सो चलतबिर आप श्रीआचार्यजीकी जातिकी जानिकें वा ब्राह्मणीको समाधान करिके चलते ॥ ओर जब आपके घर प्रस्ताव विधान होते ॥ तातें वा ब्राह्मणीको एसो स्वभाव हतो ॥ जो उत्कर्ष देखिकें मनमें

कूटे ॥ ओर वैष्णव जो देस परदेसतें आवें सो सब वहू वेटीनकों दंडवत् करें ॥ तब वह ब्राह्मणी देखिकें कूटे ॥ जो मोकों तो कोउ पूछतहूँ नाहीं ॥ तासों वा ब्राह्मणीनें द्वेश करन माँड्यो ॥ परि वासों कछू वनि न आवे ॥ तब मनमें विचारी जो काहू प्रकारसों इनकों दुःख देऊँ तो आछो ॥ तातें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुके सेवक जलघरिया जो श्रीयमुनाजल लेनकों जाते तापे एकदिन वा ब्राह्मणीने अपनें लोटाको जल डारिदियो ॥ सो वह जलघरिया बहुत कूढे ॥ परंतु वे तो श्रीआचार्यजीके सेवक हे ॥ जोकोऊ दुःख देइ ताको सेहेन करें ॥ परि आप वाकों दुःख न देई ॥ ओर तामें वह ब्राह्मणी तो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी ज्ञातिकी हूती ॥ तासों चूप होयकें आयकें विन जलघरियाननें श्रीआचार्यजीसों कही ॥ जो महाराज देखो आपकी ॥ ज्ञातकी ब्राह्मणी हे सो वानें अपनें लोटाको जल जानिकरिकें गागरिउपर डारि दियो ॥ तब आप सुनिकें कहें जो जायवे देऊ ॥ वासो वोलो मति ॥ ओर गागरि लेजाय भरिलावो ॥ सो एसें नित्य जल भरि लावते ॥ परंतु वा ब्राह्मणीकी दृष्टि परें तो जरुर एक गागरिहु नित्त जलकी छुवाइदेइ ॥ तब वे जलघरिया नित्य श्रीआचार्यजीमहाप्रभुन पास पुकारत जाय ॥ तब आप विनसों कहें जो जानदेऊ ॥ बोलोमति ॥ ओर गागरि भरि लावो ॥ काहेतें जो धैर्य राखवेको आपकोतो सिद्धांतही हे ॥ सो आप विवेक धैर्याश्रय ग्रंथमें कहेहें (त्रिदुःखसहनंधैर्य) परि वे जलघरीया नित्यप्रति बहुतहीं कूढे ॥ ओर कहें जो महाराज आप वासों कछू केहेत नहीं ॥ तातें हम कहा करें ॥ ओर कोउ दूसरो मारग आयवे जायवेको नाहीं ॥ जो ओर पेंडें जल लावें ॥ एसें कहिकें बहुत कूढे ॥ परंतु प्रभु वडे गंभीरहें ॥ सब सहन करिजाइ ॥ ओर यहही कहें

यो ताको कारण कहा ॥ तब आप कहें जो कटोरी धरिकें साँमुग्री आइ सो तो भोग श्रीठाकुरजी आपहीके द्रव्यको आरोगे सो तो आपहीको भयो ॥ जो श्रीठाकुरजीको द्रव्य खायगो सो मेरो नाहीं ॥ ओर मेरो सेवक भगवदीय होयगो सो देवद्रव्य कबहूँ न खायगो ॥ जो खायगो सो महा पतित होयगो ॥ तातें वा प्रसादमेंतें भोजन करवेको अपनों अधिकार नहतो ॥ वाके लियें गौअनकों खवायो ॥ ओर श्रीयमुनाजीमें पधरायो ॥ यह सुनकें सब वैष्णव चूप होय रहे ॥ पाछें वासुदेवदासनें आपसों विनती कीनीं जो महाराज मोकों पहुँच लिखि देउ तो में चलों ॥ तब आपनें अपनें सुख समचार लिखिकें उन मोहोरनको जबाव लिखि वासुदेवदासकूं दीए ॥ तब वासुदेवदास आपके पासतें विदा होयकें चले ॥ सो कछुक दिनमें सिंहनद आय पहूँचे ॥ ओर वह पहुँचको पत्र वैष्णवनकू दियो ॥ तब सब वैष्णव वा पत्रकों माथेंचढाय बाँचिकें बहुत प्रसन्न भए ॥ ४ ॥

❀ (वार्ता ४ थी) ❀

बहुरि एकसमय श्रीआचार्यजीमहाप्रभु अडेलमें विराजत हते ॥ तहाँ आप बडे वैभवसों सेवा करतहे ॥ ता समें लोग बहुत वहाँ आयकें बसे ॥ तहाँ आपके मंदिरके मनुष्य जलघरिया टेहेलुवा परचारग पात्रमाँजा सबही सेवामें रहते ॥ सो यह वैभव देखिकें वहाँ एक ब्राह्मणी जो आपहीकी न्यातिकी आयकें रही हती ॥ ताहूको निर्वाह श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके प्रतापतें आछें चल्यो जातो ॥ ओर जो कोई वैष्णव देस परदेसतें आपके दर्शनकों आवते सो चलतीबेर आप श्रीआचार्यजीकी जातिकी जानिकें वा ब्राह्मणीको समाधान करिरे चलते ॥ ओर जब आपके घर प्रस्ताव विधान होते ॥ तात्र वा ब्राह्मणीको एसो स्वभाव हतो ॥ जो उत्कर्ष देखिकें मनमें

कूटे ॥ ओर वैष्णव जो देस परदेसतें आवें सो सब बहू बेटीनकों दंडवत् करें ॥ तब वह ब्राह्मणी देखिकें कूटे ॥ जो मोकों तो कोउ पूछतहूँ नाहीं ॥ तासों वा ब्राह्मणीनें क्लेश करन माँड्यो ॥ परि वासों कछू बनि न आवे ॥ तब मनमें विचारी जो काहू प्रकारसों इनकों दुःख देऊँ तो आछो ॥ तातें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुके सेवक जलघरिया जो श्रीयमुनाजल लेंनकों जाते तापे एकदिन वा ब्राह्मणीने अपनें लोटाको जल डारिदियो ॥ सो वह जलघरिया बहुत कूढें ॥ परंतु वे तो श्रीआचार्यजीके सेवक हे ॥ जोकोऊ दुःख देइ ताको सेहन करें ॥ परि आप वाकों दुःख न देई ॥ ओर तामें वह ब्राह्मणी तो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी ज्ञातिकी हूती ॥ तासों चूप होयकें आयकें बिन जलघरियाननें श्रीआचार्यजीसों कही ॥ जो महाराज देखो आपकी ॥ ज्ञातकी ब्राह्मणी हे सो वानें अपनें लोटाको जल जानिकरिकें गागरिउपर डारि दियो ॥ तब आप सुनिकें कहे जो जायवे देऊ ॥ वासो बोलो मति ॥ ओर गागरि लेजाय भरिलावो ॥ सो एसें नित्य जल भरि लावते ॥ परंतु वा ब्राह्मणीकी दृष्टि परें तो जरुर एक गागरिहु नित्त जलकी छुवाइदेइ ॥ तब वे जलघरिया नित्य श्रीआचार्यजीमहाप्रभुन पास पुकारत जाय ॥ तब आप बिनसों कहें जो जानदेऊ ॥ बोलोमति ॥ ओर गागरि भरि लावो ॥ काहेतें जो धैर्य राखवेको आपकोतो सिद्धांतही हे ॥ सो आप विवेक धैर्याश्रय ग्रंथमें कहेहें (त्रिदुःखसहनंधैर्य) परि वे जलघरीया नित्यप्रति बहुतहीं कूढें ॥ ओर कहें जो महाराज आप वासों कछू केहेत नहीं ॥ तातें हम कहा करें ॥ ओर कोउ दूसरो मारग आयवे जायवेको नाहीं ॥ सो ओर पेंडे जल लावे ॥ एसें कहिकें बहुत कूढें ॥ परंतु प्रभु बडे गंभीरहें ॥ सब सहन करिजाइ ॥ ओर यहही कहें

जो बोलो मति ॥ सो एसें करत बहुत दिन भए ॥ तब उन जलघरीयाननें श्रीआचार्यजीसों विनती करी ॥ जो महाराज अब हम कहा करें ॥ भंडारमेंतें तों पैसानको ज्यॉंन होतहे ॥ ओर हमको वेर वेर नहानो परतहे ॥ आपतो वाकों बरजत नाहीं ॥ यासों हम अब बहुतही कायर भएहें ॥ यह बात सुनिकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों दया आई ॥ तब आपनें जलघरीयानसों कही जो ॥ तुम वाकी कछू वस्तु ले आवो ॥ तब उन जलघरीयाननें कही जो महाराज जब वह बाई हमारो मोहोडो देखतहे ॥ तब उपरतें पानी पटकत हे ॥ सो वह हमकूँ कछू वस्तु केसें देइगी ॥ तब आप कहें जो वह आप तेइँ देइगी ॥ तब एक दिन एक जलघरिया जलकी गागरि भरिकें आवत हुतो ॥ ओर वह ब्राह्मणी अपने घर पोतना करत हती ॥ तबही वा ब्राह्मणीकों सुध आई जो मेनें आज कोउ जलघरिया छुवायो नाहीं ॥ सो बाहिर आयकें देखे तो जलघरिया आगें निकसि गयोहे ॥ तब पाछेंतें वानें वह पोतनॉ फेंकिकें गागरिसों मार्‍यो ॥ सो वह पोतनॉं मॉंटीको भर्‍यो हुतो ॥ तातें गागरिसों चिपटगयो ॥ तब वा जलघरियाने वेसेंही ले जायकें वो गागर श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके आगें धरिकें कह्यो ॥ जो महाराज देखो वह ब्राह्मणी या प्रकारसों दुःख देतहे ॥ मेंतो आगें चल्यो आवत हतो ॥ उननें पाछेंतें यह पोतनॉं फेकिकें गागरिसों मार्‍यो ॥ तब श्रीआचार्यजी आप कहें ॥ जो या पोतनॉकों ले जायकें आछो धोय सुखायकें ले आवो ॥ तब वह जलघरिया पोतनॉकों धोय सुखायकें ले आयो ॥ तब आपनें वाके कंकडा सिद्ध करवाए ॥ सो तेलमें भिजोयकें धरे ॥ पाछें पिछली रात्रकों वे कंकडा बरायकें रसोई सब देखी ॥ तातें वा ब्राह्मणीकी सत्ताको अंगि-

कार भयो तब वह ब्राह्मणी ताही समय सोयकें ऊठी ॥ तब वाकों ग्यान भयो सो केहेंनलागी जो देखो मेंने श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको कितनों अपराध कियोहे ॥ ओर वे केसे गंभीर हें ॥ जो उनने मोतें कछूहूं नाहीं कह्यो ॥ ओर जो वे सर्व करण समर्थ हें ॥ ओर उनकोही गाम हे ॥ जो आग्या करें तो अवहीं मोकों काढि देंइ ॥ परि ए तो साक्षात् ईश्वर हें ॥ सो ईश्वरही इतनों सहन करें ॥ जीवको दोप न देखें ॥ तातें होयतो में इनके पास जायकें अपराध क्षमा करवाऊँ ॥ तब वह ब्राह्मणीनें आयकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों बहुतही प्रणती करी ॥ जो महाराज मेंनें आपको बहुतही अपराध कियो हे ॥ सो क्षमा करो ॥ मेंनें आपको स्वरूप जान्यो नहीं ॥ तातें आपतो साक्षात् ईश्वर हो ॥ सो आप जनावो तब ही जानें ॥ जीवतो संसाररूपी अंधकूपमें पड्योहे ॥ सो जाकों आप अनुग्रह करिकें काढोगे वोही निकसेगो ॥ तातें तुम कृपा करिकें मोकों सेवक करो ॥ तब आपतो उदार शिरोमणी हें ॥ तातें वा ब्राह्मणीकों कृपा करिकें शरण लीनें ॥ तातें सूरदासजी गाए हें (विमुख भए कृपा या मुखकी जब देखो तब तेसे) ओर श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको नामहु हे ॥ सो या पदके अनुसार जाननों सो पद ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥

❀ (पद राग कान्हरो) ❀

श्रीवल्लभ महासिंधु समान ॥ सदा सेवन होत जिनकों अभय पदको दान ॥ १ ॥ कृपाजल भरपूर हो जहाँ उठत भाव तरंग ॥ रतन चौदह सब पदारथ भक्त दशविध संग ॥ २ ॥ पुष्टिमारग बडीनौका तरत नहीं या आस ॥ ढिग न आवे द्विविध आसुर मकर मीन नीरास ॥ ३ ॥ जहाँ सेतु बाँध्यो प्रगट करि सुत विट्ठलेस कृपाल ॥ भयो मारग सुगम सबकों चलत नेंकु न

आल ॥ ४ ॥ पुष्टिरसमय सुधा प्रगटी दई सुरति निज दास ॥ असुर वंचे मनुज माया मोह सुख मृदु हास ॥ ५ ॥ छाँडि सागर कोंन मूरख भजे थिल्लर नीर ॥ रसिक मनतें मिटी अविद्या परसि चरन समीर ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

सो या वार्तामें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु यह सिद्धांत प्रगट कीए ॥ जो जीवकी सत्ताको श्रीठाकुरजी अंगीकार करें ॥ तब वाको मन फिरे ॥ याहीतें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु तथा श्रीगुसाँईजी जीवकी सत्ताको उपयोग श्रीठाकुरजीविषे करवावते ॥ तब तत्काल वाको मन फिरिजातो ॥ या जीवमें दोय बडेई दोष हें ॥ जो एकतो अहंता ओर एक ममता ॥ अहंता कहें सो तो में ॥ ओर ममता कहें सो मेरो ॥ सो यह दोय बडे बाधक रूप हें ॥ जब यह जीव श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी शरणि न आवे॥ ओर ए दोनों न छूटिजाँय ॥ तबही जाँनिये जो जीव संसारमें पर्‍यो हे ॥ ओर श्रीठाकुरजी आपकूँ तो भूलिगयोहे ॥ तातें में ओर मेरो सूझत हे ॥ ऐसें जीव महा दोषवत देखिके ॥ श्रीआचार्यजीमहाप्रभु-नकों दया आई ॥ तिनहीके लिये आप प्रगट भये ॥ ओर अपनें जीवनकी अहंता ओर ममता दूरि कीनीं ॥ अहंता छोडेसुं यह सिद्ध भयो ॥ जो कछू हे सो तिहारो हे मेरो कछू नाँहीहे ॥ में तिहारो दास हूँ सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु कहेंहें (साक्षिणो भवताऽखिला) तातें साक्षीवतहों ॥ संसारकी पीडा मोकों बाधा न करे ॥ सो याहीतें भगवदीय सब श्रीठाकुरजीकी सत्ता माँनतेंहे ॥ ओर आप साक्षीवत् होयकें रहत हें ॥ एसो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको मारग हे ॥ सो जाको बडो भागि होयगो सोही आपकी सरणि आवेगो ॥ श्रीआचार्यजी आपनें गृहस्थाश्रममें ग्यान ओर वैराग्य दोऊ भगवदीयनकों सिद्ध करिदीए हें ॥ सो ग्यानतो यह जो एक भगवत्सेवाहीकों परम

पुरुपार्थ जानतेंहे ॥ ओर गृहस्थाश्रममें अपने घरमें स्त्री हे पुत्र हे ॥ भाई हे ॥ वहुत कुटुंब हे ॥ परंतु एक श्रीठाकुरजीके चरणार्विंद विनाँ काहूसों स्नेह नाहीं ॥ केवल एक प्रभुनसोंही स्नेह हे ॥ सो प्रत्यक्ष कालवसतें जो घरमेंतें कोऊ मनुष्य जातरहे तोहू वा समें भगवदीयनकों श्रीठाकुरजीकी सेवाकी चिंताही रहेतहे ॥ जो मतिमेरे श्रीठाकुरजीकों अवेर होई ॥ ओर भगवदीयनको मन तो अहर्निश श्रीठाकुरजीकी सेवाहीमें रहेतहे ॥ ताहीतें संसारको क्लेश भगवदीयनकों वाधा नाहीं करतहे ॥ तातें श्रीआचार्यजीनें गृहस्थाश्रममें ज्ञान वैराग्य दोऊ भगवदीयनकों सिध्द कीएहें ॥ ये दो महा पुरुपार्थ हे ॥ दोनों भगवानकी प्राप्तिके साधन हें ॥ सो दोनो अपनें भक्तनकों सिध्द करि दीएहें ॥ एसें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु परम दयालु हें ॥ सो अडेलमें विराजिकें भगवदीयनको अनेक प्रकारके आनंदको दान करतहे ॥

❀ (वार्ता ५ मीं) ❀

एकसमय श्रीआचार्यजीमहाप्रभु श्रीगोर्वधननाथजीकों सिंगार करिकें गोपीवल्लभ भोग लेवेकों रसोईमें पधारे ॥ ता समें रसोईयानें सासुग्री सिध्द न करी हती ॥ तासों आप पाछे तिवारीमें आयकें विराजे ॥ वा समें दामोदरदासहरसानी आपके पास वेठे रहे ॥ ताही समय श्रीस्वामिनीजी गोपीवल्लभको थार साजि लेंकें पधारे ॥ तब नुपुर पायल झाँझर झनकारत पधारे ॥ यह शब्द श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें सुन्यो ॥ तब आप दामोदरदासहरसाँनीसों कहे ॥ जो दमला तेंने कछू सुन्यो ॥ तब दामोदरदासनें विनती कीनीं जो महाराज श्रीस्वामिनीजीके आभरणको शब्द तो सुन्यो ॥ परि कारण समुझ्यो नाँही ॥ तब आपनें दामोदरदाससों कही जो आजु रसोंईमें गोपीवल्लभ भोगकूँ अवार भइ हे ॥ तासों श्रीस्वामिनीजी अपनें श्रीहस्तसूँ

थाल साजि लेकें पधारी हें ॥ सो या भोगकों विलंब श्रीस्वामिनीजी सहिसकत नाहीं ॥ तासों यह सिंगारभोग हे ॥ सो प्रभुनको सिंगार होत समे सगरे व्रजभक्त अपनें अपनें घरतें भोगकी सामुग्री सिद्ध करिकें ले आवत हें ॥ तातें श्रीठाकुरजी व्रजभक्तनसों मिलिकें हास्यादिक करत आरोगत हें ॥ तातें यां भोगको नाम गोपीवल्लभ भोग हे ॥ पाछें फेरि श्रीआचार्यजीमहाप्रभु रसोईघरमें पधारे ॥ सो वा भोगको थार ले जायकें श्रीगोवर्धननाथजीकों समर्प्यो ॥ फेरि रसोईया भीतरीयानसों आप आग्या कीए जो आज्ञु पाछें या भोगकी अवार होयगी तो हम नहीं सह सकेंगे ॥ तातें या भोगकी सामुग्री वेगहीं पहुचती कन्यो करियो ॥ ता दिन तें सगरे सेवक सेवामें सावधान होत भये ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ५ ॥

❀ (वार्ता ६ ठी) ❀

एक समय श्रीमहाप्रभुजी शीतकालके दिननमें रात्र पिछलीकूँ ऊठिकें देह कृत्य करिकें तेल लगावत हते ॥ तब श्रीगोपीनाथजी स्नान करिकें अपरसमें आपके पास आयकें ठाढे भए ॥ तब आप महाप्रभुननें विनसों कह्यो जो तुँम मंदिरमें जायके श्रीठाकुरजीकों जगावो ॥ तब श्रीगोपीनाथजी किंवाड खोलिकें आगें गए ॥ सो तहाँ ठाढेरहिकें देखें तो श्रीनाथजी भर निद्रामें पोढे हें ॥ तब श्रीगोपीनाथजीनें आयकें आपसों कह्यो जो श्रीठाकुरजीतो भर निद्रामें पोढेहें ॥ तब आपनें श्रीगोपीनाथजीसों कही जो तुम एक छिनभर ठाढे रहो ॥ पाछें मंदिरमें जायकें हाथकी तारी वजायकें श्रीकुँ जगावो ॥ कारण जो ब्रह्ममुहूर्त भए पाछें श्रीठाकुरजीकों जगावनें या भाँतिकी मर्यादा हे ॥ सूर्योदय पाछें निद्रा निषिद्ध हे ॥ तातें अवश्य जगावनें ॥ सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुजींतो

निजस्वरूपको प्रकार सब जानेंहें ॥ तासों श्रीनाथजीकों तारी बजायकें जगायवेकी आज्ञा दिये ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥

❀ (वार्ता ७ मीं) ❀

एकसमय श्रीगोपीनाथजीनें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों विनती करी ॥ जो महाराज श्रीद्वारिकानाथजीकों अपनें घर पधरावें ॥ तब आप श्रीगोपीनाथजीसों कहें ॥ जो तुमकों बहुतें पात्र सामुग्री गेहनाँ देखिकें लोभ भयो होयगो ॥ तब श्रीगोपीनाथजीनें कही जो ॥ महाराज आपके वंशमें प्रगट होयगो सो तो लोभ न करेगो ॥ परि हमकों तो सेवाहीकी इच्छा होतहे ॥ तातें आपसों यह विनती करिहें ॥ तब सब वैष्णवनकों सुनायवेकों श्रीआचार्यजी श्रीमुखसों यह बात श्रीगोपीनाथजी सों कहें जो ॥ मेरे वंशमे अथवा मेरो कहायकें जो कोई भगवद्द्रव्य खायगो ॥ ताको वंश निर्मूल होयगो ॥ यह मेरी आग्याहे ॥

❀ (वार्ता ८ मीं) ❀

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप एकादशी उपवास करते ॥ तातें द्वादशी साधन करते ॥ तब एक समय श्रीआचार्यजीमहाप्रभु अपनें मनमें विचार किए ॥ जो द्वादशी साधवेकों श्रीठाकुरजीकों वेगि जगावनें पडतहें सो तो अपराध होइ ॥ तासों यहहू आछी नाहीं ॥ तातें यह बात आपनें श्रीठाकुरजीसों पूछी ॥ तब श्रीठाकुरजीनें कही जो तुम साधनद्वादशी सुखेन करो ॥ हम प्रसंन हें ॥ हमतो वेगि आरोगत हें ॥ सो यह प्रकार तो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके घरमें हें ॥ परंतु साधनद्वादशी श्रीगोवर्धननाथजीके इहाँ नाही हे ॥ श्रीआचार्यजी प्रतिएकादशी जागरण करते ॥ तब श्रीगुसाँईजीहूँ एसे अपने सेव्य स्वरूपसों पहुँचन लागे ॥ तब श्रीठाकुरजी श्रीगुसाँईजीसों कहें ॥ जो तुम हमकों एक प्रबोधिनीकी रात्रिकों

जगाईयो ॥ तातें देवप्रबोधिनी की रात्रिकों श्रीगुसाँईजीके इहाँ श्रीठाकुरजी जगातेंहे ॥ ओर श्रीगोवर्धननाथजीके इहाँ तो स्वतह लीला हे ॥ ओर श्रीगुसाँईजीके इहाँ आठ महिनाँ वंटा आरोगतेंहें ॥ ओर श्रीनाथजीतो बाहर महिनाँ वंटा आरोगतेंहे ॥

❀ (वार्ता ९ मीं) ❀

एकसमय श्रीआचार्यजीमहाप्रभु अपनीं बेठकमें विराजे हते ॥ तब ता समय पाँच सात वैष्णव आपके पास बेठे हुते ॥ वा समय आप श्रीमुखसों कहें ॥ जो आजुतो हमारो माँथो दूखतहे ॥ सेरेखमाँ भयो हे ॥ शरीर आछो नाहीं ॥ सो यह सुनिकें वैष्णव बजार हाट जायकें ओषध कुटायकें कपड़छाँन करायकें ले आए ॥ तब दंडोत करिकें दवाइ आपके आगें राखी ॥ ओर विनतीं करी जो महाराज यह ओखद हे ॥ सो अंगीकार करिये ॥ ताबिरिआँ आपके आगें अग्निकी अँगीठी धरी हती ॥ सो श्रीहस्तसों ओषध लेकें सब अग्निमें डारि दीनों ॥ एसो देखिकें सब वैष्णव अपनें मनमें बहुत खेद करन लागे ॥ जो देखो हमतो इतनों श्रम करिकें ओखद लाए हते ॥ ओर आप प्रभु अप्रसन्न होयकें सगरो अग्निमें डारिदीए ॥ परि कहितो कछु न सके ॥ परंतु श्रीआचार्यजीमहाप्रभुजीतो अंतरजामी ॥ साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तम ॥ जब एकदिन प्रसन्नतामें विराजे हुते ॥ तब उन वैष्णवननें आपसों विनती करी ॥ जो महाराज वा दिन हम आपके लिये ओखद लाए हते ॥ सो आप लीये नाहीं ओर श्रीहस्तसों अंगीठीमें डारि दीए ॥ सो काहेतें ॥ सो आप हमसों कृपा करिकें कहिये ॥ तब आप श्रीमुखसों कहें जो, अरे वैष्णव हो वहतो सब ओखद मेंहीं आरोग्योहूँ ॥ सो तुम कहा नहीं जानतहो ॥ तब उन वैष्णवननें आपसों विनती करी जो महाराज हमतो अज्ञानी जीव हें ॥

तातें कहा जानें ॥ तब वा समे आपनें कृपा करिकें अपनों स्वरूप ॥ वेसो जनायो जो साक्षात् अग्निरूप हें ॥ तब वे धन्य मानत भये ॥

❀ (वार्ता १० मीं) ❀

एकसमय श्रीआचार्यजीमहाप्रभु अडेलमें विराजत हते ॥ ताहाँ श्रीभागवतके दसमस्कंधकी श्रीसुबोधिनीजी संपूर्ण भई ॥ और एकादश स्कंध चलतो हतो ॥ वामें नव योगीनको प्रसंग हे ॥ सो श्रीठाकुरजीनें उद्धवजीके आगें कह्योहे ॥ सो आठ योगीनकेउपर तो सुबोधनीजी भई ॥ ओर नवमों योगी करभाजन ताके प्रसंगकी सुबोधिनीजीकों आप विचारें ॥ तासमय आपकों श्रीठाकुरजीकी तिसरी आग्या भई (तृतीयोलोकगोचरः) सो श्रीठाकुरजी आप श्रीमहाप्रभुनसों कहें जो तुम जगतमें अगोचर हो ॥ सो कोई तिहारो दर्शन करे अथवा न करे ॥ परंतु जे भगवदीय हें ॥ सो तो तिहारे हें ॥ सो तो दर्शन विनाँ रहि न शकें ॥ वे केसे कृपापात्र हे ॥ सो आगें भगवानदासकी वार्तामें लिखेहें ॥ श्रीआचार्यजीमहाप्रभु पूर्वस्वरुपसों दर्शन नहीं देत ॥ ताको कारणजो आसुरीहू दर्शन करते ॥ ओर भक्ति विनाँ दर्शनको फल न होइ ॥ सो सूरदासजी भगवदीय गाए हे (भक्ति बिन भगवान् दुर्लभ कहत निगम पुकारि) सो जिनको श्रीठाकुरजीउपर स्नेह हे ओर भक्ति हे ॥ सो उनकों श्रीठाकुरजीके स्वरुपको ग्यान हे ॥ ते अन्य अवतार देहमेंहूँ सदेव दर्शन करतहें ॥ भगवानकी लीला नित्य हे ॥ नित्य व्रजमें विहार हे ॥ सो भगवदीय गाएहें (सदा व्रजहीमें करत विहार) ॥ जब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवकनकों विरह दुःख होतहे ॥ तब आप उनकों दर्शन देकें वचनामृत सिंचन करि पोपत हे ॥ सो गोपालदासजी गाएहें (आरति हरण चरण अंबुजपर वलि वलि दास गोपाल) श्रीआचार्यजी-

महाप्रभुनकी तो नित्य अखंड लीला हें ॥ पाछें जब श्रीआचार्यजीकों श्रीठाकुरजीनें तीसरी आग्या दीह्नी जो अब पधारो ॥ तब आप विचार कीए जो अब कोंन प्रकार सों पधारनों ॥ तब मनमें विचारें जो अब संन्यास ग्रहण करनों ॥ सो काहेतें जो ब्राह्मणको स्वरूप धर्म्योंहे ॥ तातें ब्राह्मणकों चार्‍यो आश्रमको अंगीकर करनों ॥ तातें प्रथमतो आपनें ब्रह्मचर्याश्रमको अंगीकार कीयो हतो ॥ पाछें श्रीठाकुरजीकी आज्ञातें गृहस्थाश्रमको अंगीकार कीयो हतो ॥ जब श्रीगोपीनाथजीको तथा श्रीगुसांईजीको प्रागट्य भयो ॥ तबलों गृहस्थाश्रमी रहे ॥ सो वल्लभाख्यानमें गोपालदासजी गाएहें (पूरणब्रह्म श्रीलक्ष्मणसुत पुरुषोत्तम श्रीविठ्ठलनाथ ॥ श्रीगोकुलमाँ प्रगट पधार्‍या स्वजन कीधाँ सनाथ १) फेरि वानप्रस्थाश्रम कीए ॥ सोतो साक्षात् ईश्वरहीसों बने ॥ जो सब पदार्थ विद्यमान हे ॥ ओर तिनसों वैराग्य हो॥ पाछें विचारिकें आप संन्यास ग्रहणकी आग्या आपकी धर्मपत्नि श्रीलक्ष्मीजी पास मॉगे ॥ सो स्त्रीकी आग्या विनॉ संन्यास ग्रहण न होई ॥ ओर वेतो आग्या दीए नॉहीं ॥ तब आप तेसेंई करत भए ॥ सो जेसें कृष्णावतारमें आप कीयोहें ॥ जो जब पधारिवेको समय भयो तब चार्‍यो आडी अग्निको आवर्ण करिलीए ॥ ताको नाँम आत्रत्यग्नि हे ॥ सो कृष्णावतारकी नॉही श्रीआचार्यजीमहाप्रभु अबहू कीए हें ॥ तब श्रीमहालक्ष्मीजी अग्निको उपद्रव देखिकें कहे जो प्रव्रज प्रव्रज (आप निकसो आपनिकसो) अग्निको उपद्रव बहुत भयोहे ॥ सोइतनोंतो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों केहेवावनोंई हतो ॥ प्रव्रज शब्दको दुसरोअर्थ संन्यास होय हे ॥ सो यह वचन सुनिकें श्रीमहाप्रभुजी आप संन्यास ग्रहण करिकें काशी पधारे ॥ ओर अन्न जल संभापण तीनो वस्तुको त्याग कीए ॥ ॥ ७ ॥

पाछें मौनव्रत धारण कियो ॥ ओर ध्यानमुद्रासों रहे ॥ सो संवत् १५८७ के आषाढ कृष्ण २ उपरांत ३ के दिन आपनें विचारी ॥ जो आज मध्यानकालमें श्रीगंगाजीमें जाय श्रीभगवानके धामकों जानों ॥ ऐसेमें विनके पुत्र श्रीगोपीनाथजी तथा श्रीविठ्ठलनाथजी सहकुटुंबपरिवार तथा सब सेवकजननकों संग लेकें श्रीआचार्यजीकी खोज करत करत काशीजीमें मध्यानकालके समें आय पहूँचे ॥ ता समे श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों संन्यास दिक्षामें श्रीगंगाजीपे पधारते देखे ॥ तब वे आपके पास त्वरासों जाय पोहोंचे ॥ ता विरियाँ श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें विनके सामनें हू देख्यो नाहीं ॥ तब आपके पुत्रननें प्रणामपूर्वक विनती करी जो महाराज अब हमकों कहा आज्ञा हे ॥ ता समें आपकूं तो मौन व्रत हतो ॥ तातें संज्ञा करिकें धूडमें अंगुलीसें शिक्षाके साडेतीन श्लोक आपनें अपने श्रीहस्तसों लिखे ॥ सो श्लोक यह हें ॥

❀ (अथ शिक्षाश्लोकाः) ❀

यदा बहिर्मुखा यूयं भविष्यथ कथंचन ॥
तदा कालप्रवाहस्था देहचित्तादयोऽप्युत ॥ १ ॥
सर्वथा भक्षयिष्यंती युष्मानिति मतिर्मम ॥
न लौकिकः प्रभुः कृष्णो मनुते नैव लौकिकम् ॥ २ ॥
भावस्तत्राप्यस्मदीयः सर्वस्वश्चैहिकश्च सः ॥
परलोकश्च तेनायं सर्वभावेन सर्वथा ॥ ३ ॥
सेव्यः स एव गोपीशो विधास्यत्यखिलं हि नः ॥

इन श्लोकनमें आप श्रीआचार्यजीनें अपनें वंशजकों शिक्षा कहकें जतायो ॥ जो यह तुमारो कर्तव्य हे ॥ यामें सबको सार पदार्थ आपनें संक्षेपसों कह दियो ॥ पाछें तुरंत अपनो स्वरूप श्रीगुसांईजीकों जताय ॥ पाछें आप श्रीगंगाजीकी मध्य धा-

रामें पधारे ॥ तहाँ जाय सबनके देखत अग्निकी शीखारुप होय श्रीठाकुरजीके धाम (स्वधाम) कों पधारे ॥ ताविरियां श्रीआचार्यजीके पूर्वाश्रमके द्वारपाल विष्णुदासछीपा संग हते तिनने गायो सो पद ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (पद राग गोडी) ❀

वंदे हं तं विमल हुताशं ॥ जातें प्रगट प्रदीप श्रीविठ्ठल अमल अभूत तिमिर भर नाशं ॥ १ ॥ उठत स्फुलिंग विषद निज सेवक वचमृदु प्रेर मारुत बलि स्वासं ॥ अन्य भजन दावानल चहूँदिस मायावाद मनुज मृग त्रासं ॥ २ ॥ शीत समीप दुरिजन तापक अनुभव उभय एक गुण भासं ॥ देवानन जड अमित शरीर वश पुरुषोत्तम मुखपद्म विकासं ॥ ३ ॥ वागीशज्ञ रसज्ञ वरन पुनि अनुभवं उभय ग्रहन रुचि ग्रासं ॥ अखिल धरा पदपरसि पूत कृत व्रज यमुना विहरत रुचि रासं ॥४॥ श्रीवल्लभ विठ्ठलसुत गिरधर नर भूपण मतिगूढ प्रकासं ॥श्रीलक्ष्मणकुल विष्णुस्वामिपथ श्रुतिवच मंडन कहें विष्णुदासं ॥ ५ ॥

या प्रकारसो लीला यशको वर्णन विष्णुदासजी कीए हें ॥ ओर छीतस्वामिहू गाएहें सो पद ॥ ॥ ७ ॥ ॥७ ॥

❀ (पद राग गोडी) ❀

हरिसुखअनल सकल सुर पुनसुख तिन तन धार धरम धुर लीनी ॥ ले राख्यो सुरलोक भागि फल निज मरजाद भक्ति भली कीनी ॥ १ ॥ तवहित भजन उपासन सेवा भलि मति विमल दोप दुख हीनी ॥ छीतस्वामि गिरधरन श्रीविठ्ठल सब सुख निध अपनेंनकों दीनी ॥ २ ॥ ॥७॥ ॥ ७ ॥

एसो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको आधिदेविक अग्निको स्वरूप हतो ॥ सो गंगाप्रवेश समय प्रगट कीए ॥ जेसें कृष्णावतारमे श्रीठाकुरजीने तेजोमय रूप धरे ॥ वा समें सब देवता

ब्रह्मादिक पधरायवेकों आए हते ॥ परि वा तेजःपुंजकी विन-काहूकों कछू खवरि न परी ॥ जा रीतसों श्रीठाकुरजी आप अपनें स्वधाँम पधारे ॥ तेसोई प्रकार श्रीआचार्यजीमहाप्रभुजी आप कीए ॥ सो आप अंतःकरणप्रबोधमें लिखेंहे ॥

❀ (वार्ता ११ मी) ❀

आप श्रीआचार्यजीमहाप्रभु संन्यास ग्रहण करिवेकों घरमेंतें संवत् १५८७ गुजराती वैशाख वदी १० के दिन बाहिर पधारे ॥ सो परभारे प्रयाग पधारे ॥ तहाँ नारायणेंद्रतीर्थस्वामी-पेसुं मंत्रोचार करवाय विनकों चतुर्थाश्रमके गुरु करकें विनपेसुँ विधिपूर्वक संन्यास ग्रहण करकें काशी पधारे ॥ तहाँ आपनें हनुमाँनघाटपे निवासस्थान कियो ॥ तहाँ एक मास ताँइ अनशनव्रत करि (कोइ चालीश दीन ताँई एकाशनमी लिखेंहे) विन दिननमें आपनें अंतःकरणप्रबोध नाँमको ग्रंथ कियो ॥

अथान्तःकरणप्रबोधः ॥

अन्तःकरण मद्वाक्यं सावधानतया शृणु ॥ कृष्णात्परं नास्तिदेवं वस्तुतो दोषवर्जितम् ॥ १ ॥ चांडाली चेद्राजपत्नी जाता राज्ञा च मानिता ॥ कदाचिदपमानेपि मूलतः का क्षतिर्भवेत् ॥ २ ॥ समर्पणादहं पूर्वमुत्तमः किं सदा स्थितः ॥ काममाऽधमता भाव्या पश्चात्तापो यतो भवेत् ॥ ३ ॥ सत्यसंकल्पतो विष्णुर्नान्यथा तु करिष्यति ॥ आज्ञैव कार्या सततं स्वामिद्रोहोऽन्यथा भवेत् ॥ ४ ॥ सेवकस्यतु धर्मोऽयं स्वामी स्वस्य करिष्यति ॥ आज्ञा पूर्वं तु या जाता गंगासागर संगमे ॥ ॥ ५ ॥ यापि पश्चान्मधुवने न कृतं तद्वयं मया ॥ देह देश परित्यागास्तृतीयो लोकगोचरः ॥ ६ ॥ पश्चात्तापः कथं तत्र सेवकोऽहं न चान्यथा ॥ लौकिक प्रभुवत्कृष्णो न द्रष्टव्यः कदाचन ॥ ७ ॥ सर्वं समर्पितं भक्त्या कृतार्थोऽसि सुखी भव ॥ प्रौढापि दुहिता यद्वत्स्नेहान्न प्रेष्यते वरे ॥ ८ ॥ तथा देहे न कर्तव्यं वरस्तुष्यति नान्यथा ॥ लोकवच्चेत्स्थितिर्मे स्यात् किंस्या-

दिति विचारय ॥ ९ ॥ अशक्ये हरिरेवास्ति मोहं मा गाः कथंचन ॥ इति श्रीकृष्णदासस्य वल्लभस्य हितवचः ॥ चित्तं प्रति यदाकर्ण्य भक्तो निश्चिन्ततां व्रजेत् ॥ १० ॥

इति श्रीवल्लभाचार्यजीकृत अंतःकरणप्रबोधः समाप्तः ॥

या ग्रंथमें कहा हे जो (तृतीयोलोकगोचरः) सो तीसरी आग्या लोक गोचर कही जो ॥ श्रीठाकुरजीनें आज्ञा दीनी जो अब आप सब जगतकों दर्शन मति देऊ ॥ जेसें कृष्णावतारमें सबकोउ दर्शन करते ॥ अब तो जाकों ज्ञान, भक्ति तथा भगवदनुग्रह होयगो ॥ ताहीकों प्रभुनके सदेव दर्शन होंयगे ॥ ओर श्रीठाकुरजी आपतो अखंड नित्य लीला करत हें ॥ सो नतो कहूँ जात हें ॥ ओर न कहूँ आवत हें ॥ जब आप मायको टेरा दूरि करत हें ॥ तब आपको दर्शन होतहे ॥ ओर जब मायको टेरा आडो आवतहे ॥ तब दर्शन नहीं होत ॥ तातें आविर्भाव तिरोभाव सदेव रेहेतहे ॥ सो या प्रकारसों श्रीआचार्यजीको गमन देखिकें पूर्णमल्लक्षत्रीनें बोहोत शोक कियो ॥ ता समें प्रभुदासजलोटाक्षत्री जो श्रीकाशीजितें ४० कोस दूर रहते हते ॥ तहाँ पूर्णमल्लजी खबर देवे गये ॥ सो एक अच्युतदास माणिकपुरमें रहेते तिनकी वार्तामें लिख्यो हे ॥ जो प्रथम श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके संग काशीमें जो वैष्णव हतो ॥ तिनमेतें वा एक वैष्णवकों आपनें आग्या करी हती ॥ जो तोकों कबहूँ संदेह होय तो तूं माणिकपुरमें जायकें अच्युतदाससों मिलियो ॥ सो वाको अच्युतदाससों बहुत स्नेह हतो ॥ या विरियां वानें जानी जो अच्युतदास मिलें तो मेरो क्लेश निवर्त होय ॥ श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें तो दुःखके समुद्रमें डारिदीए हें ॥ जेसें श्रीठाकुरजी मथुरा पधारे हते ॥ तब भक्तनकों विरहरूपी क्लेश समुद्रमें डारे हते ॥

तेसेंई श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें अपनें भगवदीयनकों एसो विरहको दान कीयो ॥ ताको कारण यह जो विरह हे सो मुख्य हे ॥ तासों विरहको नाम उत्तरदल हे ॥ तातें अधिक दुःख याहीतें कहतहें जो (हृदयतें यह मदनमूर्ति छिनु न इत उत जात) सो याही पदकी पिछली तुकमें सूरदासजी कहें हें (सूर एसे दरसकों यह मरत लोचन प्यास) नेत्रनकी प्यास तो श्रीमुख देखेहीतें मिटे ॥ याविषयमें कृष्णदासजीनें जो पद गायेहें सो पद ॥

❀ (पद राग सारंग) ❀

गिरधर देखेंहीं सुख होय ॥ नेंनवंतको यही परम फल वंदनीक तिहू लोय ॥ १ ॥ मरकतमणि और नीलकमलको सरवस लियो निचोय ॥ कृष्णदासप्रभु गिरिधरनागर मिलीविरह दुःख खोय ॥ २ ॥

सो कृष्णादासजीनें यह विरहको दुःख गायो हे ॥ तातें वह वैष्णव विचारे जो अच्युतदासकों मिलिए तो यह दुःख हमारो निवर्त होय ॥ काहेतें जो वे वडेई कृपापात्र भगवदीय हें ॥ ऊनके उपर श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको वडोई स्नेह हे ॥ जो अपनों स्वरूप विनकों पधराय दियो हे ॥ तातें उनसों अवश्य मिलें ॥ या भाँतिसों अपनें मनमें विचारिके वह वैष्णव अच्युतदाससूँ मिल्यो ॥ तब अच्युतदासनें वा वैष्णवको अंतःकरण सुष्क देख्यो ॥ और मुखहू मुरझाय गयो हे ॥ तब अच्युतदासनें वा वैष्णव तें पूछी जो तिहारी एसी दिशा काहेतें हें ॥ तब वानें कह्यो जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु श्रीठाकूरजीके पास स्वधाम पधारे ॥ सो विरहदुःख सह्यो नाहीं जात ॥ काहेतें जो मोकूँ तो आपनें एसोई दर्शन दीयो हे ॥ तब अच्युतदासजी कहें जो श्रीभागवत माहात्म्यमें कह्यो हे ॥ जो जब श्रीठाकुरजीसों अंतमें मिलिकें सब रानीं श्रीद्वारिकातें व्रजमें आंई ॥ तब आप वैकुंठ पधारेको विनके मनमें अत्यंत क्लेश भयो हतो ॥

तहाँ व्रजमें श्रीयमुनाजीके तीर विषें श्रीकालिंदीजीको दर्शन भयो ॥ सो श्रीकालिंदीजी श्रीयमुनाजीके तीर विषें वेठी हतीं॥ उनकों देखिकें जो सोरहहजार भक्त श्रीठाकुरजीकी नाइका हीं॥ विननें श्रीकालिंदीजीसों पूछी जो श्रीठाकुरजी सबके पति हें ॥ सो तो वैकुंठ पधारे हें ॥ ओर तुम परम प्रसन्न हो ॥ ओर हमकूँ तो महाक्लेश बाधा कीयेहें ॥ ताको हेतु कहा ॥ तब श्रीकालिंदीजी कहें जो ॥ एसोतो श्रीठाकुरजी कबहूँ न करेंगे ॥ यह तो आसुर व्यामोह लीला हे ॥ आप तो सदा श्रीयमुनाजीकी पुलिन विषे विहार करत हे ॥ ताते तुम आपको गुण गान करोगे ॥ तो वे तुमकों साक्षात् दर्शन देईंगे ॥ आपकी तो नित्य लीला हे ॥ एसें वा वैष्णवसों अच्युतदास कहें ॥ जो तेसीही श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी लीला हे ॥ भगवदीयनकूँ तो आप नित्य दर्शन देत हें ॥ जिनको आपनें अंगीकार कीयो हे ॥ तिनकूँ सदेव लीला सहित आप नित्य दर्शन देतहें ॥ सो लीला एसीहे ॥ सो गोपालदासजी गाएहे ॥ (ज्याँहाँ नृत्य रास बहूपेरें ॥ मधि नायक निर्तत हे रें ॥ ज्याँहाँ रतन जटित तट सरिता ॥ ज्याँहाँ नव पल्लव भोमि हरिता ॥ ज्याँहाँ धातु रत्न गिरि राजे ॥ वाजित्र विविध पेरें वाजे ॥ ज्याँहाँ युवती जूथ वहु मॉहेरे ॥ श्रीजी साँवल वरण सोहाएरे ॥ एणी पेरे श्रीग़ुसाँईजीने जाणोरे ॥ जाणी अहरनिश ध्याई वखाँणोरे ॥ जे जीव जात होए कोईरे ॥ तेहेने तत्क्षण सर्व सुख होइरे ॥ सेवक जन दास तमारोरे ॥ तेहेनो रूप वियोग निवारोरे ॥) ऐसी लीलाके दर्शन होतहें ॥ तातें एसो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको मारग हे ॥ जो कोऊ केसोऊ जा[illegible] होए ॥ ताकों श्रीआचार्यजीके ओर श्रीग़ुसाँईजीके चरणारविं[illegible] दकी प्राप्ति होई ॥ ओर जो कृपापात्र सेवक हें ॥ तिनको [illegible]

कहा कहनों ॥ पाछें अच्युतजीनें अपनें मंदिरके किंवाड खोलिकें टेरा सरकाय वा वैष्णवकूँ श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके दर्शन करवाए ॥ तब वह वैष्णव देखे तो आप श्रीसुबोधनीजी पाठ करत हें ॥ तब वा वैष्णवनें आपसों पूछी जो महाराज उहाँ तो एसो दिखाएहें ॥ ओर इहाँतो आप एसें विराजतहो ॥ सो ताको कारण कहा ॥ तब आप श्रीमुखसों वा वैष्णवसूँ कहें जो तूँ एसो संदेह मति करे ॥ तुमकूँतो दर्शन सदैव हें ॥ ओर वहतो हमनें सबके लियें टेरा आडो करिराख्यो हे ॥ हम भगवदीयनको तो एकांतमें दर्शन देइंगे ॥ ओर सबकों दर्शन नाँही ॥ सो श्रीगुसाँईजी सर्वोत्तममें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको नाँम कहेहें (रहःप्रियः) ओर (व्रजःप्रियाः) तातें एसें भगवदीयनकों तो आपके दर्शन नित्य हें ॥ ओर आपकी स्थिती सदैव गोवर्धनमें हे ॥ सो सर्वोत्तममें श्रीगुसाँईजीनें आपको नाम कहेहें (गोवर्धनस्थित्युत्साहः) श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी भगवदीयन सहित अनेक वार्ता हें ॥ आपके यशको तो कछू पार नहीं हे ॥ सो वल्लभाख्यानमें गोपालदासजी गाएहें जो (निगम नेति नेति गाए) तो ओर जीव कोई कहाँताँई वर्णन करेगो ॥ ओर छीतस्वामीहु गाएहें सो पद॥

❀ (पद राग सारंग) ❀

गोवल्लभ गोवर्धन वल्लभ श्रीवल्लभ गुण गने न जाँई ॥ भुव की रेणुँ तरैया नभकी घनकी बूँदे परत लखाँइँ ॥ १ ॥ जाकी चरणकमल रज वंदित संतत होत सेवे चित्त चाइँ ॥ छीतस्वामि गिरधरन श्रीविठ्ठल नंद नंदनकी सब परछाँइ ॥ २ ॥ ॥ ७ ॥

तातें आप श्रीआचार्यजीके तथा श्रीगुसाँइजीकेअनंत चरित्र हें॥

❀ (वार्ता १२ वी) ❀

आप श्रीआचार्यजीमहाप्रभुजीकों श्रीस्वामिनीजी (श्रीरा-

धिकाजीनें) आज्ञा करी हती ॥ जो जब आपकूँ स्वधाम आयवेकी श्रीठाकुरजीकी तीनबेर आज्ञा होय तब आइओ ॥ तातें पेहेली आज्ञा गंगासागरपे भइ ॥ तब-आप श्रीआचार्यजीनें सुबोधिनी नामकी भागवतकी टीका त्रुटित करी ॥ दूसरी आज्ञा भई तब संन्यास ग्रहण कियो ॥ तीसरी आज्ञा भइ तब काशी जायकें निजधाम पधारे ॥ आप श्रीआचार्यजीने ३ दिग्विजय किये पीछें २१ वर्षताँइँ पृथ्विपे विराजेहते ॥ कुल ५२ वर्षताँइँ आपनें दर्शन दिये हते ॥ पाछे चार स्वरूप भगवदस्वरूपमें लीन भये ॥ सो यारीतसों जो ॥ १ श्रीआचार्यजीमहाप्रभु श्रीगंगाजीके प्रवाहमें ॥ २ श्रीपुरुषोत्तमजीकों श्रीनाथजीनें हाथ पकरिकें अपनी लीलामें पधराये ॥ ३ श्रीगोपीनाथजी आप श्रीजगदीश पधारेहते तहाँ श्रीबलदेवजीके स्वरुपमें लीन भये ॥ ४ श्रीगिरिधरजी श्रीमथुराँनाथजीके मुखारविंदमें समायगये ॥ या रीतिसों सब लीलामें पधारे ॥ वा समयके जो आचार्य हते सो सब देवतानके अंशावतारी पृथ्विपें धर्म प्रवर्तायवेकेलिये प्रगट भये हते ॥ सो यारितिसों जो ॥ निंबार्कसंप्रदायके आचार्य निंबार्काचार्य सो सुदर्शनको अवतार भये ॥ ओर सुरेश्वराचार्य सूर्यको अवतार भये ॥ ओर देवप्रबोधाचार्य ब्रह्माजीको अवतार भये ॥ सो दोउ न्याय ओर मीमांसाके आचार्य भये ॥ श्रीवेदव्यासजीको अवतार श्रीविष्णुस्वामी ॥ ओर श्रीमहादेवजीको अवतार श्रीशंकराचार्यजी भये ॥ हनुमानजीको अवतार मध्वाचार्यजी भये ॥ ओर लक्ष्मणजीको अवतार श्रीरामानुजाचार्यजी भये ॥ मध्वाचार्यजीनें प्रथम विद्याभ्यास शंकराचार्यजीके पास कियो हतो ॥ पाछे शंकराचार्यजीके शिष्य मणिमादसों मध्वाचार्यको शास्त्रार्थ भयो हतो ॥

॥ इति श्रीवल्लभाचार्यजीकी घरूवार्ता समाप्त ॥

॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

❀ अथ श्रीवल्लभाचार्याणां जन्मपत्रिका ॥ ❀

अब्दे कुंत्यात्मजातांधकरिपुनयनेऽब्जयुक्ते वसोर्भे कृष्णेऽर्के माधवेऽभूत्स हरिशुभदिने कौर्प्य आविर्भवेऽन्हि ॥ वैरिस्थेऽर्यम्णि याने शशिनि कवियुते ह्यात्मजे ज्ञेऽस्तसौरौ धर्मे भौमे सजीवे तमसि गगनगे श्रीहरिर्वल्लभोऽग्निः ॥ १ ॥ अब्दे पांडववन्हिवाणकुमिते राधाऽसितैकादशी वस्वार्क्षार्कनवे शुभे वृषशनौ राहौ च खे ज्ञ सुते ॥ कर्के सारगुरावलावजरवौ कुंभे च चंद्रे कवौ श्रीमद्वल्लभनामधाम जगदुद्धारार्थमेवाजनि ॥ २ ॥ संवत् १५३५ शके १४०० वैशाखकृष्ण ११ रवौ धनिष्ठानक्षत्र शुभयोगे ववकरण एवंपंचांगे ॥ श्रीदिनगतसमस्तरात्रिगतघट्यः ६ पलानि ४४ समये वृश्चिकलग्ने श्री ६ श्रीवल्लभाचार्यजीप्राकट्यम् ॥ स्थितिवर्ष ५२ मास २ दिन ७ पर्यंतम् संवत् १५८७ आषाढशुक्ल ३ दिने अंतर्धानम् ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

(गोस्वामी श्रीद्वारकेशजीमहाराज कृत जन्मपत्रिका गर्भितपद)

❀ (पद राग सारंग) ❀

तत्त्व गुणवाँन भुव माधवासित तरणि प्रथम सौभग दिवस प्रकट लक्ष्मणसुवन ॥ धन्य चंपारण्य मन्य त्रैलोक्य जन अन्य अवतार भुवि है न ऐसो भवन ॥ १ ॥ लग्न वृश्चिक कुंभ केतु कवि इन्दु सुख. मीन बुध उच्च रवि वैरि नाशैं ॥ मंद वृष कर्क गुरु भौम युत सिंहमैं तमसके योग ध्रुव यश प्रकाशैं ॥ २ ॥ रिच्छ धनिष्ठा प्रतिष्ठा अधिष्ठान स्थिर विरह वदनानलाकार हरिको ॥ इहे निश्चय द्वारकेश इनके शरणि ओर को श्रीवल्लभाधीश सरको ॥ ३ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

❀ अथ श्रीविठ्ठलेश्वरस्य जन्मपत्रिका ❀ ॥

वर्षे नेत्राश्वभूतद्विजपतिगणिते पौषकृष्णे नवम्यां हस्तर्क्षे तैतिलेऽहन्यधिकृतभृगुजे शोभने गोविलग्ने ॥ रंध्रस्थेऽर्के सचांद्रे कविकुजशानिषु द्यूनगे स्वात्मजस्थे सोमे जीवे धनस्थे तमसि सहजके विठ्ठलः प्रादुरासीत् ॥ १ ॥ शुक्रारार्किषु सप्तमेषु धनगे जीवे च कर्के तमस्यर्के धन्विनि चांद्रिणा सह सहस्याशुक्लपक्षे वृषे ॥ अब्दे नेत्रमुनीषु चंद्रगणिते हस्ते नवम्यां भृगौ विश्वोद्धारकृते स्फुटोऽभवदिह श्रीविठ्ठलेशो हरिः ॥ २ ॥ संवत् १५७२ शके १४३७ पौषकृष्ण ९ शुक्रे हस्तनक्षत्रे शोभनयोगे तैतिलकरणे एवंपंचांगे ॥ श्रीसूर्योदयात् गतघट्यः २१ पलानि २५ वृषलग्ने श्री ६ श्रीविठ्ठलनाथजी प्राकट्यम् ॥ स्थितिवर्ष ७० दिन २८ पर्यंतम् ॥ संवत् १६४२ माघकृष्ण ७ दिने अंतर्धानम् ॥ ॥ ७ ॥

३ वृ. | २ | १
४ रा. | | १२
५ | | ११
६ चं. | ८ मं शं शु. | के. १०
७ | ९ बु सू. |
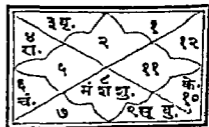
(अथ श्रीगोविंदस्वामी कृत जन्मपत्रिका गर्भित वधाइको पद)

❀ (पद राग धनाश्री) ❀

वधावो श्रीवल्लभरायके ग्रह प्रगटे श्रीविठ्ठलनाथ श्रीवल्लभरायके ॥ ध्रु० ॥ तैलंगतिलक श्रीलक्ष्मणभट्टसुत ग्रह जन्म लियोहे आय ॥ पुरुषोत्तम वासों कहियतहें निगम सदा गुण गाय ॥ १ ॥ पोषमास अरु नोमी भृगुदिन हस्तनक्षत्र हे सार ॥ वृखलग्न शुभयोग करण हे कन्याराशि निर्धार ॥ २ ॥ धनगुरु राहू त्रतीय पंचम राकापती नवमें केत ॥ सप्तमशुक्र भोमनानी शोभित अष्टमबुध रवि लेत ॥ ३ ॥ गिरिचरणाट सुरसरिताके तट फिरि लिनों द्विजरूप ॥ जातकर्म होय नाँनाँविधसों बेठे श्रीवल्लभभूप ॥ ४ ॥ पंचशब्द बाजे बाजतहें गावत गीत सुहाय ॥ मंगल कलश राजतहें द्वारें वंदनवार बँधाय ॥ ५ ॥

मागध सूत पुरोहित मिलिकें सुभग आशीष सुहाय ॥ देत दान महाराज श्रीवल्लभ फुले अंग न समाय ॥ ६ ॥ महा-महोत्सव होत आँगनमें नाँचत गुनीं अनेक ॥ विविधभाँति पाटंवर भूखन देत न आवत छेक ॥ ७ ॥ नवग्रहनकी जो हे महिमा करत सवें द्विज आय ॥ पाखंडधर्म दूरि करिहें प्रभु सत्य-धर्म प्रकटाय ॥ ८ ॥ निराकार मायामति खंडन करहींगे सुख-दाय ॥ पुरुषोत्तम साकार भजनविधि करि शिखवेंगे आय ॥ ९ ॥ दैवीजीव उद्धारण कारण महामंत्रको दान ॥ शरणि-जात गिरिधररति उपजत केहें कथारस पान ॥ १० ॥ जे हरि ब्रह्म रुद्रके अंतर आवत नाहिन ध्यान ॥ ते निजजन गृह बसत निरंतर आदि करतेंहं दान ॥ ११ ॥ प्राकृतरूप दिखाय मोहित किये असुरमती सव जेह ॥ कृपादृष्टि उद्धार कियो हे स्त्री शूद्रादिक देह ॥ १२ पतितजीव पावन करिहें प्रभु अनेक देश प्रदेश ॥ हस्तकमलधरि दुर करेंगे अन्यधर्मके क्लेश ॥ ॥ ३ ॥ गोवर्धनधर सों नित लीला करिहेंगे तहाँ जाय ॥ भोग सिंगार वनाय करेंगे निरखि निरखि सुख पायं ॥ १४ ॥ व्रजमंडल खग मृगकी महिमाँ कहींरेंगे विस्तार ॥ यमुनाँ गोवर्धन द्रुम वेली केहेत सवें निर्धार ॥ १५ ॥ प्रेमलक्षणाँ दे दास-नकों कीनों भयनिस्तार ॥ श्रीवल्लभजु तुमारे सुतकी कीर्ति अपरंपार ॥ १ ॥ आनंदमग्न भए सुर नर मुनि गुनीगण सुनि सुखपाय ॥ निरखि मुखारविंदकी शोभा चरनकमल शिर नाय ॥ १७ ॥ सुखसागर उगभ्यो भूमीपर वरनत वरन्यो न जाय ॥ श्रीवल्लभपदरज महिमातें गोविंद रहे यश गाये ॥ १८ ॥

॥ इति श्रीआचार्यजी तथा श्रीगुसाँइजीकी जन्मपत्रिका समाप्ता ॥

॥ श्रीगोवर्धनधरो विजयतेतराम्.
॥ श्रीनवतीतप्रियो जयति. ॥
अथ श्रीआचार्यजीमहाप्रभुजी (श्रीवल्लभाचार्यजी
वनयात्रागर्भित ८४ बेठकनके चरित्र प्रारंभ.

❀ (अथ नमस्कृतिः) ❀

"नमोनमस्तेऽस्त्वृषभाय सात्वतां; विदूरकाष्ठाय मुहुः कुयो-
गिनाम् ॥ निरस्तसाम्यातिशयेन राधसा; स्वधामनि ब्रह्मणि रंस्य-
ते नमः ॥ १ ॥ मायातमोनिराकर्त्रे; गोभिः सर्वार्थदर्शिने ।
स्वान्तस्थाघहरे नित्यं, द्विजराजाय ते नमः ॥ २ ॥ तैलंगान्वय-
भूषणः कविकुलालंकारचूडामणिर्वेदान्तावनमंदिरं श्रुतिशिरोर-
त्नावलीरंजितः ॥ मायावादमहान्धकारकदनः प्रद्योतितः प्राणि-
नामुद्धाराय कृतावतारसमयः श्रीवल्लभः पातु वः ॥ ४ ॥

❀ ॥ अथ सूचनिका ॥ ❀

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी चोरासी बेठक या पृथ्वी मंडलमें हें ॥ सो जहाँ जहाँ आपनें अलौकिक चरित्र दिखाए हें सो अब कहें हें ॥ जहाँ जहाँ श्रीआचार्यजीमहाप्रभुजीनें श्री-भागवतको पारायण कीयो हे ॥ तहाँ तहाँ आपकी बेठक प्रसिद्ध भईहें ॥ चोरासी प्रकारकी भक्ति आपनें प्रगट करी हे ॥ सो चोरासी वैष्णवनके हृदयमें आपनें स्थापन करी हे ॥ ईक्यासी प्रकारकी सगुणभक्ति ओर तिनि प्रकारकी निर्गुणभक्ति ॥ प्रेम आसक्ति विषयन करिकें भेद हें ॥ सो याहीतें चोरासी वैष्णव मुख्य भक्तिके अधिकारी भए ॥ सो विनकी वार्तामें प्रसिद्ध हें ॥

❀ (बेठक १ ली) ❀

❀ (अथ श्रीगोकुलकी बेठकनके चरित्रको प्रारंभः) ❀

अब श्रीगोकुलमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी (३) तीन बेठक हें तामें एक बेठक तो गोविंदघाटके ऊपर छोंकरके

नीचें हे ॥ सो जब प्रथमहीं आप श्रीगोकुल पधारे हते तब छोंकरके नीचें विराजे हते ॥ तब दामोदरदासहरसांनीसों आज्ञा कीए ॥ जो दमला गोविंदघाट ओर ठकुराँणीघाट दोऊ बराबर हें ॥ न जॉनिये कोंनसो गोविंदघाट हे ॥ ओर कोनसो ठकुरॉणीघाट हे ॥ तब ईतनेमें अकस्मात एक स्त्री आई ॥ सो नखतें सिख पर्यंत हिरा ओर पन्नानके आभरण पेहेरे हे ॥ सो आईकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनतें कह्यो ॥ जो तुम या छोंकरके नीचें विराजो ॥ यहि गोविंदघाट हे ॥ ओर आपकी दक्षणऔर ठकुरॉणीघाट हे ॥ ईतनों कहिकें वो अंतर्धान भई ॥ तब श्रीआचार्य जी आप दामोदरदासतें कहें ॥ जो दमला श्रीयमुनॉजी एसे परम ऊदार हें ॥ जो हम रंचक ठाढेभए ॥ सो आपसों सह्यो न गयो ॥ तातें तत्काल पधारिकें हमकों गोविंदघाट तथा ठकुरॉणीघाट बताए हें ॥ तब दामोदरदासनें विनती करी ॥ जो महाराज गोविंदघाट ओर ठकुरॉणीघाट को अभिप्राय कहा हे ॥ तब आप आज्ञाकीए ॥ जो रावलिसों ठकुराणींघाटतांई श्रीस्वामिनीजीकी हद्द हे ॥ ओर महावनसों गोविंदघाट तॉई श्रीठाकुरजीकी हद्द हे ॥ ओर यह छोंकर हे सो ब्रह्मको स्वरूप हे ॥ सो यह आज्ञा आप कीए ॥ तादिन श्रावण सुदी ग्यारस ही॥ तातें सूतको पवित्रा ॥ सिद्ध कीए हे ॥ सो केसरसों रंगे ॥ केसरी धोती ऊपरनॉरंगे ॥ मिश्री सिद्धि करिकें फेरि रात्रिमें आप पोढे ॥ तब दामोदरदास आपसों नेंक दूर आपकी इच्छातें सोयो हतो ॥ ता समय आपके मनमें यह चिंता भई ॥ जो मेरो प्रागट्य भूतलपे भयो हे ॥ सो देवीजीवनके उद्धारार्थ भयो हे ॥ तातें मायामत खंडन करिकें भक्तिमार्गको स्थापन करनों ॥ ओर सकल तीर्थनकों सनाथ करनें ॥ जीव तो सब दोप निधॉन हें ॥ ओर पुरुपोत्तम गुण निधॉन हें ॥ सो इनको संबंध केसें होयगो ॥ यह

चिंता होतमात्रही श्री यमुनाजीकी पुलिनमेंतें कोटि कंदर्प लावण्य साक्षात् श्रीनाथजी आप प्रगट होईकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके निकटपधारिकें आज्ञा कीए ॥ जो तुम चिंता क्यों करतहो ॥ तुमतो सर्व करण समर्थ हो ॥ तब श्रीआचार्यजी आप प्रणामपूर्वक कहें ॥ जो जीव कहाँ और आप कहाँ ॥ सो यह संबंध कैसें संभवेगो ॥ तब आपु श्रीनाथजी आज्ञा कीए ॥ जो जाकों आप नॉम देऊगे ताके सेवामें सकल दोष निवर्ति होंइगे ॥ (सर्वदोपनिवृत्तिर्हि दोषाः पंचविधाःस्मृताः) ओर आज्ञा कीए (शरणस्थसमुद्धारं कृष्णं विज्ञापयाम्यहम्) तब ईतनों सुनतहीं आप श्रीआचार्यजीने धोती उपरनॉ धराय पवित्रा पहराय मिश्री भोग धरे॥ तब श्रीगोवर्धननाथजी आज्ञा कीए॥ जो आप जाकों ब्रह्मसंबंध करावोगे ताको में अंगीकार निश्चे करूँगो ॥ एसी आज्ञा करिकें आप अंतर्धान भए ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप दामोदरदासतें कहें ॥ जो दमला तेंनें कछु सुन्यो ॥ तब दामोदरदासनें कही ॥ जो महाराज सुन्यो तो सही ॥ परंतु कछु समझ्यो नॉहीं ॥ जो पुरुषोत्तमके वाक्य तो वेदहू समझत नाहीं ॥ तो में जीव कहा समझूँगो ॥ तब आप कहें जो दमला श्रीठाकुरजी ब्रह्मसंबंधकी आज्ञा दीए हें ॥ तब दामोदरदासनें वीनती करी ॥ जो महाराज कृपा करिकें प्रथम तो मोकों ब्रह्मसंबंध करवाइये ॥ तब द्वादशीके दिनं प्रातकालही श्रीआचार्यजीनें दामोदरदासकों स्नान करवाइके प्रथमही छोंकरकें नींचें ब्रह्मसंबंध करवायो ॥ ओर मार्गको रहस्य सिद्धांत वाके हृदयमें स्थापन किए ॥ ओर आप दामोदरदासतें कहें ॥ जो दमला यह मार्ग तेरेलीयें प्रगट कन्यो हे ॥ सो यह चरित्र श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप गोविंदघाटपें छोंकरकें नीचें दिखाए ॥ ओरहू अनेक चरित्र दिखाएंहें परंतु मुख्य चरित्र हें सोई लिखे हें ॥ इतिश्रीगोविंदघाटकी बेठकको चरित्र संपूर्ण ॥ १ ॥

❀ (बेठक २ री) ❀

❀ (अथ भीतरकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी दूसरी भीतरकी वडी बेठक हे ॥ सो तहाँ आप नित्य भोजन करते ॥ तथा कथा कहते ॥ आपने प्रगट होइकें सेवामार्ग प्रगट कीयो ॥ तब वृंदावनके वडे वडे महानुभाव कृष्णचैतन्य प्रभृति संत महंत हे ॥ तिननें यह विचार कियो ॥ जो श्रीनाथजीकी सेवा हम करें ॥ तब ऊनकों श्रीनाथजी यह आज्ञा कीये ॥ जो मेरी सेवा तो मेरोस्वरूप होईगो सो करेगो ॥ तुमकों तो भगवद्भजनको अधिकार हे ॥ भजनसों तुमारो उद्धार होयगो ॥ ओर मेरी सेवा तो श्रीआंचार्यजीमहाप्रभु आप करेंगें ॥ तब उन वृंदावनके महंतननें अपनों एक वैष्णव परीक्षाके लियें ॥ श्रीगोकुलमें श्रीआचार्यजीके पास पठायो ॥ सो वा वैष्णवको नॉम श्यामानंद हतो ॥ सो वह वैष्णव श्रीगोकुलमें आयो ॥ वाके पास एक श्रीशालिग्रामजीको स्वरूप हतो ॥ सो वह स्वरूप बटुआमें हतो ॥ सो ता बटुआकों छोंकरकें वृक्षसों लटकाईकें वो भीतर आप श्रीआचार्यजीके पास दर्शनकों गयो ॥ तब आपके दर्शन करिकें पाछों आयो ॥ सो तहाँ देखे तो वह बटुआ नाँहींहे ॥ पाछें वानें आयकें श्रीआचार्यजीसों कह्यो ॥ जो महाराज तुमारे सेवकननें मेरो बटुआ चुराय लीयो हे ॥ तब आप कहें ॥ जो हमारो सेवक होयगो सो तेरो बटुआ काहेकों लेइगो ॥ सो तेंनें जहाँ धन्यो होय ॥ तहाँ देखि ले ॥ तब वह फिरि आयकें देखे तो सबरो छोंकर बटुआनतें भन्यो-हे ॥ सो तब फेरि वामें आईकें आप श्रीआचार्यजीसों कही ॥ जो महाराज वहाँतो अनेक बटुआ हें ॥ सो में कोंनसो लेऊँ ॥ तब आप कहें ॥ जो तूं अपनें इष्टकों पहचाँनत नाँही हे ॥ तो

चिंता होतमात्रही श्री यमुनाजीकी पुलिनमेंतें कोटि कंदर्प लावण्य साक्षात् श्रीनाथजी आप प्रगट होईकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके निकटपधारिकें आज्ञा कीए ॥ जो तुम चिंता क्यों करतहो ॥ तुमतो सर्व करण समर्थ हो ॥ तब श्रीआचार्यजी आप प्रणामपूर्वक कहें ॥ जो जीव कहाँ और आप कहाँ ॥ सो यह संबंध कैसें संभवेगो ॥ तब आपु श्रीनाथजी आज्ञा कीए ॥ जो जाकों आप नॉम देऊगे ताके सेवामें सकल दोष निवर्ति होंइगे ॥ (सर्वदोषनिवृत्तिर्हि दोषाः पंचविधाः स्मृताः) ओर आज्ञा कीए (शरणस्थसमुद्धारं कृष्णं विज्ञापयाम्यहम्) तब ईतनों सुनतहीं आप श्रीआचार्यजीने धोती उपरनॉ धराय पवित्रा पहराय मिश्री भोग धरे ॥ तब श्रीगोवर्धननाथजी आज्ञा कीए ॥ जो आप जाकों ब्रह्मसंबंध करावोगे ताको में अंगीकार निश्चे करूँगो ॥ एसी आज्ञा करिकें आप अंतर्धान भए ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप दामोदरदासतें कहें ॥ जो दमला तेंनें कछु सुन्यो ॥ तब दामोदरदासने कही ॥ जो महाराज सुन्यो तो सही ॥ परंतु कछु समझ्यो नॉही ॥ जो पुरुषोत्तमके वाक्य तो वेदहू समझत नाहीं ॥ तो में जीव कहा समझूँ गो ॥ तब आप कहें जो दमला श्रीठाकुरजी ब्रह्मसंबंधकी आज्ञा दीए हें ॥ तब दामोदरदासनें वीनती करी ॥ जो महाराज कृपा करिकें प्रथम तो मोकों ब्रह्मसंबंध करवाइये ॥ तब द्वादशीके दिनं प्रातकालही श्रीआचार्यजीनें दामोदरदासकों स्नान करवाइके प्रथमही छोंकरकें नीचें ब्रह्मसंबंध करवायो ॥ ओर मार्गको रहस्य सिद्धांत वाके हृदयमें स्थापन किए ॥ ओर आप दामोदरदासतें कहें ॥ जो दमला यह मार्ग तेरेलीयें प्रगट कन्यो हे ॥ सो यह चरित्र श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप गोविंदघाटपें छोंकरकें नीचें दिखाए ॥ ओरहू अनेक चरित्र दिखाएहें परंतु मुख्य चरित्र हें सोई लिखे हें ॥ इतिश्रीगोविंदघाटकी बेठकको चरित्र संपूर्ण ॥ १ ॥

❀ (बेठक २ री) ❀

❀ (अथ भीतरकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी दूसरी भीतरकी बडी बेठक हे ॥ सो तहाँ आप नित्य भोजन करते ॥ तथा कथा कहते ॥ आपने प्रगट होइकें सेवामार्ग प्रगट कीयो ॥ तब वृंदावनके बडे बडे महानुभाव कृष्णचैतन्य प्रभृति संत महंत हे ॥ तिननें यह विचार कियो ॥ जो श्रीनाथजीकी सेवा हम करें ॥ तब ऊनकों श्रीनाथजी यह आज्ञा कीये ॥ जो मेरी सेवा तो मेरोस्वरूप होईगो सो करेगो ॥ तुमकों तो भगवद्भजनको अधिकार हे ॥ भजनसों तुमारो उद्धार होयगो ॥ ओर मेरी सेवा तो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप करेंगें ॥ तब उन वृंदावनके महंतननें अपनों एक वैष्णव परीक्षाके लियें ॥ श्रीगोकुलमें श्रीआचार्यजीके पास पठायो ॥ सो वा वैष्णवको नॉम श्यामानंद हतो ॥ सो वह वैष्णव श्रीगोकुलमें आयो ॥ वाके पास एक श्रीशालिग्रामजीको स्वरूप हतो ॥ सो वह स्वरूप बटुआमें हतो ॥ सो ता बटुआकों छोंकरकें वृक्षसों लटकाईकें वो भीतर आप श्रीआचार्यजीके पास दर्शनकों गयो ॥ तब आपके दर्शन करिकें पाछों आयो ॥ सो तहाँ देखे तो वह बटुआ नॉहीहे ॥ पाछें वानें आयकें श्रीआचार्यजीसों कह्यो ॥ जो महाराज तुमारे सेवकननें मेरो बटुआ चुराय लीयो हे ॥ तब आप कहें ॥ जो हमारो सेवक होयगो सो तेरो बटुआ काहेकों लेइगो ॥ सो तेंनें जहाँ धन्यो होय ॥ तहाँ देखि ले ॥ तब वह फिरि आयकें देखे तो सबरो छोंकर बटुआनतें भन्यो हे ॥ सो तब फेरि वामें आईकें आप श्रीआचार्यजीसों कही ॥ जो महाराज वहाँतो अनेक बटुआ हें ॥ सो मे कोंनसो लेऊँ ॥ तब आप कहें ॥ जो तूं अपनें इष्टकों पहचॉनत नॉही हे ॥ तो

आगें सेवा कहा करेगो ॥ जो तूँ जायकें देखितो सही ॥ सो तब फेरि वह आयकें देखे तो एकही बटुआ हे ॥ सो तब वा बटुआकों लेकें श्रीवृंदावनकों गयो ॥ तब उन संत महंतनसों सर्व समाचार कहे ॥ सो वह सुनिकें सबरे आश्चर्य करन लागे ॥ ओर कहें जो वह ईश्वरी अंश हें ॥ यह चरित्र आप भीतरकी बेठकमें दिखाए ॥ सो एसे एसे अनेक चरित्र दिखाए हे ॥ इति श्रीभीतरकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ २ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (बेठक ३ री) ❀

❀ (अथ शैयामंदिरकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

एक समें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप शैयामंदिरकी बेठकमें पोढे हते ॥ सो तहाँताँई श्रीद्वारिकानाथजीको मंदिर बन्यो न हतो ॥ सो तब तहाँ एक जोगेश्वर द्वापरयुगको बेठिकें तपस्या करत हतो ॥ सो वाकी कुटी भूमिके भीतर हती ॥ सो तब वा जोगेश्वरनें निकसिकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों साष्टांग दंडवत् करी ॥ ओर विनती करी ॥ जो महाराज में द्वापरयुगसों बेठिकें तपस्या करतहों ॥ सो ताको फल मोकों आज सिद्धि भयो ॥ जो मोकों आपके दर्शन भए ॥ ओर अब ईहाँ सात मंदिर बनेंगे ॥ ओर अब श्रीगोकुल फेरि बसेगी ॥ सो तातें मोकों इहाँसों कोऊ उठावे नाँही एसी आज्ञा करो ॥ सो तब श्रीआचार्यजी आप कहें ॥ जो तुमकों ईहाँतें कोऊ उठावेगो नाहीं ॥ तापाछें केतेक दिन पीछें श्रीद्वारिकानाथजीको मंदिर बन्यो ॥ सो तब वा जोगेश्वरकी कुटी निकसी ॥ सो तब श्रीद्वारिकानाथजीनें वा जोगेश्वरसों कही ॥ जो अब तुम ईहाँतें सरकि जाओ ॥ सो तब वा जोगेश्वरनें कही ॥ जो महाराज मोकों श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी आज्ञा हे ॥ जो तोकों ईहाँसों कोई उठावेगो नाहीं ॥ सो तब श्रीद्वारिकेशजी महा-

राजनें कही जो अबतो तुम ईहांतें सरकिजाओ ॥ तव वह कुटी सोलह हाथ नीची भूमिमें प्रवेश करिगई ॥ तब तहाँ श्रीद्वारिकानाथजीको मंदिर वन्यो ॥ तामें श्रीठाकुरजी बिराजे ॥ परंतु तहाँ नित्य राजभोग सरे पाछें महाप्रसादमें क्रमि होयजायवे लगे ॥ सो. तब श्रीद्वारकेशजी महाराजनें श्रीगोकुलनाथजीसों पूछी ॥ तब श्रीगोकुलनाथजीनें कही ॥ जो में श्रीनाथजीसों पूछिकें उत्तर देउंगो ॥ ता पाछें श्रीगोकुलनाथजी श्रीनाथद्वार पधारे ॥ तंब राजभोगपींछें श्रीगोकुलनाथजी महाराज शैयामंदिरके द्वारपे ठाढे भए ॥ तब तहाँ श्रीनाथजीसों सर्व वृतांत कह्यो ॥ तब जँभाई लेकें श्रीनाथजी आलस संयुक्त यह बचन कहें (तस्येदं कर्मणां फलम्) ॥ पाछें श्रीनाथजी शैयामंदिरमें पोढिवेकों पधारे ॥ सो श्रीगोकुलनाथजीनें श्रीद्वारकेशजीसों सर्व समाचार कहे ॥ तातें केतक दिनलों श्रीद्वारकानाथजी श्रीमथुरेशजीके पास बिराजे ॥ सो यह चरित्र शैयामंदिरकी वेठकमें दिखाए ॥ ओरहू अनेक चरित्र दिखाए हें ॥ परंतु मुख्य हें सो लिखें हें ॥ इति श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी शैयामंदिरकी वेठकको चरित्र समाप्त ॥३॥

❀ (बेठक ४ थी) ❀

❀ (अथ श्रीवृंदावनकी वेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अव श्रीवृंदावनमें वंसीवटके पास श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी वेठक हे ॥ वहां आपनें यह अलौकिक चरित्र दिखायो ॥ जो एक वैष्णव प्रभुदासजलोटाक्षत्री हतो ॥ सो ऊनसों श्रीआचार्यजीनें कह्यो ॥ जो प्रभुदास सखडी महाप्रसाद लेउ ॥ तब प्रभुदासनें कही ॥ जो महाराज में स्नान नाहीं कियो ॥ सो सखडी महाप्रसाद केसें लेऊँ ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप दोन श्लोक पद्मपुराणके वृंदावनमाहात्मको कहें ॥ सो श्लोक ॥

(वृक्षे वृक्षे वेणुधारी पत्रे पत्रे चतुर्भुजः ॥ यत्र वृंदावनं तत्र स्नानास्नानकथा कुतः ॥ १ ॥ रजसोऽपि पुण्यं जलं जलादपि रजो वरम् ॥ यत्र वृंदावनं तत्र लक्ष्यालक्ष्यकथा कुतः ॥ २ ॥) सो एसें कहिकें या वेठकमें, वृंदावनको स्वरूप दिखाए ॥ सो वृक्ष वृक्ष प्रति तथा पत्र पत्र प्रति भगवद्दर्शन भयो ॥ तब प्रभुदासनें महाप्रसाद लियो ॥ ओर दूसरो अलौकिक चरित्र दिखायो सो कहतहें ॥ जो एक गोपालदासगोडिया करकें कृष्णचैतन्यको सेवक हतो ॥ सो वह भक्तिमार्गीय हतो ॥ वानें कृष्णचैतन्यसों विनती करी ॥ जो महाराज मेरे मँथें कछु सेवा पधराय देऊ ॥ तब कृष्णचैतन्यनें वाके मँथें श्रीशालिग्रामजीकी सेवा पधरायदई ॥ सो ताकी वह सेवा कीयोकरे ॥ परंतु वाके मनमें वडो ताप रहे ॥ जो, में ईनकों, सिंगार केसें करूं ॥ ओर मुकट काछिनी केसें धराऊं ॥ गुरूननें, जो स्वरूप पधराय दीयो ॥ ता ऊपराँत दूसरो स्वरूप पधरायो जाय नहीं ॥ तब वानें कृष्णचैतन्यतें फेरि वीनती करी ॥ जो महाराज मोकों स्वरूप सेवा पधराय देऊ तो आछो ॥ तब कृष्णचैतन्य तो चूप होय रहे ॥ पाछें कृष्णचैतन्य श्रीजगन्नाथरायजीके दर्शन करिवेकों गये ॥ तब गोपालदासको बहुत ताप जाँनिकें कृष्णचैतन्यनें स्वप्नमें कह्यो ॥ जो मेरो सामर्थ्य होय सो मोसों दीयो जाय ॥ में तो भगवद् आज्ञातें मार्ग उपदेश देतहूँ ॥ भगवत्स्वरूपको सामर्थ्य तो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनमें हे ॥ सो तातें वे पधारें तब ऊनतें विनती करियो ॥ तब तेरो वे सर्व मनोरथ पूर्ण करेंगे ॥ सो तब वानें आयकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों विनती करी ॥ जो महाराज मोकों गुरुननें तो श्रीशालिग्रामजीकी सेवा पधराय दीनी हे ॥ परि मेरे मनमें भाँति भाँतिके सिंगार करिवेको ताप, रहेत हे ॥ तातें ओर दूसरो स्वरूप पधराय देऊ ॥ ताकी कछू चिंतातो नाँहीं ॥

तब आप आज्ञा कीए ॥ जो दूसरो स्वरूप काहेकों पधरावतहे ॥ जो तेरो सॉचो भाव होयगो तो याहीमेते स्वरूप प्रगट होईगो ॥ ओर शालिग्रामजी पीठकमें रहेंगे ॥ श्रीठाकुरजी सर्व कर्ण समर्थ हें ॥ श्लोक ॥ (कृष्णस्तावतमात्मानं यावंतीर्व्रजयोपितः) सो जेसो तेरो अभिलाख हे तेसो स्वरूप होइगो ॥ जेसी तेरी इच्छा होय तेसो ही तूं भावनॉ करियो ॥ तेसोही सवारें तोकों दर्शन होयगो ॥ सो तब वह अपनें घर आईकें सोय रह्यो ॥ तब सवारें वाकों श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी कृपातें इच्छानुरूप दर्शन भयो ॥ तब उन श्रीठाकुरजीको नॉम राधारमण भयो ॥ सो अब वृंदावनमें विराजतहें ॥ तापाछें गोपालदासनें श्रीआचार्यजी महाप्रभुनतें विनती करी ॥ जो महाराज मोकों गुरुउपदेश देऊ ॥ आप तो साक्षात् पूर्ण पुरुषोतम हो ॥ तब आप आज्ञा कीए ॥ जो याजन्ममें तो तूं कृष्णसचेतन्यको सेवक हे ॥ ओर जन्मांतरमें हमारे मार्गको संबंध होयगो (श्लोक) जन्मांतरसहस्रेषु तपोध्यानसमाधिभिः ॥ नराणां क्षीणपापानां कृष्णे भक्तिः प्रजायते ॥ १ ॥ सो तब फेरि कोई कालांतर करिकें वाकों या मार्गको संबंध भयो ॥ सो तब गोपालनागा ईनको नॉम भयो ॥ सो यह चरित्र आपु वृंदावनकी वेठकमे दिखाए ॥ ओरहू अनेक चरित्र दिखाएहे ॥ परंतु मुख्यहें सोई लिखे हें ॥ इति श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी श्रीवृंदावनकी वेठकको चरित्र समाप्त ॥ ४ ॥ ॥ ७ ॥ ७ ॥

❀ (वेठक ५ मीं) ❀

❀ (अथ श्रीमथुरॉजीकी वेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब श्रीमथुरॉजीमें विश्रांतिघाटके ऊपर श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी वेठक हे ॥ तहॉ आप श्रीआचार्यजी विराजे हते ॥ ता समय तहॉ ऊजार बन हतो ॥ ओर वस्ती तो भूतेश्वरपे हती ॥ सो तहॉ स्मशानभूमि नजीक हती ॥ तातें आपकों

श्रीभागवतको पाठ करतमें ग्लानी ऊपजी ॥ तब कमंडलु मेंतें जल लेकें कृष्णदासमेघनकों दियो ॥ ओर आज्ञा कीए ॥ जो जितनेमें यह जल छिरक्योजायगो ॥ तितनेमें वस्ती होयगी ॥ तब कृष्णदासनें वह जल असकुंडातें लगायकें सूर्यकुंड तांई छिरक्यो ॥ सो तातें ऊतनेमें वस्ती बसिगई ॥ ओर तत्काल स्मशानभूमि ध्रुवघाटपे जाय पडी ॥ तब वा समय रूपसनातन दर्शननकों आए हते ॥ विननें श्रीआचार्यजीके सेवकनकों दुर्बल देखिके कह्यो ॥ जो महाराज आपको मार्ग तो पुष्टि हे ॥ ओर सेवक दुर्बल क्यों हें ॥ तब आप कहें ॥ जो हमतो इनकों वहुत वरजे हते ॥ जो तुम या मार्गमें मति परो ॥ परंतु ईननें हमारो कह्यो मान्यो नाँहीं ॥ सो ताको फल ये भोगत हें ॥ याको आशय कृष्णचेतन्य समुझे नाँहीं ॥ जो यामें आपनें अपनों स्वरूप तथा मार्गको स्वरूप तथा सेवकनको स्वरूप तीन्यो वात दिखाई हें ॥ सो यह जो हमनें मुखाविंदसों रासपंचाध्यायीमें व्रजभक्त बरजे ॥ जो तुम पाछे घरकों जावो ॥ सो इननें माँन्यो नाँहीं ॥ ताको फल संयोग ओर विप्रयोग सो ये भोगत हें ॥ जा समय श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप मथुराँ पधारे हते ॥ ता समय एक आसुरीमंत्र लिखिकें काजीनें विश्रांतिघाट ऊपर धरिराख्यो हतो ॥ सो वह एसो यंत्र हतो ॥ जो वाके नीचें होईकें हिंदू निकसे ॥ ताकी चुटिया कटिजाई ॥ ओर डाढी होय आवे ॥ सो तातें मुसलमाँन होय जाय ॥ सो एसें धर्मभ्रष्ट करत हते ॥ सो ता समय श्रीआचार्यजी आप विश्रांतिघाट ऊपर स्नान करनकों पधारे हते ॥ ता समय पाँच सात वैष्णव आपके संग हते ॥ ओर दोय चार वैष्णव केशवभट्टके संग हते ॥ सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप सब सेवकन सहित स्नान कीए ॥ तब काहू वैष्णवकों म्लेछके यंत्रको पराभव भयो

नाहीं ॥ तापाछें आप सातदिन ताँई मुक्तिक्षेत्रके उपर श्रीभागवतको पारायण कीए ॥ सो तहां तांई सब हिंदूननें स्नान कीए ॥ सो काहूकी चुटिया कटी नाहीं ॥ सो जब आप मधुवनकों पधारिवेलगे ॥ तब वा समय मथुरिया चोबेननें मिलिकें आपसों विनती करी ॥ जो महाराज यह यंत्र विश्रांतिघाटके ऊपर हे ॥ सो दूरिकरिकें आप पधारो ॥ तब आप आज्ञा कीए ॥ जो तुम जायकें काजीसों कहो ॥ जो गोकुलके फकीर केहेत हें ॥ जो या यंत्रकों विश्रांतिघाटपेतें ऊठाय लेउ ॥ तब ऊन चोबेननें जायकें काजीसों कही ॥ जो हमारे श्रीआचार्यजी पधारे हें ॥ सो केहेत हें ॥ जो या तुमारे यंत्रकों यहांतें ऊठाय डारो ॥ सो सुनकें काजीनें कही ॥ जो यह यंत्रतो यहां पादशाहनें धरायो हे ॥ सो जब ऊनको हुकम आवेगो तब यह यंत्र यहांतें ऊठेगो॥ सो तब ऊन चोबेननें सर्व समाचार वासुदेवदासछकडा पास आयकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुकों कहि सुनाए ॥ तब श्रीआचार्यजी आपनें श्रीहस्तसों यंत्र लिखिकें वासुदेवदासछकडाकों तथा केशवभट्टसों आज्ञा कीए ॥ जो तुम दिल्ली जावो ॥ सो दिल्लीके जितनें दरवाजे हें तिन सबनपे एक एक यह यंत्र धरि आवो ॥ तब वासुदेवदासछकडा तथा केशवभट्ट दिल्लीकों चले ॥ सो दिल्लीजायकें सब दरवाजनपे यंत्रनकों धरिदिए ॥ सो वा यंत्रको यह प्रताप जो कोई म्लेंछ उहां होयकें निकसे ॥ ताकी चुटिया होयजाय ॥ ओर डाढीहोय सो उडिजाए ॥ तातें वो हिंदू होय जाए ॥ सो तब या भांतिसों कितनेंहू म्लेंछ हिंदू होय गए॥ तब पादशाहपे खबरि भई ॥ तब पादशाहनें हुक्म कियो ॥ जो एसे यंत्रनकों उँहाँ सों ऊठाय डारो ॥ तब पादशाहके मनुष्य यंत्र उडायवे लगे ॥ सो तब वह यंत्र कोईके हाथ आवे नाँही ॥ सो तब काहूनें कही ॥ जो यह यंत्र तुमारे हाथ आवेगो नाँहीं ॥

तब वे मनुष्य पाछे फिरि गए ॥ सो तब पादशाहनें पूछी ॥ जो यह यंत्र ईहाँ कोंने धन्यो हे ॥ तब हलकारानें कही ॥ जो मथुराके दोय फकीर आए हें ॥ सो यह यंत्र उननें धन्यो हे ॥ तब इतनेमें वासुदेवदासछकडा तथा केशवभट्ट दोउ जनें तहाँ आईकें ठाढे भए ॥ तब पादशाहनें कही ॥ जो यह यंत्र ईहाँसों उठाय डारो ॥ तब केशवभट्टनें कही ॥ जो साहिब यह यंत्र ईहाँसों तब उठेगो जब मथुरातें वा यंत्रकों उठाय मँगावोगे ॥ एसी हमकों श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी आज्ञा हे ॥ तब पादशाह अपने मनमें डरप्यो ॥ सो तब पादशाहनें कही ॥ जो हम वा यंत्रकों उठाय मँगावतहें ॥ तापाछें पादशाहनें अपने हलकारा मथुराकों भेजे ॥ सो वे हलकारा मथुरासों पत्र लाए ॥ तब वासुदेवदासछकडा ओर केशवभट्ट दिल्लीके दरवाजेनसों वे यंत्र उठायकें मथुराकों गए ॥ सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके पास आईकें दंडोत करिकें सर्व समाचार कहे ॥ सो सुनिकें श्रीआचार्यजी आप चूपकरि रहे ॥ सो जब दिल्लीके दरवाजेनसों यंत्र उठे ॥ तब सब म्लेछननें चुटिया मुंडवायडारी ॥ तब पादशाह बाहिर बागकी सेलकों निकस्यो ॥ जब विश्रांतघाटकेऊपरसों यंत्रउठ्यो तापाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप संध्यावंदनको जल लेकें विश्रांतिघाटके ऊपर छिरके ॥ ता समय श्रीमुखसों आप कहे ॥ जो आजपाछें कोई म्लेच्छ इहाँ यंत्र धरेगो सो झूंठो परेगो ॥ तापाछें उजागरचोबेकों प्रोहिताही लिखि दई ॥ सो तब वाकी आज्ञा लेकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप व्रजयात्रा करिवे पधारे ॥ सो संवत् १५४९ भाद्रपद वदी १२ शरद ऋतुमें विश्रांतिघाटपे स्नान करि नेम लेकें आप विश्रांतिघाटतें पधारे ॥ सो मधुवन पधारे ॥ यह चरित्र श्रीआचार्यजी आप विश्रांतिघाटकी बेठकमें प्रगट कीए ॥ ओरहू अनेक चरित्र कीए हे ॥ परंतु मुख्य हें सोई लिखेहें ॥ इति श्रीमथुराँजीमेंविश्रांतघाटकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥

❀ (बेठक ६ ठी) ❀

❀ (अथ श्रीमधुवनकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

मधुवनमें मधुवनियाँठाकुर व्रजनाभके स्थापित हें ॥ सो तिनके दर्शन करिकें माधवकुंडके ऊपर एक कदंबके नीचें आयकें श्रीआचार्यजी आप बिराजे ॥ तहाँ सातदिनलों श्रीभागवतकी पारायण कीए ॥ तब मधुवनियांठाकुर नित्य कथा सुनिवेकों पधारते ॥ सो एकदिन एक पंडा स्नान करिकें सेवा करिवेकेलीयें मंदिरमें गयो ॥ तब तहाँ मंदिरमें देखे तो श्रीठाकुरजी नही हें ॥ तब वह पंडा अपनें मनमें क्लेश करन लाग्यो ॥ तब दोयप्रहर पीछें मंदिरमें वा पंडाकों श्रीठाकुरजीको दर्शन भयो ॥ तब पंडाननें पूछी ॥ जो महाराज तुम कहाँ पधारे हते ॥ तब श्रीठाकुरजी कहें ॥ जो यहाँ श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप पधारे हें ॥ सो श्रीभागवतकी पारायण करत हें ॥ तहाँ सुनिवेकोंगयो हतो ॥ सो तातें तुम बडे सवारें पूजा करीवो करो ॥ तब वादिनसों वे पंडा बडे सवारें ऊठिकें पूजा करिलेते ॥ सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप सातदिनलों श्रीभागवतको पारायण किये ॥ तहाँताँई मधुवनियाँठाकुर नित्य पधारें ॥ जा समय श्रीआचार्यजी आप व्रजयात्रा करिवे पधारे ॥ ता समय इतनें वैष्णव आपके सँग हते तिनकेनाँम ॥ १ वासुदेवदास छकडा ॥ २ यादवेंद्रदास कुँभार ॥ ३ गोविंददुवे साँचोराब्राह्मण ॥ ४ माधवभट्ट काश्मीरी ॥ ५ सुरदासजी ॥ ६ परमानंददासजी ॥ सो इतनें वैष्णव श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके संग व्रजयात्रा करिवे गये हते ॥ इति श्रीआचार्यजीकी मधुवनकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥

❀ (बेठक ७ मी) ❀

❀ (अथ श्रीकमोदवनकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब श्रीआचार्यजी मधुवनसों तालवन पधारे ॥ तहाँ ताल-

ढीमर याको नाँम भयो ॥ सो याकी वार्ता श्रीगुसाँईजीके सेवकनमें लिखी हे ॥ तातें यहाँ विस्तार नहीं कियो ॥ तापाछें तहाँतें आगें पधारे ॥ सो तोसगाँम होयकें जिखिनगाँममें श्रीवलदेवजीको दर्शन कीए ॥ सिंगार कीए ॥ तहाँ एकरात्रि विराजे ॥ दमलासों आज्ञा कीए ॥ जो ये श्रीवलदेवजी प्राचीन हें ॥ जो इनहींने शंखचूड मार्‍यो हे ॥ तातें या गाँमको नाँम जिखिनगाँम हे ॥ तापाछें दूसरे दिन श्रीआचार्यजी आप सुखराई होयकें श्रीकुंड पधारे ॥ सो यहचरित्र श्रीआचार्यजी आप वहुलावनकी वेठकमें प्रगट कीए॥ ओरहू अनेक चरित्र दिखाए हे॥ इति श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी वहुलावनकी वेठकको चरित्र समाप्त ॥ ८ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

❀ (वेठक ९ मीं) ❀

❀ (अथ राधाकुंड कृष्णकुंडकी वेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अव राधाकुंडमें श्रीस्वामिर्नीजीके मेहेल हें ॥ सो तहाँ छोंकरके वृक्षके नींचें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी वेठक हे ॥ तहाँ एकमास पर्यंत आप विराजे ॥ ताके निकट श्यामतमालके नींचें आपकी वेठकके पास श्रीगुसाँइजीकीहू वेठक हे ॥ तहाँ छोंकरके नींचें प्रातःकालके समय श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप विराजे हते ॥ ता समय श्रीनाथजी ओर श्रीस्वामिर्नीजी वाँहजोटी कीयें श्रीगिरिराजकी शिखरपे पधारे ॥ सो श्रीआचार्यजी आप जानें ॥ तासों आपको नाँम श्रीगुसाँईजी आप श्रीसर्वोत्तमजीमें कहेंहें (श्रीकृष्णस्य हार्दवित्) सो आप श्रीजीको अभिप्राय जानेंहें ॥ तव श्रीकुंड होयकें आप श्रीनाथजीके पास पधारे ॥ तव अंतरंगसेवक श्रीनाथजीके संग हे ॥ तिनको वेष्णवनकों दर्शन भयो ॥ तव वे मूर्छित होयरहे ॥ पाछें उहाँतें श्रीआचार्यजी आप तीसरे दिन पधारे ॥ सो श्रीठाकुरजीकी तथा

श्रीस्वामिनींजीकी आज्ञा भई ॥ सो सवरो वृत्तांत दामोदरदासतें कह्यो ॥ जो मोकों भगवद् आज्ञा ऐसी भई हे ॥ तापाछें कमंडलको जल लेकें सब वैष्णवनके उपर छिरके ॥ तब सबनकी मूर्छा मिटी ॥ पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप राधाकुंड कृष्णकुंड ओर आठदिशानमें जो आठो सखीनके आठ कुंड हें ॥ सो तिनमें एक कुंड श्रीस्वामिनींजीनें तथा एक कुंड श्रीठाकुरजीनें खोदे हे ॥ जो कृष्णकुंड हे सो तो श्रीठाकुरजीनें वेणुसों खोयो हे ॥ ओर राधाकुंड हे सो श्रीस्वामिनींजीनें नखनसों खोद्यो हे ॥ तामें असाधारण जल भयो ॥ ताके भीतर श्रीस्वामिनींजीको निकुंजद्वार रत्नजडित मेहेल हे ॥ तहाँ सदैव आप श्रीस्वामिनींजी रमण करत हें ॥ सो श्रीगुसाँईजीकी वेठकके चरित्रमें विस्तारसों लिखेहें ॥ ओर आठदिशानमें जो आठ सखीनके कुंड कहे ताके नाँमकहेहें ॥ १ चंद्रभागाकुंड ॥ २ चंपकलताकुंड ॥ ३ चंद्रावलीकुंड ॥ ४ ललिताकुंड ॥ ५ विशाखाकुंड ॥ ६ बहुलाकुंड ॥ ७ सँध्यावलीकुंड ॥ ८ चित्राकुंड ॥ सो इन सबनमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप स्नान करिकें आगें कुसमोखरिकूँ पधारे ॥ सो तहाँ कुसमोखरिमें स्नान कीए ॥ जहाँ उद्धवजी गुल्मलता होयकें रहे हें ॥ तहाँ उद्धवजीसों आपको समागम भयो हो ॥ तब उद्धवजीनें वीनती करी ॥ जो महाराज भ्रमरगीतकी श्रीसुबोधनीजी मोकों सुनावो ॥ तब आप आज्ञा कीए ॥ जो एक श्लोकमात्र कहूँगो ॥ तब आप एकही श्लोक कहें ॥ ता श्लोककों पाद ॥ (भुजंगरूपेसुगंधमुद्राधास्यत्कदान्) सो चतुर्थपादको अर्थ करत करत तीन प्रहर भए ॥ सो तीनप्रहर ताँई आपु ठाढेही रहे ॥ शरीरको अनुसंधान कछू रह्यो नाँही ॥ तब उद्धवजीनें विनती करी ॥ जो महाराज चतुर्थपादको अर्थ मोको अव-

तव वे मनुष्य पाछे फिरि गए ॥ सो तव पादशाहनें पूछी ॥ जो यह यंत्र ईहां कोंने धन्यो हे ॥ तव हलकाराननें कही ॥ जो मथुराके दोय फकीर आए हें ॥ सो यह यंत्र उननें धन्यो हे ॥ तव इतनेमें वासुदेवदासछकडा तथा केशवभट्ट दोउ जनें तहाँ आईकें ठाढे भए ॥ तव पादशाहनें कही ॥ जो यह यंत्र ईहाँसों उठाय डारो ॥ तव केशवभट्टनें कही ॥ जो साहिव यह यंत्र ईहाँसों तव उठेगो जव मथुरातें वा यंत्रकों उठाय मँगावोगे ॥ एसी हमकों श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी आज्ञा हे ॥ तव पादशाह अपने मनमें डरप्यो ॥ सो तव पादशाहनें कही ॥ जो हम वा यंत्रकों उठाय मँगावतहें ॥ तापाछें पादशाहनें अपने हलकारा मथुराकों भेजे ॥ सो वे हलकारा मथुरासों पत्र लाए ॥ तव वासुदेवदासछकडा ओर केशवभट्ट दिल्लीके दरवाजेनसों वे यंत्र उठायकें मथुराकों गए ॥ सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके पास आईकें दंडोत करिकें सर्व समाचार कहे ॥ सो सुनिकें श्रीआचार्यजी आप चूपकरि रहे ॥ सो जव दिल्लीके दरवाजेनसें यंत्र उठे ॥ तव सव म्लेछननें चुटिया मुंडवायडारी ॥ तव पादशाह वाहिर वागकी सेलकों निकस्यो ॥ जव विश्रांतघाटकेऊपरसों यंत्रउठ्यो तापाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप संध्यावंदनको जल लेकें विश्रांतिघाटके ऊपर छिरके ॥ ता समय श्रीमुखसों आप कहें ॥ जो आजपाछें कोई म्लेच्छ इहाँ यंत्र धरेगो सो झूंठो परेगो ॥ तापाछें उजागरचोवेकों प्रोहिताही लिखि दई ॥ सो तव वाकी आज्ञा लेकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप व्रजयात्रा करिवे पधारे ॥ सो संवत् १५४९ भाद्रपद वदी १२ शरद ऋतुमें विश्रांतिघाटपे स्नान करि नेम लेके आप विश्रांतिघाटतें पधारे ॥ सो मधुवन पधारे ॥ यह चरित्र श्रीआचार्यजी आप विश्रांतिघाटकी वेठकमें प्रगट कीए ॥ ओरहू अनेक चरित्र कीए हे ॥ परंतु मुख्य हें सोई लिखेहें ॥ इति श्रीमथुरांजीमेंविश्रांतघाटकी वेठकको चरित्र समाप्त ॥

❀ (बेठक ६ ट्ठी) ❀

❀ (अथ श्रीमधुवनकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

मधुवनमें मधुवनियाँठाकुर व्रजनाभके स्थापित हें ॥ सो तिनके दर्शन करिकें माधवकुंडके ऊपर एक कदंबकें नीचें आयकें श्रीआचार्यजी आप विराजे ॥ तहाँ सातदिनलों श्रीभागवतकी पारायण कीए ॥ तब मधुवनियांठाकुर नित्य कथा सुनिवेकों पधारते ॥ सो एकदिन एक पंडा स्नान करिकें सेवा करिवेकेलीयें मंदिरमें गयो ॥ तब तहाँ मंदिरमें देखे तो श्रीठाकुरजी नही हें ॥ तब वह पंडा अपनें मनमें क्लेश करन लाग्यो ॥ तब दोयप्रहर पीछें मंदिरमें वा पंडाकों श्रीठाकुरजीको दर्शन भयो ॥ तब पंडानें पूछी ॥ जो महाराज तुम कहाँ पधारे हते ॥ तब श्रीठाकुरजी कहें ॥ जो यहाँ श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप पधारे हें ॥ सो श्रीभागवतकी पारायण करत हें ॥ तहाँ सुनिवेकोंगयो हतो ॥ सो तातें तुम बडे सवारें पूजा करीवो करो ॥ तब वादिनसों वे पंडा बडे सवारें ऊठिकें पूजा करिलेते ॥ सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप सातदिनलों श्रीभागवतको पारायण किये ॥ तहाँताँई मधुवनियाँठाकुर नित्य पधारें ॥ जा समय श्रीआचार्यजी आप व्रजयात्रा करिवे पधारे ॥ ता समय ईतनें वैष्णव आपके सँग हते तिनकेनॉम ॥ १ वासुदेवदास छकडा ॥ २ यादवेंद्रदास कुँभार ॥ ३ गोविंददुवे सॉचोराब्राह्मण ॥ ४ माधवभट्ट काश्मीरी ॥ ५ सुरदासजी ॥ ६ परमानंददासजी ॥ सो इतनें वैष्णव श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके संग व्रजयात्रा करिवे गये हते॥ इति श्रीआचार्यजीकी मधुवनकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥

❀ (बेठक ७ मी) ❀

❀ (अथ श्रीकमोदवनकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब श्रीआचार्यजी मधुवनसों तालवन पधारे ॥ तहाँ ताल-

वनके कुंडमें स्नान करिकें तालवनकी परिक्रमाँ किये ॥ तहाँ कोई भगवत्स्वरूप न हतो ॥ तातें तहाँ श्रीभागवतको पारायण किये नाँहीं ॥ तहाँ आपने कारिकाही किये तामेको श्लोक (वलभद्रस्य बोधाय भगवद्वचनेन हि ॥ स्वधर्माः सकला एव बलभद्रेनिरूपिताः ॥ १ ॥ लोकानां च प्रतीत्यर्थं तेन बोधेन कारणं) तहाँतें आगें कमोदवनमें बेठक हे ॥ सो तहाँ कुंडके उपर श्यामतमालके नीचें दिन तिनलों आप श्रीआचार्यजी विराजे ॥ ओर पारायण करी ॥ तहाँ कृष्णदासमेघननें पूछी ॥ जो महाराज या वनको नाँम कमोदवन क्यों हे ॥ तब आपु आज्ञा किये ॥ जो सामवेदमें कथा हे ॥ जहाँ व्रजको माहात्म्य कह्यो हे ॥ तामें एकसमय श्रीठाकुरजी ओर श्रीस्वामिनींजी या वनकों पधारे हते ॥ ता समय शरदचाँदनींको प्रकाश बहुत हतो ॥ तब श्रीस्वामिनींजीनें कही जो ॥ यहाँ कमोद ओर कमोदिनींको वन सिद्ध होय तो आछो ॥ तब कुमुदा ओर कमोदिनी दोय सहचरी हीं ॥ तिनकों आप श्रीठाकुरजी आज्ञा कीए ॥ जो यहाँ दोय कुंड सिद्धि करो ॥ तब कुमुदाकमोदिनींनें कमोदकुंड सिद्ध कीये ॥ ताकी रक्षाकों विन सहचरीनकों आज्ञा कीए ॥ सो तातें ॥ या वनको नाँम कमोदवन हे ॥ तब ओर वैष्णवनें मिलिकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों विनती करी ॥ जो महाराज कमोद ओर कमोदिनीको दर्शन आपके संग न होयगो तो कब होयगो ॥ तब आप एक श्रीगीताजीको वाक्य कहें ॥ सो वाक्य (दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्य मे योगमैश्वरम्) यह आज्ञा करिकें दोयघडी ताँई सब वेष्णवनकों दिव्यचक्षु दिये ॥ तब कमोद ओर कमोदिनीं सहित जलस्नानकी लीलाको मेहेलनको दर्शन कराए ॥ तब बहुत भाव करिकें वैष्णव विवस होयरहे ॥ शरीरको अनुसंधान रह्यो नाँही ॥ तब आपनें मनमें विचारी ॥

जो ये लीलामें प्रवेश होइ जाँयगे ॥ तातें लीलाको तिरोधान करि तहाँतें आप आगें पधारे ॥ सो शांतकुंड तथा गंधर्वकुंडमें स्नान करि वहुलावन पधारे ॥ सो यह चरित्र आप कमोदवनकी वेठकमें दिखाए ॥ ओरहू अनेक चरित्र दिखाए हें ॥ इति श्री-आचार्यजीमहाप्रभुनकी कमोदवनकी वेठकको चरित्र समाप्त ॥ ७ ॥

❀ (वेठक ८ मीं) ❀

❀ (अथ श्रीवहुलावनकी वेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

सो ताहाँ बहुलावनमें कृष्णकुंडके उपर उत्तरदिशा वडके नींचें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु विराजे ॥ सो तहाँ वेठक हे ॥ तहाँ तीनदिनलों विराजे ॥ श्रीभागवतको पारायण कीए ॥ तव ऊहाँके ब्राह्मणनें विनती करी ॥ जो महाराज इहाँको हाकिम यवन हे ॥ सो वहुलागायकी पूजा करिवे देत नाहीं ॥ वो तो कहत हे ॥ जो यह गाय होय तो हमारे आगें दाँनाँ घास खाय तो सुखेन तुम पूजा करो ॥ तव श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप कहें ॥ जो हाँ हाँ घास दानाँ खायगी ॥ तव श्रीआचार्यजीनें हाकिमकों बुलवाया ॥ आप घास दानाँ मंगवायकें वा वहुला-गायके आगें धरे ॥ तव वय गाय घास दानाँ खायवे लगी ॥ सो वह हाकिम देखिकें आश्चर्यवँत् होय रह्यो ॥ तव दंडवत् करिकें कही जो महाराज कृपा करिकें मोकों अपनों सेवक करो ॥ तव आप आज्ञा कीए ॥ जो तुमनें गायकी सेवा पूजा वंद करी हे सो छोडिदेऊ तव तुमारो अंगिकार आगिले जन्ममें होयगो ॥ तव हाकिमनें गायकी पूजाकी छुट्टी करीदई ॥ सो तव सवकोई गायकी पूजा करिवे लगे ॥ ता पाछें वह यवन वहुत वर्षताँई जीयो ॥ तापाछें मऱ्यो ॥ सो रावलिके पास गोपालपुर गाँमहे ॥ तामें याको जन्म मल्हाके घरमें भयो ॥ तव याको अंगिकार श्रीगुसाँईजी द्वारा भयो ॥ सो तव मेहा-

श्रीस्वामिनींजीकी आज्ञा भई ॥ सो सबरो वृत्तांत दामोदरदासतें कह्यो ॥ जो मोकों भगवद् आज्ञा ऐसी भई हे ॥ तापाछें कमंडलको जल लेकें सब वैष्णवनके उपर छिरके ॥ तब सबनकी मूर्छा मिटी ॥ पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप राधाकुंड कृष्णकुंड ओर आठदिशानमें जो आठो सखीनके आठ कुंड हें ॥ सो तिनमें एक कुंड श्रीस्वामिनींजीनें तथा एक कुंड श्रीठाकुरजीनें खोदे हे ॥ जो कृष्णकुंड हे सो तो श्रीठाकुरजीनें वेणुसों खोद्यो हे ॥ ओर राधाकुंड हे सो श्रीस्वामिनींजीनें नखनसों खोद्यो हे ॥ तामें असाधारण जल भयो ॥ ताके भीतर श्रीस्वामिनींजीको निकुंजद्वार रत्नजडित मेहेल हे ॥ तहाँ सदेव आप श्रीस्वामिनींजी रमण करत हें ॥ सो श्रीगुसाँईजीकी बेठकके चरित्रमें विस्तारसों लिखेहें ॥ ओर आठदिशानमें जो आठ सखीनके कुंड कहे ताके नॉमकहेहें ॥ १ चंद्रभागाकुंड ॥ २ चंपकलताकुंड ॥ ३ चंद्रावलीकुंड ॥ ४ ललिताकुंड ॥ ५ विशाखाकुंड ॥ ६ बहुलाकुंड ॥ ७ सँध्यावलीकुंड ॥ ८ चित्राकुंड ॥ सो इन सबनमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप स्नान करिकें आगें कुसमोखरिकूँ पधारे ॥ सो तहाँ कुसमोखरिमें स्नान कीए ॥ जहाँ उद्धवजी गुल्मलता होयकें रहे हें ॥ तहाँ उद्धवजीसों आपको समागम भयो हो ॥ तब उद्धवजीनें वीनती करी ॥ जो महाराज भ्रमरगीतकी श्रीसुबोधनीजी मोकों सुनावो ॥ तब आप आज्ञा कीए ॥ जो एक श्लोकमात्र कहूँगो ॥ तब आप एकही श्लोक कहें ॥ ता श्लोकको पाद ॥ (भुजंगरूपेसुगंधसुद्राधास्यत्कदान्) सो चतुर्थपादको अर्थ करत करत तीन प्रहर भए ॥ सो तीनप्रहर ताँई आपु ठाढेही रहे ॥ शरीरको अनुसंधान कछू रह्यो नाँही ॥ तब उद्धवजीनें विनती करी ॥ जो महाराज चतुर्थपादको अर्थ मोको अव-

धारण होयगयो ॥ तब आप आज्ञा कीए ॥ जो हमनें तो एक श्लोकको संकल्प कीयो हे ॥ सो तितनों कहेंगे ॥ तुमसों जितनों धारण होय तितनों करो ॥ तब आपनें बारह प्रहरमें एक श्लोकको अर्थ कह्यो ॥ तब ताँई सब भगवदीयनकों महा आनंद भयो ॥ क्षुधा प्यास कछू बाधा करी नाँही ॥ तापाछें आप नारदकुंडमें स्नान करि ग्वालपोखरामें स्नान करिके मानसीगंगा चक्रतीर्थके नीचें आयकें बिराजे ॥ सो यह चरित्र श्रीकुंडकी बेठकमें प्रगट कीए हें ॥ ओर तो अनेक चरित्र कीए ॥ परंतु यामें मुख्य हें सोई लिखेहें ॥ इति श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी श्रीकुंडकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ ९ ॥ ७ ॥

❀ (बेठक १० मीं) ❀

❀ (अथ श्रीमाँनसीगंगाकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब मानसीगंगाके उपर आपकी बेठक हे ॥ तहाँ सातदिन ताँई आप बिराजे ॥ सो तहाँ श्रीभागवतको पारायण कीए ॥ तहाँ कृष्णचैतन्यकी भजन करिबेकी बेठक हे ॥ सो तहाँ कृष्णचैतन्य छेमहिनांसों बेठेहते ॥ ओर यह संकल्प कियो हतो ॥ जो सवालक्ष भगवन्नाम लेनों ॥ तापाछें काहूसों संभाषण करनों ॥ सो भगवन्नाम सवालक्ष पूरे नाँहि भये हते ॥ ता समय काहूनें कही ॥ जो यहाँ श्रीआचार्यजीमहाप्रभु पधारे हें ॥ तब यह सुनिकें कृष्णचैतन्यनें ऊठिकें श्रीआचार्यजीकों साष्टांग दंडवत् करी ॥ तब आप आज्ञा कीए ॥ जो तुमकों इहां कितने दिन भए हें ॥ तब कृष्णचैतन्यनें कह्यो ॥ जो हमकों इहाँ छे महींनाँ भएं हें ॥ मानसीगंगामें स्नानकरतें ॥ सो यह काछा हे ॥ पुराणमें कह्यो हे जो मानसीगंगा दूधमय हे ॥ सो ताको दर्शन होईगो तब स्नान करिकें श्रीजगन्नाथराय देवकों जाऊँगो ॥ आंज रात्रमें मोसों माँनसी-

गंगानें कह्यो हे ॥ जो आज रात्रमें श्रीआचार्यजी आप पधारेंगे ॥ तब तेरो सर्व मनोरथ सिद्धि करेंगे ॥ तब आप कहें ॥ जो आज तुमारो सर्व मनोरथ पूर्ण होयगो ॥ एसें कहिकें कमंडलुको जल लेकें आपनें सब वैष्णवनके नेत्रनपे छिरके ॥ तब दिव्यचक्षु भए ॥ तब सबनकों माँनसीगंगाको स्वरूप आधिदैविक दुग्धमय दर्शन भयो ॥ तब सब वैष्णव दर्शन करिकें स्नान कीए ॥ तब सबनके मनमें आविर्भाव भयो ॥ सो दोयघडी रात्रसों लगायके आठघडी दिन चढ्यो तबलों सबनकों एसो दर्शन भयो ॥ तापाछें ऊनके नेत्रनमेंतें लीलाकों तिरोधाँन कीए ॥ ओर जब ताँई आप श्रीभागवतको पारायण कीए ॥ तबताँई चलेश्वर महादेवजी नित्य कथा सुनिवेकों आवते ॥ सो तहाँ महादेवजीको मुखिया हतो ॥ सो वह नित्य पूजा करतो ॥ वाकों नित्य साक्षात् दर्शन होतो ॥ सो एकदिन वाकों मध्यान पर्यंत दर्शन नाँही भयो ॥ पाछें मध्यान ऊपराँत जब श्रीभागवतकी पारायण पूर्ण भई ॥ तब श्रीमहादेवजी अपनें देवालयमें आए ॥ तब वाकूँ दर्शन भयो ॥ सो तब वा ब्राह्मणनें पूजा करी ॥ ओर पूछी ॥ जो महाराज अबताँई आप कहाँ गये हते ॥ तब श्रीमहादेवजी कहें जो हम नित्य श्रीमहाप्रभुजीके पास कथा सुनिवेकों जात हें ॥ सो जब हम आवें ॥ तब तुम पूजा कियोकरो ॥ सो एकमास ताँई आप श्रीमहाप्रभुजी वहां विराजे ॥ तहाँताँई यमुनाँवतो तथा किलोलकुंड अडींगमें स्नान करि आए ॥ अब श्रीगोवर्धनमें ब्रह्मकुंड, रिणमोचन, पापमोचन, धर्मरोचन, गोरोचन, निवर्तकुंड, ईतनें कुंडनमें स्नान करिकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप परासोली पधारे ॥ सो यह चरित्र श्रीआचार्यजीनें माँनसीगंगाकी बेठकमें प्रगट कीए ॥ ओरहू अनेक चरित्र कीए ॥ इति श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी मानसीगंगाकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ १० ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

❀ (बेठक ११ मीं) ❀

❀ (अथ श्रीपरासोलीकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब परासोलीमें रासबंसीवटके दर्शन कीए ॥ तहाँ चंद्रसरोवरमें चंद्रकूपमें स्नान कीए॥ सो चंद्रसरोवरसों नेंक दूरि छोंकरके नीचें आपकी बेठक हे ॥ तहाँ आप श्रीआचार्यजीमहाप्रभु भागवतको पारायण किये ॥ तहाँ सातदिन विराजे ॥ ओर भगवदीयनकों रासलीलाके दर्शन करवाए ॥ तहाँ एक वैष्णवनें आपसों विनती करी ॥ जो महाराज श्रीगिरिराजके दर्शन साक्षात् केसें होंय ॥ तब आप आज्ञा कीए ॥ जो श्रीगिरिराजकी एकदिनमें तीन परिक्रमाँ करे ॥ जो बिचमें कहूँ बेठे नाँहिं ॥ तब श्रीगिरिराज निजस्वरूपको साक्षात् दर्शन देइँ ॥ तब वह वैष्णव श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों साष्टांग दंडवत् करिकें गयो ॥ सो वानें श्रीगिरिराजकी तीन परिक्रमाँ करी ॥ तब वानें प्रथमतो एक श्वेत भुजंग देख्यो ॥ तब असगुन जाँनिकें एक घडीताँई ठाढो रह्यो ॥ तापाछें आगें चल्यो ॥ सो पूँछरीकी ओर एक ग्वालिया मिल्यो ॥ वानें कही जो अरे वेरागी तूँ आगें मति जाय ॥ आगें तो सिंघ ठाढो हे ॥ तब वाके चित्तकों भय भयो ॥ तब वानें श्रीआचार्यजीके स्वरूपको चिंतन मनमें कियो ॥ तब वह सिंघ अंतर्धान होय गयो ॥ तापाछें सुंदरशिलाके पास एक गाय ठाढी देखी ॥ ताकी परिक्रमाँ करिकें तत्काल वो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके आगें आय ठाढो भयो ॥ ओर श्रीआचार्यजीकों दंडवत् करिकें विनती करी ॥ जो महाराज आपकी आज्ञातें श्रीगिरिराजकी तीन परिक्रमाँ करि आयो ॥ ओर मोकों श्रीगिरिराजको साक्षात् दर्शन भयो ॥ तब आप आज्ञा कीए ॥ जो वेदमें श्रीगिरिराजके पांचप्रकारके स्वरूपको वर्णन कियो हे ॥ तामें एकतो गौरभुजंगस्वरूप हे ॥ एक

ग्वालस्वरूप हे ॥ एक सिंघस्वरूप हे ॥ एक गौस्वरूप हे ॥ ओर एक स्थूळ भएहें ॥ एसे पाँच स्वरूपहें ॥ सो जब तूँ यहाँतें चल्यो ॥ तब प्रथम तो तेंने एक भुजंग देख्यो ॥ तब असगुन जाँनिकें ठाढो भयो ॥ पाछें तेंनें ग्वाल देख्यो ॥ तापाछें एक सिंघ देख्यो ॥ तापाछें एक गायको दर्शन भयो ॥ सो तेंनें मेरी आज्ञासों जो श्रीगिरिराजकी तीनि परिक्रमाँ करी तासों तोकों श्रीगिरिराजके चार्यो स्वरूपनको दर्शन भयो ॥ ओर यह स्थूल-स्वरूपनको दर्शन तो सब कोई करेहें ॥ एसें कहिकें मुसिकायकें आप चूप करिरहे ॥ पाछें आप दामोदरदासतें आज्ञा कीए ॥ जो दमला श्रीभगवान् साक्षात् दर्शन देंय ओर ज्ञान होय ॥ सो यह भगवदिच्छा जाँनिये ॥ तापाछें दिवारीकों उत्सव जाँनिकें सुंदर शिलासों विजयकीए सो आप पेंठे पधारे ॥ तहाँ श्रीनारायणनें तपस्या करी हे ॥ तब ब्रजलीलामें प्रवेश भयो हे ॥ तहाँ लक्ष्मीकूप हे ॥ तहाँ श्रीलक्ष्मीजीनें तपस्या करीहे तामें आप स्नान किये सो यह कथा सामवेदमें हे ॥ तापाछें तहाँतें आँन्योरमें पधारे ॥ सो यह चरित्र श्रीआचार्यजी परासोलीकी बेठकमें प्रगट कीए ॥ ओरहू अनेक चरित्र कीए हे ॥ परंतु मुख्य हें सोई लिखें हें ॥ इति श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी परासोलीकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ ११ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (बेठक १२ मीं) ❀

❀ (अथ श्रीआन्योरकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

आन्योरमें सद्दूपाँडेके घरमें आप श्रीआचार्यजीकी बेठक हे ॥ सो तहाँ श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनंको तथा श्रीनाथजीको मिलाप भयो हे ॥ सो तब श्रीआचार्यजीनें एक छोटोसो मंदिर बनवाईकें तामें श्रीनाथजीकों पाट बेठाये हे ॥ सो या बेठकको चरित्र बहुत हे ॥ जो श्रीनाथजीकों आपनें प्रगट कीए हें ॥ सो

सब निजवार्तामें प्रसिद्ध हे तातें यहाँ नाँहिं कहे ॥ पाछें तीनदिन ताँई श्रीआचार्यजीमहाप्रभु तहाँ विराजे ओर श्रीभागवतको पारायण कीए ॥ सो यह चरित्र आपनें सदूपाँडेके घरमें प्रगट कियो ॥ ओरहू अनेक चरित्र कीए हें ॥ इतिश्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी आन्योरमेंकी वेठकको चरित्र समाप्त ॥ १२ ॥ ॥७॥ ॥ ७ ॥

❀ (वेठक १३ मीं) ❀

❀ (अथ श्रीगोविंदकुंडकी वेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब गोविंदकुंडपे वेठक हे ॥ तहाँ श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप तीनदिनलों विराजे ओर श्रीभागवतको पारायण करे ॥ तहाँ कृष्णदासमेघनने विनती करी ॥ जो महाराज श्रीगिरिराजमें व्यापिवेकुंठ सुनें हें ॥ ताको दर्शन हमकूँ करवाओ ॥ तब यह सुनिकें श्रीआचार्यजी आप चूप करिरहे ॥ तापाछें घडीदोय दिन वाकी रह्यो हतो ॥ ता समय गोविंदकुंडके समीप श्रीगिरिराजके उपर आप विराजे हते ॥ तब कृष्णदासमेघनकों अँगुरिया करिकें वताए ॥ जो ऊह शिला दीसे हे ॥ सो ताकों उठाय सो ताके भीतर कंदारा निकसेगी ॥ या कंदराके भीतर तूँ चल्यो जाइयो ॥ सो तहाँ तोकों व्यापिवेकुंठको दर्शन होयगो ॥ तब कृष्णदास तहाँ जायकें देखे तो एक कंदरा हें ॥ तब वा कंदरामें चल्यो गयो ॥ सो तीन दिनलों चल्यो तब तहाँ ईनकों व्यापिवेकुंठको तथा लीलासामुग्रीको दर्शन भयो ॥ तापाछें कुंडके ऊपर एक शुक देख्यो ॥ सो वह अष्टाक्षरमंत्रको उच्चार करे ॥ तब कृष्णदासमेघननें तीन वेर श्रीकृष्णस्मरण कियो ॥ तब वानें तीन वेर जलमें चोंच वोरिकें जल पियो ॥ फेरि भगवदनाँमको उच्चार करिवे लग्यो ॥ तब ईतनेमें कृष्णदासमेघनकों निद्रा आयगई ॥ तब गोविंदकुंड उपर कृष्णदा आय ठाढो भयो ॥ तब देखे तो घडीदोय दिन चढ्यो हे

तब कृष्णदासनें विनती करी ॥ जो महाराजाधिराज आपनें लीलासामुग्रीके दर्शन करवाए ॥ तब आप कहें ॥ जो तुमनें लीलासामुग्रीहीकी विनती करी हती ॥ सो एसें कहिकें आप चूपकरि रहे ॥ तब कृष्णदास फेरि कहें ॥ जो महाराज वह पक्षी कोंन हतो ॥ तब आप कहें जो वह पक्षी सारस्वतकल्पको सूआ हतो ॥ वाकों श्रीस्वामिनींजीनें श्रीकृष्णनाँम पढायो हतो ॥ सो ईतनें दिनसों वह माधुरीके वृक्ष ऊपर बेठिकें भगवन्नाम लेत हतो ॥ ओर वह माधुरीकुंड हे ॥ तामें जल पान नॉहीं करतो ॥ जो जल पाँन करूंगो तो भगवन्नाममें अंतराय परेगो ॥ सो तेनें तीन वेर भगवतस्मरण कियो तब वानें तीन वेर चित देकें जल पाँन कियो ॥ सो जीवकों भगवन्नाममें एसी आसक्ति चाहिये ॥ वाकों श्रीस्वामिनींजीको वरदान हतो ॥ जो जा दिन श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको सेवक आईकें श्रीकृष्णस्मरण करेगो ॥ तब तेरो शुक शरीर छूटिकें निज लीलामें सहचरी होयगो ॥ तातें तोकों वाके लीयें उहाँ पठायो हतो ॥ जब एकसमय श्रीस्वामिनींजीकों प्रभुनके लियें विरह भयो हतो ॥ तब क्षण एक जुगके समाँन भयो (क्षणयुगसतविप्रमया सो येन विरहा भवेत्) सो या श्लोकार्ध मेतें कृष्णप्रेमाँमृत ग्रंथ आप श्रीआचार्यजीनें कीयो तामेंको एक श्लोक (एकदा कृष्णविरहात् ध्यायंती प्रियसंगमे ॥ मनोवाच निरासाय जल्पती च मुहुर्मुहुः ॥ १ ॥) या ग्रंथमें श्रीकृष्णके एकसो अठारे नॉम कहे हें ताको आप श्रीस्वामिनींजी जप करत भये ॥ तबही प्रभुनको समागम भयो ॥ सो संयोगरस प्राप्ति भयो ॥ तब प्रभुनकों पूछी ॥ जो या ग्रंथको दॉन कोनकों करूं ॥ तब श्रीठाकुरजी कहें ॥ जो तुमारी बराबर होय ताकों दीजियो ॥ जो मेरेसमॉन होयगो सोई वॉचेगो ॥ सो तब वह ग्रंथ श्रीस्वामिनींजीनें अपनें हस्ताक्षरसों श्रीगिरिराजपे

लिख्यो हतो ॥ सो तहाँ सों यह ग्रंथ श्रीआचार्यजी आपके हाथ लाग्यो ॥ सो जा समय तहाँ श्रीस्वामिनीजीके हस्ताक्षर आपनें मनमें बाँचकें पाठ किये ॥ ता समय कृष्णचैतन्यगोडिया तथा केशवभट्टकाश्मीरी श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके पास ठाढे हते ॥ विनसों ये श्रीस्वामिनीजीके हस्ताक्षर बाँचे न गये ॥ तब विनकों श्रीआचार्यजीनें श्रीस्वामिनीजीके हस्ताक्षर बाँचि सुनाये ॥ तब कृष्णचैतन्यने आपसों विनती करी जो महाराज कृपा करिकें या ग्रंथको दाँन हमकों करो ॥ सो उननें वा ग्रंथकी प्रार्थना करी ॥ तब वह ग्रंथ आपनें कृष्णचैतन्यकूं दियो ॥ ओर काश्मीरीकों न दीयो ॥ सो यातें ॥ जो एकवेर श्रीजगन्नाथजी आज्ञा किये हते ॥ जो अब तुँम अपनें मारगीनकोंही ग्रंथ दीजो ॥ सो वह वात सुधि करिकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु वह ग्रंथ कृष्णचैतन्यकोंही दीयो ॥ ओर अब गोविंदकुंड उपरसों आप विजे कीये ॥ सो संकर्षणकुंड तथा गंधर्वकुंडमें स्नान करि सघनकंदरा तथा अप्सराकुंड होय श्रीबलदेवजीके दर्शन करिकें एरापतिकुंडपे श्रीबलदेवजीके दर्शन करिकें कदमखेडी होयकें डंडोतीशिलापे एक छोटेसे मंदिरके पास छोंकरको वृक्ष हे तहाँ आप पधारे ॥ सो तहाँ आप विराजे ॥ सो यह चरित्र श्रीआचार्यजीमहाप्रभु गोविंदकुंडकी बेठकमें प्रगट कीए ॥ ओरतो अनेक कीए ॥ इति श्रीगोविंदकुंडकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ १२ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (बेठक १४ मीं) ❀

❀ (अथ श्रीसुंदरशिलाकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

तहाँ सुंदरशिलाके सामनें छोंकरके नींचें आप श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आय विराजे ॥ तहाँ प्रथम गोवर्धनकी पूजा करि दीपमालिका करे ॥ ओर अन्नकूटको उत्सव कीए ॥ सो या बेठकमें श्रीआचार्यजी आप सवासेर भातको अन्नकूट कीएहते ॥

सो ताको दर्शन श्रीगुसाँईजीनें श्रीगोकुलनाथजीकों तथा श्रीशोभाबेटीजीकों अद्भुत अलौकिक करवाए ॥ सो वार्ता वचनाँमृतमें प्रसिद्धि हे ॥ बहुरि एकसमय तहां श्रीआचार्यजीमहाप्रभु भोजनकरिकें छोंकरके नीचें विराजे हते ॥ सो दामोदरदासकी गोदमें श्रीमस्तक धरिकें पोढे हते ॥ तासमय श्रीनाथजी पधारे तब दामोदरदासजीनें बरजे ॥ जो आप मति पधारो ॥ तब आपके नूपुर सुनिकें श्रीआचार्यजी आप जागिपरे ॥ ओर आप श्रीनाथजी तो ऊहाँई ठढ़ेरहे ॥ तब आप श्रीआचार्यजीनें श्रीनाथजीकों अपनी गोदमें बेठारिकें श्रीकपोल परसिकें मुख चुंबन किए ॥ सो यह चरित्र श्रीआचार्यजी आप सुंदरशिलाकी बेठकमें प्रगट किए ॥ ओरहु अनेक किए इति सुंदरशिलाकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ १४ ॥

❀ (बेठक १५ मीं) ❀

❀ (अथ श्रीगिरिराजकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब श्रीगिरिराजकी उपर श्रीनाथजीके मंदिरमें दक्षिणभाग एक चोंतरी हती ॥ तापे श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बेठक हे ॥ सो तहाँ सेवाके अवकाशमें आप विराजते ॥ सो एकसमय श्रीनाथजीको सिंगार करिकें वा चोंतरीपे विराजे हते ॥ कारण जो सामुग्री सिद्धि भई न हती ॥ तातें गोपीवल्लभमें ढील भई ॥ तब ईतनेमें श्रीस्वामिनीजी थार लेकें पधारीं ॥ तब नूपुरको शब्द सुनिकें श्रीआचार्यजी दामोदरदासतें कहें ॥ जो दमला हमनें तो ढील करी ॥ परंतु श्रीस्वामिनीजी गोपीवल्लभको थार लेकें पधारे हें ॥ क्यो जो वे ढील केसें सहें ॥ तातें सिंगार भए पीछें गोपीवल्लभमें ढील न करनीं ॥ पाछें देव प्रबोधिनी पर्यंत श्रीगिरिराजमें आप श्रीआचार्यजी विराजे ॥ तहाँ दोय पारायण श्रीभागवतकी कीए ॥ एक प्रदक्षणाँ श्री-

लिख्यो हतो ॥ सो तहाँ सों यह ग्रंथ श्रीआचार्यजी आपके हाथ लाग्यो ॥ सो जा समय तहाँ श्रीस्वामिनींजीके हस्ताक्षर आपनें मनमें वाँचकें पाठ किये ॥ ता समय कृष्णचेतन्यगोडिया तथा केशवभट्टकाश्मीरी श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके पास ठाढे हते ॥ विनसों ये श्रीस्वामिनींजीके हस्ताक्षर वाँचे न गये ॥ तब विनकों श्रीआचार्यजीनें श्रीस्वामिनीजीके हस्ताक्षर वाँचि सुनाये ॥ तब कृष्णचेतन्यने आपसों विनती करी जो महाराज कृपा करिकें या ग्रंथको दॉन हमकों करो ॥ सो ऊननें वा ग्रंथकी प्रार्थना करी ॥ तब वह ग्रंथ आपनें कृष्णचेतन्यकूं दियो ॥ ओर काश्मीरीकों न दीयो ॥ सो यातें ॥ जो एकवेर श्रीजगन्नाथजी आज्ञा किये हते ॥ जो अब तुँम अपनें मारगीनकोही ग्रंथ दीजो ॥ सो वह वात सुधि करिकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु वह ग्रंथ कृष्णचैतन्यकोंही दीयो ॥ ओर अब गोविंदकुंड उपरसों आप विजे कीये ॥ सो संकर्पणकुंड तथा गंधर्वकुंडमें स्नान करि सघनकंदरा तथा अप्सराकुंड होय श्रीवलदेवजीके दर्शन करिकें एरापतिकुंडपे श्रीवलदेवजीके दर्शन करिकें कदमखेडी होयकें डंडोतीशिलापे एक छोटेसे मंदिरके पास छोंकरको वृक्ष हे तहाँ आप पधारे ॥ सो तहाँ आप विराजे ॥ सो यह चरित्र श्रीआचार्यजीमहाप्रभु गोविंदकुंडकी वेठकमें प्रगट कीए ॥ ओरतो अनेक कीए ॥ इति श्रीगोविंदकुंडकी वेठकको चरित्र समाप्त ॥ १२ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (वेठक १४ मीं) ❀

❀ (अथ श्रीसुंदरशिलाकी वेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

तहाँ सुंदरशिलाके सामनें छोंकरके नीचें आप श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आय विराजे ॥ तहाँ प्रथम गोवर्धनकी पूजा करि दीपमालिका करे ॥ ओर अन्नकूटको उत्सव कीए ॥ सो या वेठकमें श्रीआचार्यजी आप सवासेर भातको अन्नकूट कीएहते ॥

सो ताको दर्शन श्रीगुसाँईजीनें श्रीगोकुलनाथजीकों तथा श्रीशोभावेटीजीकों अद्भुत अलौकिक करवाए ॥ सो वार्ता वचनाँमृतमें प्रसिद्धि हे ॥ वहुरि एकसमय तहां श्रीआचार्यजीमहाप्रभु भोजनकरिकें छोंकरके नीचें विराजे हते ॥ सो दामोदरदासकी गोदमें श्रीमस्तक धरिकें पोढे हते ॥ तासमय श्रीनाथजी पधारे तव दामोदरदासजीनें वरजे ॥ जो आप मति पधारो ॥ तव आपके नूपुर सुनिकें श्रीआचार्यजी आप जागिपरे ॥ ओर आप श्रीनाथजी तो ऊहांइ ठाढेरहे ॥ तव आप श्रीआचार्यजीनें श्रीनाथजीकों अपनी गोदमें वेठारिकें श्रीकपोल परसिकें मुख चुंवन किए ॥ सो यह चरित्र श्रीआचार्यजी आप सुंदरशिलाकी वेठकमें प्रगट किए ॥ ओरहु अनेक किए इति सुंदरशिलाकी वेठकको चरित्र समाप्त ॥ १४ ॥

❀ (वेठक १५ मीं) ❀

❀ (अथ श्रीगिरिराजकी वेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अव श्रीगिरिराजकी उपर श्रीनाथजीके मंदिरमें दक्षिणभाग एक चोंतरी हती ॥ तापे श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी वेठक हे ॥ सो तहाँ सेवाके अवकाशमें आप विराजते ॥ सो एकसमय श्रीनाथजीको सिंगार करिकें वा चोंतरीपे विराजे हते ॥ कारण जो सामुग्री सिद्धि भई न हती ॥ तातें गोपीवल्लभमें ढील भई ॥ तव ईतनेमें श्रीस्वामिनीजी थार लेकें पधारीं ॥ तव नूपुरको शब्द सुनिकें श्रीआचार्यजी दामोदरदासतें कहें ॥ जो दमला हमनें तो ढील करी ॥ परंतु श्रीस्वामिनीजी गोपीवल्लभको थार लेकें पधारे हें ॥ क्यो जो वे ढील केसें सहें ॥ तातें सिंगार भए पीछें गोपीवल्लभमें ढील न करनीं ॥ पाछें देव प्रवोधिनी पर्यंत श्रीगिरिराजमें आप श्रीआचार्यजी विराजे ॥ तहाँ दोय पारायण श्रीभागवतकी कीए ॥ एक प्रदक्षणाँ श्री-

गिरिराजकी कीए (कोइ सातभी लिखें हें) ॥ पीछें गुलालकुंड विलछू, परमदरो श्रीदामाँसखाको गाँम हे ॥ तहाँ आप एकरात्र रहे ॥ तहाँ सों दूसरेदिन विजय कीए ॥ सो जहाँ आदिब्रद्रिको स्वरूप धरिकें श्रीजीनें अपनें सखानकों दर्शन दीए हें ॥ तहाँ सघनवन हे ॥ तहाँ एक रात्र विराजे ॥ तापाछें तहाँतें दूसरेदिन इंद्रकूपमें आचमन करि आगें काँमवन पधारे ॥ सो यह चरित्र श्रीआचार्यजी श्रीगिरिराजकी बेठकमें प्रगट कीए ॥ तामेके मुख्य हे ॥ सोई लिखेंहें ॥ इति श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी श्रीगिरिराजके मंदिरकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥१५॥

❀ (बेठक १६ मी) ❀

❀ (अथ श्रीकाँमवनकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब काँमवनमें सुरभीकुंडके उपर छोंकरके नीचें आप श्रीआचार्यजीकी बेठक हे ॥ सो तहाँ सातदिन बिराजे ॥ ओर चोराशी कुंडमें स्नान करि श्रीभागवतको एक पारायण कीए ॥ सो एकदिन रात्रमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप बिराजे-हते ॥ तहाँ एक ब्रह्मपिशाच बहुत दिननसों सुरभीकुंडकी पारिके उपर रेहेत हतो ॥ वानें कोई एसो पाप कियो हतो ॥ जो वो ब्रजकी रजसो मुक्त न भयो ॥ सो जो कोऊ रात्रमें सुरभीकुंडके उपर रहतो ॥ ताकों वह भक्षण करिजातो ॥ सो तातें वहाँके तीर्थगुरूनें आपसों विनती करी ॥ जो महाराज दिनमें तो यहाँ आप सुखेन बिराजो ॥ परि रात्रमें आप गाँममें जाय बिराजियो ॥ क्यों जो यहाँ ब्रह्मपिशाच दुःख देत-हे ॥ तब यह सुनिके आप श्रीआचार्यजी चूप करि रहे ॥ कछू उत्तर न दीए ॥ ओर रात्रिकों आप उहाँई बिराजे ॥ सो जब अर्धरात्र भई ॥ तब वह ब्रह्मपिशाच निकस्यो ॥ ता समय एक वेष्णव धोवती धोयके अपरस सूकावत हतो ॥ सो तानें

देख्यो ॥ सो देखिकें वा वैष्णवनें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों विनती करी ॥ जो महाराज ब्रह्मपिशाच दूरि दूरि डोलत हे ॥ तब श्रीआचार्यजी आप कहें ॥ जो यह आगिले जन्मको तो ब्राह्मण हतो ॥ या कॉमवनको राज्यकरतो हतो ॥ सो यानें ब्राह्मणनकों वहुत भूमि दॉन करी हती ॥ तापाछें फेरि यानें लेलीनीं हती ॥ सो ता अपराध करिकें यह ब्राह्मण पिशाच भयो हे ॥ सो दोयसें वर्ष (कोई नोसो वर्षभी लिखें हें) याकों भए हें ॥ सो ब्रजरजसों हू याकी मुक्ति न भई ॥ तब वा वैष्णवनें विनती करी ॥ जो महाराज आपके दर्शनतें हूँ याकी मुक्ति न भई ॥ तब आप श्रीआचार्यजीनें वापे अपरसकी धोवतीको जल छिरकिवाए ॥ ता जल करिकें वह मुक्त होय गयो ॥ सो दिव्य शरीर धरिकें वैकुंठको गयो ॥ तब सुरभीकुंडपे निर्भयता भई ॥ पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु कदमखंडीपे होयकें तथा चित्र विचित्र होयकें ऊँचे गाँम होयकें भानोखरि प्रभृतिमें स्नान करिकें श्रीलाडिलीजीके दर्शन किये तथा अष्ट सखीनके दर्शन करिकें आधेपर्वतके उपर विराजे ॥ सो तहॉं आपकी वेठक हे ॥ सो यह चरित्र श्रीआचार्यजीमहाप्रभु कॉमवनकी वेठकमें प्रगट कीए ॥ ओरहू अनेक कीए परंतु मुख्य हें सोई लीखे हें ॥ इति कॉमवनकी वेठकको चरित्र समाप्त ॥ १६ ॥

❀ (वेठक १७ मी) ❀

❀ (अथ श्रीगहवरवनकी वेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनंकी वेठक गहवरवनमें कुंडके उपर हे ॥ सो तहॉं आप सातदिन विराजे ॥ ओर श्रीभागवतकी एक सप्ताह कीए ॥ फेरि एकदिन गहवरवनकों देखिवेकों आप पधारे ॥ सो तहॉं सिंह व्याघ्र बोहोत देखे ॥ ताके आगें

देखें तो तहाँ एक अजगर पन्यो हे ॥ ओर वाकों चेंठा वहूत काटत हें ॥ सो तब वाकों देखिकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों दया आई ॥ तब आप दामोदरदासतें कहें ॥ जो दमला यह अजगर आगिले जन्ममें श्रीवृंदावनको महंत हतो ॥ सो यानें उदर भरिवेकेलीयें सेवक बहुत कीए हते ॥ ओर यानें द्रव्यहू बहुत भेलो कियो हतो ॥ सो सब विषयहेतुमें लगायो ॥ भगवद्हेतुमें कछू न लगायो ॥ ओर भगवदभजनहू कछू नाँहीं कियो ॥ तातें यह मरिकें अजगर भयो हे ॥ ओर जितनें सेवक किये हते ॥ सो सब मरिकें चेंदा भए हें ॥ सो अब याकों काटत हें ॥ ओर यासों केहेत हें ॥ जो अरे अधर्मी! तेंनें हमारो जमारो वृथा खोयो ॥ जो तेंनें हमकों सेवक काहेकों कीये हते ॥ उद्धारतो दोय बातनसों होतहे ॥ एक भगवन्नामसों तथा भगवत्सेवासों या दोनोंनमेंतें कछू न भयो ॥ ओर यानें वृंदावन वास कीयो हतो ॥ तातें यह व्रजहीमें रह्यो ॥ सो व्रजको जीव अंत नहीं जात हे ॥ जातें दुःख सुख सब व्रजमेंही भोगवतहे ॥ सो अब हमारी दृष्टि पन्यो हे ॥ सो अब अपनें सब सेवकन सहित मुक्त होयगो ॥ एसें आज्ञा करिकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु अपने अंगुष्ठको चरणोदक करिकें अपनें सेवकनद्वारा वापे छिरकिवाये ॥ तब ताही समय वाको अजगर शरीर छूटिकें दिव्य शरीर भयो ॥ सो शिष्यन सहित विमाँनमें बेठिकें पार गयो ॥ सो सूधो वैकुंठकों चल्यो गयो ॥ सो सब वैष्णवनकों तथा सब बरसाँनेंके व्रजवासीनकों दिखायो ॥ सो देखिकें सब वैष्णव प्रसन्न भए ॥ तापाछें आप बरसानेंतें पधारे ॥ सो पीरीपोखर तथा प्रेमसरोवरमें स्नान करिकें तापाछें आप संकेतवट पधारे ॥ ओरहू अनेक चरित्र कीए हें ॥ परंतु मुख्य हें सोई लिखेहें ॥ इति श्रीगहवरबनकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ १७ ॥

❀ (बेठक १८ मी) ❀

❀ (अथ श्रीसंकेतवटकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बेठक संकेतवटके समीप कृष्णकुंडके उपर छोंकरके नीचें विराजे हें (कोई श्यामतमालके नीचें हूँ लिखेंहें) ॥ सो तहाँ सातदिनको श्रीभागवतको पारायण कीए ॥ सो तहॉ एक स्त्री बहुत सुंदर षोडप वर्षकी अनेक आभूषणन करिकें भूषित रत्नजटित डाँडीको चमर हाथमें लेकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों चमर करिवे लगी ॥ सो जहाँताँई श्रीभागवतको पारायण होय ॥ तहॉताँई ठाढी रहे ॥ सो वाकों वैष्णव बरजिवे लगे ॥ तब श्रीआजार्यजी आप नाँहीं कीए ॥ सो एसें सातदिनलों वानें चमर कीयो ॥ सो जब कथाको आरंभ होय तब वो आवे ॥ ओर जब कथा संपूर्ण होय ॥ तब अंतर्धान होय जाय ॥ पीछे वाकों कोई देखे नहीं ॥ तब एकदिन एक वैष्णवनें आप सों पूछी ॥ जो महाराज यह स्त्री कोंन हे ॥ ओर कहाँतें आवे हे ॥ तब आप मुसिकायकें चूप करि रहे ॥ फेर आप आज्ञा कीए ॥ जो संकेतदेवीकों हमारे दर्शनकी तथा सेवाकी बहुत आरति हती ॥ सो सेवा प्राप्त भई हे ॥ तापाछें तहाँतें आगें पधारे ॥ सो रीठोरामें श्रीचंद्रावलीजीके दर्शनकरि नंदगाँममें पॉनसरोवरते नेंक दूरि नंदछोंकर हे ॥ तहाँ श्रीनंदरायजी दसेराके दिन पूजन करते तहॉ आप पधारे ॥ सो ताके नीचें श्रीआचार्यजीकी बेठक हे ॥ सो चरित्र संकेतवटकी बेठकमें प्रगट कीए ॥ इति श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी संकेतवटकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ १८ ॥

❀ (बेठक १९ मीं) ❀

❀ (अथ श्रीनंदगॉमकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब नंदगॉममें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बेठक हे ॥ तहाँ खटमासलों आप बिराजे ॥ पाछें पारायण कीए ओर आज्ञा

कीए ॥ जो ईहाँ उद्धवजी खटमासलों विराजे हें ॥ तातें हम खटमास पर्यंत रहिकें श्रीनंदरायजीकों श्रीभागवत सुनावेंगे ॥ ओर यहाँके क्रीडास्थलनके दर्शन करेंगे ॥ सो तब एकदिन श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप पॉनसरोवर उपर बेठे हते ॥ तब तासमय एक मुगल घोडाकूं पॉनी प्यायवेकों लायो ॥ सो पॉनसरोवरमें पानी - प्यायकें ले चल्यो ॥ तब ता समय घोडाके पेटमें कुरकुरी दोरी ॥ तातें वह घोडा लोट पीटिकें मरिगयो ॥ सो वह घोडा चतुर्भुज स्वरूप धरि विमानमें बेठिकें वेकुंठकों गयो ॥ तब वाकों सात्त्वकीय आविर्भाव भयो ॥ सो श्रीआचार्यजीनें देख्यो तब मस्तक धुनायो ॥ तातें वेष्णवननें विनती करी ॥ जो महाराज घोडा मर्‍यो देखिकें आपनें मस्तक धुनायो ॥ ताको कारण कहा ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप सब वेष्णवनकों दिव्य दृष्टि दीए ॥ ओर सब वैष्णवनतें कहें ॥ जो तुम ऊंचो देखो ॥ सो तब सब ऊंचीद्रष्ट करिकें देखें तो वो घोडा विमॉन सहित वेकुंठकों चल्यो जात हे ॥ तापाछें दिव्यदृष्टि तो मिटिगई ॥ तापाछें वा घोडावारे मुगलनें सब वैष्णवनतें विनती करी ॥ जो तुम मोकों श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको सेवक करवावो ॥ तब सब वैष्णवननें आप श्रीआचार्यजीसों विनती करी ॥ तब आप वा मुगलसो कहें ॥ जो तेरो अंगीकार दूसरे जन्ममें होयगो ॥ सो सुनिकें वह मुगल फिरि गयो ॥ परंतु वाकों अष्टप्रहर श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको ध्यॉन रहे ॥ सो देह छूटे पीछें वानें नवानगरमें मोचीके घर जायकें जन्म लियो ॥ तब संगजीभाई वाको नॉम भयो ॥ सो मेले मंत्र वापे वहुत आवते ॥ तब वानें एक वैष्णवसों लडाई करी ॥ वापे वीरविद्या (जादु) हती ॥ सो वानें प्रयोग करिकें अर्द्धरात्रकों वा वैष्णवकों-मारिवेकों वीर भेजे ॥ सो वीर

वा वैष्णवके घर जाय सके नाहीं ॥ सो पाछे फिरिकें आयकें वासों कही ॥ जो वे तो श्रीगुसाँईजीके सेवक हें ॥ बडे महापुरुप हें ॥ सो विनसों हमारी नाँहीं चले ॥ जब सवारो भयो ॥ तब वह मोची वा वैष्णवके पायन आय पर्‍यो ॥ ओर विनती करिकें कही ॥ जो आप तो वडे महापुरुप हो ॥ सो आप हमकों सेवक करो ॥ तब वा वैष्णवनें कहीं ॥ जो तुम मेले यंत्र मंत्र छोडिदेऊ ॥ तब तुमकों सेवक करावें ॥ सो तब वा मोचीनें सब मेले यंत्र मंत्र छोडिदीए ॥ तब केतेक दिन पीछें श्रीगुसाँईजी श्रीविठ्ठलनाथजी आप श्रीद्वारिकाजी पधारे ॥ तब नवानगरके सब वैष्णवननें श्रीगुसाँईजीसों विनती करी ॥ जो महाराज कृपा करिकें याकों शरण लीजिये ॥ तब श्रीगुसाँईजी आज्ञा कीए ॥ जो याकों अंगिकार करवेकों तो हम इहाँ पधारेही हें ॥ सो तब श्रीगुसाँईजीने वा मोचीकों नाँम दे ब्रह्मसंबंध करवाए ॥ कुमकुम वस्त्रपे धरिकें अपनें चरणारविंदकी सेवा पधराय दीए ॥ तब वह धोती उपरनाँ पहरिवे लग्यो ॥ ओर वडी अपरसतें सेवा करतो ॥ सो तब तहाँके ब्राह्मण स्मार्त हते सो सब इर्षा करन लागे ॥ तब उहाँको राजा जामंतकमाची हतो ॥ सो तब वे ब्राह्मण वा राजापे जायकें पुकारे ॥ जो सुनो राजाजी ईहां एक अतिशूद्र रहत हे ॥ सो वह ब्राह्मणनकी चाल चलत हे ॥ सो सुनिकें वा राजानें वा मोचीकों बुलायकें पूछी ॥ जो तूं ब्राह्मणनकी चाल क्यों चलत हे ॥ तब वा मोचीने कही ॥ जो मोको श्रीगुसाँईजी अपनों सेवक करिकें ब्राह्मण कीये हे ॥ तब यह सुनिके राजा बहुत प्रसन्न भयो ॥ ओर केहेन लाग्यो ॥ जो ब्राह्मण भ्रष्ट होयजाय ॥ सो तो शूद्र होयजाय ॥ परंतु कहूँ शूद्र ब्राह्मण भयो हे ॥ जो दूधमेंतें छाछि तो होत हे ॥ परंतु कहूं छाछिमेंतें

दूध भयो हे ॥ तब संगजीभाईनें कही ॥ जो राजाजी छाछि-
मेंतें दूध होयजाय तो आप मांनों ॥ तब राजानें कही जो यह
बात तो आछी हे ॥ तापाछें राजानें छाछिकी चपटिया भर-
वाय मंगाई ॥ ता समय सब सभा भेली भई बेठी हती ॥ ओर
सब ब्राह्मण बेठे हते ॥ तब वे छाछिकी चपटिया सभाके बी-
चमें धरी ॥ तब संगजीभाईनें सब सभाके देखत कह्यो जो
मोकों श्रीगुसाईजीनें ब्रह्मसंबंध करायकें ब्राह्मण कियो होय तो
छाछिमेंतें दूध होयजेयो ॥ ओर जो में मोचीको मोची होऊं
तो छाछकी छाछ रहियो ॥ तापाछें मट्ठकी खोलें ॥
तब देखें तो छाछिमेंतें दूध न्यारो होयगयो हे ॥ तब जामंत-
कमाची तथा सब ब्राह्मण चक्रत होयरहे ॥ तब सबननें प्रमाँण
कियो ॥ जो श्रीगुसाँईजीके ब्रह्मसंबंधको बडो प्रभाव हे ॥ तापाछें
जामंतकमाची तथा सब ब्राह्मण श्रीगुसांईजी फिर वहां पधारे
तब आपके सेवक भए ॥ सो तब वे सब अपरससों सेवा क-
रिवे लगे ॥ तब वा मोचीकों कोई टोकतो नाँहीं ॥ क्यों जो
वा राजाको परमानों होयगयो ॥ तहाँ केशवदास तथा गोविं-
ददास दोऊ भाई सारस्वत ब्राह्मण हते ॥ तिनकें संगतें वह
संगजीभाई वैष्णव भयो हतो ॥ सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी
दृष्टि वा मुगल उपर परी हती ॥ ता करिकें वह मुगल बडो
भगवदीय भयो हतो ॥ सो वा संगजीभाईके संगतें राजा जामं-
तकमाची ओर सब ब्राह्मण भगवदीय भए ॥ सो श्रीगुसाँईजीके
सेवक भए ॥ ओर अनेक जीवनको श्रीगुसांईजी आप उद्धार
कीए ॥ सो याही जन्ममें वो संगजीभाई लीलामें प्राप्त भए ॥
ओर बहुत विस्तार संगजीभाईकी वार्तामें हे ॥ सो यासों यहाँ
संक्षेपमात्र लिखे हें ॥ सो यह चरित्र श्रीआचार्यजीमहाप्रभु
आप नंदगाँमकी बेठकमें दिखाए ॥ सो कहाँतांई लिखिये ॥

एसे एसे आपनें अनेक चरित्र दिखाए हें ॥ पाछें श्रीआचार्यजी आप तहाँसों विजय कीए ॥ सो करहला अंजनोखरि होयकें पिसायो खिद्रवन होय ॥ जाववट होयकें तहाँतें आप कोकिलावन पधारे ॥ सो तहाँ कोकिलावनमें कृष्णकुंडके ऊपर बेठक हे ॥ इति श्रीनंदगांमकी वेठकको चरित्र समाप्त ॥ १९ ॥

❀ (वेठक २० मीं) ❀

❀ (अथ श्रीकोकिलावनकी वेठकको चरित्र प्रारंभ) ❀

अव कोकिलावनमें श्रीकृष्णकुंडके उपर छोंकरकें नीचे श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी वेठक हे ॥ तहाँ एकमास पर्यंत आप विराजे हे ॥ सो तहाँ श्रीभागवतको पारायण कीए हें ॥ तहाँ कोकिलावनमें निंवार्कसंप्रदायको चतुरानागा करिकें वैष्णव हतो ॥ सो वाके संग हजार नागा सदाँ रहते ॥ सो वानें आईकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों दंडवत् करी ॥ ओर विनती करी ॥ जो महाराज आप विष्णुस्वामीके मतके आचार्य हो ॥ ओर जगतमें विजय कियो हे ॥ ओर मायामतको खंडन कियो हे ॥ ओर भक्तिमार्गको स्थापन कियो हे ॥ तातें हमारे हजार साधु हें तिनकों खीरको भोजन करवावो ॥ तव श्रीआचार्यजी आप आज्ञा कीए ॥ जो वहुत आछो ॥ ईनकों भोजन करवावेंगे ॥ तव आपु कृष्णदासतें कहें ॥ जो कहूँतें पाँचशेर दूध लावो ॥ तव कुष्णदास नंदगाँममेंतें पाँचशेर दूध लाए ॥ तव आप श्रीआचार्यजीनें वासुदेवदासछकडासों कही ॥ जो याकी खीर करिकें इन हजार बेरागीनकों जिमायदेऊ ॥ तव वासुदेवदासछकडानें खीर सिद्धि करी ॥ सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु अपनि दृष्टि करिकें देखें ॥ तव देखतमात्र वह खीर अक्षय होयगई ॥ तापाछें ऊन बेरागीनतें आपनें कही ॥ जो तुम पातरि दोनाँ लेकें अपनी पंगति करिकें वेठो ॥ सो तव वे नागा पंगति

करिकें वेठ ॥ तब वासुदेवदासछकडा जिमायवे लगे ॥ तब सब नागानकों जिमाई दीए ॥ तापाछें सब वैष्णव भली भातसों जें ऊठे ॥ ओर खीर पाँचशेर ज्योंकी त्यों रही ॥ सो निवटी नाँहीं ॥ तापाछें आप आज्ञा कीए ॥ जो ईहाँके वंदरनकों तथा ईहाँके मोरनकों खवाय देउ ॥ सो तब ऊनहूँकों खवायदई ॥ तोहू खीर ज्योंकीत्यों रही निवडी नाँहीं ॥ तब आप आज्ञा कीए जो यह खीर मेंनें द्रष्टि करिकें प्रसादी करिदई हे ॥ तातें तोको कछू वाधा नाँही ॥ तूं लेजा छोडे मति ॥ तब एक हाँडी लायकें तामें वा खीरकों ठलायकें वासुदेवदासछकडा लेगए ॥ तब वह खीर निवटी ॥ सो तब यह चरित्र देखिकें चतुरानागा दोऊ हाथ वांधि गरेमें पटुका डारिकें आईकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकूं दंडवत करी ॥ ओर वीनती करी ॥ जो महाराजाधिराज आप तो पूर्णपुरुपोत्तम हो ॥ आपको स्वरूप मेंनें जान्यों नाँही ॥ अब आप कृपा करिकें मोकों अपनों सेवक करिए ॥ तब आप श्रीआचार्यजी आज्ञा कीए ॥ जो तुम सेवकही हो ॥ जो आगें हमारे नाँती श्रीगोकुलनाथजी नाँम करिकें प्रगट होंगये ॥ सो तुमकों सेवक करेंगे ॥ तब वा चतुरानागानें विनती करि जो महाराज तहाँताँई मेरे शरीरकी यह स्थिति केसें रहेगी ॥ तब आप आज्ञा कीए ॥ जो तेरी डेढसे वर्पकी आयुप्य हे ॥ सो तामें चालीश वर्प तोकों भए हे ॥ वाकी एकसो दश- वर्पके भीतर तेरो अंगीकार कीयो जायगो ॥ तापाछे चतुरानागा आछो भगवदीय भयो ॥ सो व्रजमें पर्यटन करतो ॥ सो एक- समय चातुरानागा चलेजात हते ॥ तब एक वृक्षमे जटा अरुझी ॥ सो झुरझावन लागे ॥ सो झुरझावतिमें वृक्षको पताआ टूटि पन्यो ॥ तब तीन दिन ताँई ठाढे रहे ॥ ओर जटा सुरझी नाँहीं ॥ सो श्रीनाथजीनें आईकें जटा सुरझाँई ॥ वाको श्रीना-

थजीके शृंगारको नेंम हतो ॥ तापाछें केतेकदिन पाछें पादशाहनें सवकी माला उतारीं हतीं ॥ तव एकदिन श्रीगोकुलनाथजी मथुराँ पधारे हते ॥ सो मार्गमें चतुरानागा मिल्यो ॥ तव माला न देखी ॥ तव आप चतुरानागासों आज्ञा कीए ॥ जो अरे चतुरानागा हम गृहस्ती होयकें माला नाँहीं उतारत हें ॥ ओर तूँ वेरागी होयकें माला क्यों उतारी ॥ तेरो पादशाह कहा करतो ॥ सो तव वह पावन पर्‍यो ॥ ओर आँखिनमेंसों आँसू आयगए ॥ ओर वीनती करी ॥ जो महाराज आप कृपा करिकें माला पहराओ तो पहरूँ ॥ तव श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको वचन सुधि करिकें वाकू श्रीगोकुलनाथजीनें माला दई ॥ ओर वाकों सेवक कियो ॥ तवतें श्रीगोकुलनाथजी वाकेऊपर वहुत प्रसंन रहते ॥ सो वानें एक धमार वनाई हे ॥ तामें एसें कह्यो हे जो (सारंगीके प्रतापतें जन पाए गोकुलचंद) सो यह धमार श्रीगोकुलनाथजीके वहाँ गाईजातहे ॥ तापाछें जव देढसे वर्षकी अवस्था पूर्ण भई ॥ तव वा चतुरानागानें जायकें गोविंदकुंडपे समाधि लई ॥ सो लीलामें जायकें प्राप्त भए ॥ यह चरित्र श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप कोकिलावनकी वेठकमें प्रगट कीए ॥ ओरहू अनेक चरित्र कीए ॥ परंतु मुख्य हें सो लिखे हें ॥ इति श्रीकोकिलावनकी वेठकको चरित्र समाप्त ॥ २० ॥

❀ (वेठक २१ मीं.) ❀

❀ (अथ श्रीभांडिरवनकी वेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अव आप श्रीआचार्यजी कोकिलावनसों विजय कीए ॥ सो वडोवठेन, छोटीवठेन तथा कोटवन होईकें सेपशाई पधारे ॥ तहाँ एक रात्र रहे ॥ तापाछे फेरि तहाँतें रामघाट तथा गोपीघाट, गुंजावन, निवारनवन, ये सव, उपवन सो तिन सवके दर्शन करिकें चीरघाट तथा नंदघाट होईकें भांडीरवन पधारे ॥ तहाँ आपकी

बेठक हे ॥ तहाँ विराजे ॥ तहाँ सातदिनको श्रीभागवतको परायण कीए ॥ सो तहाँ एक मध्वाचार्य संप्रदायको व्यासतीर्थस्वामी महंत हतो ॥ वाको एक महास्थल हतो ॥ सो वानें आईकें श्रीआजार्यजी सों कही ॥ जो मेरे लाखन तो सेवक हें ॥ सो वडी गादी माधवाचार्य संप्रदायकी हे ॥ ओर मेरो घर दक्षणमें हे ॥ ओर बडे राजा मेरे सेवक हें ॥ ओर मेरे सेवक माधवेंद्रपुरी हें ॥ तिनके सेवक कृष्णचैतन्य भए ॥ सो अब लक्षावधि तो मेरेपास रुपैया हें ॥ सो अब मं आपकों देउँ ॥ ओर यह गादी आप लायक हे ॥ तातें आप विराजो ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु कंहे जो याको प्रतिउत्तर हम कल्हि देईंगे ॥ तब वह अपनें आश्रममें गयो ॥ सो तापाछें अर्धरात्र भई ॥ तब कोऊ चारि जनें मुगदर लेकें आए तिननें वाकों बहुत मार्यो ॥ सो वे मारतती जाँय परि दीसें नाँहीं ॥ तब याने कही ॥ जो तुम कोंन हो ॥ तब उन मारनहारेनने कही ॥ जो हम श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके दूत हें ॥ तेरी कहा सामर्थ्य हे जो तूँ श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों गादीपे बेठारे ॥ तब तासों अब तूँ आपनो भलो चाहे तो श्री आचार्यजीके पावन परियो ॥ नाँहींतो हम तोकों ठोर मारेंगे ॥ तब प्रातःकाल वह महंत आयकें श्रीआचार्यजीके पावन पर्यो ॥ ओर विनती करी ॥ जो मोकों सेवक करो ॥ जो मेनें आपको स्वरूप जान्यो नाँहीं ॥ सो क्षमाँ करो ॥ तब श्रीआचार्यजी वासों कहें ॥ जो तूंतो सेवकही हे ॥ तब वा व्यासतीर्थस्वामीनें वीनती करी ॥ जो महाराज कृपाकरिकें मोकों शरणि लीजिये तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप वाको अंगिकार कीए ॥ पाछें उहाँतें बेलवन तथा भद्रवन होयकें माँनसरोवर हे ॥ सो तहाँ आप पधारे ॥ सो यह चरित्र भाँडीरवनकी बेठकमें प्रगट कीए ॥ ओरहू अनेक चरित्र कीए परंतु यामें मुख्य हें सोई लिखे हें ॥ इति श्रीभांडीरवनकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ २१ ॥

❀ (बेठक २२ मी) ❀

❀ (अथ श्रीमाँनसरोवरकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

सो तहाँ माँनसरोवरपे आप तीनदिन बिराजे ॥ तहाँ श्रीभागवतको पारायण कीए ॥ तब एकदिन अर्धरात्रके समय सब सेवक आपके साथ हते ॥ तब दामोदरदास देखें तो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप तहाँ नाँहीं हें॥ सो प्रहरएक पीछें पुरुषोत्तमकांति स्वरूपको दर्शन दीए ॥ तब दामोदरदासनें कही ॥ जो महाराज आज अनिर्वचनीय सुख भयो ॥ जो अद्भुत दर्शन भयो ॥ तापाछें आप आज्ञा कीए ॥ जो दमला आज श्रीस्वामिनीजीनें गाढो माँन कियो हतो ॥ सो वह माँन मोचन करायकें श्रीस्वामिनीजी श्रीनाथजीके पास पधरायकें आवत हों ॥ सो दर्शन दामोदरदासकों भयो ॥ ओर सब वैष्णव निद्रावश हते ॥ तापाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप लोहवन रावल श्रीबलदेवजी महावन तथा चिंताहरणघाट तथा ब्रह्मांडघाट स्नान करि रमणस्थल होय गोपकूपमें स्नान करि ऊतलेश्वरघाट तथा यसोदाघाट गोविंदघाट होयकें पाछे अपनी श्रीगोकुलकी बेठकमें आए बिराजे ॥ तहाँ जन्माष्टमीको उत्सव श्रीगोकुलमें कीए ॥ सो वृक्षमें चादरि बाँधिकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें श्रीनवनीतप्रियजी कों पालनें झुलाए ॥ ताके ओर सबनकों रत्नजटित पालनेंके दर्शन करवाए ॥ तहाँ गोपी ग्वाल श्रीनंदरायजी तथा श्रीयशोदाजीनें प्रगट दर्शन दीए ॥ तहाँ बडो नंदमहोत्सव भयो ॥ सो जब वे स्वरूप पाछे पधारिवेलगे ॥ तब श्रीनंदरायजी ओर श्रीयशोदाजीनें श्रीआचार्यजीसों कही जो कछु वरदाँन माँगो ॥ तब आप कहें ॥ जो अबतो आप साक्षात् पधारे हो ॥ ओरबेर हम भेष बनावेंगे तामें आप अपनों आवेश धरियो ॥ क्यों जो अब आप साक्षात्

पधारे हो ॥ ओर आगें जो न पधारोगे ॥ तो वैष्णवनकों अभाव होयगो ॥ तब सब स्वरूपननें कही जो अस्तु ॥ श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आपनें पहलें नंदमहोत्सवको उत्सव तो काशीमें सेठि पुरुषोत्तमदासके घरमें कियो हतो ॥ ओर दूसरो नंदमहोत्सवको प्रकार श्रीगोकुलमें कीए ॥ सो काहेतें ॥ जो भगवज्जन्मभूमी हे ॥ सो ताहाँ दर्शन कीए ॥ पाछे श्रीमथुराँ पधारे ताँहाँ विश्रांतघाटपे विराजिकें प्रथम परिक्रमाँ पुरी करि ॥ ऊजागरचोबेकों एकसो रुपैया दीए ॥ सो तीनबेर श्रीआचार्यजी आप पृथ्वि परिक्रमाँ कीए ताबेर तीन व्रजपरिक्रमाँ हू कीए ॥ तामें तीन्योबेर जुदे जुदे चरित्र कीए ॥ सो अनेक चरित्र कीए परंतु विस्तारके लीयें ईहाँ नाँहीं कहेहें ॥ जो जेसें प्राचीन स्वरूपनके मुखतें सुनी हती सोई लिखे ॥ व्रजवनयात्रामें तो श्रीआचार्यजीके बाइस (२२) बेठक हें ॥ सो तहाँ श्रीआचार्यजीमहाप्रभु अलौकिक चरित्र दिखाए हें ॥ सो कँहाँताँइ लिखे ॥ इति श्रीमाँनसरोवरकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ २२ ॥

❀ (बेठक २३ मी) ❀

❀ (अथ श्रीसूकरक्षेत्रकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब सूकरक्षेत्रमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बेठक हे ॥ सो ताकों सोरमघाट कहेत हें ॥ सो एकसमय श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप विराजे हते ॥ तहाँ कृष्णदासको उपदेष्टा गुरू हतो ॥ सो ताके दर्शनकों कृष्णदास श्रीआचार्यजीकी आज्ञा विनु गये ॥ तब वानें कृष्णदाससों कही ॥ जो अरे कृष्णदास तूँ मेरो सेवक होयकें श्रीआचार्यजीको सेवक क्यों भयो ॥ तब कृष्णदासनें कही जो मेरे गुरूतो आपही हो ॥ आपहीकी कृपातें मेंने श्रीपूर्णपुरुषोत्तम पाए हें ॥ तब वानें कही ॥ जो तिहारे कहेतें पूर्णपुरुषोत्तम क्यों होंइ ॥ तब कृष्णदासनें बरती

अग्नि हाथमें लेकें यह किही ॥ जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप पूर्णपुरुषोत्तम होंय तो अग्नि मोकों मति जारे ॥ ओर जो अन्यत्र होंय तो यह अग्नि मोकों भस्म करिदीजियो ॥ सो एसें कहिकें एक मुहूर्तलों अग्नि हाथमें राखी ॥ तब वा गुरूने अग्नि हाथमेंसों गिरवायदई ॥ सो एसो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप माहात्म्य दिखाए ॥ ओर एकसमय वहाँ श्रीआचार्यजी आप श्रीगंगाजीमें स्नान करत हते ॥ तहाँ आपके वडे भाई केशव पुरी पृथ्वीपरिक्रमाँ करत आय मिले ॥ सो श्रीगंगाजीके परलेपार नावबिनाँ चले जायकें संध्यावंदन किये ॥ पाछें वेसेंई चले आयकें श्रीआचार्यजीके निकट ठाडे रहे सो ॥ अपनी सिध्दाई श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको दिखाई ॥ सो यह बात आपकों आछी न लागी ॥ तब श्रीआचार्यजी आज्ञा कीए ॥ जो सिध्दाई तो भगवत्सेवा हे ॥ सो तो करि नाँहीं ॥ या सिध्दाईतें कहा सिध्द भयो ॥ तब दूसरे दिन विनकी सब सिध्दाई आपनें हरी लई ॥ सो जब दूसरे दिन वे वसेंइँ गंगापार जायवे लगे तब डुबन लगे ॥ तातें श्रीआचार्यजीको नॉम लेकें पुकारन लगे ॥ तब तासमय श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप गंगाकिनारेपे संध्यावंदन करत हते ॥ तातें आप अपनी भुजा पसारिके श्रीगंगाजीकी मध्य धारामेंतें केसोपुरीकों तटपे काढि लीए ॥ सो यह चमत्कार देखिकें केसोपुरी श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके पावन आय पऱ्यो ॥ ओर कही ॥ जो आपतो ईश्वरको अवतार हो ॥ सो यह चरित्र श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप सोरम घाटकी बेठकमें प्रगट कीए ॥ ओर तो अनेक कीए ॥ परंतु यामें मुख्य हे ॥ सोई लिखे हें ॥ इति श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी सोरोंघाटकी बेठककों चरित्र समाप्त ॥ २३ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (बेठक २४ मी) ❀

❀ (अथ श्रीचित्रकूटकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब चित्रकूटपे श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बेठक हे ॥ सो कांतानाथपर्वतके समीप हे ॥ तहाँ श्रीरामचंद्रजीनें चातुर्मास कीयो हे ॥ तातें आप श्रीआचार्यजीनें श्रीभागवतको परायण करिकें १६ दिन वाल्मीकिरामायणको पाठ कियो ॥ तब श्री-हनुमाँनजी एकपाँवसों ठाढे होयकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों कथा श्रवण करें ॥ तब आप आज्ञाकीए-जो तुम बेठिकें कथा श्रवण करो ॥ तब श्रीहनुमाँनजी कहें ॥ जो मेरेतो यही संक-ल्प हे ॥ तब श्रीआचार्यजी आप आज्ञा कीए ॥ जो यहाँ कांतानाथपर्वत हे ॥ सो श्रीगिरिराजको भाई हे ॥ तातें हमकों इनके ऊपर पाँम न धरनों ॥ तब कांतानाथनें मनमें विचाऱ्यो ॥ जो मेरे ऊपर श्रीआचार्यजी पधारे तो आछो ॥ सो तब एक ब्राह्मणको स्वरूप धरिकें कांतानाथपर्वत श्रीआचार्यजीके पास आयो ॥ तब आईकें वीनती करी जो महाराज श्रीजाँनकीजी ओर श्रीरामचंद्रजी मेरे हृदयशिखरपे विराजत हें ॥ उननें आज्ञा करी हे ॥ जो तुम श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों जायकें कहो ॥ जो हमकों भूख लगीहे ॥ सो कछू सामग्री लेकें पधारो ॥ तब तासमय श्रीआचार्यजी आप श्रीठाकुरजीकों भोग धरिकें विराजे हते ॥ तब दामोदरदासतें कही ॥ जो केलाकी फरी सँभारो ॥ तब पके पके केला की ४२ फरी सभाँरिकें दामोदरदासनें सिद्ध करीं ॥ तामें मिश्री तथा ईलायची डारी ॥ ओर गुलाबजल पधरायो ॥ तब कृष्णदासमेघननें वीनती करी ॥ जो महाराज् गुलाबजल तो खासा श्रीठाकुरजीको हे ॥ तब श्रीआचार्यजी आप मुसिकाईकें चूप करिरहे ॥ पाछें आज्ञा कीए ॥ जो श्रीरा-मचंद्रजीहू मर्यादा आदिपुरुषोत्तम हें ॥ सो कछु चिंता नाहीं ॥

तापाछे एक कारिका कही सो ॥ श्लोक ॥ (सेतुबंधनमात्रैकं चरितं हरिसंमतम् ॥ दोषभावाय नारीणां लंकास्थानें निरूपितं ॥ १ ॥) तापाछे कांतानाथकी सिखिरपे आप पधारे ॥ सों तहाँ देखें तो एक रत्नशिलाके ऊपर श्रीरामचंद्रजी ओर श्रीजानकीजी बिराजे हें ॥ ओर श्रीलक्ष्मणजी शेषरूप होयकें छाया करत हें ॥ ओर हनुमाँनजी हाथ जोरिकें ठाढे हें ॥ तहाँ आप पधारे ॥ तब श्रीरामचंद्रजी श्रीआचार्यजीसों मिले ॥ पाछें हाथ पकरिकें रत्नशिलापे बेठारे ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें वह सामग्री आगें धरी ॥ सो दोऊ स्वरूप आरोगे तामेको प्रसाद श्रीलक्ष्मणजी तथा श्रीहनुमॉनजीकों दिये ॥ तापाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु ओर श्रीरामचंद्रजी एकमुहूर्त तांई वार्ता कीए ॥ तब परस्पर बहुत आनंद भयो ॥ तब श्रीरामचंद्रजी कहें ॥ जो मोकों आपके हाथसों आरोगानों हतो ॥ तातें तुमकों बुलाए ॥ पाछें श्रीआचार्यजी श्रीरामचंद्रजीकी आज्ञा लेकें नीचें आपनी बेठकमें पधारे ॥ सो यह चरित्र श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप चित्रकूटकी बेठकमें प्रगट कीए ॥ ओर तो अनेक कीए ॥ तामें मुख्य हें सोई लिखे हें ॥ इति श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी चित्रकूटकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ २४ ॥ ॥ ६ ॥

❀ (बेठक २५ मी) ❀

❀ (अथ श्रीअयोध्याकी बेठकको चरित्र प्रारंभ) ❀

अब अयोध्यामें सरयूके तीर गुसाँईघाटपे श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बेठक हे ॥ सो तहाँ बिराजे पाछें एकसमय आप अयोध्याजीमें कोईक स्थलके दर्शन करिवेकों पधारे ॥ वा स्थलपे वाल्मीकिरामायण होत हती ॥ तहाँ श्रीहनुमॉनजी श्रवण करत हते ॥ तब हनुमॉनजीनें कही ॥ जो आप कृष्णउपासक होयकें श्रीरामचंद्रजीकी पुरीमें पधारे हो ॥ तब श्रीआचार्यजी

कहें ॥ जो हमतो अपनें श्रीठाकुरजीकी ससुरारि जॉनकें पधारे हें ॥ ओर तुम नग्न होयकें कथा सुनोहो ॥ तातें एक लंगोटी लगायकें कथा सुनों ॥ सो वाही दिनतें जहाँ रामायण होत हे ॥ तहाँ एक वस्त्र बिछावत हें ॥ पाछें श्रीहनुमॉनजीनें कही जो आप अयोध्याकों श्रीकृष्णकी ससुरारि केसें बताइ सो कहो ॥ तब आप कहें ॥ जो पूर्व अयोध्याको राजा अग्निजित हतो ॥ ताकी बेटी श्रीसत्याजी हतीं ॥ सो श्रीकृष्णकों ब्याहीं हतीं ॥ जब सात बेल नॉथे हे ॥ तब अग्निजितनें श्रीसत्याजीको ब्याह कीयो ॥ तातें ससुरारि कही ॥ पाछें श्रीरामचंद्रजीकी बेठकमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु मिलिवेंको पधारे ॥ तब आप श्रीआचार्यजी कहें ॥ जो मर्यादापुरुपोत्तमाय नमः ॥ तब हनुमॉनजीकों सुनिकें बडो संदेह भयो ॥ सो अंत करणहीमें राखें ॥ सो काहूसों कह्यो नाहीं ॥ तापाछें श्रीरामचंद्रजी अपनें मेहलमे पधारे ॥ तब हनुमॉनजीको संदेह जॉनिकें श्रीरामचंद्रजीनें विनकों श्रीआचार्यजीके पास पठाए ॥ जो यह सामुग्री हे ॥ सो श्रीआचार्यजीकों दे आवो ॥ तब हनुमॉनजी तहॉतें चले ॥ सो देखें तो श्रीरामचंद्रजीको स्वरूप धरिकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप बेठे हें ॥ तब हनुमॉनजीनें दंडवत् करी ॥ ओर वह सामुग्री आगें धरी ॥ तापाछें हनुमॉनजी श्रीरामचंद्रजीके पास आईकें सर्व वृत्तांत कहें ॥ तब श्रीरामचंद्रजी कहें ॥ जो ये मेरो स्वरूप धरिलेंय ॥ परंतु मोसों ईनको स्वरूप धर्यो नॉहीं जाय ॥ सो याको आशय यह हे ॥ जो श्रीरामचंद्रजीतो श्रीपुरुषोत्तमके हास्यको अवतार हें ॥ सो द्वितीयस्कंधकी सुबोधिनीजीके सातमे अध्यायमें आप कहे हें जो हास्यतो श्रीमुखतें प्रगट होतहे ॥ ओर श्रीआचार्यजी तो पूर्णपुरुषोत्तमके मुखारविंदकी अधिष्ठाता, अलौकिक आनंदस-

मयकी अग्निरूप हें ॥ सो यह निश्चे भयो ॥ सो यह चरित्र श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप अयोध्याजीकी बेठकमें प्रगट कीए ॥ ओर तो अनेक कीए ॥ तामें मुख्य हें सोई लिखेहें ॥ इति श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी श्रीअयोध्याकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ २५ ॥

❀ (बेठक २६ मीं) ❀

❀ (अथ श्रीनेमिषारण्यकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बेठक नेमिषारण्यक्षेत्रमें गोविंदकुंडके उपर छोंकरके नीचें हे ॥ सो तहाँ आप सात दिनको श्रीभागवतको पारायण कीए हें ॥ एकदिन जप पाठ करिकें जहाँ अदृश्य अठासीहजार शौनकादिक रिषि यज्ञ करत हते तहाँ गुप्त रीतिसों उनके यज्ञमें आप पधारे ॥ तब सब ब्राह्मणनें प्रशंसा करी ॥ ओर आसनपे पधरायकें श्रीआचार्यजीकी बहुत पूजा करी ओर एक श्लोक कहें सो ॥ (श्लोक ॥ नैष्कर्म्यमप्यच्युत भाववर्जितं न शोभते ज्ञानमलं निरंजनं ॥ कुतः पुनः शश्वदभद्र ईश्वरे न चार्पितं कर्मयदप्यनुत्तमं ॥ १ ॥) या श्लोककी व्याख्या आप श्रीआचार्यजीनें तीन प्रहरताँई कीए ॥ तापाछें सब वैष्णवनके पास आप बाहिर पधारे ॥ सो देखें तो सब वैष्णवनकू मूर्छा आई हे ॥ तब कमंडलुमेंतें जल लेकें छिरके॥ तब सब सावधॉन भए॥ तब सब वैष्णवननें दंडवत् करिकें पूछी॥ जो महाराज तीन प्रहरतें आप कहाँ पधारे हते ॥ जो आप विनॉ हमारे प्राण बहुत कष्ट पावत हें ॥ तब आप कहें ॥ जो इहाँ अठासीहजार शौनकादिक हें ॥ सो यज्ञ करें हें ॥ ता यज्ञके दर्शन करिवे गए हते ॥ ताहाँ उनने श्रीभागवतको प्रश्न कीयो ॥ ताकी व्याख्या करते तीनप्रहर वितित भए ॥ सो यह चरित्र श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप नेमिषारण्यकी बेठकमें प्रगट कीए ॥ ओर तो अनेक कीए परंतु यामें मुख्य हें ॥ ॥ सोई लिखें हें ॥

इति श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी नेमिषारण्यक्षेत्रकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ २६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (बेठक २७ मी) ❀

❀ (अथ श्रीकाशीजीकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब श्रीकाशीमें सेठि पुरुषोत्तमदासके घर श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बेठक हे ॥ सो प्रथम आप तहाँ नंदमहोत्सव प्रगट कीए हे ॥ तासमय श्रीनंदरायजी, श्रीयशोदाजी, श्रीवृषभानजी, उपनंदादी, ॥ गोप तथा ग्वाल वृजभक्त साक्षात् स्वरूपात्मक पधारे ॥ सो नंदमहोत्सव भयो ॥ तहाँ विश्वेश्वरजी महादेवजी दर्शननकों पधारे हे ॥ सो प्रसंग सेठि पुरुषोत्तमदासकी वार्तामें विस्तार करिकें लिखे हें ॥ पत्रावलंबन ग्रंथ श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप यहाँही प्रगट किओ ॥ ओर तहाँ श्रीकृष्णपूर्णपुरुषोत्तम स्थापन किए ॥ ओर मायामत खंडन कियो ॥ सो काशीमें मत्त-मातंग पंडित हते ॥ तिन सबनकों निरुत्तर कीए ॥ वे केहेत हते ॥ जो भाष्यतो तीन हें ॥ चोथो भाष्य विवेचन नाँही हे ॥ सो ऊनकों जीतिकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु अणुभाष्य निरूपण कीए ॥ शंकरको विरुद्ध मत्त हतो ॥ सो ताको खंडण कीए ॥ सो वा पत्रावलंबनके तीस श्लोकनमें मायावादी पंडितनकों निरुउत्तर करि दिए ॥ सो तब वे महादेवजीके द्वारपे धरनें बेठे ॥ ओर कहें जो आप शंकराचार्यको स्वरूप धरिकें ब्रह्मको निराकार स्वरूप वर्णन कीयो हे ॥ ता मत्तको श्रीवल्लभाचार्यजी खंडत करिकें साकारब्रह्मको स्थापन कीए हें ॥ तब आप श्रीमहादेवजी स्वप्नमें आज्ञा कीए ॥ जो श्रीआचार्यजी कहें सो सत्यहे ॥ सो विश्वेश्वरजीकी प्रतिमासों यह शब्द भयो ॥ सो श्लोक ॥ (सत्यं सत्यं च सत्यं च सत्यं श्रीवल्लभोदितम् ॥ प्रवर्ता च प्रवर्तंते प्रवर्तें च पुन पुनः ॥ २ ॥ प्रवर्तयाम करोप्रवर्त्ति ॥ (सो याको आशय

कहें ॥ जो श्रीवल्लभाचार्यजी कहें सो सत्यहे ॥ ताही प्रमाण चलनो ॥ पद्मपुराणमें श्रीमहादेवजी जीवनकों बहिर्मुख करिवेकी आज्ञा कीए सो ॥ श्लोक ॥ (त्वं च रुद्र महाबाहो मोह शास्त्रं प्रकाशय ॥ प्रकाशकुरु चात्मानमप्रकाशं च माकुरु ॥ १ ॥) ओर आप काशीमें बहुत दिनलों विराजे ॥ सो तहाँ यज्ञोपवीत ब्याह सब काशीमें कियो ॥ सो यह चरित्र आप काशीमें सेठि पुरुषोत्तमदासके घर बेठकमें प्रगट किये हें ॥ इति काशीमें सेठि पुरुषोत्तमदासके घरकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ २७ ॥ ॥ ६ ॥

❀ (बेठक २८ मी) ❀

❀ (अथ श्रीकाशीकी दूसरी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी दूसरी बेठक काशीमें हनुमाँनघाटके उपर हे ॥ तहाँ आपनें संन्यास ग्रहण कीओ ॥ तब एकमास तांई श्रीआचार्यजी आप एक शिलाउपर बिराजे ॥ अन्न जल सब त्याग कीओ ॥ तासमय बहिर्मुख ब्राह्मणनें पूछी ॥ जो तुम संन्यासग्रहणउपदेश कोंनसों लियो ॥ तब आप संन्यासनिर्णय ग्रंथ लिखिकें दीए ॥ सों वाकों बाँचिकें वे निरुत्तर होय गए ॥ तापाछें फेरि बहूत पंडित भेले होयकें आए ॥ तब आप भयंकर झलझलायमॉन अग्निको दर्शन दीए ॥ तब सब पायकें पाछेफिरि गए ॥ (रोपट्टक् पातसंतुष्टभक्तद्विट् भक्तसेवितः) ॥ सो यह नॉम श्रीसर्वोत्तमजीमें निरूपण कीओ हे ॥ तापाछें पुष्यनक्षत्रकी व्याप्ति होयकें अभिजित कालमें आसाढ सुदी २ उ० ३ के दिन श्रीगंगाजीके जलमें कटिताँई विराजे ॥ तब चालीश हातमें तेजके पुंजको भवरा भयो सो आकाशताँई छाय रह्यो ॥ सो दोय महूर्तलों काशीके वाशीननें देख्यो ॥ तब वे कहें जो हमनें अबलों श्रीआचार्यजीको स्वरूप जॉन्यो नाहींहो ॥ जो ये तो ईश्वर हें ॥ तापाछें श्रीआचार्यजी सबनके देखत स्वधॉम पधारे ॥ सो यह

चरित्र काशीमें हनुमाँनघाटकी वेठकमें दिखाए ॥ इति श्रीआचार्य जीमहाप्रभुनकी कासिकी दुसरी वेठकको चरित्रसमाप्त ॥ २८ ॥

❀ (वेठक २९ मी) ❀

❀ (अथ श्रीहरिहरक्षेत्रकी वेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अव हरिहरक्षेत्रमें श्रीगंगाजी ओर गन्नकी नदीको समागम भयो हे ॥ तहाँ भगवानदासके घरमें आप श्रीआचार्यजीमहाप्रभु अखंड विराजमान हें ॥ काशीमें जो अपनें आसुरव्यामोहलीला दिखाई ॥ तव वेष्णवनकूं वहुत खेद भयो ॥ सो सव मिलिकें भगवानदासके घर आए ॥ ओर सव वृत्तांत कह्यो ॥ तव भगवानदासनें वेठकको टेरा खोल्यो ॥ तव सवनको साक्षात् श्रीआचार्यजीको दर्शन भयो ॥ सो भगवानदासकी वार्तामें लिखें हें ॥ ओर जव भगवानदासके घरतें श्रीआचार्यजी चलिवेको नाँम लेते ॥ तवही वा भगवानदासकों मूर्छा आईजाती ॥ सो वो जगन्नाथजी ताँई आपके संगे रह्यो ॥ तव आप कहें ॥ जो तूँम घरकूं जाओ ॥ यातेमेरी लोकिकमें निंदा होईगी ॥ तातें मेरी पादुकाजी ले जाओ ॥ सो जा चोतरापे तूँम जप करत हो ॥ तहाँ तूँमकों दर्शन होयगो ॥ तव भगवानदास घर आए ॥ सो वीनकों वा चोतरा उपर श्रीचार्यजीको नित्य दर्शन होतो ॥ सो या चरित्रकों आप हरिहरक्षेत्रकी वेठकमें प्रगट कीए ॥ इति श्रीहरिहरक्षेत्रकी वेठको चरित्र समाप्त ॥ २९ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

❀ (वेठक ३० मी) ❀

❀ (अथ श्रीजनकपुरकी वेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अव श्रीआचार्यजीकी वेठकं जनकपुरमें मानिकतलावके उपर भगवानदासके वागमें हे ॥ तहाँ रामचंद्रजी सीताजी गठ जोरे स्नान कीए हें ॥ ओर श्रीरामचंद्रजीकी वरात उहाँ उतरी हती ॥ सो भगवानदासके वागकी वेठकमें आप सप्ताह कीए ॥

तापाछें केवलरामनागा विष्णुस्वामिकी संप्रदायको हतो ॥ ताके संग पाँचसे नागा जनकपुरकी यात्राकों आए हते ॥ सो ऊननें आइकें श्रीआचार्यजीकों दंडवत् करी ॥ ओर कही ॥ जो महाराज मोकों सेवक करो ॥ तव आप नाँम सुनाए ओर कहे ॥ जो तेरे वैष्णवनकों यही नाँम सुनाय दे ॥ तापाछें केवलरॉमनागाने वीनती करी ॥ जो महाराज मोकों आप अपनो प्रसाद देऊ ॥ सो वादिन रामनोमीको दूसरोदिन हतो ॥ सो वासोंधीको डवरा बच्यो हतो ॥ सो वाही वासोंधीमेंतें पाँचसेहू नागा जीमाय दीए ॥ तापाछें ओरहू वासोंधी बची ॥ सो यह माहात्म्य देखिकें केवलरॉमनागा वहुत प्रसन्न भयो ॥ पाछें दंडवत करिकें चल्यो गयो ॥ तव आप कहे ॥ जो यह बेरागीनकी ऊचिष्ट हे ॥ सो वैष्णव न लेंयगे ॥ सो मालीनकों पिवाय देई ॥ तापाछें बचीसो गाँमके लोगनकों प्याय दई ॥ सो यह चरित्र मालीने देखिकें जायकें भगवानदासतें कही ॥ तव भगवानदासनें आईकें श्रीआचार्यजीकों दंडवत करी ॥ पाछें भगवानदास श्रीआचार्यजीके सेवक भए ॥ तापाछें श्रीआचार्यजीको विननें अपनें घर पधराए ॥ सो वर्षभर विराजे ॥ सो यह चरित्र जनकपुरीकी वेठकमें दिखाए ॥ इति श्रीजनकपुरकी वेठकको चरित्र समाप्त ॥ ३० ॥

❀ (वेठक ३१ मी) ❀

❀ (अथ श्रीगंगासागरकी वेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अव गंगासागरपे कपिलाश्रम कपिलावनमें कपिलकुंडके ऊपर एकछोंकरकें नीचें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी वेठक हे ॥ वाके आसपास महा गेहेरो वन हे ॥ तहाँ सिंह गेंडा गजराज सरस हरनी भेंसा आदि अेसे तामसीजीव वहुत हे ॥ सो तहाँ मनुष्यकी तो गम्य नाहीं ॥ तहाँ पटमास श्रीआचार्यजीमहाप्रभु

आप विराजे ॥ तहाँतें तृतीयस्कंधकी श्रीसुबोधिनीजी संपूर्ण करिके आप पधारे ॥ सो वहाँ धानके मुरमुरा कृष्णदासमेघन अलौकिक रीतिसों लाये हे ॥ सो आप अंगिकार करि कृष्णदासकों वरदान दीए हे ॥ ओर एक समय श्रीआचार्यजी सूर्योदयके समय गंगासागरमें स्नान करिकें अपनी वेठकमें विराजे हते ॥ तव आप विचारें ॥ जो दैवीजीवनको उद्धार भगवद आज्ञातें करनों हे ॥ सो जीवतो तामसी योनिमें पडे हें ॥ तिनको उत्तम योनि दीजे ॥ सो प्राप्त होई ॥ तब भगवदभजनको अधिकार होय ॥ ओर भक्तिके संबंध विना तो तामसी योनि निवर्त न होय ॥ तातें ईनकों भक्तिकों संवंध करावनों ॥ सो इनकी प्रमेयवल करिके तामसी योनिकी निवर्तता होय ॥ तव उत्तम योनि पाय ईनको उद्धार होयगो ॥ जेसे गंध करिके चान्यो पर्व विद्यमॉन हें ॥ श्लोक ॥ (अविद्या पूतनानष्ट गंधमात्रावशेपतः॥) संपूर्ण अविद्या पूतनाके वधसों ॥ रासी गंध ताके संवंध सों निवर्त भई ॥ मूल अविद्या हे ॥ स्वरूपग्यान विस्मृत करायवे वारी हे ॥ जो पूतनॉके शरीरमें चंदनकीसी सुगंध उठी ॥ ताकों सव व्रजवासी लिए ॥ सो नासिकाद्वारा अविद्याको प्रवेश भयो ॥ चान्यो पर्व विद्यमॉन रहे ॥ सो प्रकार प्रमेयवलतें निवर्त किए ॥ जो देहाध्यास धेनुकको वध करिकें ॥ इंद्रियाध्यास कालीको दमन करिकें ॥ अंतःकरणध्यास केसी प्रलंबको वध करिके ॥ ॥ प्रॉणॉध्यास दावानलको पॉन करिकें ॥ प्राणाध्यास द्विधा प्रकार करे हें ॥ सो तातें दावानलको दोयवेर पॉन किये हें ॥ सो एंसो प्रमेय संपूर्ण अविद्या पर्वन सहित निवर्त करि साधन प्रकरणमे अविद्याकों दॉन दीए ॥ पर्वन सहित संपूर्ण भक्ति देवेको संबंध कराए ॥ श्लोक ॥ (वैराग्यं सांख्ययोगं च तपो भक्तिश्च केशवे ॥ पंचपर्वेति विज्ञेयं यया विद्या हरिविशेत् ॥ १ ॥) सो

तातें चरणारविंदहें सो तो भक्तिरूप हें ॥ तातें इनकों भक्तिके गंधको संबंध कराएतें ईनकी तामसी योनि निवर्त होय जाइगी ॥ सो तातें इनकी मनुष्ययोनि सिद्धि होयगी ॥ एसो विचारिकें तहाँ तें ऊठिकें आप गहनवन हतो तहाँ आप श्रीआचार्यजीमहाप्रभु पधारे ॥ तब पाँच वैष्णव अंतरंग आपके संग हते ॥ तब एक छोटोसो पर्वत ताकी एक टेकरी हती ॥ ताकें नीचें आपकें चरणारविंदकों खोज ऊपडी आयो ॥ तब तो आप सब वैष्णवन सहित वा पर्वतकी टेकडी ऊपर जाय बिराजे ॥ सो तहाँ आपके चरणारविंदमेंतें अलौकिक भाँति भांतिको सुगंध निकस्यो ॥ सो तब ता गंधको ग्रहण तामसी जीवननें कीयो ॥ सो तातें सर्प (तुरत) शरीर (तामसी देह) छोडत जाँय ॥ तापाछें कस्तूरीको सुगंध निकस्यो ॥ सो ताकों अनेक मृग ग्रहण करिकें शरीर छोडतभए ॥ सो एसो जो जाकों सुगंध प्रिय हो ॥ सों ताको ग्रहण करिकें तामसीयोनि निवर्त भई ॥ सो तब वे मनुष्य योनिकों प्राप्त भए ॥ तब भगवदभजनके अधिकारी भए ॥ सो यह अलौकिक चरित्र देखिकें गंगासागरपे. वैष्णवनकों वडो आश्चर्य भयो ॥ तब ता समय एसी आग्या आप करत भए ॥ सो गोपालदासजी गाए हे सो (ए तामसनाँ अघ हर्‍याँ परताप पदरज गंध) सो यह चरित्र श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप गंगासागरकी वेठकमें प्रगट कीए ॥ ओरहू अनेक कीए तामें मुख्य हे सोई लिखे हें ॥ इति श्रीगंगासागरकी वेठकको चरित्र संपूर्ण ॥ २१ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (बेठक २२ मी) ❀

❀ (अथ श्रीचंपारण्यकी बेठकको चरित्र प्रारंभ) ❀

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप निजधाममें अखंड बिराजमाँन हें ॥ ओर आपकी लीला नित्य हे ॥ सो भक्तन सहित

सदेव रमण करत हें ॥ जो देवीसृष्टि वोहोत कालसों विछुरि ही सो गोपालदासजी वल्लभाख्यानमें सत्रमें कडवामें गाए हें ॥ जो (पर पोतानी व्यक्ति करेवा सृष्टि ते द्विधा प्रकार ॥ देवी आसुरी वे ऊपजावी प्रभु मन करी विचार) सो कृपाकटाक्षतें तो देवी सृष्टी भई ॥ ओर मायाकटाक्षतें आसुरी भई ॥ सो अब देविको उध्दार करनों ॥ तातें लीलासृष्टि सहित भूतलपें आपको प्रादुर्भाव होयगो ॥ तब सेवारूप होंयगे ॥ सो भगवत्सेवाउपयोग होंयगे ॥ ओर भगवत्सेवा करिकें भगवानकी लीलामें प्राप्ति होंयगे ॥ सो श्रीगुसाँईजी आप वल्लभाष्टकमें निरूपण कीए हें ॥ सो वाक्य (सृष्टिर्व्यर्था च भूयान्निजफलरहिता देव वैश्वानरेषा) ओर श्रीसर्वोत्तमजीमेंहू आपको नाँम हे ॥ जो (देवोद्धारप्रयत्नात्मा) श्रीगोवर्धननाथजीनें आपकों आग्या कीये ॥ जो तुम व्रजभक्त गोपग्वालन सहित चोराशी ओर द्वेसेबावन ओर अंतरंग आपके कृपापात्रसेवक सब भूतलपे प्रादुर्भाव भए ॥ तब आपनें इच्छा करी जो देवीसृष्टि तो भूतलपे चान्योवरणनमें हे ॥ सो ताकों शरणउपदेश दे पंचमों वरण प्रगट करि भक्तिमार्ग प्रवर्त करनों ॥ तातें कृष्णदासजी गाएंहे (अभे किनों लेप हरिदासवर्य भेष कृष्णदास पंचवरण छाप छापी) तब आपनें विचारि जो उत्तम कुलमें प्रादुर्भाव होयकें संप्रदाय प्रगट करनों ॥ सो दक्षणमें काँकरवाडगाँममें रामानुजाचार्य नारायणभट्ट साक्षात् वेदको अवतार भये ॥ सो चान्यो वेद षट्शास्त्र जिनके मुखाग्र हते ॥ सो वडे वडे राजा साहुकार उनके शिष्य हते ॥ सो वडे धनाढ्य हते विन नारायणभट्टजीनें सोमयागको मुहूर्त देखि आरंभ कीए ॥ सो वे आछे विद्वानकों भोजन करवावते ॥ सो विन नारायणभट्टजीनें वत्तीस सोमयज्ञ कीए ॥ तब कुंडमेंतें वाणी भई जो नारायणभट्ट तुमकों धन्य हे ॥ जो तुह्मारे यज्ञ साक्षात् श्री-

पूर्णपुरुषोत्तम भोग कीए हें ॥ सो तिहारे कुलमें साक्षात् पुरुषोत्तमको प्रादुर्भाव होयगो ॥ ओर कुंडमेतें श्रीमदनमोहनजीको स्वरूपहू प्राप्ति भयो ॥ सो अब सातस्वरूपनमें श्रीव्रजपालजीमहाराजके माँथें विराजत हें ॥ सो भगवदी गायें हे (कुंडतें हरि कही वाँनी जन्म कुल तिहारें अबें ॥ चक्रत ततछिन भए सब जन एसी अबलों भई कबें ॥ सुनतही मन हर्ष कीनों ॥ धन्य धन्य कह्यो सबें) सो तब नारायणभट्टकी बोहोत प्रशंसा होन लागी ॥ ओर सब कहें जो यह साक्षात् वेदको स्वरूप हें ॥ सो तब वे हजारन पंडितनकों वेद पढाए ॥ तब काहूएक पंडितनें कही ॥ जो मनुष्यनकों सबकोई पढावतहे ॥ सो यामें कहा बडी बात हे ॥ तब नारायणभट्टनें भेंसाकों छडी लगाई ॥ तब वह भेंसा वेद पढिवे लग्यो ॥ तब सगरि सभा चक्रत होयरही ॥ पाछें नारायणभट्टके पुत्र गंगाधरभट्ट भए ॥ सो वे बडे सामर्थ्यवान भए ॥ सो नित्य ब्राह्मणनकों भोजन करवावते ॥ ओर दाँन दक्षणा बोहोत देते ॥ सो गंगाधरभट्टजीनें अठ्ठाईस सोमयाग कीए ॥ तब बहुत यश भयो ॥ तब सबकोऊ कहिवे लगे ॥ जो यह तो श्रीशिवजीको अवतार हें ॥ तब एक पंडितनें कही ॥ जो शिवजीनें जटामें गंगाजी धारण कीए हें ॥ तब गंगाधरभट्टनें जटाको जूडा झटक्यो ॥ तब वामेंतें गंगाजीकी धारा बहिचली ॥ तापाछें तिनके पुत्र गणपतिभट्ट भए सो बडे उदार भए ॥ सो विन गणपतिभट्टनें तीस सोमयज्ञ कीए ॥ ओर हजारन विद्यार्थी पढाए ॥ तब विनकी बहुत बडाई भई ॥ सो तब काहूनें कही ॥ जो यह तो गणपतिजीको अवतार हें ॥ तब एक पंडित बोल्यो जो गणपतिजीको कहा काँमहे ॥ जो वे हुंडनकी बरखा करे तब हम जाँनें ॥ सो तब गणपतिभट्टनें एक जोजनके बीच

सवापेहेरताँई हुंड वरसाए ॥ सो वे एसे सामर्थ्यवान भए ॥ तिनके सुत वल्लभभट्ट भए ॥ सो वडे तेजस्वी भए ॥ सो तिनने पाँच सोमयज्ञ कीए ॥ तव तिनसों सव केहेनलगे ॥ जो यहतो सूर्यनारायणको अवतार हें ॥ सो तव काहूनें कह्यो जो रात्रमें दुपेहेर करें तव हम सूर्यनारायणको अवतार जाँनें ॥ तव विननें वारह कोसके वीचमें अर्धरात्रकेसमय दुपेहेर करिदीए ॥ तिनके पुत्र शुद्धतत्व श्रीवसुदेवजीको अवतार श्रीलक्ष्मणभट्ट परम उदय भए ॥ सो विन श्रीलक्ष्मणभट्टजीनें पाँच सोमयज्ञ कीए ॥ तव आकाशवाणी भई ॥ वानें कही ॥ जो लक्ष्मणभट्टजी तुमकों धन्य हे ॥ जो तिहारे यज्ञ हे सो श्रीपुरुषोत्तमनें भोग कीये हें ॥ जो अव तुमताँई १०० सोमयज्ञ भए ॥ सो अव आछो मुहूर्त देखिकें अग्निकी पूर्णाहुती करो ॥ जाके कुलमें सो सोमयज्ञ होइ ॥ तव ताके कुलमें साक्षात् श्रीपूर्णपुरुषोत्तमको अवतार होय ॥ सो अव तुमारे तीन पुत्र होंयगे ॥ सो तिनमें श्रीपूर्णपुरुषोत्तम प्रगट होंयगे ॥ तिनकी तुम आछी भाँतिसों जतन करियो ॥ सो तव एसी आग्या सुनिकें लक्ष्मणभट्टजीकों परम आनंद भयों ॥ तव आछो मुहूर्त देखि पुण्याहवाचन कीए ॥ ओर दसहजार ब्राह्मणनकों भोजन करवाए ॥ तव यज्ञकी पूर्णाहुती कीए ॥ तापाछें कितनेक दिनमें प्रथम पुत्र भयो ॥ तव तिनको केशवपुरी नाँम धर्यो ॥ तापाछें एकदिन लक्ष्मणभट्टजीकों स्वप्नमें युगुलस्वरूपको दर्शन भयो ॥ ओर आग्या भइ ॥ जो अव थोडेसे दिनमें आपके इहाँ श्रीपूर्णपुरुषोत्तमको प्रागट्य होयगो ॥ सो तुम यह काँकरवाडमें मति रहो ॥ कारण जो आपकी निकुंज सामुग्री ओर लीलासृष्टि वा चंपारण्यमें प्रगट भइ हे ॥ सो तातें आपको प्रादुर्भाव चंपारण्यमें होयगो ॥ एसें कहिकें श्रीठाकुरजीनें एक उपरणामें

उगार बाँधि दीओ ओर दोय माला दिये ॥ तामें एक छोटे मणिकानकी ओर एक बडे मणिकाँनकी ॥ ओर आग्या दीए ॥ जो यह छोटे मणिकानकी माला तो जब बालक प्रगट होई तब पेहेराइयो ॥ ओर बडे मणिकाँनकी माला जप करिवेकों राखियो ॥ ओर यंह उपरणाँ उढाय यह उगार मुखमें दीजो ॥ ओर तुम काँकरवाडतें वेगि चलियो ॥ सो ऐसी आग्या करिकें युगुलस्वरूप तो पधारे ॥ तब लक्ष्मणभट्टजी जागिपरे ॥ सो देखें तो स्वप्नमें जो वस्तु मिली हती ॥ सो सब ज्योकीत्यों धरी हे ॥ तब लक्ष्मणभट्टजीनें कह्यो ॥ जो ओरको स्वप्न तो मिथ्या होत हे ॥ ओर मेरो स्वप्न तो सत्य भयो ॥ सो तब स्वप्नके सब समाचार लक्ष्मणभट्टजीनें अपनी स्त्री ईलंमॉगारुजीके आगें कहे ॥ सो सुनिकें ईलंमाँगारुजी प्रसन्न होयकें कह्यो ॥ जो अब यहाँतें वेगी चलो ॥ तब लक्ष्मणभट्टजी सब कुटुंबकूं संग लेकें यात्राको मिस करिकें चले ॥ सो कछूकदिनमें प्रयागराज आए ॥ तब तहाँ तीर्थस्नान कीए ॥ ओर ब्राह्मणभोजन करायकें दक्षणा देकें आगें काशीकों चले ॥ सो कछूकदिनमें काशीमें जाय पहुँचे ॥ सो तहाँ कछूकदिन रहे ॥ तापाछें म्लेंछको उपद्रव उठ्यो ॥ तब फेरि तहाँतें चले सो भगवद इच्छातें चंपारण्यमें आये ॥ ता चंपारण्यमें चंपकके वृक्षको बडो भारी बनहे ॥ सो महा अरण्य एक जोजनके प्रमाँणमें हे ॥ तातें वाको नाँम चंपारण्य भयो हे ॥ सो तहाँ सिंह गेंडा अनेक मृग आदि तामसी जीव रेहेत हे ॥ तहाँ भीमरथी नदी हे ॥ सो तहाँ लक्ष्मणभट्टजी आप जायनिकसे ॥ सो तामसीजीवनके डरतें वे बहुत डरपे ॥ ओर घबराए ॥ सो तहाँतें कोस छे नगरचोडा गाँम हे ॥ तामें रात्रकूं जायकें वसे ॥ तब ईलंमॉगारुजीकों जाँनिपरी जो गर्भ श्रवित भयो ॥ तब लक्ष्मणभट्टजीकों ईलंमाँगारुजीनें सर्व समाचार कहे ॥ जो आपकूं

श्रीठाकुरजीकी आग्या भई हती ॥ जो श्रीपूर्णपुरुपोत्तम तुह्मारे घर प्रगटेंगे ॥ सो गर्भतो श्रवित भयो ॥ सो सुनिकें श्रीलक्ष्मणभट्टजी विचारें ॥ जो श्रीपूर्णपुरुपोत्तम हें सो तो काहूके गर्भमें आवत नाहीं ॥ जो आपकी आग्या भईहे तो आप स्वइच्छातें प्राप्त होंयगे ॥ आप लक्ष्मणभट्टजी तो ज्योतीशविद्यामें निपुण हे ॥ तातें समय देखिकें बोले ॥ जो अब यासमय पुरुपोत्तमके प्रादुर्भावके सब चिह्न दीसत हें ॥ दिशा सब प्रफुलित होय रही हें ॥ वन सब हर्‍यो दीसत हे ॥ ओर सब प्राणी कल्लोल करत हें ॥ तामें यहाँको राजा महादुष्ट हतो ॥ सोहू अपनी सरबराई करत हे ॥ ओर आपनकों हर्ष व्हे रह्यो हे ॥ सो तातें पुरुपोत्तम निश्चय प्राप्ति होंयगे ॥ एसें कहिकें पाछें सोये ॥ तब फेरि स्वप्नमें भट्टजीकों आग्या भई ॥ जो मेरो प्रागट्य तो मेरी स्वइच्छातें होयगो ॥ सो तुम ओर ईलंमॉगारुजी फेरि चंपारण्यमें आइयो ॥ सो तब अग्निकुंडमेंतें प्राप्त होऊँगो ॥ सो सुनिकें लक्ष्मणभट्टजी जागिपरे ॥ तब इलंमॉगारुजीकों जगायकें सर्व समाचार कहे ॥ ओर कहें जो अब सुनेंहें जो काशीमें यवनके उपद्रवको समाधॉन भयो हे ॥ सो सबरे परिवारसों कही जो तुम अब सब काशी जाऊ ॥ ओर हमहूं कछुकदिनमें आवेंगे ॥ एसें कहिकें सबकों बिदा कीए ॥ तापाछे आप काशी जाय वहाँ ब्राह्मणभोजन करवाय फेरि पाछे चंपारण्य आए ॥ ताहाँ देखें तो भीमरथीके तीर एक जोजनके बीचमें ४० हाथको एक अग्निकुंड आपकी इच्छातें भयो हे ॥ ताके मध्यमें चारहाथको गोल चोतरा भीमरथीकी वालुकाको भयो हे ॥ ताके मध्य कोटिकंदर्पलावण्य सुंदर एक बालक खेलत हे ॥ सो संवत् १५३५ माघोमास कृष्णएकादशी मध्यानकालसमें जेष्टानक्षत्र वृषभलग्न रविवारके दिन आपको प्रादुर्भाव भयो ॥ तासमय शेषजी सहस्रफनसों

छत्रकीसीनॉई छाया करत हें ॥ मंद मंद फुई वरसत हें ॥ सिंह गर्जना कर रहे हें ॥ सो ताहीदिन ताहीलग्न श्रीगोवर्धननाथजीको प्रागट्य हू श्रीगिरिराजमेंतें भयो हे ॥ तातें तो भूमंडलमें वडो जेजेकार भयो ॥ सो ता समय चंपारण्यमें लक्ष्मणभट्टजी ओर इलंमॉगारुजी पधारे ॥ सो विनकों वा चोतरापे कोटिकंदर्पलावण्यको दर्शन भयो ॥ तव इलंमॉगारुजीकों अत्यंत आतुरता भई ॥ जो अव मेरो पुत्र मोकों प्राप्त होयगो ॥ परि आसपास अग्नि घेरिरही हे ॥ ओर मध्यमें चोतरापे सुंदरबालक खेलत हे॥ सो तव आकाशवॉणी भई ॥ जो तुमकों अग्नि वाधा न करेगी॥ ओर मार्ग देयगी ॥ सो सुनिकें इलंमॉगारुजी अग्निकुंडके भीतर जायकें अत्यंत प्रीतिसों वालककों उछंगमें लिए ॥ तव लक्ष्मणभट्टजी दोरिकें अपने कंठसों लगाए ॥ ता समय देवताननें दुंदुभी वाजे वजाए ॥ ओर पुष्पनकी वृष्टी कीए ॥ तव ता समय श्रीकृष्णजन्मउत्सव जेसो महामहोत्सव भयो ॥ सो सव भगवदइच्छातें देवतानने कियो ॥ सो अतिशयोक्ति जानवेमें आवे तातें यहॉ नहीं केहें ॥ वंदीजन मागध भाट चारण सवकोउ उच्चार करत हें ॥ अव भीमरथीको प्रकार केहेत हें ॥ जो रत्नजडित पलनॉमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों पोढाए ॥ सो रत्नजडित मोतीनके सोनें रूपे आदि भॉतिभॉतिके खिलोंना आगें धरि श्रीलक्ष्मणभट्टजी खिलावत हें ॥ ओर स्वप्नमें जो उपरणा श्रीठाकुरजीनें दियो हतो सो श्रीअंगपें उढायो ॥ ओर वोइ ओगार श्रीमुखमें दीओ हे ॥ श्रीकंठमें माला पहराई हे ॥ सो तासमय श्रीमहाप्रभुजीको कोटिकंदर्पलावण्य मुखारविंद निरखत सव तन मन धन वारत हें॥ ओर सबजन दूध दधिके गगरा लेले झांझि मृदंग वजावत नॉचत कूदत आए ॥ तव वहॉ एक कूपहे तामेंतें श्रीनंदरायजी श्रीवृखभानजी प्रगट होय सव

मिलिकें श्रीलक्ष्मणभट्टजीकों वा चंपारण्यमें मंगल स्नान करवाए ॥ ओर वेदविधीसों जातिकर्म करवाए ॥ तब श्रीलक्ष्मणभट्टजी परम उदारता सों दॉन देवेकों विराजे ॥ तहाँ आसपास हजारन गायनके तथा भेंसनके झुंड ठुरि रहे हें ॥ जो जानें जाच्यो सो ताकों लक्ष्मणभट्टजी दीनों ॥ तब तहाँ नंदमहोत्सव अलौकिक रीतिसों भयो ॥ दही दूधकी कीच मची ॥ सो मानों सरिता वही जात हे ॥ तासमय काहूकों देहानुसंधान न रह्यो ॥ सब कोउ प्रेमविवस भये ॥ सो भगवदीय गाएहें (नाँचत गावत प्रेमविवस व्हे छाँडि लोक कुललाज ॥ भूतल महामहोत्सव आज ॥ श्रीलक्ष्मणग्रह प्रगट भए हें श्रीवल्लभ महाराज ॥ भयो जगतीपर जेजेकार) सो या प्रकारसों अनेक पद भगवदिय गाए हें ॥ सो तासमयको सुख देखेंई बने ॥ जो अनिर्वचनीय सुख भयो ॥ ओर आचार्यने यथाशास्त्र नॉमकरण करवायो ओर श्रीलक्ष्मणभट्टजीसों कहें ॥ जो आपके पुत्रके अपार गुण हें ॥ सो में कहाँताँई कहूँ ॥ ओर श्रीमहाप्रभुजीकी जन्मपत्रिका लिखिकें कही ॥ जो तिहारे पुत्रको अपार यश होयगो ॥ ओर मायामतकों ए खंडन करि भक्तिमार्गको स्थापन करेंगें ॥ ओर देवीजीवनको ऊधार करि सकल तीर्थनकों सनाथ करेंगे ॥ ओर श्रीविष्णुस्वामीमार्गके आचार्य होइगे ॥ ओर सबनकों प्रिय होंयगे तातें इनको जगतप्रसिद्ध नॉम तो श्रीवल्लभाचार्यजी होईगो ॥ ए सारस्वतकल्पकी नित्यलीला प्रगट करिकें सेवामार्ग प्रगट करेंगे ॥ जो ईनके वंशमें प्रगटेंगे ॥ सो वहुतदिन भूतलपें आचार्यपदवीसों क्रीडा करेंगे ॥ या जगतमें तीन कुल भए ॥ सो रघुकुलमें तो श्रीरामचंद्रजी प्रगटे ॥ ओर यदुकुलमें श्रीकृष्णचंद्र प्रगटे ॥ ओर तेलंगकुलमें आप श्रीआचार्यजी प्रगट भए ॥ तातें श्रीवल्लभकुल वाजेगो ॥

ए तीन्यो कुल शुद्ध कुल भए ॥ सो जोकोई ईनको स्मरण भजन करेगो तिनकों साक्षात् श्रीपुरुषोत्तमकी लीलाकी प्राप्ति होयगी ॥ आपको अरण्य (वन) में प्रादुर्भाव हे ॥ ताको हेतु यह हे ॥ जो देवतादिकनको आवनो शहरमें न होय ॥ यासों आपको प्रादुर्भाव जंगलमें भयो ॥ ओर चंपारण्यमें जो अनेक लक्षावधी देवीजीव हे ॥ तिनकों आप प्रगटे ता समें कटाक्ष-द्वारा लीलामें प्राप्त कीए ॥ ओर श्रीगुसाँईजीको हू प्रादुर्भाव चरणाटमें श्रीगंगाजीके तटपे होयगो ॥ सो तहाँ हूँ एसोई सुख होयगो ॥ सो यह जन्मपत्रिका श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी विधि-पूर्वक लक्ष्मणभट्टजीकों सुनाई ॥ तापाछें सब महामहोत्सवके दर्शन करिकें अपनें अपने स्थलकों गए ॥ तापाछें लक्ष्मणभट्टजी सब ब्राह्मणनकों बुलायकें सबनको सन्मान करि विदा किये ॥ तब श्रीनंदरायजी ओर श्रीवृषभानजीनें श्रीलक्ष्मणभट्टजीसों कह्यो ॥ जो ये पुरुषोत्तम तुमारे घर प्रगटे हें ॥ सो ईनको जतन राखियो ॥ यह आज्ञा करि सब गोपन सहित निजधाँमकों पधारे ॥ श्रीइलंमाँगारूजी बालक गोदमें खिलावत हें ॥ ओर श्रीलक्ष्मणभट्टजीसे आगें वेठें हें ॥ ओर आस पास अग्निकुंड हे ॥ तब श्रीलक्ष्मणभटजी इलंमाँगारुजीसे कहें ॥ जो येतो साक्षात् ईश्वर हे ॥ ईनकी अपार लीला हे ॥ एतो अपने उपर अनुग्रह करि-वेकों पधारे हें ॥ तातें ईनकी सेवा वनेसो करनी ॥ ईनकों पुत्र करिकें मति जाँनियो ॥ पाछें कहें जो अब यहाँतें छठ्ठीपूजन करिकें घर चलेंगे ॥ सो यह चरित्र श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप चंपारण्यनिजधामकी वेठकमें कीए हें ॥ तातें यामें मुख्य सोई लिखे हें ॥ इति श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी चंपारण्यकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ ३२ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (वेठक २३ मी) ❀

❀ (अथ श्रीचंपारण्यकी दूसरी वेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अव दूसरी वेठक श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी चंपारण्यमें हे ॥ सो तहाँ छट्ठी पूजन भयो हे ॥ सो माधवानंद करके ब्रह्मचारी काशीमें गंगाजीके तीरपे तपस्या करत हतो ॥ सो अट्ठाईसवर्ष ताँई वानें तपस्या कीनी ॥ तव श्रीगंगाजीमें तें वाणी भई ॥ जो तुमकों चहिये सो माँगि लेउ ॥ तव माधवानंदब्रह्मचारीनें कह्यो ॥ जो मोकों तो व्रजलीलाको दर्शन करवावो ॥ तव विनकों आज्ञा भई ॥ जो अव तुम चंपारण्यकों वेगि जाओ ॥ तहाँ साक्षात् श्रीपूर्णपुरुषोत्तमको प्रादुर्भाव भयो हे ॥ सो तहाँ तुमकों लीलाके दर्शन होंइगे ॥ ओर मुकुंददाससंन्यासी पुष्करजीमें हते ॥ सो वेश्रीभागवतको पाठ नित्य करते ॥ तिनहूँकों आज्ञा भई तुम वर मांगो ॥ तव वाने कह्यो ॥ जो मोकों व्रजलीलाके दर्शन करवावो ॥ तव आज्ञा भई जो लक्ष्मणभट्टजीके घर श्रीपुरुषोत्तमको प्रादुर्भाव भयो हे ॥ तातें तुम चंपारण्यकों वेगि जाओ ॥ सो तव वेठ चंपारण्यमें आए ॥ तव नंदमहोत्सव तो होयगयो हतो ॥ पाछें माधवानंदब्रह्मचारीनें लक्ष्मणभट्टजीकों जोतिषविद्या पढाई ॥ पाछें माधवाचार्यब्रह्मचारी ओर मुकुंददाससंन्यासीनें अपनों सव वृत्तांत लक्ष्मणभट्टजीके आगें कह्यो ॥ तव लक्ष्मणभट्टजीने कह्यो जो प्रागट्यसमें अनिर्वचनीय आनंद भयो हतो ॥ अव छट्ठीपूजन होयगो ॥ सो तव तुम आपतें वीनती करियो जो आपकी ईच्छा होयगी तो दर्शन करवावेंगे ॥ तव छट्ठी पूजनके समय लक्ष्मणभट्टजी चंपारण्यकुंडपे एक चंपाके वृक्षके नीचे ईलंमॉगारूजीसहित पूजन कीए ॥ सो तासमय माधवानंद ओर मुकुंददास दोनों आए ॥ सो विननें श्रीआचार्यजीकों दंडवत कीए ॥ ता समें श्रीइलंमाँगारूजीकी गोदमें कोटीकंदर्पलावण्य विराजतहे ॥ सो

अपनें विन दोनोनकी इच्छा जानि वा समय ईन दोऊनकों व्रजलीलाके दर्शन करवाए ॥ जो गोपगायनसहित श्रीगिरिराज, श्रीयमुनाँजी, श्रीवृंदावन ओर व्रजलीला स्थलनके उहाँ छट्ठीकी वेठकमें दर्शन करवाए ॥ तव माधवानंद ओर मुकुंददास ए दोनों लीलामें प्राप्त भये ॥ तापाछें लक्ष्मणभट्टजी ओर माता इलंमाँगारुजी श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों पधरायकें नगरचोडामें पधारे ॥ तव राजानें वहुत सन्मान कियो ॥ ओर वीनती करी ॥ जो चार दिन ईहाँ विराजिये ॥ तव लक्ष्मणभट्टनें कही ॥ जो मेरे अव काशी जायवेकी तागीद हे ॥ तातें तुम जावतो करिदेऊ तो ठीक हे ॥ तव राजानें म्याँनो ओर असवारीगाडी ओर दोय पहरा संग करिदीए ॥ ओर विन जावतावारेनसों राजानें कह्यो ॥ जो तुम ईनकों ठेठ काशी पहुँचायकें लक्ष्मणभट्टजीतें पत्र लिखाईकें आइओ ॥ तव लक्ष्मणभट्टजी श्रीमहाप्रभुजीकों लेकें काशी पधारे ॥ सो केतकदिनमें काशी जाय पहुँचे ॥ सो तव परम आनंद जेजेकार भयो ॥ सो यह चरित्र श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप चंपारण्यकी दूसरी वेठकमें प्रगट कीए ॥ ओरतो अनेक कीए परंतु मुख्य हें ॥ सोई लिखे हें ॥ इति चंपारण्यकी दूसरी वेठकको चरित्र समाप्त ॥ ३३ ॥

❀ (वेठक ३४ मी) ❀

❀ (अथ श्रीजगन्नाथपुरीकी वेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अव श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप श्रीजगन्नाथदेवके दर्शन करिवेकों पुरुपोत्तमक्षेत्र पधारे ॥ सो तहाँ पुरुषोत्तमक्षेत्रमें दक्षणदरवाजेके पास आपकी वेठक हे ॥ सो तहाँ आप एकवर्षताइ विराजे ॥ तव तहाँके राजा विष्णुदेवके वहाँ पंडित वहुत रहते तिनसों वानें प्रश्न कियो ॥ जो सव देवनमें मुख्यदेव कोंन हे ॥ ओर मंत्रनमें मुख्यमंत्र कोंनसो हे ॥ ओर शास्त्रनमें मुख्यशास्त्र कोंनसो हे ॥ ओर कर्मनमें मुख्यकर्म

कोंनसो हे ॥ सो ए चार प्रश्न कीए ॥ तब जो जीव जा देवताको उपासक हतो ॥ वह ताही देवताकों मुख्य बतावे ॥ ओर मंत्र वारो अपनें मंत्रकों मुख्य बतावे ॥ सो तातें वा राजाकों संदेह न जाय ॥ कोउ पंडित एक बात निश्चे करिकें न कहें ॥ तब यह विचारिकें राजा अपनें पंडितनकों लेकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके दर्शनकों आयो ॥ तब आईकें दंडवत करिकें बेठ्यो ॥ ओर बिनती करी ॥ जो महाराज आपतो साक्षात् ईश्वर हो ॥ आपनें मायामत खंडन कीयो हे ॥ ओर आप दिग्विजय कीए हो ॥ तातें एक मेरो संदेह हे ॥ ताकों आप कृपा करिकें निवृत्त करो ॥ ए पंडित तो सब अपनें अपनें मतके अनुसार केहेत हें ॥ तातें आप निश्चे सिद्धांत कहो ॥ जो कोंन मुख्य हे ॥ तब वा राजाके वचन सुनिकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप अपनें मनमें विचारें ॥ जो यासों शास्त्रसिद्धांत कहेंगे ॥ सो तो यह मनमें न लावेगो ॥ ओर जानेगो जो यह विष्णुउपासक हें ॥ तातें विष्णुको उत्कर्ष कहेत हें ॥ जेसें पंडित अपनें मतके अनुसार केहेत हें ॥ तेसें एउ अपनें मतके अनुसार केहेत हें ॥ तातें या राजाको संदेह निवारण न होयगो ॥ सो याकों श्रीजगन्नाथजीको विश्वास हे ॥ तातें यासों जगन्नाथदेवके मुखसों कहवावनों ॥ तब ए प्रमाँण करेगो ॥ असो निश्चे करि श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप वा राजाकों आज्ञा कीए ॥ जो जगन्नाथदेवके आगें एक कोरो कागद ओर लेखन द्वात धरो ॥ सो जो श्रीजगन्नाथरायजी आप लिखि देय सो प्रमाँण हे ॥ तब यह सुनिकें वह राजा बहुत प्रसन्न भयो ॥ तब वानें श्रीजगन्नाथजी देवके आगें एक कोरो कागद ओर लेखन द्वात धरिकें वीनती करी ॥ जो महाराज कर्म ओर मंत्र शास्त्र ओर मुख्य देव होयसो आप कृपाकरि लिखि देऊ ॥ एसें कहके

मंदिरकों तारो मारि बाहिर आय बेठ्यो ॥ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी आज्ञा जाँनि श्रीजगन्नाथरायजी आप एक श्लोक लिखि दिए ॥ सो श्लोक ॥ (एकं शास्त्रं देवकीपुत्रगीतं, एको देवो देवकीपुत्र एव ॥ मंत्रोऽप्येकस्तस्य नामानि यानि कर्माप्येकं तस्य देवस्य सेवा ॥ १ ॥) सो जब श्रीजगदीश लिखिचूके ॥ तब श्रीआचार्यजी आप जाँने ॥ तब आप राजासों कहे ॥ जो. अब तुम जायकें वह कागद उठाय लावो ॥ सो तब राजा जायके मंदिरको तारो किंवाड खोलिकें वा कागदकों उठाय लायो ॥ सो पंडितनकों बचवायो ओर राजानें आप बाँच्यो ॥ तब सबनको संदेह निवृत्त भयो ॥ तब राजानें कह्यो जो धन्य श्रीवल्लभाचार्यजी हें ॥ जो जिनके कहेमें श्रीजगन्नाथरायजी हें॥ सो जेसें आप कहें ॥ तेसें श्रीजगदीश लिखि दीए ॥ तापाछें उन ब्राह्मणनमें एक बहिर्मुख हतो ॥ सो वह निराकार मायावादी हतो ॥ वानें अनेक प्रश्न कीए ॥ तापाछें वानें कह्यो ॥ जो श्रीजगन्नाथदेवके हाथ नहीं हें ॥ सो विननें पत्र केसें लिख्यो होइगो ॥ तातें हमारे यह लिख्यो प्रमाँण नहीं हे ॥ तब यह सुनिकें श्रीआचार्यजी आप कहें ॥ जो यह बडो मूर्ख हे ॥ जो श्रीजगन्नाथदेवके हाथ नहीं हें तो आप आरोगत काहेसों हें ॥ याप्रकार वाकों समुझाए ॥ परंतु वह तो माँने नाहीं ॥ ओर वारंवार पूर्वपक्ष करे ॥ तब वा राजानें श्रीआचार्यजीसों वीनती करिकें कही जो महाराज ओर सबनको तो संदेह निवृत्त भयो हे ॥ परंतु याको संदेह निवृत्त नहीं भयो ॥ तब श्रीआचार्यजी आप कहें ॥ जो अब फेरि श्रीजगन्नाथजीके आगें द्वात कलम कागद धरो ॥ सो आप लिखि देयगे ॥ तब फेरि कागद द्वात लेखन श्रीजगदीशके आगे धरे ॥ ओर किंवाड लगाए ॥ तब फेरि श्रीजगन्नाथजीनें पूर्ववत आधो श्लोक लिखि

दीयो ॥ सो श्लोक (यः पुमान् भगवद्वेषी तं विद्यादन्यरेतसम्) सो क्षणमात्र पीछें मंदिर खुलवायकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु वह कागद मँगायकें राजाकों वचवायो ॥ तामें यह लिखे ॥ जो-पुरुष भगवानको द्वेषी होय ॥ सो वह ओरको वीर्य जाननों ॥ वह अपनें पितासों उत्पन्न नहीं हे ॥ तापाछें राजानें वा ब्राह्मणकी माता बुलवाइ ॥ ताकों एकांतमें लेजायकें भय दिखाईकें पूछी ॥ जो तू साँच कहि ॥ जो यहा तेरो पुत्र कोंनसों उत्पन्न भयो हे ॥ तब वानें डरपिकें सब बात कहिदई ॥ जो यह एक म्लेच्छतें पेदा भयो हे ॥ सो सुनिके वा राजानें वह ब्राह्मण पुरितें बाहिर कढवाय दीयो ॥ क्यों जो वानें भगवद्आज्ञा न माँनी ॥ तब पुरुषोत्तमपुरीमें जेजेकार भयो ॥ सो तब श्री-आचार्यजीमहाप्रभुनको दिग्विजय विख्यात भयो ॥ सो पुरुषो-त्तमक्षेत्रकी वेठकमें श्रीआचार्यजी आप यह चरित्र दिखाए ॥ पाछें तीनवेर श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप श्रीजगन्नाथपुरीमें पधारे ॥ सो तीन्यो वेर आपनें न्यारे न्यारे चरित्र दिखाए हें ॥ परंतु मुख्य हे ॥ सोई लिखे हें ॥ इति श्रीआचार्यजीकी श्रीपुरु-षोत्तमक्षेत्र श्रीजगन्नाथपुरीकी वेठकको चरित्र समाप्त ॥ २४ ॥

❀ (वेठक २५ मीं) ❀

❀ (अथ श्रीपंढपुरकी वेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब पंढरपुरक्षेत्रमें भीमरथीके तीर श्रीआचार्यजीमहाप्रभु-जीकी वेठक हे ॥ सो एक समय श्रीआचार्यजीमहाप्रभु पांडु-रंग श्रीविठ्ठलनाथजीके दर्शन करिवेकों पधारे ॥ तब भीमरथीके तीर आप विराजे ॥ ओर सेवकानकों आज्ञा कीए ॥ जो एक नाव भारे करिकें लावो ॥ सो वा पार दर्शनकों चलेंगे ॥ तब इतनेमें श्रीविठ्ठलनाथजी आप पाँचवर्षके एक ब्राह्मणके वालक-कोस्वरूप धरिकें ॥ पुंडरीक भक्तकों साथ लेकें भीमरथीके पार

आईकें आप श्रीआचार्यजी निकट आय मिले ॥ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुहू ऊठिकें मिले भेटे ॥ फिर एक पट्टा विछाय दियो ॥ तापे आप श्रीविठ्ठलनाथजी विराजे ॥ तब श्रीआचार्यजी आप कहें ॥ जो आपकों वहुत श्रम भयो हे ॥ मेंतो आपके दर्शनकों आवतही हतो ॥ तब श्रीविठ्ठलनाथजी कहें ॥ जो मेंतो मित्रताकों प्रथम प्रगट कियो हूं ॥ जो मित्र आवे ताके सामें जायकें मिलनों ॥ सो सुनिकें आप श्रीआचार्यजी वहुत प्रसन्न भए ॥ ओर निकटकी मिश्री भोग धरिकें अवीरसों खिलाए ॥ सो पांडुरंगमाहात्म्यमें कथा हे ॥ ओर भविष्योत्तर पुराणमेंहुँ कहे हें ॥ जो पुंडरीक नाँम करिकें एक ब्राह्मण हतो ॥ सो वह अपनें माता पिताकों बहुत दुःख देतो ॥ तब एकसंग वाके गाँमतें श्रीगंगाजी नहाइवेकों चल्यो ॥ सो ता संगमें यह पुंडरीकहू चोरीके लालचतें चल्यो ॥ सो तीनमजलताँइ तो वो आयो ॥ तब मारगमें संगतें विच्छुर्‍यो सो भूलिपर्‍यो ॥ सो जब रात्र परिगई ॥ तब वहाँई जंगलमेंहीं सोयरह्यो ॥ सो जब चारघडी रात्र वाकी रही ॥ तब वह जाग्यो ॥ सो एक स्थलपे बेठ्यो हतो ॥ तब वानें दोय स्त्री नखतें शिखपर्यंत भूषण भूपित सोनेंके कलश भरिकें वाके आगें होयकें निकसी ॥ तब वानें विनसों पूछी ॥ जो तुम कोन हो ॥ ओर कहाँ जात हो ॥ तब उनमेंतें एक बोली ॥ जो हम श्रीगंगाजी हें ॥ ओर यह श्रीयमुनाजी हें ॥ सो एक ब्राह्मण अपनें माता पिताकी सेवा करत हे ॥ वाकों सेवामेंतें गंगाजी स्नानको अवकाश नहीं होत हे ॥ तातें हम वाकों उहाँई वाके घर स्नान करायवे जात हें ॥ जो माता पिताकी सेवा करतहे ताकों घरहीमें गंगाजी स्नानको फल मिलत हे ॥ ताको प्रमाँण कहे हें ॥ श्लोक ॥ ('माता गंगा समं तीर्थं पिता पुष्करमेव च ॥ गुरुः केदार-

तीर्थं च माता तीर्थं पुनः पुनः ॥ १ ॥) सो ईतनों कहिकें श्रीगंगायमुनाजी तो अंतर्धान भई ॥ तब वा पुंडरीककों ज्ञान उत्पन्न भयो ॥ तब वानें विचार्‍यो ॥ जो माता पिताकी सेवा-को एसो प्रताप हे ॥ तो अब तो मेंहूं माता पिताकी सेवाही करूंगो ॥ एसें विचारिकें वो पाछो अपनें घर आयो ॥ तब वाके माता पिता वाकों देखिकें बहूत खेदयुक्त भए ॥ जो दुष्ट दुःख देवेकों फेरि आयगयो ॥ ए दुष्ट दोयदिनतें कहूँ गयो हतो सो सुखी हते ॥ ता समें घरमें आवतेंही वा पुंडरीकनें अपनें माता पिताकों दंडवत करी पाँऊँ छीए ॥ पाछें परिक्रमाँ करि-कें माता पितासों कही ॥ जो आजताँइके मेरे सर्व अपराध क्षमा करो ॥ अब में आपकी सेवा करूँगो ॥ तापाछें [illegible]नें बहुतवर्ष ताँइ अपनें माता पिताकी अनन्यभावसों सेवा करी ॥ सो एसी दीनतासों सेवा करत बारह वर्ष होयगए ॥ तब एकदिन श्रीभगवान् आप व्यापिवैकुंठमें श्रीलक्ष्मीजीसों कहें ॥ जो मेरो एक भक्त भूमिऊपर भयो हे ॥ सो वाकों दर्शन देवेकों में वहाँ जात हूँ ॥ वह माता पिताकी सेवा बहुत दिननसों करत हे ॥ तातें वाकों आयकें अवकाश नहीं हे ॥ तब श्री-लक्ष्मीजीनें कह्यो ॥ जो वा भक्तके दर्शन मेंहूं करूँगी ॥ तब श्रीलक्ष्मीजी ओर श्रीठाकुरजी युगलस्वरूपतें आप भूलोकमें पंढरपुर पधारे ॥ तब तहाँ वह पुंडरीक माता पिताकी सेवा करत हतो ॥ वाके घर पधारिकें द्वारपे ठाडे रहे ॥ ओर वाको नॉम लेकें आप कहें ॥ जो तेनें अपनें माता पिताकी सेवा बहुत करी हे ॥ तातें तोकों दर्शन देवेकों हम वैकुंठतें यहाँ आए हें ॥ सो तातें अब तुं हमारो दर्शन करी ॥ तब वानें भीतरतेंही ज्वाब दियो ॥ जो महाराज एक चरण तो पिताको दाबिचुक्योहूं ॥ दूसरो चरण दाबिकें आपके दर्शन करूँगो ॥

एसं कहिकें वानें दूसरे हाथसों एक ईट फेकीदई ॥ ओर कही जो महाराज आप यापे विराजो ॥ तापाछें माता पिताकी सब सेवा करि आज्ञा लेकें वा पुंडरीकनें आयकें श्रीठाकुरजीकों दंडवत करी ॥ तब श्रीठाकुरजी आप कहें ॥ जो में तेरी भक्ति देखिकें बहुत प्रसन्न भयो हूं ॥ तातें तूँ कछू वरदाँन माँगि ॥ तब यानें कह्यो ॥ जो महाराज मोपे कृपा करीहे तो मोकों तीन वरदाँन देउ ॥ तामेको १ तो आप मेरे घर सदाँ विराजो ॥ २ महाराज पेहेलें मेरो नाँम होय तापाछें आपको नाँम होय ॥ ३ श्रीगिरिराज तथा श्रीगोकुल चोरासीकोस व्रजमंडलमें आप क्रीडा करो हो सो वा बाललीलाके दर्शन मोकों होय ॥ सो एसी तीनवात वानें माँगी ॥ तब श्रीविठ्ठलनाथजी आप आज्ञा किये जो तथास्तु ॥ एकमन्वंतरताँइ में तेरे घरमें विराजूँगो ॥ ओर पेहेलें तेरो नाँम होयगो ॥ ओर पछिं मेरो नाँम होयगो ॥ सो पाँडुरंग श्रीविठ्ठलनाथजी यह नाँम जगतमें प्रसिद्ध होयगो ॥ जो कोई या तेरी पुरीमें आवेगो ओर मोसों मिलेगो ॥ सो केसोउ पापी होयगो परंतु फेरि यमकी पुरी न जायगो ॥ ओर गोप मंडलीमें स्थापन होयगो ॥ ओर जो व्रज लीलाको दर्शन तेनें माँग्यो ॥ सो अठ्ठाईसचोकडी पाछें श्रीवल्लभाचार्यजी यहाँ पधारेंगे ॥ तब उनसों में कहूँगो ॥ सो तब तोकों वे व्रजलीलाके दर्शन करावेंगे ॥ एसो आपनें पुंडरीककों वरदाँन दियो ॥ तातें वहाँ अबताँइ लोग गाँन करत हे ॥ जो (पुंडरीक वरदा हरिविठ्ठल) तापाछें वा पुंडरीक भक्तके माता पितानकों सदेह वैकुंठकों श्रीविठ्ठलनाथजीनें पठाय दीए ॥ ओर आप श्रीलक्ष्मीजी सहित वाके घर पधारे सो वाके घरहीमें विराजे ॥ सो पुंडरीक ब्राह्मण सेवा करत हो ॥ सो अब अठ्ठाईसचोकडी पाछें श्रीआचार्यजी आप पधारे ॥ तब श्रीवि

ठ्ठलनाथजीनें कह्यो ॥ जो यह मेरो भक्त पुंडरीक हे ॥ याकों व्रजकी लीलाके दर्शन करिवेकी अभिलाखा हे ॥ सो याकों मेनें प्रथमही वर दियो हे ॥ जो तोकों श्रीवल्लभाचार्यजी द्वारा व्रजलीलाके दर्शन करावेंगे ॥ सो तातें अब आप याकों व्रज लीलाके दर्शन करवावो ॥ तब श्रीआचार्यजी कहें ॥ जो आपही याकों व्रजलीलाके दर्शन क्यों न कराए ॥ तब श्रीविठ्ठलनाथजी कहें ॥ जो यह अधिकार तो आपकों हमनें दियो हे ॥ जो व्रजलीलाके अधिष्ठाता तो आप हो ॥ सो आपकी कृपाविन व्रजलीलाके दर्शन न होंई ॥ सो जब आप अनुग्रह करो तबही होंय ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आपु मुसिकायकें कही जो जो आपकी आग्याहे सो करेंगे ॥ पाछें श्रीविठ्ठलनाथजी आप पुंडरीक सहित अपनें मंदिरमें पधारे ॥ तब श्रीआचार्यजी आप श्रीविठ्ठनाथजीके मंदिरमें पधारिकें सेवा सिंगार करी सात मोहोर जो कृष्णदेवराजाकी भेटमेंतें देवद्रिव्यकी लीनी हती ताके नूपुरु अंगिकार करवाए ॥ तापाछें श्रीआचार्यजी आप पुंडरीक भक्तकों संग ले ओर पांच वैष्णव आपके संग हते तिन सहित आप पुरीके बाहिर एक योजनके बीचमें अरण्यवन हतो ॥ तहाँ पधारे ॥ सो तहाँ एक पीपरको वृक्ष हतो ॥ ताके नीचें आप आसन डारिकें विराजे ॥ तब पुंडरीकके नेत्रनमें संध्योपासनकें जलके छींटा लगाए ॥ तातें वाके दिव्यनेत्र होइगए ॥ तब वाकों व्रजलीलाके दर्शन होनलगे ॥ जो श्रीयमुनाजी, श्रीगिरिराज, श्रीगोकुल, श्रीवृंदावन, श्रीमथुरामंडल, वृजचोरासीकोस, बारह वन ओर बारह उपवन, श्रीनंदराय, यशोदाजी, गोपी, ग्वाल, संपूर्ण व्रजलीलाके दर्शन भए ॥ सो दोयमुहूर्त तॉई वाकों दर्शन करवाए ॥ तापाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप वाके दिव्यचक्षु हते ॥ सो तिरोधॉन

कीए ॥ तब वाकों सब लीला अदृश्य भई ॥ तब वानें वीनती करी ॥ जो महाराज मेंतो वडो सुखमें हतो सो वा सुखमेंते मोकों क्यों काढे ॥ तब श्रीआचार्यजी आज्ञा कीए ॥ जो तोकों श्रीविठ्ठलनाथजीकी सेवा करनी हे ॥ तोकों तो केवल दर्शन करायवेकी आज्ञा हती ॥ तातें तोकों दर्शन करवाए ॥ अब आप श्रीविठ्ठलनाथजी ईकोत्तरचोकडीलों या क्षेत्रमें विराजेंगे सो तब तॉई तेरो एसोही स्वरूप रहेगो ॥ पाछे तूं विनके संग वा लीलामें आवेगो ॥ एसें कहिकें आपनें वाकूं श्रीविठ्ठलनाथजी के निकट पठायो ॥ सो यह चरित्र श्रीआचार्यजीमहाप्रभु पुंडरीकश्रीविठ्ठलनाथमें प्रगट कीए हें ॥ ओर तो अनेक कीए परंतु यामें मुख्य हें सोई लिखे हें ॥ इति श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी पांडुरंग श्रीविठ्ठलनाथजीकी वेठकको चरित्र समाप्त ॥३५॥

❀ (वेठक ३६ मी) ❀

❀ (अथ श्रीनासिकके तपोवनकी वेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी वेठक नासिकके तपोवनमें पंचवटीमें हे ॥ सो तहॉ श्रीआचार्यजी आप दामोदरदासतें आज्ञा कीए हे ॥ जो यहॉ श्रीरामचंद्रजीनें तपस्या कीए हे ॥ ओर श्रीसीताजीको हरण इहाईतें भयो हे ॥ तातें यहॉहू श्रीभागवतकी सप्ताह करेंगे ॥ या गॉममें मायावादी वहुत हें ॥ तातें मायामतको खंडन करि भक्तिमार्गको स्थापन करेंगे ॥ ऐसें कहकें आप तहॉ कछुकदिन विराजे ॥ तब सब पंडितननें सुनी ॥ जो यहॉ तपोवनमें श्रीवल्लभाचार्यजी पधारे हें ॥ विननें दक्षिण तथा काशीमें मायामतको खंडन करिकें भक्तिमार्गको स्थापन कीओ हे ॥ ओर विष्णुसंप्रदायको अंगीकार कीए हें ॥ ओर सुनत हें जो अग्निकुंडमेते आपको प्रादुर्भाव भयो हे ताते अग्नितें अधिक तेज आपमे हे ॥ सो दर्शनतो करे

परि चर्चा केसें होयगी ॥ तब विन पंडितनमेंतें एक पंडितनें कही ॥ जो आपुनमेंतें चारि जनें एकमतो करिकें चलोगे ॥ तब मायावाद स्थापन होयगो ॥ ओर भक्तिमार्ग असत्य होयगो ॥ ओर जो कदाचित् मायावादको खंडन भयो ॥ ओर भक्तिमार्गको स्थापन भयो ॥ क्यों जो वे वडे वडे देशनमें दिग्विजय करिकें पधारे हें ॥ सो तो साक्षात् ईश्वर विनाँ यह कार्य न होय ॥ तो ईश्वरके आगें हारिवेकीहू कछु चिंता नाँही हे तातें तुम डरपो मति ॥ सो सूनिकें वे मायावादी श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके पास आए ॥ ता समय श्रीआचार्यजी आप सप्ताह करिचुके हते ॥ तब वे नासिकके पंडित आए ॥ तिनकों श्रीआचार्यजीनें सत्कार करिकें बेठारे ॥ तब विन पंडितननें कही ॥ जो महाराज हमारो धन्य भाग्य जो आपको दर्शन भयो ॥ तापाछें विनसुं आपकी चर्चा भई ॥ सो घडीचारमें आप श्रीआचार्यजीनें विन सब पंडितनकों निरुत्तर कीए ॥ तब सब पंडितननें आपुसमें कही ॥ जो येतो वेद शास्त्रको निरूपण करत हे ॥ सो एतो ईश्वर हे ॥ तातें विनने वीनती करी जो हम धन्य हें ॥ जो आप ईश्वरको दर्शन हमकों भयो ॥ सो अब आप कृपा करिकें हमकों शरण लीजिये ॥ तब श्रीआचार्यजी आप कहें ॥ जो तुम रुद्राक्ष उतारिकें श्रीगंगाजीमें स्नान करि आवो ॥ क्यों जो हमारे संप्रदायमें तुलसीमाला धारणकी आवश्यकता हे ॥ तब सब ब्राह्मण रुद्राक्ष उतारिके स्नान करि आए ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें सबनको नॉम सुनाए ॥ ओर तुलसीकी माला पहराई ॥ तब मायामतको खंडन करि भक्तिमार्गको स्थापन कीए ॥ तातें नासिकक्षेत्रमें जेजेकार भयो ॥ तापाछें सब पंडित दंडवत करिकें अपनें घरकों गए ॥ तापाछें श्रीआचार्यजी आप कटाक्षद्वारा

अनेक तामसी जीवनको अंगीकार कीए ॥ पाछें कछूकदिन वि-
राजित तहाँतें विजय कीए ॥ सो दक्षिणकों पधारे ॥ सो यह च-
रित्र श्रीआचार्यजीमहाप्रभु नाशिक पंचवटीकी वेठकमें प्रगट
कीयो ओरहू अनेक चरित्र कीए ॥ परंतु मुख्य हें ॥ सोई लिखे
हें ॥ इति श्रीपंचवटीकी वेठकको चरित्र समाप्त ॥ ३६ ॥

❀ (वेठक ३७ मी) ❀

❀ (अथ श्रीपनाँनृसिंहजीमेंकी वेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी वेठक पन्नानृसिंघजीमें हे ॥
सो तहाँ एक छोंकरके नीचें आप विराजे ॥ सो तहाँ श्रीआ-
चार्यजीके पास श्रीनृसिंघजी पधारे ॥ तब श्रीआचार्यजीमहा-
प्रभु ठाढे होयकें नमस्कार कीए ॥ ओर कहें ॥ जो श्रीनृसिं-
हाय नमः ॥ ओर आप वीनती कीए ॥ जो आप परिश्रम
करिकें इहाँ क्यों पधारे ॥ मंतो आपके दर्शनके लीयेही आयो
हूँ ॥ सो अवही मंदिरमें आवत हतो ॥ तब श्रीनृसिंघजी कहें ॥
जो मित्रको यही धर्म हे ॥ जो मित्र पधारे पीछें धीरज केसें
रहे ॥ आप तो हमारे सर्वस्व हो ओर आपको प्रागट्य तो
देवीजीवनके उद्धारार्थ ॥ ओर सकल तीर्थनकों सनाथ करणार्थ
हे ॥ तातें यह मेरी आज्ञा हे ॥ वेगि मंदिरमें पधारिए ॥
सो यह आज्ञा करिकें श्रीनृसिंघजी आप मंदिरमें पधारे ॥ तब
श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप कृष्णदासमेघनसों आज्ञा कीए ॥
जो मिश्रीको पणा सिद्ध करो ॥ वामें सुगंध गुलाबजल पध-
रावो ॥ तब दामोदरदास वीनती कीए ॥ जो महाराज श्रीनृ-
सिंघजी पणाही आरोगें ताको कारण कहा ॥ तब श्रीआचार्यजी
आप आज्ञा कीए ॥ जो श्रीनृसिंघजी प्रगट होतही युद्ध करि
हिरण्यकश्यपुकों मारे ॥ तब आपकों वहुत श्रम भयो ॥ तब पणा
श्रम निवारक हे सो आप आरोगे ॥ तातें आपकों पणा वहुत

प्रिय हे ॥ सो यह आज्ञा करी श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप पणा सिद्ध करवाए ॥ पाछें सब सेवकन सहित आप मंदिरमें पधारे ॥ सो तब तहाँ एक पंड्या श्रीनृसिंघजीको कृपापात्र हतो ॥ तासों श्रीनृसिंघजी आज्ञा कीए ॥ जो श्रीआचार्यजी पधारें हें ॥ सो वे साक्षात् श्रीपूर्णपुरुषोत्तमको अवतार हें ॥ तातें भक्ति रीतिसों विनकों मंदिरमें पधराय लावो ॥ तब वा पंडानें जायकें साष्टांग दंडवत करी ॥ ओर वीनती करी ॥ जो महाराज आप मंदिरमें पधारिए ॥ सो तब श्रीआचार्यजी मंदिरमें पधारे ॥ सो श्रीनृसिंघजीके दर्शन कीए ॥ ओर पणा आरोगाए ॥ तब श्रीनृसिंघजी आप आधो पणा आरोगे ॥ ओर आधो रहिवेदीए ॥ तब श्रीआचार्यजी वीनती कीए ॥ जो मित्रताकी अधिकता कहा ॥ तब श्रीनृसिंघजी ओर आरोगे ॥ पाछें थोरोसो रह्यो सो आपकों दियो ॥ तापाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु श्रीनृसिंघजीकी आज्ञा लेकें अपनी वेठकमें पधारे ॥ सो तहाँ श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप सप्ताह कीए ॥ सो तहाँ श्रीनृसिंघजी सुनिवेकों पधारे ॥ तब श्रीआचार्यजी आप कहें ॥ जो आप परिश्रम करि काहेकों पधारे ॥ तब श्रीनृसिंघजी कहें ॥ जो आपके श्रीमुखतें कथा सुनिवेकी वहुत अभिलाखा हती ॥ तातें अब समो पायो हे ॥ सो तब ए वचन सुनिकें आप श्रीआचार्यजी वहुत प्रसन्न भए ॥ तब आप कृष्णदासमेघनसों आज्ञा कीए ॥ जो एक पट्टा पास विछायदेऊ ॥ तब कृष्णदासने एक पट्टा विछाय दियो ॥ तापर श्रीनृसिंघजी विराजे ॥ सो जहाँ तांई सप्ताह भई ॥ तहाँताँई आप श्रीनृसिंहजी नित्य पधारें ॥ तहाँ श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप अपनें चरणारविंदकी रजद्वारा अनेक तामसी जीवनको उद्धार किए ॥ तापाछें आप श्रीनृसिंघजीकी आज्ञा माँगि तहाँतें विजय कीए ॥

सो दक्षिण पधारे ॥ सो यह चरित्र श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप पणाँन्दसिंघजीकी बेठकमें प्रगट कीए ॥ ओर तो अनेक कीए ॥ परंतु मुख्य हें सोई लिखे हें ॥ इति श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी पनान्दसिंघकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ ३७ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (बेठक ३८ मी) ❀

❀ (अथ श्रीलक्ष्मणबालाजीकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀.

जब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप श्रीलक्ष्मणभट्टजी सहित काशीमें बिराजत हते ॥ तब तहाँ बहुत पंडित श्रीआचार्यजीसों चर्चा करिबेकों आवते ॥ तब सबनकों आप निरुत्तर करते ॥ ओर लक्ष्मणभट्टजी आप ब्राह्मण भोजनकरिबेकों बुलावते ॥ तब वे श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों वाद झगडो करते ॥ तब श्रीआचार्यजी आप सबनके मायावादको निरास करि भक्तिमार्ग स्थापन करते॥ सो एकदिन श्रीआचार्यजी आप बिचारें जो अब दक्षणकों चलें तो ठीक हे ॥ परंतु श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों लक्ष्मणभट्टजी-को बहुत स्नेह हतो ॥ जो वे क्षण मात्र न देखें ॥ तो उनसों रह्यो न जाय ॥ तब श्रीआचार्यजी आप मनमें बिचारे ॥ जो पृथ्वीपरिक्रमाँको मिस करि सकल तीर्थ सनाथ करने हें ॥ ओर दसो दिशनमें दिग्विजय करि ब्रह्मवादको स्थापन करनों हे ॥ सो तो स्वतंत्रता बिनु यह कार्य न होई ॥ ओर पिताको तो स्नेह बहुत हे ॥ तातें अकेले परदेश जायबेकी तो वे आज्ञा न देइगे तातें अब तो श्रीलक्ष्मणभट्टजी तो स्वधाँमको पधारें तो आछो ॥ तब एकदिन श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप पित्तृचरण श्रीलक्ष्मण-भट्टजीसों कहें ॥ जो पिताजी श्रीलक्ष्मणबालाजी होयकें अब काँकरवाडकों चलेंतो ठीक हे ॥ तब श्रीलक्ष्मणभट्टजी बहुत प्रसंन होय कछुकदिनबाद सब कुटुंब सहित श्रीलक्ष्मणबाला-जीमें आए ॥ सो तहाँ एक सुंदर जगे देखिकें बिराजे ॥ सो

लीये ईहाँ आयेहि हतो ॥ सो मंदिरमें अवही आवतो ॥ तव श्रीरंगजी आप आज्ञा कीए ॥ जो आप परिश्रम करि ईतनी दूरसों आए हो ॥ ओर हम ईतनी दूर आये सो यामें कहा वडीवात हे ॥ आप काहेकों भूतलपे पधारते ॥ एतो आप देवीजीवनके उद्धारार्थ पधारे हो ॥ ओर श्रीनाथजीके प्रागट्यके सर्व समाचार श्रीरंगजीनें आपसों पूछे ॥ जो कोन रीतिसों आप श्रीनाथजी प्रगटे हें ॥ ओर कहा कहा चरित्र कीए हें ॥ ओर कोन भाँतिसो विराजत हें ॥ सो आप सब विस्तारपूर्वक कहिये ॥ तव श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप श्रीनाथजीके प्रागट्यकी सर्व वार्ता श्रीरंगजीकों सुनाए ॥ सो सुनिकें श्रीरंगजी वहुत प्रसन्न भये ॥ तापाछें श्रीरंगजीनें कही ॥ जो अव मंदिरमें पधारिए ॥ तव श्रीआचार्यजी आप कहें ॥ जो आप पधारिए ॥ मेंहूँ पाछेतें आवतहूं ॥ तव श्रीरंगजी आप मंदिरमें पधारे ॥ ओर मुखिया आनंदरामकों आज्ञा कीए ॥ जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु साक्षात् पुरुपोत्तमको अवतार पधारे हें ॥ तातें तुम भक्तिभावकी रीतिसों वीनती करिकें विनकों मंदिरमें पधराय लावो ॥ सो सेवा शृंगार सब वोही करेंगे ॥ तव आनंदराम मुखियाने जायकें श्रीआचार्यजीकों साष्टांग दंडवत करी ॥ ओर वीनती करी ॥ जो महाराज आप कृपा करिकें मंदिरमें पधारिए ॥ सो तव श्रीआचार्यजी आप मंदिरमें पधारे ॥ तव मुखियाजीनें वीनती करी ॥ जो महाराज सेवा शृंगार आपही करिए ॥ श्रीठाकुरजीकी आज्ञा हे ॥ तव श्रीआचार्यजी आप श्रीरंगजीको शृंगार कीए ॥ तव अद्भुत शृंगार भयो ॥ तव आनंदराम मुखियाकों महा अलौकिक दर्शन भयो ॥ तापाछें आनंदराम मुखियानें वीनती करी ॥ जो महाराजाधिराज मोहूकों शरणि लीजिये ॥ तव श्रीआचार्यजी आप आज्ञा कीए ॥

जो तुम तो श्रीरंगजीके कृपापात्र हो ॥ सो तव श्रीरंगजीनेंहू कही जो यह देवीजीव हे ॥ तातें आप याकों सेवक करिए ॥ तव श्रीआचार्यजी आप आनंदराम मुखियाकों नाँम सुनाए ॥ तापाछें आनंदराम मुखियाकों दस रुपैया सामुग्रीके दीये ॥ ओर आज्ञा कीए ॥ जो अव वेग सामुग्री साजिकें ले आवो ॥ तव वो सामुग्री सिद्धि करिकें थार साजि लाए ॥ सो ताक्नें आप श्रीआचार्यजीनें श्रीहस्तसों भोग समर्पे ॥ तव श्रीरंगजीं आज्ञा कीए जो आपहू आरोगिये ॥ तव श्रीआचार्यजी आप कहे जो आप भोजन करिए ॥ तव श्रीरंगजी आज्ञा कीए ॥ जो मुखारविंदरूप तो आप हो ॥ ओर भोजनतो मुखारविंदसों होय ॥ सो श्रीरंगजीनें आग्रह करिकें आपको श्रीहस्तकमल पकरिकें अपनें पास श्रीआचार्यजीकों वेठारे ॥ तव परस्पर भोजन कीए ॥ वा समय अनिर्वचनीय सुख भयो ॥ तापाछें अचवायकें बीडा आरोगाए ॥ तव आनंदराम मुखियासों श्रीआचार्यजी आप आज्ञा कीए ॥ जो आरती लावो ॥ तव मुखिया आरती प्रगट करिकें लायो ॥ तापाछें श्रीरंगजीकी आज्ञा ले आरती करि श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप अपनी वेठकमें पधारे ॥ तापाछें आप सप्ताह कीए ॥ तव महा अलौकिक आनंद भयो ॥ तव मायावादी श्रीरंगजीमें हते सो सव भेले होयकें चर्चा करन आए ॥ तव श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप सवनको सत्कार करिकें वेठारे ॥ तापाछें चर्चा भई सो घडी दोयमें श्रीआचार्यजी आपनें सवनकों निरुत्तर कीए ॥ तव आप मायामत खंडन करि भक्तिमार्गको स्थापन कीए ॥ तव श्रीरंगजीमें जेजेकार भयो ॥ सो एसो माहात्म्य देखिकें अनेक जीव श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी शरणि आए ॥ सो तापाछें श्रीआचार्यजी श्रीरंगजीसों विदाहोय विजय कीए ॥ सो

तहाँ श्रीलक्ष्मणभट्टजी स्नान करि श्रीइलंमाँगारुजी सहित आचार्यजीकों लेंके श्रीलक्ष्मणवालाजीके दर्शन करनकों पधारे ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप श्रीलक्ष्मणभट्टजीसों वीनती कीए ॥ जो आप श्रीलक्ष्मणवालाजीको सिंगार करो ॥ तब लक्ष्मणभट्टजीनें शृंगार कीयो ता समय श्रीलक्ष्मणवालाजीकों उबासी आई ॥ तातें श्रीलक्ष्मणभट्टजीतो सुखमें लीन होय गये ॥ तब श्रीइलंमाँगारुजी वहुत खेद कीए ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप अपनी मातृचरण श्रीइलंमाँगारुजीको बहुत प्रकारसों समाधान करे ॥ ओर कहें ॥ जो हमारे पितातो अक्षरब्रह्मको स्वरूप हते ॥ सो अक्षरब्रह्ममें प्राप्त भये ॥ पाछें आप पिताके वस्त्र लेकें बाहिर पधारे ॥ सो वेदप्रणीतमार्गसों विन वस्त्रनकों अग्निसंस्कारादि क्रियाकरकें कछुक दिनविते तब आप माताजीसों विनती किये ॥ जो अब आप रामकृष्णकों लेकें विद्यानगरमें माँमाँके घर पधारो ॥ ओर मेहूँ कछूक दिनमें आऊगो ॥ ओर केशवपुरीसों आज्ञा कीए ॥ जो तुमहू कृपाकरिकें घर पधारिये ॥ सो या प्रकार सूतक निवृत्त भये पाछें सबसों बिदा भये ॥ तापाछें एक ब्रह्मछोंकरके नीचें आप विराजे ॥ तब आप श्रीआचार्यजीमहाप्रभु सप्ताहको प्रारंभ कीए ॥ ताँहाँ श्रीलक्ष्मणवालाजी कथा सुनिवेकों पधारे ॥ तिनकों श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप नमस्कार करि आसन बिछाय कें ॥ आपनें पास पधराए ॥ ओर आप कहें ॥ जो आपश्रम करिकें केसें पधारे ॥ तब श्रीलक्ष्मणवालाजी आज्ञा कीए ॥ जो तुमारे सुखतें कथा सुनिवेकी वडी अभिलाखा हती ॥ सो आज समय आयो हे ॥ तब आप श्रीआचार्यजी सप्ताह कीए ॥ सो ताहाँ महा अलौकिक आनंद भयो ॥ ता सप्ताहकी समाप्ति करि श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप श्रीलक्ष्मणवालाजीके मंदिरमें पधारे ॥ तहाँ सब सेवा सिंगार कीए ॥ ओर पंडाकों रुपैया

पचीस साँमुग्रीकों दीये ॥ तब श्रीलक्ष्मणबालाजीसो आप पूछे जो महाराज आपकों कहा सामुग्री प्रिय हे ॥ तब श्रीलक्ष्मण-बालाजी कहें ॥ जो मनोहरके लडुवा करवावो ॥ सोइ सामुग्री सिद्धि करवाई ॥ सो थारमें साजिकें पंडाननें श्रीआचार्यसीसों वीनती करी ॥ जो महाराज आप अपनें श्रीहस्तों भोग धरि-ये ॥ तब श्रीआचार्यजी आप अपनें श्रीहस्तसों भोग धरे ॥ तब श्रीलक्ष्मणबालाजीनें कही ॥ जो अब आपहूँ भोजनकों विराजिये ॥ एसें कहि श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बाँह पकरिकें अपने संग भोजनकों बेठारे ॥ सो परस्पर भोजन कीए ॥ ता समय बडो अनिर्वचनीय सुख भयो ॥ पाछें आचमन करि मुखवस्त्र करि बीडी आरोगाए आरति करी ॥ पाछें श्रीलक्ष्मण-बालाजीकी आज्ञा माँगिकें श्रीआचार्यजी अपनी बेठकमें पधा-रे ॥ सो तापाछें आप तहाँतें विजय कीए ॥ याप्रकार तीनवेर आप श्रीआचार्यजीमहाप्रभु श्रीलक्ष्मणबालाजीको पधारे ॥ सो तीन्योंवेर न्यारे न्यारे चरित्र कीए ॥ सो, तिनमें मुख्य हे सोई लिखे हें ॥ सो यह चरित्र आप श्रीलक्ष्मणबालाजीमें कीए ॥ इति श्रीलक्ष्मणबालाजीकीबेठकको चरित्र समाप्त ॥ ३८ ॥ ७ ॥

❀ (बेठक ३९ मी) ❀

❀ (अथ श्रीरंगजीकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बेठक श्रीरंगमें कावेरीनदीके तीर छोंकरके वृक्षके नीचें हे ॥ सो तहाँ आप विराजे ॥ तब आप दामोदरदाससों आज्ञा कीए ॥ जो श्रीरंगजी वैकुंठतें प-धारत हें ॥ तब श्रीरंगजी श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों मिलिवेकों पधारे ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप श्रीरंगजीकों देखिकें ठाढेभए ॥ ओर प्रमाण करि आसनपे पधराये ओर कही ॥ जो आप परिश्रम करिकें यहाँ क्यों पधारे हो ॥ मेंतो आपके

विष्णुकांची पधारे ॥ यह चरित्र श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप श्रीरंगजीकी बेठकमें प्रगट कीए ॥ ओर तो अनेक चरित्र कीए परंतु यामें मुख्य हें सोई लिखे हें ॥ इति श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी श्रीरंगजीकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ ३९ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (बेठक ४० मी) ❀

❀ (अथ श्रीविष्णुकांचीकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बेठक सुरभीनदीपें छोंकरके नीचें हे तहाँ आप विराजे ॥ तब आप दामोदरदासतें आज्ञा कीए ॥ जो सात पुरी हें ॥ तामें साडेतीन पुरी तो शिवकी हें ओर साडेतीन पुरी विष्णुकी हें ॥ सो अब विष्णुकी पुरी कहेत हें ॥ १ श्रीमथुरापुरी ॥ २ अयोध्यापुरी ॥ ३ द्वारिकापुरी ॥ ओर आधी विष्णुकांची ॥ सो तामें विष्णुकांचीके मालिक वरदराजस्वामी हें ॥ सो तहाँ वरदराजस्वामीके अलौकिक दर्शन हें ॥ सो दर्शनकों तो यहाँ आएहें ॥ परंतु मंदिरमें पधारनों न बनेगो ॥ तब दामोदरदासनें वीनती करी ॥ जो महाराज आप मंदिरमें पधारिवेकी नाँहीं किए याको कारण कहा हें ॥ तब श्रीआचार्यजी आप कहें ॥ जो जयदेव कवीजी भए हें ॥ सो यहाँहीं भए हें ॥ सो वे वरदराजस्वामीके कृपापात्र हते ॥ वीननें २४ अष्टपदी कीए हें ॥ ओर निजमंदिरकी चोवीस सिढी हें ॥ सो एक एक सिढीपे एक एक अष्टपदी लिखी हे ॥ तातें भगवन्नॉमपे पाय केसें दीयो जाय ॥ सो तातें पधारिवो नहीं होयगो ॥ तब दामोरदास वीनती कीए ॥ जो वरदराजस्वामी आप पधरावेंगे ॥ सो यह बात श्रीवरदराजस्वामीनें मंदिरमें बेठे जाँनी ॥ तब आप बिचारें ॥ जो श्रीआचार्यजी आप मंदिरमें न पधारेंगे ॥ तो मोकों श्रीहस्तको स्पर्श न होयगो ॥ तातें वरदराजस्वामी श्रीआचार्यजीमहाप्रभु-

नकों पधरायवेकों आप सामें पधारे ॥ सो श्रीआचार्यजीसों मिलके आप आज्ञा कीए ॥ जो आप निजमंदिरमें क्यों नहीं पधारे ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप कहे ॥ जो आपके दर्शनते तो जीव कृतार्थ होयजातहें ॥ परंतु भगवन्नाँम ऊपर पाँव केसें दीजिये ॥ तबतो वरदराजस्वामी श्रीआचार्यजीको श्रीहस्त पकरिकें अपनें मंदिरमें ले चले ॥ सो मंदिरमें जाय अपनें सिंघासनपे आधीं गादीपे पधराए ॥ ओर तहाँ एक हस्तसिंगार नाँम मुखिया हतो ॥ वा सो वरदराजस्वामी संभाषण करते ॥ तातें आप वासों आज्ञा कीए ॥ जो अब तुम सब पंडानकों लेकें बाहिर निकसी जावो ॥ तब पंडा मुखिया सब बाहिर निकसि आए ॥ पाछें दोय मुहूर्त तांई वरदराजस्वामी श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों वार्ता कीए ॥ तांपाछें वरदराजस्वामी कहें ॥ जो अब श्रीगोवर्धननाथजीको प्रागट्य सब कहिये ॥ तब श्रीआचार्यजी आपनें श्रीगोवर्धननाथजीके प्रागट्यको सर्व प्रकार वरदराजस्वामीसों कहे ॥ सो सुनिकें वरदराजस्वामी बहुत प्रसन्न भए ॥ तब दोयमुहूर्त पाछें हस्तराँममुखियाकों आप बुलाए ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप वाकों सात मुद्रा भेटके दीए ॥ ओर कहें जो याकी सामुग्री लेकें वरदराजस्वामीको अंगीकार करवावो ॥ सो तब मुखियाजीनें पूछी ॥ जो महाराज कहा सामुग्री अंगीकार करवावे ॥ तब श्रीआचार्यजी आप कहें ॥ जो वरदराजस्वामीकी इच्छा होय सो करो ॥ तब वरदराजस्वामीकी आज्ञा भई ॥ जो ढोकलाकी सामुग्री सिद्धि करो ॥ सो सामुग्री सिद्धि करिकें धरी ॥ सो भोग धरे पीछें समय भयो ॥ तब आनंदराँममुखिया भोग सरावन गयो ॥ तब वरदराजस्वामी आज्ञा कीए ॥ जो तुम भोग मति सरावो ॥ तब श्रीआचार्यजी आप भोगसरावन गए ॥ तब वरदराजस्वामी

आज्ञा कीए ॥ जो आप प्रसाद लेऊ ॥ तब श्रीआचार्यजी ओर श्रीवरदराजस्वामी दोनों मिलिकें भोजन कीए ॥ ता समय महा अलौकिक सुख भयो ॥ तासमें जो वरदराजस्वामीको कृपापात्र मुखिया हतो सो तहाँ ठाढो हतो ॥ सो वानें यह सुख देख्यो ॥ सो हस्तसिंगारमुखिया वह सुख देखिकें मूर्छित भयो ॥ तब श्रीआचार्यजी ओर वरदराजस्वामी भोजन करि-चूके ॥ तापाछें जलपाँन करी बीडा आरोगे ॥ तापाछें आप हस्तसिंगार मुखियाकों सावधान कीए ॥ तब मुखियानें बीनती करी ॥ जो महाराज मेंतो बडे सुखमें हतो ॥ जो श्रीयमुनाँजी तथा श्रीगिरिराजके दर्शन करत हतो ॥ ता सुखमेंतें आपनें मोकों क्यों निकास्यो ॥ तब श्रीआचार्यजी कहें ॥ जो जितनो अधिकार होय तितनोंही प्राप्त होय ॥ अब कितनेकदिन ताई वरदराजस्वामीकी सेवा करो ॥ तापाछें इनकी आज्ञा होय सो करो ॥ तब यह सुख प्राप्त होयगो ॥ सो तब तोकों व्रजलीलाको दर्शन होयगो ॥ तापाछें कालांतर करिकें वाकों व्रजलीलाको संबंध भयो ॥ सो जेसें पुंडरीकब्राह्मणकों याही देहसों व्रजलीलाको दर्शन करवायो ॥ सो तो श्रीविठ्ठलनाथजीकी आज्ञासों वाको अधिकार विशेष हतो ॥ ओर याको अधिकार न हतो ॥ सो तातें जन्मांतर करिकें याकों व्रजलीलाको संबंध भयो ॥ सो वह व्रजलीलामें प्राप्त भयो ॥ सो तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु वरदराजस्वामीकी आज्ञातें अपनी बेठकमें पधारे ॥ सो तहाँ आप सातदिनलों श्रीभागवतकी सप्ताह कीए ॥ सो यह चरित्र श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप विष्णुकांचीकी बेठकमें प्रगट कीए ॥ ओरहूं अनेक कीए परंतु यामें मुख्य हे सोई हे ॥ इति विष्णुकांचीकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ ४० ॥

❀ (वेठक ४१ मी) ❀

❀ (अथ श्रीसेतुबंधरामेश्वरकी वेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप विष्णुकांचीसों विजय कीए ॥ सो सेतुबंधरामेश्वर पधारे ॥ तब तहॉं सेतुबंधरामेश्वरमें एक छोंकरके नीचें आप विराजे ॥ तहॉं आप कृष्णदासमेघनसों आज्ञा कीए ॥ जो श्रीरघुनाथजी आप लंका पधारे ॥ ता समय समुद्रको सेतु वॉंध्यो ॥ तब यहॉं श्रीरामेश्वरजीकी आपनें स्थापना कीएहें ॥ सो श्रीरामेश्वरजी श्रीरामचंद्रजीको स्वरूप हें ॥ तातें विभीपण नित्य दर्शन करिवेकूं आवतहें ॥ सो एसें कहकें आप तहॉं विराजे ॥ तापाछे दूसरे दिन तहॉं श्रीभागवतकी सप्ताहको प्रारंभ कीए ॥ तब श्रीरामेश्वरजी श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी कथा सुनिवेकों पधारे ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु कहें ॥ जो आप परिश्रम करिके क्यो पधारे ॥ तब श्रीरामेश्वरजी कहें ॥ जो आपने जीवनपे वडो अनुग्रह कीए हो ॥ आपको दर्शन यहॉं कहॉंते होय ॥ तातें आप हमहूकों श्री भागवतको श्रवण कराइये ॥ यह मेरो मनोरथ हे ॥ तब श्रीआचार्यजी आप कहे ॥ जो कथाको अवकाश कहॉंते मिलेगो ॥ परंतु सप्ताह होयगी सो कृपा करिके सुनिए ॥ सो जहॉंतांई श्रीभागवतकी पारायण होती ॥ तहॉंतॉंई श्रीरामेश्वरजी आप सुनिवेको पधारते ॥ सो श्रीआचार्यजीके निकट विराजते ॥ सो कथाकी समाप्ति भए पाछे मंदिरको पधारते ॥ सो तहॉं एक श्रीरामेश्वरजीको कृपापात्र भक्त हतो ॥ उनकों श्रीरामेश्वरजी आप साक्षात् दर्शन देते ॥ तापाछें वंह खॉन पॉन करतो ॥ सो एकदिन तीनप्रहरतांई मंदिरमें वो वेठ्यो रह्यो ॥ परि वाकों श्रीरामेश्वरजीको दर्शन न भयो ॥ पाछें जब आप पधारे ॥ तब वा भक्तने वीनती करी ॥ जो महाराज अवतॉंई आपको दर्शन

न भयो ॥ ताको कारण कहा ॥ तब श्रीरामेश्वरजी कहे ॥ जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु यहाँ पधारे हें ॥ सो में विनकी कथा सुनिवे गयो हतो ॥ सो अबही आयो ॥ तब तोकों दर्शन भयो हे ॥ तातें अब तूँ प्रातःकाल आयो करि ॥ नांतर तीसरे प्रहर आयो करि ॥ तब तोकों दर्शन होयगो ॥ नहीं तो नहीं होयगो ॥ सो जहाँतांई श्रीआचार्यजीमहाप्रभु वहाँ पारायण करते ॥ तहाँतांई श्रीरामेश्वरजी वहाँ विराजे ॥ तापाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु सप्ताह समाप्त करि चरणारविंदकी रजद्वारा अनेक तामसी जीवनकों अंगिकार कीए ॥ तापाछे पुरोहितकों बुलायकें तीर्थक्षेत्रमें विधिपूर्वक स्नान करि ॥ पाछें श्रीरामेश्वरजीकी आज्ञा मांगि तहांतें आगेकों पधारे ॥ सो मलयाचलपर्वतपे पधारे ॥ सो यह चरित्र श्रीआचार्यजीमहाप्रभु सेतुबंधरामेश्वरकी बेठकमें कीए ॥ ओर तो अनेक कीए परंतु यामें मुख्य हे सोई लिखेहें ॥ इति श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी सेतुबंधरामेश्वरकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ ४१ ॥ ॥ ६ ॥

❀ (बेठक ४२ मी) ❀

❀ (अथ श्रीमलयाचलपवर्तकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अथ श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बेठक मलयाचलपर्वतपे हे ॥ तहाँ आप विराजे ॥ सो तहाँ आसपास चंदनको वन हे॥ सो तहाँ तामसीजीवनके उद्धारार्थ आप पधारे ॥ तहाँ एक चंदनवृक्षके नीचें विराजिकें कृष्णदाससों कहे ॥ जो यहाँ श्रीहेमगुपालठाकुरजी विराजत हें ॥ तब 'श्रीहेमगुपालने जॉनी जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु पधारे हें ॥ तब वे मिलिवेकों आए॥ सो श्रीहेमगुपाल ओर श्रीआचार्यजी परस्पर मिले ॥ तब अनिर्वचनीय सुख भयो ॥ तापाछें श्रीहेमगुपालजीनें कह्यो ॥ जो तुम एसी विकट जगे पधारे हो ॥ जो यहाँ तामसीजीव बहुत हें ॥

सो वे आपुसमें लडत हें ॥ तातें आपके लिए फलाहार में लाऊगो ॥ आप वैष्णवकों मति पठाइयो ॥ काहेतें जो यहाँके तामसीजीव वहुत जेहेरी हें ॥ तव श्रीआचार्यजी वीनती कीए॥ जो आप प्रसन्न रहिए ॥ आपके प्रतापतें मेरे सेवकनकों कोऊ नाँम न लेयगो ॥ ओर महिनानताँई हम यहाँ विराजेंगे ॥ सो एसें श्रीसुखके वचन सुनिकें श्रीहेंमगुपालजी वहुत प्रसन्न भए ॥ ओर कहे जो यहाँ आसपास चंदनको वन हे ॥ तोहू मेरी गरमी नहीं मिटत हे ॥ ओर आपके दर्शनमांत्रतें मेरे रोम रोम शीतल भये ॥ सो आपको पधारनों यहाँ कहाँतें हतो ॥ आपतो केवल दैवीजीवनके लीयें इहाँ पधारे हो ॥ और तिनहीके लिये आपको भूतलपे प्रागटय हे ॥ ओर मायामत खंडनार्थ ओर भक्तिमार्ग स्थापनार्थ हे ॥ सो पृथ्वीपरिक्रमाको मिस करि सकल तीर्थ सनाथ करत हो ॥ फेरि ओर आप पूछे ॥ जो श्रीगोवर्धननाथजीको प्रागटय सव लीलासहित श्रीगिरिराजमें भयो हे ॥ सो ये समाचार विधिपूर्वक हमकूं सुनाइये ॥ तव श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें सर्व समाचार विस्तारपूर्वक श्रीहेमगुपालजीकों सुनाये ॥ तव श्रीहेमगुपालजी वहुत प्रसन्न भये ओर कहें ॥ जो आप मंदिरमें पधारिये ॥ तव श्रीआचार्यजीमहाप्रभु वीनती कीए ॥ जो आप पधारो ॥ में अरगजा सिद्धि करवायकें आपकों आयकें समरपूंगो ॥ तव श्रीहेमगुपालजी अपने मंदिरमें पधारे ॥ तापाछें श्रीआचार्यजी कृष्णदासमेघनसों आज्ञा कीए ॥ जो तुम अरगजा सिद्धि करो ॥ ओर दामोदरदाससों आज्ञा कीए ॥ जो तुम केरा ओर नारियल सँभारो ॥ सो सामुग्री ओर अरगजा सिद्धि भयो ॥ तव श्रीआचार्यजी सव सेवकन सहित श्रीहेमगुपालजीके मंदिरमें पधारे ॥ सो श्रीहेमगुपालजीकों अरगजा समर्पे ॥ ओर सामुग्री

आरोगाए ॥ पाछें आज्ञा माँगि श्रीआचार्यजी आपनी बेठककों पधारे ॥ तापाछें दूसरेदिन आप श्रीआचार्यजी श्रीभागवतकी परायणको आरंभ कीए ॥ तव श्रीहेमगुपालठाकुरजी कथा सुनिवे पधारे ॥ तब श्रीआचार्यजीनें आपकुं आसनपे पधराए॥ तव श्रीहेमगुपालजी आज्ञा कीए ॥ जो आपके श्रीमुखतें कथा सुनिवेकी बहुत इच्छा हती ॥ सो समय मिल्यो हे ॥ सो जहाँ-ताँई कथा होय तहाँताँई आप श्रीहेमगुपालजी विराजें ॥ पाछें आप मंदिरकों पधारें ॥ सो जादिन श्रीआचार्यजीमहा-प्रभु आप कथाकी समाप्ति कीए ॥ वादिन इंद्र श्रीहेमगुपालजीके दर्शनकों आयो हतो ॥ सो वादिन वाकों दर्शन न भयो ॥ तव इंद्र उहाँई बेठि रह्यो ॥ सो जब श्रीहेमगुपालठाकुरजी क-थाकी समाप्ति पाछें मंदिरमें पधारे ॥ तव दर्शन भयो ॥ सो तव इंद्रनें साष्टांग दंडव्रत करिकें वीनती करी ॥ जो महाराजाधि-राज अवताँई आप कहाँ पधारे हते ॥ जो आपको दर्शन नाहीं भयो ॥ ताको कारण कहा ॥ तव श्रीहेमगुपालजी आज्ञा कीए ॥ जो यहाँ श्रीवल्लभाचार्यजी पधारे हें ॥ तिनके श्रीमुखतें कथा सुनिवेकी बहुत इच्छा हती ॥ सो समय आय मिल्यो हे ॥ तिननें श्रीभागवतकी सप्ताह कीए हें ॥ सो में कथा सुनिवे गयो हतो ॥ सो अवही आयोहूँ ॥ तव इंद्रनें साष्टांग दंडवत करिकें वीनती करी ॥ जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको केसो स्व-रूप हे ॥ सो कृपा करिकें कहिए ॥ तव श्रीहेमगुपालठाकुरजी कहें ॥ जो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके मुखारविंदरूप हें ॥ ओर तेरो यज्ञमेंटिकें श्रीगिरिराजको प्रत्यक्ष स्वरूप धरि सहस्रभुजा धारण-करिकें भोजन कीए ॥ ओर श्रीगिरिराज उठायकें गोप गै तथा व्रजभक्तनको रक्षण कीनो ॥ तव तूं शरणि जायपड्यो ॥ ताते तेरी पीठियाप स्वर्गलोककों पठायो ॥ सोई साक्षात् भावात्मक-

पुरुषोत्तम देवीजीवनके उद्धारार्थ भूतलपे प्रगट भय हें ॥ तिननें मायामत खंडन करि भक्तिमार्गको स्थापन कियो हे ॥ तातें अपनों नाम श्रीवल्लभाचार्यजी धन्यो हे ॥ सो चंपारण्यमें आपको प्रागट्य भयो ॥ तब ब्रह्मा ओर तुमसब दर्शनकों गए हते ॥ सो अब तूँ भूलिगयो ॥ सो श्रीवल्लभाचार्यजी पधारे हें ॥ तब ऐसें श्रीमुखके वचन सुनिकें इंद्रनें दंडवत करी ॥ ओर आज्ञा मॉगी ॥ जो महाराज में वहॉ आप श्रीआचार्यजीके दर्शनकों जाऊँ ॥ तब श्रीठाकुरजी कहें ॥ जो तूं सुखेन जाइ ॥ तब इंद्र पावन चलिकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु जहॉ विराजे हते ॥ तहॉ आयकें साष्टांग दंडवत करी ॥ ओर गदगद कंठ होयकें वीनती करी ॥ जो महाराज आपके दर्शन कहॉं ॥ येतो श्रीहेमगुपालजीकी कृपासों आपके दर्शन भए ॥ तब श्रीआचार्यजीनें इंद्रको समाधान करि स्वर्गकों पठायो ॥ तापाछें कृष्णदासमेघनसों आप आज्ञा कीए ॥ जो इंद्र दर्शनको आयो हतो ॥ तापाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप सप्ताहकी समाप्ति करि चरणारविंदकी रजद्वारा तामसी जीवनको उद्धार कीए ॥ तापाछें कछूक दिन विराजे ॥ फेरि श्रीहेमगुपालजीकी आज्ञा ले आगें दक्षणकों पधारे ॥ सो यह चरित्र श्रीआचार्यजीमहाप्रभु मलयाचलकी बेठकमें प्रगट कीए ॥ तामें मुख्य हे सोई लिखे हें ॥ इति श्री मलयाचलकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ ४२ ॥

❀ (बेठक ४३ मी) ❀

❀ (अथ श्रीलोहगढकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब मलबार देशमें लोहगढ जाकों अब कोंकण गोवा केहेत हें ॥ सो तहॉ श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप आछी रमणीयजगे देखिकें विराजे ॥ तहॉ छोंकरको वृक्ष हे ॥ ताके नीचें एक शिला हे ॥ तहॉ हाथीके पॉवको चिह्न हे ॥ ओर आसपास बहुत

गहवर वन हे ॥ सो तहाँ तामसीजीव हजारन रेहेत हते ॥ तहाँ आप दामोदरदाससों आज्ञा कीए ॥ जो यह स्थल बहुत रमणीय हे ॥ सो तातें यहाँ सप्ताह करिकें अनेक तामसीजीवनको तथा दैवीजीवनको अंगीकार करिये ॥ तब कृष्णदासमेघननें वीनती करी ॥ जो महाराजाधिराज इहाँ कोई जलको स्थल दिसत नाँही हे ॥ तब आप कहें जो या पर्वतकेऊपर झरनाँ बहुत झरत हें ॥ ओर मेरे समीप एक पर्वतकीटेकरी हे ॥ ताके नेंक दूरिपे एक बडो तलाव हे ॥ ओर शिलापे हाथीके पाँव हें ॥ सो ताकेपास एक बडी शिला हे ॥ वा शिलाके नीचें एक बडी गुफा हे ॥ तामें तीन कुंड हें ॥ सो एकतो अप्सराकुंड हे ॥ तहाँ नित्य अप्सरा स्नानकरनकूं आवति हें ॥ ओर एक गंधर्वकुंड हे ॥ तहाँ गंधर्व स्नानकरिवेकों आवत हें ॥ ओर एक देवताकुंड हे ॥ तहाँ इंद्र सवेरे देवतानसहित पूर्णमासीकेदिन स्नानकरिवेकों आवत हे ॥ ऐसें कहिकें आपनें वहाँ श्रीभागवतकी पारायणको प्रारंभ कीए ॥ ताकी सातदिनमें सप्ताह कीए ॥ तब महा अलौकिक आनंद भयो ॥ तापाछें श्रीआचार्यजीनें अपनें चरणारविंदकी सुगंध फेलाए ॥ सो सुगंध लेतमात्रही हजारन तामसीजीवनकी पशुयोनि छूटिगई ॥ सो गोपालदासजी श्रीवल्लभाख्यानमें गाए हे (ते तामसनों अघ हर्‍याँ परताप पदरज गंध) सो यह महा अलौकिक माहात्म्य देखिकें सब भगवदीय दंडवत करिकें वीनती कीए ॥ जो महाराज यह सामर्थ्य आपकी हे ॥ जो एक क्षणमें हजारन जीवनको उद्धार कीए ॥ तापाछें कछूकदिनमें तहाँतें विजय कीए ॥ सो आगें पधारे ॥ सो यह चरित्र श्रीआचार्यजीमहाप्रभु लोहगढकी बेठकमें दिखाए ॥ ओरहू अनेक चरित्र दिखाए ॥ परंतु मुख्य हे सोई लिखे हें ॥ इति श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकीलोहगढकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ ४३ ॥ ७ ॥

❀ (वेठक ४४ मी) ❀

❀ (अथ श्रीताम्रपर्णीनदीके तीरकी वेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अव श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी वेठक ताम्रपर्णीनदीके तीरपे छोंकरके नीचें हे ॥ सो तहाँ श्रीआचार्यजी आप श्रीभागवतको पारायण कीए ॥ तहाँतें तीनकोसपे एक वडो शहर हे ॥ ता शहरको राजा वडो माँदो हतो ॥ तव वा राजानें पंडितनसों तथा जोतीशीनसों पूछी ॥ जो मेरो शरीर आछो होय एसो उपाय वतावो ॥ तव जोतीशीननें कही ॥ जो राजाजी तुमारे तो सव ग्रह विघडे हें ॥ तातें विचारिकें कहेंगें ॥ एसें कहिकें सव पंडित अपनें घरकों गये ॥ तव एक पंडित तहाँ वेठ्यो रह्यो ॥ वानें कही जो राजाजी में कहों सो तुम करो ॥ तव वचो ॥ तव वा राजानें कही जो तुम कहोगे सोही में करूँगो ॥ तव वा पंडितनें कही ॥ जो एक सोंनेको पूतरा अपनी वरोवरिको वनवावो ॥ वाकों तुमारो गहनाँ पोशाख सव पहरावो ॥ फेरि वा पूतराको दान ब्राह्मणकों करो ॥ सो जो ब्राह्मण दान लेयगो सो मरिजायगो ॥ ओर तुम वचोगे ॥ सो सुनिकें ताहीसमय वा राजानें दोयमण सोंनाँ मंगवाय ॥ सुनार वुलवाइकें एक पूतरा वनवायो ॥ वाकों अपनों गहनाँ पोशाख सव पहराए ॥ तव अपनें पुरोहितसमेत सव पंडितनकों वुलायके कही ॥ जो या पूतराको दान लेऊ ॥ तव जो ब्राह्मण दान लेवेकों जाय ताके सन्मुख वो कालज्वर आवे ॥ तव सव पंडितननें कही ॥ जो हमकों यह दान नाँहि चहियत ॥ तव राजानें अपनें पुरोहितकों वुलायो ओर कही ॥ जो तुमविनाँ यहदान कोंन ले शकेगो ॥ तव वो पुरोहित दान लेनकों ठाढो भयो ॥ सो गिरिपऱ्यो ॥ तव वा पुरोहितनें कही ॥ जो मोकों तो यह दाँन चहियत नाहीं ॥ तापाछें जा पंडितनें यह दान वतायो

हतो ॥ ताहीकों राजानें बुलायो ॥ ओर कही जो तूमही यह दान लेऊ ॥ तब वा पंडितनें वा पूतराके सामनें देख्यो ॥ सो महाविकाळ कालकोस्वरूप देखिपऱ्यो ॥ तब वो थरथर कांपिवे लग्यो ॥ ओर राजातें कही जो तुमकों मारनोंहोयतो वेसेंई मारो ॥ परि हमकों यह दान तो नॉही चाहिये ॥ तब राजा उसास लेकें चूप होइ रह्यो ॥ ओर कह्यो जो अब ब्रह्मतेज काहूमें रह्यो नाहीं ॥ अब मेरो मृत्यु निश्चे होयगो ॥ सो यह निश्चे करिकें राजा ताम्रपर्णीनदीके किनारे गयो ॥ सो ताहाँ देखे तो कोटिकंदर्पलावण्य श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप विराजे हैं ॥ तब राजाने कही जो "निर्विप्रमूर्वीतलं" याकालमें ब्राह्मणनमें ब्रह्मतेज रह्यो नाहीं ॥ सो सुनतहीं तत्काल श्रीआचार्यजी आप वा राजातें कहें ॥ जो अरे राजा यह कहा वात करो हो ॥ जो जगत कहा नास्ती हेगयो हे ॥ तब वा राजानें श्रीआचार्यजीतें वीनती करी ॥ जो महाराज आप तो साक्षात ईश्वर दीखो हो ॥ परंतु राजाकों दान करनों ॥ ओर ब्राह्मणनकों दान लेनों ॥ यह धर्म हे ॥ सो में दान देतहूं सो कोऊ लेत नाहीं ॥ तब श्रीआचार्यजी आप वा राजासों कहें ॥ जो अब या समयतो आप इहाँसों घर जाओ ॥ सवेरे हम वहाँ आइकें तुमारो दान लेंऊंगे ॥ तब वह राजा प्रसन्नहोयकें अपनें घर गयो ॥ पाछें प्रातःकाल श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप सब सेवकनसहित तहाँ पधारे ॥ सो तब तहाँ राजानें खबरकरनवारे तेयार राखे हते ॥ तिननें खबर दइ ॥ तब राजानें श्रीआचार्यजीकों वा पुतराकेनिकट पधराय ॥ ओर संकल्प कियो ॥ तब पुतरानें श्रीआचार्यजीके सन्मुख एक अँगुरी बताई ॥ तब आपनें हसिकें तीन अँगुरीयां दिखाई ॥ तब पुतरानें माथो नीचो कियो ॥ तापाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें सुनार बुलाइकें वा पुतराके टूक करवाये ॥

तापाछें पुतराके टूक टूक करवाए ॥ सो देखिवेकों जो हजारन ब्राह्मण आये हते ॥ तिन सबनकों बाँटि दीए ॥ तापाछें राजानें श्रीआचार्यजीसों वीनती करी ॥ जो महाराज वा पुतरानें एक-अँगुरी उँची करी ॥ ओर आपनें वाकेसामनें तीन उँची करीं ॥ ताको कारण कहा ॥ तब श्रीआचार्यजी आप कहें ॥ जो राजा तुम बडे साहसी हो ॥ जो तुम अपनों प्राण बचाइवेकेलीये ब्रह्महत्यातें नाहीं डरपे ॥ सो जो ब्राह्मण मरिजातो तो तुमकों ब्रह्महत्या लगती ॥ तो तुम महापातकी होते ॥ फिर आपनें कही जो पुतरानें जो एकअँगुरी बताई ॥ सो वानें यह पूछी ॥ जो तुम एककाल गायत्री साधो हो ॥ तब हमनें तीन बतांई ॥ जो हम त्रिकाल गायत्री साधें हें ॥ तब वानें माथो नीचो कियो ॥ सो एसो करडो दाँन न करनों ॥ जो ओरकोऊ एसो दान लेतो तो मरिजातो ॥ हमनें जो न्यारे न्यारे टूक करवा-यकें बाँटे ॥ सो अब सब ब्राह्मण थोरो थोरो भुगत लेइगे ॥ परंतु कोऊ मरेगो नाहीं ॥ तब राजानें दंडवतकरिकें वीनती करी ॥ जो कृपानाथ मोकों शरणि लीजिये ॥ तब आप रा-जाकों सेवक कीए ॥ सो यह माहात्म्य देखिकें अनेकजीव श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी शरणि आए ॥ यामें पंडितनकों यह जताए ॥ जो प्रतिग्रह लेनों महा कठिन हे ॥ तापाछें राजानें बहुत भेट करी ॥ पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु ताम्रपर्णीनदीके-तीरतें पधारे ॥ सो आपकी बेठकमें पधारे ॥ तहाँ तीनदिनलों आप गायत्री जप कीयो ॥ तब सब सेवकननें वीनती करी ॥ जो महाराजाधिराज आप तो ईश्वर हो ॥ सो आपनें राजा ब्रा-ह्मण दोनों बचाए ॥ तब आप कहें जो हमारी देखादेखी एसो दान कोइ लेईगो ॥ ताको निश्चे मृत्यु होयगो ॥ तापाछें वहाँके सबपंडित आप श्रीआचार्यजीके सेवक भए ॥ सो यह चरित्र

ताम्रपर्णीनदीपे कीए ॥ इति श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी ताम्रपर्णीनदीके तीरकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ ४४ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (बेठक ४५ मी) ❀

❀ (अथ श्रीकृष्णानदीकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बेठक कृष्णानदीकेंतीरपे पीपरकेवृक्षके नीचें हे ॥ तहाँ आप विराजे हे ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप दामोदरदासतें आज्ञा कीए ॥ जो यहाँ तैलंगब्राह्मण मायावादी बहुत हें ॥ सो तिनसों वाद विवाद करकें मायामत खंडनकरि भक्तिमार्गको स्थापन करेंगे ॥ सो पहलें तो यहाँ सप्ताह करेंगे ॥ सो सुनिकें मायावादी आप सब यहाँ चले आवेंगे ॥ तब सहजिमें चर्चा होयगी ॥ सो एसी इच्छा किये ॥ पाछे श्रीआचार्यजीनें वहाँ श्रीभागवतके पारायणको आरंभ कियो ॥ यह समाचार मायावादी पंडितननें सुने ॥ जो श्रीवल्लभाचार्यजी दिग्विजय करत इहाँ पधारे हें ॥ सो कृष्णानदीकेतीरपे विराजे हें ॥ ताते आसपासके सब पंडित मिलिकें एकमतो करिकें चलो ॥ सो तब विननें आसपासके सब पंडितनकों बुलाए ॥ ओर विचारी जो आपको तेज बडो भारी सुने हें ॥ जो विनके सामनें काहूसों बोल्यो नाहीं जात ॥ तातें सब मायावादी पंडितननें विचारिकें एकमतो करिकें चले ॥ सो कृष्णानदीपे आए ॥ तहाँ चान्योसंप्रदायके वेष्णव हू सब आपके दर्शनकों आए ॥ तिन सबननें वीनती करी ॥ जो महाराजाधिराज ये मायावादी हमकों बहुत दुःख देत हें ॥ यहाँ मायावादीनको बहुत जोर हे ॥ ओर आप विष्णुस्वामीकी संप्रदायके आचार्य हो ॥ तातें आप हमारो रक्षणकरिकें मायामतको खंडन कीजे ॥ तब आप श्रीआचार्यजी कहें ॥ जो हम याकेलीये तो यहाँ आएही हें ॥ आज सप्ताहकी समाप्ति हे चूकी ॥

ओर मायावादीहू आवतहें ॥ पाछें तहाँ थोरीसी वेरमें मायावादीपंडितहू सब आए पोहोचे ॥ तिन सबनकों आप श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आदरकरिकें बेठारे ॥ तापाछें चर्चा भई ॥ तब प्रहर एकमें आप श्रीआचार्यजीनें सेकडान पंडितनकों निरुत्तर कीए ॥ सो तब मायामतको खंडन करिकें भक्तिमार्गको स्थापन कीए ॥ तातें चान्यो संप्रदायके वैष्णव मनमें बहुत प्रसन्न भये ॥ पाछें विननें वीनती करी ॥ जो महाराजाधिराज कृपाकरिकें हमकों शरणि लीजिये ॥ सो तहाँ श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको माहात्म्य देखिकें अनेकजीव सेवक भए॥ तब मायावादीनको निश्चे भयो जो एतो वेद पुराणको निरूपण करत हें ॥सो एतो ईश्वर हें ॥ तिनकें दर्शन आज हमकों भए ॥ सो अब कृपा करिकें हमकों शरणि लीजिये ॥ तब आप श्रीआचार्यजी आज्ञा कीए ॥ जो रुद्राक्ष उतारिकें कृष्णानदीमें स्नान करी आवो ॥ तब सबमायावादी रुद्राक्ष उतारिकें कृष्णानदीमें स्नान करी आए ॥ तब आपनें कृपा करि सबनकों नाँम सुनायो ॥ ओरं तुलसीकी माला पहराई ॥ तब कृष्णानदीके तीरपे जेजेकार भयो ॥ तब पंडित दंडवत करिकें अपनें अपनें घर गए ॥ तापाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु कृष्णानदीके तीरसों विजय कीए ॥ इति श्रीकृष्णानदीकें तीरकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ ४५ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

❀ (बेठक ४६ मी) ❀

❀ (अथ श्रीपंपासरोवरकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुकी बेठक पंपासरोवरपे वटकेनीचें हे ॥ सो तहाँ श्रीआचार्यजीमहाप्रभु बिराजे ॥ तहाँ श्रीहस्तसों पाक करत हते ॥ तब कृष्णदासमेघनसों आज्ञा कीए ॥ जो ढाकके पतौआ लावो ॥ तब कृष्णदासमेघन पतौआ लेंन गए ॥ सो दूरि निकसि गए ॥ सो तहाँ देखें तो एक,भयंकर पक्षी

पऱ्यो हे ॥ वाकों कृष्णदासनें देख्यो ॥ तब मनमें विचाऱ्यो ॥ जो यह पक्षी कोई कालांतरको दीखे हे ॥ वाकेही पास ढाकको वृक्ष हे ॥ सो तहाँ जायकें ढाकके पतोआ तो ले आऊँ ॥ एसें विचारिकें कृष्णदास तहाँ गए ॥ तब वह पक्षी बोल्यो ॥ जो में राँमवतारको बेठ्योहूं ॥ सो में बहुत दुःख पावतहों ॥ तातें तुम श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों वीनती करो ॥ तो मेरो उद्धार होय ॥ तुम भगवदीय द्वारा मेरो उद्धार होयगो ॥ सो सुनिकें कृष्णदासजीनें कही ॥ जो हाँ में आपसों वीनती तो करूँगो ॥ पाछें तो ईच्छा आपकी ॥ तापाछें कृष्णदासजी पत्ता लेकें गये ॥ सो विननें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों वीनती करी ॥ जो महाराज एक पक्षी रामवतारको बेठ्योहे ॥ वानें वीनती करीहे ॥ जो मेरो उद्धार करो ॥ अबमें बहुत दुःख पावत हों ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप तो परम दयाल हें ॥ सो आज्ञा कीए जो चरणोदकको जल लेकें, वाकेऊपर छिरको ॥ तब कृष्णदासनें चरणोदकको जल ले जायकें वाकेऊंपर छिरक्यो ॥ तब ताही-समय वाकी पक्षियोनि छूटिगई ॥ ओर देवीस्वरूप भयो ॥ वाही-समय वैकुंठतें विमाँन आयो ॥ सो विमाँनमें बेठिकें वो पक्षी वैकुंठकों गयो ॥ सो कृष्णदासजीनें आपसों वीनती करी ॥ तब आप कहें ॥ जो तेरीद्वारा वाको ऊद्धार भयो ॥ सो याकेलीयेंही तोकों वहाँ पतोआ लेन पठायो हतो ॥ फेरि श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप वहाँ सप्ताह कीए ॥ तब महा अलोकिक आनंद भयो ॥ तापाछें आपनें कटाक्षद्वारा तामसीजीवनको उद्धार कियो ॥ पाछें एकदिन विराजिकें पंपासरोवरसों विजय कीए ॥ सो यह चरित्र श्रीआचार्यजी महाप्रभुननें पंपासरोवरकी बेठकमें प्रगट कियो ॥ ओरतो अनेक चरित्र कीए ॥ तामें मुख्यहे सोई लिखे हें ॥ इति श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी पंपासरोवरकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ ४६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (वेठक ४७ मी) ❀

❀ (अथ श्रीपद्मनाभजीकी वेठकको चरित्र. प्रारंभः) ❀

अबश्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी वेठक श्रीपद्मनाभजीमें हे ॥ तहाँ एक रमणीयस्थल देखिकें छोंकरकेनींचें आप श्रीआचार्यजीमहाप्रभु विराजे ॥ तब दामोदरदासजीसों आज्ञा कीए ॥ जो श्रीपद्मनाभजीके नाभीकमलमेंतें ब्रह्मा भयो ॥ सो पोढानाथको स्वरूप हे ॥ सोई शेषशाई शेषकी सिज्यापे पोढे हें ॥ यह कहिकें आप विराजे हें ॥ इतनेमें श्रीपद्मनाभजी पधारे ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप ठाढेहोयकें प्रणाम कीए ॥ जो श्रीपद्मनाभाय नमः ॥ तापाछें पद्मनाभजीकों आसनपे पधराए ॥ आपहू श्रीआचार्यजी आसनपे विराजें ॥ फेरि आप श्रीआचार्यजीनें वीनती करी ॥ जो महाराज आप परिश्रम करिकें यहाँताँई क्यों पधारे ॥ मेंतो आपके दर्शनकेलीयेही यहां आयो हूँ ॥ सो मंदिरमें दर्शन करिवेकों आवतहतो ॥ तब श्रीपद्मनाभजी कहे ॥ जो आप परिश्रमकरिकें दक्षणतें यहाँ ताँई पधारे ॥ सो में यहाँताँई आयो ॥ यामें कहा वडीवात करी ॥ आप जापे कृपाकटाक्ष करो ताके मनोरथ पूर्ण होंय ॥ पाछें श्रीआचार्यजी आप कहे ॥ जो सवेरे में मंदिरमें आऊँगो ॥ तब श्रीपद्मनाभजी आपनें मंदिरमें पधारे ॥ पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप कथा कहिकें आपनी वेठकमें पोढे ॥ सो सवेरेमें उठि स्नान करि नित्यनेमसों पहूँचे ॥ तब पद्मनाभजीको मुखिया आनंदराँम वडो कृपापात्र हतो ॥ तासों आप श्रीपद्मनाभजी भाषण करते ॥ ता मुखियासों आपनें कही ॥ जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु यहाँ पधारे हें ॥ सो विनकों भक्तिमार्गसों वीनती करिकें मंदिरमें पधरायलाउ ॥ तब आनंदराँम मुखियानें आयकें श्रीआचार्यजीसों साष्टांग दंडवतकरिकें वीनती करी ॥ जो कृपाकरिकें आप मंदिरमें

पधारिये ॥ तब श्रीआचार्यजी श्रीपद्मनाभजीकें मंदिरमें पधारे॥ तब सुखियानें वीनती करी ॥ जो महाराज सेवा शृंगार सब आप कीजे ॥ तब श्रीआचार्यजी आपनें श्रीपद्मनाभजीको शृंगार कियो ॥ सो तब अद्भुत दर्शन भयो ॥ पाछें श्रीआचार्यजीनें दसरुपैया सामुग्रीके दीए ॥ जो याको बेगि थार साजिकें लावो ॥ तब सुखिया थार साजिकें लाए ॥ सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप भोग समर्पे ॥ तब पद्मनाभजीनें आज्ञा करी जो आप प्रसादलेउ ॥ तब आपनें परस्पर भोजन कियो ॥ ता समें अनिर्वचनीय सुख भयो ॥ सो अलौकिक दर्शन आनंदरामसुखियाकों भए ॥ तब मूर्छित भयो ॥ सो ता समय वाकों व्रजलीलाको दर्शन भयो ॥ श्रीगिरिराज तथा श्रीयमुनाँजी तथा श्रीवृंदावनके दर्शन भए ॥ तहाँ श्रीआचार्यजी आप भोजन करि आचमन करि बीडा आरोगे ॥ पाछें सिंगासनपे विराजे ॥ तब पद्मनाभजी तें श्रीगोवर्धननाथजीके प्रागट्यके समाचार कहे ॥ तापाछें श्रीआचार्यजीनें आनंदराम सुखियाको समाधान कियो ॥ तब वा सुखियानें कही ॥ जो महाराज आपकी कृपासों महा अलौकिक दर्शन भयो ॥ अब कृपा करिकें शरणि लीजिये ॥ तब श्रीआचार्यजीनें आज्ञा करी ॥ जो तुमतो पद्मनाभजीके कृपापात्र हो ॥ श्रीपद्मनाभजीकी सेवासों सुख प्राप्ति होयगो ॥ तब श्रीआचार्यजीके एसे वचन सुनिकें आनंदरामसुखिया अपनें मनमें बहुत प्रसन्न भयो ॥ तब पद्मनाभजीनें श्रीआचार्यजीसों आज्ञा करी ॥ जो यह जीव दैवी हे ॥ आप याकों नाँम सुनावो ॥ तब श्रीआचार्यजी वा सुखिआकों नाँम सुनाए ॥ तापाछें सुखियासों आज्ञा करी ॥ जो आरती लाऊ ॥ तब सुखिया आरती लायो ॥ सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें पद्मनाभजीकी आरती करी ॥ पाछें श्रीठाकुरजीकी आज्ञा लें

आपनी बेठकमें पधारे ॥ पाछें श्रीआचार्यजीनें वहाँ एक सप्ताह करी ॥ सो श्रीपद्मनाभजी नित्य सुनिवेकों पधारते ॥ सो तहाँ श्रीआचार्यजी आप सप्ताहकी समाप्ति करि ताँमसी जीवनको अंगीकार कीए ॥ पाछें कछूकदिन विराजे ॥ पाछें श्री पद्मनाभजीकी आज्ञा ले तहाँते आप आगें पधारे ॥ सो यह चरित्र श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप श्री पद्मनाभजीकी बेठकमें प्रगट कीए ॥ इति श्रीपद्मनाभजीकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ ४७ ॥ ७ ॥

❀ (बेठक ४८ मी) ❀

❀ (अथ श्रीजनार्दनकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बेठक जनार्दनजीमें कुंडके पास हे ॥ सो तहाँ एक छोंकरके नींचें आप विराजे ॥ सो दूसरेदिन आप श्रीजनार्दनजीके दर्शनकों पधारे ॥ सो सब सेवकनसहित आपनें दर्शन कीए ॥ तब श्रीजनार्दनजी आज्ञा कीए ॥ जो आप भीतर पधारिये ॥ तब श्रीआचार्यजी आप भीतर पधारे ॥ सो तहाँ जनार्दनजीको कृपापात्र एक पंडा हतो ॥ ता पंडासों आप आज्ञा कीए ॥ जो तुम वस्त्राभूषण सब श्रीमहाप्रभुजीकों सोंपो ॥ सो शृंगार श्रीमहाप्रभुजी करेंगे ॥ ओर तुम जायकें रसोई सिद्धि करो ॥ तब वह पंडा रसोई बालभोगमें गयो ॥ तब श्रीआचार्यजी आप शृंगार कीए ॥ सो अद्भुत शृंगार भयो ॥ तब श्रीजनार्दनजीनें कही ॥ जो शृंगारकें मिसकरि आपके श्रीहस्तको स्पर्श करायो ॥ नॉतर हमकूं इतनेदूर आपके श्रीहस्तको स्पर्श कहाँतें हतो ॥ तब पंडानें वीनती करी ॥ जो महाराजाधिराज सामुग्री सिद्धि भई हे ॥ तब श्रीआचार्यजी आप आज्ञा कीये ॥ जो थार साजिकें लावो ॥ तब पंडा थार साजिकें लाये ॥ सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप

भोग समर्पे ॥ तब श्रीजनार्दनजीनें आज्ञा करी ॥ जो मुखारविंद-रूप तो आप हो ॥ तातें आप विनाँ भोजन केसें करें ॥ तातें, आप भोजनकों विराजो ॥ तब श्रीआचार्यजी आप वीनती कीए ॥ जो एसें केसें बनें ॥ तब श्रीजनार्दनजीनें बहुत आग्रह करिकें कही ॥ तब श्रीआचार्यजी मनमें विचारे ॥ जो भगवद्-आज्ञा हे सो सर्वोपरी हे ॥ सो उलंघन न करनीं ॥ तब परस्पर भोजन कीए ॥ तब अनिर्वचनीय सुख भयो ॥ सो वा समयको दर्शन पंडाकों भयो ॥ तब वा पंडाकों मूर्च्छा आई ॥ पाछें श्री-आचार्यजी अचवाईकें परस्पर बीडा आरोगे ॥ तब जनार्दनजीनें आज्ञा करी ॥ जो श्रीगोवर्धननाथजीके प्रागटयकी वार्ता सर्व कहिए ॥ सो मोकों सुनिवेकी बहुत अभिलाखा हे ॥ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुननें श्रीजीके प्रागट्यकी सब वार्ता कह सुनाई ॥ तब श्रीजनार्दनजी बहुत प्रसन्न भए ॥ तापाछें पंडाकों उठाए ॥ पाछें श्रीआचार्यजीनें श्रीजनार्दनजीकी आरती करि आज्ञा लेकें अपनी बेठकमें पधारे ॥ सो तहाँ सप्ताहको आरंभ कीए ॥ सो तहाँ श्रीजनार्दनजी आप कथा सुनिवेकों पधारे ॥ तब श्रीजनार्दजीनें कही ॥ जो मोकों आपके श्रीमुखतें कथा सुनिवेकी बडी अभिलाखा हती ॥ सो समय आज मिल्यो हे ॥ तब श्रीआचार्यजी श्रीठाकुरजीके वचन सुनिकें बहुत प्रसंन भए ॥ पाछें आप सप्ताहकी समाप्ति कीए ॥ सो तहाँ महा अलौकिक आनंद भयो ॥ तापाछें श्रीआचार्यजी अपनें चरणा-रविंदकी रजसों अनेक तामसी जीवनको उद्धार कीए ॥ तहाँ सहजमें मायामत खंडन करि भक्तिमार्गको स्थापन करे ॥ तब श्रीजनार्दनजीमें जेजेकार भयो ॥ सो यह माहात्म्य देखिकें अनेकजीव शरणि आए ॥ पाछें आप श्रीजनार्दनजीकी आज्ञा ले आगें पधारे ॥ इति श्रीजनार्दनजीकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥४८॥

❀ (वेठक ४९ मी) ❀

❀ (अथ श्रीविद्यानगरकी वेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अव श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी वेठक विद्यानगरमें विद्याकुंडके उपर हे ॥ सो तहाँ प्रथम आपनें या रीति सों मायामत खंडन कियो हे ॥ जो एकसमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप विचारें ॥ जो दक्षणमें कृष्णदेवराजा महापंडित हे ॥ जाके यहाँ चाऱ्यो संप्रदायके आचार्यसों मायावादी झगडो करत हें ॥ सो तहाँ मायावादी प्रवल होय रहे हें ॥ तातें वहाँ पधारनों ॥ एसो विचारि आप दक्षिणमें पधारे ॥ सो वीचमें दामोदरदासको गाँम हतो ॥ तामें विनके घरके नीचे होयकें जायवेको राजमार्ग हतो ॥ सो वे दामोदरदास पूर्वके विछुरे हते ॥ सो गोखमें वेठे-वेठे श्रीआचार्यजीके दर्शनको विरह करत हते ॥ तव विनके पिता तो भगवद्चरणकों प्राप्तभए हते ॥ विन दामोदरदासके वडेभाई तीन हते ॥ सो उननें विचाऱ्यो जो द्रव्य हे ॥ सो क्लेशको मूल हे ॥ तातें याकों वांटिलेंय ॥ तो भैयानमें हित रहेगो ॥ सो वट करिए तो आछो हे ॥ एसो विचारिकें तापाछें अपनें द्रव्यके चार वाँट कीए ॥ तव दामोदरदासते कहें ॥ जो तुम अपनें वांटेको द्रव्य लेऊ ॥ तव दामोदरदासनें कह्यो ॥ जो तुम आछो जानों सो करो ॥ वे दामोदरदासतो यही विचारते ॥ जो कव श्रीआचार्यजीमहाप्रभु पधारें ओर कव मोकूं दर्शन होय ॥ सो तव ईतनेंहीमें श्रीआचार्यजी आप राजमार्गमें दामोदरदासकी गोखके नीचें होयकें पधारे ॥ तव दामोदरदासकों श्रीआचार्यजीको दर्शन कोटिकंदर्पलावण्यको भयो ॥ सो देखतहीं दामोदरदास गोखतें नीचें उतरिकें भाजिकें श्रीआचार्यजीकों साष्टांग दंडवत कीए ॥ तव आप श्रीमुखतें कहें ॥ जो दमला तूँ आयो ॥ तापाछें आप शहरके वाहिर पधारे ॥ सो तव दामोदरदासहू

आपके चरणारविंद पिछेंपिछें चले ॥ सो तहाँ एक सुंदर चोतरा हतो ॥ ताउपर आप जायकें विराजे ॥ तब दामोदरदास दंडवत करिकें सामनें बेठे ॥ ओर वीनती करी ॥ जो महाराज अब तुरत मोको अपनोकीजे ॥ तब श्रीआचार्यजीनें दामोदरदासकों नाँम सुनाए ॥ तापाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप दामोदरदासकों संग लेकें विद्यानगर पधारे ॥ सो तहाँ प्रथम श्रीआचार्यजी अपनें माँमाँके घर पधारे ॥ तब माँमाँने अति हर्षसों पधराय ॥ ओर कह्यो जो या राजाके दाँनाँध्यक्ष हम हें ॥ ओर ईहाँ सांप्रत बहुत मत मिले हें ॥ ओर तुमहू बहुत पढे हो ॥ तातें में राजासों तुमारो मिलाप कराऊँगो ॥ तब आप मुसिकाईकें चूप करिरहे ॥ तापाछें रात्रिकों माँमाँनें वीनती करी जो उठो भोजन करो ॥ तब श्रीआचार्यजी आप कहें ॥ जो हमतो स्वयंपाकी हें ॥ सो अपनें हाथसो करिकें लेत हें ॥ तब यह सुनिकें माँमाँकों बहुत बुरी लागी ॥ ओर कह्यो ॥ जो तुमारे बडेबडे लेत हते ॥ ओर तुम एसे वढिकें वोलत हो ॥ तब आपतो साक्षात् ईश्वर हें ॥ सो सब सहन कीए ॥ कछू उत्तर न दीयो ॥ तब ताही समय माँमाँनें राजद्वारमें जायकें राजासों कह्यो ॥ जो कल्हि कोऊ नयो ब्राह्मण न आवन पावें ॥ ओर नए ब्राह्मणसों चर्चा न होय ॥ क्यो जो बहुत दिननसों मायावादी ओर वैष्णवनको झगडो होयरह्यो हे ॥ बारहवर्षसों सिरकारमेंतें खरच उठत हे ॥ मायावादी अति प्रबल हें ॥ तातें अब वैष्णवसंप्रदायको खंडन होईगो ॥ ओर मायामतको तिलक होयगो ॥ सो तब यह सुनिकें राजानें खवासतें कह्यो ॥ जो कल्हि कोऊ ॥ नयो ब्राह्मण मतिआवनदीजियो ॥ ओर दरवाँनतें कहीदेउ जो काल्हि कोऊ नयोब्राह्मण न आवन पावे ॥ सो माँमाँ सब बातको बंदोबस्त करि अपनें घर आयो ॥ तब इलंमाँजीनें

आपतें बहुत कही ॥ जो सब तेयारी करायदेऊँ ॥ सो श्रीहस्तसों-
रसोइ करिकें भोजन करो ॥ तब श्रीआचार्यजी कहें ॥ जो अबतो
सबेरे बात ॥ या विरियाँ तो कछू नहीं खायगे ॥ तापाछें आ-
पतो पोढे ॥ तब अर्धरात्रके समय श्रीगोवर्धननाथजी आप त-
हाँ पधारे ॥ सो श्रीआचार्यजीकों जगायकें कहें ॥ जो तुम एसे
गर्वित बचन सुनिकें याके घर क्यों रहे ॥ मेंतो तिहारे पीछें
पीछं डोलत हों ॥ एसे कोटानकोटि राजा आपके चरणारविंद-
की अभिलाखा करत हें ॥ सो यह कोंन हे जों आपको राजासों
मिलाप करवावेगो ॥ तातें आप, विद्याकुंडपे पधारिये ॥ एसी
आज्ञा करि श्रीगोवर्द्धननाथजी तो पधारे ॥ तब ताही समय श्री-
आचार्यजीमहाप्रभु ऊठिकें कृष्णादासकों ओर दामोदरदासकों
संग लेकें आप विद्याकुंडउपर पधारे ॥ तब तहाँ देहकृत्य क-
रि स्नान करि नित्यनेम कीए ॥ तापाछें आप प्रातःकाल अप-
नें कमंडलुकों आज्ञा कीए ॥ जो तुम राजा कृष्णदेवकी सभामें
खबरी करो ॥ तब कमंडलु ताही समय राजाकी सभामें अंतरि-
क्षसूं गयो ॥ तब राजा सब सभासहित ऊठि ठाढो भयो ॥
ओर कमंडलुको साष्टांग दंडवत करी ॥ तब वा कमंडलुको तेज
देखिकें राजानें विचार्‍यो ॥ जो यहतो साक्षात् ईश्वरको कमंडलु
हे ॥ तब पाछें राजानें वा कमंडलुसों वीनती करी ॥ जो अब
तुम अपनें स्वामीकों पधरायकें लावो ॥ तब फेरि कमंडलु श्री-
आचार्यजीमहाप्रभुनके पास आईकें ध्वनी करी ॥ जो महाराज
आप पधारिये ॥ तब श्रीआचार्यजी आप सब सेवकनकों साथ
लेकें राजाकृष्णदेवकी सभामें पधारे ॥ सो राजाकृष्णदेवनें शत-
मणसुवर्णको सिंघासन बनाईकें कर्‍यो हतो ॥ सो वा राजाके
मनमें यह अभिलाखा हती ॥ जो मायामतको खंडन करि ब्रह्म-
वादको स्थापन करेगो ॥ ताकों या सिंघासनपे पधरायकें कनका-

भिषेक करूँगो ॥ तब ईतनेमें श्रीआचार्यजी आपहू दरवाजेके पास पधारे ॥ सो कोटानकोट सूर्यको तेज देखिकें पोरिया दोरे ॥ तिननें राजासों जायकें कही ॥ जो साक्षात् ईश्वर पधारे हें ॥ तब राजा ऊठिकें दोर्‍यो ॥ सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको तेज देखिकें साष्टांग दंडवत करिकें; वीनती करी ॥ जो महाराजाधिराज कृपा करिकें वेग पधारिये ॥ ओर मायामत खंडन करिये ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप गजगती चालसों वेगि पधारे ॥ तब सब सभा ऊठिकें ठाढी भइ ॥ तब राजानें बिनाहीं वाद-किए वीनती करी ॥ जो महाराज कृपा करिकें सिंघासनपे विराजिये॥ तब श्रीआचार्यजी; आप कहें ॥ जो बहुत आछो ॥ पाछे आप सिंघासन उपर बिराजे ओर कहें ॥ जो राजा यह कहा झगडो हे ॥ तब राजानें वीनती करी ॥ जो महाराज वेष्णवनकी ओर मायावादीनकी चर्चा होत हे ॥ तब श्रीआचार्यजी कहें ॥ जो वेष्णव संप्रदायतो हमारी हे ॥ सो जाकों चर्चा करनी-होय ॥ सो हमारे समीप आयकें वेठो ॥ तब राजानें मायावादीनसों कही ॥ जो अब तुम सब वेठिकें चर्चा करो ॥ तब विननें प्रश्न कीए ॥ सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप एक उत्तरमें सब मायावादीनकों निरुत्तर कीए ॥ तब सब पंडित हाथ जोरिकें कहे ॥ जो, महाराजाधिराज आपतो साक्षात ईश्वर हो ॥ जो आपको दर्शन हमकों आज भयो हे ॥ सो या प्रकार आप विद्यानगरमें मायामत खंडन करि ब्रह्मवादको स्थापन कीए ॥ तब तहाँ जेजेकार भयो ॥ तातें राजा कृष्णदेवनें बहुत सेवक करवाए ॥ ओर आपहू सेवक भयो ॥ तब राजा कृष्णदेवनें श्रीआचार्यजीकों कनकाभिषेक करायो ॥ ओर वीनती करी ॥ जो महाराजाधिराज हय सब द्रव्य आपको हे ॥ तब आप आज्ञा कीए ॥ जो यहतो स्नानजल भयो ॥ सो तातें आप सुनार

बुलाइकें टूक टूक करवाइकें हजारन ब्राह्मण आए हें ॥ तिन सबनकूं बांटि देउ ॥ सो सुनिकें सब ब्राह्मण कहें ॥ जो यह ईश्वर विनाँ कोन करे ॥ तब शतमण सुवर्ण बांटि दीए ॥ तब प्रशंसा करत सब ब्राह्मण आपने घर गए ॥ तब कृष्णदेवराजानें वीनती करी ॥ जो महाराजाधिराज कृपा करिकें हमकों शरणि लीजिये ॥ तब आप राजाकृष्णदेवकों नाँम सुनाए ॥ तब राजाकृष्णदेवनें मोहोरनको थार भरि आपके आगें धन्यो ॥ वामेंतें आप सातमोहोर काढि लीए ॥ तब राजानें वीनती करी ॥ जो महाराज सात मोहोर आप क्यों उठाए ॥ येतो सब मोहोरें आपकी हें ॥ तब आप आज्ञा कीए ॥ जो इन मोहोरनकी हमारी आडीसों कटिमेखला बनवाईकें श्रीजगन्नाथरायजीकों अंगीकार करवावो ॥ सो एसो माहात्म्य देखिकें अनेक जीव श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी शरणि आए ॥ तापाछें आप विद्या कुंडपे पधारे ॥ तहाँ साँझकों माधवाचार्य ओर रामाँनुजाचार्यनें आयकें वीनती करी ॥ जो महाराज आपने हमारे धर्मकी रक्षा करी ॥ तातें आप भक्तिमार्गके रक्षक भए ॥ सो तातें आप हमारी गादीपे विराजो ॥ हम सब आपकी आज्ञामें रहेंगे ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु विचारे ॥ जो चान्यो संप्रदायके मूर्द्धन्य विष्णुस्वामीं हें ॥ तातें विष्णुस्वामि संप्रदायके लियें तो हमारो प्रागट्य हे ॥ ओर विष्णुस्वामीके शिष्य विल्वमंगल भए हें ॥ तव इतनेमें विल्वमंगलजीहू आए ॥ तब आईकें श्रीआचार्यजीकों नमस्कार करिकें कही ॥ जो कृपासागर विष्णुस्वामी सेवामार्ग प्रगट करिकें बहूत दिनातांई वे भूतलपे विराजे परि कोई एसो शिष्य न भयो ॥ जो वो मार्ग चलावे ॥ तब या बातको विष्णुस्वामीकों बहुत ताप रह्यो ॥ पाछें आप विष्णुस्वामीतो स्वधाँमकों पधारे ॥ तब मोसों आ-

ज्ञा कीय ॥ जो मेरे शिष्य तो सब ऐसे भए ॥ जो अपनें अपनें देहके सुखार्थी भए ॥ सो प्रभुनकों न विचारें ॥ ओर संप्रदायके ग्रंथनकोहू अवलोकन न किये ॥ सेवकनको तो मुख्यधर्म यह हे ॥ जो स्वामी जासों प्रसन्न होंय सो करनों ॥ सो याप्रकार विष्णुस्वामीकों वहुत विरह भयो ॥ तब स्वप्नद्वारा उनकों भगवदआज्ञा भई ॥ जो दक्षणमें तेलंगकुलमें साक्षात् श्रीपूर्णपुरुषोत्तमको प्रागट्य होईगो ॥ सो वहुतकालतें जो दैवी-जीव विछुरे हें ॥ तिन दैवीजीवनके उद्धारार्थ ओर धर्ममार्ग स्थापनार्थ आप पधारेंगे ॥ सो तिनको भूतलपें संवत् १५३५ माधवमास कृष्ण ११ मध्यानकालके समय जेष्ठानक्षत्र रविवारके दिन स्वईच्छातें चंपारण्यमें अग्निकुंडमेंतें प्रादुर्भाव होयगो ॥ सो तिनको नाँम श्रीवल्लभाचार्यजी होयगो ॥ सो सेवामार्ग प्रगट करेंगे ॥ एसी भगवदआज्ञा भई ॥ तब मोसो आप श्रीविष्णुस्वामी कहें ॥ जो मेंतो स्वधाँमकों जातहों ॥ परि तुम रहियो ॥ तुमकों काल बाधा न करेगो ॥ सो जब आप श्रीवल्लभाचार्यजी प्रगट होईकें आप विद्यानगर पधारेंगे ॥ सों वे सभा जितिकें जव दिग्विजय करि भक्तिमार्गको स्थापन करेंगे ॥ ओर मायामतको खंडन करेंगे ॥ तब तुमकूँ अनुभव होयगो ॥ सो तातें तुम विद्यानगरमें विद्याकुंडपे जैयो ॥ तहाँ तोकों श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको दर्शन होयगो ॥ तादिन तिनसों तूं वीनती करी विष्णुस्वामीके मार्गको अंगीकार कराईयो ॥ सो यह मोकों आज्ञा करि श्रीविष्णुस्वामी निजधाँम पधारे हें ॥ सो यह वृत्तांत कहिकें विल्वमंगलनें अपनो वृत्तांत कह्यो ॥ जो महाराजमें श्रीविष्णुस्वामीकी आज्ञाते वृंदावनमें ब्रह्मकुंडके उपर ईमलीके वृक्षके नीचें वेठिकें आपको स्मरण करत हतो ॥ सो मोकों वेठे साढसातसें वर्ष भए हें ॥ तब अब- मोकों

भगवद आज्ञा भई ॥ जो तूँ विद्यानगर जाई ॥ सो अब तोकों श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको दर्शन होयगो ॥ सो में यहाँ आयो हूँ ॥ एसो विल्वमंगलको वृत्ताँत सुनिकें ॥ श्रीआचार्यजी आप श्रीविल्वमंगलजीके उपर बहुत प्रसन्न भए ॥ ओर कही ॥ जो श्रीविष्णुस्वामीके लियें तो मेरो प्रागटय हे ॥ तब विष्णुस्वामीकी आडीतें श्रीविल्वमंगलजीनें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों तिलक कियो ॥ तापाछें चान्यो संप्रदायके आचार्य मिलिकें श्रीवल्लभाचार्यजी नाँम धरे ॥ ओर वीनती करी ॥ जो महाराज चान्यो संप्रदाय आपकी हें ॥ ओर अब हम आपके आज्ञाधारी हें ॥ सो महाराज हमारी संप्रदायके दीक्षित आप हो ॥ तब विल्वमंगलनें वीनती करी ॥ जो अब में स्वधाँमकों जातहों ॥ एसें कहि वाही समें विल्वमंगल स्वधामकों पधारे ॥ तब विद्यानगरमें जेजेकार भयो ॥ तब यह माहात्म्य देखिकें अनेक जीव शरणि आए ॥ तापाछें चान्योसंप्रदायके आचार्य अपनें अपनें घरकों गए ॥ पाछें श्रीआचार्यजी आप कछुकदिन विराजिकें विद्यानगरसों विजय कीए ॥ इति श्रीविद्यानगरकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ ४९ ॥

❀ (बेठक ५० मी) ❀

❀ (अथ श्रीत्रिलोकभानजीकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बेठक त्रिलोकभानजीमें हे ॥ सो तहाँ एक रमणीय स्थल देखिकें छोंकरके नीचें आप विराजे ॥ सो तहाँ मायावादी बहुत हते ॥ सो सब शक्तिके उपासक हते ॥ तब श्रीआचार्यजी आप दामोदरदासतें आज्ञा कीए ॥ जो इहाँ मायावादी बहूत प्रबल हें ॥ तातें मायामतको खंडन करि भक्तिमार्गको स्थापन करेंगे ॥ सो तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप तहाँ श्रीभागवतकी सप्ताहको आरंभ कीए ॥ तब महाअलौकिक आनंद भयो ॥ सो मायावादीननें

वकनको तो सो करनों ॥ स्वमद्वारा पक्षात

सुन्यो ॥ जो श्रीवल्लभाचार्यजी इहाँ पधारे हें ॥ तव मिलिकें श्रीआचार्यजीके पास आए ॥ तव आप से सत्कार करिकें वेठारे ॥ तापाछें चर्चा भई ॥ सो घडी एक श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप सव मायावादीनकों कीए ॥ सो याप्रकार सहजमें मायामत खंडन करि भक्तिमार्ग स्थापन कीए ॥ तव तहाँ जेजेकार भयो ॥ तव पंडाननें वीनती करी ॥ जो महाराज कोई मनुष्य होय वासों जीत्यो जाय ॥ आपतो साक्षात् ईश्वरहो ॥ सो अव कृपाकरिकें हमकों शरणि लीजिये ॥ जव आप उद्धार करोगे तव होयगो ॥ सो महाराज अवतो हम आपकी शरणॉगत हे ॥ तव श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आपतो परमदयालु हें ॥ तातें आज्ञा कीए ॥ जो स्नान करि आवो ॥ सो सव स्नान करि आए ॥ तव आप सवनको नॉम सुनाए ॥ ओर तुलसीकी माला पहराए ॥ तव तहाँ जेजेकार भयो ॥ तापाछें दंडवत करिकें सव अपनें घरकों गये ॥ तव श्रीत्रिलोकभॉनजी ठाकुरजी श्रीआचार्यजीके पधारे ॥ सो तव श्रीआचार्यजी ठाढे होयके दर्शन कीए ॥ प्रणाम करि वीनती कीए ॥ जो महाराज पट्टापे विराजिये तव श्रीठाकुरजी वहाँ विराजे ॥ तव श्रीठाकुरजीनें कह्यो ॥ जो मायावादतो आप खंडन कीएहो ॥ सो तव श्री. च. आप कहें ॥ जो यह सव आपको प्रताप हे ॥ जापे अ कृपा कटाक्ष करो ॥ सो सनाथ होय ॥ तव श्रीठाकुरजी कहें ॥ आप मंदिरमें पधारिये ॥ तव श्रीआचार्यजीमहाप्रभु श्रीठाकुरजीसों वीनती करीं ॥ जो आप मंदिरमें पधारिए ॥ महूँ पाछें तें आवत हो ॥ तव श्रीठाकुरजी अपनें मंदिरमें पधारे ॥ पाछें श्रीआचार्यजी कृष्णदासमेघनसों कहे ॥ जो हन्यो मेवा सिद्धि करो ॥ तव सामुग्री सिद्धि करिकें कृष्णदासमेघननें श्री-

भगवद आ को वीनती करी ॥ जो महाराज पधारिये ॥ सामुग्री श्रीआई ॥ सो तव श्रीआचार्यजी सब सेवकन सहित पधारे ॥ । जायकें श्रीत्रिलोकभानजीके दर्शन कीए ॥ तव त्रिलोकभाजी आज्ञा कीए ॥ जो आप शृंगार करिये ॥ तव श्रीआचार्यजी शृंगार किये ॥ ता समय सबनकों अद्भुत दर्शन भयो ॥ पाछें आप श्रीठाकुरजीकों सामुग्री आरोगाई ॥ पाछें श्रीठाकुरजीकी आज्ञा ले आप श्रीआचार्यजी अपनी बेठकमें पधारे ॥ सो तहॉ कछुकदिनलों विराजिकें तहॉतें विजय कीए ॥ सो तोताचलपर्वतपे पधारे ॥ इति श्रीत्रिलोकिभानजीकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ ५० ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

❀ (बेठक ५१ मी) ❀

❀ (अथ श्रीतोताद्रीपर्वतकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बेठक तोताचलपर्वतके पास बहुतसो बन हे ॥ तहाँ आप विराजे तहाँ हे ॥ सो तहाँ कृष्णदासमेघननें वीनती करी ॥ जो महाराज जलको स्थल कहूँ दिसत नॉहीं ॥ तब श्रीआचार्यजी आज्ञा कीए ॥ जो मेरे समीप वह कर्दवको वृक्ष हे ॥ ता कर्दवके दक्षण आडी एक वडी शिला हे ॥ ता शिलाकों ऊठावो ॥ सो ताके नीचें एक कुंड निकसेगो ॥ वा कुंडमें बहुत जल हे ॥ तब कृष्णदासें जायकें वह शिला ऊठाई ॥ तब ताके नीचें एक वडो कुंड निकस्यो ॥ तामें सिढी बहुत सुंदर बनीहीं ॥ तब सब सेवकनलें वा कुंडको नॉम वल्लभकुंड धर्यो ॥ सो ये समाचार सब मायावादीननें सुने ॥ जो श्रीवल्लभाचार्यजी यहाँ पधारे हें ॥ सो विननें दक्षणके विद्यानगरमें तथा काशीमें मायामत खंडन करि भक्तिमार्गको स्थापन कियो हे ॥ ओर सुनीहे जो अग्निकुंडमेंसों आपको प्रागट्य हे ॥ तातें अग्निसरीखो आपको तेज हे ॥ सो

सुन्यो ॥ जो श्रीवल्लभाचार्यजी इहाँ पधारे हैं ॥ त
मिलिकें श्रीआचार्यजीके पास आए ॥ तब आप नो
सत्कार करिकें बेठारे ॥ तापाछें चर्चा भई ॥ सो घडी
श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप सब मायावादीनकों नि
कीए ॥ सो याप्रकार सहजमें मायामत खंडन करि म
स्थापन कीए ॥ तब तहाँ जेजेकार भयो ॥ तब पंडाननें वीन
करी ॥ जो महाराज कोई मनुष्य होय वासों जीत्यो जाय
आपतो साक्षात् ईश्वरहो ॥ सो अब कृपाकरिकें हमकों शर
लीजिये ॥ जब आप उद्धार करोगे तब होयगो ॥ सो मह
राज अबतो हम आपकी शरणागत हैं ॥ तब श्रीआचार्यज
महाप्रभु आपतो परमदयालु हैं ॥ तातें आज्ञा कीए ॥ जो स्ना
करि आवो ॥ सो सब स्नान करि आए ॥ तब आ
सबनकों नॉम सुनाए ॥ ओर तुलसीकी माला पहराए ॥ त
तहाँ जेजेकार भयो ॥ तापाछें दंडवत करिकें सब अपनें घरक
गये ॥ तब श्रीत्रिलोकभाँनजी ठाकुरजी श्रीआचार्यजीके पास
पधारे ॥ सो तब श्रीआचार्यजी ठाढे होयके दर्शन कीए ॥ ओ
प्रणाम करि वीनती कीए ॥ जो महाराज पट्टापे विराजिये
तब श्रीठाकुरजी वहाँ बिराजे ॥ तब श्रीठाकुरजीनें कह्यो
जो मायावादतो आप खंडन कीएहो ॥ सो तब श्रीआचार्यज
आप कहें ॥ जो यह सब आपको प्रताप हे ॥ जापे आप
कृपा कटाक्ष करो ॥ सो सनाथ होय ॥ तब श्रीठाकुरजी कहें ।
आप मंदिरमें पधारिये ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु
आप श्रीठाकुरजीसों वीनती करीं ॥ जो आप मंदिरमें पधारिए ॥
मैंहू पाछें तें आवत हों ॥ तब श्रीठाकुरजी अपनें मंदिरमें पधारे ॥
पाछें श्रीआचार्यजी कृष्णदासमेघनसों कहे ॥ जो हन्यो मेवा
सिद्धि करो ॥ तब सामग्री सिद्धि करिकें कृष्णदासमेघननें श्री-

भगवद आगेकों वीनती करी ॥ जो महाराज पधारिये ॥ सामुग्री श्रीआरे ॥ सो तव श्रीआचार्यजी सव सेवकन सहित पधारे ॥ । जायकें श्रीत्रिलोकभानजीके दर्शन कीए ॥ तव त्रिलोकभानजी आज्ञा कीए ॥ जो आप शृंगार करिये ॥ तव श्रीआचार्यजी शृंगार किये ॥ ता समय सवनकों अद्भुत दर्शन भयो ॥ पाछें आप श्रीठाकुरजीकों सामुग्री आरोगाई ॥ पाछें श्रीठाकुरजीकी आज्ञा ले आप श्रीआचार्यजी अपनी वेठकमें पधारे ॥ सो तहाँ कछुकदिनलों विराजिकें तहाँतें विजय कीए ॥ सो तोताचलपर्वतपे पधारे ॥ इति श्रीत्रिलोकिभानजीकी वेठकको चरित्र समाप्त ॥ ५० ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (वेठक ५१ मी) ❀

❀ (अथ श्रीतोताद्रीपर्वतकी वेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अव श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी वेठक तोताचलपर्वतके पास वहुतसो वन हे ॥ तहाँ आप विराजे तहाँ हे ॥ सो तहाँ कृष्णदासमेघननें वीनती करी ॥ जो महाराज जलको स्थल कहूँ दिसत नाँहीं ॥ तव श्रीआचार्यजी आज्ञा कीए ॥ जो मेरे समीप वह कदंवको वृक्ष हे ॥ ता कदंवके दक्षण आडी एक वडी शिला हे ॥ ता शिलाकों ऊठावो ॥ सो ताके नीचें एक कुंड निकसेगो ॥ वा कुंडमें वहुत जल हे ॥ तव कृष्णदासें जायकें वह शिला ऊठाई ॥ तव ताके नीचें एक वडो कुंड निकस्यो ॥ तामें सिढी वहुत सुंदर वनीहीं ॥ तंब सव सेवकनलें वा कुंडको नाँम वल्लभकुंड धर्यो ॥ सो ये समाचार सव मायावादीननें सुने ॥ जो श्रीवल्लभाचार्यजी यहाँ पधारे हें ॥ सो विननें दक्षणके विद्यानगरमें तथा काशीमें मायामत खंडन करि भक्तिमार्गको स्थापन कियो हे ॥ ओर सुनीहे जो अग्निकुंडमेंसों आपको प्रागट्य हे ॥ तातें अग्निसरीखो आपको तेज हे ॥ सो

आपनमेंनें द्वे पंडित जायकें,देखि आवो ॥ जो आपको डेरा कोनसी जगे हे ॥ एसो विचारिकें विनमेंतें द्वे पंडित गए ॥ सो जायकें आगें देखें तो एक तटके नीचें आप विराजे हें ॥ सो ताहाँ आय विननें दर्शन करिकें वीनती करी ॥ जो महाराज यहाँ निर्जल स्थलमें कहाँ आए विराजे ॥ सो सुनिकें आप श्रीआचार्यजीके सेवक कृष्णदासने कही ॥ जो तुम वा कदंवके नीचें जायकें देखो तो सही ॥ जो केसो सुंदर कुंड जलसों भऱ्यो हे ॥ सो तव तो वे मायावादी मनमें विस्मय होयकें नमस्कार कर अपनें स्थलकों गए ॥ सो आयकें विननें सव समाचार अपनें साथकेनतें कहें ॥ जो वेतो साक्षात् ईश्वर हें ॥ सो सुनिकें तव पंडित वहाँ श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके दर्शनकों आए ॥ तव वहाँ नयो कुंड देखिकें वहुत प्रसन्न भए ॥ तव सवननें यह विचारी ॥ जो इन पथरानमें जल कहाँतें भयो ॥ जो आपनें तो कोई दिन देख्यो नाँही ॥ ओर वडेनके मुखतें हू सुन्यो नाहीं ॥ जो यहाँ जल हे ॥ तातें यह तो ईश्वरको अँश हें ॥ तापाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके निकट जाय आपकों साष्टांग दंडवत करिकें वीनती करी ॥ जो महाराज हमकों तो अव शरणि लीजिये ॥ तव श्रीआचार्यजी आज्ञा कीए ॥ जो अव तुम रुद्राक्ष उतारिकें कुंडमें स्नान करि आवो ॥ तव वे सव रुद्राक्ष उतारिकें स्नान करि आए ॥ तव श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप विनकों नाँम सुनाए ॥ ओर तुलसीकी माला पेहेराए ॥ तव तोताचलपर्वतपे जेजेकार भयो ॥ तहाँ आप मायामत खंडन करि भक्तिमार्गको स्थापन कीए ॥ तापाछें सव पंडित दंडवत करिकें अपनें घरकों गए ॥ तव तहाँ श्रीआचार्यजी आप सप्ताह कीए ॥ तव महा अलौकिक आनंद भयो ॥ पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप तहाँसो विजय कीए ॥ इति श्रीतोताचलकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ ५१ ॥ ॥ ७ ॥ ॥

❀ (वेठक ५२ मी) ❀

❀ (अथ श्रीदरवसेनजीमेंकी वेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी वेठक दरवसेनजीमें हे ॥ सो तहाँ श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप पधारे ॥ तहाँ वहुत विकट जगे हे ॥ ओर तहाँ सर्प व्याघ्रादिक तामसीजीवहू वहुत रेहेत हते ॥ ओर आसपास झाडी हू वहुत हे ॥ तहाँ एक रमणीय स्थल देखिकें आप बिराजे ॥ तब तहाँ श्रीदरवसेनजी-ठाकुर पधारे ॥ तव श्रीआचार्यजीनें श्रीठाकुरजीकों प्रणाम कियो ॥ ओर आसनपे पधरायकें वीनती करी ॥ जो महाराज आप परिश्रम करिकें यहाँ क्यो पधारे ॥ तव श्रीठाकुरजी कहें ॥ जो एसी विकटजगे आप जीवनके उद्धारार्थ पधारे हो ॥ नाँतर आपको प्रसंग हमकों कहाँ होतो ॥ परंतु यहाँ विकटजगे वहुत हे ॥ सो तातें आपको परिश्रम होय सो ठीक नाहीं ॥ सो ऐसी आप श्रीठाकुरजीकी वात्सल्यता देखिकें वहुत प्रसन्न भए ॥ तहाँ चरणारविंदकी रजद्वारा हजारन जीवनको उद्धार कीए ॥ तापाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप सप्ताह कीए ॥ सो तहाँ श्रीठाकुरजी आप नित्य पधारते ॥ तासों अनिर्वचनीय सुख भयो ॥ तापाछें श्रीआचार्यजी आप तहाँसो श्रीठाकुरजीकी आज्ञा लेकें विजय किए ॥ सो सूरति पधारे ॥ इति श्रीदरवसेनजीकि वेठकको चरित्र समाप्त ॥ ५२ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (वेठक ५३ मी) ❀

❀ (अथ श्रीसूरतकी वेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अव श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप काँकरवाड होयकें पांडुरंग-श्रीविठ्ठलनाथजीके दर्शन करिकें पंचवटी होयकें सूरति पधारे ॥

सो ताहाँ तापीके किनारे अश्विनीकुमारके आश्रमके पास बि-
राजे ॥ सो तहाँ तापीमें स्नान कीए ॥ तापाछें तहाँ श्रीभाग-
वतको पारायण कीए ॥ तब तहाँ एक स्त्री अकस्मात आई ॥
सो तापीमें स्नान करि श्रीआचार्यजीकों दंडवतकरि वामभुजा-
की ओर ठाढी होयकें पंखाकी सेवा करन लागी ॥ तब ताकूं
कृष्णदासजी बरजे ॥ तब श्रीआचार्यजी कृष्णदासकों नाँहीं-
कीए ॥ सो वो जहाँताँई कथा होय ॥ तहाँताँई पंखा करे ॥
ओर आपको श्रीमुखारविंद निरखे ॥ सो जब कथा होय चूके ॥
तब दंडवत करि अपनें आश्रममें जाय ॥ सो वाकी कृष्णदा-
सनें बहुत चौकशी करी ॥ परंतु निश्चे न भयो ॥ जो वो स्त्री
कहाँतें आवे हे ॥ ओर कहाँ जाय हे ॥ सो यारीतिसों सातदिन-
ताँई वानें सेवा करी ॥ सो जब पारायणकी समाप्ति होय चूकी ॥
तब वो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों दंडवत करि चरणोदक ले
अपनें आश्रमकों गई ॥ तब कृष्णदासनें श्रीआचार्यजीसों वी-
नती करी ॥ जो महाराजाधिराज वह यहाँ जो स्त्री आयकें
कथामें पंखाकी सेवा करतहती ॥ सोतो लौकिक स्त्रीतो नाँहीं
ही ॥ वह तो अलौकिक स्त्री ही ॥ सो कोन ही सो आप कृपा
करिकें कहिये ॥ तब श्रीआचार्यजी आप मुसिकाईकें कहें ॥
जो वह तो श्रीतापीजी नदी हीं ॥ सो वह श्रीसूर्यनारायणकी पुत्री
हे ॥ सों इनकों सप्ताह सुनिवेकी महा अभिलाखा हती ॥ सो
यहाँ सप्ताह सुनिवेकों आवतीं ॥ तब यह सुनिकें सब सेवक
साष्टांग दंडवत कीए ॥ ओर विनती कीए ॥ जो महाराज आ-
पको अभिप्राय तो आप कृपा करिकें जतावो ॥ तब ही जान्यो
जाय ॥ सो यह माहात्म्य देखिकें वहाँ अनेक जीव श्री-
आचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक भए ॥ इति श्रीसूरतिमेंकी तापी-
नदीकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ ५३ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (बेठक ५४ मी) ❀

❀ (अथ श्रीभडोचकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बेठक भडोचमें नर्मदानदीके किनारे भृगुक्षेत्रमें हे ॥ तहाँ छोंकरके नीचें आप बिराजे ॥ सो तहाँ अकस्मात एक स्त्री आई ॥ सो नखतेंलगाय शिखताँई हिरा मोतिनके आभरण पहेरें ही ॥ तानें अति हर्पसों आपकों साष्टांग दंडवत करी ॥ ओर बीनती करी ॥ जो महाराजाधिराज आपको जो प्रागट्य हे ॥ सो देवीजीवनके उध्दारार्थ ॥ मायामत खंडनार्थ ॥ ओर सकल तीर्थ सनाथ करणार्थ हे ॥ सो आप कृपाकरि नर्मदास्नान करिवेकों पधारिये ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप कहें ॥ जो बोहोत आछो ॥ अबही हम स्नान करिवेकों आवत हें ॥ तब वह स्त्री दंडवत करि अपनें स्थानकों गई ॥ तब दामोदरदासने बीनती करिकें श्रीआचार्यजीतें पूछी ॥ जो महाराज वह स्त्री बीनति करी गई हे ॥ सो वह कोंन हती ॥ सो आप कृपाकरिकें कहिये ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप कहें ॥ जो वह श्रीनर्मदाजी नदी हीं ॥ सो बीनती करि गई हें ॥ पाछें आप नर्मदानदीमें स्नान करनकों पधारे ॥ तब श्रीनर्मदानदी बहुत प्रसन्न भई ॥ ताहाँ स्नान किये ॥ पाछें आप नित्यनेम करिकें अपनी बेठकमें पधारे ॥ तापाछें आप वहाँ सप्ताह कीए ॥ तब महा अलौकिक आनंद भयो ॥ तापाछें वहाँ मायावादीपंडित सब जुरिकें आए ॥ तब उनसों चर्चा भई ॥ सो घडी एकमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप सबनकों निरुत्तर कीए ॥ सो तहाँ आपनें मायामतको खंडन करि भक्तिमार्गको स्थापन कीए ॥ तब भडोचमें जेजेकार भयो ॥ तापाछें आप तहाँतें विजय कीए सो मोरवी पधारे ॥ इति श्रीभडोचकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ ५४ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥

❀ (वेठक ५५ मी) ❀

❀ (अथ श्रीमोरवीकी वेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अव श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप मोरवी पधारे ॥ सो तहाँ कुंडके उपर छोंकरके वृक्षके नीचें विराजे ॥ तव कृष्णदासमेघनसों आज्ञा कीए ॥ जो यह राजामयुरध्वजको गाँम हे ॥ सो वो राजा वडो सत्यवादी हरिभक्त हतो ॥ तातें यहाँ श्रीकृष्णचंद्र अर्जुन सहित पधारे हे ॥ तातें यहाँ सप्ताह होयगी ॥ सो तापाछें आप वहाँ सप्ताह कीए ॥ सो तहाँ वाला ओर वादा नामके दोऊभाई पुष्करणा ब्राह्मण हते ॥ वे वडे भगवदीय हते ॥ सो वे दोऊ श्रीआचार्यजीके दर्शनकों आए ॥ तव उनकों साक्षात् दर्शन भयो ॥ तव उन दोऊ भाईनने आपसों वीनती करी ॥ जो महाराज हम बहुत कालतें भटकत फिरत हें ॥ आपतो परम कृपालु हो ॥ सो हमारो उद्धार कीजे ॥ तव श्रीआचार्यजी आप आज्ञा कीए ॥ जो तुम स्नान करि आवो ॥ तव वे स्नान करि आए ॥ पाछें आप कृपा करिकें दोनोकों ओर भगवन्नाम सुनाए ॥ तापाछें ब्रह्मसंवंध करवाए ॥ पाछें वालाको नाँमतो वालकृष्णदास ओर वादाको नाँम वादरायणदास धर्यो ॥ पाछें विनकों श्रीआचार्यजीने एतन्मार्गीय ग्रंथ पढाए ॥ तापाछें विननें आपसों वीनती करी ॥ जो महाराज कृपाकरिकें हमकूँ सेवा पधराय दीजिये ॥ तव श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनने विनकों सेवा पधराय दई ॥ ताको विस्तार चोराशी वैष्णवकी वार्तामें लिख्यो हे ॥ तातें इहाँ तो संक्षेपमात्र लिख्यो हे ॥ इति श्रीमोरवीकी वेठकको चरित्र समाप्त ॥ ५५ ॥

❀ (वेठक ५६ मी) ❀

❀ (अथ श्रीनवानगरकी वेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अव श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी वेठक नवानगरमें नागमती-

नदीके तीरपे हे ॥ सो तहाँ एक रमणीय स्थल देखिकें छोंकरके नीचें आप विराजे ॥ तहाँ श्रीभागवतको पाठ कीए ॥ ता समय राजा जामंतकमाँचीनें आईकें साष्टांग दंडवत करी ॥ ओर वीनती करी ॥ जो महाराजाधिराज मेरो धन्य भाग्य हे ॥ जो आपके दर्शन मोकों भए ॥ साक्षात जाकों वेद शास्त्र निरुपण करत हें ॥ ताके दर्शन मोकूं भए ॥ सो आपके दर्शन मात्रतें मेरी बुद्धि निर्मल भई ॥ अव कृपा करिकें मोकों शरणि लीजिये ॥ हम वहुतकालतें भटकत फिरत हें ॥ तव राजाकी आर्ति देखिकें श्रीआचार्यजी आप आज्ञा कीए ॥ जो स्नान करि आवो ॥ तव वो राजा स्नान करि आयो ॥ तव श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप कृपा करिकें वा राजाकों नाँम सुनायो ॥ तापाछें ब्रह्मसंबंध करवायो ॥ ओर तुलसीकी माला गरेमें डारी ॥ तव राजानें वीनती करी ॥ जो महाराज मोकों यहाँ शहर वसावनों हे ॥ सो आप आज्ञा देउ तहाँ वसाऊँ ॥ तव श्रीआचार्यजीमहाप्रभु कहें ॥ जो याही समय मुहूर्त आछो हे ॥ तातें तुम जायकें अवही शहर वसायवेको मुहूर्त करो ॥ जातें तुमारो राज्य निर्भय होईगो ॥ सो तव राजा दंडवत करिकें अपनें घर जाय शहरको मुहूर्त कियो ॥ सो शहर अद्यापी वसतहे ॥ तापाछें श्रीआचार्यजी आप तहाँतें विजय कीए ॥ सो खंभालिया पधारे ॥ सो यह चरित्र श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप नवानगरकी बेठकमें प्रगट कीए ॥ ओरहू अनेक कीए ॥ परि मुख्य हे सोई लिखेहें ॥ इति श्रीआचार्यजीकी नवानगरकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ ५६ ॥

❀ (बेठक ५७ मी) ❀

❀ (अथ श्रीखंभालिआकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अव श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बेठक खंभालियामें कुंडके उपर छोंकरके वृक्षके नीचें हे ॥ तहाँ आप विराजे ॥ तहाँ आ-

प दामोदरदासतें आज्ञा कीए ॥ जो यह स्थल बहुत रमणीय हे ॥ तातें यहाँ सप्ताह करेंगे ॥ सो तहाँ साँझके समय एक ब्राह्मणनें आईकें साष्टांगदंडवत करी ॥ ओर वीनती करी ॥ जो महाराज ईहाँ रात्रिकों आप मति रहियो ॥ ईहाँ ईमलीपे एक प्रेत रहेत हे ॥ सो रात्रिकों ईहाँ जो रेहेत हे ॥ ताकों वह प्रेत खायो जात हे ॥ तातें मेरी यह वीनती हे ॥ जो रात्रमें आप शहरमें बिराजो ॥ सो एसें कहि वह ब्राह्मणतो चल्योगयो ॥ तापाछें आप रात्रिकों वहाँ कथा कहिवेकों विराजे ॥ ता समय कृष्णदास अपरस धोइवेकों गयो ॥ तहाँ वह प्रेत आयो ॥ सो वह आसपास चान्योवगलकों डोले ॥ तव कृष्णदासनें कह्यो ॥ जो तूँ ईतऊत चान्योओर क्यों डोलत हे ॥ जो तोकों आवनोंहोय तो आउ ॥ में ईहांई ठाढोहों ॥ तब वह प्रेत बोल्यो ॥ जो तुम-तो बडे महापुरुष हो ॥ तातें मेरेउपर कृपा करो ॥ जो मेरो उद्धार होय ॥ अब में बहुत दुःख पावतहों ॥ तापाछें कृष्णदास अपरस धोईकें आए ॥ सो सुकाईकें श्रीआचार्यजीतें वीनती करी ॥ जो महाराजाधिराज वह प्रेत आयो हे ॥ सो वीनती करत हे ॥ जो मेरो उद्धार करो ॥ तब श्रीआचार्यजी आप कहे ॥ जो तूँ चरणोदक लेकें वाके उपर छिरकि ॥ सो तब कृष्णदासनें वेसेंही कियो ॥ तब वाकी प्रेतयोनि छूटिगई ॥ ओर देवस्वरूप भयो ॥ तब वैकुंठतें विमाँन आयो ॥ सो विमाँनमें बेठिकें वो वैकुंठकों गयो ॥ तब वह श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी जे जे बोलत गयो ॥ तब सब सेवकननें साष्टांग दंडवतकीए ॥ तातें भगवदीय. गाए हें जो (चरणोदक लेत प्रेत ततक्षणतें मुक्ति भए करुणामय नाथ सदा आनंद कंदे) तापाछें श्रीआचार्यजी आप तहाँ सप्ताह कीए ॥ तब महाअलौकिक आनंद भयो ॥ तापाछें आप तहाँसों विजय कीए सो पिंडतारक पधारे ॥ इति श्रीखंभालियाकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ ५७ ॥

❀ (बेठक ५८ मी) ❀

❀ (अथ श्रीपिंडतारकमेंकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बेठक पिंडतारकपे छोंकरके नीचें आप विराजे तहाँ हे ॥ सो तहाँ दामोदरदासतें आज्ञा कीए ॥ जो जब श्रीकृष्णचंद्र द्वारिकामें आयके विराजे ॥ तब सर्व तीर्थ श्रीद्वारिकाजीके आसपास आपके दर्शन करणार्थ रहे ॥ तब दुर्वासाऋषी हू यहाँ रेहेत हें ॥ यह आज्ञा करिकें आप श्रीआचार्यजी तहाँ विराजे ॥ सो तहाँ श्रीभागवतको पारायण कीए ॥ तब एक ब्राह्मण नित्य कथा सुनिवेकों आवतो ॥ वासों आप आज्ञा कीए ॥ जो तुम कहाँ रेहेत हो ॥ तब वा ब्राह्मणनें वीनती करी ॥ जो महाराजाधिराज में तीर्थक्षेत्र रहेत हों ॥ सो आपके श्रीमुखतें कथा सुनिवेको बहुतदिननतें मनोरथ हतो ॥ सो आज समें मिल्यो हे ॥ सो सुनिकें आप मुसिकाईकें चूपकरिरहे ॥ सो जहाँताँई सप्ताह होइ तहाँताँई वो रहें ॥ फेरि दंडवत करिकें पाछें जाँय ॥ सो काहूकों न दिसें ॥ तब एकदिन कृष्णदासनें वीनती करी ॥ जो महाराजाधिराज वह ब्राह्मण आवे हे ॥ सो वह कोंन हे ॥ सो आप कृपा करिकें कहिये ॥ तब आप आज्ञा कीए ॥ जो वा दिन हमनें कही सो तूं समुझ्यो नाहीं ॥ जो यह तीर्थक्षेत्रमें रेहेंत हें ॥ सो वह पंडित स्वरूपसों तीर्थराज आवत हें ॥ सो जितनें तीर्थ हें ॥ सो साक्षात् स्वरूपात्मक हें ॥ सो सुनिकें सब सेवक दंडवत कीए ॥ पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप अपनें कटाक्षद्वारा अनेक पशु पक्ष्यादी जीवनको उद्धार कीए ॥ तापाछें आप तीर्थक्षेत्रमें स्नान कीए ॥ तब तीर्थपुरोहित आयो ॥ तासों कृष्णदासनें पूछी ॥ जो तूं कोंन हे ॥ तब वानें कह्यो ॥ जो में तीर्थपुरोहित हों ॥ सो वा तीर्थपुरोहितनें श्रीआचार्यजीको प्रताप देखिकें कही ॥ जो महाराज

मेरो उद्धार करिये ॥ में आपकी शरणि हूँ ॥ तब श्रीआचार्य-जी महाप्रभु आप आज्ञा कीए ॥ जो तेरो उद्धार तीर्थराज करेंगे ॥ जाकी तूँ पीठिकापे हाथ धरेगो ॥ ताके हाथसों पिंड तरेंगे ॥ तापाछें आप वा पुरोहितकों भलीभाँतिसों दक्षणा दीए ॥ पाछें आप तहाँतें विजय किये ॥ सो मूलगोमतीपे पधारे ॥ इति श्रीपिंडतारककी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ ५८ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (बेठक ५९ मी) ❀

❀ (अथ मूल गोमतीजीकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बेठक मूलगोमतीके किनारेपे एक छोंकरके नीचें आप विराजे हते तहाँ हे ॥ सो तहाँ कृष्णदासमेघननें वीनती करी ॥ जो महाराज यह मूलगोमती केसें वाजे हे ॥ तब श्रीआचार्यजी आप आज्ञा कीए ॥ जो मूलगोमती श्रीवेकुंठतें पधारीं ॥ सो राजाके इहाँ प्रगटीं ॥ तब अपनें पितातें कहें ॥ जो मेरो व्याह मेरी इच्छातें होयगो ॥ पाछें विनकों श्रीद्वारिकानाथजीकी आज्ञा भई ॥ जो तुम यहाँ-ताँई आऊ ॥ सो तब विननें पितासों कही ॥ जो अब में जल-रूप होयकें समुद्रसों जायकें मिलोंगी ॥ सो या मिसतें श्रीकृ-ष्णचंद्रके चरणारविंदको संबंध मोकों होयगो ॥ यह कहि श्री-गोमतीजी जलरूप होय श्रीद्वारिकाजी पधारे ॥ तासों यह मूलगोमती वाजत हें ॥ तापाछें श्रीआचार्यजी आप वहाँ वि-राजे हते ॥ सो तहाँ एक संन्यासी आयो ॥ सो श्रीआचार्यजी-महाप्रभुनकों दंडवत करिकें बेठ्यो ॥ तब श्रीआचार्यजी आप आज्ञा कीए ॥ जो यहाँ तुम कहाँ रेहेंतहो ॥ ओर कहाँसों आए हो ॥ तब वा संन्यासीनें वीनती करी ॥ जो महाराज पहलें में दक्षणमें रेहेंत हतो ॥ ओर श्रीविष्णुस्वामीको शिष्य हों ॥ सो गृहस्थ हतो ॥ सो मेरे बेटा लुगाई सब मरिगए ॥ तब में

गृहस्थसों बेरागी भयो ॥ तव मेंनें मनमें विचाऱ्यो ॥ जो अव तो अपनों कल्याण होय तेसें करनों ॥ सो में घर छोडिकें श्रीद्वारिकापुरी आयो ॥ सो यहाँ आयकें श्रीद्वारिकानाथजीके दर्शन कीए ॥ तापाछें एकांत स्थल देखिकें बेठ्यो ॥ सो तहाँ श्रीभागवतको पाठ करतो ॥ तव द्वे चार विरियाँ काल आयो ॥ सो में नहीं गयो ॥ मोकों इहाँ बेठे सातसो वर्ष भए ॥ तापाछें श्रीभगवद्आज्ञा भई ॥ जो वर माँगि ॥ तव मेंनें यह वर माँग्यो ॥ जो मोकों श्रीकृष्णचंद्रकी बाललीलाके दर्शन होंय ॥ ओर श्रीगिरिराजकी तरहटीमें वांस होय ॥ तव फेरि आज्ञा भई ॥ जो यहतो तेनें वहुत कठिन वर माँग्यो ॥ जो बडेनकोंहूँ दुर्लभ हे ॥ परंतु हमारो वर खाली न जायगो ॥ जब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप यहाँ पधारेंगे ॥ तब तेरो मनोरथ पूर्ण करेंगे ॥ सो अव आप पधारे हो ॥ सो मोकों स्वप्नमें आज्ञा भई हे ॥ जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु .पधारे हें ॥ सो सुनिकें श्रीआचार्यजी आप संन्यासीसों कहें ॥ जो तुम साधनमें परिगये ॥ तातें तुमकों इतनी ढील भई ॥ अव तूम स्नान.करि आवो ॥ तव वह बेरागी श्रीगोमतीजीमें स्नान करि आयो ॥ तव श्रीआचार्यजी आप वाकों नाँम सुनाए ॥ तापाछें आप सप्ताह पूर्ण कीए ॥ तव महाअलोकिक आनंद भयो ॥ तापाछें आप वा संन्यासीसों आज्ञा कीए ॥ जो आजतें तीसरेदिन तेरो मृत्यु होयगो ॥ तापाछें तेरो जन्म श्रीगिरिराजमें व्रजवासीके घरमें होइगो ॥ तहाँ हरजीग्वाल तेरो नाँम धरेंगे ॥ सो तहाँ हमारे पुत्र श्रीगुसाँइजी आप तेरो उद्धार करेंगे ॥ सो सुनिकें वह संन्यासी साष्टांग दंडवत करि अपनी पर्णकुटीकों गयो ॥ तापाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप तहाँसों विजय कीए ॥ सो श्रीद्वारिकाजी पधारे ॥ इति श्रीमूलगोमतीजीकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ ५९ ॥

❀ (बेठक ६० मी) ❀

❀ (अथ श्रीद्वारिकाजीकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब श्रीआचार्यजी श्रीद्वारिकाजी पधारे ॥ सो तहाँ गोमतीजीके किनारे छोंकरके नीचें विराजे ॥ पाछें श्रीद्वारिकानाथजीसों मिलिवेकों मंदिरमें पधारे ॥ तब श्रीआचार्यजी ठाढे होयकें प्रणाम कीए ॥ तब आप श्रीद्वारिकाधीश आगें आय मिले ॥ तब आप श्रीआचार्यजी कहें ॥ जो प्रभु इतनों परिश्रम क्यों कीए ॥ में तो आपतें मिलिवेकों आवत हतो ॥ तब श्रीद्वारिकानाथजी कहें ॥ जो आप इतनो परिश्रम करिकें यहाँ पधारे ॥ ओर हम सामनें आए ॥ यामें हमकूं कहा बडो परिश्रम भयो ॥ अबतो चातुर्मास आप यहाँई विराजो ॥ तब श्रीआचार्यजी कहें ॥ जो आप प्रसन्न होउगे सो करेंगे ॥ तब श्रीद्वारिकानाथजी अति प्रसन्न भए ॥ ओर आज्ञा कीए ॥ जो मंदिरमें वेगि पधारिये ॥ तब आप वीनती कीए ॥ जो आप पधारो ॥ मेंहूं पाछेंतें आवतहूं ॥ तब श्रीद्वारिकानाथजी अपनें मंदिरमें पधारे ॥ पाछेंतें श्रीआचार्यजी आप कृष्णदासमेघनसों कहें ॥ जो सामग्री सिद्धि करो ॥ तासमें श्रीद्वारिकानाथजीको कृपापात्र सेवक गोविंददासब्रह्मचारी हतो ॥ तासों श्रीद्वारिकानाथजी आप आयकें कहे ॥ जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु यहाँ पधारे हें ॥ सो वे साक्षात श्रीपूर्णपुरुषोत्तमको अवतार हें ॥ तातें तूं सामें जायकें भक्ति भावसों विनकों पधराय लाउ ॥ तब गोविंददासब्रह्मचारीनें आयकें श्रीआचार्यजीकों साष्टांग दंडवत करी ॥ ओर वीनती करी ॥ जो राजमंदिरमें वेगि पधारिये ॥ आप प्रभु मोकों पठाए हते ॥ तब श्रीआचार्यजी ताहीसमय पधारे ॥ तब ब्रह्मचारीनें वीनती करी ॥ जो महाराज सेवा शृंगार सब आपही कीजे ॥ क्यों जो श्रीठाकुरजी आप आज्ञा कीएहें ॥ तब श्रीआचार्यजी आप श्रीद्वारिकानाथजीको शृंगार कीए ॥ सो तब

सबनकों अद्भुत दर्शन भयो ॥ तापाछें श्रीआचार्यजी भोग धरि भोग सराय आरती करिकें अपनीं बेठकमें पधारे ॥ तहाँ श्रीद्वारिकानाथजी नित्य आपकी बेठकमें पधारते ॥ तापाछें गोविंददासब्रह्मचारी नित्य आप श्रीआचार्यजीतें वीनती करें ॥ जो महाराज आपके श्रीमुखतें कथा सुनिवेकी वडी अभिलाखा हे ॥ सो कृपा करिकें सुनाइये ॥ सो तादिनसों गोविंददासके आग्रहतें आप श्रीआचार्यजी पुस्तक खोलिकें कथा कहिवे बिराजते ॥ पाछें तहाँ श्रीगोवर्धननाथजी पधारिकें श्रीद्वारिकानाथजीसों कहे ॥ जो गोविंददासब्रह्मचारी तो राजलीला संबंधी सेवक हे ॥ सो जब आपके श्रीमुखतें कथा सुनेगो ॥ तब वाकों ब्रजलीलाको संबंध होयगो ॥ तातें आप जायकें विनसों वातें करो ॥ तब श्रीद्वारिकानाथजी गोविंददासतें वातें करनलागे ॥ सो सुनिकें श्रीआचार्यजी पुस्तक बाँधे ॥ तापाछें श्रीद्वारिकानाथजी मंदिरमें पधारे ॥ तब श्रीआचार्यजी गोविंददासके उपर अप्रसन्न भए ॥ तापाछें फेरि गोविंददासनें श्रीआचार्यजीसों कथाकी वीनती करी ॥ परंतु आप कथा न कहे ॥ ओर जो आप श्रीआचार्यजीके सेवक नित्य थारकी जूठनि ले महाप्रसाद लेते ॥ सो वादिन कृष्णदासमेघनसों आप श्रीआचार्यजी आज्ञा कीए ॥ जो आज काहूकों जूँठनि मति दीजो ॥ तब कृष्णदासनें थार माँजिकें धरिदियो ॥ सो वादिन काहू सेवकनें महाप्रसाद नाहीं लियो ॥ पाछे श्रीआचार्यजी जब श्रीद्वारिकानाथजीके मंदिरमें पधारे ॥ तब श्रीद्वारिकानाथजी आज्ञा किये ॥ जो यामें सेवकनको अपराध कहा ॥ जो आपनें आज जूठनिकों नाहीं करी ॥ मोसो तो श्रीगोवर्धननाथजीनें आज्ञा कीए ॥ जो गोविंददासब्रह्मचारी राजलीला संबंधी हे ॥ सो आपके श्रीमुखतें कथा सुनेगो ॥ तब ब्रजलीलामें अंगीकार

होयगो ॥ तातें तुम जाय वातें कथा करो ॥ सो तातें मेनें विनतें वातें करीं ॥ तव श्रीआचार्यजी आप श्रीद्वारिकानाथजीके वचन सुनिकें प्रसन्न भये ॥ सो पाछें अपनी वेठकमें पधारे ॥ तव आप दामोदरदासतें कहें ॥ जो दमला तुमारी सिफारस तो वडीठोरसों भई हे ॥ पाछें कृष्णदासमेघनसों आप आज्ञा किये ॥ जो अव सवनकों जूठनि दीजो ॥ ता दिनतें फेरि पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप कथा कहेंनकों पधारे ॥ सो जव कथा केहेन लागे ॥ तव श्रीसुवोधिनीजीमेंको फलप्रकरण कहें ॥ तव वडो रसावेश भयो ॥ तातें काहू सेवककों देहानुसंधान न रह्यो ॥ इतनेमें एक मेघघटा चढि आई ॥ तव श्रीआचार्यजी विचारें ॥ जो कथामें वहुत रसावेश भयोहे ॥ सो तामें प्रतिवंध नहीं होयतो आछो ॥ तव आपकी इच्छा जाँनि तहाँ शेषजी सहस्रफनसों आय छत्रकीनाईं छाया कीए ॥ सो तहाँ चारि घडीताँईं वर्षा भई ॥ परंतु आप श्रीआचार्यजीके सेवकनपे एक वूँदहू न परी ॥ सो जव आप कथा कहिचूके ॥ तव सव सेवक सावधॉन भए ॥ सों देखें तो वर्षा वहुत भई हे ॥ ओर आसपास जल वहुत वर्स्यो हे ॥ सो देखिकें दामोदरदासनें वीनती करी ॥ जो महाराज वेरवेर आप इतनों परिश्रम क्यों करत हो ॥ यहाँ आसपासतो वर्षा वहुत भई हे ॥ ओर इहॉतो एकहू वूँद नाहीं परी ॥ तव आप कहें ॥ जो यामें हमनें कछू परिश्रम नाहीं कियो ॥ यहतो शेषजी सेवा कीए हें ॥ तव यह सुनिकें सव सेवक साष्टांग दंडवत कीए ॥ तापाछें श्रीआचार्यजी अन्नकूट ओर प्रवोधिनी वहॉही कीए ॥ सो यह माहात्म्य देखिकें अनेक जीव आपकी शरणि आए ॥ तापाछें आप श्रीद्वारिकानाथजीसों विदा होयकें तहाँसों विजय कीए ॥ सो गोपीतलैया पधारे ॥ इति श्रीद्वारिकाजीकी वेठकको चरित्र समाप्त ॥ ६० ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

❀ (वेठक ६१ मी) ❀

❀ (अथश्रीगोपीतलैयाकी वेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब श्रीआचार्यजी गोपीतलैया पधारे ॥ सो तहाँ छोंकरके नीचें विराजे ॥ सो तब कृष्णदासमेघननें वीनती करी ॥ जो महाराज यह गोपीतलैया बाजत हे ॥ ताको कारण कहा हे ॥ श्रीगोपीजन तो सदेव व्रजमेंहीं विराजत हें ॥ ओर गोपीचंदन तो यहाँ होत हे ॥ सो याको कारण आप कृपा करिकें कहिये ॥ तब श्रीआचार्यजी आप कहें ॥ जो यह पुरातनीं कथा हे ॥ जो एकसमय श्रीद्वारिकाधीशनें श्रीरुक्मिणीजीके आगें व्रजभक्तनकी वहुत सराहनाँ करी ॥ तब श्रीरुक्मिणीजीनें कही ॥ जो महाराज हमतो राजाकी वेटी हें ॥ ओर आपकी स्वकीया हें ॥ तातें आपकी आज्ञामें तत्पर हें ॥ तब श्रीठाकुरजी कहें ॥ जो सबकछू हो ॥ परंतु व्रजभक्तनकी होड कोऊ न करेगो ॥ जो जिननें लोह वेदकी दृढ साँकरी तृनवत करि तोरी ॥ ओर जब मेनें वेणुनाद कऱ्यो ॥ तबही सब व्रजभक्त पधारे ॥ सो तुम स्वकीया हो ॥ तोहू तुमसों आयो न जाय ॥ तब श्रीरुक्मिणीजीनें कही ॥ जो आप वेणुनाद करोगे ॥ तहाँ हम आवेंगे ॥ हमकों कोनको डर हे ॥ तब श्रीद्वारिकानाथजी गोपीतलैयापे आय वेणुनाद कीए ॥ तब श्रीरुक्मिणीजी आदिदेकें अष्ट पटराणी ओर सोलहहजार स्त्री सब आभूषण साजिकें बेठिहतीं ॥ सो वेणुनाद सुनिकें त्वरासो ठाढी होयकें चलीं ॥ तब उग्रसेनसहित सब यादवनको समाज देखीकें ॥ मनमें संकोच भयो ॥ जो ए पूछेंगे तो हम कहा जुवाब देयँगी ॥ सो एसी लज्जासों आयुसमें संकोचित होय सब अपनें मंदिरमें जाय बेठीं ॥ तब वेणुनाद सुनिकें व्रजमेंतें कुमारिकानके युथ पधारे ॥ तब विनसों श्रीठाकुरजीनें मनाई कीए ॥ तब विन कुमारिकाननेंहू लीलामें प्रवेश कियो ॥ सो विन कुमारिका

भक्तनके पास यहाँ सदेव आप विराजत हें ॥ तातें यहाँ गोपीचंदन होत हे ॥ तब कृष्णदासजीनें वीनती करी ॥ जो महाराज यह दर्शन तो अवश्य करे चाहियें ॥ तब श्रीआचार्यजीनें भगवदीयनकों दिव्यचक्षु दीए ॥ तातें श्रीद्वारिकानाथजी अलौकिक कुमारिकानसों रास करत हें ॥ असो दर्शन करवाए ॥ तब भगवदीयनकों महा अलौकिक आनंद भयो ॥ तातें काहूकों शरीरकी सुधि रही नाँही ॥ तापाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आय सबनकों सावधान कीए ॥ तब सेवकननें दंडवत करिकें वीनती करी ॥ जो महाराज आप यहाँ सप्ताह कीए ॥ सोहू महा अलौकिक आनंद दिये ॥ तापाछें आप गोपीतलैयासों विजय कीए ॥ सो शंखोद्धार पधारे ॥ इति श्रीगोपीतलैयाकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ ६१ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

❀ (बेठक ६२ मी) ❀

❀ (अथ श्रीशंखोद्धारकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बेठक शंखोद्धारमें शंखतलैयाके किनारे छोंकरके वृक्षके नीचें हे ॥ तहाँ आप विराजे ॥ सो तब आप दामोदरदासतें आज्ञा कीए ॥ जो इहाँ श्रीठाकुरजीनें शंखासुर दैत्यको वध करिकें शंख लियो ॥ तब शंखतलैयामेंसों प्रगट भए ॥ तातें श्रीशंखनारायणजी नामतें इहाँ विराजत हें ॥ सो यहाँके मालिक श्रीशंखनारायणजी हें ॥ ओर यह रमणकद्वीपहू बाजत हे ॥ तातें श्रीद्वारिकानाथजी यहाँ सदेव रमण करत हें ॥ तातें यह जाँनि परतहे ॥ जो कोई दिनन पीछें श्रीद्वारिकानाथजी यहाँ विराजेंगे ॥ असें कहिकें आप श्रीआचार्यजीमहाप्रभु शंखतलैयामें स्नान कीए ॥ पाछे श्रीशंखनारायणजीके दर्शन कीए ॥ तापाछें श्रीशंखनारायणजीको शृंगार करि भोग धरि भोगसराय बीडी अरोगाय आरती करि ॥ पाछें

अपनी बेठकमें पधारे ॥ तब श्रीशंखनारायणजी श्रीआचार्यजीके पास पधारे ॥ ओर कहीं ॥ जो आपनें श्रीभागवतकी टीका सुबोधिनीजी कीनी हे ॥ तामेंतें वेणुगीतको प्रकरण सुनाइये ॥ तब श्रीआचार्यजी आप वीनती कीए ॥ जो एक श्लोककी व्याख्या तीनदिनलों कहेंगे ॥ पाछें आपनें एक श्लोकको व्याख्यान कीए ॥ सो तीनदिन तीन रात्रि व्यतीत भए ॥ काहूकों देहानुसंधान न रह्यो ॥ एसो रसावेश भयो ॥ पाछें जब सब सावधाँन भए ॥ तब श्रीआचार्यजीसों श्रीठाकुरजी कहें ॥ जो यह बात तो आपसोंई बने ॥ तापाछें श्रीआचार्यजी आप सप्ताह कीए ॥ तब महाअलौकिक आनंद भयो ॥ सो तहाँ श्रीशंखनारायणजी नित्य कथा सुनिवेकों पधारते ॥ पाछें सप्ताहकी समाप्ति करि श्रीशंखनारायणजीकी आज्ञा ले आप श्रीआचार्यजी तहाँसो विजय कीए ॥ सो नारायणसरोवर पधारे ॥ इति श्रीबेटशंखोद्धारकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ ६२ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (बेठक ६३ मी) ❀

❀ (अथ श्रीनारायणसरोवरकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अबश्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बेठक नारायणसरोवरपे मार्कंडेयजीके आश्रमकेपास छोंकरके वृक्षके नीचें आप बिराजे तहाँ हे ॥ सो तहाँ दामोदरदाससों आप आज्ञा कीए ॥ जो यहाँ आदिनारायणजी बिराजें हें ॥ सो वे नारायणसरोवरमेंतें प्रगट भए हें ॥ तातें हम यहाँ सप्ताह करेंगे ॥ असें कहिके ॥ श्रीआचार्यजी आप नारायणसरोवरमें स्नान करि सप्ताहको प्रारंभ कीए ॥ तब अनिर्वचनीय सुख भयो ॥ तहाँ श्रीकोटेश्वरमहादेवजी नित्य कथा सुनिवेकों पधारते ॥ सो तहाँ श्रीमहादेवजीको एक बडो कृपापात्र सेवक हतो ॥ वाकों साक्षात् श्रीमहादेवजी दर्शन देते ॥ तापाछें वो खॉन पॉन करतो ॥ सो एक

दिन वाकों साँझताँई दर्शन न भए ॥ सो जब रात्रिकों श्रीमहादेवजी पधारे ॥ तब वानें दर्शन कीए ॥ सो तब वा भक्तनें वीनती करी ॥ जो महाराज अबतांई आपके दर्शन न भए ॥ सो ताको कारण कहा हे ॥ तब श्रीमहादेवजी कहें ॥ जो यहाँ श्रीआचार्यजीमहाप्रभु पधारे हें ॥ सो में विनकी कथा सुनिवेकों जात हों ॥ तातें तोकों दर्शन करनों होयतो बेगो आयोकरि ॥ पाछें श्रीआचार्यजी आप दामोदरदासतें आज्ञा कीए ॥ जो सिंध प्रांतमें दैवीजीव बहुत हें ॥ परंतु वहाँ हमारो पधारनों न होईगो ॥ ताको कारण यह हे ॥ जो श्रीसरस्वतीजीको उल्लंघन हम कबहू न करेंगे ॥ कारण वोतो श्रीभगवद्वाणीको प्रवाह हें ॥ तातें हमारे वंशजद्वारा सबनको अंगीकार करेंगे ॥ तब दामोदरदासनें वीनती करी ॥ जो महाराज आपकी ईछामें आवे सोई करो ॥ इति श्रीनारायणसरोवरकी बेठकको चरित्र समाप्त॥६३॥

❀ (बेठक ६४ मी) ❀

❀ (अथ श्रीजूनाँगढकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बेठक जूनागढमें गिरनारपे रेवतीकुंडके किनारे छोंकरके नीचें,हे ॥ तहाँ आप विराजे हे ॥ तब गिरनार पर्वत (रैवताचल) विप्रको स्वरूप धरिकें आए ॥ तानें साष्टांग दंडवत करी ॥ ओर कह्यो ॥ जो महाराज आपको प्रागट्य सकल तीर्थनकों सनाथ करणार्थ हे ॥ तातें या रैवताचल॥ पर्वतकों सनाथ कीजे ॥ तब आप आज्ञा कीए ॥ जो रैवताचल हमतो तुमारेही लीयें आए हें ॥ तब आप पधारिकें एक-शिलापे विराजे ॥ तब रैवताचलकों परम आनंद भयो ॥ तब वो नवनीततेंहूँ अधिक कोमल भयो ॥ तातें आपके चरणारविंदके चिहन उपर आए ॥ तापाछें श्रीआचार्यजी दामोदरकुंडमें स्नान करिवे पधारे ॥ तब स्नान करतमें श्रीदामोदरजीको स्वरूप

आपकों प्राप्ति भयो ॥ सो अब जूनाँगढमें श्रीव्रजवल्लभजीके माँथें बिराजत हें ॥ तापाछें श्रीआचार्यजी अपनी बेठकमें पधारे ॥ ताहाँ सप्ताहको आरंभ कीए ॥ तब एक जोगेश्वरनें आईकें साष्टांग दडंवत करी ॥ ओर कही ॥ जो महाराज आपके श्रीमुखतें कथा सुनिवेकी बडी इच्छा हती ॥ सो कृपाकरिकें सुनाइए ॥ तब आप सप्ताह कीए ॥ सो वह जोगेश्वर नित्य श्रवणकों आवतो ॥ तब एकदिन कृष्णदासमेघननें वीनती करी ॥ जो महाराज वह जोगेश्वर आवत हे ॥ सो कोन हे ॥ तब श्रीआचार्यजी कहें ॥ जो वे द्रोणाचार्यजीके पुत्र अस्वस्थामाँ यहाँ गिरिनारमें रहेंत हें ॥ सो वे कथा सुनिवेकों आवत हे ॥ तब कृष्णदासजी साष्टांग दडंवत कीए ॥ सो यह आज्ञा करि आपनें चरणारविंदकी रजद्दारा ॥ तहाँ अनेक जीवनको अंगीकार कीए ॥ इति श्रीजूनाँगढकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ ६४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

❀ (बेठक ६५ मी) ❀

❀ (अथ श्रीप्रभासक्षेत्रकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब श्रीआचार्यजी प्रभासक्षेत्र पधारे ॥ सो तहाँ देहोत्सर्गके उपर छोंकरकें नींचें गुफामें विराजे ॥ तब आज्ञा कीए ॥ जो यादवास्थली यहाँही भई हे ॥ तहाँ श्रीदाऊजी शेषरूप पधारे हे ॥ सो ईहाँ सप्ताह अवश्य होयगी ॥ तापाछें आप त्रिवेणीजीमें स्नान करि नित्यनेम कीए ॥ तापाछें आप सप्ताह कीए ॥ तहाँ श्रीसोंमनाथमहादेवजी नित्य कथा सुनिवेकों पधारते ॥ सो एकआडी बिराजते ॥ सो जहाँताँई कथा होती ॥ तहाँताँई बिराजते ॥ पाछें अपनें स्थानकों पधारते ॥ तहाँ श्रीमहादेवजीको एक कृपापात्र हतो ॥ ताकों श्रीमहादेवजी साक्षात्कार हते ॥ सो वाकों दर्शन होतो ॥ तब वह महाप्रसाद लेतो ॥ सो एकदिन तीनप्रहरताँईं मंदिरमें बेठ्योरह्यो ॥ तापाछें श्रीमहादेवजी पधारे ॥

तब वाकों दर्शन भए ॥ तब वा भक्तनें वीनती करी ॥ जो महाराज अबताँई आपको दर्शन न भयो ॥ ताको कारण कहा ॥ तब वासों श्रीमहादेवजी आज्ञा कीए ॥ जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु यहाँ पधारे हें ॥ तहाँमें कथा सुनिवे गयो हतो ॥ सो अब आयो ॥ तब तोकूँ दर्शन भयो ॥ तब भक्तनें वीनती करी ॥ जो महाराज मोकों श्रीआचार्यजीमहाप्रभुवाको दर्शन करवाईये ॥ तब श्रीमहादेवजी कहें ॥ जो तूं देहोत्सर्गतीर्थपे जाय ॥ तहाँ तोकों दर्शन होयगो ॥ ओर तूँ उनकी शरणि जेयो ॥ तब वह भक्त श्रीआचार्यजीके दर्शनकों आयो ॥ सो आयकें श्रीआचार्यजीके दर्शन कीए ॥ तब साष्टांग दंडवत करिकें वीनती करी ॥ जों महाराज कृपा करिकें मोकों शरणि लीजिये ॥ तब श्रीआचार्यजी आप कहें ॥ जो तुम श्रीमहादेवजीके कृपापात्र होयकें ॥ हमारे शरणि आयवेकी क्यों केहत-हो ॥ तब वानें वीनती करी ॥ जो महाराज मोकों श्रीमहादेवजीनेंही पठायो हे ॥ तब आप आज्ञा कीए ॥ जो तुम स्नान करि आउ ॥ तब वह स्नान करि आयो ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप वाकों नाँम सुनायकें वैष्णव कियो ॥ तापाछें श्रीआचार्यजी आप सप्ताहकी समाप्ति कीए ॥ तब महा अलौकिक आनंद भयो ॥ तापाछें श्रीआचार्यजी आप प्रभासक्षेत्रकी पंचतीर्थी कीए ॥ तहाँ माहात्म्य देखिकें अनेक जीव आपकी शरणि आये ॥ इति श्रीप्रभासक्षेत्रकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ ६५ ॥

❁ (बेठक ६६ मी) ❁

❁ (अथ श्रीमाधवपुरकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❁

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बेठक माधवपुरमें कदंबकुंडके उपर हे ॥ सो तहाँ आप बिराजे ॥ तब दामोदरदासतें आज्ञा कीए ॥ जो इहाँ श्रीरुक्मिणीजीतें श्रीकृष्णको ब्याह

भयो हे ॥ सो चौर्यतासों भयो हे ॥ वा ब्याहकी ठोर यह हे ॥ ओर जो आप श्रीकृष्ण रुक्मिणीजी साहित गठजोरासों स्नान-कीए ॥ सो येही कदंब कुंड हे ॥ पाछें सब ऋषिमंडलनें स्नान कीयो हे ॥ एसें कहि पाछें श्रीआचार्यजी आपनें श्रीमाधवराय-जीके दर्शन किये ॥ तब आप श्रीआचार्यजीनें साष्टांगप्रणाम करिकें वीनती किये ॥ जो महाराज आप इहाँ कहाँ विराजत हो ॥ तब श्रीमाधवरायजी कहें ॥ जो एक ब्राह्मण यहाँ मोकों नित्य एकलोटा जलसों स्नान करावत हे ॥ सो वाकों आप सेवाप्रकार सिखावो ॥ तब दूसरेदिन फिर श्रीआचार्यजी आप-गाँममें पधारे ॥ सो तहाँ माधवरायजीके दर्शन कीए ॥ तब वह ब्राह्मण आयो ॥ तब तासों आप आज्ञा कीए ॥ जो इन श्रीमाधवरायजीकों आछी जगे पधरावो ॥ ओर सेवा शृंगार आछी रीतसों करो ॥ तब इनके पीछें तुमारोहू निर्वाह आछी-भाँतिसों चलेगो ॥ तब वा ब्राह्मणनें वीनती करी ॥ जो महाराज मोतें कछू नहीं बने हें ॥ तातें जेसें आप कहो तेसें करों ॥ तब आपनें छोटीसी जगे बनवाई दई ॥ तामें आपकी आज्ञा प्रमाँण श्रीमाधवरायजीकों पधराए ओर धोती उपरणा सब धराए ॥ पाछें श्रीआचार्यजीनें शृंगार कीओ ॥ तब वा ब्राह्मणसों आप श्रीआचार्यजीनें कही ॥ जो तुम याही रीतिसों सेवा करियो ॥ ओर जो मिले ताको भोग धरियो ॥ पाछें श्रीआ-चार्यजी श्रीठाकुरजीकी आज्ञा लेकें अपनी बेठकमें पधारे ॥ सो कदंबकुंडमें स्नान करि सप्ताहको आरंभ कीए ॥ सो तहाँ-श्रीठाकुरजी नित्य श्रवण करिवेकों पधारते ॥ सो तहाँ महा अलौकिक आनंद भयो ॥ तापाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुको माहात्म्य देखिकें अनेकजीव शरणि आए ॥ पाछें तहाँसों आप श्रीमाधवरायजीकी आज्ञा लेकें विजय कीए ॥ सो प्रयाग-क्षेत्रमें पधारे ॥ इति श्रीमाधवपुरकी बेठकको चरित्र समाप्त॥६६॥

❀ (वेठक ६७ मी) ❀

❀ (अथ श्रीगुप्तप्रयागकी वेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अव श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी वेठक माधवसरस्वतीपे हे ॥ सो तहाँ आप स्नान कीए ॥ तापाछें श्रीमाधवरायजीके दर्शन करि आप मूलद्वारिकाकों पधारे ॥ ताहॉतें गुप्तप्रयाग पधारे ॥ तहॉ प्रयागकुंडके उपर छोंकरके नीचें विराजे ॥ तव दामोदरदासतें आज्ञा कीए ॥ जो सारस्वतकल्पमे मुख्य प्रयागराज एही हें ॥ यहाँ गंगा यमुना कुंड हें ॥ पाछें आप प्रयागराजमें स्नान करि अपनी वेठकमें पधारे ॥ पाछें दुसरेदिन सवेरे आपनें श्रीभागवतके पारायणको आरंभ किये ॥ सो तव एक ब्राह्मण आयो ॥ वानें आईके साष्टांग दंडवत करी ॥ ओर वीनती करी ॥ जो महाराज मे वहुत दिननसों आपको भजन स्मरण करत हतो ॥ सो सव दिननको फल आजि सिद्धि भयो॥ तव आप आज्ञा कीए ॥ जो तूं पहलें कहॉ रेहेत हतो ॥ ओर यहॉ कव आयो हे ॥ तव वा ब्राह्मणने वीनती करी ॥ जो महाराज में पहले पंढरपुरमें रेहेंत हतो ॥ तव अपने मनमें यह विचार्यो ॥ जो सव शास्त्रनमें मुख्य श्रीभागवत हे ॥ सो श्रीमद्भागवतको में नित्य पाठ करतो ॥ तव श्रीविठ्ठलनाथजी प्रसन्न भये ॥ ओर आज्ञा कीए ॥ जो तूं वर मॉगि ॥ तव मेनें यह वर मॉग्यो ॥ जो मोकों व्रजलीलाके दर्शन होंय ॥ तव आप आज्ञा कीए ॥ जो तेनें असो वर मॉग्यो हे ॥ जो काहूतें दियो न जाय ॥ परंतु मेरो वरदॉन खाली न जाय ॥ तातें प्रभासक्षेत्रके पास गुप्तप्रयाग हे ॥ तहॉ तूं जाय वेठि ॥ सो थोरेसेदिनमें श्रीपूर्णपुरुषोत्तमको अवतार होयगो ॥ तिनको नॉम श्रीवल्लभाचार्यजी जगतमें प्रसिद्ध होयगो ॥ सो वे पृथ्वीपरि

क्रमांके मिस तें सकल तीर्थनकों सनाथ करेंगे ॥ तव तेरो मनोरथ पूर्ण करेंगे ॥ तव मेनें वीनती करी ॥ जो महाराज में कैसें जाँनुगो ॥ तव आप श्रीविठ्ठलनाथजी आज्ञा कीए ॥ जो जादिन श्रीवल्लभाचार्यजी पधारेंगे ॥ तादिन हम तोकों जतावेंगे ॥ सो में वाहीदिनसों आपको भजन स्मरण करत हों ॥ सो आज मोकों श्रीविठ्ठलनाथजी जताए ॥ जो तूँ जाकेलीयें भजन स्मरण करत हे ॥ सो श्रीवल्लभाचार्यजी वहाँ पधारे हें ॥ सो तेरो सर्व मनोरथ पूर्ण करेंगे ॥ सो तातें महाराज अब में यहाँ आयोहूँ ॥ सो मेरी यह वीनती हे ॥ जो आप मेरो उद्धार कीजे ॥ तव श्रीआचार्यजी आप आज्ञा कीए ॥ जो अव तूँ प्रयागकुंडमें स्नान करि आव ॥ सो तव वह ब्राह्मण स्नान करि आयो ॥ तव श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप वाकों नाँम सुनाए ॥ ओर आज्ञा कीए ॥ जो आजतें आठमें दिन तेरो काल होयगो ॥ तव श्रीगिरिराजकी तरहटीमें तेरो जन्म होयगो ॥ तव तहाँ गोपीनाथदास ग्वाल तेरो नाँम होईगो ॥ तव श्रीगुसांईजी तेरो अंगीकार करिकें श्रीनाथजीकी सेवामें राखेंगे ॥ तव तोकों श्रीनाथजी आप सबलीलाको अनुभव करावेंगे ॥ असी आप श्रीआचार्यजी आज्ञा किये ॥ तब वा ब्राह्मणनें साष्टांग दंडवत करिकें कह्यो ॥ जो (निजेच्छातःकरिष्यति) तापाछें आप सप्ताहकी समाप्ति कीए ॥ तव महा अलौकिक आनंद भयो ॥ तव वह ब्राह्मण दंडवत करिकें अपनें आश्रमकों गयो ॥ तापाछें वाको काल भयो ॥ पाछें श्रीआचार्यजी अपनें चरणारविंदकी रजद्वारा ताहाँ अनेक तामसीजीवनको अंगीकार कीए ॥ फेरि आप गुप्तप्रयागसों विजय कीए ॥ सो गुजरातीमें त्रगडीमें पधारे ॥ इति श्रीगुप्तप्रयागकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ ६७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

❀ (वेठक ६८ मी) ❀

❀ (अंथ श्रीत्रगडीकी वेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अव श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी वेठक त्रगडीमें हे ॥ तहाँ एक ब्राह्मण गृहस्थ हतो ॥ ताके घरके आगें एक चोतरा वहुत सुंदर हतो ॥ तापे आप विराजे ॥ ओर रात्रकों वहाँहीं पोढें ॥ तव वा ब्राह्मणकें दस पांच गाय तथा दस पांच भेंसि हतीं ॥ तातें वाकें पाँचशेर माँखन नित्य होतो ॥ तव शीतकालके दिन हते ॥ सो सवारेंइँ ऊठिकें वा ब्राह्मणकी स्त्री मंथनकरिकें कूवापें जलभरनकों गई ॥ सो कूवा दूरि हतो ॥ तातें विनकों आवत विलंव भयो ॥ तव वा ब्राह्मणके लरिका दोय हते ॥ सो एकतो वर्ष पाँचको ॥ ओर एक वर्ष सातको हतो ॥ सो वे दोऊ लरिका जागे ॥ सो वे जायकें मथनियाँमेंतें माँखन खायवे लगे ॥ सो देखिकें वा ब्राह्मणकों प्रेम उत्पन्न भयो ॥ तव वा ब्राह्मणनें वाहिर आयकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों साष्टांग दंडवत करिकें वीनती करी ॥ जो महाराज आप भीतर पधारिकें देखिये ॥ जो श्रीकृष्णचंद्र ओर वलदाऊ माँखन खात हें ॥ तव श्रीआचार्यजी आप पधारिकें देखें तो वे दोऊ लरिका माँखन खायरहेहे ॥ तव आप आज्ञा कीए ॥ जो तुमकों भगवदलीला स्फूर्ति भई हे ॥ तातें तुम स्त्रीके साँमे जाऊ ॥ सो काहेतें ॥ जो स्त्रीको स्वभाव लोभी होत हे ॥ तातें रंचक माँखनकेलीए वालकनकों मारेगी ॥ सो ठीक नाहीं ॥ ओर तुमकों श्रीकृष्ण वलदाऊको स्नेह प्रगट भयो हे ॥ तातें अव तुम जायकें स्त्रीकों समुझावो ॥ जो वह इन वालकनकों कंठसों लगाय प्यार करिकें कहे ॥ जो वलिजाँऊँ श्रीकृष्ण वलिराँम जो तुमनें भली करी ॥ जो माँखन खायो ॥ सो तव वह ब्राह्मण स्त्रीके सामनें गयो ॥ सो वानें स्त्रीकों समुझायकें सव वृत्तांत कह्यो ॥ ओर यह कही

जों अपने द्वार महापुरुष पधारे हें ॥ सो उनकी कृपातें यह भाग्योदय. भयो हे ॥ तब वा स्त्रीनें कह्यो ॥ जो ठीक हे ॥ में प्यारकरिकें वेसेंई करूँगी ॥ तब वह स्त्री आई ॥ सो वानें जल एक आडी धरि उन स्त्रीपुरुषननें श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकों साष्टांग दंडवत करी ॥ तापाछें वा स्त्रीनें घरकेभीतर जायकें ऊन बालकनकों कंठसों लगायकें कह्यो ॥ जो बलिजाँऊँ लाल तुःमनें भली करी ॥ जो माँखन खायो ॥ सो ता समय उन स्त्री पुरुषनकों तथा श्रीआचार्यजीके सब सेवकनकों अलौकिक लीलाको दर्शन भयो ॥ तापाछें वा ब्राह्मणनें वीनती करी ॥ जो महाराज कृपा करिके हमकों शरणि लीजिये ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप कृपाकरिके उन स्त्री पुरुषनकों तथा उन दोऊ बेटानकों नाँम सुनाए ॥ ओर निवेदन करवाए ॥ तापाछें आप तहाँ सप्ताह कीए ॥ तब अनिर्वचनीय सुख भयो ॥ तापाछे उन चाऱ्योनकों लीलामें प्राप्त कीए ॥ तब दामोदरदासनें वीनती करी ॥ जो महाराज थोरेही दिनमें आपनें आज्ञा दीनी ॥ तब श्रीआचार्यजी आप कहे ॥ जोवे जीव लीलासंबंधी हते ॥ सो लीलामें प्राप्त भए ॥ तापाछें श्रीआचार्यजी त्रगडीतें विजय कीए ॥ सो गुजरातीमें नरोडामें पधारे ॥ इति श्रीत्रगडीकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ ६८ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥छ॥

❀ (बेठक ६९ मी) ❀

❀ (अथ श्रीनरोडाकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बेठक नरोडामे गोपालदासके घरमे आप बिराजे तहाँ हे ॥ सो तहाँ आपने गोपालदासको साक्षात् स्वरूपानंदको अनुभव करवाए ॥ तापाछें आप नाँम देवेकी वाको आज्ञा दीए ॥ तब गोपालदासनें वीनती करी ॥ जो महाराज अब कृपा करिके मोकों एक भगवत्-

स्वरूप पधराय दीजे ॥ तब आप श्रीठाकुरजीको स्वरूप पधराय दीए ॥ तब विन गोपालदासनें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बधाई तथा चोखडा बहुत कीए हें ॥ सो वे गोपालदासजी आनंदमें मग्न रहते ॥ तापाछें श्रीआचार्यजी आप सप्ताह कीए ॥ सो तब अनिर्वचनीय सुख भयो ॥ तापाछे आप नरोडासों विजय कीए ॥ सो गोधरा पधारे ॥ इति श्रीनरोडाकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ ६९ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (बेठक ७० मी) ❀

❀ (अथ श्रीगोधराकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब गोधरामें नारायण व्यासके घरमें आप विराजे ॥ सो विन नारायण व्यासको छेओ शास्त्रनको ज्ञान हतो ॥ सो वे बडे पंडित हते ॥ तातें दक्षणमें तथा काशीमें सब पंडितनकों जीते हते ॥ तातें विनके मनमें बहुत गर्व भयो ॥ जो मेरे समाँन कोऊ पंडित नहीं हे ॥ तब फेरि विननें काशीमें सभा करी ॥ तब नारायण व्यास हारिगए ॥ तब मनमें बडो ताप क्लेश भयो ॥ जो अब में मुख कहा दिखाऊँ ॥ तातें श्रीगंगाजीमें डूबि मरूँ ॥ सो यह निश्चय करिकें श्रीगंगाजीके तट उपर जाय बेठे ॥ ता समय श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप कृष्णदासमेघनकों साथ ले संध्यावंदन करिवें श्रीगंगातटपे पधारे हते ॥ सो तहाँ नारायण व्यास बेठे हते ॥ तब भगवद इच्छासों कृष्णदासनें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों वीनती करी ॥ जो महाराज जो प्राणी आपघात-करिकें श्रीगंगाजीमें डूबिकें मरत हे ॥ ताकों कहा फल सिद्धि होत हे ॥ तब श्रीआचार्यजी आप कहें ॥ जो आत्महत्यावारेकों तो श्रीगंगाजीहू मुक्त न करें ॥ वो सात जन्म ताँई वेसेइ कियो करे ॥ फेरि नरक प्राप्ति होय ॥ ओर ताको यह लोक परलोक दोऊ बिगरें ॥ ओर उद्धार

कबहूँ न होय ॥ यह सब बात नारायण व्यासनें सुनीं ॥ तब नारायण व्यासनें आयकें श्रीआचार्यजीकों साष्टांग दंडवत करिकें वीनती करी ॥ जो महाराज आप तो साक्षात् ईश्वर हो ॥ आपने यह आज्ञा तो केवल मेरे अर्थ करी हे ॥ नहीं तो में अबहीं गंगाजीमें डूबिकें मरत हतो ॥ तब श्रीआचार्यजी आप कहें ॥ जो एसो तोपे कहा संकट हतो ॥ तब नारायणव्यासनें वीनती करी ॥ जो महाराज में दक्षणमें तथा पूरवमें सब पंडितनकों जीत्यो हूँ ॥ सो अब मेनें काशीमें सभा करी ॥ तब में हारिगयो हूँ ॥ तातें मेनें अपनें मनमें यह विचार कियो ॥ जो अब श्रीगंगाजीमें डूबि मरनों ॥ तब श्रीआचार्यजी कहें ॥ जो यहतो तेरो बडो अज्ञान हे ॥ मरेतें कहा होय ॥ जो जीवेगो तो फेरि जीतेगो ॥ तापाछें आप कहें ॥ जो अब तूं श्रीगंगाजीमें स्नान करि आऊ ॥ तब वह श्रीगंगाजीमें स्नान करि आयो ॥ तब श्रीआचार्यजी आप वाकूँ नाँम सुनाए ॥ तापाछें आपनें चतुःश्लोकी ग्रंथ पढायो ॥ ओर आज्ञाकीए ॥ जो अब तूँ सबेरेमें जाईकें सभा करियो ॥ सो तूँ जीतेगो ॥ तब प्रातःकालही वह नारायणव्यास श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको दंडवत करिकें सभामें गयो ॥ सो तहाँ जायकें बेठ्यो ॥ तब वहाँके पंडितननें कही ॥ जो काल्हितो हारिगयो हतो ॥ ओर आजि फेरि क्यों आय बेठ्यो हे ॥ तब वानें कही ॥ जो कालि हारिगयो तो कहा भयो ॥ आज फिर वाद करूंगो ॥ तापाछें समग्रसभा भेली भई ॥ तब वादारंभ करिकें क्षणमात्रमें नारायण व्यासनें सब पंडितनकों निरुत्तर करिदीए ॥ तातें वो अपनें मनमें बहुत प्रसन्न भयो ॥ ओर जाँनी जो ॥ यह सब प्रताप श्रीआचार्यजीको हे ॥ तब वा नारायणव्यासनें श्रीआचार्यजी-महाप्रभुनकेपास आयकें ॥ साष्टांग दंडवतकारिकें वीनती करी ॥

जो महाराज आपकी कृपातें मेनें सब पंडितनकूं निरुत्तर कीए ॥ तब आप कहें ॥ जो तूँ गंगाजीमें डूबतो तो सभा कोन जीततो॥ जो तूँ जीयो तो जीत्यो ॥ तापाछें नारायणव्यासनें श्रीआचार्यजीसों वीनती करी ॥ जो महाराज मोकूं आप श्रीभगवद्स्वरूप पधरायदीजिये ॥ तब आप श्रीबालकृष्णजीको स्वरूप पधरायदीए ॥ तिनकी वो नारायणव्यास गोधरामें सेवा करते ॥ सो जब श्रीआचार्यजी गोधरा पधारते ॥ तब नारायणव्यासके घर विराजते ॥ सो तब आप राजपुतानीको अंगीकार कीए ॥ ओर वेणुगीतकी सुबोधनीजीको प्रसंग नारायणव्यासनें पूछ्यो ॥ तब श्रीआचार्यजी आप व्याख्यान कीए ॥ सो व्याख्यान करत तीनदिन ओर तीनरात्रि वितीत भई ॥ ओर एसो रसावेश भयो ॥ जो काहूकों देहानुसंधान न रह्यो ॥ तापाछें श्रीआचार्यजी आप सबनको सावधान कीए ॥ ओर सप्ताह कीए ॥ तब महा अलौकिक आनंद भयो ॥ पाछें श्रीआचार्यजी आप गोधरासों विजय कीए ॥ सो खिराळू पधारे॥ इति श्रीगोधराकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ ७० ॥ ॥ ७ ॥

❀ (बेठक ७१ मी) ❀

❀ (अथ श्रीखिराळूकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बेठक खिराळमें जगन्नाथजोशीके घरमें हे ॥ सो जगन्नाथजोशीकी माताकेउपर आप बहुत प्रसन्न रहते ॥ तातें वाके घरमेंही विराजते ॥ आप तहाँ पाक करिके भोगधरि परम प्रीतिसों आरोगते ॥ ओर आप कथा कहते ॥ ता कथामें रसावेश बहुत होतो ॥ ता समें जगन्नाथजोशीनें एक श्लोक युगलगीतको पूछ्यो ॥ तब ताको व्याख्यान करत आपकों तीनप्रहर वीतीत भये ॥ सो वचनामृतकी अद्भुत वर्षा कीनी ॥ तातें काहू सेवककों देहानुसंधान न रह्यो ॥

तापाछें श्रीआचार्यजी आपनें सवनको समाधाँन कीए ॥ पाछें तहाँ आप सप्ताह कीए ॥ तवतो तहाँ महा अलौकिक आनंद भयो ॥ पाछें श्रीआचार्यजी आप खिरालूसों विजयकीए ॥ सो सिद्धपुरपट्टन पधारे ॥ इति खिरालूकी वेठकको चरित्र समाप्त ॥ ७१ ॥

❀ (वेठक ७२ मी) ❀

❀ (अथ श्रीसिद्धपुरपट्टनकी वेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

एकसमय श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप खिरालूतें सिद्धपुरपट्टन पधारे ॥ सो तहाँ विंदुसरोवरपे जायकें विराजे ॥ तहाँ आप दामोदरदाससों आज्ञाकीए ॥ जो यह श्रीकरदमऋषीको आश्रम हे ॥ यहाँ श्रीकपिलदेवजीनें देवहुतीजीकों सांख्ययोगको उपदेश दीयो हे ॥ तव श्रीदेवहुतीजी जलरूप होयकें विंदुसरोवरमें प्रवेश कीए ॥ एसें कहिकें पाछें श्रीआचार्यजी आप विंदुसरोवरमें स्नानकीए ॥ ताहाँ नित्यनेम कीए ॥ पाछें वा स्थलपे आपने सप्ताह करी ॥ तव अनिर्वचनीय सुख भयो ॥ तव मायावादीननें सुनीं ॥ जो श्रीवल्लभाचार्यजी पधारे हें ॥ सो पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, इन चाऱ्योदिशानमें दिग्विजय करिकें मायामतको खंडन करि भक्तिमार्गको स्थापन कीए हें ॥ सो साक्षात् ईश्वरको अवतार सुनें हें ॥ ईश्वर विनु ईतनो कार्य न होय ॥ तातें आपन सव मिलिकें चलो ॥ सो चर्चा करेंगे ॥ ओर जो कदाचित् आपन हारिजाँयगे ॥ तो विनकीशरणि जाँयगे ॥ पाछें दसपाँच पंडित मिलिकें श्रीआचार्यजीके दर्शनकों आए ॥ सो नमस्कार करिकें सन्मुख वेठे ॥ तव चर्चा भई ॥ सो क्षणमें आप श्रीआचार्यजीनें सब मायावादीनकों निरुत्तर करिकें ब्रह्मवादको स्थापन कीए ॥ तव तो सिद्धपुरपट्टनमें जेजेकार भयो ॥ सो एसो माहात्म्य देखिकें अनेकजीव आपकी शरणि आए ॥ तापाछें आप तहाँतें विजय कीए ॥ सो अवंतिकापुरी पधारे ॥ इति श्रीसिद्धपुरपट्टनकी वेठकको चरित्र समाप्त ॥ ७२ ॥

❀ (बेठक ७२ मी) ❀

❀ (अथ श्रीअवंतिकापुरीकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

एकसमय श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप अवंतिकापुरी पधारे ॥ सो तहाँ गोमतिकुंडकेउपर पीपरके वृक्षके नीचें विराजे ॥ पाछें सफारानदीमें स्नान करि गोमतीकुंडकेउपर पधारे ॥ तब आप दामोदरदाससों आज्ञाकीए ॥ जो दमला यह अवंतिकापुरी हे ॥ सो श्रीमहादेवजीकी साढेतीन पुरीनमेंकी पुरी हे ॥ यहाँके मालीक श्रीमहाकालेश्वरजी हें ॥ तातें यहाँ मायामतको खंडन करि ब्रह्मवादको स्थापन होयगो ॥ ओर देवीजीवहि बहुत हें तिनको उद्धार होयगो ॥ सो यहाँ पहलें सप्ताह होयगी ॥ परंतु यहाँ कछू छाया नाहीं ॥ तब दामोदरदासजी कहें ॥ जो महाराज आपकी इच्छातें अनेक वृक्ष होत हें ॥ सो एकवृक्ष करनों यामें कहा बडी बात हे ॥ तब ईतनेहीमें एक पीपरको पतोआ उडतो चल्योआयो ॥ ता पतोआकों श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप रेतीमें गाडे ॥ ओर वाकेउपर संध्याको जल छिरकिकें कह्यो जो काल्हि सवारें हम सप्ताहको प्रारंभ करेंगे ॥ तहाँताँई तूं बडो वृक्ष होयजैयो ॥ तापाछें श्रीआचार्यजी आप बगीचीमें पधारे ॥ सो तहाँ पाक करिकें श्रीठाकुरजीकों भोग समर्पे ॥ पाछें रात्रिकूं कथा भई ॥ तापाछें पोढे ॥ सो सवारमें ब्रह्ममुहूर्त होतहीं श्रीआचार्यजी आप स्नानकीए ॥ तब आप देखें तो वा पीपरके पतोआमेंतें बडोपीपरकोवृक्ष होयगयो हें ॥ ओर वाको फेलाव बडेबीचमें होगयो हे ॥ सो देखिकें वा वृक्षके नीचें श्रीआचार्यजी आप विराजे ॥ तहाँ श्रीभागवतको पारायण कीए ॥ पाछें जोकोई गोमतीजीमें स्नान करनकों आवतो ॥ सो वा नुतनवृक्षकों देखिकें अपनें मनमें बडो आश्चर्य करतो ॥ जो

यहाँ गोमतीकुंडपे अवताँई तो कोई वृक्ष न हतो ॥ ओर यह एक-रात्रिमेंही इतनोवडो वृक्ष भयो ॥ सो शेकडानवर्षको वृक्षहोय ॥ ताहूको एसोफेलाव नाहीं होय ॥ जेसो याको हे ॥ तातें यहतो कछु कारण हे ॥ सो याप्रकारसों आपुसमें सब जने बतराँनलगे ॥ ओर कही जो यहाँ श्रीवल्लभाचार्यजी पधारे हें ॥ एसें सुनिवेमें आइहे ॥ सो उननें पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, दिशानमें दिग्विजय करि मायामतको खंडन करि ब्रह्मवादको स्थापन कियो हे ॥ ओर एसीहू सुनी हे ॥ जो वे अग्निकुंडमेंसों भगवदवतार प्रगट भए हें ॥ देखो एकरात्रिमें ईतनोवडो वृक्ष भयो हे ॥ सो यह उनहींनें कियो होयगो ॥ एसो प्रगट ईश्वरको प्रताप देखिकें वहाँके मायावादी सब अपनें मनमें भय पाए ॥ तब वे विचारें ॥ जो उनसों चर्चा करिवेको अपनों सामर्थ्य नहीं हे ॥ उनके तेजके आगें आपनसों बोल्यो न जायगो ॥ कारण जो विनकूँ भस्म करते कहा वार लागे ॥ तातें अपनें प्राणनकी रक्षा चाहो-तो या गाँमतें भाजि चलो ॥ तब सब पंडित अवंतिका छो-डिकें आसपासके गाँमनमें भाजि गए ॥ तहाँ श्रीमहादेवजीके दोय कृपापात्र पंडित रहे ॥ उनकों श्रीमहादेवजी साक्षात दर्शन देते ॥ तब वे खाँन पाँन करते ॥ पाछें तहाँ श्रीआचा र्यजी सप्ताह कीए ॥ सो श्रीमहादेवजी नित्य सुनिवेकों आव-ते ॥ सो जब आप कथा कहिचूकते ॥ तब श्रीमहादेवजी अ-पनें स्थानकों पधारते ॥ सो एकदिन उन सेवनकों दर्शन न भयो ॥ तब वे वेठरहे ॥ सो जब श्रीमहादेवजी पधारे ॥ तब उनकों दर्शन भयो ॥ तब उन सेवकननें वीनती करी ॥ जो महाराज अवताँई दर्शन न भयो ॥ ताको कारण कहा हे ॥ तब श्रीमहादेवजी कहें ॥ जो श्रीवल्लभाचार्यजी यहाँ पधारे हें ॥ सो कथा कहतहें ॥ सो सुनिवे गयो हतो ॥ तहाँतें अवहीं

कथा सुनिकें आयो हूँ ॥ तब उन पंडितननें कही ॥ जो महाराज श्रीमहाप्रभुजींके मारें सब पंडित गॉम छोडिकें भाजिगए हें ॥ हमने एसें सुनीहे जो उननें मायामत खंडन करिकें भक्तिमार्गको स्थापन कियो हे ॥ ओर आपतो तहाँ कथा सुनिवेको जात हो ॥ तब श्रीमहादेवजी आज्ञा कीए ॥ जो हमकों पहले भगवद् आज्ञा भईहती ॥ जो मायामत प्रगट करो ॥ ओर या मार्गको उछिंन करो ॥ तातें हमनें मायामत प्रगट कीओ ॥ ओर अब आपकी इच्छा एसी हे ॥ जो मायामत खंडन करि भक्तिमार्गको स्थापन करनों ॥ तासों तातें श्रीवल्लभाचार्यजी साक्षात् ईश्वरको अवतार भयोहे ॥ सो उनकी इच्छामें आवे सो करें ॥ पाछें उन दोऊ भक्तनसों श्रीमहादेवजीनें कही ॥ जो मेंतो प्रातःकालही कथा सुनिवेकों जात हों ॥ तातें तुमकों आवनों होयतो वेगेही आइयो ॥ नॉतर तुमको में जब कथा सुनिके आउंगो ॥ तब दर्शन होयगो ॥ सो जबतॉई सप्ताह पूर्ण होयगी ॥ तबतॉई में नित्य कथा सुनूँगो ॥ सो याप्रकार श्रीमहादेवजी नित्य कथा सुनते ॥ सो जब कथा संपूर्ण भई ॥ तब श्रीमहादेवजी नमस्कार कीए ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप श्रीमहादेवजीसों वीनती कीए ॥ जो महाराज अवंतिकापुरीके मालिक आप हो ॥ ओर मायावादीतो यहॉतें सब भाजिगए हें ॥ विनमेंतें तो कोऊ दीसत नाहीं हें ॥ ओर हमकों तो मायामतकों खंडन करिकें ब्रह्मवादको स्थापन करनों हे ॥ तातें आपही चर्चा करो ॥ नॉतर आपके मायावादीनकों बुलावो ॥ तब श्रीमहादेवजी कहें ॥ जो आपतो षड्गुणसंपन्न हो ॥ आपनें पहलेंही ईश्वरता दिखाई ॥ जो एकरात्रिमें इतनो बडो पीपरको वृक्ष कियो ॥ सो देखिकें यह भय पायकें सब भाजि गए हें ॥ सो जीवकी कहा सामर्थ्य ॥ जो ईश्वरके सॉमें

आवें ॥ तव श्रीआचार्यजी कहें ॥ जो हम सव शास्त्रनतें जीतेंगे ॥ तव श्रीमहादेवजी अपनें स्थानकों पधारे ॥ पाछें सव मायावादी पंडितनकों श्रीमहादेवजीनें स्वप्नमें जताइ ॥ जो तुम सव क्यों भाजिगए हो ॥ मेंतो तुमारी पक्षपें हूँ ॥ सो तुम निर्भय होयकें आवो ॥ ओर श्रीआचार्यसों चर्चा करो ॥ तापाछें सव मायावादी अवंतिकामें आए ॥ सो सव मिलिकें एकमतो कीए ॥ जो अपनी रक्षातो श्रीमहाकालेश्वरजी करेंगे ॥ तव सवमिलि श्रीआचार्यजीके पास आए ॥ तव श्रीआचार्यजी सवनकों वेठारे ॥ ओर श्रीमहादेवजीहू गुप्त पधारे ॥ सो हू आसनपे विराजे ॥ तव श्रीआचार्यजीनें सवनतें आज्ञा करी ॥ जो तुम सवनसों तो चर्चा न होयगी ॥ तातें तुम सवनमेंतें जो षट्शास्त्रके वक्ता होंय सो एकएक जनों चर्चा करो ॥ तव सवननें मिलिकें एकसंग प्रश्न कीए ॥ सो सुनिकें श्रीआचार्यजी आप मुसिकायकें वहुसुखकारि उत्तर दीए ॥ सो एकही वचनमें सव पंडितनकों निरुत्तर करिदीए ॥ तवतो अवंतिकापुरीमें जेजेकार भयो ॥ ओर श्रीमहादेवजीहू वडे प्रसन्न भए ॥ सो याप्रकार श्रीआचार्यजी आप अवंतिकापुरीमें मायामत खंडन करि भक्तिमार्गको स्थापन कीए ॥ तव सव पंडितननें मिलिकें श्रीआचार्यजीकों दोनों हाथ जोरिकें वीनती करी ॥ जो महाराज हमकों शरणि लीजिये ॥ तव श्रीआचार्यजी कहें ॥ जो अव तुम रुद्राक्ष उतारिकें श्रीगोमतीकुंडमें स्नान करि आवो ॥ तव सव पंडित रुद्राक्ष उतारिकें श्रीगोमतीकुंडमें स्नान करि आये ॥ तव श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप सवनकों नाँम सुनाए ॥ ओर तुलसीकी माला देकें वैष्णव करे ॥ जव विन पंडितने रुद्राक्ष उतारीहीं ॥ तव वाको वडो ढेर भयो हो ॥ पाछें सव पंडितनने मिलिकें श्रीआचार्य-

जीसों वीनतीकरी ॥ जो महाराज जाकों वेद शास्त्र निरूपण करत हे ॥ सोई साक्षात् श्रीकृष्णचंद्रके अवतारको हमकों आज दर्शन भयो ॥ तापाछें अनेकजीव श्रीआचार्यजीकी शरणि आए ॥ पाछें दंडवत करि सब पंडित अपनें घरकों गए ॥ तापाछें श्रीमहादेवजीनें कही ॥ जो पहलें आप यह आज्ञाकीए हते ॥ जो हम शास्त्ररीतिसो पंडितनकों जीतेंगे ॥ ओर पाछेंतें तो आप ईश्वरता दिखाई ॥ ताको कारण कहा ॥ तब श्रीमहाप्रभुजी कहें ॥ जो महाराज एक प्राचीन वात हे ॥ सो आप सुनिये ॥ जब श्रीरामानुजाचार्यजी दिग्विजय करिकें काशीमें पधारे ॥ तब श्रीशंकराचार्यजीसों चर्चा भई ॥ सो श्रीशंकराचार्यजी तो आप-को अवतार हे ॥ आपकों तो पॉच मुखको अधिकार हे ॥ तातें श्रीशंकराचार्यजीने पॉचमुख करिकें प्रश्न कीए ॥ तब श्रीरामानु जाचार्यजीहू श्रीशेषजीको अवतार हे ॥ विनकों सहस्रमुखको अधिकार हे ॥ तातें विननें सहस्रमुखसों श्रीशंकराचार्यजीकों निरुत्तर किये ॥ तेसें अबहीं जो वे एक एक जनों प्रश्न करतो॥ तो एक एककों उत्तर देते ॥ परंतु जो एकसंग विननें न्यारेन्यारे विषयनके प्रश्न कीये ॥ तब आपतो पास विराजेही हते ॥ सो आपने विनकों क्यों नहीं समुझाए ॥ तातें हमनें तितनें मुखसों एकसंग सबनकों निरुत्तर कीए ॥ ओर फेरिह आज्ञा करतहो ॥ जो आपनें ईश्वरता दिखाई ॥ तब एसे वचन सुनिकें श्रीमहा-देवजी बोहोत प्रसन्न भए ॥ पाछें श्रीआचार्यजीकों मिलिकें अपने स्थानकों पधारे ॥ सो यह माहात्म्य देखिकें अनेकजीव श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी शरणि आए ॥ तब श्रीअवंतिकापुरीमें जेजेकार भयो ॥ ओर वह पीपरकोवृक्ष जो रोपण कीए ॥ सो अद्यापि हे ॥ या प्रकारको चरित्र करि आप श्रीपुष्करजी पधारे ॥ इति श्रीअवंतीकापुरीकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ ७३ ॥ ५ ॥

❀ (बेठक ७४ मी) ❀

❀ (अथ श्रीपुष्करजीकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बेठक पुष्करजीमें वल्लभघाटके उपर छोंकरके नीचें हे ॥ सो तहाँ कृष्णदासमेघनसों आप आज्ञाकीए ॥ जो पुष्करजी हें ॥ सो सबतीर्थनके राजा हें ॥ एसो पुराणनमें वर्णन कियो हे ॥ ओर यहाँ श्रीब्रह्मा ओर सावित्रीजीको मंदिर हे ॥ सो यहाँ कछुकदिन बिराजेंगे ॥ तब पुष्करजी ब्राह्मणको स्वरूप धरिकें आपकेपास आये ॥ विननें वीनती करी ॥ जो महाराज आप देवीजीवनके उद्धारार्थ ॥ मायामत खंडन करि ब्रह्मवाद स्थापनार्थ ॥ पृथ्वितलपे प्रकट भए हो ॥ तातें आप पधारिकें मोकों सनाथ करिये ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप आज्ञाकीए ॥ जो आपतो तीर्थराजहोयकें क्यों घबरात हो ॥ तब पुष्करजीनें कही ॥ जो महाराज कलिकालकरकें सर्वतीर्थ सामर्थ्यहीन भए हें ॥ सो आपके संबंधतें सबतीर्थ सामर्थ्यवान होंईगे ॥ पाछें पुष्करजी आज्ञालेकें अपनें स्थानकों पधारे ॥ तापाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप सबसेवकन सहित पुष्करजीमें स्नान करिकें आनंदकों प्राप्त भए ॥ पाछें श्रीआचार्यजी आप तहाँ सप्ताह कीए ॥ तब अनिर्वचनीय सुख भयो ॥ वहाँ पुष्करजी नित्य कथा सुनिवेकों पधारते ॥ तहाँ श्रीआचार्यजी आप अनेक तामसीजीवनको उद्धार कीए ॥ पाछें आप पुष्करजीसों बिदाहोयकें विजय कीए ॥ सो कुरुक्षेत्र पधारे ॥ इति श्री पुष्करजीकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥७४॥

❀ (बेठक ७५ मी) ❀

❀ (अथ श्रीकुरुक्षेत्रकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बेठक कुरुक्षेत्रमें कुंडके उपर हे ॥ सो तहाँ आप बिराजे ॥ तब कृष्णदासमेघनसों आज्ञाकीए ॥

ये वडो धर्मक्षेत्र हे ॥ जो यहाँ कौरव पांडवनको महाभारत युद्ध भयो हे ॥ भगवान्ने श्रीमद्भगवद्गीता अर्जुनकूं सुनायके विराट रूपको दर्शन दियो हतो ॥ सो तातें यहाँ सप्ताह करेंगे ॥ तापाछें श्रीआचार्यजी आप तहाँ श्रीभागवतको पारायण कीए ॥ तव महा अलौकिक आनंद भयो ॥ सो वादिनाँ कथामें युगलगीतको प्रसंग चल्यो ॥ ता समय एसो रसावेश भयो ॥ जो काहू सेवकनकों देहानुसंधान रह्यो नाँहीं ॥ तव श्रीआचार्यजी आपनें सवसेवकनको समाधान कीए ॥ ओर तहाँहू आप चरणारविंदकी रजद्वारा अनेक दैवीजीवनको उद्धार कीए ॥ पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप तहाँतें विजय कीए ॥ सो हरिद्वार पधारे ॥ इति श्रीकुरुक्षेत्रकी वेठकको चरित्र समाप्त ॥ ७५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (वेठक ७६ मी) ❀

❀ (अथ श्रीहरिद्वारकी वेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अव श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी वेठक हरिद्वारमें कनखल-क्षेत्रके उपर हे ॥ सो तहाँ आप संवत् १५७६ के सालमें पधारे ॥ तव कुंभके वृहस्पति आए ॥ तातें तहाँ लक्षावधि मनुष्य गंगास्नान करिवेकों आए हते ॥ सो चारिघडी पीछलीरात्रिकों स्नानको पर्वकाल हतो ॥ तव श्रीआचार्यजी आप अपनें मनमें विचारें ॥ जो भीडतो वहुत भइ हे ॥ जो लक्षावधि मनुष्य स्नानकों आए हे ॥ तातें यहाँ कछु अलौकिक चरित्र दिखावें ॥ तो प्रसिद्धी वहुत होयजाय ॥ परंतु गुप्त कार्य करनों एसी विचारी ॥ सो जव आप दंतधावन करिकें विराजे ॥ तहाँ योगमायाको आवाहन किए ॥ सो वे आय प्राप्तभई ॥ ओर कहे ॥ जो कहा आज्ञा हे ॥ तव आप आज्ञा कीए ॥ जो व्राह्ममुहूर्तको स्नानको पर्वकाल हे ॥ सो जहाँताँइ हम स्नान करिकें कनखलतीर्थके उपर आय विराजें ॥ ओर सव प्रजा स्नान करे ॥ तहाँताँई पुण्यकाल रहे ॥ क्यों जो ये श्रद्धा

करिकें दूरदूरतें जन आए हे ॥ तातें इनकों स्नानमें अवार होय ॥ तोहू अश्रद्धा न उपजे ॥ जो अश्रद्धा होइगी तो तीर्थफल न होयगो ॥ तातें हम स्नान करिकें गये पाछें ओर सब स्नान करें ॥ तहाँताँई पर्वकाल स्थिर रहे ॥ एसें आप करो ॥ तब योगमाया "तथास्तु" कहके गई ॥ तापाछें आप तहाँतें ऊठिकें हरिकी पेरीनपे पधारे ॥ तब दामोदरहरसाँनी, कृष्णदासमेघन, वासुदेवदासछकडा, माधवभट्टकाश्मीरी, गोविंददुवेसांचोराब्राह्मण, सबसमाज संग हतो ॥ तिन सहित आप तहाँ स्नान कीए ॥ पाछें संध्या करि एक मुहूर्तलों पंचाक्षरको जप कीए ॥ ता समय संपूर्ण सृष्टि निद्रावश देखी ॥ पाछें आप कनखलक्षेत्रपे अपनी बेठकमें पधारे ॥ तब योगमायाकों आज्ञा कीए ॥ जो अब सबनकी निद्रा खोलिदेउ ॥ तब योगमायानें सबनकी निद्रा खोलिदई ॥ तब सब जागे ॥ जो देखें तो स्नानको समय भयो हे ॥ तब सब पुण्यकालमें स्नान कीए ॥ तापाछें पर्वकालको तिरोधान भयो ॥ तब हरिद्वारमें जेजेकार भयो ॥ सो यह माहात्म्य देखिकें अनेकजीव श्रीआचार्यजीकी शरणि आए ॥ तापाछें आप तहाँसों विजय कीए ॥ सो बद्रिकाश्रम पधारे ॥ इति श्रीहरिद्वारकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ ७६ ॥

❀ (बेठक ७७ मी) ❀

❀ (अथ श्रीबद्रिकाश्रमकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बेठक बद्रिकाश्रममें हे ॥ सो तहाँ आप बिराजे ॥ तादिन वामनद्वादशी हती ॥ तातें आप कृष्णदासमेघनसों आज्ञाकीए ॥ जो इहाँसों फलाहार खोजिकें लावो ॥ तब श्रीबद्रिनाथजी विचारें ॥ जो मेरे आश्रममें श्रीवल्लभाचार्यजी पाहुने पधारे हें ॥ तातें भोजन करें तो आछो ॥ तब कृष्णदासमेघनसों श्रीबद्रिनाथजीनें ब्राह्मणभेपसों कही ॥

जो तुम कहाँ जात हो ॥ तब कृष्णदासनें कही ॥ जो महाराज में फलाहार लेंन जात हों ॥ तब श्रीबद्रिनारायणजीनें कही ॥ जो बोहोत आछी बात हे ॥ जासूँ स्वामी सुखपावें सोई सेवकको कर्तव्य हे ॥ परंतु फलाहार तो या झाडीमें कछु मिलत नाहीं ॥ तब कृष्णदासनें आयकें श्रीआचार्यजीसों बीनती करी ॥ जो महाराजाधिराज फलाहार तो यहाँ कछु मिलत नाहीं हे ॥ तब श्रीबद्रिनाथजीहू श्रीआचार्यजीसूँ मिलिवे पधारे ॥ बिननें हू कही ॥ जो मेंनेंहू आपके लिएही फलाहार बहुत खोज्यो ॥ परंतु कहूँ मिलत नाहीं ॥ तातें अब आप रसोई करिकें भोजन कीजे ॥ तब श्रीआचार्यजी आप बीनती कीए ॥ जो जयंतीके दिन अन्नको भोजन केसें बनें ॥ तब श्रीबद्रिनाथजी कहें ॥ जो (उत्सवांतें च पारणम्) तब श्रीआचार्यजी आपनें मनमें बिचारी ॥ जो अब भगवद्आज्ञा एसीही भइहे ॥ तातें श्रीवामनजीको जन्म भये पाछें ॥ आप भोगसमरपि भोगसराय भोजन कीए ॥ तापाछें सेवकननेंहू महाप्रसाद लिए ॥ पाछें तहाँ आप सप्ताह कीए ॥ तब महा अलौकिक आनंद भयो ॥ तापाछें श्रीबद्रिनाथजी आज्ञा कीए ॥ जो यहाँ जितनें देवीजीव होंई ॥ तिन सबनको अंगीकार करिये ॥ तब आप मुसिकायकें कहें ॥ जो आपकी इच्छा होयगी सोई करेंगे ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप अपनें चरणारविंदकी रजद्वारा ॥ अनेक तामसीजीवनको अंगीकार कीए॥ पाछें आप श्रीबद्रिनाथजीकी आज्ञा लेकें तहाँसों बिजय कीए ॥ इति श्रीबद्रिकाश्रमकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ ७७ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (बेठक ७८ मी) ❀

❀ (अथ श्रीकेदारनाथकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बेठक केदारनाथमें केदार-

कुंडके उपर हे ॥ सो तहाँ आप विराजे ॥ तहाँ श्रीभागवतको पारायण कीए सो सुनिवेकों श्रीकेदारनाथजी अनेक जीवन-सहित पधारते ॥ सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके निकट आए विराजते ॥ सो जहाँताँई कथा होती तहाँताँई बेठे रहते ॥ तापाछें नमस्कार करिकें अपनें स्थानकों पधारते ॥ तब एकदिन कृष्णदासमेघननें श्रीआचार्यजीसों वीनती करी ॥ जो महाराज यह योगेश्वर नित्य कथा सुनिवे आवतहे ॥ सो कोंन हे ॥ सो कृपा करिकें कहिये ॥ तब श्रीआचार्यजी आप मुसिकाईकें आज्ञाकीए ॥ जो ये श्रीकेदारनाथजी पधारत हें ॥ सो जहाँताँई कथा भई ॥ तहाँताँई श्रीकेदारनाथजी नित्य सुनिवेकों पधारे ॥ तापांछें जब कथा संपूर्ण भई ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु अपनें चरणारविंदकी रजकी सुगंध फेलाय ॥ सो एकक्षणमें सहस्रावधी जीवनको उद्धार कीए ॥ पाछें आप श्रीकेदारनाथजी-सो विदा होय विजय कीए ॥ सो व्यासाश्रमकों पधारे ॥ इति श्रीकेदरनाथजीकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ ७८ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (बेठक ७९ मी) ❀

❀ (अथ श्रीव्यासाश्रमकी वेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी वेठक व्यासाश्रममें हें ॥ सो तहाँ आप विराजे ॥ तब कृष्णदासमेघनसों आज्ञा कीए ॥ जो तुंम यहाँ ठाडेहोय रहियो ॥ में श्रीवेदव्यासजीके दर्शन करिकें आवत हों ॥ यह आज्ञा करि आप श्रीवेदव्यासजीके आश्रममें पधारे ॥ तब व्यासजी श्रीआचार्यजीकों पधारे जाँनिकें ॥ सामनें पधारि आदर किये ॥ ओर निकट वेठायकें कही ॥ जो आप श्रीभागवतकी सुबोधिनी टीका कीएहो ॥ सो मोकों सुनाइये ॥ तब आप वीनती कीए ॥ जो महाराज भ्रमरगीतको एकश्लोक कहूँगो ॥ तब आप एक श्लोकको व्याख्यान कीए ॥ सो ती-

न दिन ओर तीन रात्रि वितीत होयगए ॥ तब श्रीवेदव्यासजीनें कही ॥ जो आप अद्भुत वर्षा किये ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप व्यासजीसों प्रणामपूर्वक विदा होयकें पाछे पधारे ॥ तब आयकें देखें ॥ तो कृष्णदास तहाँई ठाढो हे ॥ ओर सब सेवक मूर्छित परे हें ॥ तब श्रीआचार्यजी आप कृष्णदासतें कहें॥ क्यों कृष्णदास तूँ वेठ्योनाहीं ॥ तब कृष्णदासनें वीनती करी ॥ जो महाराज आपकी आज्ञा हती ॥ जो तूँ यहाँ ठाढो रहियो ॥ तातें में ठाढो हूँ ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप वाते अत्यंत प्रसन्न होयकें कहें ॥ जो कृष्णदास तूँ कछू माँगि ॥ में तेरेपे प्रसन्न हूँ ॥ तब कृष्णदासनें तीन वस्तु माँगि ॥ जो १ महाराज मेरो मूर्खतादोष जाय ॥ २ मार्गको सिद्धांत हृदयारूढ होय ॥ ओर ३ मेरे पूर्व गुरुके घर पाँऊँ धारिए ॥ तब आप श्रीआचार्यजी दोय वस्तु तो दीए ॥ परंतु गुरुके घर पधारिवेकी नाँहीं करे ॥ ताको कारण कृष्णदासकी वार्तामें प्रसिद्ध लिख्यो हे ॥ तापाछें आप सब सेवकनको समाधाँन कीए ॥ ओर तहाँ आप सप्ताह कीए ॥ तब वडो अनिर्वचीय सुख भयो ॥ पाछें तहाँ सों आप विजय कीए ॥ सो हिमाचल पधारे ॥ इति श्रीव्यासाश्रमकी वेठकको चरित्र समाप्त ॥ ७९ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (वेठक ८० मी) ❀

❀ (अथ श्रीहिमाचलपर्वतकी वेठकको चरित्र प्रारंभः)

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी वेठक हिमाचलपर्वतके उपर हे ॥ सो तहाँ आप विराजे ॥ तब कृष्णदासमेघनसों आज्ञा कीए ॥ जो यहाँ सप्ताह करेंगे ॥ तब तहाँ आप कथाको प्रारंभ कीए ॥ तब हिमाचलपर्वत ब्राह्मणको स्वरूप धरिकें श्रीआचार्यजीके दर्शनकों आयो ॥ सो आईकें आपकों साष्टांग दंडवत करिकें वीनती करी ॥ जो महाराज कृपा करिकें मोकूं सनाथ

कीए ॥ तातें अब श्रीभागवत सुनाईए ॥ तब आप कृपा करिकें आज्ञा कीए ॥ जो सुखेन आयो करो ॥ पाछें दूसरे दिन आप सबेरेमें स्नान करि नित्यनेम करि श्रीभागवतको आरंभ कीए ॥ तब हिमाचलपर्वत नित्य कथा सुनिवेकों आवते ॥ पाछें जब कथाकी समाप्ति भइ ॥ तब श्रीआचार्यजी आप ॥ तहाँ हजारन जीवनको उद्धार किए ॥ तापाछें आप तहाँ सों विजय कीए ॥ सो व्यासगंगाजीपे पधारे ॥ इति श्रीहिमाचलपर्वतकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ ८० ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (बेठक ८१ मी) ❀

❀ (अथ श्रीव्यासगंगाके तीरकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बेठक व्यासगंगाके तीरपे छोंकरकें नीचें हे ॥ सो तहाँ श्रीआचार्यजी आप बिराजे ॥ तब दामोदरदाससों आज्ञाकीए ॥ जो यह व्यासगंगा बाजे-हे ॥ तब दामोदरदासनें बीनती करी ॥ जो महाराज याको कारण कहा हे ॥ तब आप आज्ञाकीए ॥ जो श्रीवेदव्यासजीको जन्मस्थान यह हे ॥ ओर समाधिभाषा (श्रीभागवत) हू यहाँई किये हें ॥ तातें हमहूँ यहाँ सप्ताह करेंगे ॥ पाछें श्रीआचार्यजी आप श्रीगंगाजीमें स्नान करिकें श्रीभागवतकी सप्ताहको आरंभ किये ॥ तब महाअलौकिक आनंद भयो ॥ ता समय एक स्त्री रत्नजडित आभूषण पेहरिकें एक पंखा हाथमें लेकें नित्य आवे ॥ सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों साष्टांग दंडवत करिकें वामभुजाकी आडी ठाढी रहे ॥ ओर पंखाकी सेवा करे ॥ सो वाकों कृष्णदासमेघननें बरजीं ॥ तब श्रीआचार्यजी आप कृष्णदाससों नाहीं किये ॥ तापाछें वा स्त्रीनें सातदिनताँई वाहीरीतिसों पंखाकी सेवा करी ॥ सो जहाँताँई कथा होय तहाँ-ताँई वो पंखा करे ॥ पाछें अंतरध्यान होयजाय ॥ सो काहूको

दिसे नाहीं ॥ तब एकदिन सब सेवकननें श्रीआचार्यजीसों वीनती करी ॥ जो महाराज यह अलौकिक स्त्री कोंन हे ॥ जो नित्य पंखाकी सेवा करत हे ॥ सो आप कृपाकरिकें जनावो तो जान्यो जाय ॥ तब श्रीआचार्यजी आप मुसिकायकें आज्ञा कीए ॥ जो ये श्रीगंगाजी आवत हें ॥ तब सब सेवकननें दंडवत करी ॥ पाछें तहाँ आप सप्ताह की समाप्ति करी ॥ तब कृपा कटाक्षद्वारा हजारन जीवनको अंगीकार कीए ॥ पाछें आप श्रीव्यासगंगासों विजय कीए ॥ सो मुद्राचलमधुसूदनजीकों पधारे ॥ इति श्रीव्यासगंगाकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ ८१ ॥

❀ (बेठक ८२ मी) ❀

❀ (अथ श्रीमुद्राचलपर्वतकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बेठक मुद्राचलपर्वतके उपर छोंकरकें नीचें हे ॥ सो तहाँ आप बिराजे ॥ पाछें तहाँ जो श्रीमधुसूदनठाकुरजी बिराजते हें ॥ तिनके दर्शनकों पधारे ॥ पाछें वहाँ श्रीआचार्यजीनें श्रीभागवतकी पारायणको आरंभ कियो ॥ तब श्रीमधुसूदनजी कथा सुनिवेकों पधारे ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप श्रीठाकुरजीकों प्रणाम करि अपनें पास आसनपे पधराए ॥ ओर वीनती कीए ॥ जो आप परिश्रमकरिकें क्यों पधारे हो ॥ तब श्रीठाकुरजीनें कही ॥ जो तुम इतनों परिश्रम करिकें एसी विकट जगेंमें यहाँ तॉडे पधारे हो ॥ तातें मोकों कहा अधिक श्रम भयो ॥ जो आपके निकट आयो ॥ अब मोको श्रीभागवत सुनाईये ॥ तब श्रीआचार्यजी आप यह वीनती कीए ॥ जो महाराज बहुत अवकाश तो नहीं हे ॥ परंतु सप्ताह तो करेंगे ॥ तब श्रीठाकुरजी नित्य कथा सुनिवेकों पधारते ॥ तातें महा अलौकिक आनंद होतो ॥ पाछें श्रीआचार्यजी आप कथाकी समाप्ति करें ॥ ओर

चरणारविंदकी रजद्वारा हजारन तामसीजीवनको उद्धार किए ॥ पाछें आप सबसेवकन सहित श्रीमधुसूदनजीके दर्शनकों मंदिरमें पधारिके श्रीठाकुरजीको सेवा शृंगार किए ॥ तापाछें श्रीठाकुरजीकी आज्ञा. ले मुद्राचलसों विजय किए ॥ सो व्रजमें पधारे ॥ तब श्रीगोवर्धननाथजी आप आज्ञा किये ॥ जो अब सबकुटुंबसहित यहाँ आयकें मेरी सेवा करो ॥ अब मेंसे प्रागट्य आपके यहाँ वेगि होयगो ॥ तब यह आज्ञा पायकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप काशी पधारे ॥ सो तहाँतें श्रीअक्काजीकों पधरायकें अडेलमें आय बसे ॥ इति श्रीमुद्राचलपर्वतकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ ८२ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (बेठक ८३ मी) ❀

❀ (अथ श्रीअडेलकी बेठकको. चरित्र प्रारंभः) ❀

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बेठक अडेलमें हे ॥ सो तहाँ आप वासकरिकें विराजे ॥ सो श्रीनवनीतप्रियजीकी सेवा करते ॥ तहाँ नित्य मायावादी आवते ॥ सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों चर्चा करते ॥ तब आप उनकों निरुत्तर करिदेते ॥ पाछें श्रीआचार्यजी आप मनमें विचारें ॥ जो माताइलंमाँगारुजीको मन सेवामें बहुत हे ॥ परंतु ब्रह्मसंबंध विनाँ सेवाको अधिकार नहीं हे ॥ तातें माताकों ब्रह्मसंबंध केसें करायो जाय ॥ तब श्रीआचार्यजी आपनें श्रीनवनीतप्रियजीसों वीनतीकरी ॥ जो आप हमारी माताजीकों ब्रह्मसंबंध कराय दीजो ॥ इतनेंमेंतो मायावादी आयगए ॥ तब आप तो विनसों चर्चा करिवेलगे ॥ सो जब उत्थापनको समय भयो ॥ तब श्रीनवनीतप्रियजीनें इलंमाँगारुजीतें कह्यो ॥ जो अब उत्थापनको समय भयो ॥ तातें तुम सेवामें नावो ॥ श्रीआचार्यजी तो मायावादीनसो चर्चा करत हें ॥ तातें तुम स्नान

करिकें झट सेवामें आवो ॥ तब इलंमाँगारुजीनें श्रीनवनीतप्रियजीसों वीनती कीनीं ॥ जो कृपानाथ मोकों सेवामें नायवेकी श्रीआचार्यजीकी आज्ञा नाहीं हे ॥ सो वे जानेंगे तो मोसूं लरेंगे ॥ तातें सेवामें केसें जाऊँ ॥ तब श्रीनवनीतप्रियजीनें आज्ञाकरी ॥ जो में तुमसों केहेत हों ॥ तातें तुम स्नान करिकें वेगि आवो ॥ तुमसों आचार्यजी न लरेंगे ॥ विनको में कहूँगो ॥ सो तब माता इलंमाँगारुजी तुरंत स्नान करिकें ॥ श्रीनवनीतप्रियजीके मंदिरमें गई ॥ तब श्रीनवनीतप्रियजीनें विनके हस्तमें तुलसी दई ॥ सो दुसरे स्वरूपके चरणारविंदमें निवेदन करवायकें समर्पे ॥ तापाछें श्रीनवनीतप्रियजीनें माताइलंमाँगारुजीसों भेट माँगी ॥ ता समय विनके कंठमें जो मोतीनकी माला हती ॥ सो श्रीनवनीतप्रियजीकी भेट कीनीं ॥ तब श्रीनवनीतप्रियजीनें माता इलंमाँगारुजीसों कही ॥ जो अब तुम उत्थापनको डबरा लावो ॥ तब वे डबरा लेकें गई ॥ इतनेमें श्रीआचार्यजी आप मायावादीनकों निरुत्तर करिकें तुरंत स्नान करिकें सेवामें पधारे ॥ तब इलंमाँगारुजीकों सेवामें देखे ॥ तिनकों आप खीजिकें केहेनलागे ॥ जो तुमनें यह कहा कन्यो ॥ तब श्रीनवनीतप्रियजीनें श्रीआचार्यजीतें कह्यो ॥ जो तुम इनसों क्यों खीजत हो ॥ मेनें इनकों ब्रह्मसंबंध करवायो हे ॥ तब श्रीआचार्यजीनें वीनती करी ॥ जो महाराज कोन रीतिसों ब्रह्मसंबंध करवायो हे ॥ तब श्रीनवनीतप्रियजीनें आपकों सर्वप्रकार समझायकें कह्यो ॥ जो तुलसी हाथमें देकें ब्रह्मसंबंध करवायो हे ॥ फेरि तुलसी लेकें दूसरे स्वरूपके चरणारविंदमें मेनें समर्पे ॥ ओर कंठी भेटकी लीनीं हे ॥ सो मेनें धरी हे ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप प्रसन्न होयकें कहे ॥ जो बहुत आछी करी ॥ तब श्रीआचार्यजीनें माता इलंमाँगारुजी–

सों कही ॥ जो अब तुम सुखेन सेवा कियोकरो ॥ सो तादिनसों माता इलंमाँगारुजी श्रीनवनीतप्रियजीकी सेवामें नाह्याते ॥ सो केतकदिन पाछें ॥ श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके इहाँ ॥ श्रीगोपीनाथजीकों प्रादुर्भाव भयो ॥ तब वडो अनिर्वचनीय सुख भयो ॥ तापाछें श्रीगोवर्धननाथजीनें श्रीआचार्यजीकों जताई ॥ जो अब मेरो स्वरूप प्रगट होयगो ॥ ओर लीलासृष्टि तो प्रगट भई हे ॥ तातें अब तुम श्रीअक्काजीकों लेकें चरणाट पधारो ॥ एसी आज्ञा सुनिकें ॥ श्रीआचार्यजी आप सब भगवदियनके समाजसहित चरणाट पधारे ॥ सो तहाँ आप एक रमणीयस्थल देखिकें विराजे ॥ तब दामोदरदासकों ओंर पद्मनाभदासकों आज्ञाकीए ॥ जो यहाँ श्रीचंद्रावलीजीकी निंकुज हे ॥ यह आज्ञा करिकें आप तहाँ विराजे ॥ ओर सप्ताह किये ॥ इति श्रीअडेलकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ ८३ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (बेठक ८४ मी) ❀

❀ (अथ श्रीचरणाद्रीकी बेठकको चरित्र प्रारंभः) ❀

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी बेठक चरणाटमें हे ॥ सो तहाँ आप विराजे ॥ सो पहलेंतो आप सप्ताह कीए ॥ तब महा अलौकिक आँनंद भयो ॥ ता समें श्रीगंगाजीके तीरपे एक ब्राह्मण रेहेत हतो ॥ सो नित्य विष्णुसहस्रनाँमको पाठ कियोकरतो ॥ सो वानें बारहवर्षलों पाठ कियो ॥ ओर श्रीगंगाजीके तीरपे बेठ्यो रह्यो ॥ तब एकदिन श्रीठाकुरजीको स्वरूप श्रीगंगाजीके प्रवाहमेंतें प्रगट भयो ॥ सो देखिकें वा ब्राह्मणनें वीनतीकरी ॥ जो महाराज मेंतो वेरागी हों ॥ ओर आपतो महाअलौकिक हो ॥ सो कोई गृहस्थके वहाँ विराजो ॥ तो भलीभाँतिसों सेवा होय ॥ ओर मेरेतो आधसेर दूध आवत हे ॥ सो भोग धरूँगो ॥ ओर स्नान कराऊँगो ॥ तब श्रीठाकुरजी

भयो ॥ तासमय भूमंडलपे वडो जेजेकार भयो ॥ सो गोपालदासजी गाए हें (पोष नोमे श्रीविठ्ठलनाथजी श्रीअक्काजी उर ऊपनों आनंद ॥ आ चंद व्रंदावनतणो प्रगटियो) ओर भगवदीयजन वधाई गाय रहेहें ॥ तहाँ एक कूप हे ॥ तामेंतें श्रीयशोदाजी, श्रीनंदरायजी, श्रीवृषभाँनजी, श्रीकीर्तिजी, नंद, उपनंद, गोप, ग्वालनसहित, दूधदधीके गगरा लेकें पधारे ॥ ओर तहाँ भगवदमायातें रत्नजडित मेहेल डोढी दरवाजे सब बनिगए ॥ पलनाँपे माँणिकजडाऊ झूँमका ॥ हीरामोतीनकी झालरि ॥ सोंनेरूपेके भांतिभांतिके खिलोनाँ धरेहें ॥ श्रीगुसाँईजीको श्रीमुख निरखिकें श्रीचंद्रावलीजी कस्तूरीको तिलक करत हें ॥ ओर अपने भावसों सूचित करत हें ॥ ओर श्रीस्वामिनीजी दोऊ कपोल परसिकें केसरिके कमलपत्र लिखत हें ॥ ओर अनेक भावसों सूचित करत हें ॥ पाछें श्रीयशोदाजी, श्रीकीर्तिजी, श्रीविठ्ठलनाथजीकों पलनामें पधराय व्रजभक्तनसहित खिलोंनाँनसों खिलावत हें ॥ ओर नाँनाँप्रकारके मंगल गावत हें ॥ पाछें श्रीनंदरायजी, श्रीवृषभाँनजी, नंद, उपनंद, श्रीमहाप्रभुजीकेपास गोप ग्वालनसहित वाजिंत्र बजावत आये ॥ ओर सब भगवदीय हू समाजसहित आये ॥ तब व्रजभक्तननें श्रीमहाप्रभुजीकों अक्षत दूर्वासों बधाए ॥ पाछें नंदमहोत्सव भयो ॥ ता समय बडो अनिर्वचनीय सुख भयो ॥ तब भगवदीयननें बधाई गाई ॥ तामेंके एक पदको संक्षेप हे ॥ सो पद

❀ (राग सारंग) ❀ (पौष निर्दोष सुखकोष सुंदर मास, कृष्ण नौमी सुभ घडी दिन आज ॥ श्रीवल्लभ सुंदरन प्रगट गिरधरधर चान्यो विध वदन सुछवि श्रीवल्लभविठ्ठलराज ॥ १ ॥)

सो ऐसी अनेक बधाँई गाए हें ॥ पाछें शेषजी पधारे ॥ सो छायाकीए ॥ ओर ब्रह्माजी पधारे ॥ सो वेद पढिवेलगे ॥

ओर श्रीमहादेवजी आप ठाढे होयकें नृत्य करिवेलगे ॥ ओर इंद्रदेवतानसहित आयो सो निसाँन बजावत हे ॥ ओरदेवता फूलनकी वर्षा करत हें ॥ देवांगनाँ गुनगाँन करत हें ॥ वंदी, मागध, भाट, याचक, वहुत आए हें ॥ सो सवको श्रीमहाप्रभुजी सन्मान करत हें ॥ श्रीव्यासजी, श्रीशुकदेवजी, आदिदेकें ऋषीमंडल आए हें ॥ सो वेदकी ध्वनी करत हें ॥ सो मेघकिसी गर्जना होयरही हे ॥ अप्सरा आयकें नृत्य करत हें ॥ ओर गंधर्व गाँन करत हें ॥ ओर दूध दधीकी माँनो सरिता वही हे ॥ सो एसो नंदमहोत्सव भयो ॥ ता समय, काहूकूं देहकी सुधि रही नाहीं ॥ अष्ट महासिद्धि द्वार वहारत हें ॥ ओर लक्ष्मीजी द्वारद्वारपे वंदनवार वाँधत हें ॥ जगे जगे मंगल कलश साजे हें ॥ भुवन भुवन प्रति ध्वजापताका फेहेरात हें ॥ सो महा अलौकिक आनंद होयरह्यो हे ॥ ता समें भगवदीयननें गाई ॥ तिन वधाइनकी एक एक तुक कही हे सो ॥ राग आसावरी ॥ (झुरिचलि हे वधाये श्रीवल्लभगृहं सुंदर व्रजकी वाला) ओर (झुरि चलि हें वधाये श्रीवल्लभगृह प्रगटे श्रीविठ्ठलराय) ओर (श्रीविठ्ठलप्रभु प्रगट भए श्रीगोकुल सुखदाई) सो एसी एसी अनेक वधाई भगवदीयजन गाए हे ॥ सो यहाँ ग्रंथविस्तार भयसुं संक्षेपमात्र लिखी हें ॥ पाछें श्रीमहाप्रभुजी मंगलस्नान करनकों पधारे ॥ सो रुपैया मोहोरनकी न्योछावरि होत पधारे ॥ सो, श्रीगंगाजीमें स्नान करि पाछे अपनें स्थानपे पधारे पाछें दाँन देवेकों आप श्रीनंदरायजी, श्रीवृषभाँनजी, वडे वडे गोपनसहित श्रीआचार्यजी आयकें विराजे ॥ सो आपके यहाँ हीरा, माँणिकके अनेक भंडार भरे हें ॥ हजारन गाय भेंसनके ठाठ ठाढे हे ॥ जो जाने माँग्यो सो ताकों देत हें ॥ तुरंग, हस्ती, रथ, सुखपाल, दीए ॥ ओर भंडार

सबरे खोलिदीए ॥ तब वंदीजनें सब वेठिकें श्रीआचार्यजी-महाप्रभुनको यश वोलत हें ॥ जेजे शब्द उचार होय रहे हें ॥ ओर मागध, सूत सिध्द, चारण, भाट, सबनको मन भायो दाँन देत हें ॥ तब कुलगुरु आये ॥ तिननें श्रीगुसाँइजीकी जन्मपत्रिका वाँची ॥ सो संवत् १५७२ व्रज पोष वदी ९ भृगुवार वृषलग्न मध्याह्नसमय श्रीवल्लभात्मज श्रीविठ्ठलनाथजीको प्रादुर्भाव भयो ॥ सो ए अनेक काँमना पूर्ण करेंगे ॥ इनकें दोय बहूजी होंईगी ॥ ओर सात लालजी होंईगें ॥ सो मायामत खंडन करि ब्रह्मवादको स्थापन करेंगे ॥ दैवीजीवनको उध्दार करेंगे ॥ ओर सब तीर्थनकों सनाथ करेंगे ॥ इनको अपारयश होयगो ॥ सो एक जिह्वातें हम कहाँताँई वर्णन करें ॥ शेष सहस्रमुखसों पार नहीं पावत हे ॥ तापाछें कुलगुरु श्रीमहाप्रभुजीनसों विदा होइकें पधारे ॥ पाछें इंद्र सब देवतानसहित विदा भयो ॥ पाछें व्यासजी, शुकदेवजी, सब विदा भए ॥ अप्सरा, गंधर्व, ब्रह्मा, महादेवजी, सब दंडवत करिकें अपनें अपनें धामकों पधारे ॥ शेषजीहू अपनें लोककों पधारे ॥ तब भगवदीयनको समाज ले आप भीतर भवनमें पधारे ॥ सो श्रीठाकुरजी तथा श्रीगुसाँइजी इन दोऊ स्वरूपनकी एकही छबि हीं ॥ सो आप देखि देखिकें मुसिकात हें ॥ सो भगवदीय गाएहें ॥ (आनंद फल्यो चहूँदिश छबि निरखि श्रीवल्लभ हसे ॥ वेउ कछू मुसिकाय चितये दोऊ हसनि मेरे मन वसे ॥ तिलक मृगमद छप्यो हरखत कहाँलों गुन गाइये ॥ कृपातें उछलित निजरस छिपत नाहीं छिपाइये) तापाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें श्रीस्वामिनीजी तथा श्रीचंद्रावलीजी, श्रीयमुनाजी, चतुरयूथाधिपति ओर श्रीव्रजभक्त इन सबनको सब प्रकारतें सन्मान करि मंदिरभीतर पधराये ॥ तापाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु श्रीगुसाँइजीकों पालने झुलाए ॥ तब वडो अनिर्वचनीय सुख भयो ॥ सो ता समय व्रजभक्त तन, मन, धन, वारत हें ॥ पाछें श्रीगुसाँइजी-

ओर श्रीमहादेवजी आप ठाढे होयकें नृत्य करिवेलगे ॥ ओर इंद्रदेवतानसहित आयो सो निसाँन बजावत हे ॥ ओरदेवता फूलनकी वर्षा करत हें ॥ देवांगनाँ गुनगाँन करत हें ॥ वंदी, मागध, भाट, याचक, वहुत आए हें ॥ सो सबको श्रीमहाप्रभुजी सन्मांन करत हें ॥ श्रीव्यासजी, श्रीशुकदेवजी, आदिदेकें ऋषीमंडल आए हें ॥ सो वेदकी ध्वनी करत हें ॥ सो मेघकिसी गर्जना होयरही हे ॥ अप्सरा आयकें नृत्य करत हें ॥ ओर गंधर्व गाँन करत हें ॥ ओर दूध दधीकी माँनो सरिता वही हे ॥ सो एसो नंदमहोत्सव भयो ॥ ता समय, काहूकूँ देहकी सुधि रही नाहीं ॥ अष्ट महासिद्धि द्वार वहारत हें ॥ ओर लक्ष्मीजी द्वारद्वारपे वंदनवार वाँधत हें ॥ जगे जगे मंगल कलश साजे हें ॥ भुवन भुवन प्रति ध्वजापताका फेहेरात हें ॥ सो महा अलौकिक आनंद होयरह्यो हे ॥ ता समें भगवदीयननें गाई ॥ तिन वधाइनकी एक एक तुक कही हे सो ॥ राग आसावरी ॥ (झुरिचलि हें वधाये श्रीवल्लभगृह सुंदर व्रजकी वाला) ओर (झुरि चलि हें वधाये श्रीवल्लभगृह प्रगटे श्रीविठ्ठलराय) ओर (श्रीविठ्ठलप्रभु प्रगट भए श्रीगोकुल सुखदाई) सो एसी एसी अनेक वधाई भगवदीयजन गाए हें ॥ सो यहाँ ग्रंथविस्तार भयसुं संक्षेपमात्र लिखी हें ॥ पाछें श्रीमहाप्रभुजी मंगलस्नान करनकों पधारे ॥ सो रुपैया मोहोरनकी न्योछावरि होत पधारे ॥ सो श्रीगंगाजीमें स्नान करि पाछें अपनें स्थानपे पधारे पाछें दाँन देवेकों आप श्रीनंदरायजी, श्रीवृषभाँनजी, वडे वडे गोपनसहित श्रीआचार्यजी आयकें विराजे ॥ सो आपके यहाँ हीरा माँणिकके अनेक भंडार भरे हें ॥ हजारन गाय भेंसनके ठाठ ठाढे हें ॥ जो जाने माँग्यो सो ताकों देत हें ॥ तुरंग, हस्ती, रथ, सुखपाल, दीए ॥ ओर भंडार

सबरे खोलिदीए ॥ तब बंदीजनें सब बेठिकें श्रीआचार्यजी-
महाप्रभुनको यश बोलत हें ॥ जेजे शब्द उच्चार होय रहे हें ॥
ओर मागध, सूत सिद्ध, चारण, भाट, सबनको मन भायो
दाँन देत हें ॥ तब कुलगुरु आये ॥ तिननें श्रीगुसाँइजीकी
जन्मपत्रिका बाँची ॥ सो संवत् १५७२ व्रज पोष वदी ९ भृगु-
वार वृषलग्न मध्याह्नसमय श्रीवल्लभात्मज श्रीविठ्ठलनाथजीको
प्रादुर्भाव भयो ॥ सो ए अनेक काँमना पूर्ण करेंगे ॥ इनकें दोय
बहूजी होंईगी ॥ ओर सात लालजी होंईगें ॥ सो मायामत
खंडन करि ब्रह्मवादको स्थापन करेंगे ॥ देवीजीवनको उद्धार
करेंगे ॥ ओर सब तीर्थनकों सनाथ करेंगे ॥ इनको अपारयश
होयगो ॥ सो एक जिह्वातें हम कहाँताँई वर्णन करें ॥ शेष
सहस्रमुखसों पार नहीं पावत हे ॥ तापाछें कुलगुरु श्रीमहा-
प्रभुजीनसों बिदा होइकें पधारे ॥ पाछें इंद्र सब देवतानसहित
बिदा भयो ॥ पाछें व्यासजी, शुकदेवजी, सब बिदा भए ॥
अप्सरा, गंधर्व, ब्रह्मा, महादेवजी, सब दंडवत करिकें अपनें अपनें
धामकों पधारे॥शेषजीहू अपनें लोककों पधारे॥तब भगवदीयनको
समाज ले आप भीतर भवनमें पधारे॥सो श्रीठाकुरजी तथा श्री-
गुसाँइजी इन दोऊ स्वरूपनकी एकही छवि हीं ॥ सो आप
देखि देखिकें मुसिकात हें ॥ सो भगवदीय गाएहें ॥ (आनंद
फेल्यो चहूँदिश छबि निरखि श्रीवल्लभ हसे ॥ वेउ कछू मुसि-
काय चितये दोऊ हसनि मेरे मन बसे ॥ तिलक मृगमद छप्यो
हरखत कहाँलों गुन गाइये ॥ कृपातें उछलित निजरस छिपत
नाहीं छिपाइये) तापाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें श्रीस्वामि-
नीजी तथा श्रीचंद्रावलीजी, श्रीयमुनाजी, चतुरयूथाधिपति ओर
श्रीव्रजभक्त इन सबनको सब प्रंकारतें सन्मान करि मंदिरभी-
तर पधराये ॥ तापाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु श्रीगुसाँइजीकों
पालने झुलाए ॥ तब बडो अनिर्वचनीय सुख भयो ॥ सो
ता समय व्रजभक्त तन, मन, धन, वारत हें ॥ पाछें श्रीगुसाँइजी-

ओर श्रीमहादेवजी आप ठाढे होयकें नृत्य करिवेलगे ॥ ओर इंद्रदेवतानसहित आयो सो निसॉन बजावत हे ॥ ओरदेवता फूलनकी वर्षा करत हें ॥ देवांगनॉ गुनगॉन करत हें ॥ वंदी, मागध, भाट, याचक, वहुत आए हें ॥ सो सवको श्रीमहाप्रभुजी सन्मान करत हें ॥ श्रीव्यासजी, श्रीशुकदेवजी, आदिदेकें ऋषीमंडल आए हें ॥ सो वेदकी ध्वनी करत हें ॥ सो मेघकिसी गर्जना होयरही हे ॥ अप्सरा आयकें नृत्य करत हें ॥ ओर गंधर्व गॉन करत हें ॥ ओर दूध दधीकी मॉनो सरिता वही हे ॥ सो एसो नंदमहोत्सव भयो ॥ ता समय काहूकूँ देहकी सुधि रही नाहीं ॥ अष्ट महासिद्धि द्वार वहारत हें ॥ ओर लक्ष्मीजी द्वारद्वारपे वंदनवार बॉधत हें ॥ जगे जगे मंगल कलश साजे हें ॥ भुवन भुवन प्रति ध्वजापताका फेहेरात हें ॥ सो महा अलौकिक आनंद होयरह्यो हे ॥ ता समें भगवदीयननें गाइं ॥ तिन वधाइनकी एक एक तुक कही हे सो ॥ राग आसावरी ॥ (जुरिचलि हें वधाये श्रीवल्लभगृह सुंदर व्रजकी वाला) ओर (जुरि चलि हें वधाये श्रीवल्लभगृह प्रगटे श्रीविठ्ठलराय) ओर (श्रीविठ्ठलप्रभु प्रगट भए श्रीगोकुल सुखदाई) सो एसी एसी अनेक वधाई भगवदीयजन गाए हें ॥ सो यहॉ ग्रंथविस्तार भयसुं संक्षेपमात्र लिखी हें ॥ पाछें श्रीमहाप्रभुजी मंगलस्नान करनकों पधारे ॥ सो रुपैया मोहोरनकी न्योछावरि होत पधारे ॥ सो, श्रीगंगाजीमें स्नान करि पाछें अपनें स्थानपे पधारे पाछें दॉन देवेकों आप श्रीनंदरायजी, श्रीवृषभॉनजी, वडे वडे गोपनसहित श्रीआचार्यजी आयकें विराजे ॥ सो आपके यहॉ हीरा, मॉणिकके अनेक भंडार भरे हें ॥ हजारन गाय भेंसनके ठाठ ठाढे हें ॥ जो जाने मॉग्यो सो ताकों देत हें ॥ तुरंग, हस्ती, रथ, सुखपाल, दीए ॥ ओर भंडार

सबरे खोलिदीए ॥ तब बंदीजनें सब बेठिकें श्रीआचार्यजी-महाप्रभुनको यश बोलत हें ॥ जेजे शब्द उच्चार होय रहे हें ॥ ओर मागध, सूत सिद्ध, चारण, भाट, सबनको मन भायो दाँन देत हें ॥ तब कुलगुरु आये ॥ तिननें श्रीगुसाँइजीकी जन्मपत्रिका बाँची ॥ सो संवत् १५७२ व्रज पोष वदी ९ भृगुवार वृषलग्न मध्याह्नसमय श्रीवल्लभात्मज श्रीविठ्ठलनाथजीको प्रादुर्भाव भयो ॥ सो ए अनेक काँमना पूर्ण करेंगे ॥ इनकें दोय बहूजी होंइगी ॥ ओर सात लालजी होंइगें ॥ सो मायामत खंडन करि ब्रह्मवादको स्थापन करेंगे ॥ देवीजीवनको उद्धार करेंगे ॥ ओर सब तीर्थनकों सनाथ करेंगे ॥ इनको अपारयश होयगो ॥ सो एक जिह्वातें हम कहाँताँई वर्णन करें ॥ शेष सहस्रमुखसों पार नहीं पावत हे ॥ तापाछें कुलगुरु श्रीमहाप्रभुजीनसों विदा होइकें पधारे ॥ पाछें इंद्र सब देवतानसहित विदा भयो ॥ पाछें व्यासजी, शुकदेवजी, सब विदा भए ॥ अप्सरा, गंधर्व, ब्रह्मा, महादेवजी, सब दंडवत करिकें अपनें अपनें धामकों पधारे ॥ शेषजीहू अपनें लोककों पधारे ॥ तब भगवदीयनको समाज ले आप भीतर भवनमें पधारे ॥ सो श्रीठाकुरजी तथा श्रीगुसाँइजी इन दोऊ स्वरूपनकी एकही छवि ही ॥ सो आप देखि देखिकें मुसिकात हें ॥ सो भगवदीय गाएहें ॥ (आनंद फेल्यो चहूँदिश छवि निरखि श्रीवल्लभ हसे ॥ वेउ कछू मुसिकाय चितये दोऊ हसनि मेरे मन बसे ॥ तिलक मृगमद छप्यो हरखत कहाँलों गुन गाइये ॥ कृपातें उछलित निजरस छिपत नाहीं छिपाइये) तापाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें श्रीस्वामिनीजी तथा श्रीचंद्रावलीजी, श्रीयमुनाजी, चतुरयूथाधिपति ओर श्रीव्रजभक्त इन सबनको सब प्रंकारतें सन्मान करि मंदिरभीतर पधराये ॥ तापाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु श्रीगुसाँइजीकों पालने झुलाए ॥ तब वडो अनिर्वचनीय सुख भयो ॥ सो ता समय व्रजभक्त तन, मन, धन, वारत हें ॥ पाछें श्रीगुसाँइजी-

कों तिलककरि आरति वारति हें ॥ सो ता समय श्रीगुसाँइजी हाव भाव करत हें ॥ व्रजभक्तनकों कटाक्ष करि भावको संबोधन करत हें ॥ श्रीयशोदाजी, श्रीकीर्तीजी, पालनें झुलावें हें ॥ सो तन, मन, धन, वारत हें ॥ ओर श्रीनंदरायजी, श्रीवृषभॉनजी, ग्वाल, गोपी, सबनको सन्मान श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप करत हें ॥ पाछें श्रीनंदरायजी, श्रीवृषभॉनजी, श्रीमहाप्रभुजीसों ॥ विदा होयकें गोलोकको गये ॥ श्रीस्वामिनीजी, श्रीचंद्रावलीजी, श्रीयशोदाजी, श्रीकीर्तीजी, श्रीमहाप्रभुजीसों विदा होयकें असीस देत हें ॥ जो सदॉ आपको घर सूबस बसो ॥ ओर आपके वंशमें सबही आचार्य होइंगे ॥ सो पुष्टिमार्गको प्रकाश करेंगे ॥ ओर सारस्वतकल्पकी नित्यलीला करि दैवीसृष्टिकों अनुभव करावेंगे ॥ दिनदिन अधिक प्रताप होइगो ॥ सो तब श्रीआचार्यजी आप प्रसन्न होयकें आज्ञा कीए ॥ तथापि कहेजो आप वेगि पधारोगे ॥ पाछें व्रजभक्त गोकुलकों पधारे ॥ तापाछें सब अलोकिक भगवदलीला अंतरध्यान भइ ॥ तब भगवदमायातें जो मेहेलादिक वैभव भयोहतो ॥ सो सब गुप्त होयकें पूर्वजेसो स्थल हे गयो ॥ तापाछें श्रीआचार्यजी तथा श्रीगुसाँइजीनें सबनके माथें मायाको आवरण किये ॥ तातें सब पिता, माता पुत्र, या भावसों जननलगे ॥ पाछें श्रीआचार्यजी अलोकिक भगवदीयनको सब मनोरथ सिद्धिकीए ॥ सो यह चरित्र आप चरणाटकी बेठकमें प्रगट कीए ॥ इति श्रीचरणाटकी बेठकको चरित्र समाप्त ॥ ८४ ॥

इति श्रीआचार्यजीमहाप्रभुजी (श्रीवल्लभाचार्यजी) के पौत्र श्रीगोकुलनाथजीकृत वनयात्रा तथा पृथ्वी प्रदक्षणा गर्भित श्रीआचार्यजीकी चोराशी बेठकनके चरित्र समाप्त ॥

❀ ॥ श्रीगोवर्धनधरो विजयतेतराम् ॥ ❀

❀ ॥ श्रीनवनीतप्रियो जयति ॥ ❀

अथ श्रीआचार्यजीमहाप्रभु (श्रीमद्वल्लभाचार्यजी) के
परमकृपापात्र भगवदीय अंतरंगसेवक

॥ ८४ वैष्णवनकी वार्तानको प्रारंभः ॥

❀ ॥ अथ श्रीमंगलाचरणार्थे आचार्यगुरोर्ध्यानम् ॥ ❀

(शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम्)

मायावादतमोनिरासकरणे नैदाघतीक्ष्णप्रभं ;
वागीशं व्रजभूप्रियं निजजनोद्धारैकचिंतातुरम् ॥
भक्तेच्छापरिपूरकं मखकरं स्वानंदसंतुंदिलं;
श्रीमंतं वरवल्लभाभिधमहं सर्वांगरम्यं भजे ॥ १ ॥

❀ अथ सूचनिकाप्रारंभः ❀

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुजी (श्रीवल्लभाचार्यजी) के द्वितीयपुत्र श्रीगुसाँइजी (श्रीविठ्ठलनाथजी) तिनके चोथेलालजी श्रीगोकुलनाथजी आप अपनें कृपापात्र भगवदीयनतें श्रीमुखसों नित्य कथा कहते ॥ सो एकसमें आप श्रीगोकुलनाथजी दामोदरदाससंभरवारेकी वार्ता कहत हते ॥ तासमें एक वैष्णवनें आपसों विनतीकरी ॥ जो महाराज आज आप श्रीभगवदकथा न कहोगे ॥ तब आप श्रीमुखसों कहें ॥ जो आजतें तो हम कछुकदिन भगवदीयनकी कथा कहेंगे ॥ जो श्रीठाकुरजीकोंहू अत्यंत प्रिय हे ॥ असें कहिकें आप श्रीगोकुलनाथजी आज्ञाकरतभये ॥ जो हमारे पितामह (दादाजी) श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके परमकृपापात्र अंतरंगसेवक ८४ भगवदीयवैष्णव मुख्य हते ॥ ओर वेसेंतो आपके लक्षावधी सेवक हें ॥ कारण जो आप-

नें तीनवेर पृथ्विपरिक्रमाँ करी हे ॥ तातें आपके अनंतसेवक भये ॥ परि तिनमें चोराशीही मुख्य हें ॥ ताको कारणजो ॥ विनकों श्रीआचार्यजी आपनें प्रेमलक्षणाभक्तिको अपूर्वदाँन कियेहते ॥ तातें श्रीगोविंदस्वामीहू गाए हें ॥ जो (भक्ति मुक्ति देत सवहिनकों निजजनकों कृपा प्रेम वरखत अधिकाइ) सो वे परमकृपापात्रभगवदीय अेसेभये ॥ जो जिनसों याहि देहसों साक्षात् श्रीठाकुरजी आप वातें करतहे ॥ ओर जो चहियतो सो माँगीलेते ॥ सो सर्वोत्तमग्रंथकी टीकामें पद्मनाभदासजीके प्रकरणमेंहूँ कहीहे ॥ सो वे चोराशी वैष्णव एसेंहे ॥ जो जेसें श्रीभगवानके गुण गाँन कियेतें जीव कृतार्थ होयजाय ॥ तेसेंही इन भगवदीयनके गुण गाँनतेंहूँ जीव कृतार्थ होयजाय ॥ कारण जो श्रीवेदव्यासजीनेंहू श्रीभागवतके नवमस्कंधमें प्रथम परमभगवदीय राजनके गुणानुवाद वर्णन किये ॥ ओर पाछें दशमस्कंधमें आप श्रीभगवच्चरित्रको वर्णन किये ॥ सो यातें जो प्रथम श्रीभगवद्भक्तनकी कथा सुनेतें श्रीभगवत्कथा सुनवेको अधिकार होय ॥ तातें हमहूँ प्रथम श्रीभगवदीयनकी कथा कहेंगे ॥ जातें भगवद्भक्ति सिद्ध होय ॥ ओर श्रीठाकुरजीके चरणारविंदमें स्नेह होय ॥ जातें श्रीठाकुरजी सदा प्रसन्न होंय ॥ ओर जाभातीसों चोराशी वैष्णवनके उपर आप श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनें अनुग्रह कियो ॥ ओर श्रीगोवर्धननाथजीको साक्षात्कार भयो हो ॥ ताभाँतिसों यह वार्ता वाँचनवारेपे प्रभु अवस्य अनुग्रह करेंगे ॥ तातें हम ए चोराशी वैष्णवनकी वार्ता कहिकें प्रगट करतहें ॥ सो एसें कहिकें आप श्रीगोकुलनाथजी चोराशी वैष्णवनकी वार्ताके न्यारे न्यारे प्रसंग कहीकें प्रगट किये ॥ तातें भगवदीयनकों चोराशी वार्ताके प्रसंग नित्य अवश्य बाचनें ॥ श्रवण करनें ॥ अथवा कहनें ॥ इति सूचनिका समाप्ता ॥

❀ (वार्ता १ ली. वैष्णव १ लो.) ❀

❀ (अथ दामोदरदासहरसानी की वार्ता प्रारंभः) ❀

एकसमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप पृथ्विप्रदक्षिणा करत व्रजमें पधारे ॥ तब दामोदरदास साथ हे ॥ तिनसों आप दमला कहते ॥ ओर कहते जो ॥ दमला यह मार्ग तेरेलियें मेंने प्रगट कियो हे ॥ सो श्रीगोकुलमें गोविंदघाटकेउपर एकचोतरा हे ॥ तापे श्रीआचार्यजी आप विश्राम करते ॥ ताठोर आपकी बेठककेपास अब श्रीद्वारिकानाथजीको मंदिर हे ॥ सो तहाँ एकदिन श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों चिंता उपजी ॥ जो श्रीठाकुरजीनें तो आज्ञा दीनीं हे जो ॥ जीवनकों ब्रह्मसंबंध करावो ॥ तातें आप विचारें जो ॥ जीवतो दोषसहित हें ॥ ओर श्रीपुरुषोत्तमतो गुणनिधॉन हें ॥ तातें विनको संबंध केसें होयगो ॥ ता चिंतातें आप श्रीआचार्यजी आतुर भए ॥ तब तनक निद्रा आइ ॥ ता समय श्रीठाकुरजी तत्काल प्रगट होयकें श्रीआचार्यजीकों जगायकें पूछी जो ॥ तुम चिंतातूर क्यों भये हो ॥ तब श्रीआचार्यजी वीनती कीये ॥ जो जीवको स्वरूप तो आप जानतही हो ॥ जो दोषभरित हें ॥ सो विनको आपतें संबंध केसें होयगो ॥ ओर आपनें तो विनकों ब्रह्मसंबंध करायवेकी आज्ञा दइहे ॥ तब श्रीठाकुरजी आज्ञाकिये जो ॥ जा जीवनकूँ आप नाँम सुनाय ब्रह्मसंबंध करावोगे ॥ तिनके सेवामें सकल दोष दूरि होंयगे ॥ ओर विनकी सेवा में अंगीकार करूँगो ॥ तातें तुम जीवनकों ब्रह्मसंबंध तो अवश्य करावो ॥ यह सेव्य सेवककी बातें श्रावणशुक्ल एकादशीकी मध्यरात्रिकों भई ॥ ताके दूसरेदिन प्रातःकाल पवित्राद्वादशी हती ॥ तातें सूतको पवित्रा आप श्रीआचार्यजी सिद्ध करि राखें हते.॥ सों वा समें श्रीपूर्णपुरुषोत्तमकों पहरायो ॥ ओर मिश्री

भोगधरी ॥ तासमयके श्रीठाकुरजीके वचननकों ब्रह्मसंबं-धको श्लोक भयो हे ॥ ओर वार्ता भई ताके अक्षरनको आप श्रीआचार्यजीनें सिद्धांतरहस्य ग्रंथ कियो ॥ सो आपके षोडश-ग्रंथनमें प्रसिद्ध हे ॥ तामेंको एक श्लोक (श्रावणस्यामले-पक्षे एकादश्यांमहानिशि ॥ साक्षाद्भगवताप्रोक्तं तदक्षर स उच्यते ॥ १ ॥) ता समय दामोदरदास आपसो नेंक दूरि सोये हते ॥ तातें दामोदरदाससों श्रीआचार्यजी आप जगायकें पूछे ॥ जो दमला तेंनें कछू सुन्यां ॥ तब दामोदरदासनें कह्यो ॥ जो महा-राज मेंनें श्रीठाकुरजीके वचन सुने तो सही ॥ परी समझ्यो नाहीं ॥ तब श्रीआचार्यजी आप कहें ॥ जो मोकों श्रीठाकुर-जीनें आग्या दीनी हे ॥ जो तुम जीवनकों ब्रह्मसंबंध करवा-वो ॥ तिनको हों अंगीकार करूँगो ॥ तिनके सेवामें सकल दोष दूरि होंइगे ॥ तातें ब्रह्मसंबंध अवश्य करनों ॥ बहुरि ता समें श्री-आचार्यजीनें श्रीठाकुरजीकेपास यह माँग्यो ॥ जो मेरे आगें दामोदरदासकी देह न छूटे ॥ ताको कारण जो ॥ आप श्रीभाग-वत अहर्निश देखते ॥ ओर कथा कहते ॥ सो मार्गको रहस्य अपनें दामोदरदासतें कछू गोप्य न राख्यो ॥ ओर स्वमार्गको-सब सिद्धांत भगवदलीलारहस्य हूँ आपनें दामोदरदासके हृ-देमें स्थाप्यो ॥ ❀ (प्रसंग २ रो) ❀ ॥ एकसमय दामोदरदास ओर श्रीगुसाँइजी एकांतमें बेठेहते ॥ तब श्रीगुसाँइजीनें दामो-दरदाससों पूछी ॥ जो तुम श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों कहा करिकें जानत हो ॥ तब दामोदरदासने कही जो ॥ हमतो श्री-आचार्यजीमहाप्रभुनकों संसारमें सबतें बडे जो जगदीश कहत हें ॥ ओर जो श्रीठाकुरजी कहत हें ॥ तातें हूँ विनकों अधिक करि जानत हें ॥ तब श्रीगुसाँइजी आप कहें ॥ जो तुम एसें क्यों कहतहो ॥ श्रीठाकुरजीतो बडे हें ॥ तब दामोदरदासनें

श्रीगुसाँइजीतें कह्यो ॥ जो महाराज दान वडो के दाता वडो ॥ जो काहूकेपास धन बहुत हें तो कहा काँमको ॥ जो देई ताको धन जानिये ॥ श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको सर्वस्वधन श्रीनाथजी हें ॥ सो हम जीवनकों आपुनें दान किये ॥ तातें श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकों हम सबतें वडोकरि जाँनत हें ॥ ❀ (प्रसंग ३ रो) ❀ ॥ ओर एकसमय श्रीगुसाँईजी आप बेंठकमें बेठेहते ॥ ता समें दामोदरदास तहाँ आये ॥ तब श्रीगुसाँइजी विनको बहुत आदरसन्माँन किये ॥ पाछें दामोदरदास दंडवतप्रणाँम करिकें बेठे ॥ ता समें द्वेचारि वैष्णव श्रीगुसाँईजीकेपास हसिवे खेलिवेकेलिये बेठे हते ॥ सो आप उनसों हसत खेलत मस्करी करत बहुत प्रसंनतामें खेलकी वार्ता करतहते ॥ तब श्रीगुसाँईजीसों दामोदरदासनें कह्यो जो ॥ महाराज अपनोमार्ग निश्चितताको नाहीं ॥ यहमार्गतो अति कष्टातुरताको हे ॥ तब श्रीगुसाँईजी कहें जो ॥ तुम धन्यहो ॥ साँची बात कहत हो ॥ परि हमकोंतो जब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी कृपा होयगी ॥ तब कष्टातुरता होयगी ॥ या मार्गमें प्रवृत्ती तो श्रीआचार्यजीकी कृपानुग्रह विनाँ न होय ॥ तब दामोदरदास दंडवतकिये ॥ ओर कहें ॥ जो महाराज हमकोंतो राजसों वीनती करनीहती सो करी ॥ पाछें आप प्रभु हो ॥ भली जानोगे सो करोगे ॥ परि यहमार्गतो याभाँतिको हे ॥ तब श्रीगुसाँईजी बहुत प्रसंनभये ॥ ओर कहें ॥ जो हमकों यहवार्त्ता श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप तुमद्वारा कहें ॥ तुम न कहोगे तो ओर कोंन कहेगो ॥ तुमकों देखतहें तब मन अति प्रसन्न होतहे ॥ आप तो श्रीआचार्यजीके सेवक जानिकें हमकों सिक्षाकी बात कहतहो ॥ वा दिनतें आप श्रीगुसाँईजी दामोदरदासकी सिक्षा माँनतभए ॥ तातें बड़ेसो वडे ॥ ❀(प्रसंग ४ थो) ❀ ॥ अब. श्रीआचार्यजीनें श्रीठाकुरजीकेपास यह माँग्योहोतो ॥

जो मेरेआगें दामोदरदासकी देह न छुटे ॥ ताको हेतु यह जो ॥ श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप मनमें संन्यास ग्रहणकरिवेको विचार करेंहते ॥ ता समें श्रीगोपीनाथजी ओर श्रीगुसाँईजी ये दोऊभाई बालक हते ॥ तातें मार्गकी सबवार्ता श्रीआचार्यजीनें दामोदरदासकों समझायकें वाके हृदयमें स्थापी हती ॥ जो यह सब बालकनकों सिखावेंगे ॥ एसें विचारिकें केतेकदिनपाछें श्री-आचार्यजी आपनें संन्यास ग्रहणकीयो ॥ तब थोडेकदिन पाछें श्रीगुसाँईजीनें श्रीअक्काजीसों पूछी ॥ जो माताजी श्रीआचार्य-जीमहाप्रभु मार्ग प्रगटकीये हें ॥ तामें उत्सवको कहा प्रकार हे ॥ हमतों कछू जाँनत नाहीं ॥ तब श्रीअक्काजीनें कह्यो ॥ जो लालजी मार्ग तथा उत्सवको प्रकार सब आप श्रीआचार्य-जी दामोदरदाससों कहे हें ॥ सो उनसों तुम पूछो ॥ सो वे तुमसों कहेंगे ॥ तब श्रीगुसाँईजी दामोदरदासके घर पधारे ॥ तब दामोदरदासनें बहुत सन्माँन करि भक्तिभावसों घरमें पधराये ॥ तापाछें श्रीगुसाँईजी उत्सवकोप्रकार पूछे ॥ सो दामोदरदास सब आपसों समुझायकें कहे ॥ ❀ (प्रसंग ५ मो) ❀ ॥ ओर एक-दिन दामोदरदासके पिताको श्राद्धदिन हतो ॥ तादिन श्रीगु-साँईजी विनके घर पधारिकें वाके पिताको श्राद्ध करवायआये ॥ पाछें उत्थापनके समें दामोदरदास जब दर्शनकों आय ॥ तब श्री-गुसाँईजीनें कही ॥ जो मोकों श्राद्ध करवायेकी दक्षणा देउ ॥ तब दामोदरदास कहें ॥ जो दक्षणामें एक बात कहूँगो ॥ सो विननें सिद्धांतरहस्य ग्रंथके देढश्लोकको व्याख्यान कह्यो ॥ तब श्रीगुसाँइजीनें कह्यो ॥ जो ओरहू कहो ॥ तब दामोदरदा-सनें कही जो मेनें इतनोही संकल्प कियो हे ॥ तब श्रीगुसाँ-इजी चूप करिरहे ॥ पाछें दामोदरदासनें स्वमार्गकी प्रनालिका आप के आगें कही ॥ ओर श्रीभागवतकी टीका सुबोधिनीजी

तथा श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके ग्रंथनकी टीका ओर रहस्यवार्ता जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप कहे हे ॥ सो सब दामोदरदासनें श्रीगुसाँइजीतें कही ॥ तापाछें श्रीगुसाँइजी दामोदरदासकों नमस्कार न करन देते ॥ सो यातें जो आपनें मनमें विचारी ॥ जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको स्वरूप दामोदरदासके हृदय विषे सदासर्वदा बसत हे ॥ तातें इनकों नमस्कार करन न दीजे ॥ ओर तातें श्रीगुसाँइजी अपनों चरणोदकहू दामोदरदासकों न देते ॥ तापाछें श्रीआचार्यजीनें दामोदरदासकों दर्शन देकें आज्ञा दिये ॥ जो तूं श्रीगुसाँइजीको चरणोदक नित्य लीजियो ॥ तब प्रातःकाल दामोदरदास श्रीगुसाँइजीके पास आये ॥ सो चरणोदक माँग्यो ॥ तब आपनें चरणोदककी नाहीं करी ॥ तब दामोदरदासनें कह्यो ॥ जो मोकों श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी प्रत्यक्ष आग्या भई हे ॥ तब श्रीगुसाँइजीनें दामोदरदासकों महाकष्टतें चरणोदक दीनों ॥ बिन दामोदरदासकों श्रीआचार्यजी आप कृपा करिकें तिसरे दिन दर्शन देते ॥ ओर मार्गकी रहस्यवार्ता कहते ॥ सो कदाचित् जो तीसरे दिन आपको दर्शन न होतो ॥ तो वे दामोदरदास अत्यंत कष्ट पावते ॥ सो जब पाछे दर्शन होते तबही सुख पावते ॥ एसी भाँति केतक दिन पर्यंत श्रीआचार्यजी आप दामोदरदासकों दर्शन दीनों ॥ तब जो बात आपसों होती ॥ सो सब दामोदरदास श्रीगुसाँइजीसों कहते ॥ ओर मार्गके प्रकाशकी वार्ता अहर्निश करते ॥ तातें श्रीगुसाँइजी दामोदरदासके उपर बहुतकी कृपा करते ॥ ओर कहते जो तुमारे हृदयमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप सदा विराजत हें ॥ तातें आप श्रीगुसाँइजी बिन दामोदरदासकों दंडवत प्रणाम न करन देते ॥ ओर कहें जो दामोदरदास तुमारे गुणनको पार नाहीं॥

सो वे दामोदरदास एसें कृपापात्र हे ॥ ❀ (प्रसंग ६ ठो) ❀ ॥ पहलें दामोदरदास श्रीगुसाँइजीकी आधी गादीपर बेठते ॥ सो एक दिन श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें देख्यो ॥ तब आपनें दामोदरदाससों पूछी ॥ जो तुम श्रीगुसाँइनकों कहा करिकें जानत हो ॥ तब दामोदरदासनें कह्यो ॥ जो महाराज हमतो इनकों आपके पुत्र करिकें जाँनत हें ॥ तब श्रीआचार्यजी दामोदरदाससों कहें ॥ जो जेसें तुम मोकों जानत हो ॥ तेसेंई इनकोंहू जानियो ॥ ❀ (प्रसंग ७ मो) ❀ ॥ प्रथम श्रीआचार्यजीमहाप्रभु दामोदरदाससों कहें हे ॥ जो यह मार्ग तेरे लियें प्रगट कियो हे ॥ ताको हेतु यह ॥ जो जबलग श्रीआचार्यजीके मार्गकी स्थिति हे ॥ तहाँताँई दामोदरदासकीहू स्थिति गोप्य हे ॥ प्रथम जो दामोदरदासनें कह्यो हो ॥ जो मेनें श्रीठाकुरजीके वचन सुने परि समझ्यो नाहीं ॥ ता समय श्रीआचार्यजीमहाप्रभु कहें हे ॥ जो अजहूँ तोकों दश जन्मको अंतराय हे ॥ ताको हेतु यह जो ॥ जबलग हमारे मार्गकी स्थिति हे ॥ तहाँताँई तेरो प्रागट्य फेरि फेरि होयगो ॥ कारण जो या मार्गको स्थंभ प्रथम तूँहीं हे ॥ तातें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुने संपूर्णसृष्टिको उद्धार करिवेके लियें ॥ दामोदरदासके हृदयमें भगवदलीला स्थापी ॥ सो यातें जो जबताँइँ आपके मार्गकी स्थिति रहे ॥ तबताँई दामोदरदासकी हू स्थिति आपनें गुप्तरुपसों मार्गको रहस्य जतायवेकी प्रेरणा करिवेकूँ राखी हे ॥ सो वे दामोदरदास श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक एसे परमकृपापात्र भगवदीय हे ॥ तातें इनकी वार्ताको पार नाहीं ॥ सो कहाँताँई कहिये वेष्णव ॥ १ ॥ ७ ॥

❀ (वार्ता २ री. वैष्णव २ रो.) ❀

❀ (अथ कृष्णदासमेघन क्षत्री तिनकी वार्ता प्रारंभः) ❀

जब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें पृथिवी परिक्रमॉ करी ॥ तब कृष्णदासमेघन साथ हते ॥ सो एक समें श्रीवदरिनारायणके परलीओर किरणी नाँम पर्वत हे ॥ तहाँतें आप पधारे ॥ तब अकस्मात वा पर्वतपेतें एक वडी शिला गिरी ॥ सो कृष्णदासमेघननें देखतेंहीं हाथसो थाँभी ॥ तब आप श्रीआचार्यजी वाकेऊपर बोहोत प्रसन्न भये ॥ ओर कहें ॥ जो कृष्णदास तूँ याबिरियाँ कछु मॉगि ॥ तब वानें तीन वस्तु माँगी ॥ जो एकतो मूर्खताको दोष जाय ॥ दूसरो आपके मार्गको सिद्धांत मेरे हृदयमें आवे ॥ तीसरो मेरे पूर्वगुरुके घर पधारे ॥ तामेंतें प्रथमकी दोय वस्तु तो आपनें दीनीं ॥ परंतु तिसरी गुरुकेघर पधारिवेकी नाहीं कीनीं ॥ वहुरि तापाछें आप वदरिकाश्रमतें आगें पधारे ॥ जहाँ जीवकी गति नाहीं ॥ वहाँ श्रीवेदव्यासजीको स्थल हतो ॥ तहाँ आप पधारे ॥ तब कृष्णदाससों कहें जो तूँ यहाँहीं ठाढो रहियो ॥ एसें कहिकें आप आगें पधारे ॥ तब श्रीवेदव्यासजी सामे आयकें ॥ श्रीआचार्यजीकों अपनें धाममें पधराय लेगए ॥ तब श्रीवेदव्यासजीनें आपसों कह्यो ॥ जो तुमनें श्रीभागवतकी सुबोधिनी टीका कीनी हे ॥ सो मोकों सुनावो ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु युगलगीतके अध्यायको (वामबाहुकृत वामकपोले) यह एक-श्लोक कह्यो ॥ सो ताकी व्याख्या तीन दिवसमें संपूर्ण भयी ॥ तब श्रीवेदव्यासजी सुनिकें वहोत प्रसन्न भये ॥ तापाछें श्रीआचार्यजी आप श्रीवेदव्यासजीसों कहें ॥ जो आपनें जो वेदांतके सूत्र किये हें ॥ तापे मायावादीननें मायापर अर्थ लगायो हे ॥ तब श्रीवेदव्यासजीनें कह्यो ॥ जो मैं कहा करूं ॥ मोकों श्रीभ-

गवदाज्ञा एसी ही ॥ जो असे सूत्र करो ॥ जापे दोयअर्थ प्राप्ति होय ॥ तब श्रीआचार्यजी आप कहें ॥ जो मेनें ब्रह्मवादपर अर्थ कियो हे ॥ सो कृपाकरिकें सुनिये ॥ असें कहिकें आप सुनाए ॥ सो सुनिकें श्रीवेदव्यासजी बोहोत प्रसन्न भये ॥ पाछें श्रीवेदव्यासजीसों विदा होयकें आप तीसरे दिन पूर्वस्थलपे पधारे ॥ तब कृष्णदास वा स्थलपेही ठाडो हतो ॥ आपनें वाकों देखिकें कह्यो ॥ जो तूँ गयो नाहीं ॥ तब कृष्णदासनें कह्यो ॥ जो महाराज हूँ कहाँ जाऊँ ॥ जो मोकूँ तो आपके चरणारविंद-विनाँ ओर आश्रय कहाँ हे ॥ यह सुनिकें श्रीआचार्यजी आप बहुत प्रसन्न भए ॥ ओर कह्यो जो या समें कछू माँगि ॥ तब वानें फेरि जो पूर्व माँगीं हतीं ॥ सोई तीन वस्तु माँगीं ॥ तामें दोयतो आपनें दीनीं ॥ ओर गुरुकेघर पधारिवेकी तो फेरिहू नाहीं कीनीं ॥ ❁ (प्रसंग २ रो) ❁ ॥ बहुरि एक समें श्रीआ-चार्यजीमहाप्रभु आप गंगासागर पधारे ॥ तहाँ एक स्थलपे आप पोढे हते ॥ ओर कृष्णदासमेघन पाउँ दाबत हते ॥ तब श्री-आचार्यजी अपनें मनमें विचारें ॥ जो या समें धाँनके मुरमुरा होईतों आरोगें ॥ सो यहबात आपके मनकी कृष्णदासमेघननें जाँनी ॥ इतनेमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों निद्रा आई ॥ तब कृष्णदास ऊठिकें गंगासागरउपर आये ॥ तहाँ देखें तो परली-पार एक दीआ बरत हे ॥ ताकी अटकरतें पेरिके गंगाजीके पार गये ॥ ओर खेतमेंतें वाही समें खेतवारेकूँ जगाय ॥ दूनें दाँम दे गीलोधान लियो ॥ सो लेकें तहाँ गाम हो ॥ वा गाँममें गीलोधाँन कूटवायो ॥ पाछें आगें जायकें भडभूँजाकों ज-गायो सो विननें एक टकाकी जगे चारि टका देकें मुरमुरा वाइनिरियाँ सिद्धि करवाये ॥ पाछें कृष्णदास श्रीगंगाजीमें पेरिकें आपके पास आये ॥ सो विननें श्रीआचार्यजीके चरणारविंद दाबिकें

आपकों जगाये ॥ ओर मुरमुर आगें राखिकें वीनती करी ॥ जो महाराज यह आरोगो ॥ तब श्रीआचार्यजी आप पूछें ॥ जो तूँ यह कहाँतें लायो हे ॥ तब कृष्णदासनें सब समाचार कहे ॥ तब आपनें कह्यो ॥ जो तूँ माँगी ॥ में तेरेउपर प्रसंन हों ॥ तब विननें फेरी वेई तीन वस्तु माँगीं ॥ तब श्रीआचार्यजी आपनें कह्यो ॥ जो यह जीव कहा माँगिजाँने ॥ या समे तो जो माँगतो सोई में याकों देतो ॥ जो केहेतोतो श्रीठाकुरजीको स्वरूपहू दिखावतो ॥ पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप वे मुरमुरा आरोगे ॥ तहाँतें दुसरेदिन आप सोरों पधारे ॥ तब तहाँ कृष्णदासमेघननें फिरि वीनतीकरिकें कही ॥ जो कृपानाथ मेरे गुरुकों ले आऊँ ॥ तब आपनें कह्यो ॥ जो तूँ या वाततें खेद पावेगो ॥ पाछें कृष्णदास आपकी आज्ञाबिनाँ गुप्तही वा अपनें पूर्व गुरुके यहाँ गयो ॥ तब वा गुरुनें वाकों देखिकें कही ॥ जो तेनें ओर गुरु कियो ॥ तब कृष्णदासनें कह्यो ॥ जो महाराज मेनें तो ओर गुरुतो नाँहीं कियो ॥ मेरे गुरुतो आपही हो ॥ परि आपके प्रतापतें मेनें पूर्णपुरुषोत्तम पाये हें ॥ तब वा गुरुनें कही ॥ जो पूर्णपुरुषोत्तम क्यों जानिये ॥ तब गुरुकेआगें अग्निकी अंगीठी धरीहती ॥ तामेंतें कृष्णदासनें दोऊ हाथनकी अंजुली भरिकें अँगार हाथमें लिये ॥ ओर कहें ॥ जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु पूर्णपुरुषोत्तम होंय ॥ तो मेरे हाथ मति जरियो ॥ ओर जो वे पूर्णपुरुषोत्तम न होंई तो ॥ मेरे हाथ जरिबरि भस्म होइजैयो ॥ सो एकमुहूर्त ताँई वानें हाथमें आगि राखी ॥ तब वा गुरुनें भय पाईकें कृष्णदासके हाथ पकरिकें अग्नि डरथाय दीनी ॥ तब कृष्णदास तहाँतें खेदपाइकें ऊठि आए ॥ यह प्रसंग सब वल्लभाष्टककी टीकामें श्रीगोकुलनाथजी विस्तार करिकें लिखे हें ❀ (प्रसंग ३ रो) ❀ ॥ बहुरि कृष्णदासमेघनकों मार्ग हृदयारूढ भएपाछें कोइक गोप्य-

वार्त्ता होय सो सबनके आगें कहे ॥ तब काहू वैष्णवनें श्री-
आचार्यजीसों कही॥जो महाराज कृष्णदास मार्गकी गोप्यवार्ता
सबनकेआगें कहत हें ॥ तब श्रीआचार्यजी आप कृष्णदाससों
पूछें ॥ जो तूं गोप्यवार्त्ता सबनकेआगें क्यों करत हे ॥ तब आप-
सों कृष्णदासनें कह्यो ॥ जो महाराज उनसोंहीं पूछिये ॥ जो मेंनें
कहा कही हे ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें उन वेष्णवनसों पू-
छी ॥ जो तुमसों कृष्णदासनें कहा वार्ता कही ॥ तब उन वैष्णवननें
कही ॥ जो महाराज हमकोंतो कछू सुधि रही नाहीं ॥ तब श्री-
आचार्यजी आप मुसिंकायकें चूप करिरहे ॥ ❀ (प्रसंग ४ थो)❀॥
एक समय श्रीठाकुरजीकी इच्छातें कृष्णदासनें श्रीआचार्यजीम-
हाप्रभुनसों प्रश्न पूछ्यो ॥ जो महाराजाधिराज श्रीठाकुरजीकों
प्रियवस्तु कहा हें ॥ सो मोसों कहो ॥ ताको प्रतिउत्तर श्रीआ-
चार्यजी दियें ॥ जो श्रीठाकुरजी उत्तमतें उत्तम वस्तुके भोक्ता
हें ॥ परंतु गोरसके अनेक भाव हें ॥ सो भाव अनिर्वचनीय
हें ॥ ओर सबनतें भक्तनको स्नेह भाव अति प्रिय हे ॥ जातें
आप श्रीठाकुरजी भक्तवत्सल कहावत हें ॥ तब कृष्णदासनें
फेरि पूछी ॥ जो महाराज श्रीठाकुरजीकों अप्रियवस्तु कहा हें ॥
तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें कह्यो ॥ जो श्रीठाकुरजीकों धूँआँ
समाँन अप्रियवस्तु ओर कछूनाहीं ॥ तातें हूँ अप्रिय भक्तनको
द्वेषी हे ॥ पाछें फेरि कृष्णदासनें प्रश्न पूछ्यो ॥ जो महाराज
श्रीरघुनाथजी संपूर्ण सृष्टिकों लेकें स्वधाम पधारे ॥ ओर राजादश-
रथकों स्वर्ग दियो ॥ सो काहेतें ॥ ताको प्रतिउत्तर श्रीआचार्य-
जी महाप्रभुआप कहें ॥ जो श्रीरघुनाथजीतो परमदयालु
हें ॥ तातें सबनकों स्वर्ग दियो ॥ ❀ (प्रसंग ५ मो) ❀ ॥
ओर एकसमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों कृष्णदासनें फेरि प्रश्न
पूछ्यो ॥ जो भक्तहोईकें श्रीठाकुरजीकी लीलाको भेद नाहीं

जानत ॥ सो काहेतें ॥ तब श्रीआचार्यजी आप कहें ॥ जो विधिपूर्वक समर्पण कह्योहे त्यों तो करत नाहीं ॥ तब अनुभव क्यों होय ओर जो भगवदभक्तको संग करे ॥ तो श्रीठाकुरजीकी लीलाको भेद जाँनें ॥ सो तो आपकी योग्यता नाहीं ॥ ओर काहूको संगहू करत नाहीं ॥ ओर जो कछू करतहें ॥ सो अंतःकरणपूर्वक करत नाहीं ॥ तातें हीं श्रीठाकुरजीके स्वरूपको तथा लीलाको भेद जाँनत नाहीं ॥ जब उत्तमभक्तको संग करे ॥ श्रीसुबोधिनीजीग्रंथमें अहर्निश अवगाहन करे ॥ तब भगवदभाव उतपन्न होय ॥ श्रीठाकुरजीतो व्रजभक्तनके हृदयविषे सदैव रहत हें ॥ तातें एतन्मार्गीयवैष्णव जाके हृदयमें श्रीठाकुरजी विराजत हें ॥ ताको संग करनों ॥ तहाँ आपनें गजनधावनादि वैष्णवको दृष्टाँत दीनों ॥ ओर कही जो ॥ जिन जिन भावपूर्वक सेवाकरी ॥ तिनके सकल मनोरथ सिद्धि भये ॥ तातें लीलास्थल ओर व्रजभक्तनके भावको विचार करनों ॥ जो वैष्णव श्रीठाकुरजीके स्वरूपकों जानत हे ॥ जो आग्या होइ सो जाने ॥ ओर जो कछु काज करे ॥ तामें श्रीठाकुरजीविषे विरहताप भाव करे ॥ अपनें स्वदोषको विचार करे ॥ अपनों स्वरूप जाँनें ॥ जो हूँ कोन हों ॥ पहलें कहाँ हतो ॥ भगवतसंबंध कीयेतें कोंन भयो ॥ अब मोकों कहा कर्तव्य हे ॥ एसें रात्रि दिवस विचार करे ॥ तब आपनों स्वरूप जाँनें ॥ जो श्रीठाकुरजीको प्रागट्य व्रजभक्तनके अर्थ तथा एतन्मार्गीयभक्त-ताके अर्थ हे॥ जाकों उत्तम संग होय तो वो एतन्मार्गीय ग्रंथनकूँ जाँनें ॥ ओर शास्त्र पुराणादि अनेक इतिहास हें ॥ परंतु श्रीव्रजराजके घरको श्रीठाकुरजीकों प्रागट्य सो न जान्यो जाय ॥ तातें इन श्रीठाकुरजीकों तो तवहीं जानें ॥ जब भगवदभक्तको संग होइ ॥ तातें भगवदीयनको संग अवश्य करनों ॥ क्यों जो से-

वाकोप्रकार एतन्मार्गीय वैष्णवही जानत हें ॥ तिनसों मि-
लिकें भावपूर्वक पूछिकें सेवा करनीं ॥ तब भगवद्भाव उत्पन्न
होय ॥ श्रीठाकुरजीकी स्नेहयुक्त सेवा करे तो श्रीठाकुरजीकों
जानें ॥ ❀ (प्रसंग ६ ठो) ❀ ॥ एक समय श्रीआचार्यजीम-
हाप्रभु श्रीबदरीनारायणजीके मंदिरमें पधारे ॥ तब श्रीवेदव्या-
सुजीहू मिले ॥ तब परस्पर नमस्कार करि श्रीआचार्यजीम-
हाप्रभु श्रीवेदव्यासजीसों पूछे ॥ जो महाराज भागवतके भ्रमरगीतके
अध्यायमें ॥ श्रीठाकुरजीनें उद्धवजीकों व्रजभक्तनपास पठाये ॥ ता
प्रसंगमें आधोश्लोक घटत हे सो कहो ॥ तब श्रीवेदव्यासजीनें
अर्धश्लोक कह्यो ॥ सो अर्ध श्लोक ॥ (आत्मत्वात्भक्तवत्सलात्
सत्यवक्तात्स्वभावतः) सो या श्लोकार्धकी टीका श्रीआचार्य-
जीमहाप्रभु आप पहलेंही करि राखींहीं ॥ सो सुनिकें श्रीवेद-
व्यासजी बहुत प्रसन्न भये ॥ तापाछें आप श्रीआचार्यजी श्री-
बदरीनाथजीके मंदिरमें पधारे ॥ तादिन वामनद्वादशी हती ॥
सो तादिन श्रीआचार्यजीकें मनमें व्रतकरिवेको विचार हतो ॥
तब श्रीबदरीनाथजीनें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों कही ॥ जो
मेनें फलाहारको सर्वत्र खोज कियो ॥ परि पाईयत नाहीं ॥
तातें तुम रसोई करिकें ॥ श्रीठाकुरजीकों भोग समर्पिकें ॥ महाप्र-
साद लेउ ॥ तब श्रीआचार्यजी विचारें ॥ जो श्रीठाकुरजीकी
इच्छा एसीही दीखत हे ॥ इतनेमें कृष्णदासनें हू आइकें कह्यो ॥
जो महाराज यहाँ कछू फलाहार पाईयत नाहीं ॥ पाछें तादिनतें
आप वामनद्वादशीकेदिन व्रत न करते ॥ एसो वचनहू हे ॥ जो
(उत्सवांते च पारणम्) पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु श्रीबदरीनाथ-
जीतें विदा भये ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके साथ कृष्णदास
हते ॥ ❀ (प्रसंग ७ मों) ❀ ॥ प्रथम श्रीआचार्यजीमहाप्रभु
जब श्रीवेदव्यासजीके स्थानपे पधारे हते ॥ तब कृष्णदाससों

कह्यो हो जो तूँ यहाँहीं ठाढो रहियो ॥ तातें कृष्णदास वहाँहीं ठाढे रहे हते ॥ पाछें जब आप तीसरेदिन पधारे ॥ तब कृष्णदासकों वेसोइ ठाढो देख्यो हतो ॥ तब आप वासों कह्यो हो ॥ जो तूँ गयो नाहीं ओर बेठ्योहू नाहीं ॥ तब कृष्णदासनें कह्यो हतो जो महाराज आपकी आग्याहती जो ठाढो रहियो ॥ सो सेवककों तो आग्याही कर्त्तव्य हे ॥ आग्या न मॉने सो सेवक काहेको ॥ सो वे कृष्णदासमेघन एसे कृपापात्र हे ॥ जिननें सेव्य सेवकको भावहू दिखायो ॥ तातें श्रीआचार्यजी आप कृष्णदासकेउपर सदा प्रसंन रहते ॥ ओर मूर्खताको दोष मनमें न लावते ॥ एसे प्रभु उदार हे ॥ सो जीवकी ओरको विचार न करते ॥ तातें कृष्णदासमेघन मार्गमें तथा घरमें सदा श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके पासही रहते ॥ क्षणएकहू न्यारे न होते ॥ सो वे कृष्णदासमेघनक्षत्री श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक एसे परमकृपापात्र भगवदीय हे ॥ तातें इनकी वार्ताको पार नाहीं ॥ सो कहाँतॉई लिखिये ॥ वैष्णव २ रो ॥

❀ (वार्ता २ री. वैष्णव २ रो.) ❀

❀ (अथदामोदरदाससंभरवारे क्षत्री कॅनोजके वासीकी वार्ता) ❀

सो विन दामोदरदासकों एक तॉबेको पत्रा पायो हतो ॥ ओर वाकों स्वप्नमें दृष्टांत भयो हतो जो ॥ जो या पत्राकों बॉचे ताकी तूँ शरणि जैयो ॥ सो पत्रा काहूपे वॉच्यो न जाय ॥ सो केतकदिनपाछे श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप कनोज पधारे ॥ तहॉगॉमके वाहिर एकवाग हतो ॥ तहाँ आप उतरे ॥ ओर कृष्णदासकों गॉमभीतर पठायो ॥ ओर कंह्यो जो सीधासामुग्री ले आउ परि काहुसों कहियो मति ॥ जो हम यहॉ पधारेहें ॥ तब कृष्णदास गॉमभीतर गये ॥ सो सीधासामुग्री सब लीनींही सो लेके चले ॥ तब दामोदरदास राजद्वारतें आवत हते ॥ सो मार्गमें जात कृष्णदासकों पहचॉने ॥ तब दामोदरदास घोडापेतें उतरिकें कृ-

ष्णदासकेपास आये ॥ ओर दंडवत करिकें पूछी ॥ जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु यहाँ पधारे हें ॥ तब कृष्णदासनें मनमें विचान्यो ॥ जो आपकी केहेवेकी आग्या नाँहीं ॥ तातें वासों नाहींकरी ॥ तब दामोदरदासनें विचान्यो ॥ जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु विनाँ यह यहाँ कहाँतें आवें ॥ तातें जब कृष्णदास चलतेभये ॥ तब विनके पाछें पाछें दामोदरदासहू चले ॥ ओर घोडातो अपनेंघर पठाय दीनों ॥ तब कृष्णदासकों दूरितें आवत श्रीआचार्यजीनें देख्यो ॥ तब दामोदरदासनेंहू दंडवत कियो ॥ तब कृष्णदाससों श्रीआचार्यजी कहें ॥ जो तेनें यासों क्यों कह्यो ॥ तब कृष्णदासनें विनती करी ॥ जो महाराज मेंनें तो इनसों नाहीं कही ॥ तापाछें दामोदरदासनेंहू श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों विनती करी ॥ जो महाराज मोसों तो इननें नाहीं कही ॥ हूँतो इनके पाछें अनुमानतें चल्योआयो हूँ ॥ सो श्रीआचार्यजी आपनें कृष्णदाससूँ ओरनतें केहेवेकी नाहीं यातें किये हे ॥ जो जादिन आप कन्नोज पधारे ॥ ताके पहलें श्रीठाकुरजीकी आग्या भई हती ॥ जो यहाँके जीव पावन करनें हें ॥ तब श्रीआचार्यजी आप अपनें मनमें विचारें जो आग्या भई हे ॥ तो आपुही जीव पावन होइँगे ॥ ताकेलियें आपनें कोइसुँ केहेवेकी नाँहीं करी हती ॥ पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप दामोदरदाससों कहें ॥ जो वो ताम्रपत्र पायो हे सो लायो हे ॥ तब दामोदरदासनें विनती करी ॥ जो महाराज वा पत्रको कहा काँम हे ॥ मोकों तो आप शरणि लीजिये ॥ तब श्रीआचार्यजी कहें ॥ जो तोकों स्वप्नमें आग्या भई हे ॥ जो पत्रा वाँचे ताकी तूँ शरणि जेयो ॥ तातें वो पत्रा लाउ ॥ तब दामोदरदासनें कही ॥ जो कृपानाथ आपतो अंतर्यामी हो ॥ एसें कहिकें वो घर जाय पत्रा ले आयो ॥ तब श्रीमहाप्रभु आप वह पत्रा वांचे पाछें ता पत्रको अभिप्राय

आप दामोदरदाससों कहें ॥ तापाछें दामोदरदासकों आपनें नाँम सुनायो ॥ पाछें श्रीआचार्यजीकों विन्न दामोदरदासनें अपनें घर पधराये ॥ तब दामोदरदासकी स्त्री हू आपकी शरणि आइ ॥ तब दामोदरदासकों तो प्रथम नाँम सुनायो हतो ॥ तातें वाकों समर्पण करवायो ॥ ओर दामोदरदासकी स्त्रीकों नाँम सुनायो ॥ ओर पांछें समर्पण करवायो ॥ तब दामोदर-दासनें विनती करी ॥ जो महाराज हमकों अब कहा आज्ञा हे ॥ तब श्रीआचार्यजी आप दामोदरदाससों कहें ॥ जो तुम सेवा करो ॥ तब दामोदरदासनें कही ॥ जो महाराज सेवा कोंन भाँति करें ॥ तब आप कहें ॥ जो क्रहूँ श्रीठाकुरजीको स्वरूप होइ सो देखो ॥ सो तहाँ एक दरजीके घर श्रीठाकुरजी-को स्वरूप हतो ॥ ताकों द्रव्य देकें वो स्वरूप दामोदरदास अपनें घर ले आये ॥ पाछें सब घर पोत्यो ॥ पात्र सब बद-लाये ॥ पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों पधरायकें वा स्वरूप-कों पंचामृतसों स्नान करवायो ॥ ओर श्रीद्वारिकानाथजी नाँम धऱ्यो ॥ पाछें सिंहासनपे पाट वेठाये ॥ सो. वो दामोदरदासके माँथें सेवा पधराई ॥ पाछें भोग समर्पे ॥ सो समयानुसार भोग सराय वीडा समर्पन लागे ॥ तब देखें तो पाँन हरे हते ॥ तब श्रीआचार्यजी आप दामोदरदाससों कहें ॥ जो हरेपाँन श्री-ठाकुरजीकों न समर्पिये ॥ उत्तमतें उत्तम सामुग्री होई ॥ सो श्रीठाकुरजीकों समर्पिये ॥ श्रीठाकुरजीतो उत्तम वस्तुके भोक्ता हें ॥ पाछें वे स्त्रीपुरुष दोऊ भली भाँतिसों सेवा करनं लागे ॥ सो श्रीद्वारिकानाथजीकी सेवा भलीभाँतिसों होन लागी ॥ ओर श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप आज्ञा दिये ॥ जो उत्तम कोमल वस्त्र होय तामेंतें श्रीठाकुरजीकों लीजिये ॥ ओर सामुग्री लेत समे उत्तममें उत्तम सामुग्री होय ॥ सो

राजा अंवरीषतो मर्यादामार्गीय हते ॥ ओर ये दामोदरदासतो पुष्टिमार्गीय हें ॥ इनमें इतनी अधिकताई हे ॥ ❀ (प्रसंग २ रो) ❀ ओर एकसमें उष्णकालकें दिन हते ॥ तव श्रीद्वारिकानाथजीकों मंदिरमें पोढायकें आप दामोदरदास चोवारे जायकें सोये ॥ सो वा दिन गरमी वोहोत भइ ॥ तव श्रीद्वारिकानाथजीनें लोंडीकों आज्ञा दिये ॥ जो तूँ किंवाड खोलि ॥ मोकों गरमी वोहोत होतहे ॥ तव लोंडीनें मंदिरके किंवाड खोले ॥ तव श्रीद्वारिकानाथजीनें लोंडीकों आज्ञा दिये ॥ जो अव तूँ पंखा करि ॥ तव लोंडीनें घडी एकताँई पंखा कियो ॥ पाछें लोंडीसों आप कहें ॥ जो अव तूँ पंखा रहनदे ओर जाइकें सोईरहे ॥ तव लोंडी किंवाड खुले छोडिकें वहार आय सोयरही ॥ जव सवारो भयो ॥ तव दामोदरदास देखें तो श्रीठाकुरजीके किंवाड खुले हें ॥ तव वा लोंडीसों पूछें ॥ जो किंवाड कोननें खोले हें ॥ तव वा लोंडीनें कह्यो ॥ जो मोकों श्रीठाकुरजीनें आज्ञा दीनीं जो तूँ किंवाड खोलि ॥ तव मेनें किंवाड खोले हें ॥ तव दामोदरदास वा लोंडिसों वोहोत खीजे ॥ ओर कहे जो तेनें आपुतें क्यों खोले ॥ मोसों खोलिवेकी क्यों न कही ॥ ओर श्रीठाकुरजीनेंहू मोसों आज्ञा क्यों न करी ॥ सो प्रभु तो वडे दयालु हें ॥ जाकेविषे स्नेह होय ॥ ताहीसों संभाषण करें ॥ श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकें अंगीकार करवेमें तो सव समान हें ॥ लौकिकमें भलें कोउ ऊँच नींच होय ॥ श्रीठाकुरजी तो केवलस्नेहके वश हें ॥ तापाछें दामोदरदासकों श्रीठाकुरजीनें कह्यो ॥ जो किंवाड मेंनें खुलवाये हें ॥ ओर यानें खोले हें ॥ तामें तुम यासों क्यों खीजत हो ॥ तुम तो चोवारे जाय सोये ॥ ओर मोकों भीतर सुवायो ॥ तव दामोदरदासनें विनती करी ॥ जो महाराज प्रसाद तव लेऊँ गो ॥ जव नयो मंदिर वनवाऊँगो ॥ तव विनकी स्त्रीनें

श्रीठाकुरजीकेलियें लिजिये ॥ ओर वा सामुग्रीमेंतें ओर ठार खरच न करिये ॥ एसे श्रीमुखके वचन सुनिकें तव दामोदर-दासनें कही ॥ जो राज आपकी आज्ञा प्रमाँण करूँगो ॥ पाछें वे स्त्रीपुरुष नीकीभाँतिसों सेवा करते ॥ ओर जो सामुग्री होती सो तथा अमरस रुपाके पात्रमें राखते ॥ सो एसी चतुराइतें जो ओर कोई न जानें ॥ जो यामें कछू सामुग्री धरी हे ॥ या भाँतिसों वे दामोदरदास सेवा करनलागे ॥❀ (प्रसंग २ रो) ❀ वे दामोदरदास श्रीठाकुरजीके लियें जल आपुहीं भरते ॥ सो एकदिन दामोदरदासको सुसर विनके घर आयकें दामोदर-दाससों कहनलाग्यो ॥ जो तुम आप जल भरतहो ॥ सो हम-कों ज्ञातिमें लज्जा आवति हे ॥ तातें जल लोंडीकेतें भरवायो करो ॥ तव दामोदरदासनें कही जो ठीक हे ॥ पाछें दूसरेदिन एक घडा तो आप दामोदरदासनें लियो ॥ ओर एकघडा वाकी स्त्रीके हाथमें दियो ॥ तव दोउ जनें जल भरिवेकों वाकी हाटके तरें होइकें निकसे ॥ जव जल लेकें आये ॥ तव पाछें पाछें दामो-दरदासको सुसर चल्यो आयो ॥ सो दामोदरदासके घरमें आइ-कें विनके पायन परिगयो ॥ ओर हाथ जोरिकें कही ॥ जो में चूक्यो ॥ जो तुम सों कह्यो ॥ अवतें तुमही जल भरयोकरो ॥ परि अपनी स्त्रीजन पास जल मति भरवावो ॥ आज पाछें हम कछू न कहेंगे ॥ तव तें दामोदरदास फिर आपुही जल भरन लागे ॥ पाछें श्रीद्वारिकानाथजी दामोदरदाससों सानुभव जतावन लागे ॥ जो कछु चहियें सो माँगि लेते ॥ ओर वातें करते ॥ सो विन दामोदरदासनें सेवा करिकें श्रीठाकुरजीकों वहुत प्रसंन कीनें ॥ ओर विनकी सेवा देखिकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप हू वहुत प्रसंन भये ॥ तव आप अपनें श्रीमुखतें कहे ॥ जो जिननें रा-जाअंवरीप न देख्योहोय सो इन दामोदरदासकों देखो ॥ तामें

राजा अंवरीषतो मर्यादामार्गीय हते ॥ ओर ये दामोदरदासतो पुष्टिमार्गीय हें ॥ इनमें इतनी अधिकताई हे ॥ ❀ (प्रसंग २ रो) ❀ ओर एकसमें उष्णकालकें दिन हते ॥ तव श्रीद्वारिकानाथजीकों मंदिरमें पोढायकें आप दामोदरदास चोवारे जायकें सोये ॥ सो वा दिन गरमी वोहोत भइ ॥ तव श्रीद्वारिकानाथजीनें लोंडीकों आज्ञा दिये ॥ जो तूं किंवाड खोलि ॥ मोकों गरमी वोहोत होतहे ॥ तव लोंडीनें मंदिरके किंवाड खोले ॥ तव श्रीद्वारिकानाथजीनें लोंडीकों आज्ञा दिये ॥ जो अव तूं पंखा करि ॥ तव लोंडीनें घडी एकताँई पंखा कियो ॥ पाछें लोंडीसों आप कहें ॥ जो अव तूं पंखा रहनदे ओर जाइकें सोईरहे ॥ तव लोंडी किंवाड खुले छोडिकें वहार आय सोयरही ॥ जव सवारो भयो ॥ तव दामोदरदास देखें तो श्रीठाकुरजीके किंवाड खुले हें ॥ तव वा लोंडीसों पूछें ॥ जो किंवाड कोननें खोले हें ॥ तव वा लोंडीनें कह्यो ॥ जो मोकों श्रीठाकुरजीनें आज्ञा दीनीं जो तूं किंवाड खोलि ॥ तव मेंनें किंवाड खोले हें ॥ तव दामोदरदास वा लोंडिसों वोहोत खीजे ॥ ओर कहें जो तेनें आपुतें क्यों खोले ॥ मोसों खोलिवेकी क्यों न कही ॥ ओर श्रीठाकुरजीनेंहू मोसों आज्ञा क्यों न करी ॥ सो प्रभु तो वडे दयालु हें ॥ जाकेविषे स्नेह होय ॥ ताहीसों संभाषण करें ॥ श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकें अंगीकार करवेमें तो सव समान हें ॥ लौकिकमें भलें कोऊ ऊँच नींच होय ॥ श्रीठाकुरजी तो केवलस्नेहके वश हें ॥ तापाछें दामोदरदासकों श्रीठाकुरजीनें कह्यो ॥ जो किंवाड मेंनें खुलवाये हें ॥ ओर यानें खोले हें ॥ तामें तुम यासों क्यों खीजत हो ॥ तुम तो चोवारे जाय सोये ॥ ओर मोकों भीतर सुवायो ॥ तव दामोदरदासनें विनती करी ॥ जो महाराज प्रसाद तव लेऊँ गो ॥ जव नयो मंदिर वनवाउँगो ॥ तव विनकी खीनें

कह्यो ॥ जो एसें क्यों बने ॥ यहतो कछू पॉच सात दिनको कॉम नाहीं ॥ प्रसाद लिये विनु क्यों चलेगो ॥ तव दामोदरदा नें कह्यो ॥ जो सखडी प्रसाद तो न लउँगो ॥ केवल फलाहार करूँगो ॥ तव त्योंहीं करत मंदिर सिद्ध करवायो ॥ तव आछो दिन देखिकें श्रीद्वारिकानाथजीकों नये मंदिरमें पाट वेठाये ॥ तव वडो उत्सव कियो ॥ ता दिन वहुत वेष्णवनकों महाप्रसाद लिवायो ॥ तापाछें आपु दामोदरदासनें महाप्रसाद लियो ॥ ❀ (प्रसंग ४ थो) ❀ ॥ वहुरि एकदिन दामोदरदास श्रीठाकुरजीकों राजभोग समर्पिकें शैया सँभारनकों शैयामंदिरमें गये ॥ तव देखें तो शैयाउपर विलाईनें विगाड्यो हे ॥ तव दामोदरदासनें कही ॥ ॥ जो श्रीठाकुरजी अपनीं शैयाहू राखिसकत नाहीं ॥ तव श्रीठाकुरजीनें भोगको थार चोकीपेसों लात मारिकें नीचें डारिदिनों ॥ ओर दामोदरदाससों कह्यो ॥ जो सेवक तूँ हे के में हूँ ॥ एसें वहुत खीजे ॥ पाछें दामोदरदासनें विनती करि मनुहार वहुत करी ॥ सब सामुग्री फिर सिध्दि करिकें श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यो ॥ तव श्रीठाकुरजी आरोगे ॥ परि तोहू एकमासलों वातें वोले नाहीं ॥ पाछें वहुत विनती करत दिना वीते ॥ तव फेरि आप दामोदरदाससों वोलन लागे॥ ❀ (प्रसंग ५ मों) ❀ वहुरि एकसमय दामोदरदासहरसॉनी विनकें पॉच सात दिन पाहूने रहे ॥ तव इननें विनको वहुत भलीभॉतिसों समाधान कियो ॥ पाछें दामोदरदासहरसॉनी विनसों विदा होइकें अडेल आए ॥ तव श्रीआचार्यजीमहाप्रभु दामोदरदाससों पूछें ॥ जो दमला तूं कहॉ उतर्‍यो हतो ॥ ओर कहॉ प्रसाद लियो ॥ तव दामोदरदास हरसॉनीनें विनती करी॥ जो महाराज कंनोजमें दामोदरदास संभरवारेके घर उतर्‍यो हतो ॥ ओर तहॉ अनसखडी प्रसाद लेतो ॥ सो सुनिकें श्री-

आचार्यजी आप दामोदरदाससंभरवारेके उपर अप्रसन्न भये ॥ ओर मनमें कहें जो यह मेरो अंतरंग सेवक हे ॥ ताकों सखडी महाप्रसाद क्यों न लिवायो ॥ यह आपके अंतःकरणकी वात ॥ दामोदरदाससंभरवारेनें अपनें घर वेठे जॉनी ॥ तव वानें अपनीं स्त्रीसों कही ॥ जो तूँ तो श्रीठाकुरजीकी सेवा नीकी भाँतिसों करियो ॥ ओर में तो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके चरण देखिःवेकों अडेल जातहों ॥ एसें कहिकें दामोदरदास कंनोजतें अडेलकों चले ॥ सो केतेक दिनमें अडेल जाय पहूँचे ॥ तहाँ श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके दर्शन करि साष्टांग दंडवत करी ॥ तव श्रीआचार्यजी आप पीठि देकें वेठे ॥ तव दामोदरदाससंभरवारेनें वीनती करी ॥ जो महाराज मेरो अपराध कहा हे ॥ ओर जीवतो अपराध करतही आयो हे ॥ परि अपराध कन्यो जाँनिये तो भलो हे ॥ तव श्रीआचार्यजी आप कहें ॥ जो तेनें मेरे दामोदरदासहरसाँनीकों सखडी महाप्रसाद क्यों न लिवायो ॥ तव दामोदरदाससंभरवारेनें विनती करी ॥ जो महाराज आप दामोदरदाससों हीं पूछिये ॥ जो सखडी प्रसाद क्यों न लीनों ॥ तव श्रीआचार्यजी आप दामोदरदासहरसॉनीसों पूछे ॥ जो दमला तेनें दामोदरदाससंभरवारेके घर सखडी प्रसाद क्यों न लीनों ॥ तव दामोदरदासहरसाँनीनें विनती करी ॥ जो महाराज श्रीठाकुरजी प्रातःकाल वालभोग आरोगते ॥ सो में लेतो ॥ पाछें पकवान्न मेंवा मीठाई दूध वहुत लेतो ॥ तातें सखडीकी रुचि रहती नाहीं ॥ तातें न लेतो ॥ तब श्रीआचार्यजी आप कहें ॥ जो तूँ तो अपनीं इच्छातें सखडी न लेतो ॥ परि मोकों तो याके उपर वडी खुनस भई हती ॥ सो अब मेरे चित्तको समाधॉन भयो ॥ यह भक्तके अंतःकरणकी भक्ति देखिवेकों श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप यह नाट्य

किये ॥ जेसें दामोदरदासनें कंनोजमें घर बेठ श्रीआचार्यजीके अंतःकरणकी वात जानीं ॥ तेसें आप श्रीआचार्यजीमहाप्रभु तो आपनें भक्तनके हृदेमेंहीं सदा स्थित हें ॥ सो कहा भक्तके हृदयकी वात न जॉनते ॥ परि भक्तपरीक्षार्थ यह प्रकार करि दिखायो ॥ पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें विन दामोदरदाससंभरवारेको बहुत आदरसन्मॉन करि अपनें घर कंनोजकूं पठायो ॥ सो वे दामोदरदास कंनोज जाय पहुँचे ॥ सो वे स्त्रीपुरुष भलीभाँतिसों श्रीठाकुरजीकी सेवा करन लगे ॥❀(प्रसंग ६ ठो) ❀ ॥ जो सिंहनदके वेष्णव श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके दर्शनकों अडेल जाते ॥ सो सव कंनोजमें दामोदरदाससों मिलिकें आगें जाते ॥ तातें जो वेष्णव आवते ॥ तिनकों दामोदरदास आदरसन्मान करि अपनें घर उतारते ॥ ओर सवनकों महाप्रसाद लिवावते ॥ पाछें जव वे वेष्णव अडेलकों विदा होते ॥ तव जितनें वेष्णव होते ॥ तिन सवनके संग एक एक मोहोर ओर एक एक नारियल श्रीआचार्यजीकों भेट पठावते ॥ ओर विनसों यह कहते जो मेरी दंडवत खालीहाथ केसें करोगे ॥ तातें यह आगें धरिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभुनप्रति मेरे दंडवत प्रणाम करोगे ॥ जातें मेरे अनेक प्रणाम पोंहोंचें ॥ तातें मं सवनकें संग न्यारी न्यारी भेट देतहूं ॥ सो वे दामोदरदास एसे कृपापात्र हे ॥ ❀(प्रसंग ७ मो) ❀ ॥ ओर दामोदरदासको सुसर वहुत धन संपन्न हतो ॥ तिननें एकसोएक लोंडी वेटीके दाइजेमें दीनीं हतीं ॥ सो यातें जो मेरी वेटी वेठी रहेगी ॥ ओर कॉंम काज सव लोंडींहीं करेंगी ॥ परि वह एसें न करती ॥ सेवासंवंधी कार्य सव आपही करती ॥ सो वह एसी भगवदीय ही ॥ ❀ (प्रसंग ८ मो) ❀ ॥ ओर एकसमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप दामोदरदाससंभरवारेके घर पोढे हते ॥ तव दामोदरदास

चरणसेवा करत हते ॥ ता समें श्रीआचार्यजी आप प्रसन्न होयकें दामोदरदाससों पूछें ॥ जो तेरे मनमें काहू बातको मनोरथ हे ॥ तब दामोदरदासनें कह्यो ॥ जो महाराज मोकों तो आपके अनुग्रहसों काहूबातको मनोरथ रह्यो नॉही ॥ तब श्रीआचार्यजी आप कहें ॥ जो तूँ अपनी स्त्रीसों पूछि आउ ॥ जो वाकों काहू बातको मनोरथ हे ॥ तब वानें जायकें अपनी स्त्रीसों पूछी ॥ जो तेरे काहू बातको मनोरथ हे ॥ तब स्त्रीनें कही ॥ जो ओर तो कछू मनोरथ रह्यो नॉही ॥ एक पुत्रको मनोरथ हे ॥ तातें एक पुत्र होयतो भलो ॥ तब यह बात दामोदरदासनें श्रीआचार्यजी महाप्रभुनसों कही ॥ तब आप श्रीमुखतें आज्ञा किये ॥ जो तेरें पुत्र होइगो ॥ पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आपतो श्रीगिरिराज श्रीनाथजीके दर्शनकूँ पधारे ॥ तहॉ श्रीगोवर्धननाथजीके दर्शन किये ॥ यहॉ कंनोजमें दामोदरदासके घर जो पूर्व गर्भकी स्थिति भई हती ॥ तहॉ केतेक दिनमें वा बाखरिमें एक डॉकोतिया आयो ॥ ताकों सब स्मार्त्तनकी स्त्री प्रश्न पूछन लागीं ॥ तामेंतें काहू स्त्रीनें दामोदरदासकी स्त्रीसों हू कही ॥ जो असुकी तूंहू पूछि देखि ॥ जो तोकों बेटा होयगो के बेटी होयगी ॥ तब वाकी एक लोंडीनें जायके वा डॉकोतियासों पूछी ॥ जो मेरी मालकिनकों गर्भ रह्यो हे ॥ ताकों बेटा होयगो के बेटी होयगी ॥ तब वा डॉकोतियाने कह्यो जो वाकों बेटा होयगो ॥ तापाछें केतेक दिनमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप कंनोज पधारे ॥ तब दामोदरदास आपके चरण छूवन लागे ॥ तब श्रीआचार्यजी आप दामोदरदाससों कहें ॥ जो तूँ मोकों छूवे मति ॥ कारण तोकूँ अन्याश्रय भयो हे ॥ तब दामोदरदासने कह्यो ॥ जो महाराज मेंतो कछू जानत नाहीं ॥ तब आप कहें ॥ जो तूँ अपनी

स्त्रीसों पूछि आउ ॥ वाकों अन्याश्रय भयो हे ॥ तब दामोदरदासनें घरमें जायकें अपनी स्त्रीसों पूछी ॥ जो तेनें कछू अन्याश्रय कियो हे ॥ तब स्त्रीनें जो प्रकार भयो हतो ॥ सो सब कह्यो ॥ तब सब हकीगत दामोदरदासनें आयकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों कही ॥ तब आपनें दामोदरदाससों कही ॥ जो तोकों पुत्रतो होयगो परि म्लेंछ होयगो ॥ तापाछें श्रीआचार्यजी आपतो अडेल पधारे ॥ तब यह सब वात दामोदरदासकी स्त्रीनें सुनीं ॥ वा दिनतें वा दामोदरदासकी स्त्री श्रीठाकुरजीके पात्र तथा सामुग्री आपु स्पर्श न करती ॥ ओर कहती जो मेरे पेटमें म्लेंछ हे ॥ तातें में श्रीठाकुरजीकी सामुग्री तथा पात्र केसें छुओं ॥ याभाँतिसों वो अलग रहे ॥ पाछें जब वाके प्रसूतिके दिन आये ॥ तब वानें अपनी महतारीसों कही ॥ जो मेरे पुत्र होयसो होतमात्र तत्काल अपनें घर ले जेयो ॥ में वाको मुख न देखोंगी ॥ कारण जो वाको मोहोडो हम देखेंगे तो हमारो अनिष्ट होयगो ॥ तातें हम वाकों मोहोडो न देखें एसो उपाय करियो ॥ पाछें जब वो प्रसूत भइ ॥ तब वाकी महतारीनें त्योंहीं कर्यो ॥ ओर जो पुत्र भयो सो वाने ले जायकें तत्काल धाइकों दियो ॥ ❀ (प्रसंग ९ मो) ❀ ॥ बहुरि केतेकदिन पाछें जब दामोदरदासकी देह छूटी ॥ तब स्त्रीनें विनको कलेवर घरमें छिपाई राख्यो ॥ ओर वैष्णवनसों कह्यो जो तुम अडेलको एक नाव भाडे करीलावो ॥ तब वैष्णव एक नाव भाडे करिलाये ॥ ता नावमें श्रीठाकुरजीकी झाँपी तथा घरमेंकी सब सामुग्री त्रिणपर्यंत जो कछू हतो सो सब वा नावमें धरवायो ॥ तापाछें वानें वैष्णवनसों कह्यो ॥ जो यह नाव अडेल लेजायकें सब वस्तु श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके मंदिरमें पोंहोंचावो ॥ तब वे वैष्णव नाव लेकें चले ॥ सो

जब वो नाव तीस चालीस कोसपे गई ॥ तापाछें वा स्त्रीनें प्रकट कियो ॥ जो मेरेपति दामोदरदासकी देह छूटी हे ॥ तब सब वैष्णवननें आयकें संस्कार कियो ॥ पाछें प्रथम जो वो दामोदरदासको बेटा जन्म्यो हतो ॥ सो तुरक भयो हतो वो आयो ॥ तानें आयकें देखी तो घरमें कछू नाहीं ॥ जलको करुवा मात्र भर्‍यो हे ॥ सो देखिकें वो मूँड पटकि रह्यो ॥ तापाछें दामोदरदासको सुसर आयो ॥ तानें अपनी बेटीसों कह्यो ॥ जो बेटी तेनें कछू घरमें राख्यो नाहीं ॥ तातें अब तूं कहा खायगी ॥ तब वानें कही ॥ जो तुम देउगे सो खाऊँगी ॥ क्षत्रीय लोगनमें या समें कछू सगे सोदरे देत हें ॥ एसी ज्ञातिकी रीति हे ॥ तापाछें वा दिनतें दामोदरदासकी स्त्रीनें जलपॉन हू न कर्‍यो ॥ ताकी हू थोरेही दिनमें देह छूटी ॥ तातें दामोदरदास ओर वाकी स्त्री इन दोउनको लीलामें संग भयो ॥ एसी वो स्त्री हू भगवदीय ही ॥ सो केतेक दिन पाछें काहू वैष्णवनें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों यह बात कही ॥ तब आप श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें कह्यो ॥ जो इनकों योंहीं चाहिये ॥ वे स्त्रीपुरुष दोऊ एसेई भगवदीय हे ॥ उनकी सराहनाँ श्रीआचार्यजी आप अपनें श्रीमुखतें सदा करते ॥ सो वे दामोदरदाससंभरवारेक्षत्री श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक एसे परमकृपापात्र भगवदीय हे ॥ तातें इनकी वार्त्ताको पार नाहीं ॥ सो कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव ३ रो ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (वार्ता ४ थी. वैष्णव ४ थो.) ❀

❀ (अथ पद्मनाभदासकंनोजियाब्राह्मण तिनकी वार्ता) ❀

एक समय श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप कंनोज पधारे ॥ तब तहाँ पद्मनाभदास आपके दर्शनकों आये ॥ तब पद्मनाभदासनें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके श्रीमुखतें भागवतप्रसंग सुन्यो ॥ तब

वानें जान्यो ॥ जो यतो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तम हें ॥ प्रथम वे पद्मनाभदास कंनोजमें अपने घर उँचे व्यासासनपे वेठिकें कथा कहत हते ॥ तहाँ श्रोता वहुत कथा सुनिवेकों आवते ॥ तातें काहूके घर जानों न परतो ॥ ओर वृति घरवेठे चली आवती ॥ याभाँतिसों वे पद्मनाभदास तहाँ रहते ॥ सो जव विननें श्रीआचार्यजीको प्रतापवल देख्यो ॥ तव वे आपकी शरणि आये ॥ ओर नाँम पायो ॥ पाछें विनकों श्रीआचार्यजीनें समर्पण करवायो ॥ तापाछें उत्थापनके समें दामोदरदाससंभरवारेके घर श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप विराजे हते ॥ तहाँहीं पोथी खोली ॥ तव दामोदरदाससंभरवारे हु वेठे हते ॥ तेसेंमे पद्मनाभदासहू अपनें घरमें आये ॥ सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों दंडवत करिकें वेठ ॥ तव आप श्रीआचार्यजीनें निवंधके श्लोक कहे ॥ सो श्लोक ॥ (पठनीयं प्रयत्नेन सर्वहेतुविवर्जितं ॥ वृत्त्यर्थं नैव युंजीत प्राणैः कंठगतैरपि ॥ १ ॥ तदभावे यथैव स्यात्तथा निर्वाहमाचरेत् ॥ त्रयाणां येनकेनापी भजकृष्णमवाप्नुयात् ॥ २ ॥) ये श्लोक पद्मनाभदासजीनें सुने ॥ पाछें आपनें दशमस्कंधकी कथा कही ॥ सो हू वानें सुनीं ॥ सो जव आप श्रीआचार्यजी कथा कही-चूके ॥ तव पद्मनाभदासनें जलकी अंजुली भरिकें श्रीआचार्यजीके आगें संकल्प कियो ॥ जो आजते कथा कहिकें वृति न करूँगो ॥ तव श्रीआचार्यजी आप श्रीमुखतें कहें ॥ जो तुमारी वृत्ति हे ॥ तुम ब्राह्मण हो ॥ तो ओर महाभारत इत्यादिक तो कहनें ॥ तव पद्मनाभदासनें कह्यो ॥ जो महाराज अवतो संकल्प कियो सो कियो ॥ तातें कछू न कहूँगो ॥ तव आपनें कह्यो जो तुमतो गृहस्थ हो ॥ तातें कोन भाँतिसों निर्वाह करोगे ॥ तव पद्मनाभदासनें कह्यो ॥ जो महाराज जिजमाँननके घरतें वृत्तिकरि लाउँगो ॥ तातें निर्वाह करूँगो ॥ तापाछें वे पद्मना-

भदास जिजमाँननके घर वृत्यर्थ गये ॥ तिननें बहुत आदर कियो ॥ तब हू पद्मनाभदासके मनमें ग्लानी आई ॥ जो पहलेंतो मैंनें कबहूँ भिक्षा करी नाहीं ॥ ओर अब वैष्णव भये पाछें भिक्षा माँगन निकसे ॥ सो उचित नाहीं ॥ पहलें तो केवल उपवीतही गरेमें हतो ॥ तातें उचितही जो भिक्षा करें ॥ परि अबतो गरेमें मालाहू पेहेरी हे ॥ ताकों तो अब यह भिक्षावृत्ति उचित नाहीं ॥ तब फेरी विननें संकल्प कियो ॥ जो अब भिक्षावृतिहू करिकें निर्वाह न करूँगो ॥ तब फेरि श्रीआचार्यजी पूंछें ॥ जो अब निर्वाह कोंनभाँति करोगे ॥ तब पद्मनाभदासनें कही ॥ जो महाराज वैशवृत्ति करिकें निर्वाह करूँगो ॥ पाछें वे कोडी वेचते ॥ लकडी लेआवते ॥ परि ओर बात न विचारी ॥ याभाँति देहावसाँन पर्यंत निर्वाह कियो ॥ एसे वे टेकी हते ॥ ❀ (प्रसंग २ रो) ❀ ॥ ओर एक समें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप प्रयाग पधारे हते ॥ तब पद्मनाभदासहू साथ हते ॥ सो रात्रि प्रहर एक गई हती ॥ तब आपनें पद्मनाभदासकों आज्ञा दीनीं ॥ जो श्रीअक्काजी पल्लेपार हें ॥ सो तहाँतें यहाँ पधराय लावो ॥ सो इतनों सुनिकें पद्मनाभदास ऊठि चले ॥ तब वहाँ जो पाँच सात वैष्णव आपके साथ हते ॥ सो तब अपुसमें कहनलागे ॥ जो ब्राह्मणतो बावरो भयो हे ॥ या समें कहाँ जायगो ॥ नाव तो सब बंधी हें ॥ ओर घाटवारेहू सब अपनें अपनें घर गये हें ॥ तातें यह बिरियाँ पार जायवेकी नाहीं ॥ परि याकों तो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी आज्ञाको विश्वास हे ॥ जो काँम अवश्य होयगो ॥ तब पद्मनाभदास घाट उपर आये ॥ सो इत उत देखन लागे ॥ तब इतनेंमें अकस्मात एक लरिका वर्ष दशकों डोंगी लेकें आयो ॥ वानें पद्मनाभदाससों पूछी जो ॥ तुम पार जाओगे ॥ तब विननें कह्यो जो ॥ हाँ हाँ जाउँगो ॥ तब वा मल्लाहनें पद्म-

नाभदासकों डोंगीमें वेठारिकें पार उतारिदीनों ओर वा मल्लाहनें पूछी ॥ जो तुम फेरि कव आवोगे ॥ तव पद्मनाभदासनें कह्यो ॥ जो में घडी दोयमें आऊँगो ॥ तव वा लरिकानें कह्यो ॥ जो में डोंगी यहाँही राखत हों ॥ तूम वेगी ऐयो ॥ तापाछें पद्मनाभदास अडेलमें जायकें श्रीअक्काजीकों श्रीआचार्यजीकी आज्ञा कहिकें पध-राय लाये ॥ तव वा डोंगीमें वेठारिकें वो मल्लाह विनकों यापार ले आयो ॥ तव वे पाछे फिरि देखें तो वो डोंगीहू नाहीं ॥ ओर वह लरिकाहू नाहीं ॥ पाछें वे पद्मनाभदास श्रीअक्काजीकों पध-रायकें वाहि समें घर आये ॥ तव श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप पद्मनाभदाससों कहें ॥ जो अव तुम जाइकें सोइरहो ॥ तव जहाँ ओर वैष्णव सोये हते ॥ तहाँ वे पद्मनाभदास आये ॥ तव वे वैष्णव पूछनलागे ॥ जो तुम कहा करिआये ॥ तव विननें सव समाचार कहे ॥ सो सुनिकें विन वैष्णवननें कह्यो ॥ जो तेंने या समें श्रीठाकुरजीकों श्रम वहुत करवायो ॥ पांछें विन वैष्णवननें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों विनती करी ॥ जो महा-राज पद्मनाभदासनें श्रीठाकुरजीकों श्रम वहुत करवायो ॥ तव श्रीआचार्यजी आप कहें ॥ जो यह जो कछू भयो हे ॥ सो सव मेरी इच्छातें भयो हे ॥ जाते तुम इन पद्मनाभदाससों कछू मति कहो ॥ ❀ (प्रसंग ३ रो) ❀ ॥ वहुरि एक समें श्री-आचार्यजीमहाप्रभु श्रीगोकुलतें अडेलकों जातहते ॥ तव एक व्योपारी क्षत्री कछू वस्तु लेकें साथमें चल्यो ॥ सो वह तो कंनोजके उरेमें रह्यो ॥ ओर श्रीआचार्यजी आपतो कंनोजके भीतर पधारे ॥ पाछें ता व्योपारीके उपर चोर आय पडे ॥ तिननें वस्तु सव लूटि लीनीं ॥ ओर जो श्रीआचार्यजीमहा-प्रभु आप आगें गॉममें पधारे हते ॥ सो तो दामोदरदाससंभर-वारेके घर जाइ उतरे हे ॥ तहाँ रसोई करि श्रीठाकुरजीकों

भोग समर्प्यो ॥ इतनेंहीमें वो व्योपारी पाछेंतें रोवत पीटत श्रीआचार्यजीको खोज करत विन दामोदरदासके घर आयो ॥ तानें आयकें पूछी ॥ जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु कहाँ विराजत हें ॥ तव पद्मनाभदासनें कह्यो ॥ जो वे तो आप भोजन करत होंयगे ॥ तव वा व्योपारीनें कह्यो ॥ जो महाराज हमारो तो सव माल लुटि गयो ॥ ओर श्रीआचार्यजी आप तो भोजन करत हें ॥ तव पद्मनाभदासनें मनमें विचारी ॥ जो यह वात जो आप श्रीआचार्यजी सुनेंगे ॥ तो भोजन न करेंगे ॥ तातें वे सुनें नहीं ताके लियें ॥ विन पद्मनाभदासनें वा व्योपारीको हाथ पकरिकें वाहिर ले आये ॥ ओर पूछी जो साँच कहो ॥ जो तुमारो माल कितनों गयो हे ॥ तव वा व्योपारीनें वतायो ॥ जो मेरो इतनों माल गयो हे ॥ तव पद्मनाभदास वाकों एक साहकी दुकानपे ले गये ॥ ता साहनें पद्मनाभदासकी वहुत आगता स्वागता करी ॥ पाछें वा साहने कह्यो ॥ जो आज्ञा करो केसें पधारे हो ॥ तव पद्मनाभदासनें कह्यो ॥ जो या व्योपारीकों इतनों द्रव्य दीयो चहिये ॥ ता द्रव्यको खतपत्र व्याज हम लिखि देइँगे ॥ तव वा साहनें कही ॥ जो तुमकों जितनो द्रव्य चहिये तितनों लेउ ॥ खतपत्रको कहा काँम हे ॥ तव पद्मनाभदासनें कह्यो ॥ जो पहलें तो खतपत्र लिखूँगो ॥ पाछें द्रव्य लेउँगो ॥ विनाँ खतपत्र लिखे तो में द्रव्य लेउँगो नाहीं ॥ तव साहने कही ॥ जो तुमारी इच्छा ॥ पाछें पद्मनाभदासनें खतपत्र लिखि तामें अपनो धर्म गेहेनें लिखि दीनों ॥ ओर जो द्रव्य लीनों ॥ सो वा व्योपारीकों दियो ॥ तव वो व्योपारी तो द्रव्य लेकें अपनें घरकों गयो ॥ पाछें पद्मनाभदास अपनें घर आये ॥ तव विनसों श्रीआचार्यजी आप पूछें ॥ जो तूम कहाँ गये हते ॥ तव पद्मनाभदासनें

कह्यो ॥ जो महाराज एक कॉम हो ॥ तहाँ गयो हतो ॥ परि श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आपतो ईश्वर हें ॥ सो तत्काल सब बात जाँनिगये ॥ तब पद्मनाभदाससों आप कहें ॥ जो हमकूं वा ब्योपारीसों कहा संबंध हतो ॥ जो वाकूं हम मालको द्रव्य देत ॥ वह रस्तामें पाछें रहगयो ॥ ताकों हम कहा करें ॥ परि- तेंनें यह बुरी करी ॥ जो रिण काढिकें वाकों पैसा दियो ॥ तब पद्मनाभदासनें कह्यो ॥ जो महाराज सोतो बात साँचि ॥ परि वह ब्योपारी जो पुकारतो तो ॥ आप भोजन घडीदोय अबेरे करते ॥ तो मेरो जन्म बिगाडि जातो ॥ रिण तो कालि पाछो देउँगो ॥ यह कितनीक बात हे ॥ तब श्रीआचार्यजी आपनें कह्यो ॥ जो तेंने धर्म गहने क्यों लिखि दियो ॥ तब पद्मनाभदासनें कह्यो ॥ जो महाराज एसे गाढे लिखि दिये विनू द्रव्य दियो न जाय ॥ पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आपतो अडेल पधारे ॥ पाछें पद्मनाभदास एक राजा हतो ॥ ताके पास गये ॥ तब वा राजानें बहुत आदरसन्मॉन कियो ॥ ओर कह्यो ॥ जो मोकों कृपा करिकें कथा सुनावो ॥ तब पद्मनाभ- दासनें कह्यो ॥ जो राजा में श्रीभागवत तो नहीं कहूँगो ॥ कहो- तो महाभारत सुनाउँ ॥ तब राजानें कह्यो ॥ जो भलें महाभा- रतही सुनावो ॥ तब पद्मनाभदास महाभारत कहनलागे ॥ तामें जब युद्धको प्रसंग आयो ॥ तब पद्मनाभदासने सबनके हथियार छुडवाय धरे ॥ तापाछें आप कथा कहनलागे ॥ सो कथा कहतमें वीररस उपज्यो ॥ सो आपुसमें सब श्रोता लात मुक्कीनसो लडनलागे ॥ पाछें केतेक दिनमें जब महाभारत समाप्त भयो ॥ तब राजा बहुत दक्षिणा देनलाग्यो ॥ तब पद्मनाभदासने कह्यो ॥ जो मेंतो द्रव्य नाहीं लेउँगो ॥ परंतु मेरे वा साहको जो मूल व्याज सहित जितनो द्रव्य देनो हे ॥

तितनों आप वाकों परभारो दे भेजो ॥ ओर खत फरवाय मगावो ॥ सो सुनिकें वा राजानें वेसेंइ करवायो ॥ पाछें पद्मनाभदास अपनें घर गये ॥ ❀ (प्रसंग ४ थो) ❀ अब पद्मनाभदासके एक वेटी कुँवारी हती ॥ ताके निमित्त एक वर श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको सेवक चहियत हतो ॥ सो वे पद्मनाभदास वैष्णवनसों पूछन लागे ॥ तब वैष्णवननें कह्यो ॥ जो एक वर श्रीआचार्यजीको सेवक हे ॥ परि वह सनोडिया ब्राह्मण हे ॥ तब पद्मनाभदासको लौकिक व्यवहारकी सुधि न आई ॥ तातें वैष्णवननें कह्यो ॥ जो भलें वैष्णव हे वाकों कन्या दीजिये ॥ तब पद्मनाभदासनें कह्यो ॥ जो भलो ॥ तब पद्मनाभदासनें वा वैष्णवकों तिलक कियो ॥ विवाह सही करि अपनें घर आये ॥ तब बडीवेटी एक तुलसाँ करकें हती ॥ तासों कह्यो ॥ जो तेरी बेहेनको विवाह असुके वैष्णवसों सही करि आयो हूँ ॥ तब तुलसाँनें कह्यो ॥ जो वहतो सनोडिया ब्राह्मण हे ॥ ओर आपन तो कंजोनिया ब्राह्मण हें ॥ तातें एसें केसें व्याह होय ॥ तब पद्मनाभदासनें कही ॥ जो अबतो भई सो भई ॥ वो ब्राह्मण ओर वैष्णव तो हे ॥ देश जुदो भयोतो कहा भयो ॥ तामें श्रीआचार्यजीको सेवक हे ॥ तब तुलसाँनें कही ॥ जो सगाई फेरो ॥ तब पद्मनाभदानें कह्यो ॥ जो छुरी लाओ तासूं अँगुठा काटों ॥ जा अँगूठासुं वाकों तिलक कियो हे ॥ तब तुलसाँनें कह्यो ॥ जो अँगूठा केसें काटिये ॥ तब पद्मनाभदासनें कह्यो ॥ जो सगाई केसें फेरिये ॥ अँगूठा कटे तो सगाई फिरे ॥ पाछें पद्मनाभदासनें वा सनोडिआ ब्राह्मणसुं अपनी बेटिको विवाह करिदीनों ॥ जातिके सब जखमारि रहे ॥ सो वैष्णवके कहेको एसो विश्वास ॥ जो सगाई न फेरी ॥ ❀ (प्रसंग ५ मो) ❀ अब एक क्षत्राँणी पद्म-

नाभदासके घर नित्य आवती ॥ तब पद्मनाभदासकी वेटी ॥ तुलसाँनें एकदिन वासों कह्यो ॥ जो क्षत्राणी तूँ नित्य क्यों आवत हे ॥ तब वा क्षत्राणीनें कह्यो ॥ जो तुमारे पिता वडे महापुरुष हें ॥ ओर भगवदीय हें ॥ तातें आवत हों ॥ कारण जो मेरे संतती होत नाहीं ॥ सो तुम मेरी विनती पद्मनाभदाससों करियो ॥ जो मोकों कछू उपाव बतावें ॥ तापाछें एकदिन तुलसाँनें पद्मनाभदाससों कही ॥ जो वावा या क्षत्राणीकें संतति होत नाहीं ॥ तातें तुमसों वीनती करति हे ॥ जो कछु उपाय वतावे ॥ तब पद्मनाभदासनें तुलसाँसों कह्यो ॥ जो जल लाउ ॥ तब तुलसाँनें जल लायकें आगे धर्यो ॥ तब पद्मनाभदास वह जल लेकें अपनो चरणोदक करी वा शत्राँणीकों दियो ॥ ओर कह्यो जो यह जल पीजा ॥ तातें जा तेरे पुत्र होइगो ॥ ताकों नाँम तूँ मथुराँदास धरियो ॥ तापाछें वाके एक पुत्र भयो ॥ ❀ (प्रसंग ६ ठो) ❀ ॥ ओर एकसमे वडे रामदासजी अपनें सेव्य श्रीठाकुरजीकों पद्मनाभदासके घर पधरायकें आप श्रीनाथजीकी सेवा करनलागे ॥ सो वे श्रीनानाथजीके भीतरिया भये ॥ तातें पद्मनाभदास विनके श्रीठाकुरजीकी सेवा करनलागे ॥ सो कितनेक दिन पाछें तहाँ मुगलकी फोज आई ॥ सो वानें गाँम लूट्यो ॥ तब विन पद्मनाभदासकोहू घर लूट्यो ॥ तामेंतें विन श्रीठाकुरजीकों एक मुगल ले गयो ॥ तब पद्मनाभदासनें अपनी वेटी तुलसाँसों कह्यो ॥ जो तूँ घरहीमें रहीओ ॥ ओर में जातहों ॥ सो श्रीठाकुरजी मिलेंगे तबही आवोंगो ॥ एसें कहिकें वे मुगलके पीछें गये ॥ सो दिन सातलों वा मुगलके साथ रहे ॥ जल पाँन हू न कर्यो ॥ तब आठमें दिन वा मुगलसों मुगलानीनें कह्यो ॥ जो या ब्राह्मणकों सातदिन भये ॥ अन्न जल छोडे ॥ सो जो

यह मरेगो ॥ तो तुमारे माथें हत्या चढेगी ॥ तातें याको देवता हे ॥ सो देदेऊ ॥ तब वा मुगलनें वाके श्रीठाकुरजी वा पद्मनाभ दासकों दिये ॥ सो लेकें पद्मनाभदास अपनें घर आए ॥ तापाछे अपनी बेटी तुलसाँसों कही ॥ जो तुँ रसोइ करि ॥ पाछे आप स्नान करि श्रीठाकुरजीकों पंचामृतस्नान करवायो ॥ अंगवस्त्र करि शृंगार कर्यो ॥ पाछें भोग समर्प्यो ॥ सो समयानुसार भोग सराय ॥ श्रीठाकुरजीकों अनोसरकरी पाछें वैष्णवनकों महाप्रसाद लिवायो ॥ तापाछें आप सहकुटुंब महाप्रसाद लियो ॥ सो जादिन कंनोजमें श्रीठाकुरजी मुगलके हाथ परे ॥ तादिनही वडे रामदासजीनेंहू यह वात जानीं ॥ सो वादिनतें विननेंहू सात दिनलों प्रसाद न लीनों ॥ परि श्रीनाथजीकी सेवा तो सावधानतासों करत रहे ॥ परि मनमें बहुत दुःख पाये ॥ सो यह वात पद्मनाभदासजीनें अपनें घर बेठे जानीं ॥ तब पद्मनाभदास श्रीनाथजीके दर्शनकों तथा रामदासजीकों मिलिवेंकों श्रीगिरिराज आये ॥ तहाँ श्रीनाथजीको दर्शन कियो ॥ पाछें रामदासजीसों मिले ॥ तब विनसों पद्मनाभदासनें कह्यो ॥ जों होंतो दुःख पायोहों सो तो न्याय हे ॥ जो तुम मेरे माथें सेवा पधराय आये हे ॥ परि तुमनें सातदिनलों प्रसाद न लिनों ॥ सो काहेतें ॥ तब रामदासजीनें कह्यो ॥ जो तुम कहतहो सोतो साँच हे ॥ परि मेनेंहू तो बहुतदिन सेवा करीहे ॥ तातें इतनों संबंधतो चहिये ॥ पाछें कितनेकदिन विनकेही घर रहिकें पद्मनाभदास श्रीनाथजीसों तथा रामदासजीसों बिदा होयकें अपनेघर कंनोज आये ॥ पाछें फेरि सेवा करनलागे ॥ ❀ (प्रसंग ७ मो) ❀ ॥ बहुरि एकसमें पद्मनाभदास अपनें सेव्य श्रीठाकुरजी श्रीमथुरानाथजी ओर अपनों सब कुटुंब लेकें अडेल आय रहे ॥ परि द्रव्यको संकोच बहुत हतो ॥ तातें श्रीठाकुरजीकों भोग समर्पें ॥

सो छोला तलि तलिकें समर्पें ॥ सो जो छोला आछी रीतिसों बीनिकें भींजोयकें राखें ॥ सो दूसरेदिन नीकिभाँतिसों तलिकें श्रीठाकुरजीकों सब सामुग्रीनके नॉम लेकें वे छोलानकी एक एक मुट्ठी परोसते जाँय ॥ सों परोसें तब याभाँति सों परोसें ॥ एक मुट्ठी भरिकें धरें ॥ ओर कंहें जो यह भात हे ॥ एकमुट्ठी भरिकें धरें ॥ ओर कंहे ॥ जो यह दारि हे ॥ जितनें साग सलोनॉ होंय ॥ तितनेंनको नाँम लेकें मुट्ठी मुट्ठी छोला समर्पें ॥ सो याभाँतिसों वे नित्य करते ॥ सो श्रीठाकुरजी वडे प्रसंनतासों त्योंहीं आरोगते ॥ पाछें एक वैष्णवनें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों कह्यो ॥ जो महाराज पद्मनाभदास या भॉतिसों छोला नित्य समर्पत हें ॥ तब एकदिन श्रीआचार्यजीमहाप्रभु भोग समर्पिवेकी विरियाँ पद्मनाभदासके घर पधारे ॥ तब पद्मनाभदासनें आपकूं आसनपे पधराय ॥ तब जेसें वे नित्य श्रीठाकुरजीकों भोग समर्पते ॥ त्योंहीं विननें भोग समर्प्यो हो ॥ सो भोग सरायो ॥ सो देखिकें श्रीआचार्यजीनें पद्मनाभदाससों पूछी ॥ जो ये ढेरीढेरीसी कहा हें ॥ तब पद्मनाभदासनें कह्यो ॥ जो महाराज यह खीरि हे ॥ यह भात हे ॥ यह दारि हे ॥ यह शिखरन हे ॥ यह वडा हें ॥ ये रोटी हें ॥ यह साक हे ॥ असें कहिकें सब सामुग्रीनको नॉम लेकें छोलानकी ढेरी आपकों बतॉई ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको हृदो भरि आयो ॥ ओर जान्यो जो द्रव्यके संकोचके लिये ए यों करतहें ॥ पाछें श्रीआचार्यजी आप अपनें घर पधारे ॥ तब श्रीइलंमॉगारूजीसों कह्यो ॥ जो पद्मनाभदासके घर नित्य रसोईको सामान अपनें घरतें आप पठावत रहियो ॥ सो दुसरेदिन पद्मनाभदासकेघर श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके कहेतें श्रीइलंमॉगारूजीनें सीधो सामुग्री अपनें घरतें पठाई ॥ तब पद्मनाभदाससों वाकी बेटीतुलसाँनें कह्यो ॥

जो आज श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके यहाँतें सीधोसामुग्री आईहे ॥ तब वानें कह्यो ॥ जो वेतो यहाँतें हमकों काढनहारे भयेहें ॥ पाछें पद्मनाभदासनें दिन द्वेचारिमें खरचकी व्यवस्था करि अपनें सेव्य ठाकुरजी श्रीमथुराँनाथजीसों पूछी ॥ जो महाराज आपको मन होईतो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके घर आपकों पधराउँ ॥ तहाँ सकल सामुग्री सिद्धि हें ॥ तब श्रीमथुराँनाथजीनें कह्यो ॥ जो मोकों तेरोई कियो भावत हे ॥ तातें तेरे यहा वोहोत प्रसंन हों ॥ तूं कछू संकोच मतिकरे ॥ तब पद्मनाभदासनें एक नाव भाडे कीनीं ॥ तामें श्रीमथुराँनाथजीकों पधराये ॥ ओर अपनें सब कुटुंबकों नावमें वेठायकें आय श्रीआचार्यजीपास विदा होइवे आये ॥ तब सीधोसामुग्री जो दिन द्वेचारि आपके यहातें आयो हतो ॥ सो सब भंडारमें फेरिदेकें श्रीआचार्यजी आपके पास आय दंडवतकरी ओर कही ॥ जो महाराज अब हम चलतहें ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें पूछी जो तुमारे श्रीठाकुरजी कहाँ हें ॥ तब पद्मनाभदासनें विनतीकरी ॥ जो महाराज श्रीठाकुरजी तो नावमें वेठे हें ॥ विनकों नावमें पधरायकें में आपके दर्शनकों तथा विदा होंनकों आयो हों ॥ तब आपनें संकोच पायकें वा पद्मनाभदासकों विदा कियो ॥ तापाछें भंडारीनें आइकें आपसों कह्यो ॥ जो महाराज पद्मनाभदासके घर सीधोसामुग्री दिन द्वेचारि पठाई हती ॥ सो वो फेरि दे गयो हे ॥ तब श्रीआचार्यजीनें कह्यो ॥ जो सीधो पठायो तातेंहीं पद्मनाभदास गयो ॥ नाँतर न जातो ॥ यह आपनें श्रीमुखतें कही ॥ सो विन पद्मनाभदासकी वात सर्वोत्तमकी टीकामें श्रीगोकुलनाथजी विस्तारपूर्वक लिखे हें ॥ जो पद्मनाभदास जेसे विरला क्रोडनमें दुर्लभ हें ॥ सो वे पद्मनाभदास श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक, एसे परमकृपापात्र भग-

वदीय हे ॥ तातें इनकी वार्ताको पार नाँहीं ॥ सो कहाँ ताँई लिखिये ॥ वैष्णव ४ थो ॥ ५ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ५ ॥

❀ (वार्ता ५ मी. वैष्णव ५ मी.) ❀

❀ (अथ पद्मनाभदासकी बेटी तुलसाँ ताकी वार्ता) ❀

एकसमें एकवैष्णव श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको सेवक तुलसाँके घर आयो ॥ सो वानें श्रीठाकुरजीके दर्शन किये ॥ तब राजभोग सरे हते ॥ तब तुलसाँनें वा वैष्णवसों कह्यो ॥ जो उठो स्नान करो महाप्रसाद लेउ ॥ तब उन वैष्णवनें कह्यो ॥ जो हों घर जायकें स्नान करूँगो ॥ तब तुलसाँ चूपकरिरहि ॥ पाछें वह वैष्णव ऊठिकें अपने घर गयो ॥ तब तुलसाँके मनमें बहुत खेद भयो ॥ जो मेरे घरतें वैष्णव भूखो गयो ॥ बहुरि मनमें आई जो ज्ञातिब्योहारके लियें सखडी न लीनीहोइगी तो भलो ॥ परि सकारें विनकों पूरी प्रसाद लिवाउँगी ॥ एसें विचारिकें रात्रिकों मेदा छाँनि सिद्धि करि राख्यो तापाछें सोई ॥ तब वा रात्रिकों पद्मनाभदासके सेव्य ठाकुरजी श्रीमथुराँनाथजीनें स्वप्नमें तुलसाँसो जतायो ॥ जो सवारें वा वैष्णवकों महाप्रसाद लिवाईयो ॥ वह वैष्णव अपनें घर प्रसाद न लेईगो ॥ तब प्रातःकाल ऊठिकें तुलसाँनें स्नान करि पूरि सिद्धि करीं ॥ तापाछें श्रीठाकुरजीकों जगाये ॥ ओर सेवा करनलागी ॥ इतनेंमें वो वैष्णव सवारें बेगो आयो ॥ सो वाहूकों रात्रिके स्वप्नमें श्री-मथुराँनाथजीनें कह्यो हतो ॥ जो तेनें कालि तुलसाँके घर प्रसाद क्यों न लीनों ॥ अब आज महाप्रसाद अवश्य लीजियो ॥ तातें वह वैष्णव श्रीठाकुरजीके दर्शन करिकें बेठिरह्यो ॥ ता-समें तुलसाँ श्रीठाकुरजीकों भोग समर्पिकें बाहिर आई ॥ तब वा वैष्णवसों कह्यो ॥ जो उठो स्नान करो स्मरण करो ॥ तब वा वैष्णवनें कही ॥ जो भलो ॥ पाछें वा वैष्णवनें स्नान करि

तिलक मुद्रा करि स्मरण कीनों ॥ इतनें राजभोग सरे ॥ पाछें तुलसाँ श्रीठाकुरजीकों अनोसर कराय बाहिर आई ॥ तब पुरि बूरा सधाँनों वा वैष्णवके आगें धर्यो ॥ ओर कह्यो जो प्रसाद लेउ ॥ तब वा वैष्णवनें कह्यो ॥ जो में यह तो नाहीं लेउँगो ॥ सखडीमहाप्रसाद लेउँगो ॥ तब तुलसाँनें कह्यो ॥ जो कछू संकोच मतिकरो ॥ यहतो ज्ञातिको ब्योहार हे ॥ तब वा वैष्णवनें कह्यो ॥ जो पहलें तो मनमें एसीहि आई हती ॥ परि अवतो भगवदाज्ञाभई हे ॥ तातें अवतो सखडी प्रसाद लेउँगो ॥ पाछें वा वैष्णवनें सखडी अनसखडी दोनों महाप्रसाद लिये ॥ तब दोऊजने अत्यंत प्रसंन्न भये ॥ ❀ (प्रसंग २ रो) ❀॥ वहुरि एकसमें वा तुलसाँके घर श्रीगुसाँईजी आप पधारे ॥ तब तुलसाँनें वहुत भली भाँतिसों सेवा कीनी ॥ तातें आप वहुत प्रसन्न भये ॥ सो तहाँ आप भोजन करिकें पोढे हते ॥ तब तुलसाँसों भगवद्वार्ता करत अति प्रसंनतामें आपने कह्यो ॥ जो पद्मनाभदासकी संतति एसीही चहिये ॥ पाछें आपनें तुलसाँसों पूछी ॥ जो तोकूं श्रीठाकुरजी सानुभाव जतावत हे ॥ तब तुलसाँनें कह्यो जो महाराज अब तो पेट भरी खाईयतु हें ॥ ओर नींद भरि सोईयतु हें ॥ ओर श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके ग्रंथ पाठ करियतु हें ॥ तब श्रीगुसाँईजी यह सुनिकें आप वापे वोहोत प्रसन्न भये ॥ ओर वहाँतें पधारे ॥ सो वह तुलसाँ श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी एसी परम कृपापात्र भगवदीय सेवकही ॥ तातें तुलसाँके ऊपर श्रीगुसाँईजी आप सदा प्रसन्न रहते ॥ तातें इनकी वार्ता कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव ५ मी ॥

❀ (वार्ता ६ ठी. वैष्णव ६ ठी.) ❀

❀ (अथ पद्मनाभदासके वेटाकी वहू पार्वती ताकी वार्ता) ❀

सो वो पार्वती अपनें श्रीठाकुरजीकी सेवा नींकीभाँतिसों करती ॥

ताकों पुरुषोत्तमदासमेहरा वैष्णव नीकीभाँतिसों जाँनते ॥ जब वे कंनोज जाते ॥ तब वा पार्वतीके घर उतरते ॥ सो केतकदिन वा पार्वतीके हात पाँव स्वेत भये ॥ तातें वाकों श्रीठाकुरजीकी रसोई करत तथा स्पर्श करत बहुत ग्लानि आवती ॥ तब वानें पुरुषोत्तमदासमेहराकों पत्र लिख्यो ॥ जो मेरी वीनती तुम श्रीगुसाँईजीसो करियो ॥ जो मेरी देहको तो यह प्रकार भयो हे ॥ तातें मोकों सेवा करत तथा पाक करत बहुत ग्लानि आवति हे ॥ सो में कहा करूँ ॥ वो पार्वतीको लिख्यो पत्र जब पोहोंच्यो ॥ तब खोलिकें पुरुषोत्तमदासमेहरानें श्रीगुसाँईजी-कों बाँचि सुनायो ॥ ओर भेटकी मोहर ही सो आपकें आगें राखी ॥ तब श्रीगुसाँईजीनें पुरुषोत्तमदासकों आग्या दीनी ॥ जो तूँ वा पार्वतीकों पत्र लिखि तामें लिखियो ॥ जो तूँ सेवा सुखेन करियो ॥ अपने मनमें काहुबातकी ग्लानि मति ला-ईयो ॥ श्रीठाकुरजी कृपाकरिकें तेरो रोग थोरेसे दिननमें दूरि करेंगे ॥ तब पुरुषोत्तमदासमेहराने श्रीगुसाँईजीकी आज्ञानुसार वा पार्वतीकों पत्र लिख्यो ॥ तामें आपके श्रीमुखके वचन लिखि पठाये ॥ सो पत्र पार्वतीकों आय पहुच्यो ॥ सो बाँ-चिकें वो श्रीगुसाँईजीकी आग्यातें सेवा प्रसंनतासों करन लागी ॥ कोईबातकी ग्लानि मनमें न लावे ॥ पाछें महिनाँ तीनि चारिमें वा पार्वतीके हात पाँव नीके भये ॥ तब वो पार्वती बहुत प्रसंन भई ॥ ओर वडी प्रसंनतासों सेवा करन लागी ॥ वहुरि वानें श्रीगुसाँईजीकों भेट पठाय पत्र लिख्यो ॥ जो महारा-जके प्रतापतें में नीकी भई हों ॥ सो पत्र पोहोंचतेंही बाँचिकें श्रीगुसाँईजी बहुत प्रसंन्न भये ॥ सो वो पार्वती एसी भगवदीय वैष्णवही ॥ जो प्रभुनकी आग्या प्रमाण चलती ॥ तातें श्री-गुसाँईजी वाकेउपर सदा प्रसन्न रहते ॥ सो वा पार्वतीकी वार्ता-

को पारनाहीं ॥ सो कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव ६ ठी ॥ ६ ॥

❀ (वार्ता ७ मी. वैष्णव ७ मो.) ❀

❀ (अथ पार्वतीको वेटा रघुनाथ ताकी वार्ता) ❀

सो वो रघुनाथदास वनारसमें अनेक शास्त्र पढिकें श्रीगोकुल आयो ॥ तव श्रीगुसाँईजी वडेनकी काँनि करिकें विनकेउपर कृपा करते ॥ ओर कथा कहते ॥ सो रघुनाथदास सुनते ॥ तव एकदिन परमाँनंदसोनीनें वा रघुनाथदाससुँ पूछी ॥ जो तूँतो वहुत पढिकें पंडित भयो हे ॥ परि श्रीगुसाँईजीनें कहा कथा कही सो केहे ॥ तव रघुनाथदासनें कह्यो ॥ जो तुम साँच पूछत हो तों हों कछू समुझत नाँहीं ॥ ओर श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी परिपाठीहू जाँनतु नाहीं ॥ तव परमानंदसोनीनें श्रीगुसाँईजीसों कही जो महाराज रघुनाथदासतो कथा कछू समुझत नाहीं ॥ ओर परिपाठीहू कछू जाँनत नाहीं ॥ तापाछें श्रीगुसाँईजीनें रघुनाथदासकों कृपा करिकें दोयचारि ग्रंथ पढाये ॥ ओर मार्गकी प्रनालिकाहू कही ॥ तापाछें वे रघुनाथदास सव समुझन लागें ॥ ओर वडे पंडित भये ॥ सो केतेकदिन पाछें तहाँते विदा होयकें वे कंनोज अपने घर आये ॥ तव वानें अपनी माता पार्वतीसों कह्यो ॥ जो होंतो अव न्यारी रसोई करिकें ॥ श्रीठाकुरजीकी सेवा करूँगो ॥ तव वाकी मातानें कही ॥ जो भलेंहीं सेवा करि ॥ पाछें वे न्यारी रसोइ करते ॥ तव वाकी माता पार्वती जल भरिलावे ॥ पात्र माँजे ॥ ओर श्रीठाकुरजीकी सेवाकी सव प्रचारगी करे ॥ सो जव राजभोग सरें ॥ तव अपनी जगें आवे ॥ सो अकेली लीटी करिकें विन श्रीठाकुरजीकों भोग समर्पि ॥ भोग सराय पाछें आप प्रसाद लेई ॥ या भाँतिसों वो पार्वती नित्य करे ॥ तव दिन दोय तीनि वीते ॥ तापाछें विनके सेव्य श्रीठाकुरजीनें कह्यो ॥

जो अवतो अकेली लीटी लेत लेत मेरो गरो खरखरात हे ॥ तातें ॥ तूँ दारितो करेंजा ॥ तब वा पार्वतीनें कह्यो ॥ जो महाराज तुँमतो सब शाक सलोनों आरोगत होसो ॥ तब श्रीठाकुरजीनें वा पार्वतीतें कह्यो ॥ जो मेंतो तेरीही करी लीटी आरोगत हों ॥ तापाछें वो पार्वती नित्य दारि, भात, शाकसलोनों, सब करन लागी ॥ सो वो पार्वती एसी परम कृपापात्र ही ॥ जानें अपनें श्रीठाकुरजीकों एसें प्रसंन किये ॥ ये सब वार्ता पद्मनाभदासके परिवारकीं भई ॥ सो वे पद्मनाभदास श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक एसे परम कृपापात्र भगवदीय हे ॥ ताते विनकी वार्ताको पार नाहीं ॥ सो कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव ७ मो ॥ ७ ॥

❀ (वार्ता ८ मी. वैष्णव ८ मो.) ❀

❀ (अथ रजोक्षत्राणी जो अडेलमें रहती ताकी वार्ता) ❀

सो वो रजोक्षत्राणी नित्य दूधघरकी सामुग्री करि रात्रिकों ले आवती ॥ सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों अरोगावती ॥ एसो वाको नेम हतो ॥ सो एकदिन लक्ष्मणभट्टजीको श्राद्धदिन हतो ॥ सो वादिन श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें ब्राह्मण भोजनकों बुलाये हते ॥ तहाँ थोरोसो घृत चहियत हतो ॥ तब आपनें एक वैष्णवसों कह्यो ॥ जो रजोके यहाँ तें घृत ले आवो ॥ तब एक वैष्णव रजोके घर घृत लेन गयो ॥ सो वानें जायकें रजोसों कह्यो ॥ जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें थोरोसो घृत मँगायो हे ॥ तब रजोनें कह्यो ॥ जो या समें घृतको कहा काम पर्‍योहे ॥ तब वा वैष्णवनें कह्यो ॥ जो आज लक्ष्मणभट्टको श्राद्ध हे ॥ सो आपनें ब्राह्मण भोजनकों बुलाये हें ॥ तहाँ थोरोसो घृत घट्यो हे ॥ तब रजोनें कह्यो ॥ जो मेरे श्रीठाकुरजीके भंडार विना न्यारो घृत नाहीं हे ॥ तब वह वैष्णव फिरि आयो ॥ तानें श्रीआचार्यजीसों कह्यो ॥ जो महाराज रजोकें श्रीठाकुरजीके

भंडार विनाँ न्यारो घृत नाहीं ॥ तातें वो नाहीं करतहे ॥ तव श्रीआचार्यजीनें फेरि वा वैष्णवसों कह्यो ॥ जो एकवार तूँ फेरि जा ॥ सो वासों खीजिकें कहियो ॥ जो घृत दे ॥ तव वा वैष्णवनें फेरि आयकें रजोसों कह्यो ॥ जो श्रीआचार्यजी आप खीजत हें ॥ सो तूँ घृत दे ॥ तवहू रजोनें फिर घृतकी नाहीं करी ॥ तव वह वैष्णव फेरि पाछो आयो ॥ ओर श्रीआचार्यजीसों कह्यो ॥ जो महाराज रजोतो घृत नाहीं देत ॥ तव श्रीआचार्यजीने फेरि तीसरीविरियाँ कह्यो ॥ जो अवकें तूँ फेरि जा ॥ तव वह वैष्णव फेरि गयो ॥ ओर रजोसों कह्यों ॥ जो तुं काहे घृत नाहीं देत ॥ तव रजोनें कही ॥ मेरें नाहीं ॥ तव वह वैष्णव उक्तायकें फेरि आयो ॥ तव श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें कह्यो ॥ जो अव ओर ठोरतें घृत मंगवायकें कॉम चलावो ॥ तव ओर ठोरतें घृत मँगाइ लियो ॥ वहुरि ता रात्रिकों जव रजो सामुग्री ले आई ॥ तव वाकों देखिकें श्रीआचार्यजी पीठिदेकें वेठे ॥ तव रजोनें कह्यो ॥ जो कृपानाथ मेरो कहा अपराध हे ॥ तव श्रीआचार्यजीनें कह्यो ॥ जो आज हमारे पित्रचरणको श्राद्धदिन हतो ॥ सो तेंनें घृत क्यों नहीं दियो ॥ तव वा रजोनें कही ॥ जो महाराज ॥ मेरे न्यारो घृत न हतो ॥ तातें नाहीं करी ॥ ओर आपके यहाँतो घृत वहुतेरो हे ॥ सो क्यों न काढ्यो ॥ तव श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें कह्यो ॥ जो वह घृत तो श्रीठाकुरजीको हे ॥ सो क्यों करिकें कढे ॥ तव रजोनें कह्यो ॥ जो मेरेहू श्रीठाकुरजीको घृत हो ॥ सो में क्यों करि देउँ ॥ तव श्रीआचार्यजी आप बोले नाहीं ॥ तव रजोनें सामुग्री आगें धरिकें कह्यो ॥ जो राज आरोगो तव श्रीआचार्यजी आप कहें ॥ जो आज श्राद्धदिन हतो ॥ तातें दूसरीवेर लेनों नाहीं ॥ तव रजोनें कही ॥ जो महाराज यहतो दूध घरको हे ॥ सो तो लियो चा-

हिये ॥ तब रजोपे अनुग्रह करिकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु ताहू-दिन सामुग्री आरोगे ॥ वह रजोक्षत्राँणी श्रीआचार्यजीकी सेवक एसी परम कृपापात्र भगवदीय ही ॥ तातें वाकी वार्ताको पार नाहीं ॥ सो कहाँ ताँई लिखिये ॥ वैष्णव ८ मी ॥

❀ (वार्ता ९ मी. वैष्णव ९ मो.) ❀

❀ (पुरुषोत्तमदासक्षत्री बनारसके वासी तिनकी वार्ता) ❀

सो सेठि पुरुषोत्तमदासकों श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी आग्या हती ॥ जो तुमारेपास कोई नाँम लेन आवें ॥ ताकों तुम सुखें नाँम दीजियो ॥ तातें सेठि पुरुषोत्तमदास नाँम देते ॥ ओर आपके घर श्रीमदनमोहनजीकी राजसेवा भली भाँतिसों करते ॥ ओर श्रीमदनमोहनजीकों बावन बीडा नित्य अरोगावते ॥ याप्रकार बहुत प्रसंनतासों वे सेवा करते ॥ परि वे कबहुँ श्रीकाशीविश्वेश्वरनाथजीके दर्शनकों न जाते ॥ तब एकदिन श्रीविश्वेश्वरमहादेवजीनें सेठि पुरुषोत्तमदाससों स्वप्नमें कही ॥ जो तुम हमसों गॉमको नॉतो तो राखो ॥ कबहु महकों श्रीठाकुरजीको महाप्रसाद तो देउ ॥ तब सवारें सेठिपुरुषोत्तमदास ऊठिकें स्नान करि नित्यसेवासों पोहोंचिकें बाहिर आये ॥ सो वस्त्र पेहेरिकें प्रसादी बीडा ओर प्रसादको डबरा लेकें श्रीविश्वेश्वरनाथजीके दर्शनकों चले ॥ तब गाँमके लोक आश्चर्य करत भये ॥ जो सेठि पुरुषोत्तमदास कबहू या मार्ग न आवें ॥ सो आज क्यों आये हें ॥ पाछें सेठि पुरुषोत्तमदास आप मंदिरमें आइकें श्रीविश्वेश्वरमहादेवजीके आगें चारी बीडा ओर महाप्रसादको डबरा धरि श्रीकृष्णस्मरण कहिकें ऊठि चले ॥ तब बडे बडे शैवी ब्राह्मण हते ॥ तिननें सेठिसों पूछी ॥ जो तुमनें श्रीमहादेवजीको दंडवत नमस्कार कछू न कियो ॥ केवळ श्रीकृष्णस्मरण कहिकें ऊठि चले ॥ सो तुमनें उचित करी

नाहीं ॥ तव सेठि पुरुषोत्तमदासनें विन ब्राह्मणनसों कह्यो ॥ जो आप श्रीविश्वेश्वरनाथजीसों यह बात पूछियो ॥ वे आपसों कहेंगे ॥ तापाछें उन ब्राह्मणनमेंतें एक ब्राह्मण श्रीविश्वेश्वर-नाथजीको कृपापात्र हतो ॥ वानें श्रीविश्वेश्वरनाथजीसों वीनती कीनीं ॥ जो यह कहा ॥ तासों श्रीमहादेवजीनें स्वप्नमें कह्यो ॥ जो हमनें विन सेठि सों श्रीठाकुरजीको महाप्रसाद माँग्यो हतो ॥ सो वे देन आये हे ॥ विनसों हमारो श्रीकृष्णस्मरणको ही व्योहार हे ॥ तातें तुम विनसों कछू मति कहियो ॥ तापाछें सेठि पुरुषोत्तमदास वडे वडे उत्सवनको महाप्रसाद श्रीविश्वेश्वरजीके लियें अवश्य ले जाते ॥ तव एकदिन श्रीमहादेवजीनें कालभैरवसों आज्ञा करी ॥ जो सेठि पुरुषोत्तमदास सदा वैष्णवनके घरतें रात्रिकों अपुनें घर अवेरे आवत हें ॥ तातें तूँ विनके घरकी चोकी नित्य करत रहियो ॥ तासों वा दिनतें कालभैरवजी सेठि पुरुषोत्तमदासके घरकी चोकी नित्य करत हते ॥ सो एकदिन सेठि पुरुषोत्तमदास रात्रिकों वहुत अवेरे वैष्णवनके घरतें अपुनें घरकों आये ॥ सो जब घरके द्वार आगें आयें ॥ तव विननें फिरिकें देख्यो ॥ तव कालभैरव एक ओर हे रहे ॥ तव सेठिनें वासों पूछी ॥ जो तूँ कोन हे ॥ तव विननें कही ॥ जो होंतो कालभैरव हों ॥ मोकों श्रीमहादेवजीकी आज्ञा हे ॥ तातें तुमारे घरकी चोकी देत हों ॥ तव सेठि पुरुषोत्तमदास कहे ॥ जो ठीक हे ॥ पाछें वे खिरकी देकें भीतर गये ॥

॥ ❀ (प्रसंग २ रो) ❀ ॥ वहुरि दक्षणदेशको एक महाशैव ब्राह्मण हतो ॥ सो वडो पंडित्त हतो ॥ ओर श्रीमहादेवजीको कृपापात्र हतो ॥ सो बनारस आयो ॥ ताकों साक्षात् श्रीमहादेवजीके प्रत्यक्ष दर्शन होते ॥ सो नित्य श्रीमहादेवजीके दर्शन भये विनाँ वो जलपाँन न करतो ॥ तव एकसमें जन्माष्ट-

मीको उत्सव आयो ॥ तब श्रीविश्वेश्वरनाथमहादेवजी सेठि पुरुषोत्तमदासके घर पधारे हे ॥ तातें वा ब्राह्मणनें तादिन श्रीमहादेवजीको दर्शन न पायो ॥ सो जब नवमीकेंदिन दुपहर पीछें श्रीमहादेवजी सेठि पुरुषोत्तमदासके घरतें विदा होयकें अपनें मंदिरमें पधारे ॥ तब वा ब्राह्मणनें दर्शन पाये ॥ तब वानें प्रणाम पूर्वक विनती करी ॥ जो महाराज मेनें कालि ओर आज दुपहरलों आपको दर्शन न पायो ॥ सो काहेतें ॥ तब श्रीमहादेवजीनें कह्यो ॥ जो हम सेठि पुरुषोत्तमदासके घर कालितें श्रीकृष्णजन्माष्टमीको उत्सव देखन गये हते ॥ सो आज ताहाँतें विदा होयकें अबहीं आवत हें ॥ तब उन ब्राह्मणनें कह्यो ॥ जो महाराज वो सेठि पुरुषोत्तमदास कोन हें ॥ जिनके घर आप उत्सव देखन पधारे हते ॥ तब श्रीमहादेवजीनें वासों कही ॥ जो वेतो बडे भगवद्भक्त हें ॥ तब वा ब्राह्मणनें कह्यो ॥ जो महाराज मोहूको आप भगवद्भक्त करो ॥ तब श्रीमहादेवजीनें कह्यो ॥ जो तूँ सेठि पुरुषोत्तमदासके पासतें नाँम पाय आव ॥ तब वा ब्राह्मणनें श्रीमहादेवजीसों कह्यो ॥ जो आपहीं मोकों नाँम देउ ॥ तब श्रीमहादेवजीनें कह्यो ॥ जो हों तो तोकों नाँम देउँगो सही ॥ परि हमारी संप्रदायकी गुरु परंपरामें अब श्रीवल्लभचार्यजीको प्रादुर्भाव भयो हे ॥ सों वीनकी आज्ञानुसार सेठि पुरुषोत्तमदास नाँम देतहें ॥ तातें सांप्रत वा प्रनालिकासों तूँ सेठि पुरुषोत्तमदासपास जा ॥ वो तोकों नाँम देइंगे ॥ तब वह ब्राह्मण श्रीमहादेवजीकों प्रणाम करिकें आज्ञा ले सेठि पुरुषोत्तमदासके घर आयो ॥ सो द्वार वाहिर आइकें भीतर खबरि करवाइ ॥ जो एक ब्राह्मण द्वार आयो हे ॥ तब सेठि पुरुषोत्तमदासनें कह्यो ॥ जो वाकों आसन देकें वेठारो ॥ पाछें आपु सेठि श्रीठाकुरजीकी सेवासों पोहोंचिकें वाहिर आये ॥ तब

वा ब्राह्मणनें दंडवत कियो ॥ तव सेठिनें कही जो एसो अनुचित कर्म क्यों करतहो ॥ हम क्षत्रीय आप ब्राह्मण तातें एसें अयोग्य क्यों वने ॥ तव वा ब्राह्मणनें सेठिसों कह्यो ॥ जो आपकी योग्यता ऐसीही हे ॥ तातें अव मोकों नाँम देउ ॥ तव सेठि पुरुषोत्तमदासनें कह्यो ॥ जो होंतो आपकों नाँम न देउँगो ॥ वहुरि वा ब्राह्मणनें वहुत आग्रह कियो ॥ परि सेठि पुरुषोत्तमदासनें नाँम न दियो ॥ तव वो ब्राह्मण उदास होयकें श्रीमहादेवजीके पास आयो ॥ ओर सव समाचार कहे ॥ तव श्रीमहादेवजीनें कह्यो ॥ जो तूँ फेरि जा ॥ ओर हमारो नाँम लेकें कहियो ॥ जो में श्रीमहादेवजीको पठायो आयो हूँ ॥ तातें मोकों नाँम अवश्य देउ ॥ तव वह ब्राह्मण फेरि सेठि पुरुषोत्तमदासके पास आयो ॥ ओर कही ॥ जो मोकूं श्रीमहादेवजीनें आपकेपास पठायो हे ॥ तातें मोकूं अव अवश्य नाँम देऊँ ॥ तव सेठि पुरुषोत्तमदासनें वा ब्राह्मणकों नाँम दियो ॥ ओर प्रणाम करि हाथ जोरिकें श्रीकृष्णस्मरण कियो ॥ तव वा ब्राह्मणनें कह्यो ॥ जो अव आप मेरे गुरु भये हो ॥ सो मोकों प्रणाम क्यों करत हो ॥ तव सेठिनें कह्यो ॥ जो एकतो आपको ब्रह्मकुल तामें अव तो भगवद्भक्त भये ॥ तातें मेरे तो आप अधिक वंदनीय हो ॥ आपके ओर मेरे धनी तो एक श्रीआचार्यजीमहाप्रभु हें ॥ मेंतो विनकी आज्ञा तें नाँम देत हों ॥ पाछें वा ब्राह्मणकों श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके पास पठाय समर्पण करवायो ॥ तहाँ वो कितनेकदिन रहिकें आपकेपास स्वमार्गीय ग्रंथ पढ्यो ॥ तापाछें अपनें देशकों गयो ॥ ❀ (प्रसंग २ रो) ❀ ॥ वहुरि एकदिन सेठि पुरुषोत्तमदास अपने श्रीठाकुरजीके मंदिरमें वेठे वेठे मंदिरवस्त्र करत हते ॥ तव विनको वेटा गोपालदास मंदिरमें आयो ॥ सो देखेतो सेठि आप वेठे वेठे मंदिरवस्त्र करतहें ॥ तव गोपा-

लदासके मनमें आई ॥ जो अब सेठिको शरीर वृद्ध भयो ॥ तातें अब मैं सेवामें तत्पर होउँतो आछो ॥ सो गोपालदासके मनकी यहबात सेठि पुरुपोत्तमदासनें जॉनी ॥ तब सेठिजीनें कह्यो ॥ जो बेटा आगेंतो आउ ॥ तब गोपालदास आगें आयकें देखें तो ॥ सेठि पुरुपोत्तमदास वर्ष बीस पचीसके बेठे हें ॥ तब सेठि पुरुपोत्तमदासनें कही ॥ जो बेटा भगवदीयनकी कछूमनमें न लाइये ॥ भगवदी हें सो तो भगवत्सेवामें सदा तरुणही हें ॥ परि अवस्था होय ताकों तो मॉन दियो चहिये ॥ ❀ (प्रसंग ४ थो) ❀ ॥ बहुरि एकसमें सेठि पुरुपोत्तमदास झाडखंडमें मंदारपर्वतपे श्रीमंदारमधुसूदन ठाकुरजी विराजतहें ॥ तिनके दर्शनकों श्रीकाशीजीतें गये हते ॥ तहॉ पेहेलें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुजी हू पधारे हते ॥ वा मंदारपर्वतकी टेकरी जाके उपर श्रीमंदारमधुसूदनजीको मंदिरहे ॥ ताको असो प्रभाव हे ॥ जो वा पर्वतपेतें जो निष्काम जन गिरे ॥ ताकों तो चोट न लागे ॥ ओर जो कॉमनॉ करिकें गिरे ॥ ताकी देह छूटिजाय ॥ ओर सकल पाप दूरि होयकें करीभई कामनॉ दूसरे जन्ममें पूरी होय ॥ तहॉ सेठि पुरुपोत्तमदास ओर श्रीआचार्यजीको सेवक एक ब्राह्मण ये दोऊ जनें श्रीमंदारमधुसूदनजीके दर्शनको वा पर्वतपे चढे ॥ सो ऊपर जाइकें श्रीमंदारमधुसूदनजीके दर्शन किये ॥ पाछें रात्रि परिगई ॥ तातें दोउ वहॉही सोय रहे ॥ तहॉ वा रात्रिकों एक ब्राह्मण जो सिद्ध हतो ॥ सो आयो ॥ वाने पूछी जो तुम कोन हो ॥ तब वह वैष्णव ब्राह्मण बोल्यो ॥ जो हम वैष्णव हें ॥ ओर श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक हें ॥ तब वा सिद्धनें कह्यो ॥ जो मेरेपास एक मणि हे ॥ सो तुम लेऊ ॥ तब वा वैष्णव ब्राह्मणनें कह्यो ॥ जो यह मणि कोन कॉम आवति हे ॥ तब वा सिद्धने कह्यो ॥ जो यह मणी जो मॉगो सो देति हे ॥ तब वैष्णवब्रा-

ह्मणनें कही ॥ जो मेंतो विरक्त हों ॥ मणी लेकें कहा करूँगो ॥ परि मेरे साथ एक क्षत्री हें ॥ जो यह सोये हें ॥ सो यह गृहस्थ हें ॥ इनकों मणी देऊ ॥ तब वा सिद्धनें कही ॥ जो याकों ज़गावो ॥ तब वा ब्राह्मण वैष्णवनें सेठि पुरुषोत्तमदासकों जगायो ॥ ओर कह्यो ॥ जो ये सिद्ध मणी देत हें सो तुम लेउ ॥ तब विन सेठिनें कही ॥ जो यह मणी कोन कॉम आवति हे ॥ तब वानें मणीको प्रभाव कह्यो ॥ तब सेठिनें कह्यो ॥ जो यह मणी हमारे कॉमकी नॉंहीं ॥ तातें हूँतो न लेउँगो ॥ तब वह सिद्ध फिरि गयो ॥ पाछें सेठि पुरुषोत्तमदासके साथको वैष्णव वोल्यो ॥ जो सेठिजी तुम तो गृहस्थ हो ॥ वहुकुटुंबी हो ॥ तुमारे माथेंतो सेवा विराजत हे ॥ तुमनें मणी क्यों न लिनीं ॥ तुमकों तो मणी लेनों उचित हो ॥ तब सेठि पुरुषोत्तमदासनें कह्यो ॥ जो अरे वावरे में श्रीठाकुरजीको आश्रय छोडिकें मणिको आश्रय करूँ ॥ तुंतो ब्राह्मण हे ॥ सो तेनें मणी क्यों न लिनीं ॥ तब वा ब्राह्मणवैष्णवनें कह्यो जो मेंतो विरक्त हों ॥ मणी लेकें कहा करूँगो ॥ मोकों जगदीश शेर चून देइगो ॥ तब सेठि पुरुषोत्तमदासनें कह्यो ॥ जो तोंकों जगदीश शेर चून देइगो ॥ तो मोकों कहा जगदीश दशशेर चून न देइगो ॥ श्रीठाकुरजीकों कोंन बातकी न्यूनता हे ॥ विनको श्रीठाकुरजी उपर एसो दृढ विश्वास हतो ॥ तातें विन दोउननें मणी न लीनीं ॥ सो वे दोनों एसे कृपापात्र भगवदीय हते ॥ ❀ (प्रसंग ५ मो) ❀ ॥ वहुरि एकदिन श्रीआचार्यजीमहाप्रभु सेठि पुरुषोत्तमदासके घर पधारे ॥ तब दामोदरदासहरसॉंनी आपके साथ हे ॥ तब सेठि पुरुषोत्तमदासके सेव्य ठाकुर श्रीमदनमोनहनजी तिनकों आप श्रीआचार्यजीनें पंचामृतसों स्नान करवायो ॥ ओर भोग समर्पिकें भोग सराय पाछें आप भोजन कियो ॥ तब दामोदरदासहरसॉंनीनें

आपसों पूछी ॥ जो महाराज यह कहा ॥ तब आपनें कह्यो ॥ जो यह सेठि मेरी आज्ञातें नाँम देत हें ॥ तथापि मोकों याकी इतनी मर्यादा राखी चहिये ॥ सो वे सेठि पुरुषोत्तमदास श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हे ॥ तातें इनकी वार्ताको पार नाहीं सो कहाँताँई लिखियें ॥ वैष्णव९मों ॥

❀ (वार्ता १० मी. वैष्णव १० मी.) ❀

❀ (अथ पुरुषोत्तमदासकी बेटि रुक्मिणी ताकी वार्ता) ❀

एकसमें श्रीगुसाँईजी आप काशी पधारे हते ॥ तहाँ सूर्यग्रहण भयो ॥ तब आप मणिकर्णिका घाटपे गंगास्नानकों पधारे ॥ तब रुक्मिणी हू अपने पिताके सेव्य ठाकुरजी श्री मदनमोहनजीकों स्नान करवाइकें आपुहू मणिकर्णिका घाटपे स्नानकों आई ॥ तब श्रीगुसाँईजी सों एक वैष्णवनें कह्यो ॥ जो महाराज सेठि पुरुषोत्तमदासकी बेटी रुक्मिणी हू स्नानकों आई हे ॥ तब आप श्रीगुसाँईजीनें वासुँ कह्यो ॥ जो रुक्मिणी आगें आउ ॥ तब वो आपके पास आइ ॥ तब आपनें वासों पूछी ॥ जो रुक्मिणी तूँ केतेक दिन पाछे या श्रीगंगाजीस्नानकों आई हे ॥ तब वानें कह्यो ॥ जो महाराज चोवीस वर्ष पीछे श्रीगंगाजी स्नानकों आज आइ हों ॥ तब यह सुनिकें श्रीगुसाँईजीको हृदो भरि आयो ॥ ओर कही ॥ जो देखो एसे हू भगवदीय हें ॥ जिनकों सेवा करत एक क्षणहू अवकाश नाहीं ॥ जो श्रीगंगाजी स्नानकों हू आवें ॥ तापाछें श्रीगुसाँईजी आप वापे वहुत प्रसंन भये ॥ ओर कहते ॥ जो श्रीठाकुरजी याके अरिणी कब होइंगे ॥ ❀ (प्रसंग २ रो) ❀ ॥ वहुरि क्षत्रीलोग सब कार्तिक माघमें गंगाजी स्नान करत हे ॥ तब सेठि पुरुषोत्तमदाससों रुक्मिणीनें कह्यो ॥ जो तुम आज्ञा देउ तो मेंहूँ स्नान करूं ॥ तब सेठिनें कह्यो ॥ जो भलेंई स्नान करो ॥ जो चहिये सो लीजो ॥

तब रुक्मिणीनें कह्यो ॥ जो खाँड घृत दिवाईदेउ ॥ मेदा तो घरमें हे ॥ तब सेठिनें वाकों सब दिवायदियो ॥ तब रुक्मिणी पीछीलीरात्रि पहर एक रहे ॥ तब ऊठे ॥ सो नुतन नुतन सामुग्री करिकें समय समयमें राजभोगलों अपनें श्रीमदनमोहनजी ठाकुरजीकों समर्पे ॥ फेरि उत्थापनमें जो सामुग्री करे ॥ सो सेनभोग तांई समर्पे ॥ एसें कार्तिक माघमें करे ॥ ओर चैत्र वैशाखमें शीतल सामुग्री करिकें अरोगावे ॥ ओर प्रसाद वैष्णवनकों लिवावे ॥ या भाँतिसों करे ॥ सो एकदिन सेठि पुरुषोत्तमदासनें रुक्मिणीसों पूछी ॥ जो रुक्मिणी तूं स्नान करन कब जायगी ॥ तोकोंतो कबहूं देखियत नाहीं ॥ तूं कार्तिक कोनसिबेर न्हाति हे ॥ तब वानें कह्यो ॥ जो मेरो स्नानसों कहा कॉम हे ॥ मेंतो याभाँतिहीं स्नान करिते हों ॥ तब यह वात सुनिकें सेठि वहुत प्रसंन भये ॥ ओर श्रीगुसाँइजी आपहू अपनें श्रीमुखतें वा रुक्मिणीकी सराहनाँ करते ॥ वो एसी भगवदीय ही ॥ ❀ (प्रसंग ३ रो) ❀ ॥ वहुरि केतेकदिन पाछें वा रुक्मिणीकी देह अशक्त भई ॥ तब वानें कह्यो ॥ जो अब देह छूटे तो भली हे ॥ श्रीठाकुरजीकी सेवा न होय तो यह देह कोंन कामकी हे ॥ तब केतेकदिन पाछें वाकी देह छूटी ॥ तब श्रीगुसाँईजीके आगें काहू वैष्णवनें कही ॥ जो महाराज रुक्मिणीनें गंगा पाई ॥ तब आप श्रीमुखतें कहें ॥ जो एसें मति कहो ॥ ऐसें कहो जो गंगानें रुक्मिणी पाई ॥ सो वो रुक्मिणी एसी परम भगवदीयही ॥ ताकी वार्ता कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव १० मी ॥

❀ (वार्ता ११ मी. वैष्णव ११ मो.) ❀

❀ (अथ सेठि पुरुपोत्तमदासके वेटा गोपालदासकी वार्ता) ❀

सो वा गोपालदाससों श्रीमदनमोहनजी आप सानुभव हते ॥ ओर जो चहिये सो आप वापेतें मॉगि लेते ॥ एसी

आप श्रीठाकुरजी वापे सदैव कृपा करते ॥ सो जब वा गोपालदासकी देह बहुत अशक्त भई ॥ तब वे जब भगवन्नामको उच्चार करते ॥ तब श्रीमदनमोहनजी आप तिनकों हूँकारी देते ॥ एसी कृपा करते ॥ ओर वे श्रीआचार्यजीके तथा श्रीगुसाँईजीके ग्रंथ पाठ कियो करते ॥ ओर श्रीभागवतको, श्रीसुबोधिनीजी, निबंध, ओर रहस्यग्रंथनकोहू अवलोकन करते ॥ तातें वे भगवल्लीलामें मग्न रहते ॥ तातें सदैव लीलाको विचार करते ॥ एसें करिकें वे काल व्यतीत करते ॥ पाछें जब विनकी देह छूटी ॥ तब श्रीगुसाँईजीने सुनीं ॥ जो गोपालदासकी देह छूटी ॥ तब आप श्रीमुखतें कहें ॥ जो एसे भगवदीय होनें दुर्लभ हें ॥ या भाँतिसों आप श्रीगुसाँईजी विन गोपालदासकी सराहनाँ करते ॥ ओर कहते ॥ जो विन गोपालदासनें अहर्निश भगवद्वार्ता करिकेंही अपनों निर्वाह कियो ॥ सो वे गोपालदास एसे परम भगवदीय हे ॥ ये वार्ता सेठि पुरुषोत्तमदासके परिवारकी भई ॥ सो वे सेठि पुरुषोत्तमदासके बेटा गोपालदास श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके सेवक एसे परम कृपापात्र भगवदीय हे ॥ तातें इनकी वार्ता कहाँताँई लिखियें ॥ वैष्णव ११ ॥

❀ (वार्ता १२ मी. वैष्णव १२ मों.) ❀

❀ (अथ रामदास सारस्वतब्राह्मण तिनकी वार्ता) ❀

सो वे रामदासजी अपनें सेव्य श्रीठाकुरजीकी सेवा बोहोत नीकी भाँतिसों करते ॥ सो वे अपरसहीमें जल भरते ॥ ओर बीडाहू अपरसहीमें राखते लेते ॥ याप्रकार तें वे सदा अपरसहीमें रहते ॥ सो विन रामदासजीकेपास द्रव्य बोहोत हतो ॥ सो कितनेकदिन पाछें बहुत खर्च भयो ॥ बाकी जब थोरोसो द्रव्य रह्यो ॥ तब विननें मननें विचारी ॥ जो अबतो कछू आयत होय तो आछो ॥ तब तादिनते विननें अपनों द्रव्य ब्याजू दियो ॥

तब ब्याज बहुत आवनलग्यो ॥ वा लोभसों विननें तातीनसों ब्योहार कीनों (पूर्वदेसमें पटवस्त्र बुनतहें तिनसों ताती कहत हें) ॥ तब विन रामदासजीके सेव्य ठाकुर श्रीनवनीतप्रियजीनें रामदासजीसों कह्यो ॥ जो तुमनें हमकों तो अब तातीनके उपर राखे हें ॥ तब यह बात सुनिकें रामदासजी चोंकिपरे ॥ ओर कह्यो जो महाराज मोसों चूक परी ॥ पाछें वे रामदासजी विन तातीनके पास गये ॥ ओर कह्यो जो मेरो द्रव्य सब लावो ॥ तब विन तातीननें पूछी ॥ जो महाराज यह कारण कहा हे ॥ जो द्रव्य सब एकसंगही माँगतहो ॥ तब विन रामदासजीनें कह्यो ॥ जो हों कहा करूँ ॥ मोकों तो लरिकासाथ काँम पर्‍यो हे ॥ तातें लरिकाको मन राख्यो चहिये ॥ तब विन तातीननें द्रव्य सबरो सोंपिदियो ॥ सो द्रव्य लेकें घर आये तामेंतें खर्च करते ॥ आमदनी कछु न हती तातें वो सब द्रव्य निघट्यो ॥ तब वे बनियाँकी दुकाँनतें उचापति करनलागे ॥ तातें वा बनियाँको रिण माथें बहुत भयो ॥ तब ओर बनियाँकी हाटतें उचापति करनलागे ॥ तब पेहेले बनियाँकी हाटके आगें होकें न निकसें ॥ दूसरी बाट होईकें निकसें ॥ तब एकदिन वो बनियाँ गेलमें मिलिगयो ॥ तानें रामदासजीसों कह्यो ॥ जो भलो अब तुम मेरी हाटतें उचापति नाहीं करत तो मेरो लेखो करिकें रुपैया सब चूकाय दीजो ॥ यारितिसों तगादो बहुत करडो कियो ॥ तब वे खिसियानें होयकें अपनें घर आये ॥ सो श्रीठाकुरजीतें सह्यो न गयो ॥ तब श्रीठाकुरजी रामदासजीको स्वरूप धारकें वा बनियाँकी हाट जाय लेखो करिकें वाके सब पैसा चूकाय दिये ॥ ओर रुपैया सोएक अधिक देकें वाकी वहीमें आप श्रीहस्तसों लिखि आये ॥ तापाछें रामदासजीकों वैष्णव बुलावन आये ॥ तब उन वैष्णवन-

के साथ रामदासजी चले ॥ सो वा बनियाँकी हाटके आगें होइकें निकसे ॥ तब रामदासजी आनाँकानी देकें चले ॥ इतनेमें वा बनियाँने देखे ॥ तानें आइकें कह्यो ॥ जो रामदासजी तुम मेरी हाटतें उचापति नाहि करत तो मेरो अभाग्य हे ॥ परि तुमारो मोपे अधिक द्रव्य हे सोतो उठाय लेउ ॥ तब रामदासजीनें कह्यो ॥ जो हों वहाँ होयकें आवत हों ॥ तब रामदासजीनें मनमें विचार्यो ॥ जो मेंनें तो याकों कछू दियो नाहीं ॥ ओर यह कहत हे जो तुमारो अधिक द्रव्य हे ॥ सोतो उठाइ लेउ ॥ यह कारण कहा हे ॥ परि जानियत हे जो श्रीठाकुरजीकी ओरतें यह कॉम भयो हे ॥ पाछें रामदासजी जब फिरिकें वैष्णवके घरतें आये ॥ तब वा बनियाँकी हाटपे जायकें वासों कह्यो ॥ जो लेखो लाव देखों ॥ तब वा बनियाँने कह्यो ॥ जो महाराज कहा देखोगे ॥ तुमहींतो लिखि गये हो ॥ पाछें वा बनियाँनें वही दिखाई ॥ तामें रामदासजीनें अपनें श्रीठाकुरजीके हस्ताक्षर देखे ॥ तब वे चूपकरिरहे ॥ पाछें-रामदासजी घर आयकें अपनी स्त्रीसों कहें ॥ जो अबमें घरमें नाहीं रहूँगो ॥ हों तो काहूकी चाकरी करूँगो ॥ तापाछें विननें सिपाईगिरीको बिचार कियो ॥ तातें घोडा मोल लियो ॥ ओर सब हथियार बाँधन लागे ॥ तब प्रथम जो जल ओर बीडा अपरसहीमें लेत हते ॥ सो सब अपरस छूटिगई ॥ पाछें वे बिना अपरसही जल बीडा लेन लागे ॥ सो केतकदिन पाछें वे रामदासजी अडेल आये ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके दर्शनकों आये ॥ तब हथियार बाँधेहीं जायकें दंडवत प्रणाम कियो ॥ तब श्रीआचार्यजी आप कहें ॥ जो धन्य रामदासजी तुम धन्य हो ॥ तब ओर वैष्णव पास बेठेहे ॥ सो कहन लागे ॥ जो महाराज अब याकों धन्य क्यों कहत

हो ॥ अवतो याकी अपरसता कहाँ रही ॥ येतो सिपाहिनमें चाकरी करत हें ॥ तब श्रीआचार्यजी आप कहें ॥ जो येतो धन्यही हें ॥ जो श्रीठाकुरजीकों श्रम नाहीं करवावत ॥ याकी बराबरी कोऊ धीर नाहीं ॥ पाछें वा समें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप गंगाजी स्नानकों पधारे ॥ ताहाँ मार्गमें एक वडो खाडा देख्यो ॥ तब आपनें कह्यो ॥ जो यह खाडा अजहूँ भर्‍यो नाहीं ॥ सो सुन तहीं सब वैष्णव वो खाडा भरन लागे ॥ तब रामदासजीहू एक टोकरा लेकें कपडा पेहेरेंही वो खाडा भरन लागे ॥ पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप स्नान करिकें फिर पधारे ॥ तवताँई तो वो खाडा भरिलीनों ॥ सो विन रामदासजीकोंहूँ खाडा भरत देखिकें आप श्रीआचार्यजी वाकेउपर बहुत प्रसंन भए ॥ (❀ प्रसंग २ रो) ❀ ॥ विन रामदासजीकें कछू संतति न हती ॥ तब एकदिन विनकी स्त्रीन रामदासजीसों कह्यो ॥ जो तुम ओर विवाह करो तो तुमारें बालक होय ॥ तब विननें स्त्रीसों कह्यो ॥ जो अब हमारें बालककी इच्छा नाहीं ॥ तब स्त्रीनें कह्यो ॥ जो मेरेंतो बालककी इच्छाहे ॥ तब रामदसजीनें कह्यो ॥ जो तोकों जो इच्छा हे तो तूँ महिनाँ एकलों हमारे ठाकुर श्रीनवनीतप्रियजीकी सेवा बालभावसों करि ॥ जेसें अपनें बालककों खवाइये, प्याइये, खिलाईये, हित करिये ॥ तेसें तूँ श्रीनवनीतप्रियजीकों लाड लडावे ॥ तो तेरें बालक होयगो ॥ तब रामदासकी स्त्रीनें वादिनतें श्रीनवनीतप्रियजीकी बालभावसों सेवा वोहोत नीकी भाँतिसों कीनीं ॥ सो याप्रकार सेवा करत करत वाकों एक बालक भयो ॥ सो वे रामदासजी एसे परम कृपापात्र हे ॥ विनके उपर श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप सदा प्रसंन रहते ॥ तातें इनकी वार्ताको पार नाहीं ॥ सो कहाँतांई लिखिये ॥ वैष्णव १२ मो ॥

❀ (वार्ता १३ मी. वैष्णव १३ मी.) ❀

❀ (गदाधरदासकपिलसारस्वत कडामेंरहते-तिनकी वार्ता) ❀

सो विन गदाधरदासजीके माथें श्रीमदनमोहनजीकी सेवा हती ॥ सो ठाकुरजी वडे गौर हते ॥ विनकों गदाधरदासजी नित्य जो कछू भगवद इच्छातें आवतो सो समर्पते ॥ एकदिन जिजमाँनकी वृत्ति मेंतें कछू आयो नाहीं ॥ तब विननें बालभोगमें श्रीठाकुरजीकों केवल जल छाँनिकेंहीं समर्प्यो ॥ शृंगारभोगमेंहूँ जल समर्प्यो ॥ वहुरि राजभोगमेंहूँ जल समर्पिकें काँम चलायो ॥ परि मनमें वहुत खेद पाये ॥ छातिमें अग्निसी उठनलागी ॥ एसें करत रात्रि परिगई ॥ तब वे सोईरहे ॥ जब रात्रि प्रहर डेढक गई ॥ तब एक जिजमाँन द्वारपे आयकें पुकार्यो ॥ ओर वानें कह्यो ॥ जो किंवाड खोलो ॥ तब गदाधरदासनें उठिकें किंवाड खोले ॥ तब वा जिजमाँननें एक वागो चारिरुपैया ओर कछू सामुग्री गदाधरदासजीकों दीनीं ॥ ओर कह्यो जो मेरें शुद्ध श्राद्ध हतो ॥ ताकी दक्षणाँ लेउ ॥ तब गदाधरदासनें लेकें वागो सामुग्रीतो घरमें धरि ॥ ओर आप त्योंही वजारमें एक हलवाई जो मिठाई आछी करतो ताकेघर गये ॥ तहाँ जाइकें हलवाईसों पूछी ॥ जो तेरें मिठाई आछी हे ॥ तब वानें कही ॥ जो महाराज यह जलेवी अवहीं ताजी कीनीं हे ॥ यामेंतें कछू वेची हू नाँहींहे ॥ तब विननें जलेवीको मोल देकें अपनें घर वेगि ले आये ॥ सो तुरंत स्नान करिकें विननें श्रीठाकुरजीकों जगायकें वा जलेवीको भोग समर्प्यो ॥ सो समयानुसार सरायकें अनोसर करि वैष्णवनकों बुलाय लाये ॥ ओर सवनकों वो महाप्रसाद लिवायो ॥ सो अति स्वादिष्ट लग्यो ॥ सो एसो जो लौकिकमें कछू कह्यो न जाय ॥ तब वो सवरो महाप्रसाद वैष्णवनकोहीं लिवायदियो ॥ ओर आपु भूखेही सोय रहे ॥ पाछें

सवारें ऊठि गदाधरदास सीधो सामुग्री ले आये ॥ तब स्नान करि रसोई करि श्रीठाकुरजीकी सेवा शृंगार करि भोग समर्प्यो ॥ सो समयानुसार सराय श्रीठाकुरजीकों अनोसर करि फेरि वैष्णवनकों बुलाय लाये ॥ सो जब वैष्णव महाप्रसाद लेनकों बेठे ॥ तब पूछनलागे ॥ जो रात्रिको महाप्रसाद हमनें लियो हतो ॥ सो तो बहुत स्वादिष्ट भयो हतो ॥ सो किन सवार्‍यो हतो ॥ तब गदाधरदासनें विनसों सब प्रकार कह्यो ॥ तब वे वैष्णव बहुत प्रसंन भये ॥ ओर कह्यो ॥ जो देखो गदाधरदास केसो सत्य कहतहें ॥ ❀ (प्रसंग २ रो) ❀ ॥ बहुरि एकादिन गदाधरदासनें वैष्णव सब महाप्रसाद लेनकों बुलाये हते ॥ परि शाक सलोनो कछू घरमें न हतो ॥ तब गदाधरदासनें कह्यो ॥ जो एसो कोऊ वैष्णव हे ॥ जो शाक ले आवे ॥ तब तिन वैष्णवनमें एक वैष्णव वेणीदासको भाई माधवदास करके हतो ॥ सो वडो विषयी हतो ॥ तानें कह्यो जो में ले आऊँगो ॥ तब गदाधरदासनें कह्यो ॥ जो भलें ले आवो ॥ तब वे माधवदास गये ॥ सो वथुवाकी भाजी ले आये ॥ सो विनहीनें नींकी भाँतिसों सँवारि धोयके रसोईमें दीनीं ॥ पाछें जब रसोई सब सिद्धि भई ॥ तब श्रीठाकुरजी अरोगे ॥ पाछें वैष्णव सब प्रसाद लेन बेठे ॥ तब वह भाजी अति स्वादिष्ट भईही ॥ तब गदाधरदासनें वा माधवदासकों आशीर्वाद दियो ॥ जो तोकों हरिभक्ति दृढ होइ ॥ तापाछें विनके आशीर्वादतें वो भलो वैष्णव भयो ॥ सः ऐसे गदाधरदास एसे भगवदीय हे ॥ जिनके आशीर्वादहीतें वा विषयी माधवदासकी तुरंत बुद्धी फिरी ॥ सो वे गदाधरदास श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक एसे परम कृपापात्र भगवदीय हे ॥ तातें इनकी वार्ता कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव १२ मों ॥

❀ (वार्ता १३ मी. वैष्णव १३ मी.) ❀

❀ (गदाधरदासकपिलसारस्वत कडामेंरहते·तिनकी वार्ता) ❀

सो विन गदाधरदासजीके माथें श्रीमदनमोहनजीकी सेवा हती ॥ सो ठाकुरजी वडे गौर हते ॥ विनकों गदाधरदासजी नित्य जो कछू भगवद इच्छातें आवतो सो समर्पते ॥ एकदिन जिजमॉनकी वृत्ति मेंतें कछू आयो नाहीं ॥ तव विननें वालभोगमें श्रीठाकुरजीकों केवल जल छॉनिकेंहीं समर्प्यो ॥ शृंगारभोगमेंहू जल समर्प्यो ॥ वहुरि राजभोगमेंहूँ जल समर्पिकें कॉम चलायो ॥ परि मनमें वहुत खेद पाये ॥ छातिमें अग्निसी उठनलागी ॥ एसें करत रात्रि परिगई ॥ तव वे सोईरहे ॥ जव रात्रि प्रहर डेढक गई ॥ तव एक जिजमॉन द्वारपे आयकें पुकार्‍यो ॥ ओर वानें कह्यो ॥ जो किंवाड खोलो ॥ तव गदाधरदासनें ऊठिकें किंवाड खोले ॥ तव वा जिजमॉननें एक वागो चारिरुपैया ओर कछू सामुग्री गदाधरदासजीको दीनीं ॥ ओर कह्यो जो मेरें शुद्ध श्राद्ध हतो॥ ताकी दक्षणॉ लेउ ॥ तव गदाधरदासनें लेकें वागो सामुग्रीतो घरमें धरि ॥ ओर आप त्योंही वजारमें एक हलवाई जो मिठाई आछी करतो ताकेघर गये ॥ तहॉ जाइकें हलवाईसों पूछी ॥ जो तेरें मिठाई आछी हे ॥ तव वानें कही ॥ जो महाराज यह जलेवी अवहीं ताजी कीनीं हे ॥ यामेंतें कछू वेची हू नॉहींहे ॥ तव विननें जलेवीको मोल देकें अपनें घर वेगि ले आये ॥ सो तुरंत स्नान करिकें विननें श्रीठाकुरजीकों जगायकें वा जलेवीको भोग समर्प्यो ॥ सो समयानुसार सरायकें अनोसर करि वैष्णवनकों वुलाय लाये ॥ ओर सवनकों वो महाप्रसाद लिवायो ॥ सो अति स्वादिष्ट लग्यो ॥ सो एसो जो लौकिकमें कछू कह्यो न जाय ॥ तव वो सवरो महाप्रसाद वैष्णवनकोंहीं लिवायदियो ॥ ओर आपु भूखेही सोय रहे ॥ पाछें

सवारें ऊठि गदाधरदास सीधो सामुग्री ले आये ॥ तब स्नान करि रसोई करि श्रीठाकुरजीकी सेवा शृंगार करि भोग समर्प्यो ॥ सो समयानुसार सराय श्रीठाकुरजीकों अनोसर करि फेरि वैष्णवनकों बुलाय लाये ॥ सो जब वैष्णव महाप्रसाद लेनकों बेठे ॥ तब पूछनलागे ॥ जो रात्रिको महाप्रसाद हमनें लियो हतो ॥ सो तो बहुत स्वादिष्ट भयो हतो ॥ सो किन सवार्‍यो हतो ॥ तब गदाधरदासनें विनसों सब प्रकार कह्यो ॥ तब वे वैष्णव बहुत प्रसंन भये ॥ ओर कह्यो ॥ जो देखो गदाधरदास केसो सत्य कहतहें ॥ ❀ (प्रसंग २ रो) ❀ ॥ बहुरि एकदिन गदाधरदासनें वैष्णव सब महाप्रसाद लेनकों बुलाये हते ॥ परि शाक सलोनों कछू घरमें न हतो ॥ तब गदाधरदासनें कह्यो ॥ जो एसो कोऊ वैष्णव हे ॥ जो शाक ले आवे ॥ तब तिन वैष्णवनमें एक वैष्णव वेणीदासको भाई माधवदास करके हतो ॥ सो बडो विषयी हतो ॥ तानें कह्यो जो में ले आऊँगो ॥ तब गदाधरदासनें कह्यो ॥ जो भलें ले आवो ॥ तब वे माधवदास गये ॥ सो बथुवाकी भाजी ले आये ॥ सो विनहीनें नीकी भाँतिसों सँवारि धोयके रसोईमें दीनीं ॥ पाछें जब रसोई सब सिद्धि भई ॥ तब श्रीठाकुरजी अरोगे ॥ पाछें वैष्णव सब प्रसाद लेन बेठे ॥ तब वह भाजी अति स्वादिष्ट भईही ॥ तब गदाधरदासनें वा माधवदासकों आशीर्वाद दियो ॥ जो तोकों हरिभक्ति दृढ होइ ॥ तापाछें विनके आशीर्वादतें वो भलो वैष्णव भयो ॥ सः ः गदाधरदास एसे भगवदीय हे ॥ जिनके आशीर्वादहीतें वा विषयी माधवदासकी तुरंत बुद्धी फिरी ॥ सो वे गदाधरदास श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक एसे परम कृपापात्र भगवदीय हे ॥ तातें इनकी वार्ता कहाँलाई लिखिये ॥ वैष्णव १२ मों ॥

❀ (वार्ता १४.मी. वैष्णव १४ मो.) ❀

❀ (अथ वेंणीदास माधवदास दोय भाई तिनकी वार्ता) ❀

वडेभाई वेंणीदास ओर छोटेभाई माधवदास हते ॥ सो माधवदास वेही हे ॥ जानें गदाधरदासके घर वथुवाकी भाजी लाय दइही ॥ सो वे बडे विषयी हते ॥ विननें घरमें एक वेश्या राखी हती ॥ तातें सब वैष्णव वाकी निंदा करते ॥ सो बात श्रीआचार्यजीनें सुनीं ॥ जो माधवदासतो वडो विषयी भयो हे ॥ घरमें वेश्याहू राखीहे ॥ तब आपनें माधवदासकों बुलवायकें कह्यो ॥ जो यह तेंनें कहा कॉम कियो हे ॥ जो सबनमें निंदा होतहे ॥ तब वानें विनती करी ॥ जो महाराज मेरो मन वासों आसक्त भयो हे ॥ तातें राखीतो हे ॥ एसें तीनवेर श्रीआचार्यजीनें वासों पूछी ॥ तब तीन्योवेर वानें एसेंही कही ॥ जो महाराज मेरो मन वासों आसक्त भयोहे ॥ तब आप चूपकरिरहे ॥ तब वैष्णवननें विनती करी ॥ जो महाराज अबलों तो वानें आपकी छानि राखीही ॥ परि अबतो वाने आपकेहू आगें कहिदियो ॥ परि आपनेंतो वासों कछू न कही ॥ तब श्रीआचार्यजी आप उन वैष्णवनसों कहें ॥ जो वाको मन वासों आसक्त भयोहे ॥ सो श्रीठाकुरजी फेरें तो कितनीक बात हे ॥ तामें अब याकों गदाधरदासनेंहू एसो आशीर्वाद दियो हे ॥ जो तोकों हरिभक्ति दृढ होउ ॥ सो येही माधवदास हें ॥ पाछें केतेकदिन बीतें श्रीजीनें माधवदासकी बुद्धि फेरी ॥ तब वानें वेश्या दूरि किनी ॥ पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी कृपातें वे माधवदास भले वैष्णव भये ॥ ❀ (प्रसंग २ रो) ❀ ॥ वहुरि एकदिन सुंदर मोतिनकी वहुमोल माला विकान आई हती ॥ सो देखिकें माधवदासनें अपनें वडेभाई वेंणीदाससों कह्यो ॥ जो यह मालातो श्रीनवनीतप्रियजीके श्रीकंठ लायक हे ॥ तब वडेभाई वेंणीदासनें कह्यो ॥ जो या मालाकी कहा चली हे ॥

हमारे पास जो कछु है ॥ सो सब श्रीठाकुरजीकोही है ॥ एसें कहिकें विननें वो बात उडाय दीनीं ॥ तब छोटेभाई माधवदासनें कही ॥ जो अपनें घरमें जो है ॥ सो तो सब श्रीठाकुरजीको है ॥ तो फिर यह माला क्यों नहीं लेत ॥ तब वडेभाई वेणीदासनें कह्यो ॥ जो हम गृहस्थ हैं ॥ हमकों विवाह कार्य सब करनेहें ॥ तातें एसें क्यों बनें ॥ तब छोटेभाई माधवदासनें कह्यो ॥ जो होंतो अब न्यारो होउँगो ॥ सो वो ता दिनतें न्यारो भयो ॥ ओर जो द्रव्य हतो सो सब बांटि लीनों ॥ सो वा द्रव्यकी वस्तु खरीदकें वो दक्षणकों गयो ॥ तहाँ वे वस्तु बेचीकें व्यवहार करि द्रव्य बहुत उपजायो ॥ तामेंतें एक माला मोतिनकी पहली मालातें बहुत सुंदर ओर बहुमोलकी मोल लेकें वो अपनें घरकों चल्यो ॥ सो आवत मारगमें एक बडीनदी हती ॥ तहाँ नावमें बेठे ॥ तब श्रीनवनीतप्रियजी श्रीहस्तमें लाल छडी लेकें पधारे ॥ ओर कह्यो ॥ जो अब यह नाव डुबोऊँ ॥ तब माधवदासनें कह्यो ॥ जो (निजेछातः करिष्यति) तब श्रीठाकुरजीनें कह्यो ॥ जो तूं यहाँ क्यों गयो हो ॥ तब माधवदासनें कह्यो ॥ जो महाराज हों आपके लियें मोतिनकी माला लेन गयो हो ॥ तब श्रीनवनीतप्रियजीनें कही ॥ जो कहा हमारें माला न हती ॥ हमारें तो माला बहुतेरी हें ॥ तब माधवदासनें कह्यो ॥ जो आपकेंतो माला बहुतेरी हें ॥ परि सेवकको तो अपनो धर्म करनों ॥ तब श्रीठाकुरजीनें वा नावकों नेंक दबाइ ॥ तब वो नाव डुबनलागी ॥ सो देखिकें जितनें मनुष्य वा नावमें बेठेहते ॥ ते सब हलकालोर करन लागे ॥ ओर माधवदासको मनतो प्रसंनही हो ॥ तब सबनके मनमें आई ॥ जो ए कोइ बडे महापुरुष हें ॥ तब सब विनके शरणि गये ॥ तब माधवदासनें श्रीठाकुरजीकी

विनती करिकें वो नाव डुवततें राखी ॥ पाछें वहाँते माधवदास अडेल आये ॥ सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों दंडवत करिकें हाथमें माला दीनीं ॥ तव श्रीआचार्यजी आपनें वैष्णवनसों कह्यो ॥ जो देखो ये वेही माधवदास हैं ॥ जिननें वेश्या राखी-ही ॥ सो याको मन श्रीठाकुरजीनें फेन्यो ॥ ओर भगवद्भाव उत्पंन भयो ॥ जो आसक्ति अन्यउपर रहती ॥ सो श्रीठाकुर-जीके उपर भई ॥ पाछें आप माधवदासके उपर वहुत प्रसंन भये ॥ सो वे वेणीदास ओर माधवदास दोऊभाई श्रीआचा-र्यजीमहाप्रभुनके सेवक ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हे ॥ तातें इनकी वार्ता कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव १४ मो ॥ ७ ॥

❀ (वार्ता १५ मी. वैष्णव १५ मो.) ❀

❀ (अथ हरिवंशपाठक सारस्वतब्राह्मण तिनकी वार्ता) ❀

सो वे हरिवंशपाठक वनारसमें रहते ॥ सो एकसमें पटनाँ व्यापारकूँ गये ॥ तव फाल्गुनमास हतो ॥ सो वहाँके हाकिमसों विनको वहुत मिलाप हतो ॥ तातें वा हाकिमनें अपनें मनमें विचार कियो ॥ जो ये मेरेपास कछू माँगे तो में इनकों देउँ ॥ परि वे कछू माँगें नहीं ॥ यों करत जव डोल उत्सवके दिन द्वे वाकी रहे ॥ तव विन ॥ हरिवंशपाठकके सेव्य श्रीठाकुरजी घर विराजते हते ॥ तिनने जताई ॥ जो मोकों तूं डोल न झुलावेगो ॥ तव हरिवंशपाठकनें अपनें मनमें विचार कियो ॥ जो अव कहा करूँ ॥ ओर घर कैसें पोंहोंचों ॥ तव हरिवंशपाठक वा हा-किमके पास गये ॥ ओर कह्यो ॥ जो आपकेपास कछू माँगन आयो हों ॥ सो दियो चहिये ॥ तव वा हाकिमनें कह्यो ॥ जो तुमकों कहा चहिये ॥ तव विननें कह्यो ॥ जो मोकों दिन द्वे में वनारस पहुँच्यो चहिये ॥ तव वानें कह्यो ॥ जो भलें ॥ पाछें वा हाकिमनें द्वे घोडा ओर मनुष्य साथ दिये ॥ सो पेंडेमें

डाककी नाहीं घोडा चले ॥ एसें करत वे बनारसमें घर आइ पोहोंचे ॥ ओर विनने अपनें संगकेनकों विदा किये ॥ पाछें आपु मंदिरमें जाय तुरंत डोल सिद्ध कियो ॥ ओर डोलकी सामुग्री सब सिद्ध करिकें श्रीठाकुरजीकों डोलमें झुलाये ॥ ओर बहुत सुखपायो ॥ तापाछें थोरेसे दिन वे घर रहिकें फेरि पाछें पटनाँ गये ॥ तहाँ हाकिमसों मिले ॥ तब वानें पूछी ॥ जो तुमकों एसी कहा जरूर हती ॥ जो तुरंत बनारस जाय आये ॥ तब हरिवंशपाठकनें कह्यो ॥ जो कछू अवश्यको काँम हो ॥ परि मनकी बात कछू वातें न कही ॥ सो वे हरिवंशपाठक श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक एसे परम कृपापात्र भगवदीय हे ॥ तातें इनकी वार्ताको पार नाहीं ॥ सो कहाँतांई लिखिये ॥ वैष्णव १५ मो ॥

❁ (वार्ता १६ मी. वैष्णव १६ मो.) ❁

(❁ अथ गोविंददासभल्लाथानेश्वरकेवासी तिनकी वार्ता) ❁

सो विन गोविंददासभल्लाकीगाँठि द्रव्य बहुत हतो ॥ सो जब वे श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक भये ॥ तब विननें श्रीआचार्यजीसों पूछी ॥ जो महाराज मेरी गाँठी द्रव्य बहुत हे ॥ सो में कहा करूँ ॥ तव आपनें कह्यो ॥ जो तूं श्रीठाकुरजी पधरायकें सेवा करी ॥ तब वानें कह्यो ॥ जो महाराज सेवा केसें करों ॥ मेरी स्त्री अनुकूल नाहीं ॥ तव आप आज्ञा किये ॥ जो तूँ स्त्रीको त्याग करि ॥ तब वानें स्त्रीको त्याग कियो ॥ तापाछें फिर वानें विनती करी ॥ जो महाराज अबमें कहा करूँ ॥ तब श्रीआचार्यजी आप कहे ॥ जो अब तेरें जो द्रव्य हे ॥ ताके चारि विभाग करि ॥ तब वानें द्रव्यके चारि भाग करे ॥ तापाछें वानें फिर कह्यो ॥ जो महाराज अब कहा आज्ञा हे ॥ तब आप श्रीआचार्यजी कहें ॥ जो एक भाग तो तूं श्रीनाथजीकों समर्पि ॥ ओर एक भाग अपनी स्त्रीकों

विनती करिकें वो नाव डुवततें राखी ॥ पाछें वहाँते माधवदास अडेल आये ॥ सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों दंडवत करिकें हाथमें माला दीनी ॥ तव श्रीआचार्यजी आपनें वैष्णवनसों कह्यो ॥ जो देखो ये वेही माधवदास हें ॥ जिननें वेश्या राखी-ही ॥ सो याको मन श्रीठाकुरजीनें फेऱ्यो ॥ ओर भगवद्भाव उत्पंन भयो ॥ जो आसक्ति अन्यउपर रहती ॥ सो श्रीठाकुर-जीके उपर भई ॥ पाछें आप माधवदासके उपर वहुत प्रसंन भये ॥ सो वे वेणीदास ओर माधवदास दोऊभाई श्रीआचा-र्यजीमहाप्रभुनके सेवक एसे परम कृपापात्र भगवदीय हे ॥ तातें इनकी वार्ता कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव १४ मो ॥ ७ ॥

❀ (वार्ता १५ मी. वैष्णव १५ मो.) ❀

❀ (अथ हरिवंशपाठक सारस्वतब्राह्मण तिनकी वार्ता) ❀

सो वे हरिवंशपाठक बनारसमें रहते ॥ सो एकसमें पटनाँ व्यापारकूँ गये ॥ तव फाल्गुनमास हतो ॥ सो वहाँके हाकिमसों विनको वहुत मिलाप हतो ॥ तातें वा हाकिमनें अपनें मनमें विचार कियो ॥ जो ये मेरेपास कछू माँगे-तो में इनकों देउँ ॥ परि वे. कछू माँगें नहीं ॥ यों करत जव डोल उत्सवके दिन द्वे वाकी रहे ॥ तव विन ॥ हरिवंशपाठकके सेव्य श्रीठाकुरजी घर विराजते हते ॥ तिनने जताई ॥ जो मोकों तूं डोल न झुलावेगो ॥ तव हरिवंशपाठकनें अपनें मनमें विचार कियो ॥ जो अव कहा करूँ ॥ ओर घर कैंसें पोंहोंचों ॥ तव हरिवंशपाठक वा हा-किमके पास गये ॥ ओर कह्यो ॥ जो आपकेपास कछू माँगन आयो हों ॥ सो दियो चहिये ॥ तव वा हाकिमनें कह्यो ॥ जो तुमकों कहा चहिये ॥ तव विननें कह्यो ॥ जो मोकों दिन द्वे में बनारस पहुँच्यो चहिये ॥ तव वानें कह्यो ॥ जो भलें ॥ पाछें वा हाकिमनें द्वे घोडा ओर मनुष्य साथ दिये ॥ सो पेंडेमें

डाककी नाहीं घोडा चले ॥ एसें करत वे बनारसमें घर आइ पोहोंचे ॥ ओर विनने अपनें संगकेनकों विदा किये ॥ पाछें आपु मंदिरमें जाय तुरंत डोल सिद्ध कियो ॥ ओर डोलकी सामुग्री सब सिद्ध करिकें श्रीठाकुरजीकों डोलमें झुलाये ॥ ओर बहुत सुखपायो ॥ तापाछें थोरेसे दिन वे घर रहिकें फेरि पाछें पटनाँ गये ॥ तहाँ हाकिमसों मिले ॥ तब वानें पूछी ॥ जो तुमकों एसी कहा जरूर हती ॥ जो तुरंत बनारस जाय आये ॥ तब हरिवंशपाठकनें कह्यो ॥ जो कछू अवश्यको काँम हो ॥ परि मनकी बात कछू वातें न कही ॥ सो वे हरिवंशपाठक श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक एसे परम कृपापात्र भगवदीय हे ॥ तातें इनकी वार्ताको पार नाहीं ॥ सो कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव १५ मो ॥

❀ (वार्ता १६ मी- वैष्णव १६ मो.) ❀

(❀ अथ गोविंददासभल्लाथानेश्वरकेवासी तिनकी वार्ता) ❀

सो विन गोविंददासभल्लाकीगाँठि द्रव्य बहुत हतो ॥ सो जब वे श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक भये ॥ तब विननें श्रीआचार्यजीसों पूछी ॥ जो महाराज मेरी गाँठी द्रव्य बहुत हे ॥ सो मे कहा करूँ ॥ तब आपनें कह्यो ॥ जो तूँ श्रीठाकुरजी पधरायकें सेवा करी ॥ तब वानें कह्यो ॥ जो महाराज सेवा केसें करों ॥ मेरी स्त्री अनुकूल नाहीं ॥ तब आप आज्ञा किये ॥ जो तूँ स्त्रीको त्याग करि ॥ तब वानें स्त्रीको त्याग कियो ॥ तापाछें फिर वानें विनती करी ॥ जो महाराज अबमें कहा करूँ ॥ तब श्रीआचार्यजी आप कहे ॥ जो अब तेरें जो द्रव्य हे ॥ ताके चारि विभाग करि ॥ तब वानें द्रव्यके चारि भाग करे ॥ तापाछें वानें फिर कह्यो ॥ जो महाराज अब कहा आज्ञा हे ॥ तब आप श्रीआचार्यजी कहें ॥ जो एक भाग तो तूँ श्रीनाथजीकों समर्पि ॥ ओर एक भाग अपनी स्त्रीकों

निर्वाहार्थ दे ॥ और जो द्वे भाग रहेंसों तूं श्रीठाकुरजीकी सेवा करिवेके लिये राखि ॥ तब वा गोविंददासनें वीनती कीनी ॥ जो महाराज कछू आपहू अंगीकार करिये ॥ तब श्रीआचार्यजी आप कहे ॥ जो भलो एक भाग हमहूंकों दे ॥ तब सब विभाग ज्योंके त्यों सबनकों देकें अपनें वटको द्रव्य लेकें गोविंददास आप महावन आये ॥ तहाँ श्री मथुराँनाथजीकी सेवा करन लागे ॥ जो नित्य चोवीस टकाकी सामग्री समर्पते ॥ सो महाप्रसाद वैष्णवनको लिवावते ॥ कदाचित् कोइ वैष्णव न मिलते ॥ तो वो गायनकों खवावते ॥ परि वा मेतें आप रंचकहू न लेते ॥ आपतो न्यारी लीटी करिकें दूसरो भोग समर्पिके लेते ॥ सो वे एसी भाँति सेवा करते ॥ सो जब सबरो द्रव्य निवट्यो ॥ तब वे श्रीगोवर्धननाथजीकी सेवामें आइ रहे ॥ सो श्रीनाथजीकी परचारगी करते ॥ और रसोईकी सब टहल करें ॥ सो दोऊवार पात्र माँजें ॥ और जब प्रहर डेढ पाछिली रात्रि रहे तब ऊठें ॥ सो कमंडलु बाँधिके श्रीगिरिराजतें चलें ॥ सो मथुरामें विश्रांतिघाटपे आवें ॥ तहाँ स्नान करिकें श्रीयमुनाजीकी गागरि भरिकें चलें ॥ सो राजभोग पहलें पाछे श्रीगिरिराज आय पोहोंचें ॥ पाछें पात्र माँजें ॥ रसोई पोतें ॥ तापाछें अपनी सेव्य सेवातें पोहोंचिकें नीचें आवें ॥ तब तिलक पोछें ॥ माला उतारि गाँठि बाँधें ॥ पाछें आसपासके गाँमनमेंतें कोरी भिक्षा माँगें ॥ सो विनको सेर चारि पाँचको आहार हतो ॥ सो जब आहार मात्रको जुरे ॥ तब घर आवें ॥ सो जो मिल्योहोय ताकों आपुहि पीसिकें रोटी करि श्रीनाथजीकी ध्वजाके सन्मुख दिखाय वामें चरणोदक मेलिकें प्रसाद लेइँ ॥ एसें वे निर्वाह करें ॥ सो एसी भाँति करत बहुत दिन बीते ॥ परि यह बात श्रीनाथजीकों न भावे ॥ तब एकदिन श्री-

नाथजीनें अडेलमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों कह्यो ॥ जो तुमारो एक सेवक मोकों बहुत दुःख देतहे ॥ तब श्रीआचार्यजी आप अडेलतें चले ॥ सो आगरे आए ॥ तहाँ वैष्णवनसों पूंछी ॥ जो श्रीठाकुरजी कोंनें रुठाये हें ॥ तब उन वैष्णवननें कह्यो ॥ जो महाराज हमतो कछू समझत नहीं ॥ तब तहाँतें आप श्रीमथुराँ पधारे ॥ ताहाँ मथुराँके वैष्णवनसों पूछी ॥ तब तहाँहू कछू समझ न परी ॥ पाछें आप श्रीगिरिराज पधारे ॥ सो स्नान करिकें उपर गये ॥ तब श्रीनाथजीके कपोल दोऊ छुइकें कह्यो ॥ जो बाबा अनमनें क्यों हो ॥ तब श्रीनाथजीनें कह्यो ॥ जो तुमारो सेवक मोकों बहुत खिजावत हे ॥ तब श्रीआचार्यजी आप सब सेवकनसों पूछें ॥ जो तुम कहा कहा सेवा करत हो ॥ ओर प्रसाद कहाँ लेत हो ॥ तब विन सेवकननें अपनी अपनी सेवा सब कही ॥ ओर प्रसाद लेवेको प्रकारहू कह्यो ॥ पाछें आपनें विन गोविंददाससों पूछी ॥ जो तुम कहा सेवा करत हो ॥ ओर प्रसाद कहाँ लेतहो ॥ तब वो जो सेवा करते ॥ सो सब आपके आगें कहि सुनाइ ॥ पाछें प्रसाद लेवेकोहू प्रकार कह्यो ॥ सो सुनिकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें अपने मनमें जॉनी ॥ जो याहीने श्रीनाथजीकों रुठाये हें ॥ तब श्रीआचार्यजी आप विन गोविंददाससों कहें ॥ जो आजतें तुम श्रीठाकुरजीकी रसोईमें महाप्रसाद लियोकरो ॥ तब विन गोविंददासभल्लानें कह्यो ॥ जो महाराजमें देवांश केसें लेऊँ ॥ तब आपनें कह्यो ॥ जो तूं हमारी रसोईमें महाप्रसाद लीजो ॥ तबहू गोविंददासनें कह्यो ॥ जो महाराजमें गुरुअंशहू केसें लेउँ ॥ तब आप श्रीआचार्यजीनें कह्यो ॥ जो तूं आजतें सेवा मतिकरे ॥ तब वो गोविंददासक्षत्री अहंकारसों सेवा छोडिकें मथुराँ चले गये ॥ सो तहाँ जायकें

वहाँके पठान पेतें श्रीकेशवरायजीकी सेवाको इजारो लीनों ॥ ओर तहाँ सेवा करनलागे ॥ सो एकवार विननें श्रीकेशवरायजीकी शैया निवारसों बुनावई ॥ तब वा बुनवेवारेकों मेवा खवाइकें वोहोत उत्तम शैया बुनवाई ॥ सो शैया वोहोत अद्भुत भई ॥ तबतें श्रीकेशवरायजी वा शैयाके उपर आप पोढनलागे ॥ तापाछें तेसीही निवार वा गाँमके हाकिमनें बुनवाई ॥ परि वह निवार वेसी न भई ॥ तब कारीगरनें कही ॥ जो साहिब यह निवार श्रीकेशवरायजीकी शैया जेसी नाहीं ॥ तब वा हाकिमने कही ॥ जो वह निवारमें देखुँगो ॥ तापाछें ॥ वो हाकिम श्रीकेशवरायजीके मंदिरमें जायकें शैयापे चढि वेठ्यो ॥ ता समें गोविंददास बाहिर गये हते ॥ तिननें सुनी ॥ तब वे हाथमें गुप्ती लेकें दोरत आइकें वा हाकिमकों गारी देत कह्यो ॥ जो तूं एसो कोंनहे ॥ जों हमारे श्रीठाकुरजीकी शैयापे वेठ्यो हे ॥ एसें कहिकें वाकों ठोर मार्‍यो ॥ तब वा हाकिमके मनुष्यननें विन गोविंददासकोंहू ठोर मार्‍यो ॥ तब यह वात काहू वैष्णवनें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों जायकें कही ॥ जो महाराज एसे वैष्णवकी एसी गति क्यों बूझिये ॥ तब आपनें कही ॥ जो याके परलोकमें तो कछू हानि नाहीं भई ॥ परि वानें मेरी आज्ञा न मॉनी ॥ ओर पूर्व जन्ममें वा हाकिमने उनको ठार मार्यो हतो, ताको बेर या जन्ममें लीनो ॥ तातें वाकी देह याभाँतिसों छूटी ॥ तापाछें ओर श्रीआचार्यजी आप कहें ॥ जो या गोविंददासनें पहले जन्ममें हू श्रीनंदरायजीके यहाँ श्रीठाकुरजीके मंदिरमें माटी पॉनी बोहोत ढोयो हो ॥ सो वे गोविंददास श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक एसे परम कृपापात्र भगवदीय हे ॥ तातें इनकी वार्ता कहॉतॉई लिखिये ॥ वैष्णव १६ मो ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ॥

❀ (वार्ता १७ मी. वैष्णव १७ मी.) ❀

❀ (अथ अम्माँक्षत्राणि कडामें रहती ताकीवार्ता) ❀

सो वा अंमाँके द्वे वेटा हते ॥ सो हू परम भगवदीय हते ॥ सो वो अंमाँ श्रीठाकुरजीकी सेवा नीकीभाँतिसों करती ॥ तब वाके लरिका वासों अंमाँ कहते ॥ ताते सेव्यस्वरूप श्रीबालकृष्णजी हू वाको अंमाँ कहते ॥ ओर गाँमके लोगहू वाते अंमाँही कहते ॥ सो कितनेकदिन पाछे वाको एक बेटा मरिगयो ॥ तब वो नित्य श्रीठाकुरजीकी सेवा करिके रसोई करि भोग धराय सराय ॥ समयानुसार श्रीठाकुरजीकों अनोसर करीके वो रोवन बेठे ॥ तब अंमाँको रोवत देखिके श्रीठाकुरजी खेद पावनलागे ॥ ओर आज्ञा किये ॥ जो अंमाँ तूँ मति रोवे ॥ परि वह रोवतेंते रहे नाहीं ॥ एसे करत केतेकदिन पाछे वाको दूसरोहू बेटा मरिगयो ॥ तब तो वो बहुतही रोवन लागी ॥ तब श्रीठाकुरजी वाकों रोवतते राखे ॥ परि अंमाँ रोवतते रहे नाहीं ॥ तब आपनें श्रीगुसाँईजीसों कह्यो ॥ जो अंमाँ रोवति हे ॥ तातें में बहुत दुःख पावत हो ॥ तब श्रीगुसाँईजी वा अंमाँके घर पधारे ॥ ओर वाकों बरजी जो तूँ मति रोवे ॥ श्रीठाकुरजी खेद पावत हें ॥ तब वो अंमाँ रोवततें रही ॥ तापाछें वो नित्य स्नान करिकें मंदिरमें जायकें दोऊहाथनसों सोंधो लगायकें श्रीठाकुरजीकों उठावे ॥ याभाँतिसों वो सेवा करती ॥ ❀ (प्रसंग २ रो) ❀ ॥ बहुरि एकदिन श्रीठाकुरजीके आगें वा अंमाँने दूधको कटोराभरी राख्यो हो ॥ तामेंतें आप श्रीठाकुरजी आरोगत हे ॥ ता समें श्रीगुसाँईजी अंमाँके घर पधारे ॥ सो मंदिरको टेरा सरकाय दर्शन करनलागे ॥ तब श्रीठाकुरजीकों दूध पीवत देखिकें त्योंहीं ॥ आप पाछें फिरि आये ॥ तब वा अंमाँनें कह्यो ॥ जो बाबा पीछें क्यों फिरे ॥ तब श्रीगुसाँईजीनें कह्यो ॥ जो

श्रीठाकुरजी दूध अरोगत हें ॥ तब अंमाँनें कह्यो ॥ जो महाराज वे तो लरिका हें ॥ तुम क्यों नाहीं जात ॥ तापाछें श्रीगुसाँईजी आप श्रीठाकुरजीके दर्शन करिकें अपनें घरकों पधारे ॥ तब आपनें अंमाँसो कह्यो ॥ जो यह प्रसादी दूधहे ॥ सो हमारे घर पठायदीजियो ॥ तब वानें कह्यो ॥ जो राज आपुही आरोगनवारेंहें ॥ सो भावे यहाँ आरोगो ॥ भावे वहाँ आरोगो ॥ तब श्रीगुसाँईजीने घरही भेजवेकी आज्ञा करी ॥ पाछे आप तो घर पधारे ॥ तब वा अंमाँनें वह दूध श्रीगुसाँईजीके घर पठाइदियो ॥ सो वा अंमाँसो श्रीठाकुरजी एसे सानुभव हते ॥ प्रत्यक्ष वातें करते ॥ ओर जो चहिये सो माँगिलेते ॥ सो वह अंम्माँ क्षत्राणी श्रीआचार्यजीकी सेवक एसी परमकृपापात्र भगवदीयही ॥ तातें इनकी वार्ता कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव १७ मी ॥

❀ (वार्ता १८ मी. वैष्णव १८ मो.) ❀

❀ (अथ गजनधावनक्षत्री आगरेके वासी तीनकी वार्ता) ❀

सो वे गजनधावनक्षत्री श्रीनवनीतप्रियजीकी सेवा करते ॥ सो श्रीनवनीतप्रियजी उनसों बहुत सानुभव हते ॥ ओर वा गजनके साथ खेल्यो करते ॥ सो वाकों कबहूँ तो गाय करते ॥ कबहूँ बछरा करते ॥ कबहूँ घोडा करते ॥ कबहूँ हाथी करते ॥ सो जब गजनकों गाय करते ॥ तब तो वा गायको मुख अपने पितांबरसों पोंछते ॥ ओर जब वाकों बछरा करते ॥ तब पकरि राखते ॥ सो चलन न देते ॥ ओर जब वाकों घोडा करते ॥ तब पीठि उपर असवारी करते ॥ ओर जब वाकों हाथी करते ॥ तब आप वाकी ग्रीवा उपर विराजते ॥ एसे खेल करत वा गजनधावनके घोंटू घिसिगये ॥ एसी कृपा श्रीनवनीतप्रियजी वाके उपर करते ॥ ओर जो भोग चहियतो सो वापेतें माँगि लेते ॥ तब एक दिन आगरेमें वाके धर श्रीनवनीत-

प्रियजीनें वासों कही ॥ जो मोकों श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके पास पधराय चलि ॥ तब वानें कही जो आज्ञा ॥ ता समे श्रीआचार्यजी आप श्रीगोकुलमें विराजत हते ॥ तब गजन श्रीनवनीतप्रियजीकों पधरायकें श्रीगोकुल आये ॥ सो तहाँ श्रीआचार्यजीकों प्रणाम करिकें कह्यो ॥ जो महाराज श्रीनवनीतप्रियजी पधारे हें ॥ तब श्रीआचार्यजीनें प्रसंन होयकें कह्यो ॥ जो भलें पधारे ॥ तब श्रीआचार्यजीनें जेसो प्रस्ताव बन्यो ॥ तेसी रीतिसों श्रीनवनीतप्रियजीकों आपनेंघर पधराये ॥ पाछें भोग समर्प्यो ॥ वा पाछें रात्रिकों आप सोंधो बहुत लगायकें श्रीनवनीतप्रियजीकों अपनीं शैयापे ले पोढे ॥ पाछें दूसरे दिन नई शैया सिद्ध करवाई ॥ तापे श्रीनवनीतप्रियजीकों पोढाये ॥ परि वह शैया छोटी भई ॥ तब श्रीनवनीतप्रियजीनें कह्यो ॥ जो मेंतो या शैयापे न पोढूँगो ॥ यहतो शैया छोटी हे ॥ तातें तुमारे पासही पोढूं गो ॥ तब श्रीआचार्यजीनें कह्यो ॥ जो एसें क्यों बने ॥ श्रीनवनीतप्रियजीनें कह्यो ॥ जो कछू बाधा नाहीं ॥ तब श्रीआचार्यजी आप सोंधो लगायकें श्रीनवनीतप्रियजीकों अपनें पासही ले पोढे ॥ ता पाछें दूसरेदिन शैया बडी करवाई ॥ ताके उपर श्रीनवनीतप्रियजी पोढनलागे ॥ पाछें थोडेसे दिन रहिकें आचार्यजी आप अडेलकों पधारे ॥ तब श्रीनवनीतप्रियजीकों पधरायकें गजनधावनहू साथ गये ॥ वा गजनधावन विनाँ श्रीनवनीतप्रीयजीतें एक छिनहू न रह्योजाय ॥ एकदिन श्रीअक्काजीनें विन गजनधावनकों कह्यो ॥ जो श्रीठाकुरजीके लियें तुम पॉन ले आउ ॥ तब गजनधावन एसोतो न कहिसकें ॥ जो श्रीनवनीतप्रियजी मोसों हिले हें ॥ सो में केसें जाऊँ ॥ ताते वे आनबोलेही पॉन लेवेकों ऊठि चले ॥ सो थोरीसी दूरि गये ॥ इतनेमें विनकों ज्वर आयगयो ॥ तातें

वे वहाँई परि रहे ॥ यहाँ श्रीनवनीतप्रियजीकों श्रीअक्काजीनें राजभोग समर्प्यो ॥ तब श्रीनवनीतप्रियजीनें श्रीअक्काजीसों कह्यो ॥ जो मेरे गजनकों बुलावो ॥ तब में भोजन करूँगो ॥ तब विननें तुरंत दूसरे मनुष्य दोय वाकों बुलावनकों पठाये ॥ तब मनुष्य जायकें देखें तो वो थोरीसी दूरि ज्वरसों पर्‍योहे ॥ तब तहाँतें वे बुलाय लाये ॥ तब गजन तुरंत स्नान करिकें मंदिरमें गये ॥ तब वानें श्रीनवनीतप्रियजीसों कह्यो ॥ जो बाबा भोजन क्यों नाहीं करत ॥ अब तो भोजन करो ॥ तब श्रीनवनीतप्रियजीनें भोजन कियो ॥ सो वा गजनधावनसों श्रीनवनीतप्रियजीको एसो स्नेह हतो ॥ तातें वो छिन एक न्यारो न भयो हतो ॥ सो जब न्यारो भयो ॥ तब तत्काल ज्वर चढि आयो ॥ सो जब निकट आयो ॥ तब तत्काल ज्वर जातरह्यो ॥ सो वे गजनधावन श्रीनवनीतप्रियजीके एसे परम कृपापात्र भगवदीय हे ॥ तातें इनकी वार्ताको पार नाहीं ॥ सो कहाँताँई लिखियें ॥ वैष्णव १८ मो ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (वार्ता १९ मी. वैष्णव १९ मो.) ❀

❀ (अथ नारायणदासब्रह्मचारीसारस्वतब्राह्मण ताकी वार्ता) ❀

सो वे नारायणदास महाबनमें रहते ॥ तिनके ठाकुरजी श्रीगोकुलचंद्रमाँजी हे ॥ तिनकी सेवा वे नीकीभाँतिसों करते ॥ ओर विनकें जो गाय हतीं तिनकों घास खवावते ॥ सो धोय पोछिकें भलीभाँतिसों खवावते ॥ ताको कारण ॥ जो श्रीठाकुरजी दूध आरोगें हें ॥ तामें रज न आवे ॥ ओर श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप जब श्रीगोकुल पधारते ॥ तब नित्य प्रातःकाल श्रीगोकुलतें महावन श्रीगोकुलचंद्रमाँजीकी सेवा करिवेकों पधारते ॥ सो सेवा करि भोग समर्पिकें पाछें श्रीगोकुल पधारते ॥ ओर वे नारायणदास जहाँ हाथ पाँव धोइवेकों वरहेमें जाते ॥

सो जा ठोरतें वे माँटी खोदते ॥ ता ठोर माँटीमें द्रव्य निकसतो॥ सो माँटी डारिकें वे ऊठि आवते ॥ परि द्रव्यको स्पर्श न करते ॥ वे एसे त्यागी हते ॥ सो एकदिन जहाँ आप सोवत हते ॥ तहाँ खाटके आसपास द्रव्यके ढेर भये ॥ सो जब सवारें वे ऊठिकें देखें तो खाटके ओर पास ठोरठोर द्रव्यके ढेर परे हें ॥ तव विन नारायणदासनें अपनीं भतीजीसों कह्यो॥ जो बेटी वेगी ऊठि ॥ घरमें ठोरठोर बिगाड भयो हे ॥ सो तुं वुहारीतें वुहारिकें कूडा वाहिर डारि आउ ॥ एसें कहिकें वे आपुतो वाहिर देहकृत्यकों गये ॥ तापाछें विनकी भतीजीनें, त्योंहीं कियो ॥ सव द्रव्य वुहारिकें कूडाकीसीनाँई वाहिर डारि दीनों ॥ ओर जगे सब लीपि डारी ॥ पाछें वे नारायणदास आये ॥ सो स्नान करिकें मंदिरमें गये ॥ सो सेवा शृंगार करिकें श्रीठाकुर-जीके सामनें देखें ॥ तव श्रीगोकुलचंद्रमाँजीनें प्रसंनताको अतिसुंदर दर्शन दियो ॥ सो देखिकें विन नारायणदासनें कह्यो ॥ जो राज यह घटी कहाँकों उनई हे ॥ सो न जाँनीये कहाँ वर्षेगी ॥ पाछें आपुहीनें कह्यो ॥ जो यह घटा श्रीआचार्य-जी महाप्रभुनको सर्वस्व हे ॥ तातें वहाँहीं वर्षेगी ॥ ता पाछें वे श्रीठाकुरजीकों राजभोग समर्पिकें बाहिर आय बेठे ॥ तव विनकों हृदो भरिआयो ॥ जो श्रीठाकुरजी कोनभाँतिसों आरोगत होयगें ॥ एसो विचार मननें लाये ॥ तव विनकी भतीजीनें कह्यो ॥ जो श्रीठाकुरजी श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी काँनि कहेतें ही आरोगतहें ॥ सो तुम तो विनके कृपापात्र सेवकही हो ॥ सो तुमारो कियो श्रीठाकुरजी क्यों न अरोगेंगे ॥ तव वासों नारायणदासनें कह्यो ॥ जो वेटि सुनि जव कोउ वैष्णव आपतेंआप अचानक आय महाप्रसाद लेई ॥ तव जाँनिये जो श्रीठाकुरजी आरोगे ॥ विन नारायणदासको वैष्णवनपे एसो

भाव हतो ॥ ❀ (प्रसंग २ रो) ❀ ॥ वहुरि एकदिन वे नाराय-
णदास श्रीगोकुलचंद्रमाँजीको शृंगार करिकें रसोईमें गये ॥ तहाँ
शृंगारभोगकी खीरि सिद्ध करिकें सीरी करिवेकों थारीमें धरी ॥
इतनेमें एक वैष्णवनें आयकें विनकेपास वधाई पाई ॥ जो
श्रीआचार्यजीमहाप्रभु श्रीगोकुल पधारे हें ॥ सो सुनतहीं ताती
खीरि डवरामें मेलिकें श्रीठाकुरजीकों भोग समर्पिकें वे नारा-
यणदास श्रीआचार्यजीके दर्शनकों श्रीगोकुल आये ॥ तहाँ
आयकें विननें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके चरणारविंद उपर
माँथो धन्यो ॥ तव विनकों श्रीआचार्यजी आपनें श्रीहस्तसों
उठायो ॥ ओर पूछी ॥ श्रीगोकुलचंद्रमाँजीकें कहा समय
हे ॥ तव विननें कही ॥ जो महाराज अवहीं राजभोग समर्पिकें
राजकों पधारे जाँनि तत्काल दर्शनकों आयो हूँ ॥ यह सुनिकें
श्रीआचार्यजी आप तत्काल ऊठिकें महावन पधारे ॥ सो पोंह-
चतहीं स्नान करिकें मंदिरमें जाय हाथ धोय आचमनकी
झारी लेकें भोग सरायवेकों भीतर पधारे ॥ सो देखें तो श्रीठा-
कुरजीको हस्तकमल खीरिसों भन्यो हे ॥ ओर आप खेंचि
रहेहें ॥ तव श्रीआचार्यजी आप श्रीगोकुलचंद्रमाँजीसों पूछी ॥
जो वावा हस्त क्यों खेंचिरहे हो ॥ तव श्रीगोकुलचंद्रमाँजीनें
कह्यो ॥ जो मोकों नारायणदास ताती खिरि डवरामें समर्पिकें
तुमारे दर्शनकों गयो हो ॥ सो खीरि मेरे हाथसों लागी ॥ ताते
मेरो हाथ भुरस्यो ॥ तव मेंनें थोरीसी खीरि छोडिकें हाथ
झटक्यो ॥ तासों सव छींट या मंदिरमें लागी हें ॥ ओर मेरे
ओष्ठहू दाझे हें ॥ सो श्रीगोकुलचंद्रमाँजीके हाथ ओर ओष्ट
राते ह्वे आये हे सो श्रीआचार्यजीकों दिखाये ॥ सो अद्यापि
हाथ ओर ओष्ट राते दर्शन देतहें ॥ पाछे श्रीआचार्यजीमहा-
प्रभु आप खीरिकों पंखासों ठंडी करिकें भोग समर्पिकें वाहिर

आये ॥ तब आप विन नारायणदाससों खिजे ॥ ओर कहे ॥ जो तेनें ताति खीरि श्रीठाकुरजीकों क्योंसमर्पि ॥ तब विननें विनती करी ॥ जो महाराज में राजकों पधारे सुनिकें भोग समर्पिकें दोन्यो ॥ तब श्रीआचार्यजी आपनें आज्ञा करी ॥ जो आज-पाछें एसो काँम कोइदिन मति करियो ॥ पाछें श्रीआचार्यजी आपनें भोग सरायो ॥ तब श्रीगोकुलचंद्रमाँजीनें विनके दोऊ हाथ पकरिकें कह्यो ॥ जो तुम खीरि प्रसाद लेउ ॥ तब श्रीआचार्यजीनें विनती करी ॥ जो महाराज जातिको व्योहार कठिन हे ॥ तब श्रीठाकुरजीनें कह्यो ॥ जो मेरी आज्ञा हे ॥ तातें कछू विचार मति करो ॥ तब जो खीरिको महाप्रसाद हतो ॥ सो आपनें श्रीगोकुलचंद्रमाँजीके आगेंहीं लेलीनो ॥ तादिनतें खीरि अनसखडीमें गिनी जातिहे ॥ सो विन नाराय-णदासके पासतें श्रीगोकुलचंद्रमाँजी या भाँतिसों सेवा करवावते ॥ ❀ (प्रसंग ३ रो) ❀ ॥ तापाछें विन नारायणदासकी देह थकी ॥ सो वहुत अशक्त भई ॥ तब एकदिन श्रीगोकुलचंद्र-माँजीनें विनसों कह्यो ॥ जो नारायणदास तुम कछूं माँगो ॥ तब विननें कह्यो ॥ जो महाराज यह माँगत हों ॥ जो आप श्रीगुसाँईजीके घर पधारिकें सेवा करवावो ॥ कारण जो आप दूसरी ठोर सुख न पावोगे ॥ तातें श्रीगुसाँईजीके घर आपकी सेवा आछि भाँतिसों होयगी ॥ सो विननें यही माँग्यो ॥ जो श्रीठाकुरजी सुख पावें ॥ परि श्रीठाकुरजीतो वाके घरही विराजे ॥ पाछें केतेकदिन रहिकें विन नारायणदासकी देह छूटी ॥ तापाछें श्रीगोकुलचंद्रमाँजीनें केतेकदिनताँई ॥ कृष्णदासस्वामीके पास सेवा करवाई ॥ तापाछें आप श्रीगुसाँईजीके घर मथुराँजी पधारे ॥ सो श्रीगुसाँईजीनें अपने पाँचमें पुत्र श्रीरघुनाथजीके माथें सेवाकों पधराये ॥ सो वे नारायणदास ब्रह्मचारी श्रीआ-

चार्यजीमहाप्रभुके सेवक एसे परम कृपापात्र भगवदीयहे ॥ तातें इनकी वार्ता कहाँताँई लिखियें ॥ वैष्णव १९ मी ॥ ७ ॥

❀ (वार्ता २० मी. वैष्णव २० मी.) ❀

❀ (अथ एक क्षत्राणी महावनमें रहती ताकी वार्ता) ❀

सो एकसमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु ॥ आप पृथ्वि परिक्रमाँ करत महावन पधारे ॥ तब वहाँ एक क्षत्राणि आपकी सेवक भई ॥ वाकों तहाँ चारि स्वरूप प्राप्त भये हे ॥ सो स्वरूप वानें श्रीआचार्यजीके आगें लाय राखे ॥ तिनके नाँम ॥ १ श्रीनवनीतप्रियजी ॥ २ श्रीगोकुलचंद्रमाँजी ॥ ३ श्रीललितत्रिभंगीजी ॥ ४ श्रीलाडिलेजी ॥ सो ये चाऱ्यो स्वरूप आपने वापेते लेके चाऱ्यो वैष्णवनके माथे पधराये ॥ ताके नाम ॥ १ श्रीनवनीतप्रियजीको गजनधावनक्षत्रीके माथें पधराये ॥ २ श्रीगोकुलचंद्रमाजीको नारायणदासब्रह्मचारीके माथे पधराये ॥ ३ श्रीललितत्रिभंगीजीको देवाकपूरक्षत्रीके माथे पधराये ॥ ४ श्रीलाडिलेजीकों जीयदासक्षत्रीके माथे पधराये ॥ यारीतिसो अपने चाऱ्यो स्वरूप ॥ इन चाऱ्यों वैष्णवनके माथे पधराय दिये ॥ ओर आज्ञा किये ॥ जो ये मेरो सर्वस्व हे ॥ सो तुमारे माथे पधराये हें ॥ तातें इनकी सेवा नीकीभाँतिसों करियो ॥ ओर जब तुमतें सेवा न होय ॥ तब हमारे घर पधराय जैयो ॥ सो सुनिकें वे वैष्णव जो आज्ञा कहि दंडवत प्रणाम करि बडे हर्पसो श्रीठाकुरजीको अपने घर पधराय ले गये ॥ तामेंके श्रीनवनीतप्रियजीतो कछूकदिन गजनधावनते सेवा करवायकें पाछे श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके माथें पधारे ॥ सो प्रकार विस्तारसो गजनधावनकी वार्तामें कहि चूके ॥ ओर श्रीगोकुलचंद्रमाँजीने बिन नारायणदासतें केतेकदिन सेवा ले पाछें कृष्णदासस्वामीपास कछुकदिन सेवा करवाई ॥ तापाछें आप श्रीगु-

सांईजीके घर पधारे ॥ तब विनकों आपनें श्रीरघुनाथजीके माथें पधराये ॥ सो प्रकार नारायणदासकी वार्तामें कह्यो ॥ ओर श्रीललितत्रिभंगीजी अंतर्ध्यान भये ॥ सो प्रकार देवाकपूरक्षत्रीकी वार्तामें आवेगो ॥ ओर श्रीलाडिलेजीको प्रकार जीयदासक्षत्रीकी वार्तामें आवेगो ॥ अब ए सब स्वरूप श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके कुलमें विराजत हें ॥ तातें वह क्षत्राणी एसी परम कृपापात्र भगवदीय ही ॥ जाकों चारि स्वरूप महावनमें प्राप्त भये ॥ तातें वाकी वार्त्ता कहाँ ताँई लिखियें ॥ वैष्णव ॥ २० ॥

❀ (वार्ता २१ मी. वैष्णव २१ मो)❀

❀(अथ जीयदासक्षत्री सूरतिके वासी तिनकी वार्ता)❀

सो उन जीयदासके माथें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें कृपा करिकें जो श्रीलाडिलेजीकी सेवा पधराय दीनीं हती ॥ सो विनपास श्रीलाडिलेजीनें मात्र चारि प्रहर सेवा करवाई ॥ पाछें वाकी देह छूटिगइ ॥ तब वा जीयदासके पुरुषोत्तमदास ओर छबीलदास यह दोय बेटा हते ॥ तिननें सेवा कीनीं ॥ विन दोऊ भाईनके संतति न हती ॥ तातें विनके पाछें विनके माँमाँ कृष्णदासचोपडा करिकें हते ॥ तिनके माथें श्रीलाडिलेजी पधारे ॥ सो विननें भलिभांतिसों सेवा कीनीं ॥ तब एकसमें वा गाममें महामारी आई ॥ ता उपद्रव तें विन कृष्णदासके सब कुटुंबीनकी देह छूटिगइ ॥ तब वे कृष्णदास आप अकेले रहे ॥ ताते विनके मित्र हरजी तथा मथुरामल्ल हते ॥ तिनके घर वे जाय रहे ॥ सो तहाँ कृष्णदासने ओर हरजीभाईनें मिलकें श्रीलाडिलेजीकी सेवा कीनीं ॥ सो जब कृष्णदासकी देह छूटी ॥ तापाछें हरजीभाईनें डेढवर्षलों सेवा कीनीं ॥ तिनके पाछें आप श्रीलाडिलेजी श्रीगुसांईजीके कुलमें पधारे हें ॥ सो वे जीयदासक्षत्री श्रीआचार्यजीके सेवक एसे परम कृपापात्र भगवदीय हे ॥ तातें इनकी वार्ता कहाँताँई लिखियें ॥ वैष्णव २१ ॥

❀ (वार्ता २२ मी. वैष्णव २२ मो) ❀

❀ (अथ देवाकपूरक्षत्री कडामें रहते तिनकी वार्ता) ❀

सो विन देवाकपूरक्षत्रीके माथें ॥ श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें कृपा करिकें श्रीललितत्रिभंगीजीकी सेवा पधराय दई हती ॥ तिनकी जबलोंवाको शरीर रह्यो ॥ तबलों वानें भली भाँतिसो सेवा कीनीं ॥ पाछे जब वाकी देह छूटी ॥ तब वाकी स्त्रीने सेवा कीनीं ॥ सो केतेकदिन रहिकें जब वा स्त्रीकीहू देह छूटी ॥ तब वाकों चारि बेटा हते ॥ सो संस्कारादि क्रिया करि आये पाछें ॥ मंदिर उघारिकें देखें तो ॥ श्रीठाकुरजी नाहीं ॥ ओर सब सामुग्री ज्योंकी त्यों धरी हे ॥ जो श्रीठाकुरजी अंतर्ध्यान भये सो जानी न परी ॥ वा देवाकपूरके तो चारि बेटा हते ॥ परि उनतें सेवा न करवाई ॥ श्रीठाकुरजीतो केवल स्नेहके वश हें ॥ सो स्नेह करिकें श्रीआचार्यजीकी कृपात वों देवाकपूरकी स्त्रीलों श्रीठाकुरजीको संबंध रह्यो ॥ पाछें भगवदइच्छा एसीही भई ॥ सो वे देवाकपूर ओर वाकी स्त्री श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक एसे परम कृपापात्र भगवदीय हे ॥ तातें इनकी वार्ता कहाँताँई लिखियें ॥ वैष्णव २२ मों ॥ ७ ॥

❀ (वार्ता २३ मी. वैष्णव २३ मो.) ❀

❀ (अथ दिनकरदाससेठी तिनकी वार्ता प्रारंभः) ❀

सो विन दिनकरदाससेठीकों कथा श्रवण करिवेकी रुची बहुत हती ॥ सो जहाँ श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप कथा कहते ॥ तहाँ वे दिनकरदाससेठि नित्य सुनते ॥ सो एकदिन दिनकरदाससेठि आप रसोई करत हते ॥ सो चून सानिकें उपरा बरायदीये हते ॥ ओर लीटि करि राखीं हतीं ॥ इतनेमें श्रीआचार्यजीको सेवक एक जलघरिया ॥ श्रीठाकुरजीके लियें जल भरिवेकों आयो ॥ तब दिनकरदाससेठिनें वासों पूछी ॥ जो श्रीआचा-

र्यजीमहाप्रभु आप कहा करत हें ॥ तब वानें कह्यो ॥ जो आपनें पोथी खोलि हे ॥ अब कथा कहेंगे ॥ तब दिनकरदाससेठिनें अंगाखरीं सेकीं नाहीं ॥ ओर काचीहीं लेलीनीं ॥ ओर बेगिही ऊठ हाथ धोय सुपारी ले वस्त्रपहरि तुरंत जायकें कथा सुनीं ॥ पाछें जब श्रीआचार्यजी आप कथा कहि रहे ॥ तब वा जलघरियानें श्रीआचार्यजीसों कह्यो ॥ जो महाराज आज दिनकरदाससेठि काचीही अंगाकरीं खाय आयेहें ॥ सेकीहू नाहीं ॥ तब आपनें वा सेठिसों पूछी ॥ जो दिनकरदाससेठि तुम काची अंगाकरीं क्यों ले आयेहो ॥ तब विन सेठिनें विनती करी ॥ जो महाराज अंगाकरीं तो नित्य लेउँगो ॥ परि कथामृत कहाँ पाँनकरतो ॥ तब श्रीआचार्यजी आप कहें ॥ जो आजतें हमारी कथाके श्रोता तुमही हो ॥ तातें जब तुम रसोई करि भोग समर्पि महाप्रसाद ले पोंहोंचिकें आवोगे ॥ तबहीं हम पोथी खोलेंगे ॥ तुमारे आये बिनु हम कथा न कहेंगें ॥ तातें तुम निश्चिततासों पोंहोंचिकें आयोकरियो ॥ पाछे तादिनतें वे दिनकरदाससेठि बेगिही रसोई करिकें भोग समर्पि प्रसादलेकें कथाके समें आवते ॥ सो वे दिनकरदाससेठि श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक एसे परमकृपापात्र भगवदीय हे ॥ तातें इनकी वार्ता कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव २३ मो ॥

❀ (वार्ता २४ मी. वैष्णव २४ मो.) ❀

❀ (अथ मुकुंददासकायस्थ सकसेनीं तिनकी वार्ता) ❀

वे मुकुंददास आप कवि हते ॥ सो कवित्त करते ॥ विननें श्रीआचार्यजी, श्रीगुसाँईजी, श्रीठाकुरजीके मांथें बोहोत कवित्त किये ॥ ताको एक "मुकुंदसागर" ग्रंथ कियो हे ॥ सो एकसमे वे मुकुंददास उज्जेनिके कारकून होयकें गये ॥ तब तहाँके सब पंडित आय मिले ॥ विननें कह्यो ॥ जो आप हमारे पास

श्रीभागवत सुनो ॥ तब मुकुंददासनें कही ॥ जो तुम हमारी श्रीभागवत जाँनत हो ॥ तब विननें पूछी ॥ जो तुमारो श्री-भागवत कहा न्यारो हे ॥ तब मुकुंददासनें एकश्लोक कह्यो ॥ ताको व्याख्यान महीनाँ छे लों विननें पंडितनकों सुनायो ॥ परि आपनें काहूके पास कछू सुन्यो नाहीं ॥ कदाचित्त कोऊ पंडित व्याख्यान करतो ताकों वे वहुत भाँतिसों दूपण देते ॥ कारण जो विनको श्रीसुवोधिनीजीमें वोहोत प्रवेश हतो ॥ ओर श्रीआचार्यजीपे पूर्ण विश्वास हतो ॥ ताते विनकों सुवो-धिनीजी फलद्रूप भई हती ॥ सो केतेकदिन पाछें विन मुकुंद-दासकी देह उज्जेनिमेंही छूटी ॥ तब काहू वैष्णवनें श्रीआचार्यजी-के आगें यह समिचार कहे ॥ जो महाराज मुकुंददासनें अवंतिका पाई ॥ तब आप श्रीमुखतें कहें ॥ जो एसें मति कहो ॥ ओर एसें कहो ॥ जो अवंतिकानें मुकुंददास पाये ॥ या प्रकार आप विन मुकुंददासकी सराहनों करते ॥ सो वे मुकुंददासकायस्थ श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक एसे परम कृपापात्र भगवदीय हे ॥ ताते इनकी वार्ता कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव २४ मो ॥

❀ (वार्ता २५ मी. वैष्णव २५ मो.) ❀

❀ (अथ प्रभुदासजलोटाक्षत्री सिंहनदके वासी तिनकी वार्ता) ❀

विन प्रभुदासजलोटाक्षत्रीके सेव्य ठाकुरजी श्रीमदनमोहनजी नगर सिकंदरपुरमें विराजतहे ॥ एकसमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप मथुराँ पधारे ॥ तब वे प्रभुदास साथ हते ॥ सो तहाँ श्रीआचार्यजी आप विश्रांतिघाटपे श्रीयमुनाँस्नान करिकें संध्या वंदन करत हते ॥ तहाँ वे प्रभुदास ओर चारि वैष्णव बेठे हते ॥ तहाँ कृष्णचेतन्यके सेवक रुपसनातनहू श्रीआचार्यजीके दर्शनकों आये हते ॥ तिननें आपसों पूछी ॥ जो महाराज ये वैष्णव कोन हें ॥ तब आपनें कह्यो ॥ जो ये हमारे सेवक हें ॥

तब वानें कह्यो ॥ जो ये एसे दुर्बल क्यों रहत हें ॥ तब श्री-आचार्यजी आप कहें ॥ जो में तो इनकों बहुत बरज्यो ॥ जो या मार्गमें मति परो ॥ परि इननें मेरो कह्यो न मॉंन्यो ॥ ताको यह फल भोगत हें ॥ सो या बातको मर्म वे रूपसनातन कछू समझे नाहीं ॥ तब चुप्प होयकें श्रीआचार्यजीकों प्रणाम करिकें वे अपने स्थानकों गये ॥ तापाछें केतेकदिनमें रूपनासतनके संगको एक वैष्णव श्रीजगंनाथरायजीके दर्शनकों गयो ॥ तहाँ वाकों कृष्णचेतन्य मिले ॥ तब विननें वा वै वैष्णवसों श्रीआ-चार्यजीमहाप्रभुनके कुशल समाचार पूछे ॥ जो वे आप नीकें हें ॥ ओर तुमकों कहाँ मिले हे ॥ तब वानें कह्यो ॥ जो महा-राज श्रीआचार्यजी आप श्रीमथुराँ पधारे हते ॥ तब मोकों विश्रांतिउपर मिले हते ॥ सो वे बहुत नीकें हते ॥ तहाँ आपके सिष्य रूपसनातनहू आये हते ॥ तिननें वहाँ श्रीआचार्यजी आपसों पूछी ॥ जो महाराज आपके सेवक दूबरे क्यों हें ॥ तब आप श्रीआचार्यजीनें कह्यो ॥ जो हमनें तो इनतें कहीही ॥ जो तुम या मार्गमें मति परो ॥ सो इननें न मॉंन्यो ॥ ताको फल ये भोगत हें ॥ ताकों हम कहा करें ॥ यह बात सुनिकें कृष्णचैतन्य मर्म समझे ॥ तातें विनकों मूर्छा आई ॥ सो एक मुहूर्तलों रही ॥ पाछें जब वे सावधॉंन भये ॥ तब फेरि वा सेवकसों पूछी ॥ जो तेनें कहा बात कही ॥ तब फेरि वानें वोही कह्यो ॥ जो श्री-आचार्यजीनें कह्यो ॥ जो या मार्गमें मति परो ॥ तब फेरि विन कृष्णचैतन्यको सुनिकें मूर्छा आई ॥ सो द्वे मुहूर्तलों रही ॥ एसें तीनवार विननें पूछी ॥ सो तीन्योवार विनकों मूर्छा आई ॥ पाछें जब चोथीवार वासों पूछी ॥ तब वानें कह्यो ॥ जो अब मोपे कही नाहींजात ॥ तब कृष्णचैतन्यनें कही जो यह बात एसी हे ॥ जो केवल विरही होय सोही

जाँनें ॥ वो रूपनासतन कहा जाँने ॥ ❀ (प्रसंग २ रो) ❀ ॥ एक-दिन वा प्रभुदासनें वेगी रसोई करी दारि अंगाकरि करी ॥ सो दारितो काची रही ॥ ओर अंगाकरि जरिगये ॥ तब वाके मनमें आई ॥ जो एसी सामुग्री श्रीठाकुरजीकों कहा समर्पूं ॥ ताते वामें श्रीठाकुरजीको चरणोदक मेलिकें प्रसाद लेलियो ॥ ओर श्रीठाकुरजीतो वाटही देखत रहे ॥ जो प्रभुदास अब भोग समर्पेगो ॥ सो में अरोगूँगो ॥ परि वानें भोग न समर्प्यो ॥ तब श्रीठाकुरजीनें श्रीआचार्यजीसों कह्यो ॥ जो आज मोकों प्रभुदासनें भोग न समर्प्यो ॥ मेंनें बहूत वाट देखी ॥ परि वानें भोग समर्प्यो नाहीं ॥ पाछें जब उत्थापनके समय श्रीआ-चार्यजीके दर्शनकों प्रभुदास आये ॥ तब आपने वासों कह्यो ॥ जो आज तेंनें श्रीठाकुरजीकों समर्पेविनाँ प्रसाद क्यों लियो ॥ तब वानें साँची वात कही ॥ जो महाराज रसोईमें दारि काची रही ॥ ओर अंगाकरि जरिगये ॥ तातें मेंनें न समर्पे ॥ केवल-वामें चरणोदकही मेलिकें मेंनें महाप्रसाद लियो ॥ तब श्री-आचार्यजीनें कह्यो ॥ जो श्रीठाकुरजीने तो वडीदेर ताँई तेरी वाट देखी ॥ जो प्रभुदास अब भोग समर्पेगो ओर में आरोगूँ-गो ॥ तातें तेंनें एसी रसोई क्यों करी ॥ तब वानें कही ॥ जो महाराज चूकतो परी ॥ तापाछें वे सावधाँनतातें रसोई करते ॥ ॥ ❀ (प्रसंग ३ रो) ❀ ॥ ओर एकसमय श्रीआचार्यजीमहाप्रभु-आप व्रजमें पधारे ॥ तब प्रभुदास साथ हते ॥ सो एकदिन श्रीआचार्यची आपनें श्रीगोवर्धनके निकट स्थलभोग समर्प्यो ॥ सो सरायो ॥ तब आपनें प्रभुदाससो आज्ञा करी ॥ जो प्रसाद लेउ ॥ तब वाने कह्यो ॥ जो महाराज अबहीमेंनें स्नान नाहीं कियो ॥ तब आपनें प्रभुदासकों श्लोक पढिकें सुनायो ॥ सो (श्लोक—वृक्षेवृक्षे वेणुधारी पत्रेपत्रे चतुर्भुजः ॥ यत्र वृंदावनं

तत्र लक्ष्यालक्ष्यकथा कुतः ॥ १ ॥ रजसोऽपि जलं पुण्यं जलादपि रजो वरम् ॥ यत्र वृंदावनं तत्र स्नातास्नातकथा कुतः ॥) ये श्लोक पढिकें वाकों वृक्षवृक्ष विषे वेणुधारी पत्रपत्र विषे चतुर्भुज ॥ या भाँतिको श्रीठाकुरजीके स्वरूपको दर्शन करवायो ॥ एतादृश व्रजको स्वरूप दिखायो ॥ तब दंडवत करिकें प्रभुदासनें वो प्रसाद लियो ॥ सो वाके उपर श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी एसी परम कृपा हती ॥ जो वाकों व्रजके स्वरूपको प्रत्यक्ष दर्शन करवायो ❀ (प्रसंग ४ थो) ❀ ॥ ओर एकसमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप मंदिरमें हते ॥ तब आपके मनमें आई ॥ जो आज श्रीठाकुरजीकों दही समर्पिये तो आछो ॥ ता समें प्रभुदास बाहिर हते ॥ तिननें आपके मनकी जाँनीं ॥ तब वे गॉममें दोरे ॥ इतनेमें विनकों एक अहीरिनी मिली ॥ तासों विननें कह्यो ॥ जो तेरें दही हे ॥ तब वानें कह्यो ॥ जो हाँहाँ हे ॥ तब प्रभुदासनें कह्यो ॥ जो लाउ ॥ तब वह दही ले आई ॥ तब प्रभुदासनें पूछी ॥ जो याको मोल कहा ॥ तब वानें कह्यो ॥ जों तूँ कहा देइगो ॥ तब प्रभुदासनें कही ॥ जो तूँ माँगेगी सो देउँगो ॥ तब वानें कह्यो ॥ जो एक टका दे ओर कहा मुक्ति देइ गो ॥ तब वासों प्रभुदासनें कह्यो ॥ जो यह टका ले ॥ ओर तोकों मुक्तिहू दीनीं ॥ तब अहीरनीनें कही ॥ जो तूँ मोकों लिखि दे ॥ जो मुक्ति दीनीं ॥ तब प्रभुदासनें वाकों मुक्ति लिखि दीनीं ॥ सो कागद वो अपनी साडीके छेडामें सदा प्रेमसूँ बांधेंहीं संग राखती ॥ पाछें वे दही लेकें घर आये ॥ सो भीतर मंदिरमें दियो ॥ सो दही श्रीआचार्यजीनें श्रीठाकुरजीकों समर्प्यों ॥ सो श्रीठाकुरजी अरोगे ॥ वो दहि अति सुंदर स्वादिष्ट हतो ॥ पाछे साँझकेसमें गुसाँईदास करके एक वैष्णव श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके

दर्शनकों आयो ॥ तब वह सब बात वानें श्रीआचार्यजीसों कही ॥ जो महाराज प्रभुदासनें आज वा अहीरीकों दहीके बदले मुक्ति लिखि दीनीं ॥ तब श्रीआचार्यजी आप प्रभुदाससों कहें ॥ जो प्रभुदास आजको दही अति सुंदर हतो ॥ सो तेनें वाको मोल कहा दियो ॥ तब वानें विनति करी ॥ जो महाराज अहीरीनें एक टका ओर मुक्ति माँगी ॥ सो मेनें तो वाकों दोनों दिये ॥ तब आप श्रीआचार्यजी कहें ॥ जों तेने वाकों कछू न दिये ॥ तब प्रभुदासनें कह्यो ॥ जो महाराज वानें जो माँग्यो सो दियो ॥ ओर जो वह भक्ति माँगती ॥ तो भक्ति देतो ॥ वा अहीरीनें अपनी सखीकों सवेरकी सब बात कहके वो प्रभुदासको लिख्यो भयो मुक्तिको पत्र ॥ जो वानें अपनी साडीके छेडामें गाँठी बाँधि राख्यो हतो ॥ सो दिखायो ॥ तब वानें कही ॥ जो अरी विरि तोकों तो वानें ठगि लीनीं ॥ एसें कहूँ मुक्ति होत हे ॥ बडे परिश्रमसों मुक्ति मिलत हे ॥ तब वानें अपनी सखीतें कह्यो ॥ जो तूँ कहा जानें वे तो बडे भगवद भक्त हे ॥ विनको वचन सत्य हे ॥ तब केतकदिन पाछें वा अहीरीकी देह छूटी ॥ तब यमदूत आये इतनेंमें विष्णुदूतहू आय पोहोंचे ॥ सो वे आपुसमें झगडन लागे ॥ तब यमदूतनसों विष्णुदूतननें कही ॥ जो याकों तो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक प्रभुदासकी दीनी मुक्ति हे ॥ सो कागद याकी साडीके खूँटमें बंध्यो हे ॥ सो यह बात अहीरीके सगे सोदरे सब सुनें ॥ परि आंखिनसों न देखें ॥ पाछें जब वाकों विष्णुदूत ले जानलगे ॥ तब वानें विनसों विनती करी ॥ जो महाराज मेरी सखीकों आप दर्शन देउ ॥ क्यों जो वाकूँ अविश्वास हे ॥ तब विष्णुदूतननें कृपा करिकें वाकी सखीकूँ हू दर्शन दियो ॥ तब वहहू कहनलागी ॥ जो मोकों ले चलो ॥ तब विन विष्णुदूतननें कह्यो ॥ जो हमरे हाथ कहा हे ॥ हमतो आज्ञाधारी हें ॥

तातें तुम प्रभुदाससों कहो ॥ तब वह अहीरिनीकी सखी प्रभुदासके पास दोरीआई ॥ तब प्रभुदासनें वाकों श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके पास नाँम दिवायो ॥ तब वाहूको हू कार्य भयो ॥ पाछें विष्णुदूत जो वा अहीरीकों लेगये ॥ ताकों मुक्ति भई ॥ जब पाछें वा अहीरीके सगे कुटुंबीननें वाकी देहकों अग्नीसंस्कार करती विरियां वाकी साडीके खुँटमें गाँठि देखी ॥ सो खोलिकें देखें तो वामें एक कागद पायो ॥ सो बाँचें तो वामें मुक्ति लिखी ही ॥ सों बाँचिकें वे रोवततें रहे ॥ ओर आपुसमें कहनलागे ॥ जो वाकीतो सद्गती भई ॥ सो वे प्रभुदास श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक एसे परम कृपापात्र भगवदीय हे ॥ जिननें दहीके वदले अहीरीकों मुक्ति दीनीं ॥ तातें इनकी वार्ता अनिर्वचनी हे ॥ सो कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव २५ मो ॥

❀ (वार्ता २६ मी. वैष्णव २६ मो.) ❀

❀ (अथ प्रभुदासभाट सिंहनदके वासी तिनकी वार्ता) ❀

सो वे प्रभुदासभाट अपनें श्रीठाकुरजीकी सेवा बोहोत नीकीभाँतिसों करते ॥ सो विननें बोहोतदिन ताँइ सेवा कीनीं ॥ पाछें जब वे वृद्ध भये ॥ तब एकदिन जानवेमें आवनलग्यो ॥ जो इनकी देह दिनपांच सातमें छूटेगी ॥ जब विनकी सावधानता छूटी ॥ तब सगरे कुटुंबी मिलिकें विनकों पृथोदक तीर्थपे ले चले ॥ जब तीर्थ आयो ॥ तब प्रभुदास सावधाँन भये ॥ ओर आँखीं खोलिकें देखें तो पृथोदक तीर्थ हे ॥ तब विननें सबनतें कह्यो ॥ जो मोकों यहाँ क्यों लाये हो ॥ तब उननें कह्यो ॥ जो यह पृथोदक तीर्थ हे ॥ हम तुम्हारी अंत अवस्था देखिकें यहाँ लाये हें ॥ तब वानें कह्यो ॥ जो मेरो या तीर्थसों कहा काँम हे ॥ में तो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको सेवक हों ॥ मोकों यह तीर्थ कहा कृतार्थ करेगो ॥ मोकों यहाँ एकवर्ष लों राखोगे ॥ तोहू मेरो

शरीर यहाँ न छूटेगो ॥ तातें मोको सिंहनद लें जाउ ॥ जब में अपनें श्रीठाकुरजीके चरण देखूंगो तब मेरी देह छूटेगी ॥ तोहू सबननें विनकों दिन पांच सातलों पृथोदक तीर्थपे राखे ॥ सो दिनँ दिन प्रभुदासतो सावधाँन होत गये ॥ तब वे घरके फेरि विनकों पाछे सिंहनद लेआये ॥ तब विननें अपनें सेव्य श्रीठाकुरजीकों देखे ॥ तब दंडवत करिकें ॥ प्रभुदासनें श्रीठाकुरजीसों कह्यो ॥ जो आपकों श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें मेरे माथें पधराये हें ॥ ओर ये बावरे लोग आपको आश्रय ॥ छुडायकें मोकों तीर्थके आश्रयमें ले गये ॥ परि श्रीआचार्यजीमहाप्रभु एसी क्यों करें ॥ जो मेरी देह वहाँ छूटे ॥ पाछें विननें स्नानकरिकें श्रीठाकुरजीको सेवा शृंगार करिके बेगि राजभोग समर्प्यो ॥ सो समयानुसार भोग सराय श्रीठाकुरजीको अनोसर किये ॥ पाछे विनने सबनते कह्यो ॥ जो तुम सबकोऊ बेगि बेगि प्रसाद लेलेउ ॥ कारण मेरी देह तापाछे छूटेगी ॥ जब सब महाप्रसाद ले चूके ॥ तब प्रभुदासने सबनते जे श्रीकृष्ण कह्यो ॥ ओर देह छोडी ॥ तापाछे सिंहनदमें एक कीर्ति चोधरी हतो ॥ सो वो प्रभुदासकी निंदा करन लाग्यो ॥ जो देखो भाई प्रभुदास तीर्थ पृथोदकतें फिरि आयो ॥ ओर सिंहनदहीमें देह छूटी ॥ एसे वो नित्य निंदा करतो ॥ सो एकदिन रात्रिकों जहाँ वो सोयो हो ॥ तहाँ कोई चारिजने हाथमें मोगर लेकें आये ॥ सो वा कीर्तिचोधरीके मारि चूर्णकिये ॥ तब वानें कह्यो ॥ जो तुम मोकों क्यों मारत हो ॥ तब विनने कह्यो ॥ जो तुं प्रभुदासकी नित्य निंदा करत हे ॥ सो जो आजतें करेगो तो नित्य तेरे येही हाल हें ॥ पाछें वा कीर्तिचोधरीनें बहुत मनुहार कीनीं ॥ ओर कह्यो ॥ जो आजतें में कबहूँ वाकी ॥ निंदा न करूंगो ॥ तब विन दूतननें वाकों छोड्यो ॥ तादिन पाछें वो प्रभुदासकी

कहुँ बात चले ॥ तब वो कहे ॥ जो वेतो बडे महापुरुष हें ॥ तब वाकों सबलोग कहनलागे ॥ जो पहिलें तो तुम विनकी निंदा बोहोत करते ॥ अब क्यों स्तुति करतहो ॥ तब उन सबनकों वा चोधरीनें आपनी देहकी अवस्था दिखाई ॥ ओर कह्यो ॥ जो मेरे रात्रिकों काहूनें मारि हाड चूर्ण किये हें ॥ तातें भगदीयनकी निंदा न करनीं ॥ जो करे तो या लोकमें यह हाल होंय ॥ ओर परलोकमें अघोर नरकमें जाय ॥ सो वे प्रभुदासभाट श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके सेवक एसे परम कृपापात्र भगवदीय हे ॥ तातें इनकी वार्ता कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव २६ मो ॥ ७ ॥

❀ (वार्ता २७ मी. वैष्णव २७ मो.) ❀

❀ (अथ पुरषोत्तमदास आगरेमें रहते तिनकीवार्ता) ❀

एकसमें श्रीगुसाँइँजी आप आगरे पधारे ॥ तब तहाँ राजघाटपे वा पुरुषोत्तमदासके घर उतरे ॥ तब वाकी स्त्री छिपिरही ॥ तब श्रीगुसाँईजीनें पुरुषोत्तमदाससों पूछी ॥ जो तेरी स्त्री कहाँ हे ॥ तब वानें हाँसीमें कह्यो ॥ जो राज जनेऊ टूटी होयगी ॥ पाछें श्रीगुसाँईजीने वेगि रसोई करी ॥ तामें दारि भात शाक चारपांच करे ॥ पाछें रोटी करिवेकी बेर वा पुरुषोत्तमदासकी स्त्री आई ॥ ताकों श्रीगुसाँईजीनें पूछी ॥ जो तूँ कहाँ हती ॥ तब वाने कह्यो ॥ जो राज कॉंम करत हती ॥ पाछें वानें आपके पास वेठिकें रोटी बेलि दीनीं ॥ सो जब समग्र रसोई सिद्ध भई ॥ तब आपनें श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यो ॥ पाछें भोग सरायो ॥ तब वोही थार कटोरा पडघीन समेत सब पात्रनमें वानें आप सों भोजनकी विनती करी ॥ तब श्रीगुसाँईजीनें कह्यो ॥ जो यहतो श्रीठाकुरजीके पात्रहें ॥ इनमें भोजन केसें कियो जाय ॥ तातें हमतो इन पात्रनमें भोजन न करेंगे ॥ तब पुरुषोत्तमदासकी स्त्रीनें कह्यो ॥ जो महाराजकी कृपातें द्रव्य कछू निघट्यो नाहीं ॥

ओर नये पात्र मंगवावेंगे ॥ तब वानें वाही समें जब नये पात्र मंगवाये ॥ तब श्रीगुसाँईजी उन पात्रनमें भोजन करिविकों बेठे॥ तब वो पंखा करनलागी ॥ ओर कहे ॥ जो महाराज ओर सामुग्री आरोगो ॥ तब आप कहें ॥ जो मोकूं रुचेगो सो अरोगूंगो ॥ तब पुरुपोत्तमदासनें कह्यो ॥ जो महाराज नंदरायजीके घर केसें अरोगत हे ॥ एसें कहिकें विन स्त्रीपुरुपन दोऊ जनेननें आपकों बोहोत सामुग्री आरोगाई ॥ सो विनके संकोचके लियें आप श्रीगुसाँईजी कहते ॥ जो तुम कहोगे सोइ हम करेंगे ॥ सो भोजन किये पाछें विननें अपनें सेव्य श्रीठाकुरजीकी शैया उपर श्रीगुसाँइजीकों पोढिवेकी कही ॥ तबहू आपनें कही ॥ जो हम श्रीठाकुरजीकी शैयापे न पोढेंगे ॥ तब विन दोउननें कही ॥ जो महाराज हम शैयाहू ओर नइ मंगावतहें ॥ अेसें कहिकें श्रीठाकुरजीके लियें ओर नई शैया लेन मनुष्य पठायेकें श्रीगुसाँइजीकों पेहेली शैयापे पोढाये ॥ तब पुरुपोत्तमदास चरणसेवा करन लागे ॥ ओर विनकी स्त्री पंखा करन लागी ॥ पाछें घडी एक रहिकें श्रीगुसाँईजीनें ऊनसों कह्यो ॥ जो अब तुम जायकें महाप्रसाद लेऊ ॥ तब विन दोऊ जनेननें कह्यो ॥ जो महाराज प्रसादतो नित्य लेत हें ॥ परि यह सेवा कब करेंगे ॥ सो वे स्त्रीपुरुप श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक एसे परम कृपापात्र भगवदीय हे ॥ जिननें श्रीगुसाँइजीकेलियें वे पात्र शैया न्यारेही राखे हते ॥ सो जब आप वहाँ पधारते तब वाको उपयोग करते ॥ जिनके उपर श्रीगुसाँईजी आप सदा प्रसंन रहते ॥ तातें इनकी वार्ता कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव २७ मो ॥

❀ (वार्ता २८ मी. वैष्णव २८ मों.) ❀

❀ (अथ त्रिपुरदासकायस्थ सेरगढके वासी तिनकी वार्ता ❀

सो वा त्रिपुरदासको श्रीनाथजीके उपर बोहोत ममत्व हतो ॥

जहाँ वे वेठते ठाढेहोते तहाँ वा दिशाकों पीठि न देते ॥ सो वे त्रिपुरदास एक तुरककें चाकरी करते ॥ तातें परगनाँ वोहोत कमाए हते ॥ तामेंतें जो कछू वस्तु शाक सामुग्री आवती सों वे पेहेलेंतो श्रीनाथजीकों पोहोंचती करते ॥ पाछे आप लेते ॥ सो एसें करत एकवेर विनकों तुरकनें वंदीखानेंमें दिये ॥ ओर कह्यो ॥ जो मेरो द्रव्य तेनें वहुत खायो हे ॥ तापाछें जव वह तुरक रात्रिकों सोयो ॥ तव कोऊ चारिजनें मुगदर लेकें आये ॥ विननें वाकों खाटपेतें ओंधो पारिकें वोहोत मा-न्यो ॥ तव वानें कह्यो ॥ जो तुम मोकों क्यों मारत हो ॥ तव उननें कह्यो ॥ जो तेंने त्रिपुरदासकों वंदीखाँनेंमें क्यों दीनों हे ॥ सो जहाँताँई तूँ विनकों न छोडेगो तहाँताँई तोंकों एसेंई मा-रि चूरकरेंगे ॥ तव वह तुरक हाहा करिकें नाक भूमिमें घासिकें कहनलाग्यो ॥ जो मोकों मारो मति ॥ में विनकों अवहीं छोडिदेत हों ॥ तापाछें वाही समें रात्रिकों वा तुरकनें आयकें अपनें लोगनसों कह्यो ॥ जो त्रिपुरदासकों अवहीं वंदीखाँनेंमेंतें छोडि-देऊ ॥ तव दरवाँन वंदीखाँनाँमें आयकें विनकों छोडन लागे ॥ तव विन त्रिपुरदासनें कह्यो ॥ जो अव रात्रि वोहोत गईहे ॥ तातें सवारें छोडियो ॥ तव वे मनुष्य पाछे आयकें तुरकसों कहनलागे ॥ जो साहिब वेतो कहत हें ॥ जो मोकों सवारें छोडियो ॥ तब वा तुरकनें कह्यो ॥ जो नही तुम विनकों अवहीं छोडि लावो ॥ तव वे मनुष्य जायकें वेगिही विनकों छोडि लाये ॥ तव त्रिपुरदाससों तुरकनें कह्यों ॥ जो तूँ अपनें घर जा ॥ तव विननें कह्यो ॥ जो अव रात्रि वोहोत गईहे ॥ तातें ॥ यावेर कहाँ जाऊँ ॥ सवारें जाउँगो ॥ तव वानें त्रिपुर-दाससों कह्यो ॥ जो तूँ काहूको जीव लेइगो कहा ॥ तातें अ-वहीं या समें अपनें घर जा ॥ तव त्रिपुरदास अपनें घर आये ॥

❀ (प्रसंग २ रो) ❀ ॥ बहुरि केतेकदिन पाछें त्रिपुरदास वाही तुरककें वहां फिर रहे॥ तब एकदिन रसोईयानें विनसों रात्रिकों कह्यो ॥ जो श्रीनाथजीको चरणोदक महाप्रसाद निघट्यो हे ॥ तब त्रिपुरदासनें कह्यो ॥ जो कछू रह्यो हे ॥ तब रसोईयानें कह्यो ॥ जो रंचकहू नाहीं ॥ तब विननें कह्यो ॥ जो पाँडे तेनें हमसों पहलें क्यो न कह्यो ॥ जो कहतो तो हम चरणोदक महाप्रसाद वढायलेते ॥ अब कहा करिये ॥ तब वो चुप्प करि-रह्यो ॥ पाछे सवारें भये त्रिपुरदास दरबार जाँनलागे ॥ तब रसोईयासों कह्यो ॥ जो पाँडे तुम रसोई करिकें श्रीठाकुरजीकों भोग समर्पिकें महाप्रसाद लीजियो ॥ मेरी वाट मति देखियो ॥ मेरो आवनों न बनेगो ॥ ओर विननें मनमें यह निश्चय कियो ॥ जो जबलों देह चलेगी ॥ तबलों काँम काज करूँगो ॥ देह न चलेगी तब पडिरहूँगो ॥ परि श्रीनाथजीके चरणोदक महाप्रसाद विनॉ जल पाँन न करूँगो ॥ सो यह निर्द्धार करिकें ॥ पाछें आप दरबार गये ॥ तापाछें रसोईया स्नान करिकें रसो-ईमें जाई रसोई करन लाग्यो ॥ इतनेंमें एक लरिका तीन थेली लेकें आयो ॥ सो वानें रसोइयाकों देकें कही ॥ जो एक थेलीमें तो श्रीनाथजीको चरणामृत हे ॥ एक थेलीमें श्रीआचार्यजी-महाप्रभुनको चरणामृत हे ॥ ओर एक थेलीमें श्रीनाथजीको महाप्रसाद हे ॥ सो ले ॥ ये थेली त्रिपुरदासनें पठाई हें ॥ असें कहि थेली देकें वो लरिका गयो ॥ पाछें जब रसोई सिध्द भई ॥ तब वा रसोइयानें श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यो ॥ पाछें भोग सरायकें वानें त्रिपुरदासकों बुलाइवेकों मनुष्य पठायो ॥ परि वे आये नॉहीं ॥ जब दोय तीनवेर मनुष्य बुलावन गये ॥ तब वे आये ॥ सो आयकें विननें रसोईयासों कह्यो ॥ जो तेनें मोकों काहेकों बुलवायो हे ॥ मंतो चरणामृत महाप्रसाद बिनु

जल पाँन न करूँगो ॥ तब वा रसोईयानें कह्यो ॥ जो तुमनें चरणामृत ओर महाप्रसादकी थेली भेजी सो तिन थेली देकें वह लरिका तुरंतहीं गयो हे ॥ तब त्रिपुरदासनें जाँन्यो ॥ जो ये तो श्रीठाकुरजीके काँम हें ॥ तब वे आपुकों धिक्कारन लागे ॥ जो मेनें श्रीठाकुरजीकों बहुत श्रम करवायो ॥ पाछें विननें स्नान करि चरणामृत महाप्रसाद लियो ॥ पाछें जो अपनें सेव्य श्रीठाकुरजीकों भोग सन्यो हतो ॥ सो प्रसादलियो ॥ ❀ (प्रसंग २ रो) ❀ ॥ बहुरि केतेकदिन पाछें विन त्रिपुरदासकी वा तुरकके यहाँकी फिर चाकरी छूटी ॥ जब वो घर बेठिरहे ॥ तब खरचको बोहोत संकोच होंन लाग्यो ॥ जब शीतकालके दिन आये ॥ तब श्रीनाथजीकों कवाई पठावें ॥ इतनों हू समूह विनकें घरमें रह्यो नाहीं ॥ ओर त्रिपुरदासकी कवाई तो प्रतिवर्ष श्रीनाथजीकों जाती ॥ सो आप अंगीकार करते ॥ तब विन त्रिपुरदासनें विचाऱ्यो ॥ जो अब कहा करिये ॥ तब घरमें एक पीतरकी दवात हती ॥ सो बेची ॥ ताके जो दॉम आये ॥ ताकी गजी लेकें रंगवायकें वाकी कवाई बनवाई ॥ सो श्रीनाथजीकों पठवाई ॥ सो तहाँ रंगीन जाँनिकें भंडारीनें भंडारमें डारिदीनीं ॥ तब केतेकदिन पाछें ॥ जब श्रीगुसाँईजी श्रीनाथजीके दर्शनकों गिरिराज पधारे ॥ तहाँ जब आप श्रीनाथजीको शृंगार करनलागे ॥ तब श्रीनाथजीनें आज्ञा करी ॥ जो मोकों शीत बोहोत लागतहे ॥ तब आपनें दूसरी अंगीठी मंगवाई ॥ तबहू श्रीजीनें कही ॥ जो मोकों अजहूँ शीत लागत हे ॥ तब श्रीगुसाँईजीनें आपकों गदर उढायो ॥ तबहू आपनें कह्यो ॥ जो मोकों अजहूँ शीत लागतहे ॥ तब श्रीगुसाँईजीनें तीसरी अंगीठी मंगवाई ॥ तबहूँ शीत न गयो ॥ तब श्रीगुसाँईजीनें भंडारीकों बुलवायो ॥ ओर पूछी ॥ जो कोई वैष्णवकी

कवाइ आईहे ॥ तब वानें जिन जिन वैष्णवनकी कवाई आई हतीं ॥ तिन तिन वैष्णवनके नाँम लिये ॥ तब आपनें पूछी ॥ जो त्रिपुरदासकी कवाई आई हे ॥ तब वानें कह्यो ॥ जो विनकी तो नाहीं आई ॥ परि एक रंगीन कवाई त्रिपुरदासनें पठाई हे ॥ सो मात्र आई हे ॥ सो भंडारमें पडी हे ॥ तब श्रीगुसाँईजीनें कह्यो ॥ जो वह रंगीन कवाइ ले आवो ॥ तब भंडारी वो कवाइ ले आयो ॥ सो श्रीगुसाँईजीनें देखी ॥ तो मेली मरगजी होयरही हे ॥ तब वा कवाइकों झारि पाँछिकें तत्काल दरजी बुलवाय फरगुल सिद्ध करवायो ॥ सो जब वह फरगुल श्रीनाथजीकों उढायो ॥ तब आपनें कह्यों ॥ जो अब मेरे शीत निवर्त्त भयो ॥ एसो प्रभुनकों अपनें भक्तको पक्षपात हे ॥ सो केवल भावको अंगीकार हें ॥ वा वस्तुको नाहीं ॥ सो वे त्रिपुरदास श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक एसे परम कृपापात्र भगवदीय हे ॥ तातें इनकी वार्ता कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव २८ मो ॥

❀ (वार्ता २९ मी. वैष्णव २९ मो.) ❀

❀ (अथ पूर्णमल्लक्षत्रीजवल आगरेके वासी तिनकी वार्ता) ❀

सो विन पूर्णमल्लकी गाँठि द्रव्य वहुत हतो ॥ तिनकों श्रीनाथजीकी आज्ञा भई ॥ जो मेरो मंदिर समराउ ॥ तब वे श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकेपास आये ॥ ओर कह्यो ॥ जो महाराज मोकों श्रीनाथजीकी एसी आज्ञा भई हे जो तूँ मेरो मंदिर समराउ ॥ तब आपनें कह्यो ॥ जो बोहोत आछो मंदिर वेगी उठवावो ॥ तब पूर्णमल्लनें श्रीआचार्यजीके पास नॉम पायो ॥ तापाछें मंदिरकों उठावन लाग्यो ॥ तब जो द्रव्य हतो सो तो सब नींम खुदावतमें हीं खर्च भयो ॥ तब वे पूर्णमल्ल पूरबमें व्यॉपारकूं गये ॥ तापाछें राजालोगननें श्रीआचार्यजी सों पूछी ॥ जो महाराज आज्ञा देउ तो हम मंदिर

समरावें ॥ तव आपनें श्रीनाथजीसों पूछी ॥ जो महाराज ये राजवंसी लोग मंदिर समरावन कहतहें ॥ तव श्रीनाथजीनें कह्यो ॥ जो मंदिरतो पूर्णमल्ल आवेगो ॥ तव वोही समरावेगो ॥ तव श्रीआचार्यजीनें विन राजवंसी लोगनसों कह्यो ॥ जो मंदिरतो पूर्णमल्ल आवेगो सोही समरावेगो एसी प्रभुनकी आज्ञा हे ॥ तव वें राजवंसी लोग फिरि गये ॥ तव केतेकदिन पाछें वे पूर्णमल्ल पूरवतें वहुत द्रव्य कमायकें ले आये ॥ तापाछें विनने मंदिर सिद्ध करवायो ॥ तामें मणिकोठा, जगमोहन, मंजूश, शैयामंदिर सव सिद्ध भये ॥ तव श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें आछो मुहूर्त देखिकें वा नये मंदिरमें श्रीनाथजीकों पाट वेठाये ॥ तव पूर्णमल्लनें वहुत द्रव्य खरच्यो ॥ पाछें वो विदा होयकें अपनें घर गये ॥❀ (प्रसंग २ रो) ❀॥ वहुरि एकसमय श्रीगुसाँईजी श्रीगिरिराजमें हते ॥ तव पूर्णमल्ल श्रीनाथजीके दर्शनकों आये ॥ तव श्रीगुसाँईजीनें वासों कह्यो ॥ जो पूर्णमल्लजी अव तेरे मनमें जो कछू मनोरथ होय सो सव करिले ॥ मनमें कछू राखे मति ॥ तव वानें विनती करी ॥ जो महाराज मेरे मनमें एक एसो मनोरथ हे ॥ जो में अपनें हाथसों अति उत्तम सुगंधको अर्गजा तैयार करिकें श्रीनाथजीके श्रीअंगकों समर्पों ॥ तव आपनें कह्यो ॥ जो भलें सुखेन समर्पि ॥ तव वानें अति उत्तम सुगंधको अर्गजा करिकें श्रीनाथजीकों समर्प्यो ॥ तव वो अति आनंद पायो ॥ तव श्रीगुसाँईजीनें वासों कह्यो जो तेरो मनोरथ पूर्ण भयो ॥ तव पूर्णमल्लनें कह्यो राज आपकी कृपातें मनोरथ पूर्ण भयो ॥ तव श्रीगुसाँईजी बोहोत प्रसंन होयकें आप ओढे हे ॥ सो उपरणा वाकों उढायो ॥ तव पूर्णमल्लनें अति आनंद पायो ॥ तापाछें श्रीगुसाँईजीनें श्रीनाथजीकों पंचामृत स्नान करवाय अंगवस्त्र करि शृंगार करि भोग समर्प्यो ॥

सो समयानुसार सराय ॥ पाछें आपनें श्रीनाथजीको प्रसादी गदल पूर्णमल्लकों उढायो ॥ तापाछें प्रतिवर्ष श्रीगुसाँईजी आप श्रीजीको प्रसादी गदल पूर्णमल्लकों पठावते ॥ सो वे पूर्णमल्लक्षत्री श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक एसे परम कृपापात्र भगवदीय हते ॥ तातें इनकीवार्ता कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव २९ मो ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

❀ (वार्ता ३० मी. वैष्णव ३० मो.) ❀

❀ (अथ यादवेंद्रदास कुंभार तिनकी वार्ता प्रारंभः)

सो वे यादवेंद्रदास जब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप परदेसकों पधारते ॥ तब सब सामाँन लेकें साथ चलते ॥ सो शैया, अडवाई, बिनाँबांसकी कनात, छोटीरावटी, तथा एकदिनको सीधोसामुग्री ॥ इतनों बोझा उठावते ॥ रसोईकी परचारगी सब करते ॥ ओर रात्रिकों पहराहू देते ॥ ❀ (प्रसंग २ रो) ❀ ॥ बहुरि एकसमय श्रीगुसाँईजी श्रीगोकुलमें हते ॥ तहाँ एकदिन रात्रि प्रहर डेढ गईही ॥ तब आपनें कह्यो ॥ जो या बिरियाँ ऐसो मुहुर्त हे जो मंदिरकी निंम खोदीजाय तो मंदिर बडो भारी दृढ होय ॥ एसें कहिकें श्रीगुसाँईजी आपतो पोढे ॥ तापाछें वा यादवेंद्रदासनें प्रहर एकमें नींम खोदीकें सिध्ध करि राखी ॥ सो जब पीछिली रात्रिकों श्रीगुसाँईजी आप पोढिकें उठे ॥ तब देखें तो माँटीके ढेर परेहें ॥ तब आपनें पूछी ॥ जो यह माँटी केसी हे ॥ तब वैष्णवनने कह्यो जो महाराज यादवेंद्रदासनें मंदिरकी नींम खोदी हे ॥ तब आपनें यादवेंद्रदाससों पूछी ॥ जो यह नींम तेने कोनसीबेर खोदी हे ॥ तब वानें बिनती कीनीं ॥ जो महाराज आपनें जाबेर रात्रिकों कही हती ॥ ताहीबेर खोदी हे ॥ तब आप प्रसंन होयकें वाकी खोदीभई नींममें महीनाँ एकलों रोज दसपंद्रह मजूरलोग लगाये ॥ तोहू वो नींम भरी न गइ ॥ एसो सामर्थ्य वा यादवेंद्रदासमें हतो ॥ ❀ (प्रसंग ३ रो) ❀ ॥

ओर विन यादवेंद्रदासनें गिरिराजमें श्रीनाथद्वारको कूप अपने हाथसों खोद्यो ॥ ताकी माँटी निकसी तामेंसुं ईट बनाय पकाय अपनें हाथ कूवा चिन्यो ॥ परि वामेंतें जल खारी निकस्यो ॥ तब वे यादवेंद्रदास पश्चाताप करत श्रीसोरों गये ॥ तहाँ जातहीं श्रीगंगाजीमेंतें जलकी अंजुली भरिभरिकें श्रीगंगाजी मेंहीं डारें ॥ ओर कहें ॥ जो कूआ आपसो करो ॥ एसें कहि कहि तर्पण वोहोत कियो ॥ तब श्रीगंगाजीनें जताइ ॥ जो तेरे कुआको जल मींठो भयो ॥ तब वे श्रीगंगाजीमेंतें निकसे ॥ सो पाछे गिरिराज श्रीनाथजीद्वार आये ॥ तब वा कूआको नाँम जलघरा धर्यो ॥ पाछें श्रीनाथजीनें वा कूआको जल अंगीकार कियो ॥ सो वे यादवेंद्रदासकुंभार श्रीआचार्यजीके सेवक एसे भगवदीय हे ॥ तातें इनकी वार्ता कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव ३० मो ॥

❀ (वार्ता ३१ मी. वैष्णव ३१ मो.) ❀

❀ (अथ गुसाँईदास तिनकी वार्ता प्रारंभः) ❀

एकवेर श्रीठाकुरजीको एकस्वरूप श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों प्राप्त भयो ॥ सो स्वरूप आपनें विन गुसाँईदासके माथें पधराय दियो ॥ ओर कह्यो ॥ जो तूँ याकी नीकीभाँतिसों सेवा करियो ॥ सो वे गुसाँईदास श्रीआचार्यजीकी कृपातें श्रीठाकुरजीकी सेवा करन लागे ॥ तब विन गुसाँईदाससों श्रीठाकुरजी सानुभव जतावन लागे ॥ तब केतेकदिन पाछें ॥ एकवैष्णव श्रीआचार्यजीको सेवक ॥ नित्यप्रति विनकेघर दर्शनकों आवे ॥ ता वैष्णवसों विन गुसाँईदासनें कह्यो ॥ जो तुम यहाँ रहो तो हमकों सहायता होय ॥ हम तुम मिलिकें श्रीठाकुरजीकी सेवा करें ॥ तब वह वैष्णव हाँ ना करे ॥ पाछें एकदिन श्रीठाकुरजीनें गुसाँईदाससों कह्यो ॥ जो तूँ मोकों वा वैष्णवके माथें पधराय देई ॥ पाछें वा वैष्णवसों गुसाँईदासनें कह्यो ॥ जो मोकों श्रीठाकुरजीकी आज्ञा

तुमारे माथें पधरायदेवेकी भई हे ॥ तातें भगवद् इच्छा एसीही दीसत हे ॥ तव वातें गुसाँईदासनें कह्यो ॥ जो पाछें तुम कहा करोगे ॥ तव विन गुसाँइंदासनें कह्यो ॥ जो हूँतो वद्रिकाश्रम जाउँगो ॥ तहाँ मेरी देह छूटेगी ॥ तव वा वैष्णवनें कही ॥ जो श्रीठाकुरजीकी गति जाँनि न पडे ॥ सो जो तिहारी देह वहाँ न छूटे ॥ ओर वहाँतें तुम फिरि आवो ॥ तो में तुमकों श्रीठाकुरजी तो न देउँगो ॥ तव गुसाँईदासनें कह्यो ॥ जो एसीतो श्रीठाकुरजी न करें ॥ जो मेरी देह वहाँ न छूटे ॥ ओर कदाचित् ईश्वरइच्छातें में यहाँ आउँ ॥ तो तेरे द्वारपे पोरिया रहूँगो ॥ ओर श्रीठाकुरजीको दर्शन करूँगो ॥ एसो निर्धार कियो ॥ तव वा वैष्णवनें विनके श्रीठाकुरजी अपनें घर पधराये ॥ पाछें वह वैष्णव सेवा नीकीभाँतिसों करन लाग्यो ॥ तापाछें वे गुसाँईदास तो वद्रिकाश्रमकूं गये ॥ सो तहाँ विनकी देह छूटी ॥ ताकी जव वा वैष्णवपें खवरि आई ॥ तवतें वह निश्चिततासों सेवा करन लाग्यो ॥ सो वह वैष्णव हू श्रीआचार्यजीकी कृपातें भलो वैष्णव भयो ॥ सो वे गुसाँईदास श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक एसे परम कृपापात्र भगवदीय हे ॥ तातें इनकी वार्ता कहाँतांई लिखिये ॥ वैष्णव ३१ मो ॥

❀ (वार्ता ३२ मी. वैष्णव ३२ मो.) ❀

❀ (अथ माधवभट्टकाश्मीरी तिनकी वार्ता प्रारंभः) ❀

सो वे माधवभट्टकाश्मीरीके वासी प्रथम केशवभट्टकाश्मीरीके सेवक हते ॥ सो एक समें वे केशवभट्ट श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके पास आये ॥ सो तहाँ वोहोतदिनताँई रहे ॥ सो जव श्रीआचार्यजी आप श्रीभागवतकी कथा कहते ॥ सो वे सुनते ॥ तव विनके सिप्य माधवभट्ट श्रीआचार्यजीके सेवकनमें जाय वेठते ॥ तहाँ भगवद्वार्ता करते ॥ तव एकदिन वा माधवभट्टसों केशव-

भट्टनें कह्यो ॥ जो तूँ हमारो संग छोडिकें वहाँ श्रीआचार्यजीके सेवकनमें जाय हाँसी ठठोली करत हे ॥ तव वा माधवभट्टनें कह्यो ॥ जो मोकों तुमारे संगतें उनकी हाँसी ठठोली आछी लागति हे ॥ तातें हों वहाँ जात हों ॥ तव केशवभट्टनें मनमें जान्यो ॥ जो अव यह हमारे काँमतें गयो ॥ पाछें केशवभट्टनें श्रीआचार्यजीसों कह्यो ॥ जो मेनें तो आपके श्रीमुखतें कथा सुनीं ॥ परि कछू वोध न भयो ॥ ओर माधवभट्टकों तो श्रीभागवतकी स्फुर्ती भई ॥ यह केवल दैवी सृष्टिको प्रकार जाँननों ॥ पाछें केशवभट्टनें श्रीआचार्यजीसों विनती करी जो महाराज हमपेतें कछू गुरुदक्षणा लिजिये ॥ तव आपनें कह्यो ॥ जो हम कछु लेत नाहीं ॥ तव केशवभट्टनें कही ॥ जो मे आपकों एक सेवक समर्पत हों ॥ एसे कहिके वे माधवभट्ट श्रीआचार्यजीकों सोंपे ॥ पाछें केशवभट्ट आप सों विदा होंयकें अपनें देश काश्मीर गये ॥ तापाछें विन माधवभट्टनें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनपास नाँम पायो ॥ पाछें समर्पण करवायो ॥ ❀ (प्रसंग २ रो) ❀ ॥ वहुरि जा गामँमें वे माधवभट्ट रहते ॥ ता गाँममें एक वडो गृहस्थ रहतो ॥ ताकें एक वेटा हतो ॥ सो मरिगयो ॥ तव वह गृहस्थ वोहोत रोवनलाग्यो ॥ ओर विलाप करत कहनलाग्यो ॥ जो या मेरे वेटाकों कोई जिवावेगो तो में जीउँगो ॥ नहीं तो मेंहू मरूँगो ॥ एसें कहिकें वहुत आक्रंदन करे ॥ तव एक वैष्णव वा पेंडे होयकें जात हतो ॥ ताने वा गृहस्थको विलाप देखिकें दया करिकें वासों कह्यो ॥ जो या गाँममें माधवभट्ट करिकें रहतहें ॥ सो वे वडे भगवदीय महापुरुष हें ॥ तातें तूँ तिनके पास जा ॥ जो वे कृपा करेंगे तो तेरो लरिका जीवेगो ॥ तव वह गृहस्थ माधवभट्टके पास दोर्‍यो आयो ॥ ओर वहुत विलाप करिकें

कहन लाग्यो ॥ जो वह मेरो बेटा जीवेगो ॥ तो मैंहू जीवूँगो ॥ नाँहींतो मैंहू मरूँगो ॥ या भाँतिसों वो कहे ॥ ओर वहोत रोवे ॥ सो वाको दुःख देखिकें विन माधवभट्टकों दया आई ॥ तव मनमें विचार करन लागे ॥ जो यह गृहस्थ बोहोत दुःख पावत हे ॥ तव विन माधवभट्टने मंदिरमें जायकें श्रीठाकुरजीके आगें विनती को श्लोक करिकें धर्‍यो ॥ सो श्लोक ॥ (दयालोरे समर्थस्य दुःखायैव दयालुता ॥ विश्वोद्धारणदक्षस्य सा तवैकस्य सोभते ॥ १ ॥) तव यह श्लोक श्रीठाकुरजीनें देखिकें कह्यो ॥ जो यह कितनीक वातहे ॥ जो तुमकों दया आई हे ॥ तो वासों कहो ॥ जो तेरो बेटा जियो हे ॥ पाछें माधवभट्ट श्रीठाकुरजीकों पोढायकें बाहिर आये ॥ ओर वा गृहस्थसों कही ॥ जो जा तेरो तो बेटा जियो हे ॥ परि वाकों विश्वास न परे ॥ ओर आपनें मनमें कहे ॥ जो में घर जाऊँगो ॥ ओर कदाचित् वो न जियो होइगो तो में कहा करूँगो ॥ परि मुखसों तो वातें माधवभट्टसों कछु कह्यो न जाय ॥ ओर मनमें विश्वासहू न परे ॥ तव इतनमें तो वाके घरतें लोग भजे आये ॥ ओर वासों कहन लागे ॥ जो तेरो वेटा जियो हे ॥ ताकी वधाई देउ ॥ तव वह गृहस्थ बडे हर्षसों माधवभट्टकों साष्टांग दंडवत प्रणाम करिकें अपनें घर आयो ॥ ओर वा वधेइयाकों वधाई दीनी ॥ तव कुटंबीनकों वहोत हर्ष भयो ॥ पाछें विन माधवभट्टनें अपनें मनमें विचार कियो ॥ जो मेनें बहुत अनुचित कियो ॥ अव ये लोग रात्रिदिवस याही भाँतिसों मोकों दुःख देहँगे ॥ तातें अव या गाँममें रहिवेको काँम नाहीं ॥ एसो विचार करिकें जव आधिक रात्रि भइ ॥ तव विननें श्रीठाकुरजीकों जगाय संपुटमें पधरायकें वे तुरत गाँम छोडिकें चले ॥ सो अडेलमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके पास

आय रहे ॥ सो एसी दया कियेतें एकतो अपनों स्थल छूट्यो ॥ ओर दूसरो श्रीठाकुरजीकों आधीरात्रिकूँ लेकें भाजनों पऱ्यो ॥ तातें भगवदीयनकों काँम करनों ॥ सो विचारिकें करनों ॥ ❀ (प्रसंग ३ रो) ❀ ॥ बहुरि अडेलमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप श्रीभागवतकी टीका सुबोधिनीजी कहते ॥ सो व माधवभट्ट समुझिकें त्वरातें लिखत जाते ॥ ओर जा ठोर वे न समझते ताठोर लेखन छोडिकें बेठिरहते ॥ तब आप श्रीआचार्यजी विनकों समुझायकें कहते ॥ तब फिर वे लिखते ॥ ओर आपके आगें वे याभाँतिसों बेठते ॥ जो पाँव न दीसें ॥ सो वे एसे सावधानतातें रहते ॥❀ (प्रसंग ४ थो) ❀ ॥ पीछें एक समय श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप परदेशकों पधारे ॥ तब वे माधवभट्ट संग हते ॥ तब एक गाँममें डेरा भयो ॥ सो तहाँ रात्रि प्रहर डेढ गई ॥ तब वे माधवभट्ट लघुबाधाकों श्रीआचार्यजीके निकटतें गाँमके बाहिर गये ॥ तहाँ विनकों चोरननें तीरनसों माऱ्यो ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको नाँम लेतहीं वाकी देह छूटी ॥ ताकी डेरामें खबरि भई ॥ तब वैष्णवननें जायकें वाको संस्कार कियो ॥ तब विनके मनमें संदेह भयो ॥ जो माधवभट्ट सरीखे विद्वान वैष्णवकी एसी गति क्यों बूझिये ॥ तब साथके वैष्णवननें आयकें श्रीआचार्यजीसों पूछी ॥ जो महाराज यह बात एसें क्यों भई ॥ जो माधवभट्टसे वैष्णवकी देह याभाँतिसों छूटी ॥ तब विनसों आपनें कह्यो ॥ जो माधवभट्टनें तो श्रीठाकुरजीके चरणारविंद पाये ॥ इनकी तो कछू कर्तव्यता रही नाँहीं ॥ क्यो जो वे बडे भगवदीय हे ॥ परि विनकों एक भगवदपराध पऱ्यो हतो ॥ तब वैष्णवननें आपसों पूछी ॥ जो महाराज एसो कहा अपराध पऱ्यो हतो ॥ तब आपनें कह्यो ॥ जो यह पहलें अपनें सेव्य श्रीठाकुरजीकी

शैया उपर फूल बिछावत हतो ॥ सो एकदिन अजानें फूलनमें सुई रहगई ॥ ताको श्रीठाकुरजीके श्रीअंगमें स्पर्श भयो ॥ ता अपराधतें विनकों एसो भयो ॥ परि विनकी देह सावधानतासों भगवन्नाँम लेतहीं छूटी हे ॥ तातें वह श्रीठाकुरजीके पासही हें ॥ सो मेरि कानितें श्रीठाकुरजी वाकी बुरी गति कबहूँ न करें ॥ पाछें श्रीआचार्यजी आपनें श्रीमुखतें कह्यो ॥ जो वैष्णवकों श्रीठाकुरजीकी सेवा करनी ॥ सो बडे सावधाँनतासों करनी ॥ सो वे माधवभट्ट श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक बडे परम कृपापात्र भगवदीय हे ॥ तातें इनकी वार्ताको पार नाँहीं सों कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव ३२ मो ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (वार्ता ३३ मी. वैष्णव ३३ मो.) ❀

❀ (अथ गोपालदास बाँसवाडेकेपास रहते तिनकी वार्ता) ❀

सो विन गोपालदासनें अपनें गाँममें मार्ग चलनवारेनकों अपनें घरके पास विश्रामके लियें एक स्थल करि राख्योहतो ॥ सो एकसमें उज्जेनिके पद्मारावल द्वारिकाँतें आवत रात्रिमें वा गाँममें वसि रहे ॥ सो वा गोपालदासके स्थलमें आय वसे ॥ तब वे गोपालदास सेवासों पोंहोंचिकें तहाँ विनके पास आय बेठे ॥ ओर विनतें पूछी ॥ जो तुम कहाँतें आये हो ॥ तब विननें कह्यो ॥ जो हम द्वारिकाँतें आयें हें ॥ तब गोपालदासनें श्रीरणछोडजीके जो सब समाचार पूछे ॥ विननें कहे ॥ वे पद्मारावल द्वारिकाँमें बोहेत रहते ॥ सो जब सब खरची निघटती ॥ तब वे अपनें घर आवते ॥ सो विनको जिजमाँन एक मावजीपटेल करिकें अंजनके कुन्बी गाँमके देसाई हते ॥ सो जब वे पद्मारावल द्वारिकाँतें आवते ॥ तब वे विनकों खर्ची देते ॥ सो लेकें वे पाछे द्वारिकाकूँ जाते ॥ एसें वर्षदिनमें तीनबेर जाते आवते ॥ विन पद्मारावलकों श्रीरणछोडजीकें विषे

वहुत आसक्ति हति ॥ तातें विननें श्रीरणछोडजीकी वार्ता गोपालदासके आगें कही ॥ तव विन गोपालदासनें अपनें मनमें कही ॥ जो इसकों एसी श्रीरणछोडजीके विषे आसक्ति हे ॥ तो ये श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक होंय ॥ तो इनको कार्य सिद्ध होय ॥ तातें यासों कछू कहिये ॥ तव गोपालदासनें ॥ विन पद्मारावलसों पूछी ॥ जो तुमसों कवहूँ श्रीरणछोडजी वोलत हें ॥ ओर कछू माँगत हें ॥ तव वानें कह्यो ॥ जो मोसों तो कछू कहत वोलत नाहीं ॥ परि ओर हूँ काहूसों श्रीरणछोडजी वोलत माँगतहें कहा ॥ तव गोपालदासनें कही ॥ जो हाँहाँ श्रीरणछोडजी वोलत हें ॥ एसें कहिकें विननें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी वार्ता कही ॥ ओर कही ॥ जो तुमनें जो एतेदिन सेवेहें ॥ सोइ श्रीरणछोडजी आप प्रगट भये हें ॥ तव वा पद्मारावलनें पूछी ॥ जो वे कहाँ हें ॥ तव गोपालदासनें कह्यो ॥ जो वे अडेलमें हें ॥ तव वानें पूछी ॥ जो जेसो दर्शन श्रीरणछोडजी देतहें ॥ तेसोई दर्शन श्रीआचार्यजी देइँगे ॥ तव गोपालदासनें कह्यो ॥ जो हाँ तुमकूँ तेसोई दर्शन देइंगे ॥ तव वाके मनमें विश्वास आयो ॥ जो यह वात सत्य होयगी ॥ तादिनतें वाकों आतूरता भई ॥ जो में कव जायकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके दर्शन करूँ ॥ तापाछें वे गोपालदाससों विदा होयकें वे पद्मारावल चले ॥ सो मार्गमें विचार करत जाँई ॥ जो कव अडेल जाउँ ॥ ओर कव दर्शन पाऊँ ॥ एसें विचार करत उज्जेनमें अपनें घर आय पोंहोंचे ॥ परि चित्त उदास रहे ॥ पाछें वे अपने जिजमाँन मावजीपटेलसों मिले ॥ तव वानें पूछी ॥ जो गुरुजी अव तिहारो मन प्रसंन देखियत नाहीं ॥ सो काहेतें ॥ तव जो विननें गोपालदाससों सुनीं हती ॥ सो वात सव कही ॥ जो श्रीरणछोडजी प्रगट भयेहें ॥ सो मेरो

मनोरथ उनके दर्शन करिवेको हे ॥ तातें जाँनुहूँ जो कव जाँउँगो ॥ तव मावजीपटेलनें कह्यो ॥ जो तुम श्रीरणछोडजीके दर्शनकों जातहो ॥ तो मोकों हूँ साथ लियें चलो ॥ तव वानें कह्यो ॥ जो तुम राजसीलोग हो ॥ तातें तिहारे साथ वहुत मनुष्य होई तव चलो ॥ ओर यह दर्शन तो एकांत स्वास्थ्य-चित्तको हे ॥ तातें यह वात तो मोकों भावत नाहीं ॥ तव मावजीपटेलनें कह्यो ॥ जो में तो सव छोडिकें अकेलो तिहारे साथ पाँवन चलूँगो ॥ तव वानें कह्यो ॥ जो भलो ॥ पाछें विन मावजीपटेलनें अपनी स्त्रीसों कही ॥ जो में तो पद्मारावलके संग दर्शनकों अडेल जातहों ॥ तव विनकी स्त्रीनें पूछी ॥ जो वहाँ कहा हे ॥ तव मावजीपटेलनें कह्यो ॥ जो वहाँ श्रीवल्लभाचार्यजी प्रगट भये हें ॥ सो साक्षात् श्रीरणछोडजीके दर्शन देतहें ॥ सो यह वात सुनिकें वाकी स्त्रीके मनमें वोहोत उत्साह भयो ॥ ओर कह्यो ॥ जो मेंहूँ आपके संग दर्श-नकूँ चलूँगी ॥ तव वानें कह्यो ॥ जो मेंतो पावन चलूँगो ॥ तव वानें कही ॥ जो मेंहूँ पावन चलूँगी ॥ मेरे कछू वालकतो नाहीं जो हेरान होयगो ॥ तव मावजीपटेलनें कही ॥ जो घर कोंन रहेगो ॥ तव वानें कह्यो ॥ जो मेरें घरसों कछू प्रयोजन नाहीं ॥ मेंतो सर्वथा तिहारे संग चलूँगी ॥ तव वानें विचार्यो ॥ जो याकों दर्शनकी वहुत आतुरता हे ॥ तव मावजीपटेलनें कह्यो ॥ जो काहू भले मनुष्यके हवालें घर करिकें तूहूँ चलि ॥ तव विननें एक भले मनुष्यके हवालें घर करिदियो ॥ ओर वे पद्मारावलके संग दोनों जनें स्त्रीपुरुष मिलिकें वे तीन्योंजनें श्रीआ-चार्यजीमहाप्रभुनके दर्शनकों चले ॥ सो प्रयाग जाय पहुँचे ॥ तव अडेलको दूरितें दर्शन भयो ॥ तव वो विनकों अधिक आ तुरता भई ॥ जो श्रीयमुनाँजीमें होयकें चले जेयें ॥ ता समय श्री-

आचार्यजी आप मध्याह्न संध्या करिवेकों श्रीयमुनाँजीपे पधारे हते ॥ तव सेवक दोयचारी जनें साथ हते ॥ तव आपको विन तीन्यों जनेंनकों दूरितें दर्शन भयो ॥ तबतो विनकों अती आतुरता भई॥ सो विनतें रह्यो न जाय ॥ ओर कहें जो श्रीयमुनाँजीमें कुदि परीये ॥ ता समय श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें विनकों देख्यो ॥ ओर विन तीन्योनके मनकी अत्यंत आतुरता जानिकें अपनें सेवकनसों कह्यो ॥ जो नाव वेगि पार ले जाउ ॥ ओर जो वे पद्मारावल श्रीरणछोडजीके सेवक आये हें ॥ सो उन तीन्यों जनेंनकूं वा नावमें वेठारिकें वेगि ले आवो ॥ तव वे वैष्णव नाव लेकें आये ॥ तिननें कह्यो ॥ जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें यह नाव पठाई हे ॥ तातें तुम तीन्यों जनें चलो ॥ तव मावजीपटेल तथा वाकी स्त्री तथा पद्मारावल ये तीन्यों जनें वा नावमें वेठिकें पार गये ॥ तहाँ जातखेंम श्रीआचार्यजीमहाप्रभुजीको दर्शन करिकें वे तीन्यों चरणारविंदमें गिरिपरे ॥ तव जेसो वा गोपालदासजीनें कह्यो हतो ॥ तेसोई दर्शन विनकों भयो ॥ पाछें आप श्रीआचार्यजीनें विनकों ऊठायकें कृपापात्र जाँनिकें आपनें विन तीन्योनकों नाँम निवेदन करवायो ॥ तापाछें पद्मारावल जेसो दर्शन द्वारिकामें श्रीरणछोडजीको करत हते ॥ तेसोई दर्शन वहाँ विन तीन्यो जनेनकों भयो ॥ तापाछें पद्मारावलनें श्रीआचार्यजीसों विनती करी ॥ जो महाराज अब हमारो अंगीकार करिये ॥ तव आपनें प्रसन्न होयकें कह्यो ॥ जो अब तूं कहा कहत हे ॥ तव वानें कह्यो ॥ जो कृपानाथ मोसों गोपालदासजीनें कह्यो हे ॥ जो तूँ समर्पण करवाईयो ॥ तातें मोपर कृपा करिकें आप समर्पण करवावो ॥ तव आपनें कृपा करिकें वा पद्मारावलकों समर्पण करवायो ॥ तव वानें विनती करी ॥ जो महाराज मावजीपटेल

ओर वाकी स्त्री विरजो वे महाराजकी शरणि आये हें ॥ तिनहुँकों समर्पणकी कृपा करिये ॥ तव श्रीआचार्यजी आपनें कृपापूर्वक उनहूँकों समर्पण करवायो ॥ पाछें आप भीतर पधारे ॥ तव पद्मारावलसों कह्यो ॥ जो तुँम तीन्यों प्रसाद यहाइँ लीजियो ॥ तव वानें कही ॥ जो महाराज आपनें मोकों श्रीरणछोडजीको दर्शन दियो हे ॥ ताही स्वरूपसों कृपा करिकें अरोगोगे ॥ तवहीमें महाप्रसाद लेऊँगो ॥ तव आप हसिकें भोजनकों पधारे ॥ तव भोजन करतमें वाकों श्रीरणछोडकीके दर्शन भये ॥ तव वाकों ओर दृढ विश्वास भयो ॥ पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आपनें भोजन करिकें वही प्रसादी पातरि वा पद्मारावलकों दीनीं ॥ पाछें पद्मारावलनें विनती कीनीं ॥ जो महाराज अव मोकों कहा आज्ञा हे ॥ तव आपनें वाकों आज्ञा दीनीं ॥ जो तुम श्रीठाकुरजीकी सेवा करो ॥ तव वानें कह्यो ॥ जो महाराज मेरे मन जेसो आपके स्वरूपसों लग्यो हे ॥ तेसो मन जो सेवामें लगे ॥ तो में सेवा करूँ ॥ तव श्रीआचार्यजी आप कहें ॥ जो तुम श्रीठाकुरजीकी सेवा तो करो ॥ तिहारो मनोरथ सव श्रीठाकुरजी पूर्ण करेंगे ॥ तव श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों विदा होयकें वे तीन्यों जनें आपनें देसकों चले ॥ सो अपनें अपनें घर आये ॥ ता पाछें वो पद्मारावल श्रीठाकुरजी पधरायकें विनकी सेवा करन लागे ॥ तव वानें श्रीठाकुरजीके लियें एक शैया वनवाई ॥ सो छोटी भई ॥ तव श्रीठाकुरजीनें पद्मारावलकों जतायो ॥ जो या शेयापरतो मोसों सोयोजात नाहीं ॥ तव वानें तुरंत दूसरी शेया वडी वनवाई ॥ ताके उपर श्रीठाकुरजी पोढन लागे ॥ ❀ (प्रसंग २ रो) ❀ ॥ एकसमे श्रीआचार्यजी आप विन पद्मारावलके गाँम पधारे हते ॥ तव वा पद्मारावलकी स्त्रीनें अपनें श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यो हतो ॥

तामें खीरि ताती समर्पी ॥ तब श्रीठाकुरजीनें खीरिमें हाथ मेल्यो ॥ तब ताती बहुत लागी ॥ तातें आपको श्रीहस्तकमल लाल होयआयो ॥ तब श्रीठाकुरजीनें श्रीआचार्यजीकेपास पधारिकें कह्यो ॥ ओर अपनो श्रीहस्त दिखायो ॥ तासमें पद्मारावल श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके पास बेठे हते ॥ तब वासों श्रीआचार्यजीनें कह्यो ॥ जो तेरी स्त्रीनें श्रीठाकुरजीकों खीरि ताती समर्पी ॥ तातें श्रीठाकुरजीके श्रीहस्त लाल होय आये हें ॥ सो श्रीठाकुरजीकों ताती खीरि न समर्पिये ॥ तब पद्मारावलिनें कह्यो ॥ जो महाराज श्रीठाकुरजीनें खीरि सीरि क्यों न होयवेदीनीं ॥ तब आप श्रीआचार्यजी कहें ॥ जो श्रीठाकुरजीतो बालक हें ॥ भोग धरे पाछें विलंब न सहि सकें ॥ यातें भोग धरिये तो दूध तातो न समर्पिये ॥ एसी शिक्षा कहिकें श्रीठाकुरजीको अनुभव वाकों जतायो ॥ तब वो तहाँतें अपनें घर आयो ॥ तब यह बात वानें अपनी स्त्रीके आगें कही ॥ पाछें वे सावधानतासों सेवा करन लागे ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी कृपातें श्रीठाकुरजी विन पद्मारावलकों तथा वाकी स्त्रीकों सानुभवता जतावन लागे ॥ ओर जो चहिय तो सो माँगिमाँगिकें अरोगते ॥ओर सब अपनी बात कहते॥ सो वे पद्मारावल विन गोपालदासके संगतें एसें भगवदीय भये ॥ तातें संग करनों ॥ सो असे भगवदीयनकोंही करनों ॥ सो वे गोपालदास एसे परम कृपापात्र भगवदीय हे ॥ जिनके लियें पद्मारावलकों श्रीआचार्यजीनें श्रीरणछोडजीके दर्शन दिये ॥ तातें इनकी वार्ता कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव ३३ मो ॥

❀ (वार्ता ३४ मी. वैष्णव ३४ मो.)❀

❀ (अथ पद्मारावल साँच्योरा गुजरातिमें रहते तिनकीवार्ता) ❀

वे पद्मारावल अडेलमें आयकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक

भये ॥ सो प्रथम गोपालदास बाँसवाडेवारेकी वार्तामें विस्तारसों कह चूके ॥ सो वे पद्मारावल एकसमें केतेकदिन अडेलमें रहे हे ॥ ता पाछें जब वे अपनें देशकों चलनलागे ॥ तब श्रीआचार्यजीके आगें विनती कीनीं ॥ जो महाराज होंतो अति मूर्ख हों ॥ कछू जॉनत नाहीं ॥ ओर हमारी ज्ञातिके ब्राह्मण महा कर्मजड हें ॥ ओर स्मार्त हें ॥ सो मोकों दुःख देइँगे ॥ तब श्रीआचार्यजी आपनें आपनें चरणारविंदको चंदन ओर चरणामृत दियो ॥ ओर कह्यो ॥ जो याके लेतें हीं तोकों सब सिद्धांत स्फुरेगो ॥ सो जब वानें वो चंदन चरणामृत लीनों ॥ तब वाकों सब सिद्धांत स्फुरित भयो ॥ पाछें वे अपनें गाँम उज्जेनिकों आये ॥ वहाँ वडेवडे प्रतिष्ठित प्रश्न पूछन लागे ॥ सो जानें जो पूछ्यो ॥ ताकों वानें प्रत्युत्तर देकें सबनकों विदा किये ॥ विन पद्मारावलकों श्रीआचार्यजीकी कृपातें एसी विद्या भई ॥ जो वडेवडे पंडित प्रत्युत्तर न करिसकते ॥ ❀(प्रसंग २ रो)❀ ॥ एकसमें वे पद्मारावल द्वारिकाकों श्रीरणछोडजीके दर्शनकों चले ॥ तब श्रीरणछोडजीनें वासों स्वप्नमें कह्यो ॥ जो राजनगरमें एक हमारो सेवक हे ॥ ताके घर तूं जैयो ॥ ओर पाक वहाँई करियो ॥ तब पद्मारावलनें कह्यो ॥ जो वाकों तो में जॉनत नाहीं ॥ ओर बिनु बुलाये कोंनके घर जाऊँ ॥ तब श्रीरणछोडजीनें कह्यो ॥ जो वह तोकों आपतें बुलावन आवेगो ॥ ता- पाछें श्रीरणछोडजीनें अपनें वा सेवककों जतायो ॥ जो पद्मा- रावल यहाँ आवेगो ॥ ताकों अपनें घर उतारिकें विनकी सेवा तूं नीकीभाँतिसों करियो ॥ ओर रसोई भलीभाँतिसों करवाईयो ॥ तब वा सेवकनें कह्यो ॥ जो महाराज में विनकों केसें जॉनूंगो ॥ तब श्रीरणछोडजीनें कह्यो ॥ जो वे प्रसिद्ध हें ॥ तातें तूं आपु- हीं जॉनेगो ॥ तब केतेक दिनमें पाछें वे पद्मारावल वा गाँममें

आयकें उतरे ॥ तब विनके साथ एक विद्यार्थी हतो ॥ ताकों विननें कह्यो ॥ जो तूँ गाँममें जायकें कोरी भिक्षा माँगि लाउ ॥ तब वह गाँममें गयो ॥ सो पाँच सात ठोरतें कोरि भिक्षा माँगि लायो ॥ तब पद्मारावलनें कह्यो ॥ जो यह अन्न तूँ जहाँ जहाँतें लायो हे ॥ तहाँ तहाँकों फेरि दे आउ ॥ सो जा भक्तकों श्रीरणछोडजीनें आज्ञा दीनीं हती ॥ जो तूँ पद्मारावलकों अपनें घर पधराईयो ताहूके घरतें वो विद्यार्थी भिक्षा लायो हतो ॥ सो जब ताकों ॥ फेरि देन गयो ॥ तब वानें कह्यो ॥ जो तुम ले क्यों गये ॥ ओर फेरि क्यों देंन आये ॥ तब वा विद्यार्थीनें कह्यो ॥ जो में कहा करूँ ॥ हमारे गुरू हें तिनकी आज्ञा माँनी चहिये ॥ तब वानें पूछी ॥ जो तुमारे गुरूको नाँम कहा हे ॥ तब विद्यार्थीनें कह्यो ॥ जो हमारे गुरूको नाँम पद्मारावल हे ॥ तब वह श्रीरणछोडजीको सेवक वा विद्यार्थीके साथ चल्यो ॥ सो आयकें पद्मारावलसों नमस्कार करिकें कह्यो ॥ जो हमारे घर पधारिये ॥ तब विननें कह्यो ॥ जो होंतो काहूके घर जात नाहीं ॥ तब वा भक्तनें कह्यो ॥ जो मोकों श्रीरणछोडजीकी आज्ञा भई हे ॥ तब विन पद्मारावलकों जो प्रथम आज्ञा भइ हती ताको स्मरण भयो ॥ तातें विननें वाके घर जायकें रसोई करि श्रीठाकुरजीकों भोग समर्पि पाछें प्रसाद लें रात्रिकों वहाँई सोय रहे ॥ पाछें जब वे पद्मारावल सवारें चलन लागे ॥ तब वो श्रीरणछोडजीको सेवक राखन लाग्यो ॥ परि वे रहे नाहिं ॥ ❀ (प्रसंग २ रो) ❀ ॥ एकदिन पद्मारावलकों मार्गकी भिक्षामें आटो बोहोत मिल्यो ॥ ओर घृत थोरो मिल्यो ॥ तब वानें रसोइ करिकें जितनी रोटी वा घृतसों चुपरीगई सो चुपरीं ॥ बाकी कोरी रहीं ॥ पाछें वानें श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यो ॥ तामें विनु चुपरि रोटी तो नीचें

धरीं ॥ ओर चुपरीं रोटीं उपर धरीं ॥ ओर विनती करी ॥ जो महाराज चुपरीं चुपरीं रोटीं अरोगियो ॥ और रूखी रहनदी-जो ॥ परि श्रीठाकुरजीनेंतो सब रोटीं अरोगीं ॥ तब वानें कह्यो ॥ जो महाराज रूखीं रोटीं काहेकों अरोगीं ॥ तब श्री-ठाकुरजीनें कह्यो ॥ जो तेंनं मेरे आगें काहेकों धरीं ॥ मेरे आगें धरेगो सो तो में अरोगूँगो ॥ तापाछें वो पद्मारावल प्रसाद लेन वेठे ॥ इब वे रोटीं वहुत अलौकिक स्वाद लागीं ॥ तब वानें जो कछू रोटीं वाकी रहीं ॥ सो साथ बाँधिलीनीं ॥ सो नित्य जब पाक करि श्रीठाकुरजीकों भोग समर्पिकें वो प्रसाद लेन वेठे ॥ तब वा रोटींमेंतें एक टूक मेलिकें प्रसाद लेई ॥ वाकों महाप्रसादको भाव एसो हो ॥ पाछें केतेक दिनमें वे द्वारिकाँ जाय पोहोंचे ॥ तहाँ श्रीरणछोडजीके दर्शन किये ॥ तापाछें दिन पाँच सात रहिकें फिर पाछें श्रीरणछोडजीसों विदा होयकें चले ॥ सो मार्गमें फिर विन गोपालदासके घर आये ॥ तहाँ रात्रिकों रहे ॥ तब विननें गोपालदाससों कह्यो ॥ जो तुमारी कृपातें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको दर्शन पायो ॥ ओर तुमारीही कृपातें विननें मेरे उपर कृपा करी ॥ तापाछें गोपालदाससों विदा होयकें वे पद्मारावल अपनें घर आये ॥ सो वे पद्मारावल एसे कृपापात्र भगवदीय हे ॥ तातें इनकी वार्ताको पार नाँहीं ॥ सो कहाँताँई लिखिये ॥ वेष्णव २४ मो ॥

❀ (वार्ता २५ मी. वेष्णव २५ मो.) ❀

❀ (अथ पुरुपोत्तमजोशी साँचोराब्राह्मण तिनकी वार्ता) ❀

एकसमें पुरुपोत्तमजोशी अपनीं स्त्रीकों संग लेकें वनारसकों चले ॥ सो मार्गमें उज्जेन आये ॥ तहाँ आयकें पूछी ॥ जो प-द्मारावलके वेटा कहाँ रहतहे ॥ तब वहाँके लोगननें कही ॥ जो पद्मारावलके चार वेटा हें ॥ तामेंतें तीन वेटातो एकठोर

रहतहें ॥ ओर बडे बेटा कृष्णभट्ट सो भिन्न रहत हें ॥ तिनके घर बताये ॥ तब वे पुरुषोत्तमजोशी जो तीन भाई एकठोर-रहते ॥ तिनके घर गये ॥ तब विननें थोरोसो अन्न दियो ॥ ताकी रसोइ करि भोग समर्पिकें विन पुरुषोत्तमजोशीनें प्रसाद लियो परि कछू भूखे रहे ॥ तब मनमें विचाऱ्यो ॥ जो पद्मारावलके बेटा एसे क्यों बूझिये ॥ वेतो सूधे ब्राह्मण हते ॥ तापाछें ये समाचार कृष्णभट्टनें सुने ॥ तब वो आयकें पुरुषो त्तमजोशीकों ओर वाकी स्त्रीकों अपनें घर पधराय ले गये ॥ तहाँ रसोई करि श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यो ॥ पाछें विनकों भली भाँतिसों प्रसाद लिवायो ॥ तब पुरुषोत्तमजोशी बहुत प्रसंन भये ॥ तिनकों दिन चारि राखे ॥ तापाछें जब वे गयाजीकों चले ॥ तब तिनके साथ कृष्णभट्टहू चले ॥ जो मजली पे जाय उतरे ॥ तहाँ रात्रिकों जब कृष्णभट्ट सोये ॥ तब पुरुषो त्तमजोशीने अपनी स्त्रीके आगें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी वार्ता करी ॥ सो कृष्णभट्टके आगें न करी ॥ ताको हेतू यह हतो ॥ जो पुरुषोत्तमजोशी अपनें मनमें जानते ॥ जो कृष्ण-भट्टकों योग्यता नाहीं ॥ एसें करत वे गयाजी तो होय आये ॥ पाछें गोकुलकों चले ॥ परि कृष्णभट्टके देखत विननें कबहूँ श्रीआचार्यजीकी वार्ता न करी ॥ तब एकदिन कृष्णभट्टनें विचाऱ्यो ॥ जो इननें तो मेरेआगें कबहूँ श्रीआचार्यजीकी वार्ता न करी ॥ परि अब हूँतो कछू वार्त्ता चलाउँ ॥ सो वानें जब श्रीगोकुल मजलि पांच सात रही ॥ तब कृष्णभट्टनें भगवत् प्रसंग चलायो ॥ तब पुरुषोत्तमजोशी घोडापे बेठे हते ॥ सो तो विस्मय होयरहे ॥ ओर देहकी सुधि न रही ॥ तब कृष्ण-भट्टनें पुरुषोत्तमजोशीकी स्त्रीसों कह्यो ॥ जो तुम एक ओरतें इनकूँ थाँभेरहीयो ॥ ओर एक ओरतें में थाँभत हों ॥ तापाछेंहू

कृष्णभट्टनें भगवद्वार्ता चलाइ ॥ तब विन पुरुषोत्तमजोशीतें घोडा उपर रह्यो न जाय तातें वे दोऊ आसपास थाँमें जाँय ॥ एसें करत मजलिपे जाय पोंहोंचे ॥ तब विनकों घोडा उपरतें उतारन लागे ॥ तब वे कहें ॥ जो मोकों क्यों उतारत हो ॥ तब कृष्णभट्टनें कह्यो ॥ जो मजलिको गाँम आयो हे ॥ तातें उतारत हें ॥ परि पुरुषोत्तमजोशीकों मजलि आयेकी खबरि नाहीं ॥ वे भगवद्वार्तामें एसे रसाविष्ट भये ॥ सो संपूर्ण दिवस छ रहे ॥ सो विनकों प्रसाद लेवेकीहू सुधि न रहि ॥ एसें करत श्रीगोकुल आये ॥ तब वे सावधान भये ॥ ओर श्रीगुसाँईजीके दर्शन करिकें प्रथम ही पूछें ॥ जो महाराज या कृष्णभट्टके उपर एसी कृपा कहाँतें भई ॥ तब आपनें श्रीमुखतें कह्यो ॥ जो याकों चाचा हरिवंशजीको संग हे ॥ तातें ये एसो भयो ॥ तब वा पुरुषोत्तमजोशीको गर्व निवर्त भयो ॥ ओर वे अति प्रसंन भये ॥ तब वे कृष्णभट्टसों आपुतेंही पूछन लागे ॥ पाछें केतेकदिन तहाँ रहिकें श्रीगुसाँईजीसों विदा होइकें वे पुरुषोत्तमजोशी तथा कृष्णभट्ट उजेनकों चले ॥ सो मार्गमें भगवद्वार्ता करत चले आये ॥ तातें दोऊ जने बहुत प्रसंन भये ॥ सो वे पुरुषोत्तमजोशी श्रीआचार्यजीके सेवक एसे परम कृपापात्र भगवदीय हे ॥ ताते इनकी वार्ता कहाँताँई लिखिये ॥ वेष्णव २५मो॥

❀ (वार्ता २६ मी. वेष्णव २६ मो) ❀

❀ (अथ जगंनाथजोशी साँचोराब्राह्मण तिनकी वार्ता) ❀

सो वे जगंनाथजोशी खीराल्रुके वासी श्रीठाकुरजीकी सेवा नींकी भाँतिसों करते ॥ सो एकदिन विननें श्रीठाकुरजीकों वागा पहराय सब शृंगार करिकें राजभोगको थार आगें आँनि राख्यो ॥ तब वाके मनमें शंका आई ॥ जो श्रीठाकुरजी तो वागो पहेरेंही आरोगत हें ॥ तातें थार छूइजायगो ॥ यह बात श्रीठाकु-

रजीनें वाके मनकी जाँनी ॥ तब साज्योभयो थार आपनें लातसों मारिकें चोकी उपरतें दूरि डारि दियो ॥ तब जगंनाथजोशीनें देखतेहीं ॥ वेगिवेगि ओर पाक सिद्ध करि थार साजि श्रीठाकुरजीके आगें आँनि राख्यो ॥ तब फेरि वाके मनमें वेसेंही आई ॥ तातें फेरि श्रीठाकुरजीनें लात मारिकें थार डारि दीनों ॥ पाछें फेरि तीसरी वार वाने पाक करि थार परोसि आगें धऱ्यो ॥ सोहू श्रीठाकुरजीनें लात मारिकें डारि दीनों ॥ तब फेरि चोथीवार जब वें जगंनाथजोशी पाक करने लागे ॥ तब बोहोत श्रमित भये ॥ सो नींचो माँथो करिकें विचार करन लागे ॥ जो कोंन अपराधतें श्रीठाकुरजी आरोगत नाहीं ॥ ओर वारंवार थार डारि देतहें ॥ तापाछें दीनता बोहोत कीनीं ॥ तब श्रीठाकुरजीनें यह वात जताई ॥ जो तुम थार छूइवेतें डरपतहो तो हमारे आगें काहेकों आनि राखत हो ॥ इतनों श्रीठाकुरजीको वचन सुनतहीं ॥ वे जगंनाथजोशी चोंकि उठे ॥ तब नाक भूमिसों घसिकें साष्टांग दंडवत प्रणाम ओर बोहोत मनुहार करिकें कह्यो ॥ जो महाराज मेंतों कछू जाँनत नाहीं ॥ अब मेरो अपराध क्षमाँ करिये ॥ तब श्रीठाकुरजी आप अरोगे ॥ सो विनको एसो सरल भाव हतो ॥ ❀ (प्रसंग २ रो) ❀ ॥ वे जगंनाथजोशी श्रीठाकुरजीकों भोग समर्पते ॥ तामें खीरि बहुत ताती समर्पते ॥ सो वेसीही ताती खीरि श्रीठाकुरजी आप अरोगते ॥ तब केतेकदिन पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप खिराळू सो पधारे ॥ वा जगंनाथजोशीके घर उतरे ॥ तहाँ श्रीठाकुरजीके दर्शन किये ॥ तब देखें तो श्रीठाकुरजीके ओष्ठ ओर जीभ बोहोत राते भये हें ॥ तब आपनें श्रीठाकुरजीसों पूछी ॥ जो महाराज जीभ ओर ओष्ठ बोहोत राते क्यों हें ॥ तब श्रीठाकुरजीनें कह्यो ॥ जो राजभोगमें जगंनाथजोशी बोहोत

ताती खीरि समर्पत हे ॥ सो तेसीही अरोगत हों ॥ तब आपनें विन जगंनाथजोशीसों कह्यो ॥ जो तूं ताती खीरि श्रीठाकुरजीकों क्यों समर्पत हे ॥ तब वानें कह्यो ॥ जो महाराज में कहा जानुँ जो एसी बात हे ॥ मेंतो जानुँ जो ताती वस्तु भली ॥ तब श्रीआचार्यजी आप कहें ॥ जो खीरितो सुहाती भली ॥ तापाछें जगंनाथजोशी त्योंहीं करन लागे ॥ (❀प्रसंग २रो) ❀ एकसमय जगंनाथजोशी श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके दर्शनकों अडेल चले ॥ तब मारगमें अन्नकूटको दिन आयो ॥ तब एक सेवक साथ हतो ॥ तासों विननें कह्यो ॥ जो या गाँममेंतें दारि चाँवर ओर कछू आछी साँमुग्री मिले सो ले आउ ॥ तब वह सेवक वा गाँममें फिरि आयो ॥ तानें आयकें कह्यो ॥ जो या छोटे गाँममें कछू सामुग्री मिलत नाहीं ॥ मात्र एक ज्वारि मिलत हे ॥ तब जगंनाथजोशीनें कह्यो ॥ जो भलों ज्वारिही ले आउ ॥ तब वा सेवकने फिर वा गाँममें जायकें ज्वारिही लीनीं ॥ सो आछि भाँति सों कूटि फटकि बीनि चुनि कें ले आयो ॥ ताको जगंनाथजोशीनें ठोमर कियो ॥ तब वा सेवकनें कह्यो ॥ जो भूँसी निकसीहे ॥ ताके ढोकला करिकें वाके उपर राखो सो वाकी बाफसों बेहु होय आवेंगे ॥ तब जगंनाथजोशीनें त्योंहीं कियो ॥ सो जब वो ठोमर खदबदानों ॥ तब ढोकला वामें गिरि पड्यो ॥ सो सब इकठोन्यो मिलिगयो हो ॥ सो जब जगंनाथजोशी भोग समर्पन लागे ॥ तब देखें तो सब मिलिगयो हे ॥ सो देखिकें विनकों बहुत खेद भयो ॥ पाछें भगवदिच्छा माँनिकें ॥ जेसो तेसो श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यो ॥ पाछें भोग सराय प्रसाद लियो ॥ तब रात्रिकों जगंनाथजोशीसों श्रीठाकुरजीनें कह्यो ॥ जो मेरे पेटमें दुखत हे ॥ तब विननें श्रीठाकुरजीकों सतुवा, सोंठि ओर अजवाँइन समर्पी ॥

परि मनमें पश्चाताप बहुत भयो ॥ पाछें श्रीठाकुरजीनें कह्यो ॥ जो अन्न मेरे पेटमें सुख भयोहे ॥ तापीछें वे जगंनाथजोशी अडेलकों आये ॥ ❀ (प्रसंग ४ थो) ❀ ॥ बहुरि एकसमें वे जगंनाथजोशी अपनें सेव्य श्रीठाकुरजीको उत्थापन करिकें पास ठाढे मूँठा (मोरछल) करत हते ॥ ओर वैष्णव ठाढे दर्शन करत हे ॥ तासमें एक रजपूत गिरासिया अवैष्णव आयकें वैष्णवनमें ठाढो भयो ॥ ता समें एक डोकरी फुलनकी माला लेकें आई ॥ सो माला दूरतें वानें श्रीठाकुरजीके उपर डारी ॥ परि भगवदिच्छातें वो माला एक वैष्णवके गरेमें जायपरी ॥ तब वा रजपूत गिरासियानें जानीं ॥ जो माला जगंनाथजोशीनें वा वैष्णवकें गरेमें डारी ॥ तातें वाकों रिस चढी ॥ तब वानें मनमें बिचारी ॥ जो देखो जोशीनें मेरो अपमाँन कियो ॥ अबमें रजपूत तो खरो ॥ जो या जोशीकों ठोर मारूँ ॥ तबतें वह विनकों मारिवेकों तरवार हाथमें लेकें ताकत फिरे ॥ परि दाव न पावे ॥ जो घात करे ॥ तब एकदिन जगंनाथजोशी बहिरभूमितें आवत हते ॥ सो देखिकें वा गिरासियानें विनके उपर पाछेतें तरवार चलाई ॥ तब श्रीठाकुरजीनें वाकी तरवार अपनें श्रीहस्त सों थाँभी ॥ ओर श्रीमुखतें कह्यो ॥ जो अरे मारे मतिरे ॥ तब वह रजपुत थकित रहिगयो ॥ तब जगंनाथजोशीनें पाछें फिरिकें देखि तो वो रजपूत ठाढो हे ॥ ओर ताकी तरवार पकडें अपनें सेव्य श्रीठाकुरजी श्रमित ठाढे हें ॥ तब जगंनाथजोशीनें वा गिरासियासों कह्यो ॥ जो फिटरे पापी यह तेनें कहा कियो ॥ जो श्रीठाकुरजीकों श्रम करवायो ॥ तब वो रजपुत तरवार डारिकें जगंनाथजोशीके पायन उपर परिगयो ॥ ओर केहेन लग्यो ॥ जो मेरे उपर कृपा करो ॥ में महा अपराधी हों ॥ एसें कहे ओर विनके

पाँव जो पकरिराखे हे सो वो छोडे नाहीं ॥ तब विन जगंनाथ-जोशीकों दया आई ॥ तब वाकों अपनें हाथसों उठाय विदा कियो ॥ पाछें केतेकदिन रहिकें वाकों श्रीआचार्यजीके पास नाँम दिवायो ॥ ओर निवेदनहू करवायो ॥ तबतो वह रजपूत आछो भलो भगवदीय भयो ॥ जो वो वैष्णवनके बीचमें आयकें ठाढो रह्यो हतो ॥ ताको फल यह सिद्ध भयो ॥ वे जगंनाथजोशी श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक एसे कृपापात्र भगवदीय हते ॥ तातें विनकी वार्ता कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव ३६ मो ॥

❀ (वार्ता ३७ मी. वैष्णव ३७ मो.) ❀

❀ (अथ जगंनाथजोशीकी माता ताकी वार्ता) ❀

वा जगंनाथजोशीकी माताकों द्वे बेटा हते ॥ तामें बडे बेटा नरहरदासजोशी ॥ ओर छोटे बेटा जगंनाथजोशी खिराळूकेवासी ॥ सो एकदिन विन दोउ बेटानकों विनकी मातानें २ मोहोरें देकें कह्यो ॥ जो तुम जायकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके पास नाँम समर्पण करवाय आवो ॥ ओर यह मोहोरें भेट धरियो ॥ तब वे मोहोरें लाठीमें मेलिकें दोउ भाई चले ॥ सो अडेल जाय पोहोंचे ॥ तब तासमें श्रीआचार्यजी आप श्रीपुरुषोत्तमक्षेत्र श्रीजगन्नाथराय-जीके दर्शनकों पधारे हते ॥ तातें अडेलमें न हते ॥ तब जगन्नाथजोशी ओर नरहरजोशी दोऊ भाइननें मिलिकें विचार कियो ॥ जो हम फिरि घर जाँइंगे तो माता हमसों खीजेगी ॥ ओर कहेगी ॥ जो नाँम समर्पण किये विन पाछें क्यों आये ॥ तातें आपुनहू श्रीपुरुषोत्तमक्षेत्र जैये ॥ यह निश्चय करिकें वे दोनों भाइ चले ॥ सो थोरेसे दिनमें श्रीपुरुषोत्तमक्षेत्र जाये पोंहोंचे ॥ तहाँ श्रीजगन्नाथरायजीके मंदिरके आगें जायकें पूछी ॥ जो श्रीआचार्यजी कहाँ रहतहें ॥ तब एक वैष्णवनें घर दिखायदीनों ॥ तहाँ जायकें विननें श्रीआचार्यजीके दर्शन

करि दंडवत कियो ॥ तब श्रीआचार्यजीनें उनसों पूछ्यो ॥ जो तुह्मारी माता नीकी हे ॥ तब विन दोउनकों आश्चर्यसो लाग्यो ॥ जो आपतो हमकों पहचाँनत हें ॥ परि हमनें तो कबहूं इनके दर्शन करे नाहीं ॥ पाछें विननें आपसों कही ॥ जो महाराज वो आपकी कृपातें नीकी हे ॥ तापाछें श्रीआचार्यजीनें विन दोउ भाइनसों पूछयो ॥ जो तुम श्रीठाकुरजीके दर्शन करि आये ॥ तब विननें कह्यो ॥ जो महाराज हमतो अबहीं चले आवतहें ॥ तातें दर्शन तो नाँहीं कियो ॥ तब आपनें विन दोऊ भाईनकों आज्ञा दीनीं ॥ जो तुम जायकें दर्शन करि आवो ॥ तब वे दोउ श्रीजगंनाथरायजीके दर्शनकों गये ॥ तहाँ जायकें देखें ॥ तो श्रीजगनाथरायजीकेपास श्रीआचार्यजी आप ठाढें हें ॥ तब विनकों फिर आश्चर्य भयो ॥ जो हमतो इनकों अबहीं घर बेठे छोडि आये हते ॥ ओर येतो यहाँ कहाँतें पधारे ॥ तब विनके मनमें आई ॥ जो कदाचित् ओर बात होयगी ॥ तहाँ होयकें आप आय बेठे होंयगे ॥ परि मन निःसंदेह न भयो ॥ तातें ॥ वे दर्शन करिकें वेसेही फिरि घर आये ॥ तहाँ देखें तो श्रीआचार्यजी आपतो घर बेठे हें ॥ तब दंडवत करिकें दोऊ भाई बेठिकें ॥ आपुसमें एक एकको मोढों देखन लागे ॥ ओर चक्रत होयरहे ॥ तब विनकों श्रीआचार्यजीनें पूछयो ॥ जो तुम दर्शन करि आये ॥ तब उननें कह्यो ॥ जो महाराज आप जानतही हो ॥ तब श्रीआचार्यजीनें कह्यो ॥ जो तुह्मारे मनमें संदेह आयो हतो सो निवर्त भयो ॥ तब विननें विनती करी ॥ जो हाँ महाराज संदेह निवर्त भयो ॥ तब श्रीआचार्यजीनें कह्यो॥ जो तुह्मारी मातानें भेटकीं मोहोरें पठाई हें सो लाओ ॥ तब विननें लाठीमेंतें मोहोरें काढिकें आगें राखीं ॥ पाछें आपनें

विन दोउ भाइनकों नाँम निवेदन करवायो ॥ ओर अपने स्वरूपको प्रभाव दिखायो ॥ तातें विनकों स्वरूपासक्ति भई ॥ पाछें केतेकदिन रहिकें वे आपकी आज्ञा मॉगिकें अपनें देशकों चले ॥ सो मार्गमें श्रीआचार्यजीके स्वरूपको विचार करत जॉय ॥ एसें करत खिराल्रू आय पोंहोंचे ॥ तव विनकी मातानें सव समॉचार पूछे ॥ तव विननें जो भयो हतो सो सव प्रकार कह्यो ॥ तव माता बहुत प्रसंन भई ॥ पाछें श्रीआचार्यजीकी कृपातें वे दोउ भाई भले भगवदीय भये ॥ तातें इनकी वार्ता कहॉंतॉई लिखींये ॥ वैष्णव ३७ मो ॥

❀ (वार्ता ३८ मी. वेष्णव ३८ मो) ❀

❀ (अथ जगंनाथजोशीके वडे भाई नरहरजोशी ताकी वार्ता) ❀

एकसमें वे नरहरजोशी श्रीपुरुपोत्तमक्षेत्र श्रीजगन्नाथरायजीके दर्शनको चले ॥ सो पटनॉके आगें मजलिपे जाय उतरे ॥ तहॉ स्नान करि रसोई करि श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यो ॥ तव देखें तो एक बालक वर्ष दशको पेड पेतें उतरि आय ठाढो भयो ॥ तव वाकों देखिकें नरहरजोशीकों आश्चर्य भयो ॥ जो यहॉ यह वालक कहॉतें आयो ॥ तव वह वालक आयकें नरहरजोशीके आगें हाथ पसारिकें मॉगन लग्यो ॥ तव विननें मनमें विचार्यो ॥ जो यह सुंदर लरिका आयकें मेरे आगें हाथ काहेकों पसारत हे ॥ तव नरहरजोशीनें रोटी द्वे घीसों चुपरिकें तापर दारि धरिकें वाकों दीनी ॥ तव वह वालक फिर वा अमलीके रूख उपर चढिगयो ॥ सो नरहरदासजोशी देखें ॥ तो वो वालक वहॉ नाहीं ॥ पाछें दूसरे दिन दूसरी मजलि आय उतरे ॥ तहॉ स्नान करि श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यो ॥ तव वेसेंई फिरि वह वालक वहॉहू अमलीके रूखपेतें उतरि आयो ॥ तव वानें वेसेंई मोनसों हात पसार्यो ॥ तव

विन नरहरजोशीकों संदेह भयो ॥ जो कोउ छलिवे आयो होय तो केसें देउँ ॥ ओर जो ये श्रीभगवत्स्वरूप होय तो प्रसादी केसें देउँ ॥ या संदेहसों विननें वा वालककों कछू न दीनों ॥ तव वह वालक पाछो रुख उपर चढिगयो ॥ सो खिरालूमें श्रीठाकुरजीनें वाके दूसरे भाइ जगंनाथजोशीसों कह्यो ॥ जो आज में नरहरजोशीके पास गयो हो ॥ तहाँ मेंनें हाथ पसारिकें खायवेकूँ माँग्यो परि वानें मोकों कछू न दीनों ॥ तव जगंनाथजोशीनें वह वार, दिन, महिनाँ, संवत, सव लिखि राख्यो ॥ जो यह वात जव नरहरजोशी आवेंगे तव में पूछूँगो ॥ तापाछें केतेकदिन वीतें वे नरहरजोशी घर आये ॥ तव माता ओर भाईकों मिले ॥ पाछें जव दूसरेदिन दोउ भाई सेवामें गये ॥ तव जगंनाथजोशीनें नरहरजोशीसों श्रीआचार्यजीके कुशल समाचार पूछे ॥ ओर पूछी ॥ जो अमुके संवतमें अमुक महिनाँकी अमुकी तिथि वारके दिन पटनाँतें आगें पेंडेमें मजलिपे तुम उतरे हते ॥ तव तहाँ रसोई करि भोग समर्प्यो ॥ तहाँ तुमनें कोउ वालक हाथ पसारत देख्यो हो ॥ तव नरहरजोशीनें कह्यो ॥ जो पेहेलेदिन तो तुम कहतहो तेसे सुंदर लरिकाकों देखिकें मेंनें ताकों रोटी चुपरिकें दारि धरि दीनींही ॥ ओर दूसरेदिन तो मोकों संदेह भयो ॥ तातें मेंनें कछू न दीनों ॥ तव जगंनाथजोशीनें कह्यो ॥ जो तुमनें न दियो सो वुरी करी ॥ वेतो अपनें श्रीठाकुरजी आप हते ॥ जव हम तुम दोउ भाई श्रीआचार्यजीके दर्शनकों गये हते ॥ तव जो अपनी मातानें अपनें हाथ भेट पठाई ही ॥ जो आपुनें संदेह करिकें राखी हती ॥ सो आप श्रीआचार्यजीनें माँगि लीनी हती ॥ तातें अपनें मार्गमें श्रीआचार्यजी ओर श्रीठाकुरजी तिनपे संदेह न करनों ॥ तव विन दोऊ भाईनके मनमें निश्चयं

भयो ॥ ❁ (प्रसंग २ रो) ❁ ॥ एकसमें वे नरहरजोशी अलियाणि गाँममें जहाँ वाको क्षत्री जिजमाँन रहत हतो ॥ जाको नाँम महीधरजी तथा वाकी वेहेनको नाँम फूलबाई हतो ॥ तिनके घर गयो ॥ सो तहाँ जायकें विनसों कह्यो ॥ जो तुम श्रीगुसाँईजी पास जायकें नाँम पाय वैष्णव होय आवो ॥ तब उनने कह्यो ॥ जो भलें अवश्य तुम श्रीगुसाँईजीकों या गाँममें पधराय लावो ॥ तब वे नरहरजोशी जायकें श्रीगुसाँईजीकों वा अलियाणा गाँममें पधराय लाये ॥ तब आयकें महीधरजी ओर फूलबाईसों विन नरहरजोशीनें कह्यो ॥ जो श्रीगुसाँईजी पधारे हें ॥ तब वे भाई वेहेन अत्यंत प्रसंन भये ॥ तब महीधरजीनें नरहरजोशीसों कह्यो ॥ जो में श्रीगुसांईजीकों खाली हाथ केसें पधराऊँ ॥ तब नरहरजोशीने कह्यो ॥ जो रुपेया ओर मोहोरनकी खीचरी करिकें वाकी न्योछावर करिकें आपकों घरमें पधरावो ॥ पाछें विननें यथाशक्ति वेसेंही करिकें आपकों अपनें घर पधराये ॥ तब वा नरहरजोशीनें महीधरजी, फूलबाई तथा बालगोपाल सब कुटुंबकूं श्रीगुसांईजीके पासतें नाँम निवेदन करवायो॥ पाछें वानें बोहोत भलीभाँति सों श्रीगुसांईजीकी सेवा करी ॥ पाछें आप वाके घरतें विदा भये ॥ तापाछें आप श्रीगुसांईजी द्वारिकाकों पधारे ॥ ओर नरहरजोशी अपनें घर खिराळू आये ॥ तापाछें केतेकदिन वीतें वा अलियाणा गाँममें आगि लागी ॥ वादिन नरहरजोशी अपनें गाँम खिराळूमें तलावपे नित्यकर्म करिकें तुलसी फूलकी डाली हाथमें लेकें मार्गमें आवत हते ॥ तासमें विनके मनमें आपुते प्रेरणा भइ ॥ जो अलियाणा गाँममें आगि लगीहे ॥ तब ठाढे रहकें तुलसीदलके ओरपास जलकी धार कुंडलाकार कीनीं ॥ वितनेमेंही अलियाणा गाँममें आगि बुझी ॥

तामें विन महीधरजीकी हवेली ओर घर वच्यो ॥ जब केतेक-दिन पाछें अलियाणामें वे नरहरजोशी आये ॥ तब फूलबाईनें विनसों कह्यो ॥ जो यहाँ अग्निको उपद्रव बोहोत भयो हतो ॥ परि श्रीगुसाँईजीकी कृपातें हमारो तो कल्याण भयो ॥ तब विननें कह्यो ॥ जो प्रभुनकी कृपातें सदाही कल्याण हे ॥ इतनों कहिकें नरहरजोशी पाछें खिराल्रू आय प्रसाद लियो ॥ तापाछें दोऊ भाई जब एकांतमें बेठे ॥ तब नरहरजोशीनें जगंनाथजोशीसों वो सब वार्ता कहीं ॥ जो में वा दिन नित्यकर्म-करिकें तलावपेतें आवत हतो ॥ तब हाथमें तुलसी तथा फूलकी डाली ओर झारी हती ॥ इतनेंमें मेरे मनमें एसी आई ॥ जो अलियाणामें आगि लागी हे ॥ तब मेनें पेंडेमें ठाढो रहिकें तुलसीदल वीचमें धरिकें वाके ओरपास पानींकी धारा कुंडलाकृति कीनीं ॥ तितनेमें वहाँ अग्नि बुझी ॥ तामें महीधरजीकी हवेली ओर घर सब वच्यो ॥ तब विनसों जगंनाथजोशीनें कह्यो ॥ जो आपुन इतनों हठ न कीजिये ॥ कारण अपनें लियें श्रीठाकुरजीकों श्रम होय सो न करवाईये ॥ अपनें मार्गकी यह रीत नाहीं ॥ तब नरहरजोशीनें कह्यो ॥ जो मेंनेंतो हठ नाहीं कियो ॥ परि मेरे मनमें एसी आई ॥ जो वे अबहीं वैष्णव भये हें ॥ तातें विनके मनमें एसी न आवे ॥ जो हम अवहीं वैष्णव भये ॥ ओर अवहीं आगि लागी ॥ वाके लियें मेंनें एसें कियो ॥ तब दोऊ भाई परस्पर हसिकें चुप्प करिरहे ॥ पाछें कहनलागे ॥ जो प्रभु बडे कौतुकी हें ॥ विनकी इच्छातें सब भलोही होतहे ॥ परि आपुन हठ न कीजिये ॥ सो वे नरहरजोशीजी एसे कृपापात्र भगवदीय हे ॥ जिननें परमार्थके लियें एसों चमत्कार कियो ॥ सो वे तथा विनकी माता तथा विनके छोटेभाई जगन्नाथजोशी ये सबकोउ श्रीआ-

चार्यजीके सेवक ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हते ॥ तातें इनकी वार्ताको पार नाहीं ॥ सो कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव ३८मो ॥

❀ (वार्ता ३९ मी. वैष्णव ३९ मों.) ❀

❀ (अथ राँणाव्यास साँचोराब्राह्मण गोधराके तिनकी वार्ता)❀

प्रथम उक्त जगंनाथजोशीनें राँणाव्यासके पासतें नाँम पायो हतो ॥ पाछें फिरिकें विननें श्रीआचार्यजीके पासते नाँम पायो ॥ सोवे जगंनाथजोशी राँणाव्यासके पासही रहते ॥ सो एक-दिन प्रारब्ध गतीतें विनको गोधराकी देसाइनसों संग भयो ॥ सोवात राजद्वारमें सुनीं ॥ तब वहाँके हाकिमके प्यादे विन राँणा-व्यासकों पकडन आये ॥ तब जगंनाथजोशीनें वा राँणाव्या-सकों दूसरे गाँम भजाय दीनें ॥ सो वे राँणाव्यास ओर वो देसा-ईन ओर गाँम गये ॥ पाछें वहाँ जगंनाथजोशी अकेलेही रहे ॥ तहाँ राजदूत आयकें विन राँणाव्यासकों ढूँढन लगे ॥ तिनसों जगंनाथजोशीनें कह्यो ॥ जो वे तो यहाँ नाहीं ॥ चलो राजमें हूँ आयकें उत्तर देऊँगो ॥ तब विन प्यादेननें जोशीकों लायकें हाकिमके आगें ठाढो कियो ॥ तब वा हाकिमनें कह्यो ॥ जो राँणाव्यास कहाँहें ॥ उनकों लाओ ॥ उननें पराई स्त्रीसों अधर्म कियो हे ॥ तुमकों तो में नीकें जाँनत हों ॥ जाको नाँम जगंनाथजोशी सो कबहूँ अन्याय न करें ॥ यह तो राँणा-व्यासनें अन्याय कियोहे ॥ तातें वाकोंही लाओ ॥ तब विन जगंनाथजोशीनें कह्यो ॥ जो तुम मेरी कही सुनो तो में कहूँ ॥ तब हाकिमनें कही ॥ जो मुखे न कहो ॥ तब विननें कही ॥ जो राँणाव्यासनें यह अन्याय कियो नाहीं ॥ तब वा हाकिमनें कह्यो ॥ जो सो क्यों जाँनिये ॥ तब जगंनाथजोशीनें कह्यो ॥ जो राँणाव्यासके बदलें जो कहो सो में तेसी सोंह करूँ ॥ तब वा हाकिमनें गाडीके पैयाको एक मोंगल मंगवायो ॥ सो

अग्निमें तपायकें जगंनाथजोशीसों कह्यो ॥ जो तुम साँचे हो तो यह भोंगल गरेमें डारो ॥ तब जगंनाथजोशी स्नान करि आये ॥ ओर ठाढे होयकें कहें ॥ जो राँणाव्यासनें अन्याय कियो होय तो मोकों यह अग्नि भस्म करिडारियो ॥ नाँहींतो यह भोंगल शीतल होय जेयो ॥ एसें कहिकें वो भोंगल दोऊ हाथनसों अग्निमेंतें काढिकें अपनें गरेमें मेल्यो ॥ सो घडी दोएक लों राख्यो ॥ तब सबकोउ कहन लागे ॥ जो जोशी तूँ साँचो हें ॥ अब यह भोंगल तुँ गरेमेतें काढि ॥ तब वानें कह्यो ॥ चो अब कहो यह कोनके गरेमें डारूँ ॥ तापाछें वो भूमिमें डारिदीनों ॥ तब भूमि जरिउठी ॥ सो देखिकें सबकोउ कहन लागे ॥ जो जोशी तुम धंन्य हो ॥ जो तुमकों तुमारे धनींको एसो साँच हे ॥ यों कहिकें वा हाकिमनें विनकों समाधाँन करिकें कह्यो ॥ जो जोशी तुम कछु माँगो ॥ हाँ तुमेरउपर प्रसन्न हों ॥ तब विननें कह्यो ॥ जो इतनोंहीं माँगत हों ॥ जो जा चुगलनें यहँ राँणाव्यासकी चुगली करी हे तासों कछू मति कहो ॥ तब यह सुनिकें वह हाकिम ओर सबकोउ बोहोत प्रसन्न भये ॥ पाछें जगंनाथजोशीकों विदा किये ॥ सो घर आये ॥ सो वे एसे भगवदीय हे ॥ जिननें अपनें पूर्व गुरुको प्रभाव दिखायो ॥ ❀ (प्रसंग २ रो) ❀ ॥ विन राँणाव्यासनें पेहेलेंतो माधवदाससारस्वतके पासतें नाँम पायो हतो ॥ पाछे जब वे श्रीआचार्यजीके सेवक भये ॥ तब परम वैष्णव भये ॥ सो वे राँणाव्यास सिद्धपुरमें रहते ॥ तहाँ एकदिन वे व्यासजी ओर जगंनाथजोशी दोनों श्रीसरस्वतीजीमें सवारें स्नान करत हते ॥ ता समें एक रजपूतानीं अपनें पतिके प्रेतसंग सती होन आई ॥ तब राँणाव्यासनें जगंनाथजोशीतें पूछ्यो ॥ जो यह सती होति हे ॥ ताको कारण कहा हें ॥ तब राणाव्यासनें मूँड हला-

यकें कह्यो ॥ जो वह प्रेतके साथ वृथा देह जरावत हे ॥ सो जो वा राँणाव्यासनें कह्यो सो वह रजपूतानी सती होतही तानें सुन्यो ॥ तब वानें साथके लोगनसों कह्यो ॥ जो हूँ न जरूंगी॥ अब मोकों सत्य नाहीं ॥ तातें तुम जो मोकों जरावोगे तो मेरी हत्या तुमपे चढेगी ॥ एसें कहिकें वो जरी नाँहीं ॥ तब वे सब-लोग वा मृतककों जराय वा स्त्रीकों गाँमके बाहिर एक झूपडी करि दीनीं ॥ तामें वह स्त्री रही ॥ सो पाछें दूसरेदिन जब वे राँणाव्यास न्हायवेकों आये ॥ तब वा स्त्रीनें आयकें विन सों पूछी ॥ जो महाराज तुमनें कालि मूँड हलायकें कहा कही ॥ सो बात कृपा करिकें मोकों कहो ॥ वो बात सुनवेकेलियें तो में कालि जरी नाहीं ॥ तब राँणाव्यासनें कह्यो ॥ जो हमतो आपुसमें हसत बात केहत हे ॥ तब वानें कह्यो ॥ जो तुम मोसों काहे-कों दुरावत हो ॥ जो होय सो यथार्थ कहो ॥ एसो वानें बो-होत आग्रह कीनों तब विन राँणाव्यासनें कह्यो ॥ जो हम आपुसमें यह कहत हते ॥ जो एसों उत्तम देह पायकें नाँहक प्रेतके संग जरावत हे ॥ या देहसों न श्रीठाकुरजीको भजन कियो ॥ न सेवा कीनीं ॥ एसो उत्तम देह धन्यो सो श्रीठाकु-रजीकी सेवाके काँम न आयो ॥ एसें सुनिकें वा स्त्रीनें राँणाव्या-ससों कह्यो ॥ जो अब हूंतो तुमारी शरणि हों ॥ जा भाँति यह देह श्रीठाकुरजीके उपयोग आवे तेसो करो ॥ तब राँणाव्यासनें कही ॥ जो अबतो तोकूं सूतक हे ॥ सो उतरे हमसूं होयगो सो करेंगे ॥ पाछें वह स्त्री फेरि अपनें स्थल वा झुपडीमें गई ॥ परि वाको बोहोत विरह उपज्यो ॥ प्रतिदिन वो राँणाव्यासके पास आवे ॥ तब वे कहें ॥ जो तूँ सवारें आईयो ॥ सो एकदिन वा स्त्रीनें कछू खायो नाहीं ॥ पहलें वो एकवार चणा चवाय रहती ॥ सो वादिन तो वानें जलपाँनहू न कीनों प्रातहीं जब राँणा-

व्यासके आयवेको समों भयो ॥ तब वो आय वेठि ॥ सो जब वे राँणाव्यास आय स्नान करिकें भगवत्स्मरण करनलागे ॥ तब वा स्त्रीकों देखिकें वासों कह्यो ॥ जो तूँ स्नान करिकें आयवेठि ॥ तब वह स्त्री श्रीसरस्वतीजीमें न्हायके आय वेठी ॥ तब विन राँणाव्यासनें श्रीआचार्यजीको ध्यान करिकें वा स्त्रीके काँनमें नाँम सुनायो ॥ सो सुनतहीं वाकों भगवद्भाव उत्पन्न भयो ॥ तब वानें राँणाव्याससों पूछी ॥ जो अब में कहा करों॥ तब विननें कह्यो ॥ जो तूँ भगवत् सेवा करि ॥ तब वा स्त्रीनें कह्यो ॥ जो मेरी स्थिती तो एसी हे ॥ तुम टहल देऊ सो करूँ ॥ तब वे वाकों धोती उपरणा परदनीं धोयवेकों देते ॥ सो वो नित्य सिद्ध करिकें पहुँचावे ॥ ओर प्रसाद विनकेही घर लेई ॥ एसें करत वो राँणाव्यासके घरको सब काँम काज करन लागी ॥ पाछें भगवत्सेवाकोहू काज अपरस सब करन लागी ॥ एसें करत केतेकदिन पाछें श्रीआचार्यजी वहाँ पधारे ॥ तब राँणाव्यासनें वा स्त्रीको सब समाँचार आपसों कह्यो ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें कृपा करिकें वाकों शरणि लीनीं ॥ विन राँणाव्यासकी ओर जगंनाथजोशीकी परस्पर एसी प्रीति हती ॥ सो वे राँणाव्यास श्रीआचार्यजीके एसे कृपापात्र भगवदीय हे ॥ तातें इनकी वार्ता कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव ३९ मो ॥

❀ (वार्ता ४० मीं. वैष्णव ४० मों.) ❀

❀ (अथ राँमदास साँचोराब्राह्मण गूजरातमेंरहते ताकी वार्ता) ❀

सो विन राँमदासके माथें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें नटवरगोपालजीको स्वरुप ओर अपनी पादुकाजी सेवा करनकों पधराय दिये हे ॥ तिनकी वानें सदैव सेवा करी ॥ सो वे राँमदास विवाह करिकें पृथ्वीपरिक्रमाँ करिवेकों चले ॥ सो केतेकदिन पाछें परिक्रमाँ पूर्ण करिकें अपने घर आये ॥ परि वे अपनी

स्त्रीको अंगीकार न करें ॥ सो दिन द्वै चारि घर रहिकें वे द्वारिकाकों चले ॥ तब विनकी स्त्री हू साथ चली ॥ परि वाकों वे अपने पास न आवन देईं ॥ वे वाकों ईंटनसों मारें ॥ परि वो स्त्री दूरिभई साथ चली आवें ॥ सो जहाँ वे राँमदास रसोइ करिकें भोजन करें ॥ तहाँ जो विनकी पातरिमें जूँठनि उबरे तो ॥ सो वो खाय ॥ नहींतो वेसी भुखीही पडीरहे ॥ यों करत केतेकदिनमें वे द्वारिका पोंहोंचे ॥ तहाँ श्रीरणछोडजीको दर्शन कियो ॥ पाछें जहाँ वे राँमदासजी रहे ॥ तहाँ वो स्त्री हूँ रही ॥ परि राँमदास वाकों खायवेकों कछू न देईं ॥ तब पूर्ववत् वो स्त्री जो विनकी पातरिमें जूँठनि उबरे तो ॥ सो वो खाय ॥ ओर न उबरे तो योंहीं भूखी पडीरहे ॥ परि वो अपनें पतिको साथ न छोडे ॥ तब एकदिन श्रीरणछोडजीनें वा राँमदाससों कह्यो ॥ जो तूँ अपनी स्त्रीकों अंगीकार काहे नाँही करत ॥ तब वानें विनती करी ॥ जो कृपानाथ हों तो विरक्त वैरागी हों ॥ मेरें स्त्रीसों कहा काँम हे ॥ तब आपनें कह्यो ॥ जो तेनें विवाह काहेकों कियो ॥ श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों सेवककों तो एसी निठुराई न चहिये ॥ तातें तूँ एसी मति करे ॥ में तोसों विनको सेवक जाँनिकें कछू कहत नाहीं ॥ सो अब हों कहतहों ॥ जो तूँ स्त्रीको अंगीकार करि ॥ तब राँमदासनें आज्ञा प्रमाण कहिकें वा अपनी स्त्रीकों अंगीकार कियो ॥ पाछें वे श्रीरणछोडजीसों विदा होयकें अपनें गाँम चले ॥ तब वा वेष्णवनें अपनी स्त्रीसों कह्यो ॥ जो तूं मेरे संग चली आव ॥ तब वो प्रसंन होयकें मार्गमें विनके संग चली आवे ॥ सो जब मजलीपे जाय उतरे ॥ तब राँमदासनें वासों कह्यो ॥ जो तूँ वस्त्र साज सब हे ताकेपास बेठी रहियो ॥ में ऊपरा वीनिवे जात हूँ ॥ पाछें वे ऊपरा लाय स्नान करि रसोई करि श्रीठा-

कुरजीकों भोग समर्प्यो ॥ सो समयानुसार सराय पाछें आप प्रसाद लियो ॥ तापाछें विननें अपनीं स्त्रीकोंहू प्रसाद दियो ॥ सो केतेकदिन एसें मार्गमें चले ॥ पाछें एकदिन श्रीरणछोडजीनें मार्गमें वा राँमदासजीकों आज्ञा दीनीं ॥ जो अब तूँ अपनीं स्त्रीकों नाँम दे ॥ तब वानें कह्यो ॥ जो महाराज हूँ नाँम केसें देउँ ॥ तब श्रीरणछोडजीनें कह्यो ॥ जो तोकों मेरी आज्ञा हे ॥ तब श्रीरणछोडजीकी आज्ञातें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको स्मरण करीकें वानें अपनीं स्त्रीकों नाँम दियो ॥ तादिनतें वे अपनी स्त्रीके हाथको प्रसाद लेंन लागे ॥ तापाछें केतेकदिनमें वे दोउ राजनगर अपनें घर जाय पोंहोंचे ॥ तहाँ केतेकदिन पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप पधारे ॥ तब राँमदासनें आयकें आपको दर्शन कियो ॥ पाछें विनती कीनीं ॥ जो महाराज स्त्रीकों नाँम निवेदन करवाइ ये ॥ तब आपनें कह्यो ॥ जो अबतो तेनें नाँम दियोहे फेरि कहाहे ॥ तब वानें कह्यो ॥ जो मेनेंतो श्रीरणछोडजीकी आज्ञातें नाँम दियो ॥ तब श्रीरणछोडजीनें आज्ञा करी हती ॥ जो फेरि श्रीआचार्यजी पास नाँम दिवाईयो ॥ सो सुनिकें श्रीआचार्यजीनें कृपा पूर्वक वाकी स्त्रीकों नाँम निवेदन करवायो ॥ तापाछें घर आय वे रामदासजी गृहस्थाश्रम करनलागे ॥ सो वे श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके एसे कृपापात्र भगवदीय हे ॥ तातें विनकी वार्ता कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव ४० मो ॥

❀ (वार्ता ४१ मी. वैष्णव ४१ मो.) ❀

❀ (गोविंददुवे साँचोराब्राह्मण कडामें रहते तिनकी वार्ता) ❀

सो वे गोविंददुवे अपनें घर श्रीठाकुरजीकी सेवा करते ॥ तब मनमें बोहोत विग्रह रहेतो ॥ तातें विननें श्रीआचार्यजीकों विनंतीपत्र लिखि पठायो ॥ जो महाराज मेरो मनमें बोहोत विग्रह रहत हे ॥ तातें में कहा करों ॥ तब श्रीआचार्यजीमहा-

प्रभुननें कृपा करिकें नवरत्नग्रंथ करिकें वा गोविंददुबेकों लिखि पठायो ॥ ओर वा पत्रमें लिख्यो ॥ जो या ग्रंथको पाठ करियो ॥ तातें तेरि विग्रहता सब मिटिजायगी ॥ सो जब कृपापत्र आयो ॥ तबतें वे गोविंददुबे नवरत्नग्रंथको पाठ करनलागे ॥ सो पाठ करत विनकी विग्रहता सब मिटिगई ॥ एसो या ग्रंथको प्रभावहे ॥ तब श्रीठाकुरजीकी सेवा आछिभाँतिसों करनलागे ॥ ❀ (प्रसंग २ रो) ❀ ॥ ओर एकसमें वे गोविंददुबे मीराँवाईके घर गये हते ॥ सो तहाँ वे मीराँवाइसों भगवद्वार्ता करत वहाँहीं अटके ॥ तब श्रीगुसाँईजीनें यह वात सुनीं ॥ जो गोविंददुबे मीराँवाईके घर उतरे हें ॥ सो वहाँहीं अटके हें ॥ तब श्रीगुसाँईजीनें एक श्लोक लिखिकें विनकों पठायो ॥ सो श्लोक ॥ (भगवत्पदपद्मपरागजुषो न हि युक्ततरः मरणेऽपि वरम् ॥ इतराऽऽश्रवणं गजराजगतो न हि रासभमप्युररीकुरुते ॥ ॥ १ ॥) यह श्लोक लिखिकें आपनें एक व्रजवासीके हाथ पठायो ॥ सो वो व्रजवासी पत्र लेंके चल्यो ॥ सो केतेकदीनमें वहाँ जाय पोहोंच्यो ॥ ता समें गोविंददुबे तलावपे संध्यावदन करत हते ॥ तहाँ वा व्रजवासीनें वो पत्र विन गोविंददुबेकों दीनों ॥ सो पत्र वाँचिकें वे तहाँतेंहीं ऊठिचले ॥ सो मीराँवाइतें खबरी भई ॥ तब वानें समाधाँन बोहोत करिपठायो ॥ परिवे गोविंददुबे फिरे नाहीं ॥ ❀ (प्रसंग ३ रो) ❀ ॥ एकसमें श्रीआचार्यजी आप द्वारिका पधारे ॥ तब गोविंददुबे ओर पाँच सात वेष्णव जगंनाथजोशी आदि आपकेसाथहे ॥ तहाँ द्वारिकामें विन गोविंददुबेनें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसों विनती कीनीं ॥ जो महाराज कछु कथा कहिये ॥ तब आपनें कही ॥ जो अबहींतो मोकों अवकाश नाहीं ॥ तब गोविंददुबेनें विनती करी ॥ जो महाराज थोरीसी कथा-तो अवश्य कहिये ॥ तब आपनें पोथी

खोली ॥ इतनेमें वा गोविंददुवेसों श्रीरणछोडजी बातें करन: लागे ॥ तब श्रीआचार्यजीनें गोविंददुवेसों पूछी ॥ जो पोथी खुलवायकें तुं बातें कोनसों करतहे ॥ असें कहिकें आप देखें तो वो श्रीरणछोडजीसों बातें करतहे ॥ तब आपनें पोथी बाँधी ॥ ओर आप पोढे ॥ ❀ (प्रसंग ४) ❀ ॥ तहाँ सब वैष्णव श्रीआचार्यजीके थारको महाप्रसाद नित्य लेते ॥ सो एकादिन श्रीआचार्यजीनें आपनें खवाससों कह्यो ॥ जो तुम आजतें इन वैष्णवनकों थारको प्रसाद मति दीजो ॥ तादिनाँ श्रीआचार्यजी आप भोजन करि ऊठे त्योंहीं खवासनें थार छूइकें माँजि धोय धऱ्यो ॥ तातें विन वैष्णवनकों थारको प्रसादी न मिल्यो ॥ तातें वादिन सब वैष्णवननें उपवास कियो॥ तब श्रीरणछोडजीनें श्रीआचार्यजीसों कह्यो ॥ जो तुम इन वैष्णवनकों ॥ अपनें थारको महाप्रसाद नित्य देत हो ॥ तेसेंई दियो करो ॥ तब दूसरेदिन श्रीआचार्यजीनें गोविंददुवेसों ओर जगन्नाथजोशीसों पूछ्यो ॥ जो तुमनें काल्हि महाप्रसाद क्यों न लीनों ॥ उननें कह्यो ॥ जो महाराज काल्हि आपकी थारको महाप्रसाद न मिल्यो ॥ तातें न लीनों ॥ तब आपनें कह्यो ॥ जो थारको प्रसाद तो न देते ॥ परि तुह्मारी सिपारस वडीठोरतें भई हे ॥ तातें देनों पडेगो ॥ पाछें ज्यों नित थारको प्रसाद देते त्योंहीं देवेकी खवासतें आज्ञा भई ॥ तब सब वैष्णव प्रसन्न होयकें रसोई करनलागे ॥ पाछें श्रीआचार्यजी आप जहाँताँई द्वारिकामें रहे ॥ तहाँताँई वे वैष्णव सब आपके पास रहे ॥ पाछें जब आप श्रीरणछोडजीसों विदा होयकें अडेलकों चले ॥ तब सब वैष्णव हू आपके साथ आय आपकों अडेल पोहोंचायकें फिरे ॥ सो अपनें अपनें गाँममें आये ॥ तिनके संग गोविंददुवेहू आपसों विदा होयकें अपनें घर कडामें आ-

यकें ॥ श्रीठाकुरजीकी सेवा करनलागे ॥ सो वे गोविंददुबे श्री-
आचार्यजीके एसे कृपापात्र भगवदीय हे ॥ तातें इनकी वार्ता
अनिर्वचनीं हे ॥ सो कहाँताँई लिखिये ॥ वेष्णव ४१ मो ॥

❀ (वार्ता ४२ मी. वैष्णव ४२ मो.) ❀

❀ (अथ राजादुबे माधवदुबे दोऊभाई सॉचोरा तिनकीवार्ता) ❀

सो वे दोऊभाई सॉचोराब्राह्मण वा मणुमंदिर गॉममें रहते ॥
तामेंतें एकको नॉम हरिकृष्ण ओर दूसरेको नॉम रॉमदास हतो ॥
तामेंको छोटोभाई हरिकृष्ण मूर्ख हतो ॥ ओर वडोभाई रॉम-
दास पढ्यो हतो ॥ सो वो वडोभाई तो वा गॉमकें चोतरापे वे-
ठिकें वा गामके पटेलके आगें कथा कहतो ॥ ओर छोटो भाई
जो पढ्यो न हतो ॥ सो खेतीकी रखवारी ओर टहल करतो ॥ सो
एकदिनॉ वो वडोभाई ओर गॉममें कथार्थ गयो ॥ तादिनॉतें या
गॉमकी कथा रही ॥ तापाछें यहॉ एकदिन मेहकी वर्षा बोहोत
भई तासों छोटोभाई खेततें ऊठिकें घर आयो ॥ तब भाभी-
जननें कह्यो ॥ तूं रोटी जेंलेजो ॥ तब वा देवरनें कह्यो ॥ जो
मोकों तो शीत लगतहे ॥ तातें जो तूँ तातो करीकें परोसे तो
में जेंउँ ॥ तब वा भाभीनें कह्यो ॥ जो तूँ खायतो खा नाहीं
तो हूँ उपर जायकें सोयरहत हूँ ॥ तूँ कहा गॉमके चोंत्तरा उ-
पर वेठिकें पटेलके आगें कथा कहेगो ॥ के दादाको गिरास फे-
रेगो ॥ जो हूँ तोकों तातो करिकें परोसें ॥ तातें जो धन्यो हे
सो खॉनों होयतो खा नॉतर हों जायकें सोयरहतहों ॥ सो जे-
सो घरमें हे तेसो खायले ॥ नॉतर ऊठि जा ॥ तब वा देवरके
मनमें घाहोत दुःख लाग्यो ॥ तब वानें अपनें मनमें विचान्यो
जो ॥ हूँ या देहको त्याग करूँ के कहूँ निकसिजाऊँ ॥ तब वो
घरमेंतें निकसिकें मनमें विचार करनलाग्यो ॥ जो या गॉममें
हमारे सजातीय राजादुबे ओर माधवदुबे ये दोऊभाई वडे महा-

पुरुष हे ॥ तातें विनकों नमस्कार करतो जाऊं ॥ पाछें असो निश्चय करिकें वो तहाँ गयो ॥ तब विन दोऊ भाईनकों नमस्कार कियो ॥ ओर रोवनलाग्यो ॥ तब विन दुवेननें पूछी ॥ जो तुम कोन हो ॥ पाछें जब आछीतराँ देखे ॥ तब वाकों विननें पहचान्यो ॥ तब विननें वासों कह्यो ॥ जो तूँ हमारी ज्ञातिके असुकेको बेटा हे ॥ तब वानें कही ॥ जो हाँ महाराज ॥ तब विनने कह्यो ॥ जो तोकों एसो कहा दुःख हे ॥ जो तूँ रोवत हे ॥ तब वानें कह्यो ॥ जो मेरे दुःखको तो पार नाहीं ॥ तब दुवेनें कह्यो ॥ जो तूँ अपनों दुःख कहितो सही ॥ तब वानें कह्यो ॥ जो तुम वडेहो ॥ सो जो मेरे दुःखकों दूरि करो तो में कहूँ ॥ तब विन दुवेननें कह्यो ॥ जो श्रीठाकुरजी वडे हें सों सबनकों दुःख दूरि करें हें ॥ तातें तूँ कहि ॥ जो तोकों कहा दुःख हे ॥ तब वानें घरके सब समाचार कहे ॥ जो मोकों मेरी भाभीनें एसे कठोर वचन कहे ॥ सो वचन मेरे हृदेमें खूच-त हें ॥ तातें हों तो तुमारेपास आयो हों ॥ मेरो दुःखतो तुमसूँही दूरि होयगो ॥ पाछें विन दुवेजीनें वाको समाधान करिकें महाप्रसाद लिवायो ॥ पाछें रात्रिको वो वहाँई सोयरह्यो ॥ पाछें जब प्रातःकाल भयो तब विन दुवेजीनें वासों कह्यो ॥ जो अब तूँ स्नान संध्या करिकें आव ॥ सो जब वो स्नान संध्याकों गयो ॥ तब राजादुवेसों माधवदुवेनें कह्यो ॥ जो अब कहा क-रिये ॥ तब वानें कह्यो ॥ जो सोतो तुमहीं जानों ॥ जो तुमा-री जीभ चली हे ॥ तातें कछू करोगे नाँहीं तो छूटोगे केसें ॥ तब माधवदुवेनें कह्यो ॥ जो अबतो यह तुह्मारी शरणि आयो हे ॥ तुम श्रीआचार्यजीके सेवक हो ॥ अबतो याको कार्य की-योही बनें ॥ पाछें जब वो नित्यनेम करिकें आयो ॥ तब वाको क्षौर करवायो ॥ पाछें वाकों स्नान करवायकें श्रीठाकुरजीके मंदिरके द्वारके आगें बेठायो ॥ तब माधवदुवेनें राजादुवेसों कह्यो ॥ जो

अब याकों जोकछू कहनों होय सो कहो ॥ तब वानें माधवदुबेसों कह्यो ॥ जो यहतो तुह्मारो काँमहे ॥ मेरोकाँम नाहीं ॥ तातें तुमहीं कहो ॥ तब माधवदुबेनें कह्यो ॥ जो तुम बडे हो तातें तुमहीं कहो ॥ तब वानें कह्यो ॥ जो तुमकों मेरी आज्ञा हे ॥ तातें तुमही कहो ॥ तब माधवदुबेनें वाकों अष्टाक्षरमंत्रको उपदेश काँनमें कह्यो ॥ तापाछें वाकों अष्टोत्तरशत नाँमकों जप करवायो ॥ सो जप भयेपाछें वो संस्कृत बोलनलग्यो ॥ तब माधवदुबेनें राजा-दुबेसों हसिकें कह्यो ॥ जो आज्ञा होयतो एकवार वाकों फिरि जप करवाऊँ ॥ तब वानें कह्यो ॥ जो अब यह इतनेंहीको पात्र हे ॥ अधिक कहाँ समायगो ॥ पाछें राजादुबेनें वा भट्टसों कह्यो ॥ जो तुम कछू मनमें मति लाइयो ॥ जो हमतें कछू भयो हे ॥ हमारो तुह्मारो स्वरूप एकही हे ॥ सो तो तुम जाँनतही हो ॥ तापाछें वानें वहाँहीं प्रसाद लियो ॥ सो जब साँझ भइ तब विन दोउ भाइ दुबेजीकी आज्ञा माँगिकें वो गाँममें पटेलके चोतराउपर जाय बेठ्यो ॥ ओर कथा कहनलाग्यो ॥ पहलें जो वाको वडो भाई कथा कहत हतो ॥ सो वह दूसरे गाँम गयो जानिकें वा चोतरा उपर कोउ कथा सुनिवेकों ॥ आवतो नाहीं ॥ सो वादिन कहूँतें वा पटेलको सेवक वा कथाके चोतरा पास आयनिकस्यो ॥ तानें वा भट्टजीकों कथा कहत देख्यो ॥ तब वानें पटेलसों जायकें कह्यो ॥ जो तुम कथा सुनि-वेकों क्यों नहीं गये ॥ भट्टजी तो वहाँ आज कथा कहतहें ॥ तब पटेल आयकें देखें तो भट्टजी बेठे कथा कहत हें ॥ तब पटेल सुनिकें वोहोत प्रसन्न भयो ॥ ओर कहन लाग्यो ॥ जो भट्टजी तुम इतनेदिन कथा क्यों न कहते ॥ तब विन भट्टजीनें कह्यो ॥ जो मेरे वडेभाई कथा कहत हे ॥ तातें हों न आवतो ॥ अब वे गाँम गये हें ॥ तातें हों आयो हों ॥ पाछें वह भट्ट

भगवदनुग्रहतें भलिभाँतिसों कथा कहन लाग्यो ॥ तातें सबकोउ श्रोता बोहोत प्रसंन भये ॥ ओर कहनलागे ॥ जो हमारो बडो भाग्य ॥ जो एसो कथा कहनवारो ब्राह्मण मिल्यो ॥ पाछें सबननें मिलिकें वा छोटे भट्टजीकी भलीभाँतिसों पूजा करी ॥ ओर कह्यो ॥ जो अबतें तुमहीं नित्य कथा करिवेकों आयो करो ॥ पाछें वह ब्राह्मण विन राजादुबे माधवदुबेके पास आयकें उन सों विनती कीनीं ॥ जोमहाराज आपकी कृपातें कथा कही ॥ ताकी यह पूजा भई हे ॥ सो आप लेउ ॥ यह द्रव्य सब आपको हे ॥ आप मेरे गुरू हो ॥ तब विन राजादुबे ओर माधवदुबेनें कह्यो ॥ जो हमारे ओर तुमारे गुरु श्रीआचार्यजीमहाप्रभु हें ॥ तातें यह द्रव्य हे सो उनको हे ॥ हमारो कछू नाहीं ॥ सो यह द्रव्य श्रीआचार्यजीकों अडेल पोहोंचावो ॥ तब वा ब्राह्मणनें वह द्रव्य जगन्नाथजोशी ओर रॉंमदास सॉंचोराब्राह्मण श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके दर्शनकों अडेल जात हते ॥ तिनेके संग श्रीआचार्यजीकों पठाय दियो ॥ तापाछें कितेकदिन रहिकें वाको बडोभाई ॥ जो अन्य गाँम गयो हतो ॥ सो अपनें घर आयो ॥ तापाछें वा छोटे भट्टनें अपनें गुरु राजादुबे माधवदुबेसों कह्यो ॥ जो तुम आज्ञा देउ तो मेरे पिताकी गई वृत्ती हे ॥ सो में फेरों ॥ तब दुबेनें कह्यो ॥ जो अब कहा संदेह हे ॥ जा तेरो कॉंम सिद्ध होयगो ॥ तब वह गुरुनकी आज्ञा लेकें वो गाँमकों चल्यो ॥ सो जाय वहाँके राजासों मिलिकें आशीर्वाद दियो ॥ तब वह दुबे राजा वा भट्टकों देखिकें प्रसन्न भयो ॥ ओर कही ॥ जो हमारो बडो भाग्य जो तुम आज कृपा करिकें आये ॥ पाछें वा रजपूत राजानें वा छोटे भट्टकों एक डेराळे स्थल बतायो ॥ तहाँ वानें अपनों डेरा कियो ॥ पाछें रसोईकी सामुग्री चलती करी ॥ तब सबकोउ भट्टके पास आय बेठे ॥ तब वा

भट्टनें एक श्लोकको व्याख्यान कियो ॥ सो सुनिकें सबकोउ बोहोत प्रसंन भये ॥ ओर कह्यो ॥ जो तुम यहाँ पाँचरात्रि कृपा करिकें रहो ॥ तुह्मारी बिदा हम आछी रीतिसों करें तब तुम चलियो ॥ एसें कहिकें वे श्रोता तो सब अपनें अपनें घर गये ॥ पाछें दूसरेदिन सब मिलिकें आपुसमें बिचार करनलागे ॥ जो भट्टजीकी बिदा कब करिये ॥ ओर कहा करिये ॥ यह ब्राह्मणतो बोहोत योग्य हे ॥ ओर बोहोत दिननमें आयो हे ॥ तब उनमें एक वृद्ध हतो ॥ तानें कह्यो ॥ जो याकों एकसो मण अन्न ओर एकशत मुद्रा देऊ ॥ ओर याके पिताको गिरास पुरातन भूमी एकसो बीघा हे ॥ जो छिंडाय लीनींगइ हे ॥ सो राजातें लिखवाय देउ ॥ जातें हम सबकोउ ब्राह्मणके रिणतें छूटें ॥ तब उन सबननें कही ॥ जो यह भली कहतहें ॥ पाछें सबननें मिलिकें राजा सों विनती करिकें वाके गिरासकी चिठ्ठी लिखवाय दीनीं ॥ ओर कह्यो जो एक शतमण अन्न सिद्ध हे ॥ सो ले जाऊ ॥ तब वा भट्टनें कह्यो ॥ जो वह अन्न मेरे घर क्योंकरि पोंहोंचे ॥ तब विन लोगननें गाडा भराय दीनें ॥ ओर कह्यो ॥ जो याकों अपनें साथ ले जाउ ॥ तब उन सबन मिलिकें वा भट्टकों वस्त्र दीनें ॥ ओर एक गाय, एक भेंसि, ओर एकशत मुद्रा देकें ॥ पाछें बिदा कियो ॥ ओर कह्यो ॥ जो तुम इतनों प्रतिवर्ष आयकें ले जायो करियो ॥ तब भट्ट उन सबनतें ओर वहाँके राजातें बिदा होयकें सब लेकें अपनें गॉमकों चले ॥ सो अपनें गॉममें आयकें घरकें द्वार आय पुकान्यो ॥ ओर कह्यो ॥ जो भाभी किंवाड खोलि ॥ हों पटेलके चोतरापे बेठिकें कथा कहिकें ॥ ओर पिताको गिरास फेरिकें आयो हों ॥ तब वाकी भाभी किंवाड खोलीकें देखे तो साँचेही देवर ठाढो हे ॥ तब घरमेंतें वाको बडो भाई

ऊठि आयो ॥ सो देखतो छोटेभाईके मुख उपर भगवदतेज विराजत हे ॥ तब वडोभाई डरप्यो ॥ जो यह मनमें मति कछू बुरि लावे ॥ पाछें वह छोटोभाई तो घरमें आयकें अपनीं भाभीके पायन परिगयो ॥ ओर वानें कह्यो ॥ जो यह तुह्मारे वचनतें मोकों श्रीठाकुरजीकी कृपा भई ॥ तब वडेभाईनें कह्यो ॥ जो ऊठो स्नान करो ॥ महाप्रसाद लेउ ॥ तब छोटे-भाईनें कह्यो ॥ जो होंतो राजादुवे ओर माधवदुवेजीकों नमस्कार कियेविन जलपाँन न करुँगो ॥ ओर यह जो कछू भयो हे ॥ सो सब उनहींकी कृपातें भयो हे ॥ मोकोंतो तुम जेसोहूँ ते-सो नीकें जाँनत हो ॥ तब वडेभाईनें कह्यो ॥ जो मेंहूँ तिहारे साथ आऊँगो ॥ तब दोउभाई राजादुवे माधव दुवेके घर संग गये ॥ तब जायकें दोउ भाईननें दुवेजीकों नमस्कार कियो ॥ तब माधवदुवेनें राजादुवेसों कह्यो ॥ जो तुह्मारो सेवक ठाढो हे ॥ तब वानें कह्यो ॥ जो यह प्रसंग याके वडेभाईके आगें मति क-हो ॥ तब पाछें दुवेजीनें विन दोउ भाइनसों कह्यो ॥ जो आओ बेठो ॥ तब वे दोउभाई नमस्कार करिकें बेठे ॥ तब वा छोटे-भाईनें दुवेजीसों सब वात निवेदन करी ॥ तब दुवेजीनें कह्यो जो तेरेमाथें श्रीआचार्यजीको हाथहे ॥ तो एसें क्यों न होय ॥ तब वा वडेभाईनें कह्यो ॥ जो हमनें तो श्रीआचार्यजीके दर्शनहू करे नाँहीं ॥ केवल तुमकूंहीं देखे हें ॥ तातें जेसें याकों कृतार्थ कियो ॥ तेसें मोकों हू कृपा करिकें कृतार्थ करो ॥ तब विन दु-वेजीनें वाहूकों कृपा करिकें नाँम दियो ॥ पाछें विन दोउ भाई-ननें दुवेजीसों कह्यो ॥ जो आज्ञा होय तो मिलीभई मुद्रा, गाय, भेंसि, कपडा, सब आपके मंदिरमें आवें ॥ तब दुवेजीनें कह्यो ॥ जो तुमतो सब जाँनत हो ॥ या द्रव्यके धर्नी तो श्रीआचार्यजीमहा-प्रभु हें ॥ तब विन दोउ भाइननें कह्यो ॥ जो आज्ञा प्रमाँण हे ॥

तव विन दुवेजीनें कह्यो ॥ जो वा अंनको द्रव्य करिकें एकत्र करो ॥ तव वे दोउभाई दुवेजीसों विदा होयकें अपनें घर आये॥ सो वो अन्न वेचिकें द्रव्य एकत्र कियो ॥ तापाछें थोरेसे दिननमें श्रीआचार्यजी आप द्वारिका पधारे ॥ तव सिद्धपुरमें रॉणाव्यासके घर उतरे हे ॥ सो सुनिकें राजादुवे माधवदुवे ओर वे दोउभाई ब्राह्मण वो सगरो द्रव्य साथ लेकें श्रीआचार्यजीके दर्शनकों सिद्धपुर आये ॥ तहॉ आयकें आपको दर्शन कियो ॥ पाछें विन दुवेजीनें विन दोउ भाइनकों श्रीआचार्यजीके पास तें फिर नॉम निवेदन करवायो ॥ ओर वो जो द्रव्य हुतो सो सव भेट करवायो ॥ पाछें दिन द्वे रहिकें श्रीआचार्यजी आप तो द्वारिका पधारे ॥ तव वे राजादुवे माधवदुवे ओर वे दोउभाई ब्राह्मण श्रीआचार्यजीसों विदा होयकें अपनें अपनें घर मणुमंदिर आये ॥ पाछें वे ब्राह्मण दोउभाई विन दुवेजीके संगतें भले वैष्णव भये ॥ सो वे राजादुवे माधवदुवे श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनंके एसे कृपापात्र भगवदीय हे ॥ जिनके जप करवायेतें ब्राह्मणकों सव विद्याकी स्फूर्ति भई ॥ तातें इनकी वार्ता अनिर्वचनीहे सो कहॉतॉई लिखिये ॥ वैष्णव ४२ मो ॥ ॥ ५ ॥ ॥

❀ (वार्ता ४३ मी. वैष्णव ४३ मो.) ❀

❀ (अथ उत्तमश्लोकदास सॉचोराब्राह्मण तिनकी वार्ता) ❀

सो वे उत्तमश्लोकदास श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके साथमें सव सेवकनकी रसोई करिकें वे सवनकों वडे प्रेम भावसों प्रीती पूर्वक परोसते ॥ ओर सवनके माथें वहुत हेत राखते ॥ तातें सव सेवक विन उत्तमश्लोकदासकों मॅहतारी कहिकें वोलते ॥ ओर श्रीगुसॉंईजी हू विनके उपर सदा प्रसन्न रहते ॥ सो वे उत्तमश्लोकदास श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक एसे कृपापात्र भगवदीय हे ॥ तातें इनकी वार्ता कहॉतॉई लिखिये ॥ वैष्णव ४३ मो ॥

❀ (वार्ता ४४ मी. वैष्णव ४४ मो.) ❀

❀ (अथ ईश्वरदुवे सॉचोराब्राह्मण तिनकी वार्ता)❀

सो वे ईश्वरदुवे श्रीगोवर्धननाथजीके सेवकनकी रसोई करते ॥ सो अपनी गॉठितें धृत मॅगवायकें सवनकों नेगतें अधिक धृत परोसते ॥ तातें याहूकों सब सेवक मॅहतारी कहिकें बोलते ॥ सो यह वात श्रीगुसॉईजीनें सुनी ॥ सो सुनिकें आप वोहेत प्रसन्न भये ॥ तब ईश्वरदुवेसों आपनें पूछ्यो ॥ जो तुम अपनी गॉठके द्रव्यको घी मॅगायकें इनकों काहेकों परोसत हो ॥ ए अपनों नेगतो पावत हें ॥ तब ईश्वरदुवेनें कह्यो ॥ जो महाराज इनकों सेवामें वहोत श्रम होत हें ॥ यह सुनिकें श्रीगुसॉईजी वोहोत प्रसन्न भये ॥ जो याकी सब सेवकनके उपर एसी वात्सल्यता हे ॥ पाछें आपनें ईश्वरदुवेसों कह्यो ॥ जो मॉगि हों तेरे उपर प्रसन्न हों ॥ तब वानें प्रसन्न होयकें विनती करी ॥ जो महाराज मेरो मन आप पेतें कवहूं अप्रसन्न मति होऊ ॥ तब श्रीगुसॉईजीनें कह्यो ॥ जो तथास्तु ॥ तब निकटके सब वैष्णवननें कह्यो ॥ जो यानें यह कहा मॉग्यो ॥ तब श्रीगुसॉईजी सुनिरहे ॥ तब वामेंके हरिदास नामके वैष्णवनें आप सों विनती करी ॥ जो महाराज हमारे मनकों संदेह भयो हे ॥ जो ईश्वरदुबेनें यह कहा मॉग्यो ॥ तब श्रीगुसॉईजीनें कह्यो ॥ जो यह तुमारो संदेह उनहींसों मिटेगो ॥ तातें तुम ईश्वरदुवेसोंही पूछो ॥ तब सब वैष्णवन मिलिकें वातें पूछी ॥ जो तुमनें श्रीगुसॉईजीके पासतें यह कहा मॉग्यो ॥ तब उननें कह्यो ॥ जो कदाचित् कोउ अपराधतें आप श्रीगुसॉईजीको मन अप्रसन्न होय तब मेरो मन मति बिगरे ॥ तातें मेंनें यह मॉग्यो ॥ जो सदा निरंतर आपके चरणारविंदपे मन प्रसन्न रहे ॥ सो येतो उनके दियेतेंहीं रहे ॥ तब यह आशय सुनिकें सव वैष्णव प्रसन्न भये ॥ ओर

कही जो सेवककों तो एसोही चहिये ॥ तापाछें श्रीगुसाँईजीनें वा ईश्वरदुबेकों प्रसन्न होयकें श्रीअंगकी सेवा दीनीं॥सो वे पाछें मुखिया भीतरिया भये ॥ वे ईश्वरदुबे श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक एसे परम कृपापात्र भगवदीय हे ॥ तातें इनकी वार्ता कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव ४४ मो ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (वार्ता ४५ मी· वैष्णव ४५ मो.)

❀ (अथ वासुदेवदासछकडा सिंहनदकेवासी तिनकी वार्ता) ❀

एकसमय श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके वडे पुत्र श्रीगोपीनाथजी आप अडेलतें आगरे पधारे ॥ तब आगरेके वैष्णवननें विनकों एकसो मोहोरें भेट कीनीं ॥ पाछें आप आगरेतें श्रीगिरिराजके श्रीजीद्वार पधारे ॥ तब साथके वैष्णवनतें आपनें पूछी ॥ जो कोऊ एसो वैष्णव हे ॥ जो ये मोहोरें हमारे घर अडेलमें श्रीगुसाँईजीके पास पोंहोंचावे ॥ तब वासुदेवदासनें कह्यो ॥ जो महाराज में पहूँचाऊँगो ॥ तब वे मोहोरें सब आपनें वा वासुदेवदासछकडाकों दीनीं ॥ सो वानें लेकें वाको लाखमें एक शालिग्रामकोसो गोला कीनों ॥ ता गोलाकी पूजा करत वो मार्गमें चल्यो गयो ॥ सो दिन पाँचमें अडेल जाय पोंहोंच्यो ॥ तब गॉमके वाहिर वा गोलाकों फोरिकें मोहोरें सब काढिकें श्रीगुसाँईजीके पास जाय दंडवत प्रणाम करिकें सोर्पी ॥ ओर पत्रहू दीनों हतो सो दीनों ॥ सो वॉचिकें आप श्रीगुसाँइजीनें मोहोरें सब गिनि लीनीं ॥ पाछें आपनें वा वासुदेवदासकों प्रसाद लिवायो ॥ तापाछें वानें गुसॉईजीके पास आय दंडवत करिकें कह्यो ॥ जो महाराज मोहोरनकी पोंहोंच सहित पत्रको जुवाव लिखि दीजिये ॥ हूँतो सवारें जाउँगो ॥ तब आपनें वा पत्रको प्रत्युत्तर लिखि दीनों ॥ तामें लिख्यो ॥ जो वासुदेवदासके संग मोहारे १०० पठाँई सो पोंहोंची हें ॥ हम सहकुटुंब श्रीठा–

कुरजीकी कृपातें नींकें हें ॥ आप चिंता न करोगे ॥ ओर प्रसन्नताके पत्र लिखत रहोगे ॥ ओर घर वेग पधारोगे ॥ या मुजब वा पत्रकी पोहोंच लिखिकें वो पत्र वीडकें वासुदेवदासकों दानों ॥ पाछे रात्रि घडी एक रही तब वो ऊठिकें श्रीगुसाँईजीके पास आय दंडवत करिकें अडेलतें चल्यो ॥ सो पाँच दिनमें श्रीगिरिराजके श्रीनाथद्वार आयो ॥ तब वो पत्र श्रीगोगोपीनाथजीके हाथ सोंप्यो ॥ सो पत्र वाँचिकें आप वासुदेवदासके उपर बोहोत प्रसन्न भये ॥ ओर पूछ्यो ॥ जो तुम पेंडेमें मोहोरें कोन भाँति ले गये ॥ तब वानें कह्यो ॥ जो महाराज लाखको गोला करिकें रस्तामें ताकी पूजा करत चल्यो गयो ॥ ओर जो कोऊ मिल्यो ॥ तानें जाँन्यो जो यह बैरागी हे ॥ सो शालिग्रामकी पूजा करत हे ॥ सो सुनिकें आप श्रीगोपीनाथजीनें कह्यो ॥ जो याभाँति कबहूँ न करिये ॥ जाकों श्रीभगवदस्वरूप माँनिये ॥ ताकों फिर केसें फोरिये ॥ तब वा वासुदेवदासनें कह्यो ॥ जो महाराज प्रतिष्ठातो भई न हती ॥ तब आप कहें जो स्वरूप भाव तो भयो ॥ तब वानें कही जो अब एसें न करुँगो ॥ ❀ (प्रसंग २ रो) ❀ ॥ बहुरि एकसमय श्रीगुसाँईजी आप मथुरामें बिराजत हे ॥ सो एकदिन श्रीठाकुरजीको शृंगार करिकें बाहिर बेठकमें पधारे ॥ तहाँ बिराजिकें आगरेके रूपचंदनंदाकों पत्र लिख्यो ॥ तामें वसंतकी सामुग्री मँगाई ॥ तब आपनें वा वासुदेवदासकों कह्यो ॥ जो तूँ इतनी सामुग्री लेकें संध्याको फिरि आउ ॥ ओर ता समें भंडारीकों आपनें आज्ञा दीनी ॥ जो वासुदेवदासकों एक टोकरा प्रसादको देउ ॥ तब भंडारीनें सुखो प्रसाद दीनों॥तब श्रीगुसाँजीनें वासुदेवदासकों आज्ञा दीनी ॥ जो तोकों पनहीं पेहेरेकी कछू चिंता नाहीं ॥ पेंडेमें प्रसाद खातो चल्यो जैयो ॥ ऐसी आज्ञा होतेंहीं वो वासुदेवदास

आपुके पासतें दंडोत करिकें चल्यो ॥ सो मार्गमें प्रसाद खाँत आगरे आय पोंहोंच्यो ॥ सो जब शेहरमें पोंहोंच्यो ॥ तब वो प्रसाद खायचुक्यो ॥ तातें झोरी मारिकें बिन रूपचंदनंदाके घर गयो ॥ तासमें वो रूपचंदनंदा प्रसाद लेचुक्यो हो ॥ सो चुल्लू लेकें सींक करत हो ॥ ता समें वो वासुदेवदास पत्र लेकें आयो ॥ ताकों देखतेंहीं वानें तुरंत हाथ धोय पोछिकें पत्र लेकें माँथें चढायो ॥ ओर अपनें भाईसों कह्यो ॥ जो वासुदेवदास आयेहे ॥ सो भूखे होंयगे ॥ तातें तुरंत रसोई चढाईयो ॥ तब वासुदेवदासनें कह्यो ॥ जो मोकों मथुरा जॉनोंहे ॥ तातें सखडी महाप्रसाद लेवेको अवकाश नाहीं ॥ तुरंत सामुग्री ले देउ ॥ जो हूँ ॥ जातरहूं ॥ तब रुपचंदनंदा तुरंत वस्त्र पहरिकें बजारमें साँमुग्री लेन निकसे ॥ तिनके संग वासुदेवदास हूँ चले ॥ तब रूपचंदनंदानें चलत समें अपनें छोटे भाईसों कह्यो ॥ जो घरमें जितनों महाप्रसाद होय सो सब लेकें छारछू दरवाजे जाय बेठो ॥ पाछें वे रुपचंदनंदा बजारमें आय सब सामुग्री लीनीं सो बांधनलागे ॥ तब वासुदेवदासनें कही ॥ जो मेरो अगिलो घरतो प्रसादी हे ॥ तातें मेरी कटीसों पिछली ओर सब सामुग्री बॉधों ॥ सो सामुग्री सब वासुदेवदासकी कटिसो पिछली ओर बाँधी ॥ पाछें रुपचंदनंदा ओर वासुदेवदास छारछू दरवाजे बाहिर आये ॥ तहाँ देखें तो रुपचंदनंदाको भाइ प्रसाद लिंये बेठ्यो हे ॥ ता सबरे प्रसादसों वा वासुदेवदासकी झोरी भरीकें वाकों बिदा कियो ॥ पाछें आप रुपचंदनंदा दोऊभाई घर आये ॥ ओर वासुदेवदास मथुराको चले ॥ सो तिसरे प्रहर जासमें श्रीगुसाँईजी आप स्नान करिवेकों उठत हे ॥ तासमय वे वासुदेवदास सामुग्री लेकें आय ठाढे भये ॥ तब श्रीगुसाँईजी आप ऊठिकें आपनें श्री-

हस्तसों वा वासुदेवदासकी कटिसों सामुग्री सब खोलि लीनीं ॥ ओर आप वापे वोहोत प्रसन्न भये ॥ ओर कही जो तोकों महाप्रसादकी पातरि राखी हे ॥ सो जाय प्रसाद लेइ ॥ तब वासुदेवदास दंडोत करिकें विश्रांतघाटपे स्नान करिवेकों गये ॥ सो स्नान करि पाछें आय प्रसाद लियो ॥ विन वासुदेवदासकी क्षुधा वहुत हती ॥ तातें वे मण डेढको आहार करते ॥ सो जेसो विनको आहार हतो ॥ तेसो विनमें पराक्रम हू वोहोत हतो ॥ वे मथुराँजीतें दोय प्रहरमें आगरे गये ॥ ओर आये ॥ सो वे एसें पराक्रमी हते ॥ ❀(प्रसंग ३ रो)❀॥ बहुरि श्रीगुसाँईजी आप नित्यप्रति श्रीठाकुरजीको सेवा श्रृंगार करिकें वाहिर आय खवाससों कहते ॥ जो तूँ थेली पीढा लेकें विश्रांत जैयो ॥ ओर आप दर्शनार्थ जन्मस्थानकों पधारते ॥ सो तहाँके दर्शन करिकें पाछे विश्रांत जाय स्नान करते ॥ पाछें घर आवते ॥ या भाँतिसों आप नित्य करते ॥ सो एकदिन मथुरिया चोबे सब मिलिकें वहाँके काजी हाकिमकें जाय चुगली करि ॥ जो तुम विन गोकुलिया गुसाँइसों लागावंदी करो तो इनके सेवक एसे हें ॥ जो तुमकों ड्र चार हजार रुपैया आपहीं देंइँ ॥ तब वो काजी दोयसो मनुष्य हथ्यारवंध लेकें आय ठाढो भयो ॥ इतनेमें श्रीगुसाँईजी आप श्रीकेशवरायजीके दर्शनकों पधारे ॥ सो जब दर्शन करिकें मंदिरके वाहिर आय असवारिपे सवार होंनलागे ॥ तब वा काजीनें कह्यो ॥ जो अब तुम कहाँ जाउगे ॥ सो सुनिकें तब वासुदेवदासनें श्रीगुसाँईजीसों विनती करी ॥ जो महाराज इनकी बुरी नजर दीसतिहे ॥ तब आपनें कह्यो ॥ जो ये तेरो कहा करेंगे ॥ तासों होय सो तूँ हूँ करीले ॥ तब वासुदेवदास आगें आयकें देखे तो एक म्लेच्छके हाथमें ढाल ओर

गुरज देख्यो ॥ तब वाके साँमनें जायकें वाकों एक थपेड मारी ॥ सो लागतमात्रही वह गिरिपन्यो ॥ तब वाकी ढाल ओर गुरज छिडाय वासुदेवदासनें वीस पचीस मनुष्य हने ॥ ओर सब भाजीगये ॥ सो वे एक घरमें घुसिकें दरवाजे देकें छिपि रहे ॥ तब श्रीगुसाँईजी घोडापे असवार भये ॥ सो उनके दरवाजे होयकें पधारे ॥ तब वासुदेवदासनें कह्यो ॥ जो महाराज वे यहाँ इकठोरे भये हें ॥ सो जो आज्ञा होय तो अवहीं दरवाजो तोरिकें सबनकों मारों ॥ तब आपनें नाहीं करीकें कह्यो ॥ जो अब वे तेरो कहा लेतहें तातें जाँनदे ॥ पाछें श्रीगुसाँईजी आप विश्रांतपे स्नान करिकें घरकों पधारे ॥ पाछें दूसरे दिन जब आप फेरि जन्मस्थानकों पधारें ॥ तब वा काजीनें सब मनुष्यन सहित मार्गमें आयकें विनंती कीनीं ॥ जो महाराज काल्हि हमनें कन्हैया ओर भीम देखे ॥ तब श्रीगुसाँईजीनें उनसों कह्यो ॥ जो यह हमारो सेवक ऐसो हे ॥ जो कालि फेरि जो तुम यासों कछू बोलते तो यह अकेलो तुम सनवकों ठोर मारतो ॥ वा समें याकेंतो मनमें उपजीहू हती ॥ परि हमनें यासों नाहीं करी ॥ पाछें वा काजीकों आपनें समाधाँन करिकें घर पठायो ॥ श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी कृपातें वा वासुदेवदासमें एसो सामर्थ्य हतो ॥ ❀ (प्रसंग ४ थो) ❀ ॥ ओर एकसमय वासुदेवदास श्रीगुसाँईजीकी आज्ञा माँगिकें अपरपक्ष (श्राधपक्षनमें) में आगरे आये ॥ तहाँ जो विनके कोछडक्षत्री जिजमॉन हते ॥ सो सब अपरपक्षमें विनकों जिमायकें धोती उपरनॉ दक्षणा देते ॥ सो वे लेकें सब एकत्र करिकें राखते ॥ सो अपरपक्ष वीतें ॥ वे धोतीं उपरनाँ तो सब बाँधि लेते ॥ ओर जो दक्षणाको द्रव्य जमॉ होतो ॥ ताकी मिश्री खाँड ओर चाँमर लेते ॥ ता सबकी एक गाँठि बाँधि

माथेपे धरि वे वासुदेवदास श्रीगोकुलकों आवते ॥ सो वो सब सामुग्री तो श्रीगुसाँईजीके भंडारमें भंडारीकों सोंपि देते ॥ ओर उपरनाँ धोतीं सब जलघरियानकों देकें कहते ॥ जो गाढी धोतीं होंय ताके तो मंदिरवस्त्र करो ॥ ओर पतरी धोतीं उपरनाँके तो छंनाँ करियो ॥ तब वे जलघरिया त्योंहीं करते ॥ सो एकदिन श्रीगुसाँईजीआप जलघरामें पधारे ॥ तब देखें तो छंनानके वस्त्र ऊजरे हें ॥ तब आप जलघरियानसों पूछी ॥ जो ये ऊजरे छन्ना मंदिरवस्त्र कहातें आये ॥ तब विननें कह्यो ॥ जो महाराज ये वासुदेवदासछकडा लाये हें ॥ ओर भंडारमें भंडारीकों सामुग्रीहू दीनींहे ॥ तब आपनें वा वासुदेवदाससों पूछी ॥ जो तेनें छंनाँ मंदिरवस्त्र जो दिये ॥ सो कहाँतें लायो ॥ तब वानें विनती कीनीं ॥ जो महाराज आगरेमें मेरे जिजमाँन कोछड-क्षत्री वैष्णव हें ॥ सो मोकों अपरपक्षमें प्रसाद लिवावते ॥ ओर धोती उपरनाँ दक्षणा देते ॥ ता दक्षणाकी तो मेंनें सामुग्री लेली-नीं ॥ ओर धोतीं उपरनाँनके मंदिरवस्त्र ओर छंना भये हें ॥ सो सुनिकें श्रीगुसाँईजीनें कह्यो ॥ जो लौकिककी वस्तु तेंनें अलौ-किकमें डारी ॥ सो श्रीगुसाँईजी विन वासुदेवदासके उपर एसी कृपा करते ॥ ❀ (प्रसंग ४ थो) ❀ ॥ जब सिंहनद गाँममें उत्सव होतो ॥ तब तहाँके वैष्णव वासुदेवदासकों न बुलावते ॥ जब एकसमें सिंहनदके सब वैष्णव मिलिकें श्रीगोकुल श्रीगुसाँईजीके दर्शनकों आये हते ॥ तब कोई समय पायकें विन वासुदे-वदासने श्रीगुसाँईजीसों विनती कीनीं ॥ जो महाराज ये वैष्णव मोकों उत्सवमें क्यों बुलावत नाहीं ॥ तब श्रीगुसाँईजी चुप्प करिरहे ॥ पाछें जब वैष्णव सब डेराकों बिदा किये ॥ तब तिनमें जो चारि वैष्णव मुखिया हते तिनकों राखे ॥ विनसों श्रीगुसाँईजी आपनें पूछी ॥ जो तुम हमारे वासुदेवदासकों उत्सवं

कीर्तननमें क्यों बुलावत नाहीं तब विननें विनती करी ॥ जो महाराज वासुदेवदासकों बडे उत्सवनमेंतो बुलावत हें ॥ परि छोटे उत्सवनमें तो बुलावत नाहीं ॥ क्यो जो ये भूखे रहें तो दोष लागे ॥ तब श्रीगुसाँईजीनें आज्ञा दीनी ॥ जो तुम बंधारन बाँधो ॥ जो १०० वैष्णव बुलावनें होंय तो पचासमें एक वासुदेवदासकों बुलावो ॥ ओर पचास दुसरे बुलावो ॥ ओर जो पचास बुलावनें होंय तो पचीसमें एक वासुदेवदास ॥ ओर जो पचीस बुलावनें होंय तो बारहमें एक वासुदेवदास ॥ या रीति सों जितनें वैष्णव बुलावनें होंय ॥ तिनमें एकसो तें लेंगाय दस ताँईं आधेमें तो ओर ॥ ओर आधेमें एक वासुदेवदासकों बुलायोकरो ॥ जो तुमकों दस वैष्णव बुलावनें होंय ॥ तो पांच तो ओर पाँचनमें एक वासुदेवदासकों बुलायो करो ॥ या रीतिसों बंधारन करो ॥ तब उन वैष्णवननें श्रीगुसाँईजीसों विनती करी ॥ जो महाराज पाँचनमें तो यह भूखे रहेंगे ॥ तो हमकों दोष लगेगो ॥ तब श्रीगुसाँईजीनें आज्ञा दीनी ॥ जो दस ताँईं आधेमें याकों सुखेन बुलाईयो ॥ तामें जो भूखो रहेगो ॥ ताको तुमकों कछू दोष नाहीं ॥ यह प्रकार तुमकों मेंनें बाँधि दीनों हें ॥ तातें मेरी आज्ञातें तुमकों कछू बाधा नाहीं ॥ परि यह वासुदेवदास श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको परम कृपापात्र सेवक हे ॥ तातें इनकों विन बुलावये उत्सव मति करियो ॥ तब वैष्णवननें कह्यो ॥ जो महाराज आपकी आज्ञा भई तेसोई करेंगे ॥ पाछें कछुकदिन रहके सब वैष्णव सिंहनदकों अपनें अपनें घर गये ॥ तब सों वे वैष्णव हर उत्सवमें वासुदेवदासकों बुलावते ॥ ओर श्रीगुसाँईजी आप वापे श्रीआचार्यजी महाप्रभुनको सेवक जाँनिकें सदा कृपा करते ॥ सो वे वासुदेवदासछकडा सारस्वतब्राह्मण श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके

एसे परम कृपापात्र भगवदीय हे ॥ इनकीं एसीं कितनींक वार्ता हें ॥ सो कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव ४५ मो ॥ ७ ॥

❀ (वार्ता ४६ मी. वैष्णव ४६ मो.) ❀

❀ (बाबावेंणुदासओरकृष्णदासघघरीतथायादवदासकीवार्ता) ❀

सो वे सारस्वतब्राह्मण बाबा वेंणुदास ओर बाबा कृष्णदास ये दोनों भाई हते ॥ तामें वेंणुदास बडे ओर कृष्णदास छोटेभाई हे ॥ तिनमें बडे भाइ बाबा वेंणुदास तो हृदयचक्षु (अंध) हते ॥ सो ये दोऊजनें श्रीकेशवरायजीके आगें कीर्तन करते ॥ तब यादवदास करकें एक बनियाँ विनके संग हतो ॥ एकसमे बाबा कृष्णदास कीर्तन गावन लागे ॥ तब (देखेरीनेन गिरिवर धरन ॥) यह पद गावत विननें देह छोडी ॥ तब बाबा वेंणूदासनें कही ॥ जो हमतो अपनी देह श्रीगिरिराजमें श्रीजीद्वार जायकें छोडेंगे ॥ एसे कहिकें विननें अपनें छोटे भाई कृष्णदासको संस्कार श्रीकेशवरायजीके मंदिरके पिछवारें कियो ॥ तापाछें जब सूतक उतऱ्यो ॥ तब शुद्ध होयकें वे श्रीजीद्वार चले ॥ सो वे यादवदासबनियाँको संग लेकें श्रीनाथद्वार आये ॥ तब बाबा वेंणुदासनें श्रीआचार्यजीके आगें कीर्तन कियो ॥ तब श्रीनाथजीके कंठतें फुलनकी माला गिरि ॥ सो माला ओर एक बीडा लेकें भीतरिया रामदासजीनें विन बाबा वेंणूदासजीकों दिये ॥ सो वानें माथें चढायकें लिये ॥ तब श्रीनाथजीकी इच्छा जानिकें भितरिया रामदासजीनें कह्यो ॥ जो तुह्मारी विदा श्रीनाथजीनें कीनीं ॥ तब बाबा वेंणूदासनें श्रीनाथजीकों दंडवत करीकें श्रीगिरिराज पर्वततें नींचें उतरनलागे ॥ तब बाबा वेंणूदासनें वा यादवदासबनियाँ सों कह्यो ॥ जो हूँ पर्वततें नीचें उतरिकें अपनीं देह छोडूँगो ॥ तातें तूँ सावधाँन रहियो ॥ ओर तूँ हूँ वेगो ऐयो ॥ व्रोहोत दिन मति लगैयो ॥

एसें कहिकें वे दोउ पर्वततें नीचें उतरे ॥ तब बाबा वेणूदासकी दंडोत करतमात्रही देह छूटी ॥ तब वा यादवदास बनियाँनें वाको संस्कार कियो ॥ पाछें शुद्ध होयकें वे यादवदास श्रीगुसाँईजीके दर्शनकों आये ॥ तब श्रीगुसाँईजीनें वाकों परम भगवदीय जाँनिकें मनमें बिचाऱ्यो ॥ जो अबही कोउदिन याकी स्थिति हे ॥ तातें याकों श्रीनाथजीकी सेवामें राखिये तो आछो हे ॥ तब आपनें वासों कह्यो ॥ जो यादवदास अब तुम अकेले हो ॥ तातें श्रीनाथजीकी टहल करो ॥ तब वानें कही ॥ जो कृपानाथ जो आज्ञा ॥ तापाछें श्रीगुसाँईजीकी आज्ञा तें वे यादवदासबनियाँ श्रीनाथजीकी टहल करन लागे ॥ सो वे भलीभाँतिसों करते ॥ तातें विनपे श्रीनाथजी प्रसन्न रहते ॥ परि विनके मनमें खेद रहतो ॥ तातें जब वे सेवासों पोंहोंचिकें नीचें उतरते ॥ तब वे जंगलमें जायकें परी गिरी लकरी होतीं सो उठायकें इकठोरी करते ॥ सो एकदिन विननें जाँन्यो ॥ जो अब लकरींतो सब सिद्ध भई ॥ तादिन श्रीगिरिराजपे दंडोत करिकें श्रीनाथजीपासतें आज्ञा माँगी तब आपनें प्रसन्नतासों आज्ञा दीनीं ॥ तब वे नीचें उतरे ॥ सो तहाँतें अग्नि लेकें जहाँ लकरीं इकठोरीं करीं हतीं तहाँ आये ॥ सो ता लकरींनकी चिता बनायकें श्रीनाथजीकी ध्वजाके सन्मुख वाके उपर जाय बेठे ॥ ओर जा दिशातें बयार चलतही ता दिशातें अग्नि लगायदीनीं ॥ तापाछें ध्वजाकों प्रणाम करिकें श्रीनाथजीको स्मरण करत विननें तत्काल देह छोडी ॥ सो देह जरिकें भस्म होय गई ॥ विन यादवदासनें अपनें हाथसों अपनों अग्निसंस्कार कियो ॥ ताको हेतु यह ॥ जो वानें बाबा कृष्णदासको तथा बाबा वेणुदासको संस्कार अपनें हाथसुँ कियो हतो ॥ ताको अनुभव वाकुँ भयोई हतो ॥ तातें विननें अपनें मनमें बिचारी ॥ जो

सब सेवकनकों मेरो संस्कार करिवेमें कष्ट होयगो ॥ ओर सेवामें अवरोध होयगो ॥ तातें अपनें हाथसों अपनों संस्कार करनों सो आछो ॥ ओर वाकों बावा वेंणुदास ओर यादवदासनें कह्यो ही हतो ॥ जो तूँ बेगो आइयो ॥ विलंब मतिकरियो ॥ तातें वाकुँ लीलामें बेगो जानों हतो ॥ परि श्रीगुसाँईजीनें वाकों श्रीनाथजीकी सेवा सोंपी हती ॥ तातें इतनें दिनको विलंब भयो हो ॥ नाँतर वो कबहीको गयो होतो ॥ पाछें जब दिन द्वे तीन बीते ॥ तब श्रीगुसाँईजीनें सेवकनसों पूछ्यो ॥ जो यादवदास देखियत नाहीं ॥ तब विननें कह्यो ॥ जो महाराज यादवदासतो वनमें लकरीं इकठोरीं करत हतो ॥ तब श्रीगुसाँ-ईजीनें कह्यो ॥ जो वहाँ जायकें देखोतोसही ॥ तब वैष्णव तहाँ जायके देखें तो राखको ढेर पऱ्योहे ॥ सो देखिकें विननें आयकें आपसों कही ॥ जो महाराज वहाँ तो यादवदास पावत नाहीं ॥ एक राखको बडो ढेर पऱ्यो हे ॥ तब श्रीगुसाँईजीनें जानीं ॥ जो वो लीलामें गयो ॥ तब आप श्रीमुखसों कहें ॥ जो वो एसो भगवद्भक्त हतो ॥ जो वानें काहूकों दुःख न दीनों ॥ सो वे यादवदास बनियाँ एसे भगवदीय हे ॥ जानें स्वइच्छाते देह छोडी ॥ सो वे बावा वेंणूदास ओर बावा कृष्णदासघघरी तथा यादवदासबनियाँ ये तीन्यों श्रीआचार्यजीके कृपापात्र ॥ भग-वदीय हे ॥ तिनकी सराहनाँ आप श्रीगुसाँईजी अपनें श्रीमुखतें करते ॥ तातें इनकी वार्ता कहाँताई लिखिये ॥ वैष्णव ४६ मो ॥

❀ (वार्ता ४७ मी. वैष्णव ४७ मों) ❀

❀(अथ जगतानंदसारस्वतब्राह्मण थानेस्वरकेवासीकी वार्ता)❀

सो वे जगतानंद श्रीसरस्वतीजीके तीर उपर कथा कहते ॥ तब एकसमय श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप थानेश्वर पधारे ॥ सो जहाँ वे जगतानंद कथा कहतहे तहाँ आप जाय विराजे ॥

तब जगतानंदनें एक श्लोकको व्याख्यॉन कियो ॥ सो सुनिकें श्रीआचार्यजी आपने कह्यो ॥ जो याको भावार्थ तो बोहोत हे ॥ तब वानें कह्यो ॥ जो श्लोकार्थ हो सोतो मेनें कह्यो ॥ अब जो अधिक होय सो तुमहीं कहो ॥ तब श्रीआचार्यजीनें कह्यो जो तुम व्यासासनपे बेठे हो ॥ तातें हम तुमारो अतिक्रम क्यों-करि करें ॥ तब इतनों सुनत मात्र वो जगतानंद चोकी छोडिकें ऊठि ठाढो भयो ॥ तब श्रीआचार्यजी आपनें वा चोकीउपर वस्त्र बिछायकें ताके उपर पोथी धरी ॥ ओर आप नीचें विराजिकें ॥ वा श्लोकको व्याख्यान फेरिकें करन लागे ॥ सो व्याख्यान करत तीन प्रहर बीते ॥ तब श्रीआचार्यजीनें कह्यो ॥ जो या श्लोकको व्याख्यान मास दोय तीनलों होयगो ॥ परि तुम अब भूखे होउगे ॥ तातें ऊठों ॥ तब वानें कह्यो ॥ जो महाराज आपतो ईश्वरहो ॥ आपको भावार्थ घाटिवेको नाहीं ॥ जबतॉई चाहो तबतॉई कहो ॥ पाछें श्रीआचार्यजीनें पोथी बॉधी॥ तब वानें साष्टांग दंडवत कीनों ॥ ओर कह्यो ॥ जो मेरो घर पावन करिये ॥ आप तो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तम हो ॥ तब श्रीआचार्यजीनें कह्यो ॥ जो तूमतो अन्यमार्गी हो ॥ तोतें हम तुमारे घर केसें पधारें ॥ तब वो जगतानंद श्रीसरस्वतीजीमें न्हायके आय ठाढो भयो ॥ ओर विनती करि ॥ जो महाराज अब मोकों नॉम दीजिये ॥ तब वाकों आपने कृपा करिकें नॉम दीनों ॥ पाछें आप वा जगतानंदके घर पधारे ॥ तहॉ वाके ॥ सेव्य श्रीठाकुरजी हते ॥ जिनकों वानें तुलसी दलमेंही पधराय राखे हते ॥ तिनके माथे वो सदा एक लोटी जलकी भरिकें डारते तिन श्रीठाकुरजीकों श्रीआचार्यजी आपने वा तुलसीदल मेंतें काढिकें पंचॉमृतसों स्नान करवाय न्यारे बेठाये ॥ ओर वागो पहराय शृंगार करिकें राजभोग समर्प्यो ॥

तापाछें वा जगतानंदकों सेवाकी विधि सिखाई ॥ ओर कह्यो ॥ जो तुम याभाँतिसों सेवा करियो ॥ तब वे जगतानंद बोहोत प्रसन्न भये ॥ तापाछें वे श्रीठाकुरजीकी सेवा भलीभाँतिसों करन लागे ॥ तब श्रीठाकुरजी विनकों सानुभव जतावन लागे ॥ सो वे जगतानंद श्रीआर्यजीमहाप्रभुनके एसे कृपापात्र भगवदीय हे ॥ तातें इनकी वार्ता कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव ४७ मो ॥

❀ (वार्ता ४८ मी. वैष्णव ४८ मो.) ❀

❀ (आनंददास विश्वंभरदास दोउभाईक्षत्री तिनकी वार्ता) ❀

सो वे दोनोंभाइ एकत्र वेठिकें भगवद्वार्ता ॥ तथा श्रीआचार्यजीकी वार्ता करते ॥ तब कबहूँक वा छोटेभाई विश्वंभरदासकों निद्रा आयजाती ॥ तब वाकों बदलें विनके सेव्य श्रीठाकुरजी हूँकारी देते ॥ सो जब वे बडेभाई आनंददास वार्ता करिरहते ॥ तब वे विश्वंभरदाससों पूछते ॥ जो हमनें वार्ता कही सो तूँ समुझ्यो ॥ तब वो कहते ॥ जो मेनें तो थोडी सुनीं तापाछें तो मोकों निद्रा आई हती ॥ तब विन आनंददासनें कह्यो ॥ जो तूँ अबताँई तो हूँकारी देत हतो ॥ तब वानें कह्यो ॥ जो मेनेंतो कछू हूँकारी दीनीं नाहीं ॥ मोकोंतो निद्रा आई हती ॥ तातें मेंतो कछू जाँनत नाहीं ॥ तब विन आनंददासनें कह्यो ॥ जो श्रीठाकुरजीनें हूँकारी दीनीं होयगी ॥ तब वे दोऊ भाई मनमें अति प्रसंन भये ॥ जो हमारो बडो भाग्य हे ॥ जो श्रीआचार्यजीकी काँनितें श्रीठाकुरजीनें हमारे मुखसुँ वार्ता सुनिकें आपनें हूँकारी दीनीं ॥ सो वे दोऊ भाई आनंददास तथा विश्वंभरदास श्रीआचार्यजीके एसे कृपापात्र भगवदीय हे ॥ तातें इनकी वार्ता कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव ४८ मो ॥

❀ (वार्ता ४९ मी. वैष्णव ४९ मी.) ❀

❀ (अथ एक ब्राह्मणी अडेलमें रहती ताकी वार्ता) ❀

वा ब्राह्मणीके माथें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें श्रीबालकृष्ण-

जीकी सेवा पधराय दई हती ॥ तिनकी वह यथाशक्ति सेवा करती ॥ परि वह अपनें घरमें निपट निश्कंचन हती ॥ तातें वो श्रीठाकुरजीके आगें मॉटीको कुंजा जलसों भरि राखती ॥ ओर रसोईमें हू मॉटीके पात्र हते ॥ ओर जगेहू संकोचित हती ॥ तातें उतनेंहीमें रसोई मंदिर दोनों हते ॥ आचारहू थोरो तामें वृध्द अवस्थातें वाकों नेत्रनहूतें थोरो सूझतो ॥ तातें वाके घरकी व्यवस्था देखिकें ओर वैष्णव आपुसमें चर्चा करन लागे ॥ जो याके माथें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें कहा जानिकें सेवा पधराय दई हे ॥ यह तों कछू समुझत नाहीं ॥ तब एकदिन श्रीआचार्यजी आप वा डोकरीके गॉमतें कोस दोय पर एक गॉम हतो ॥ तहॉ पधारे हते ॥ सो जब तहॉतें आप पाछे फिरे ॥ तब वा ब्राह्मणीके घरके द्वारपेंतें निकसे ॥ तब आपके साथ जो वैष्णव हते ॥ तिननें विनती कीनीं ॥ जो महाराज आपनें जा ब्राह्मणीके माथें श्रीबालकृष्णजीकी सेवा पधराय दई हे ॥ ताको घर यह हे ॥ तांकें पधारिकें आप देखियेतो ॥ वाको घर वाको आचार केसो हे ॥ तब श्रीआचार्यजी आप तो कृपासमुद्र हें ॥ तातें वा ब्राह्मणीके घरके भीतर पधारे ॥ तब वा समें वो रसोई करत हती ॥ सो वो रोटी करिकें घृतसों चुपरिकें श्रीठाकुरजीके आगें धरतजाय ॥ परि नेत्रनसों न देखे ॥ तातें हाथनसों टटोरे ॥ सो जब रोटी हाथसों नलागे ॥ तब कहे जो रोटी आगें दीसत नाहीं ॥ सो कहा मूँसा विलाई ले जातहें ॥ एसें कहतजाय ॥ ओर रोटी करत जाय ॥ सो श्रीआचार्यजी आप ठाढे ठाढे देखतहे ॥ सो देखिकें आपसों रह्यो न गयो ॥ तब आपनें वा ब्राह्मणीसों कही ॥ जो अरि बाई तेरे बडे भाग्य हें ॥ जो तेरी करी रोटी श्रीठाकुरजी आप

अरोगत हें ॥ सो आपके श्रीमुखके वचन सुनिकें वानें पेहेचानें ॥ तव यह उठिकें श्रीआचार्यजीकों दंडवत करिकें वोली ॥ जो महाराज मेंनें जॉनी नाहीं ॥ जो आप पधारे हो ॥ मोकों तो ऑखिनतें कछू सूझत नाहीं ॥ परि आपकी कॉनितें श्रीठाकुरजी मेरी सेवा मॉनि लेतहें ॥ तव श्रीआचार्यजीनें अपनें संगके सव वैष्णवनसों कह्यो ॥ जो देखो श्रीठाकुरजीतो स्नेहके वश हें ॥ तव वे वैष्णव मुसीकायकें चुप्प करिरहे ॥ पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु वा डोकरीतें कहिकें आप अपनें घर पधारे ॥ सो आप वा वाईके उपर वोहोत प्रसन्न भये ॥ सो वह ब्राह्मणी श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी एसी कृपापात्र भगवदीय हती ॥ तातें वाकी वार्ता कहॉतॉई लिखिये ॥ वैष्णव ४९ मो ॥

❀ (वार्ता ५० मी. वैष्णव ५० मो.)❀

❀ (अथ एक क्षत्रॉणी हती ताकी वार्ता प्रारंभः)❀

सो वह क्षत्रॉणी आप चरखा कॉतती ॥ ता सूतके पैसा दोय तीनि आवते ॥ तिनकी सामुग्री जो आवती ॥ ताकी रसोई करि श्रीठाकुरजीकों समर्पिकें निर्वाह करती ॥ एसे नित्य करती ॥ एकदिन वाकों एसी वुद्धि भई ॥ जो कछु मीठी सामुग्री श्रीठाकुरजीके लियें करि राखूं ॥ तादिनातें वो जो सूत कॉते सो अधिक कॉते ॥ तामेंतें वो थोडो थोंडो इकठोरो करतजाय ॥ सो सूत जव टका दस वारहको इकठोरो भयो ॥ तव वाकों वेचिकें ता पैसानको खांड घृत ले आई ॥ पाछें घरमेंको मेदा छॉनि दूसरेदिन लड्डुवा सिद्ध किये ॥ तव वानें अपनें मनमें कही ॥ जो यह दिन दस वारहकी सामुग्री भइ हे ॥ तातें दिन दस वारहकों निश्चित भई हों ॥ तापाछें वा सामुग्रीमेंतें थोडीसी वादिनॉ श्रीठाकुरजीकों अरोगाय वाकीकी रही ॥ सो एक हॉडीमें भरीकें मंदिरमें धरिराखी ॥ तापाछे श्रीठाकुरजीकों राजभोग

समर्पि भोग सराय आर्ती करि अनोसर करि आप महाप्रसाद लेकें चरखा कॉतन वेठी ॥ तब श्रीठाकुरजी श्रीबालकृष्णजी ॥ आप सिंघासन पेतें उतरिकें वा सामुग्रीकी हॉडी जहॉ धरि हती ॥ तहॉतें लेकें सिंघासन उपर जाय वेठे ॥ सो वे हॉडी खोलि लड्डुवा निकासिकें आप अरोगन लागे ॥ तब मंदिरमें वो हॉडी खडखडान लागी ॥ सो सुनिकें वा क्षत्रॉणीनें कही ॥ जो कहा मति मूॅसा बिलाई होय ॥ एसें कहिकें वह कॉततें ऊठिकें देखन गई ॥ तब मंदिरके किंवाड खोले ॥ तब देखे तो श्रीठाकुरजी आप सिंघासनपे हॉडी लेकें वेठे हें ॥ ओर वामेंतें लड्डुवा काढि काढि अरोगत हें ॥ सो वह क्षत्राणी देखिकें छाती कूटन लागी ॥ ओर कहे ॥ जो यह सामुग्री तो मेनें तुह्मारेई लियें दिन दस बारहकों करि राखी हती ॥ सो तुमने यह कहा कियो जो आजुही सब अरोगे ॥ तब वाकों श्रीठाकुरजीनें कह्यो ॥ जो तूॅ कहा लेखो करि आजुहीं निबरी ॥ तेनें आलस्यके लियें यह सामुग्री इकठोरी करि राखी हती ॥ सो कहॉ नित्य नई न होती ॥ तब वह बोली ॥ जो महाराज अब मेरो अपराध क्षमॉ करो ॥ अबतें में प्रतिदिन नई सामुग्री करिकें आपकों समर्पूंगी ॥ यामें श्रीठाकुरजीनें सबरी सामुग्री अरोगकें यह जतायो ॥ जो यह दिन दस बारहकों निश्चित होयगी तो याकों आरति न रहेगी ॥ ओर जो नित्यकी नित्य सामुग्री करेगी तो याकों आरति रहेगी ॥ जो मोकों सामुग्री करनीं हे ॥ ताकेलीयें श्रीठाकुरजीनें एसी करि ॥ तातें श्रीठाकुरजीकी सामुग्री दिन चारतें वढती न करनी ॥ ओर जो वा क्षत्रॉणीनें छाति कूटी ॥ सो श्रीठाकुरजी अरोगे ताकेलीयें न कूटी ॥ वानें तो छाति याकेलीयें कूटी ॥ जो श्रीठाकुरजीने श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके मार्गकी मर्यादा छोडी ॥

या मार्गकी मार्यादा तो यह हे ॥ जो आगें भोग धरी-भई सामुग्रीही अरोगें ॥ ऊठाय धरीभई सामुग्री होय सो न आरोगें ॥ आज तो श्रीठाकुरजीनें मार्गकी मर्यादा छोडी ॥ सो कदापि मोहकों न छोडें ॥ ताके लियें वानें छाती कूटी ही ॥ पाछें जो श्रीठाकुरजीनें कह्यो हतो ॥ जो तूंतो लेखो करिकें आजुही निवरी ॥ कहा नई सामुग्री न होती ॥ या वातकी सुधि करत वाकों निश्चय भयो ॥ जो श्रीठाकुरजीनें तो मार्गकी मर्यादा छोडी नाहीं ॥ मेंनेंहीं मर्यादा छोडीही जो दिन दस बारहकों सेवातें निश्चित होय बेठी ॥ तातें श्रीठाकुरजीनें मोपे दया करी ॥ जो मोकों सेवामें सावधाँन करी ॥ ताके लियें श्रीठाकुरजी वह सामुग्री आरोगे ॥ तासों वह क्षत्रॉणी एसी कृपापात्र हती ॥ जिनकों श्रीठाकुरजीकी सेवातें स्वस्थता होत नाहीं ही ॥ प्रति दिन सेवामें हीं आर्ति रेहेंती ॥ तातें वासों श्रीठाकुरजी एसे सानुभव हते ॥ जो लरिकाकी नॉई अड करिकें जो चैहियतो सो माँगि लेते ॥ सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी कृपातें वह क्षत्रॉणी एसी भगवदीय हती ॥ जाके उपर श्रीठाकुरजीकी एसी कृपा हती ॥ तातें वाकी वार्ता कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव ५० मो ॥ ॥ ७॥

❀ (वार्ता ५१ मी. वैष्णव ५१ मो) ❀

❀ (सास वहू क्षत्राणी सिंहनदकी वासी तिनकी वार्ता) ❀

सो वा सासको नॉम गोरजा ओर वाकी वहूको नॉम समराई हतो ॥ सो विनके माथें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनें श्रीदामोदर-जीकी सेवा पधराई हती ॥ सो वे दोनों जनीं श्रीठाकुरजीकी सेवा नींकी भॉतिसों करतीं ॥ तातें विनसों श्रीठाकुरजी सानु-भवता जनावते ॥ तब एकसमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु थानेश्वर पधारे ॥ सो आप वहॉ हीं रहे ॥ परि सिंहनद न पधारे ॥ ताको कारण जो थानेश्वर ओर सिंहनदके बीचमें श्रीसरस्वतीजी

नदी हें ॥ ताको आप उलंघन न करते ॥ सो यातें ॥ जो श्रीसरस्वतीजीहें ॥ सो श्रीभगवद्वाणीको प्रवाह हें ॥ तातें वाको उलंघन प्रायः कोईभी आचार्य नहीं करें हें ॥ कारण जो भगवद्वाणीके स्थापनार्थ तो आचार्यनको अवतार ही हे ॥ सो वे उलंघन करें तो खंडन करबे तुल्य होय ॥ तातें आप श्रीआचार्यजी थानेस्वरमें हीं विराजे हे ॥ सो वा सासनें सुनीं ॥ तब वा सासनें वहूसों कह्यो ॥ जो हूँ श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके दर्शनकों थानेस्वर जाति हों ॥ तूँ श्रीठाकुरजीकी सेवा नीकी भाँतिसों करियो ॥ ओर सांप्रत शृंगार करि भोग समर्पियो ॥ इतनों कहिकें वो सास तो थानेस्वरकों गई ॥ तब पाछेंतें वहू न्हायकें सेवा करनलागी ॥ सो वानें प्रथम पाक सिद्ध करि श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यो ॥ सो समय भयो तब सरावन गई तहाँ दिखे तो सामुग्रीं ज्योंकीत्यों यथास्थित श्रीठाकुरजीके पास धरीहें ॥ तब वानें विनती करी ॥ जो महाराज हूँ तो कछू जाँनत नाहीं ॥ ओर सासनें तो मोकों कछू कह्यो नाहीं ॥ अब तुम सामुग्रीं नहीं अरोगत सो में कछू चूकी होऊँगी ॥ अथवा रसोई अछी भई न होयगी ॥ केतो पात्र माँजिवेमें शुद्ध भयो न होंयगे ॥ कछू चूक तो भई होयगी ॥ जातें आप अरोगत नाहीं ॥ असें कहिकें वा वहूनें पाछें भोग सराय पात्र माँजि अछी भाँतिसों पोंछिकें फेरि दूसरीबार रसोई करि ॥ सो जब पाक सिद्ध भयो ॥ तब फेरि श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यो ॥ ओर मनमें कहे ॥ जो मोतें पहली विरीयाँ कछु चूक परि होयगी ॥ तातें श्रीठाकुरजी अरोगे नाहीं ॥ अब अछी भाँतिसों पात्र माजिकें सामुग्रीं करीं हें तातें अब श्रीठाकुरजी भोग अवश्य अरोगेंगे ॥ पाछें जब समय भयो ॥ तब वो दूसरीवेरको भोग सरावन गई ॥ तब देखे तो पूर्ववत ज्योंकीत्यों

सामुग्रीं धरींहें ॥ तब फेरि तोवो बिलबिलाँन लागी ॥ ओर बोहोत रोवे ॥ ओर श्रीठाकुरजीसों विनती करे ॥ जो महाराज हूँ तो कछू जाँनत नाहीं तातें आप जताईये ॥ जो मोकों रसोई करत आवत नाहीं ॥ के कछू मेरी देहको दोष हे ॥ एसें वो कहतजाय ॥ ओर वाकी छाती भरि भरि आवे ॥ ओर कहे ॥ जो मेरो कोंन अपराध हायगो ॥ जातें श्रीठाकुरजी अरोगत नाहीं ॥ तब फेरि आछी भाँतिसों पात्र माँजिकें सामुग्रीं करूँहूँ एसें कहिकें फेरि तीसरीबार रसोइकरि भोग समर्प्यो ॥ सो समय भये सरावन गई ॥ तब फेरि यथास्थित ज्योंकोत्यों देख्यो ॥ तबतो वाकों महा खेद भयो ॥ जो अब हूँ कहा करूं ॥ श्रीठाकुरजी भूखे रहेंगे ॥ सासनें तो मोकों कछू सिखायो नाहीं ॥ एसें कहिकें वो पछाड खायकें भूमिमें गिरी ॥ ओर बोहोत खेद करन लागी ॥ ता श्रमसों वाकों तनक निद्रा आई ॥ वानें वादिन सवारेतें जलहू लीनों न हतो ॥ तातें कंठतो जूदो सूके ॥ ओर व्याकुल व्हेकें परी हे ॥ तब श्रीठाकुरजीतें वाको दुःख सह्यो न गयो ॥ तातें सिंहासनतें उतरिकें आप वाके पास आयकें वासों कहनलागे ॥ जो अरी तूँ काहेकों खेद करत हे ॥ होंतो तीन्योबेर तेरी करीभई सामुग्री अरोग्योहूँ ॥ तातें तूँ कछू संदेह मति करे तब वानें कह्यो ॥ जो में केसें जाँनूँ ॥ तब श्रीठाकुरजीनें कह्यो ॥ तूँ भूखी हे तातें कछू खाय ॥ तब वानें कह्यो ॥ जो हूँ तो तब लेऊँगी ॥ जब आपको अरोगत देखोंगी ॥ तब श्रीठाकुरजीनें बोहोत समुझायो परि वानें माँन्यो नाहीं ॥ तब श्रीठाकुरजी आप आयकें जलको गडुवा लेआये ॥ ओर वासों कह्यो ॥ जो तेरो गरो सूक्योजातहे ॥ तातें तूँ तनक जल पाँन तो करि ॥ तब श्रीठाकुरजीनें अपनें श्रीहस्तसों वाके मुखमें जल डार्‍यो ॥ ओर कह्यो ॥ जो सवारें

तूं देखेगी तेसें हों अरोगूंगो ॥ तब वानें ऊठिकें सखडी महा-
प्रसाद सब गायनकों खवाय रसोई पोतिकें दुसरे दिनके लियें
रसोईकी सब सामुग्री तत्पर राखी ॥ ओर रात्रिकों वो उत्साह-
सों सोई ॥ पाछें प्रातःकाल ऊठि स्नान करिकें रसोई चढाय
श्रीठाकुरजीकों जगाय शृंगार कियो ॥ ओर मेवा भोग धर्यो ॥
पाछें जब पाक सिद्ध भयो ॥ तब राजभोग समर्प्यो ॥ तातें
जब वो टेरा सरकावन लागी ॥ तब श्रीठाकुरजीनें कही ॥
जो टेरा काहेकों सरकावत हे ॥ अब तू देखि जो हों अरोगत
हों ॥ ओर यह सब सामुग्री ज्योंकीत्यों यथास्थित रहेंगी ॥
तब वो समराई तहहाँ ठाढी रही ॥ तब श्रीठाकुरजीकों भोजन
करत देखे ॥ सो आप भोजन करिचुके ॥ तापाछें सामुग्री
थारमें यथास्थित देखीं ॥ तब श्रीदामोदरजीनें कह्यो ॥ जो
याही भाँति नित्य जॉनिलीजियो ॥ तब समराईने कह्यो ॥ जो
हूं देखोंगी तबहीं मानोंगी ॥ तापाछें जब वो नित्य भोग धरे ॥
तब श्रीठाकुरजीकों भोजन करत देखे ॥ ता समें जो चहिये सो
श्रीठाकुरजी वापेते माँगि लेते ॥ पाछें हास्यादिक विनोद करें ॥ तब
वाकों सकल रसको अनुभव होय ॥ तातें वो समराई सकल रसको
अनुभव करन लागी ॥ सो यह बात सब श्रीदामोदरजीनें श्री
आचार्यजीमहाप्रभुनसों कही ॥ जो मोकों समराई बोहोत सुख
देत हे ॥ तब श्रीआचार्यजीनें समराईकी सास गोरजा सों पूछी ॥
जो तोको कछू श्रीठाकुरजी सानुभवता जनावत हे ॥ तब वो
गोरजा बोली नाहीं ॥ पाछें वो गोरजा श्रीआचार्यजीसो विदा
होयकें सिंहनद अपनें घर आई ॥ तब दूसरेदिन वा सासनें र-
सोई करि भोग समर्प्यो ॥ तब वाकी बहू चोंकि ऊठी ॥ ओर
कही जो आज्ञ श्रीठाकुरजी अरोगे नाहीं ॥ तब सासनें कही
जो बहू सुनि ॥ श्रीठाकुरजीतो बालक हें ॥ सो तोहिसों हिले

होंयगे ॥ तातें तूं रसोई वेगि करि ॥ तब समराई तुरंत न्हायकें रसोइमें जाय रसोई करि श्रीठाकुरजीकों भोग समर्पन गई ॥ तब वासों श्रीदामोदरजीनें कह्यो ॥ जो में तो अरोग्यो हूँ ॥ तब वा समराईनें कह्यो ॥ जो अब अरोगो तो में जानूँ ॥ तब श्रीठाकुरजी फेरि अरोगे ॥ तापाछें जब सास रसोई करे ॥ तब वहूकों बुलायकें कहे ॥ जो थार लेजा ॥ सो बहू थार ले जायकें श्रीठाकुरजीकों अरोगवावे ॥ एसें वो नित्यप्रति करे ॥ सो सब बात श्रीठाकुरजी श्रीआचार्यजीसों कहें ॥ तापाछें एकदिन वह बहू श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके दर्शनकों थानेस्वर गई ॥ तहाँ जायकें आपको दर्शन कियो ॥ ता समें आप पाक करत हे ॥ तब समराई रोटी बेलिवेकों बेठि गई ॥ तब आपनें वासों कह्यो ॥ जो तेरी बात सब हमसों श्रीठाकुरजीनें कही हे ॥ जो हमकों समराई भलीभाँतिसों सुख देत हे ॥ तब वो सुनिकें मुसिकाय रही ॥ ओर अपनें मनमें कही ॥ जो इतनीहू बात श्रीठाकुर-जीके पेटमें नाहीं ठहरी सो ओर कहा ठहरेगी ॥ पाछें वानें श्रीआचार्यजीसों कह्यो ॥ जो महाराज लरिकाकों कहा पूछत हो ॥ तब यह बात सुनिकें आप बोहोत प्रसन्न भये ॥ ओर कहें जो देखो श्रीठाकुरजीको इनसों ऐसो संबंध हे ॥ ओर या वहू उपर तो बोहोत कृपा हे ॥ पाछें वो बहू सालन करती ॥ सो नीकी भाँतिसों करती ॥ तब श्रीगुसाँइजीनें कह्यो ॥ जो तूं नित्य सालन क्यों नाहीं करत ॥ तब वो बोली जो महाराज लरिकाके मनमें आवे सो करिये ॥ सो यह सुनिकें श्रीआचार्यजी आप बोहोतही प्रसन्न भये ॥ वाकी सास गोरजाहू सामुग्री स्नेहसों बोहोत उत्तम करे ॥ तातें श्रीठाकुरजीकों अत्यंत प्रिय लागें ॥ सो सब समाचार श्रीआचार्यजीके घर पधारिकें श्रीठाकुरजी विनसों कहें ॥ तातें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु उन सास वहू

दोनों उपर बोहोत प्रसन्न रहते ॥ तातें विनकों दर्शन देवेकों आप प्रतिवर्ष थानेस्वर पधारते ॥ तब आप कहते ॥ जो कहा करिये हमकों सरस्वती उलंघन करनी नाहीं ॥ नॉतर इनकों सिहनद जायकें दर्शन देतो ॥ तातें सास गोरजा, बहू समराई श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी एसी कृपापात्र भगवदीय हतीं ॥ तातें श्रीठाकुरजी विनकों एसे सानुभव हते ॥ जो चहिये सो मॉगि लेते ॥ ओर कछू अंतर न राखते ॥ तातें इनकी वार्ता अनिर्वचनी हे ॥ सो कहॉताई लिखिये ॥ वैष्णव ५१ मो ॥ ॥ ७ ॥ ॥

❀ (वार्ता ५२ मी. वैष्णव ५२ मो.) ❀

❀ (कृष्णादासी रुक्मिणीवहूजीकी खवासिन ताकी वार्ता) ❀

सो वो कृष्णादासी अडेलमें श्रीगुसाँईजीके प्रथमपत्नि श्रीरुक्मिणी बहूजीकी खवासी करती ॥ सो जब श्रीरुक्मिणी बहूजीकें चोथो गर्भ उदरमें रह्यो हो ॥ तब वा कृष्णादासीनें आगेतें कह्यो हो ॥ जो अबकें बेटा होयगो ॥ ताको नॉम तो में श्रीगोकुलनाथजी धरूँगी ॥ तापाछें जब प्रसूतीको समय आयो ॥ तब श्रीरुक्मिणी बहूजीके पेटमें व्यथा होंन लागि ॥ तब कृष्णादासीनें जायकें जोतशीसों पूछ्यो ॥ जो अब मुहूर्त केसो हे ॥ तब वा जोतशीनें कह्यो ॥ जो आज दिन नींको नाहीं तब वा दासीनें आयकें श्रीरुक्मिणी बहूजीके पेटपे हाथ फेरिकें कह्यो ॥ जो महाराज अबतो मति पधारो ॥ आज तो दिन नींको नाहीं ॥ तब वाही समें बहूजीके पेटकी व्यथा दूरि भई ॥ तापाछे जब दिन दोय तीन बीते ॥ तब वा कृष्णादासीनें विचान्यो ॥ जो अब फिर पूछूँ जो आजको दिन केसो हे ॥ तब वानें जोतशीतें जाय पूछी ॥ तब वा जोतशीने कह्यो ॥ जो आजुको दिन बोहोत नींको हे ॥ तब वा कृष्णादासीने तुरंत आयकें श्रीरुक्मिणी बहूजीसों विनती करि ॥ जो महाराज आ-

जंकों दिन वडो उत्तम हे ॥ तातें अब पधारिये ॥ सो जो बालक प्रगट होय तो भलो.हे ॥ तब श्रीबहूजीमहाराज जहाँ प्रसूतीस्थळ हो तहाँ शैयापे आय पोढे ॥ ओर कृष्णादासीनें विनके पेट उपर हाथ फेरिकें कह्यो ॥ जो महाराज अब पधारिये ॥ तब वाही समें तत्काल पेटमें प्रसूतकालको दर्द होयकें बालकको जन्म भयो ॥ ता समें श्रीगुसाँईजी आप श्रीनाथद्वार गिरिराजमें हते ॥ तातें वा कृष्णादासीनें पूर्वनिश्चयानुरूप वा बालकको नॉम श्रीगोकुलनाथजीही धर्‍यो ॥ पाछें श्रीगुसाँईजीकों बधाई पठाई ॥ तब आप अडेल पधारे ॥ तापाछें नाँमकरण कर्‍यो ॥ तब जन्मपत्रिकामें श्रीवल्लभजी नॉम आयो ॥ सो आपनें गुप्त राखिवेकेलियें वा कृष्णादासीकी कॉनितें आपनें श्रीगोकुलनाथजीही नॉम प्रसिद्ध राख्यो ॥ एसी वा कृष्णादासीपे आप श्रीगुसाँईजीकी पूर्ण कृपा हती ॥ जाके कहेतें दोऊ नॉम प्रसिद्ध भये ॥ सो वो ऐसी कृपापात्र दासी ही ॥ ❀ (प्रसंग २ रो) ❀ ॥ तापाछें जब श्रीगुसाँईजीके सातमें लालजी श्रीघनःश्यामजीको जन्म हूं वा कृष्णादासीके हाथतें भयो ॥ तब सब नॉमकरण विचारन लागे ॥ तब विन श्रीवल्लभजी (श्रीगोकुलनाथजी) नें कह्यो ॥ जो इनकोंहू नाँम श्रीगोकुलनाथजी धरो ॥ तब श्रीगुसाँईजीनें कह्यो ॥ जो यह नॉमतो तिहारो हे ॥ तातें विनको नॉम श्रीघनःश्यामजी धर्‍यो ॥ परि जन्मपत्रिमें श्रीकृष्ण नाम आयो हो ॥ तब श्रीगुसाँईजीनें कह्यो ॥ जो यह नॉमतो गौप्यही रहेगो ॥ तातें दोऊ नॉम प्रमॉण राखे ॥ श्रीवल्लभकुलकेविषें तो सबकोऊ श्रीकृष्ण यह नॉम कहें ॥ ओर सब जगतमें श्रीघनःश्यामजी नॉम प्रसिद्ध भयो ॥ सो वो कृष्णादासी श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी एसी कृपापात्र ही ॥ जाके हाथ फेरेतें श्रीरुक्मिणी बहूजीके पेटकी व्यथा मिटी ॥ ओर वाके

हाथतें दोय बालक प्रगट भये ॥ सोहू जब वानें कह्यो जो अब पधारो ॥ तब बालक प्रगट भये ॥ तातें याकी वार्ता अनिर्वचनीय हे ॥ सो कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव ५२ मो ॥ ७ ॥ ७ ॥

❀ (वार्ता ५३ मी. वैष्णव ५३ मो.) ❀

❀ (अथ बूलामिश्र पश्चिमके वासी तिनकी वार्ता) ❀

. सो बूलामिश्र एक क्षत्रीकपूरके पुरोहित हते ॥ ता क्षत्रीकी स्त्रीकें संतति न होती ॥ तब वानें दूसरो विवाह कियो ॥ ताहू स्त्रीकें संतति न भई ॥ तब काहूनें वा क्षत्रीसों कह्यो ॥ जो तुम हरिवंश पुरॉण सुनो ॥ तो तुह्मारें संतति होय ॥ तब वानें जायकें अपने पुरोहित बूलामिश्रसों प्रार्थनाँ करी ॥ जो तुम मोकों हरिवंशपुराण सुनावो ॥ तब वानें कह्यो ॥ जो अबतो मोकों अवकाश नाहीं ॥ जब अवकाश होयगो ॥ तब तुमरे घर आऊँगो ॥ तब वह क्षत्री अपनें घर आयो ॥ पाछें एकमहीनॉ बीत्यो ॥ तब एकदिन अचॉनक वे बूलामिश्र वा क्षत्रीके घर आये ॥ तब उन आदर करिकें घरमें पधराये ॥ तब बूलामिश्रनें कह्यो ॥ जो तुम दोऊ स्त्रीन सहित स्नान करिकें आय बेठो ॥ तब वे दोऊ स्त्रीन सहित आप स्नान करिके आय बेठे ॥ तब विन बूलामिश्रने देह सुध्द होयवेकेलीयें एक दॉन करवायो ॥ तापाछें विनकों हरिवंशपुराणके अंतको एक श्लोक सुनायो सो श्लोक ॥ (इदं मया ते हरिकीर्तनं महत् श्रीकृष्णमाहात्म्यमपारमद्भुतम् ॥ शृण्वन्पतन्नाशु समाप्नुयात्फलं यच्चापि लोकेषु सुदुर्लभं महत् ॥१॥) यह श्लोक सुनाय व्याख्यान पूरो करिकें वा बूलामिश्रनें उनकों मंत्रपढिके आशीर्वाद दियो ॥ तब वा क्षत्रीकी पेहेली स्त्रीकी गोदमें अक्षत दिये ॥ तब वा क्षत्रीनें कह्यो ॥ जो मिश्रजी तुमनें यह कहा कियो ॥ याकों तो स्त्रीधर्म हू होत नाहीं ॥ तब बूलामिश्रने कह्यो ॥ जो श्रीठाकुरजी सर्व समर्थ हें ॥ वे देवे-

वारे होयगो तो याहीकें पुत्र होयगो ॥ अवतो मेंनें याकों अक्षत दीनें सो दीनें ॥ इतनों कहिकें बूलामिश्र अपनें घरकों चलन लागे ॥ तब वा क्षत्रीनें विनती कीनी ॥ जो महाराज तुम मोको संपूर्ण श्रीहरिवंशपुराण सुनावो ॥ पाछें घरकों पधारो ॥ तव वानें कह्यो ॥ जो श्रीठाकुरजी तोकों संपूर्णको फल एकही श्लोकमें देइंगे ॥ यह कहिकें मिश्र अपनें घरकों चले ॥ तापाछें वा क्षत्रीकी वडीस्त्रीकों फिरि ऋतु आयो ॥ ओर गर्भवती भई ॥ तापाछें समय भयो तब वाकें पुत्र भयो ॥ सो वे बूलामिश्र श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके एसे कृपापात्र भगवदीय हे ॥ जिनकें अनुग्रहतें वा क्षत्रीकें पुत्र भयो ॥ जाके मुखतें श्रीहरिवंशपुराण संपूर्ण सुनिवेको फल एकही श्लोक सुनिवेतें भयो ॥ ता बूलामिश्रकी वार्ता अनिर्वचनीय हे ॥ सो कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव ५३ मो.

❀ (वार्ता ५४ मी. वैष्णव ५४ मो.) ❀

❀ (अथ राँमदासजी मीराँबाईके पुरोहित तिनकी वार्ता) ❀

सो वे राँमदासजी एकदिन मीराँबाईके श्रीठाकुरजीके आगें कीर्तन करत हते ॥ सो श्रीआचार्यजीके पद गाय रहे हते ॥ तब वा मीराँबाईनें कह्यो ॥ जो राँमदासजी दूसरो कोई पद श्रीठाकुरजीको गावो ॥ तब विननें कह्यो ॥ जो अरे यह कोंनको पद हे ॥ तातें जा आजुतें तेरो मुख कबहूँ न देखुँगो ॥ इतनों कहि वहाँतें तुरंत ऊठिकें अपनें घर आये ॥ सो सब कुटुंब लेकें वे राँमदासजी वा गाँमतें ऊठि चले ॥ सो मीराँबाइपे खबरि भई ॥ तब वानें वोहोतेरो कहाय पठायो ॥ परि वे रहे नाहीं ॥ सो तादिनतें फिरि कबहूँ विननें वाको मुख न देख्यो ॥ वे जो वृत्ति छोडिकें दूसरे गाँम जाय रहे ॥ सो फेरि कबहूँ वा गाँम होयकें हूँ निकसे नाहीं ॥ तापाछें विनकों मीराँबाईनें वोहोतेरो बुलवाये ॥ परि वे राँमदासजी कबहूँ न आये ॥ तब मीराँबाईनें

विनकों घर बेठे भेट पठाई ॥ सो हू विननें फेरि दीनीं ॥ ओर कही ॥ जो तेरो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके उपर ममत्व नाहीं ॥ तो हमकों तेरी व्रति कहा करनीं हे ॥ एसी व्रत्ती तो हमकों बहूतेरीं मिलेंगीं ॥ परि हमारे तो श्रीआचार्यजी बिनाँ सर्वस्व त्याग करनों ॥ ओर उनके चरणारविंदको आश्रय राखनों ॥ एसें कहिकें विननें वाको कछू न राख्यो ॥ सो वे रॉंमदासजी श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके एसे कृपापात्र भगवदीय हे ॥ तातें इनकी अनिर्वचनीय वार्ता हे ॥ सो कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव ५४ मो ॥

❀ (वार्ता ५५ मी. वेष्णव ५५ मो.) ❀

❀ (अथ रॉंमदास चोहाँनरजपूत तिनकी वार्ता प्रारंभः) ❀

सो वे रॉंमदासचोहाँन श्रीगोवर्द्धनपर्वतकी कंदारनमें रहते ॥ सो जब प्रथम श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप श्रीगिरिराज पधारिकें श्रीगोवर्द्धननाथजीकों पाट वेठाये ॥ तबहीं वे रॉंमदासजी कंदारमें तें निकसिकें बाहिर आये हे ॥ तिननें श्रीआचार्यजीकों दंडोत करि दर्शन किये ॥ तब आपनें विनसों कह्यो ॥ जो रॉंमदासजी अब तुम श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सेवामें सावधाँन रहियो ॥ तब विननें कही ॥ जो महाराज जो आज्ञा होयगी सो यथाशक्ति करुँगो ॥ पाछें विन रॉंमदासजीनें एक छोटोसो मंदिर ईटनको बनवायो ॥ तामें श्रीआचार्यजीनें श्रीनाथजीकों वेठाये ॥ ता पहलें जब श्रीनाथजी आप श्रीगोवर्द्धनपर्वत उपर बिराजते ॥ तब वहाँके व्रजवासी लोगननें फूँसकी छति करि राखी हती तामें आप वेठते ॥ तिनकों वे व्रजवासी ओर सबकोउ देवदमन तथा गोपाल यह नाँम कहते ॥ ओर दूध, दही, माँखन अरोगावते ॥ सो जब श्रीआचार्यजीनें आपकों मंदिरमें पधराये ॥ तापाछें श्रीनाथजी यह नाँम प्रगट भयो ॥ तब तें सबकोऊ श्रीनाथजी यह नाँम कहन लागे ॥ सो वे रॉंमदासजी

श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके एसे कृपापात्र भगवदीय हे ॥ जिनकों आपनें श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सेवा दीनीं ॥ ओर आप विनके उपर सदा प्रसन्न रहते ॥ ओर जिनकी सेवातें श्रीनाथजी आप विनकों सानुभवता जनावन लागे हे ॥ सो वे राँमदासजी महा भगवदीय हे॥ तातें विनकीवार्ता कँहाँतांई लिखिये॥ वैष्णव ५५ मो ॥

❀ (वार्ता ५६ मी. वैष्णव ५६ मो.) ❀

❀(राँमानंदपंडितसारस्वतब्राह्मण थानेस्वरवासी तिनकी वार्ता)❀

सो एकसमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप स्थानेस्वर पधारे ॥ तहाँ राँमाँनंदपंडितके घर उतरे॥ सो रात्रिकों श्रीआचार्यजी आप पोढे ॥ पाछें जब पिछली रात्रि रही ॥ तब वा राँमाँनंदनें अपनीं स्त्रीकों उठायकें कही ॥ जो वेगि ऊठि गोबर अबेरिले ॥ नाँतर वैष्णव ऊठेंगे ॥ तो सब गोबर ले जाँयँगे ॥ तासमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप हाथ पाँई धोईवेकों ऊठे हे ॥ तातें वह बात आपनें प्रत्यक्ष सुनी ॥ तातें आप अति क्रोधवंत होयकें वा राँमाँनंदकों बुलवायो ॥ ओर आपनें गडुवामेंतें जल वाके हाथमें मेलिकें मंत्र पढिकें वह जल वापेंतें पाछो लेकें वापेही छिरक्यो ॥ ओर श्रीमुखतें कह्यो ॥ जो जा आजतें मेंनें तेरो त्याग कियो॥ तेने अपनीं स्त्रीसों यों कह्यो॥ जो गोबर अबेरिले॥ नाँतर वैष्णव सब ले जाँयँगे ॥ सो जो तेनें गोबरमें इतनो द्वेशभाव मेरे सेवकनमें कियो ॥ तो तूँ सवारें रसोईको सामाँन लावतें कहा न करेगो ॥ एसें कहिकें आप श्रीआचार्यजी जब वा राँमाँनंदके घरमेंतें क्षणएक न ठेरतें तुरंत ऊठि चले ॥ तब वा थानेस्वरके वैष्णवननें बोहोत विनती करी ॥ परि आप रहे नहीं ॥ ओर कहें ॥ जो में यहाँ जलहूँ न लेउँगो ॥ पाछें थानेस्वरतें तीन कोसपे एक महातीर्थ हे ॥ तहाँ आयकें आपनें स्नान कियो ॥ तापाछें जा काहूनें राँमाँनंद पासतें नाँम पायो

हो ॥ तिनकों श्रीगुसाँईजी गंगोज कहते ॥ तापाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप थानेस्वरतें पधारे ॥ तापाछें वा राँमाँनंदकी अवस्था विकल भई ॥ तब वो बजारमें जाय ॥ ओर जो वस्तु देखे सो खाय ॥ कछू मर्यादा रही नाहीं ॥ परि वो इतनी मर्यादा करे ॥ जो जो चीज खाय सो ऐसें कहिकें मुखमें डारे ॥ जो श्रीगोवर्धननाथजी आप अरोगियो ॥ सो एकदिन वानें एक हलवाईकी हाटमें जलेबी आछी देखी ॥ सो वापेतें मोल लेकें कह्यो ॥ जो श्रीनाथजी अरोगियो ॥ ऐसें कहिकें वानें खाई ॥ तासमें यहाँ श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप श्रीनाथजीको भोग समर्पत हते ॥ तब आपसों श्रीगोवर्धननाथजीनें कह्यो ॥ जो आज्ञ तो हमनें जलेबी बोहोत आछी अरोगी हे ॥ तब श्रीआचार्यजीनें कह्यो ॥ जो बाबा कोनें समर्पी हे ॥ तब श्रीजीनें कही ॥ जो वा राँमाँनंदनें ॥ तब श्रीआचार्यजीनें कह्यो ॥ जो महाराज मेंनें तो वाको त्याग कियो हे ॥ ओर तुमतो वाकेई हाथको अरोगत हो ॥ तब श्रीनाथजीनें कह्यो ॥ जो तुमनें मोकों काहेकों वाकों सोंपे ॥ जाको तुम त्याग करत हो ॥ हमतो तुमारे सोंपेकों नाहीं छोडत हें ॥ तब श्रीआचार्यजी आप चुप्प व्हे रहे ॥ सो यह सब बात आप श्रीआचार्यजीनें दामोदरदासहरसाँनी सों कही ॥ तब दामोदरदासनें विनती करी ॥ जो महाराज अब वा राँमाँनंदको अंगीकार कब करोगे ॥ तब आपनें कह्यो ॥ जो यासों वैष्णवनको अपराध न होयगो ॥ तो लक्षजन्म पाछें हम वाको अंगीकार करेंगे ॥ श्रीनाथजीनें अंगीकार कियो हे ॥ तोहू हमसों तो इतनो अंतराय भयो ॥ तातें वैष्णवनकों बोलनों सो विचारिकेंहीं बोलनों ॥ बिनाँ विचारे सर्वथा न बोलनों ॥ जातें वैष्णवको अपराध न होय ॥ तातें यह अनिर्वचनीय वार्ता कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव ५६ मो ॥

❀ (वार्ता ५७ मी. वैष्णव ५७ मो.) ❀

❀ (अथ विष्णुदास छीपा तिनकी वार्ता प्रारंभः) ❀

वे विष्णुदासछीपा जब वृद्ध भये ॥ तब श्रीगोकुलमें श्रीगुसाँईजीकी बेठककी द्वारपाली करते ॥ ओर जो कोइ पंडित श्रीगुसॉईजीसों वाद करनकों आवते ॥ तिनसों वे पूछते ॥ जो तुम काहेकों आये हो ॥ तब वे पंडित कहते ॥ जो हम श्रीगुसॉईजीसों वाद करनकों आये हें ॥ तब विष्णुदास कहते ॥ जो प्रथम मोसों चर्चा करिलेउ ॥ पाछें श्रीगुसाँईजीसों वाद करियो ॥ तब वे विष्णुदाससों चर्चा करते ॥ तब विष्णुदास वाद करिकें उनकों निरुत्तर करिदेते ॥ तब वे पंडित अपनें मनमें समाधॉन मॉनिकें द्वारमेंतें ही पाछे अपनें स्थानकों चले जाते ॥ या रीतिसों जो पंडित आयकें ॥ काव्य, व्याकरण, अलंकार, ओर जा जा शास्त्रनके श्लोक कहते ॥ ताहीकों दूपण देकें वे विदा करिदेते ॥ तब सब पंडित मनमें कहते ॥ जो जिनके द्वारपाल एसे पंडित हें ॥ तो तिनकें धनीं केसे पंडित होंयगे ॥ तातें श्रीगुसॉईजी तॉइ तो कोई पंडित जॉन न पावतो ॥ एसें होत बोहोत दिन बीते ॥ तब एकदिन श्रीगुसॉईजीनें कही ॥ जो अब कोऊ पंडित वाद करनकों काहे नाहीं आवत ॥ तब वैष्णवननें कह्यो ॥ जो महाराज विनकोंतो विष्णुदासही निरुत्तर करिकें विदा करतहें ॥ तातें वे द्वारहीतें फिरि जात हें ॥ तब श्रीगुसॉईजी आप श्रीमुखतें विष्णुदासकों बुलायकें कहें ॥ जो विष्णुदास तुममेंतो श्रीआचार्यजीके कृपाबलतें एसो सामर्थ्य हे ॥ जो तुम पंडितनकों निरुत्तर करिदेतहो ॥ परि उन ब्राह्मणको अतिक्रम होत हे ॥ तातें अब जो पंडित आवे ताकों हमारे पास आयवे दीजियो ॥ तब तें जो कोऊ पंडित वाद करनकों आवतो ॥ ताकों वे श्रीगुसॉईजी पास जॉन

हो ॥ तिनकों श्रीगुसाँईजी गंगोज कहते ॥ तापाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप थानेस्वरतें पधारे ॥ तापाछें वा रॉमॉनंदकी अवस्था विकल भई ॥ तब वो बजारमें जाय ॥ ओर जो वस्तु देखे सो खाय ॥ कछू मर्यादा रही नाहीं ॥ परि वो इतनी मर्यादा करे ॥ जो जो चीज खाय सो ऐसें कहिकें मुखमें डारे ॥ जो श्रीगोवर्धननाथजी आप अरोगियो ॥ सो एकदिन वानें एक हलवाईकी हाटमे जलेबी आछी देखी ॥ सो वापेतें मोल लेकें कह्यो ॥ जो श्रीनाथजी अरोगियो ॥ ऐसें कहिकें वानें खाई ॥ तासमें यहॉ श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप श्रीनाथजीकों भोग समर्पत हते ॥ तब आपसों श्रीगोवर्धननाथजीनें कह्यो ॥ जो आज्ञु तो हमनें जलेबी वोहोत आछी अरोगी हे ॥ तब श्रीआचार्यजीनें कह्यो ॥ जो बाबा कोनें समर्पी हे ॥ तब श्रीजीनें कही ॥ जो वा रॉमॉनंदनें ॥ तब श्रीआचार्यजीनें कह्यो॥ जो महाराज मेंनें तो वाको त्याग कियो हे ॥ ओर तुमतो वाकेई हाथको अरोगत हो ॥ तब श्रीनाथजीनें कह्यो ॥ जो तुमनें मोकों काहेकों वाकों सोंपे ॥ जाको तुम त्याग करत हो ॥ हमतो तुमारे सोंपेकों नाहीं छोडत हें ॥ तब श्रीआचार्यजी आप चुप्प व्हे रहे ॥ सो यह सब बात आप श्रीआचार्यजीनें दामोदरदासहरसॉनी सों कही ॥ तब दामोदरदासनें विनती करी ॥ जो महाराज अब वा रॉमॉनंदको अंगीकार कब करोगे ॥ तब आपनें कह्यो ॥ जो यासों वैष्णवनको अपराध न होयगो ॥ तो लक्षजन्म पाछें हम वाको अंगीकार करेंगे ॥ श्रीनाथजीनें अंगीकार कियो हे ॥ तोहू हमसों तो इतनो अंतराय भयो ॥ तातें वैष्णवनकों बोलनों सो विचारिकेंहीं बोलनों ॥ विनॉ विचारे सर्वथा न बोलनों ॥ जातें वैष्णवको अपराध न होय ॥ तातें यह अनिर्वचनीय वार्ता कहॉतॉई लिखिये ॥ वैष्णव ५६ मो ॥

❀ (वार्ता ५७ मी. वैष्णव ५७ मो.) ❀

❀ (अथ विष्णुदास छीपा तिनकी वार्ता प्रारंभः) ❀

वे विष्णुदासछीपा जब वृद्ध भये ॥ तब श्रीगोकुलमें श्रीगुसाँईजीकी वेठककी द्वारपाली करते ॥ ओर जो कोइ पंडित श्रीगुसाँईजीसों वाद करनकों आवते ॥ तिनसों वे पूछते ॥ जो तुम काहेकों आये हो ॥ तब वे पंडित कहते ॥ जो हम श्रीगुसाँईजीसों वाद करनकों आये हें ॥ तब विष्णुदास कहते ॥ जो प्रथम मोसों चर्चा करिलेउ ॥ पाछें श्रीगुसाँईजीसों वाद करियो ॥ तब वे विष्णुदाससों चर्चा करते ॥ तब विष्णुदास वाद करिकें उनकों निरुत्तर करिदेते ॥ तब वे पंडित अपनें मनमें समाधॉन माँनिकें द्वारमेंतें ही पाछे अपनें स्थानकों चले जाते ॥ या रीतिसों जो पंडित आयकें ॥ काव्य, व्याकरण, अलंकार, ओर जा जा शास्त्रनके श्लोक कहते ॥ ताहीकों दूषण देकें वे विदा करिदेते ॥ तब सब पंडित मनमें कहते ॥ जो जिनके द्वारपाल एसे पंडित हें ॥ तो तिनकें धर्नी केसे पंडित होंयगे ॥ तातें श्रीगुसाँईजी ताँइ तो कोई पंडित जाँन न पावतो ॥ एसें होत बोहोत दिन वीते ॥ तब एकदिन श्रीगुसाँईजीनें कही ॥ जो अब कोऊ पंडित वाद करनकों काहे नाहीं आवत ॥ तब वैष्णवननें कह्यो ॥ जो महाराज विनकोंतो विष्णुदासही निरुत्तर करिकें विदा करतहें ॥ तातें वे द्वारहीतें फिरि जात हें ॥ तब श्रीगुसाँईजी आप श्रीमुखतें विष्णुदासकों बुलायकें कहें ॥ जो विष्णुदास तुममेंतो श्रीआचार्यजीके कृपाबलतें एसो सामर्थ्य हे ॥ जो तुम पंडितनकों निरुत्तर करिदेतहो ॥ परि उन ब्राह्मणको अतिक्रम होत हे ॥ तातें अब जो पंडित आवे ताकों हमारे पास आयवे दीजियो ॥ तब तें जो कोऊ पंडित वाद करनकों आवतो ॥ ताकों वे श्रीगुसाँईजी पास जाँन

देते ॥ वे विष्णुदास श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक एसे कृपापात्र भगवदीय हते ॥ तातें उनमें एसो विद्याबल हतो ॥ जो विनतें पंडित न जीतते ॥ ओर उलटो दूपण देते ॥ ताको उत्तर विनतें न दियो जातो ॥ ❀ (प्रसंग २ रो) ❀ ॥ एकभट्टजी जो श्रीगुसाँईजीके द्वितीय संबंधके सुसर ओर श्रीघनश्यामजीके नाँनाँ होते ॥ सो श्रीगुसाँईजीसों नित्य कहते ॥ जो में आपके सेवकनकों जिमाऊँगो ॥ तब आप चुप्प करिरहते ॥ पाछें एकदिन विन भट्टजीनें आपकों न्योते ॥ तब श्रीगुसाँईजी उनके घर भोजनकों पधारे ॥ तहाँ विष्णुदास जलपाँनको गडुवा लेकें साथ गये ॥ सो जब श्रीगुसाँईजी भोजन करिकें उठे ॥ तब विष्णुदासनें आपकों शुद्धाचमन करवायो ॥ पाछें श्रीगुसाँईजी आप तो अपनें मंदिरमें पधारे ॥ ओर विष्णुदासकों आज्ञा दिनीं ॥ जो तुम प्रसाद लेकें वेग ऐयो ॥ तब विष्णुदासनें श्रीगुसाँईजी भोजन किये हते ॥ ता थारमेंतें प्रसाद अपनीं पातरिमें धरिकें थार धोय धर्‍यो ॥ पाछें आप प्रसाद लेंनकों बेठ्यो ॥ तब भट्टजी ओर साँमुग्री लेकें परोसन आये ॥ तब विष्णुदासनें कह्यो ॥ जो अब मेरी पातरीमें मति धरियो ॥ नॉतर हूँ न लेउँगो ॥ तब विन भट्टजीकों अति क्रोध भयो ॥ पाछें विन भट्टजीनें आयकें श्रीगुसाँईजीसों कह्यो ॥ जो तुह्मारे सेवकनें मोसों एसें क्यों कह्यो ॥ जो मेरी पातरिमें कछू डारोगे ॥ तो में न लेउँगो ॥ तब श्रीगुसाँईजीनें मुसिकायकें भट्टजीसों कह्यो ॥ जो वो अपनें घरके बाहिर मेरे प्रसादी विनाँ कछु लेत नाँहीं ॥ तब वे भट्टजी मुसिकायकें चुप्प करि रहे ॥ ता रीसकेमारें पाछें उननें श्रीगुसाँईजीके दूसरे सेवकनकों न्योते नाँहीं ॥ सो वे विष्णुदासछीपा श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक एसे कृपापात्र भगवदीय हे ॥ तातें इनकी वार्ता अनिर्वचनी हे ॥ सो कहाँतांई लिखियें ॥ वेष्णव ५७ मो ॥ ॥ ७ ॥ ॥

❀ (वार्ता ५८ मी. वैष्णव ५८ मो.) ❀

❀ (जीवनदास क्षत्रीकपूर सिंहनदकेवासी तिनकी वार्ता) ❀

एकसमें सिंहनदके वैष्णव श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके दर्शनकों आवत हते ॥ सो एकदिन मार्गमें मजलि उपर उतरे ॥ तहाँ वे अपनें अपनें चोका देतहते ॥ ता समें मेह चढि आयो ॥ तब विन वैष्णवननें कही ॥ जो वर्षा आई ॥ तब विनमेंके जीवनदास वैष्णवनें कही ॥ जो तुम चिंता मतिकरो ॥ एसें कहिकें विननें श्रीआचार्यजीको ध्यान करिकें मेघकों आँन दीनीं ॥ जो तोकों श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी आँनि हे जो तूं वर्षेतो ॥ तब मेह रहिगयो ॥ पाछें वे सब वैष्णव प्रसाद ले चूके ॥ तापाछें चले सो अडेल आये ॥ तहाँ श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननको दर्शन कियो ॥ पाछें विन वैष्णवननें वह बात श्रीआचार्यजीके आगें कही ॥ जो महाराज एकदिन यहाँ आवत मार्गमें मजलिपे हम पाक करत हे ॥ ता समें मेह चढिआयो ॥ तब जीवनदासनें मेहकों आपकी आँन देकें वरज्यो ॥ तब मेह न पर्‌यो ॥ यह सुनिकें श्रीआचार्यजीनें विन जीवनदाससों पूछी ॥ जो क्योरे तेनें मेघकों हमारी आँनि दीनीं ॥ ओर जो वर्षा होती तो तूं वाकों कहा करतो ॥ तब वानें विनती करी ॥ जो महाराज वाकी कहा सामर्थ्य ही ॥ जो आपकी आँन दिये उपरांत वर्षतो ॥ तब यह बात सुनिकें श्रीआचार्यजी आप मुसिकायकें चुप्प करिरहे ॥ सो विन जीवनदासकों श्रीआचार्यजीके स्वरुपको एसो ज्ञान हतो ॥ वे जीवनदास श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके एसे कृपापात्र भगवदीय हते ॥ तातें इनकी वार्ता अनिर्वचनीय हे ॥ सो कहाँतांई लिखिये ॥ वैष्णव ५८ मो ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (वार्ता ५९ मी. वैष्णव ५९ मो.) ❀

❀ (अथ भगवाँनदास सारस्वतब्राह्मण तिनकी वार्ता) ❀

सो वे भगवाँनदास सिधोतराके पटनेंके पास हाजीपुरमें

रहते ॥ सो विननें एकसमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी सेवा नीकीं भॉतिसों कीनीं ॥ तब आप वा भगवॉनदासके उपर वोहोत प्रसन्न भये ॥ तातें वाकों आपनें कृपा करिकें अपनीं श्रीपादुकाजीकी सेवा पधराय दीनीं ॥ ओर आज्ञा दीनीं ॥ जो तूं इनकी सेवा नीकी भॉतिसों करियो ॥ तब वाने प्रसंन होयकें श्रीपादुकाजीकों अपनें घर पधराई ॥ ताकी वानें एसी भॉतिसों सेवा कीनीं ॥ जो वाकों श्रीठाकुरजी सानुभव जतावन लागे ॥ ओर वातें वातें करते ॥ तब एक समें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप वा भगवॉनदासके घर पधारे हे ॥ सो जा ठोर आप विराजे हे ॥ ताठोर वो नित्य सवारें ऊठिकें दंडवत करतो ॥ वा ठोर कोऊ पाँव धरन न पावतो ॥ एसो उनको भाव हतो ॥ सो वे भगवॉनदास श्रीआचार्यजीके सेवक एसे कृपापात्र भगवदीय हते ॥ तातें विनकी वार्ता कहॉतॉई लिखिये ॥ वैष्णव ५९ मो ॥

❀ (वार्ता ६० मी. वैष्णव ६० मो.) ❀

❀ (अथ भगवॉनदास श्रीनाथजीके भीतरिया तिनकी वार्ता) ❀

एकसमें श्रीनाथजीके वालभोगकी सामुग्री करत विन भगवॉनदासके हाथ सों कछूक सामुग्री दाझिगइ ॥ तब श्रीगुसॉईजी विनके उपर वोहोत खीजे ॥ ओर सेवातें दूरि किये ॥ तब वे भगवॉनदास गोविंदकुंडके उपर अच्युतदासजीके पास जाय वेठे ओर सब समाचार कहे ॥ पाछें जब श्रीगुसॉईजी आप गोविंदकुंडपे स्नानकों पधारे ॥ तब भगवॉनदास पूँछरीकी ओर अच्युतदासके पास वेठे हते ॥ पाछें जब श्रीगुसॉईजी गोविंदकुंडमें स्नान करिकें अच्युतदासकों दर्शन देन पधारे ॥ तब आपको दर्शन करिकें विन अच्युतदासकी आखिनमेंतें ऑसूनको प्रवाह वहिचल्यो ॥ सो देखिकें आपनें विनसों पूछ्यो ॥ जो

अच्युतदास तुमकों एसो कहा दुःख हे ॥ तब विननें विनती करी जो महाराज श्रीआचार्यजीमहाप्रभुकों तो श्रीनाथजीनें आज्ञा दीनीं हे ॥ जो तुम जीवनकों ब्रह्मसंबंध करवावो ॥ सो अभी- तो साठिलाख जीवनकों तुमद्वारा ब्रह्मसंबंध होनों हे ॥ तातें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें तो तुमकों सोंपे हें ॥ ओर तुम तो अबहींतें जीवनको दोष देखन लागे हो ॥ सो जीवतो अपराध तें भरेही हें ॥ तातें विन जीवनको अंगीकार केसें होयगो ॥ विनको अंगीकार करावनों तो तुमारे हाथ हे ॥ सो केसीगती होयगी ॥ तब यहबात सुनिकें श्रीगुसाँईजी आप विन भगवाँन- दासको हाथ पकरिकें श्रीगोवर्द्धनपर्वत उपर ले चढे ॥ ओर जा रीतीसों श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सेवा वे पहलें करते ॥ ताही रीतिसों फिर करिवेकी आज्ञा दीनीं ॥ तब वा समें विन भगवाँन दासनें श्रीगुसाँईजीके आगें एक नयो पद करिकें गायो ॥ सो पद ॥ ❀ पद राग सारंग ❀ ॥ श्रीविठ्ठलेश चरणकमल पावन त्रैलोक्य करण दरश परश सुंदरवर वार वार वंदे ॥ समरथ गिरिराजधरण लीला निज प्रगटकरण संतनहीत मानुषतनु वृंदावनचंदे ॥ १ ॥ चरणोदक लेत प्रेत ततक्षणतें मुक्त भये करुणामय नाथ सदा आनंदकंदे ॥ वारणें भगवाँनदास विहरत सदा रसिक रास जय जय यश बोली बोली गावत श्रुतिछंदे ॥ २ ॥ ❀ ॥ तब यह पद सुनिकें श्रीगुसाँईजी आप बोहोत प्रसन्न भये ॥ तापाछें वे भगवाँनदास बोहोत सावधाँनीसों सेवा करनलागे ॥ सो वे भगवाँ- नदास श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक एसे कृपापात्र भगवदीय हते ॥ तिनकी वार्ता कहाँतोंई लिखिये ॥ वैष्णव ६० मो ॥

❀ (वार्ता ६१ मी. वैष्णव ६१ मो.) ❀

❀ (अथ अच्युतदास सनोडियाब्राह्मण तिनकी वार्ता) ❀

सो वे अच्युतदास श्रीमाँनसीगंगा उपर चक्रतीर्थ हे ॥ तहाँ

रहते ॥ सो विननें एकसमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी सेवा नीकी भाँतिसों कीर्नी ॥ तव आप वा भगवाँनदासके उपर वोहोत प्रसन्न भये ॥ तातें वाकों आपनें कृपा करिकें अपनी श्रीपादुकाजीकी सेवा पधराय दीर्नी ॥ ओर आज्ञा दीर्नी ॥ जो तूँ इनकी सेवा नीकी भाँतिसों करियो ॥ तव वाने प्रसंन होयकें श्रीपादुकाजीकों अपनें घर पधराई ॥ ताकी वानें एसी भाँतिसों सेवा कीर्नी ॥ जो वाकों श्रीठाकुरजी सानुभव जतावन लागे ॥ ओर वातें वातें करते ॥ तव एक समें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप वा भगवाँनदासके घर पधारे हे ॥ सो जा ठोर आप विराजे हे ॥ ताठोर वो नित्य सवारें ऊठिकें दंडवत करतो ॥ वा ठोर कोऊ पाँव धरन न पावतो ॥ एसो उनको भाव हतो ॥ सो वे भगवाँनदास श्रीआचार्यजीके सेवक एसे कृपापात्र भगवदीय हते ॥ तातें विनकी वार्ता कहाँतोंई लिखिये ॥ वैष्णव ५९ मो ॥

❀ (वार्ता ६० मी. वैष्णव ६० मो.) ❀

❀ (अथ भगवाँनदास श्रीनाथजीके भीतरिया तिनकी वार्ता) ❀

एकसमें श्रीनाथजीके वालभोगकी सामुग्री करत विन भगवाँनदासके हाथ सों कछूक सामुग्री दाझिगइ ॥ तव श्रीगुसाँईजी विनके उपर वोहोत खीजे ॥ ओर सेवातें दूरि किये ॥ तव वे भगवाँनदास गोविंदकुंडके उपर अच्युतदासजीके पास जाय वेठे ओर सव समाचार कहे ॥ पाछें जव श्रीगुसाँईजी आप गोविंदकुंडपे स्नानकों पधारे ॥ तव भगवाँनदास पूँछरीकी ओर अच्युतदासके पास वेठे हते ॥ पाछें जव श्रीगुसाँईजी गोविंदकुंडमें स्नान करिकें अच्युतदासकों दर्शन देन पधारे ॥ तव आपको दर्शन करिकें विन अच्युतदासकी आखिनमेंतें ऑसूनको प्रवाह वहिचल्यो ॥ सो देखिकें आपनें विनसों पूछ्यो ॥ जो

अच्युतदास तुमकों एसो कहा दुःख हे ॥ तब विननें विनती करी जो महाराज श्रीआचार्यजीमहाप्रभुकों तो श्रीनाथजीनें आज्ञा दीनीं हे ॥ जो तुम जीवनकों ब्रह्मसंबंध करवावो ॥ सो अभी-तो साठिलाख जीवनकों तुमद्वारा ब्रह्मसंबंध होनों हे ॥ तातें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें तो तुमकों सोंपे हें ॥ ओर तुम तो अबहींतें जीवनको दोष देखन लागे हो ॥ सो जीवतो अपराध तें भरेही हें ॥ तातें विन जीवनको अंगीकार केसें होयगो ॥ विनको अंगीकार करावनों तो तुमारे हाथ हे ॥ सो केसीगती होयगी ॥ तब यहबात सुनिकें श्रीगुसाँईजी आप विन भगवाँन-दासको हाथ पकरिकें श्रीगोवर्द्धनपर्वत उपर ले चढे ॥ ओर जा रीतीसों श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सेवा वे पहलें करते ॥ ताही रीतिसों फिर करिवेकी आज्ञा दीनीं ॥ तब वा समें विन भगवॉन दासनें श्रीगुसॉईजीके आगें एक नयो पद करिकें गायो ॥ सो पद ॥ ❀ पद राग सारंग ❀ ॥ श्रीविठ्ठलेश चरणकमल पावन त्रैलोक्य करण दरश परश सुंदरवर वार वार वंदे ॥ समरथ गिरिराजधरण लीला निज प्रगटकरण संतनहीत मानुषतनु वृंदावनचंदे ॥ १ ॥ चरणोदक लेत प्रेत ततक्षणतें मुक्त भये करुणामय नाथ सदा आनंदकंदे ॥ वारणें भगवॉनदास विहरत सदा रसिक रास जय जय यश बोली बोली गावत श्रुतिछंदे ॥ २ ॥ ❀ ॥ तब यह पद सुनिकें श्रीगुसॉईजी आप बोहोत प्रसन्न भये ॥ तापाछें वे भगवॉनदास बोहोत सावधॉनीसों सेवा करनलागे ॥ सो वे भगवॉ-नदास श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक एसे कृपापात्र भगवदीय हते ॥ तिनकी वार्ता कहॉतॉई लिखिये ॥ वैष्णव ६० मो ॥

❀ (वार्ता ६१ मी. वैष्णव ६१ मो.) ❀

❀ (अथ अच्युतदास सनोडियाब्राह्मण तिनकी वार्ता) ❀

सो वे अच्युतदास श्रीमॉनसीगंगा उपर चक्रतीर्थ हे ॥ तहॉ

रहते ॥ सो नित्य श्रृंगारके समें श्रीगिरिराजपे श्रीनाथजीके दर्शनकों आवते ॥ सो दर्शन करिकें अपनें स्थलकों जाते ॥ विननें श्रीगोवर्द्धनकी तीन परिक्रमाँ दंडोती करी हतीं ॥ तब विनपे श्रीगुसाँईजी बोहोत प्रसंन्न भये ॥ ओर आप श्रीमुखतें कहते ॥ जो अच्युतदास वडे भगवदीय हें ॥ सो वे श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक एसे कृपापात्र भगवदीय हे ॥ तिनकी वार्ता अनिर्वचनीय हे ॥ सो कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव ६१ मो ॥ ७ ॥

❀ (वार्ता ६२ मी. वैष्णव ६२ मो) ❀

❀ (अथ बडे अच्युतदास गोडब्राह्मण तिनकी वार्ता) ❀

सो वे अच्युतदास वडे भगवदीय हते ॥ जिनके माथे श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें श्रीमदनमोहनजीकी सेवा पधराय ॥ अपनें श्रीहस्तसों पाट वेठारे हते ॥ सो वे अच्युतदास श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी सेवा नीकी भाँतिसों करते ॥ तातें श्रीमदनमोहनजी हूँ विनतें सानुभाव जनाय बातें करते ॥ ओर बोहोत कृपा राखते ॥ सो जब वे अच्युतदास श्रीनाथजीके दर्शनकों आवते तव श्रीगोवर्द्धनकी परिक्रमाँ एक दंडोती करते ॥ ओर जब वे श्रीगुसाँईजीके पास आवते ॥ तब विनकों अपनें पिताके परम कृपापात्र जाँनिकें आप दंडोत न करन देते ॥ ओर कहते ॥ जो आप हमारे वडे हें ॥ एसें कहिकें माँन देते ॥ पाछें जब श्रीआचार्यजीनें लोकिकरीत्या आसुरव्यामोहलीला दिखाई ॥ तब अच्युतदासने अपनें श्रीमदनमोहनजीकों श्रीआचार्यजीके घर पधरायकें आप ऊठिकें श्रीबद्रीनाथजीकों गये ॥ तहाँ जायके विननें श्रीबद्रीनाथजीके दर्शन करिकें देह छोडी ॥ पाछें यहाँ श्रीमदनमोहनजीकों श्रीगोपीनाथजीनें श्रीगोवर्द्धननाथजीके आगे पधराये ॥ सो वे अच्युतदास एसे भगवदीय हे ॥ जिननें श्रीआचार्यजीको स्वरूप साक्षात् श्रीपूर्णपुरुषोत्तमको जान्यो हो ॥

तातें विनकी श्रीआचार्यजीके उपर बडी आसक्ति हती ॥ तातें तिनको वियोग सह्यो न गयो ॥ तब तुरंत देह छोडि दीनीं ॥ भक्तिमार्गको तो स्वरूप केवल विरहासक्ति हे ॥ तातें विन सों श्रीआचार्यजीको विरह सह्यो न गयो ॥ सो इनकी वार्ता अनिर्वचनीय हे ॥ सो कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव ६२ मो ॥

❀ (वार्ता ६३ मी. वैष्णव ६३ मो) ❀

❀ (अच्युतदास सारस्वतब्राह्मण कडामेंरहते तिनकीवार्ता) ❀

सो एकसमें विन अच्युतदासनें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुके संग पृथ्वीपरिक्रमाँ करी हती ॥ सो वे अच्युतदास श्रीआचार्यजीके अत्यंत कृपापात्र भगवदीय हते ॥ जिनकों आपनें कृपा करिकें अपनीं श्रीपादुकाजी सेवा करिवेके लियें पधराय दीनीं हतीं ॥ सो ताकी सेवा विननें उत्तम रीतिसों करी ॥ तातें श्रीआचार्यजी आप कृपा करिकें विनकों नित्य दर्शन देते ॥ श्रीआचार्यजी आपनें जो संन्यास ग्रहण कियो ॥ सो केवल विरहभावार्थ कियो ॥ ता समें आप श्रीआचार्यजीनें एक वैष्णवसों कह्यो ॥ जो एक डोली भाडे करि लाउ ॥ तब वह डोली भाडे करि लायो ॥ ता उपर आप श्रीआचार्यजी बेठिकें बनारसकों पधारे ॥ सो तहाँ जाय संन्यास ग्रहण करिकें डेढ महींनाँलों राख्यो ॥ पाछें आप स्वधाँम पधारे ॥ तब वह वैष्णव जो आपके साथ गयो हतो ॥ सो फिर काशीतें कडामें आयो ॥ तब वानें सब वैष्णवनसों कह्यो ॥ जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें संन्यास ग्रहण करिकें आप तहाँ डेढ महिनाँलों विराजे ॥ पाछें आपनें आसुरव्यामोहलीला दिखाई ॥ तब विन अच्युतदासनें वासों कह्यो ॥ जो तोकों भ्रम भयो होयगो ॥ तब वा वैष्णवनें कह्यो ॥ जो हों श्रीआचार्यजी आपके साथही हतो ॥ सो काशीमें प्रत्यक्ष देखि आयो हूँ ॥ तब अच्युतदासनें कह्यो ॥ जो प्रभु एसी कबहूँ

न करें ॥ वेतो जीवकों आसुरव्यामोहलीला दिखावत हें ॥ ऐसें कहिकें विन अच्युतदासजीनें मंदिरके किंवाड खोलिकें वाकों दर्शन करवाये ॥ तब वो देखे तो ॥ श्रीआचार्यजी आप विराजत हें ॥ तब वा वैष्णवनें आपकों दंडवत कीनीं ॥ तब श्रीआचार्यजीनें वासों कह्यो ॥ जो तुम कछू मनमें संदेह मति करो ॥ यह प्रगट लौकिक रीतिसों देह धरेकी लीला हे ॥ ओर अलौकिक लीला तो नित्य हे ॥ तातें यह लीला तो दशावतारादिकनमेंहू प्रगट हे ॥ तातें संदेह न करनों ॥ यह तो आसुरव्यामोहलीला हे ॥ सो श्रीगुसाँईजीहू सर्वोत्तममें लिखे हें ॥ (प्राकृतानुकृतिव्याज मोहितासुरमानुपः) ॥ सो वे अच्युतदास एसे कृपापात्र हते ॥ जिनकों श्रीआचार्यजीको सदैव दर्शन हतो ॥ ओर आपके स्वरूपको द्रढ विश्वास हतो ॥ तातें विनकी वार्ता अनिर्वचनीय हे ॥ सो कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव ६३ मो ॥

❀ (वार्ता ६४ मी. वैष्णव ६४ मो.) ❀

❀ (अथ नारायणदास अंबालयकेवासी तिनकी वार्ता) ❀

वे नारायणदास वहाँके देसाधिपतिके चाकर हते ॥ जिनकों राजद्वारके काँम बोहोत्त हते ॥ तातें वे श्रीआचार्यजीके दर्शनकों हू आय न सकते ॥ परि अंतःकरणमें आपके दर्शनकी आतुरता बहुत रहती ॥ जो में श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके दर्शनकों कब जाउँगो ॥ परि आय न सकते ॥ तातें विन नाराणदासनें एक चाकर राख्यो ॥ ताको महिनाँ रुपैया चारिको कियो ॥ ओर वासों कह्यो ॥ जो यह तेरो काँमहे जो मोकों छिनु छिनु में सुधि दिवाईयो ॥ जो भैयाजू श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके दर्शनकों कब चलोगे ॥ यह कहिकें सुनायो करि ॥ जातें हमकों श्रीआचार्यजीकी सुधि होत रहे ॥ सो वह चाकर नित्य त्योंहीं करे ॥ सो जब नारायणदास अपनें कार्यमें बेठें ॥

तब वो आगें आयकें ठाढो होय ॥ ओर घडी घडीमें कहे ॥ जो भैयाजू श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके दर्शनकों कब चलोगे ॥ अेसें वो प्रतिदिन कह्योही करतो ॥ तातें विन नारायणदासकों आपके दर्शनको निज घ्यास लग्योही रहतो ॥ सो वे नारायणदास प्रतिवर्ष श्रीआचार्यजीकों भेट पठावते ॥ सो एसे कृपापात्र भगवदीय हे ॥ जिनको चित्त सदा श्रीआचार्यजीके दर्शनमेंही रहतो ॥ तातें आप श्रीआचार्यजी सदा विनके उपर प्रसन्न रहते ॥ वे नारायणदास एसे कृपापात्र भगवदीय हते ॥ तातें विनकी वार्ता कहाँतांई लिखिये ॥ वैष्णव ६४ मो ॥ ६४ ॥

❀ (वार्ता ६५ मी. वैष्णव ६५ मो.) ❀

❀ (अथ नारायणदासभट्ट मथुरामें रहत तिनकी वार्ता) ❀

सो विन नारायणदासकों श्रीमदनमोहनजीनें आज्ञा दीनीं ॥ जो में वृंदावनमें असुकी ठोर हों ॥ सों वहाँतें निकासिकें मोकों बाहिर पधराय ॥ तब विन नारायणदासनें वृंदावनमें जायकें वो ठोर खोदिकें श्रीमदनमोहनजीकों देखिकें बाहिर पधराये ॥ पाछें जब श्रीगुसाँईजीके बडेभाई श्रीगोपीनाथजी वृंदावन पधारे ॥ तब विननें श्रीमदनमोहनजीकों सिंघासनपाट बेठारे ॥ तापाछें केतेकदिन विन नारायणदासनें सेवा कीनीं ॥ उनके पाछें उनको कोऊ वंशमें न हतो ॥ तातें वहाँके बंगाली गोडिया सेवा करत हे ॥ वे ठाकुरजी श्रीगोपीनाथजीके पाट बेठाये-भये हते ॥ तातें श्रीगुसाँईजीके बालक सब तथा वैष्णवलोग दर्शनकों जातहे ॥ सो वे नारायणदास श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक एसे कृपापात्र भगवदीय हते ॥ जिनके घर श्रीमदनमोहनजी आप कृपा करिकें वृंदावनमेंतें पधारे ॥ सो श्रीमदनमोहनजीनें हू विनकों श्रीआचार्यजीके सेवक जाँनिकें विनके उपर एसी दया कीनीं हती ॥ तातें वे नारायणदास एसे

कृपापात्र भगदीय हते ॥ तातें विनकी वार्ता अनिर्वचनी हे ॥ सो कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव ६५ मो. ॥ ॥ ६ ॥ ॥

❀ (वार्ता ६६ मी. वैष्णव ६६ मो.) ❀

❀ (अथनारायणदासलुहाँणा ठट्ठाकेवासी तिनकी वार्ता) ❀

वेनारायणदास ठट्ठाके पात्साहके कुलकुलाँ दीवाँन हते ॥ तातें जो वे करें सो होतो ॥ पाछें केतेकदिनमें पात्साह विन नारायणदासके उपर कोप्यो ॥ तब विनकों बदीखाँनेमें दिये ॥ तब विनके माथें दंड कियो ॥ सो पाँचलाख रुपैया दंडके ठहरे ॥ तब पाँचहजार रुपैया नित्य देवेको बधारण बाँध्यो ॥ सो वो जहाँताँई सब रुपैया न भरिचुकें ॥ तहाँताँई वे बंदीखानातें न छुटे ॥ असो हुक्म कियो ॥ ओर जादिन वो हप्ता न भरें तादिन वाकों पाँचशे कोरडा लगावनें ॥ परि वे दीवाँन हते ॥ तातें विनके पास लोगनकों जायवे आयवेको प्रतिबंध न हतो ॥ एसो बंधाँन कियो ॥ तब एक समें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक दोयभाई ब्राह्मण हते ॥ तिननें एसो मननें विचार कियो ॥ जो ठट्ठामें नारायणदास दीवाँन वैष्णव हें ॥ तातें उन पास जायकें कहें ॥ जो हमकों कन्याको विवाह करनों हे ॥ सो जो वे कछू देइँ ॥ तो कन्याको विवाह करें ॥ एसें विचारिकें वे दोऊभाई अपनें घरतें चले ॥ सो ठट्ठामें जाय पोहोंचे ॥ तब वहाँ सुन्यो ॥ जो नारायनदास दीवाँन तो बंदीखाँनेमें पडे हें ॥ तब वे दोऊभाई आपुसमें विचार करन लागे ॥ जो अब यहाँ रहिकें कहा करिये ॥ तातें पाछें अपनें घर चलिये ॥ एसो विचार विन दोऊभाईननें कियो ॥ सो बात प्रातःकाल नारायणदाससों हेरननें बंदीखाँनामें जायकें कही ॥ जो काई दोय भाई ब्राह्मण तुमसों मिलवेकों आयेहें ॥ उननें सुनीहे जो वेतो बंदीखाँनेमें हें तातें वे तो प्रातःकाल चलेंगे ॥ सो सुनिकें

तब नारायणदासनें विनके पास मनुष्य पठायकें कहवायो ॥ जो तुम आये हो सो मेरो बडो भाग्य हे ॥ तातें प्रातःकाल यहाँ आय मोकों दर्शन देकें जैयो ॥ तब वे दोऊभाई प्रातःकाल ऊठिकें देहकृत्य स्नान, तिलक, मुद्रादि नित्यकर्मसों पोंहोंचिकें ॥ श्रीआचार्यजीको चरणामृत महाप्रसाद लेकें ॥ जहाँ वे बंदीखाँनेमें हते ॥ तहाँ विनसों जायकें मिले ॥ तब नारायणदास तुरंत ऊठिकें विनसों मिलिकें बोहोत प्रसंन्न भये ॥ तब उन दोऊभाई ब्राह्मणनें विनकों चरणामृत महाप्रसाद दीनों ॥ सो विननें माथें चढाय लिनों ॥ तब नारायणदासनें कह्यो ॥ जो मोकों श्रीआचार्यजीकी कृपाते बंदीखाँनेमें हूं वैष्णवनको दर्शन भयो ॥ पाछें विननें श्रीआचार्यजीके कुशल समाचार पूछे ॥ सो विन वैष्णवननें कहिकें ॥ तापाछें अपनी कन्याके विवाहकी बात कही ॥ ओरहू भगवद्वार्ताको प्रसंग कहनलागे ॥ इतनेमें नारायणदासके घरतें पाँच थेली पाँचहजार रुपैयानकी आंई ॥ सो द्वारपालनें उनके उपर मोहोरछाप करिकें नारायणदासके पास पठाई ॥ सो जब विनके पास आई ॥ तब विननें पाँचो थेली पाँच हजारकी उन दोऊभाई ब्राह्मण वैष्णवनके हवाले करिदीनी ॥ ओर दंडोत करिकें कह्यो ॥ जो अब तुम वेग पधारो ॥ ओर श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों मेरी दंडवत कहियो ॥ ओर तुम अपनी कन्याको विवाह भलीभाँतिसों करियो ॥ तब वे दोऊभाई ब्राह्मण विनसों प्रसंनतापूर्वक जयश्रीकृष्ण करिकें गये ॥ इतनेमें बादसाहको हुक्म आयो ॥ जो अबहीं नारायणदासके हप्ताकी पाँच थेलीं न आंई ॥ सो तुरंत लावो ॥ तब दरवाँननें अर्ज करी ॥ जो साहिब मैंनें हीं पाँचो थेलीनपर मोहोरें करिकें नित्य जेसें नारायणदाजीके पास पठावतो ॥ त्योंही आजहू पठाई हें ॥ तब पातसाहनें कह्यो ॥ जो खजानचीकों बुलाओ ॥ तब

मनुष्य जायकें वाकों बुलाय लाये ॥ सो वो आगें आय ठाढो भयो ॥ तब पातसाहनें वासों कह्यो ॥ जो तेरेपास नारायणदासवारी पाँच थेलीं आई ॥ तब वानें कह्यो ॥ जो साहिब मेरेपास तो नाँहीं आई ॥ तब पातसाहतो बोहोत क्रोधित भयो ॥ ओर कहनलाग्यो ॥ जो नारायणदासकों बंदीखाँनामेंतें बुलावो ॥ तब मनुष्यननें जायकें विन नारायणदासकों लायकें पातसाहके आगें ठाढोकियो ॥ तब नारायणदासतें वा पातसाहनें कह्यो ॥ जो नारायणदास आजु हमारी थेलीं क्यों नाहीं आई ॥ पाछें थोरोसो गाढो क्रोध करिकें वानें कोरडावारो बुलवायो ॥ ओर पाँचसे कोरडाको हुक्म कियो ॥ परि वाकों ठेहरायो तब पातसाहनें फिरि पूछी ॥ जो नारायणदास साँच कही ॥ जो आज थेलीं क्यों न आई ॥ हमारे द्वारपालनें तो मोहोरछाप करिकें तेरेपास पठाई हीं ॥ ओर तेंनें कहा करिं ॥ सो तूं साँच कही ॥ नाँतर तोकों कोरडा लगवावतहों ॥ तब नारायणदासनें सलाँम करिकें कह्यो ॥ जो हजरत आज मेरे गुरुभाइ आये हे ॥ तिनकों अपनीं बेटीको विवाह करनोंहो ॥ सो वे बडे गरीब हे ॥ तातें आजतो मेंनें वे पाँचो थेलीं उनकों दीनीं ॥ ओर कह्यो ॥ जो ये थेलीं तुम लेजाउ ॥ ओर मेंनें अपनें मनमें विचारी ॥ जो आज मार खाय रहूँगो ॥ परी यह घडी कहाँ हे ॥ जो बँदिखाँनामें परोपकार होय ॥ सो सुनिकें तब वो पातसाह चुप्प व्हेरह्यो ॥ पाछें घडी एक विचार करिकें वानें कही ॥ जो स्याबासि नारायणदास तोकूँ स्याबासि ॥ तूं अपनें मार्गमें एसो साँचो हे ॥ तातें अब में तेरे उपर बोहोत प्रसन्न भयो हों ॥ एसें कहिकें पातसाहनें वाही समें नारायणदासकी बेडी कटवाय ॥ तुरंत सिरोपाव मंगायकें पहरायो ॥ ओर घोडा दियो ॥ तब निवाजिकें फेरि जेसो आगें हतो तेसोही विनकों

अपनों कुलकुलाँ दीवाँन कियो ॥ तब सब काँम सोंपिकें विनके माथें जो दंड कियो हतो ॥ सो सब माफ कियो ॥ पाछें रजा दीनीं ॥ जो जा॥अब तूँ अपनें घर होयआव ॥तब वो सिरोपाव पहरिकें घोडाउपर असवार होयकें नारायणदास अपनें घरकों गये ॥ तब वे दोऊ भाई वैष्णव ब्राह्मण जायवेकी तैयारी करत वा गाँमहींमें हते ॥ सो विननें सुनीं ॥ जो नारायणदास छूटे ॥ ओर फिर दीवाँन भये ॥ तब वे दोऊ भाई बडे प्रसंन्न होयकें त्वरासों नारायणदासकों मिलिवेकों आये ॥ तब नारायणदास ऊठिकें उनसों भेटे ॥ ओर कह्यो ॥ जो मेरे गुरूके सेवक आये तो मेरो वंदीखानों छूट्यो ॥ तब उन वैष्णवननें कह्यो ॥ जो श्रीआचार्यजीकी कृपातें क्यों न छूटे ॥ पाछें नारायणदासनें हजार मोहोरनकी एक थेली ॥ उन वैष्णवनके हाथ श्रीआचार्यजीमहाप्रभुकों भेट पठवाई ॥ पाछें वे दोऊ भाई ब्राह्मण वैष्णव वहाँतें चले ॥ सो कितनेकदिनमें श्रीगोकुल आये ॥ तब आप श्रीआचार्यजी श्रीगोकुलमेंही हते ॥ तहाँ वे दोऊ भाई आयकें आपकों दंडोत करी ॥ ओर जो विन नारायणदासनें हजार मोहोरनकी थेली भेट पठाई हती ॥ सो आगें राखी ॥ तब आपनें नारायणदासके सब समाचार पूछे ॥ तब उन वैष्णवननें जो प्रकार देख्यो हतो सो सब विस्तार पूर्वक कह्यो ॥ तब आपनें श्रीमुखसों कह्यो ॥ जो जाको वैष्णवन उपर एसो द्रढ विश्वास हे ॥ ताको कष्ट क्यों रहे ॥ पाछें वे वैष्णव ब्राह्मण श्रीआचार्यजीसों विदा होयकें अपनें घरकों चले ॥ सो अपनें गाँममें घर आयकें विननें अपनीं बेटीको विवाह नीकीभाँतिसों कियो ॥ सो वे नारायणदास दीवाँन एसे कृपापात्र भगवदीय हते ॥ जिनको पेहेलेको नाँम नरिया हतो ॥ सो जब वे श्रीआचार्यजीमहाप्रभुके सेवक भये हते ॥ तब आप श्रीआचार्य-

जीनेंहीं विनको नॉम नारायणदास धन्यो हतो ॥ सो वे नारायणदास श्रीआचार्थजीके वडे कृपापात्र भगवदीय हते ॥ तातें विनकी वार्ता अनिर्वचनीय हे ॥ सो कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव ६६ मो॥

❀ (वार्ता ६७ मी. वैष्णव ६७ मी.) ❀

❀ (एकक्षत्रॉणीअकेलीहती जोसिंहनदमेंरहतीताकीवार्ता.) ❀

ता क्षत्रॉणीके माथें श्रीनवनीतप्रियजीकी सेवा हती ॥ सो वाकों श्रीठाकुरजी सानुभव हते ॥ परि वह अकंचन हती ॥ तातें जब वो सेवा करिकें पोहोंचती॥तब सूत कॉतती॥ वासों अपनों निर्वाह करे ॥ सो जब घरके द्वार काछिन तरकारी बेचन आवे ॥ तब श्रीठाकुरजी मंदिरमेंतें पुकारिकें कहें ॥ जो अरि अमुकी तरकारी विकॉन आई हे सो तूँ ले ॥ तब वह क्षत्रॉणी जायकें तरह तरहकी सामुग्री लेती ॥ सो कितनीक तो श्रीठाकुरजीकों काचीही समर्पती ॥ ओर कितनीक रसोईमें छोंकिकें समर्पती ॥ ओर कोईदिन जो वा काछिनको शब्द श्रीठाकुरजी न सुनें ॥ ओर वो आगें निकसि जाय ॥ तातें वह बाई कछू सामुग्री न ले सके ॥ तब श्रीठाकुरजी वोहोत रारि करें ॥ जसें कोई लौकिक लरिका करे ॥ तेंसेंहीं वासों श्रीठाकुरजी झगडो करें ॥ सो एकदिन वा क्षत्रॉणीतें बालभोगको पकवॉन्न न होयसक्यो ॥ तादिन वानें रोटी घृतसों चुपरिकें रात्रिकेलीयें ढॉकि राखी ॥ सो जब आधीरात भई ॥ तब श्रीठाकुरजीनें वाकों जगायकें कही ॥ जो मोकों तो भूख लागी हे ॥ तब वा बाईनें कही ॥ जो लालजी पकवॉन्नतो नाहींहे ॥ परि रोटी घृतसों चुपरिकें धरीहें ॥ तब श्रीठाकुरजी कहें ॥ जो भलो मोकों रोटीही लाऊ ॥ तब वह रोटी ले आई ॥ ताकों श्रीठाकुरजीनें कही ॥ जो तूँ मोकों याकी तुतरी करि दे ॥ तब वह रोटीकी तुतरी करिकें देत जाय ॥ सो श्रीठाकुरजी अपनें

वीरबाई प्रसूतिका ग्रहमेंतें बोहोतेरो कहे ॥ जो अरी कोऊ सेवा- में न्हाओ ॥ श्रीठाकुरजीकों अवार होत हे ॥ परि विनमेंतें कोऊ न्हाय नहीं ॥ तब श्रीठाकुरजीनें वा वीरबाईसों पुकारिकें कह्यो ॥ जो अरी तूँ स्नान करिकें सेवा क्यों नाहीं करत ॥ तब वा बाइनें प्रसूतिकाग्रह मेतें ऊठिकें कह्यो ॥ जो महाराज मेरीतो यह दशा हे ॥ तातें मोकोंतों सेवामें आवनों नाहीं ॥ मेंतो प्रसूत भई हों ॥ तातें मेरे आयेतें अपरस सब छूं जायगी ॥ तब श्रीठाकुरजीनें कह्यो ॥ जो अरी मेरी सेवामें तो विलंब होतहे ओर कोऊ न्हात नाहीं ॥ तो तूँही न्हाय ॥ तब वो वीरबाई श्रीठाकुरजीके आग्रहतें प्रसूतखाटपेतें ऊठिकें न्हाई ॥ पाछें काछदेकें श्रीठाकुरजीकी सेवा करिकें भोग समर्प्यो ॥ सो समयानुसार सराय श्रीठाकुरजीकों अनोसर करिकें पाछी आय- कें वो खाटपें सोयरही ॥ सो एसेंहीं वानें चालीस दिनलों खाटपे रहिकें ही सेवा करी ॥ तब श्रीठाकुरजीनें प्रसन्न होयकें वाकों कह्यो ॥ जो तेनें हमारी आज्ञा मॉनी ॥ तातें हम बोहोत प्रसन्न भये हें ॥ पाछें जब वाकें चालीसदिन वीते ॥ तब वो शुद्धस्नान करिकें सेवाकी सब अपरस काढिकें सेवा करन ला- गी ॥ तब पेहेलेंके पात्र तथा वस्त्र सब दूरि करि नये नये मँग- वाये ॥ तापाछें वो पूर्ववत् भलीभाँतिसों सेवा करन लागी ॥ तातें वह वीरबाई श्रीआचार्यजीकी एसी कृपापात्र हती ॥ तातें वाकी वार्ता अनिर्वचनीय हे ॥ सो कहाँताँई लिखिये ॥ वेष्णव ६८ मी ॥

❀ (वार्ता ६९ मी. वेष्णव ६९ मो.) ❀

❀ (स्त्रीभर्त्तार दोऊजनें क्षत्रीय सिंहनदके वासी तिनकी वार्ता) ❀

सो वे स्त्रीभर्त्तार दोऊजनें सिंहनदतें आगरे आय रहे ॥ सो घर निपट छोटो हतो ॥ तातें वे दोऊजनें ओर श्रीठाकुरजी एकही कोठरीमें वेठते ॥ सो वे आधी कोठरीमें तो रसोई करते ॥

ओर आधीमें रहत हते ॥ ओर श्रीठाकुरजीकी शैयाकों ठोर न हती ॥ तातें एक वाँसको मेडा करि राख्यो हतो ॥ ताके उपर शैया रहती ॥ ओर आप स्त्रीभर्त्तार दोऊ आँगनमे जाय सोय रहते ॥ एसें करत चातुर्मासके दिन आये ॥ तब मेह वर्षतो तो हु वे आँगनमेंही सोई रहते ॥ परि भीतर न सोवते ॥ तब एकदिन वे मेहमें भिजिरहे हते ॥ तब श्रीठाकुरजी भीतरतें बोले ॥ जो अरे असुके असुकी तुम भीतर क्यों नाहीं सोवत हो ॥ वाहिर वृथा काहेकीं भींजत हो ॥ तातें भीतर क्यों न आवो ॥ महतो ऊँचे मेडापे पोढे हें ॥ तुम नीचें क्यों सोवत नाहीं ॥ तब वा क्षत्राँणीने कह्यो ॥ जो महाराज तुमतो उपर पोढे हो ॥ ओर हम नीचें केसें सोवें ॥ तब श्रीठाकुरजीनें कह्यो ॥ जो कछू वाधक नाहीं ॥ संकोच मति करो ॥ हम प्रसंन होयकें कहत हें ॥ तातें तुम भीतर आयकें सुखेन सोइरहो ॥ पाछें तबतें वे भीतर सोवनलागे ॥ परि एसी रीतिसों सोवते ॥ जो मति कहूँ स्वास वाजे ॥ जातें श्रीठाकुरजी जागिपरें ॥ सो वे एसे व्यवधानसों सोवें ॥ ओर श्रीठाकुरजीकी यथाशक्ति सेवा भलि भाँतिसों करते ॥ तातें वे स्त्रीभर्त्तार क्षत्रीय एसे कृपापत्र भगवदीय हे ॥ जिनसों श्रीठाकुरजी एसे सानुभव हते ॥ तातें विनकी वार्ता अनिर्वचनीय हे ॥ सो कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव ६९ मो ॥

❀ (वार्ता ७० मी. वैष्णव ७० मो) ❀

❀ (अथ एक सुतार अडेलमें रहतो ताकी वार्ता) ❀

वा सुतारके उपर श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप बोहोत कृपा करते ॥ सो वा सुतारको एसो नेम हतो ॥ जो श्रीआचार्यजीके दर्शन करेविन न रहतो ॥ तातें वह सब घरको कॉम काज छोडिकें आपके दर्शनकों आवतो ॥ तातें घरके मनुष्य खरचकों बोहोत दुःख पावते ॥ तातें वाके लिये श्रीआचार्यजी आप

वाको भक्ति भाव देखिकें वाके घर पधारते ॥ तातें आपकी माता इलंमाँगारुजी आपसों वोहोत खीजते ॥ जो तुम एसें कहा करत हो जो वा सुतारके घर जातहो ॥ सो यह तुमकों उचित नाहीं ॥ या रीतिसों आपपें माताजी वोहोत रिस होते ॥ परि वाको स्नेह जाँनिकें आप तोहू वाके घर चोथे पाँचें-दिन तो अवश्य पधारते ॥ आपनें माताकी आज्ञा इतनी मॉंनी ॥ जो आप वाके घर जो नित्य पधारते ॥ सो जादिनतें माताजीनें मनें करी ॥ तादिनतें आप चोथे पाँचेंदिन वा सुतारकें घर पधारते ॥ क्यों जो वाके उपर आपकी वडी कृपा हती ॥ सो वह सुतार श्रीआचार्यजीको एसो कृपापात्र भगवदीय हतो ॥ तातें वाकी वार्ता कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव ७० मो ॥

❀ (वार्ता ७१ मी. वैष्णव ७१ मो.) ❀

❀ (एक क्षत्रीय जाकोअन्यमार्गीयसों स्नेह हतो ताकीवार्ता) ❀

सो वा क्षत्रीयको एक अन्यमार्गीयसों स्नेह हतो ॥ तातें एकदिन वह अन्यमार्गीयके घर गयो हतो ॥ तब वानें वासों कह्यो ॥ जो आजतो यहाँहीं तुम पाक करो ॥ तब वाके आग्रहतें वा क्षत्रीय वैष्णवनें वहाँहीं पाक कियो ॥ सो जब सिद्ध भयो ॥ तब वा वैष्णवनें वा अन्यमार्गीयके श्रीठाकुरजी आगें श्रीनाथजीको नाँम लेकें भोग समर्प्यो ॥ पाछें समयानुसार भोग सराय वाकों प्रसाद दियो ॥ ओर आपनें हू लियो ॥ तापाछें किंचित विश्राम कियो ॥ सो जब वे निद्रावस भये ॥ तब वा अन्यमार्गीयके सेव्य स्वरूपनें वासों स्वप्नमें कह्यो ॥ जो आजतो हम भूखेही हें ॥ तब वानें कह्यो ॥ जो महाराज तुमकोंतो मेंनें वा क्षत्रीयतें पाक करवायकें भोग धरवायो हतो ॥ सो आप भूखे काहेतें रहे ॥ तब वाके सेव्य श्रीठाकुरजीनें कह्यो ॥ जो वह भोगतो श्रीनाथजी अरोगे हें ॥ हमकों तो विननें दूरि किये ॥ तब वा अन्य-

मार्गीयनें वो जा क्षत्रीयमित्र सोयो हतो ॥ ताकों जगायकें ये सब समाँचार कहे ॥ तब वा वैष्णवमित्रनें अँन्यमार्गीय मित्रसों कह्यो ॥ जो मेंनें तो तोसों केतिकवार कह्यो ॥ जो तूँ श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको सेवक होउ ॥ सो याहीकेलियें कह्यो हो ॥ जो हमारे प्रभुजी तो श्रीआचार्यजीके सेवकनके हाथतेंही अरोगत हें ॥ सो सुनिकें वह अँन्यमार्गीय अपनें सब कुटुंब सहित श्रीआचार्यजीकी शरणि आयकें सेवक भयो ॥ तापाछें आपनें वाके सेव्य स्वरूपकों पंचाँमृतस्नान करवाय पाट वेठारे ॥ ओर भोग समर्प्यो ॥ सो समयानुसार सराय सब वैष्णवनकों प्रसाद लिवायो ॥ तापाछें वह श्रीठाकुरजीकी सेवा नींकी भाँतिसों करनलाग्यो ॥ तातें वो भलो वैष्णव भयो ॥ सो वा क्षत्रीय वैष्णवके संगतें वाको सब मनोरथ सिद्ध भयो ॥ तातें संग करनोंसो तादृशी वैष्णवको ही करनों ॥ सो वह क्षत्रीय श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको एसो कृपापात्र भगवदीय हतो ॥ जाके संगतें अन्यमार्गीयकी हू बुद्धि फिरी ॥ तातें विनकी वार्ता अनिर्वचनीय हे ॥ सो कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव ७१ मो ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (वार्ता ७२ मी. वैष्णव ७२ मो.)

❀ (अथ लघुपुरुपोत्तमदास क्षत्रीय कवि हते तिनकी वार्ता) ❀

वे लघुपुरुपोत्तमदास श्रीनाथजीके ओर श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके कवित्त एकसार करते ॥ ओर वे श्रीआचार्यजीकों साक्षात् पूर्णपुरुपोत्तम करिकें जाँनते ॥ तातें विनकी श्रीआचार्यजीके उपर वडी आसक्ति हती ॥ तातें आपहू विनके उपर वोहोत प्रसंन रहते ॥ वे लघुपुरुपोत्तमदास श्रीठाकुरजी ओर श्रीआचार्यजीमें कछू भेद न जाँनते ॥ केवल एकही स्वरूप जाँनते ॥ सो वे लघुपुरुपोत्तमदास श्रीआचार्यजीके एसे कृपापात्र भगवदीय हते ॥ तातें विनकी वार्ता कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव ७२ मो ॥

❀ (वार्ता ७३ मी. वैष्णव ७३ मो) ❀

❀ (अथ कविराज भाट तिनकी वार्ता प्रारंभः) ❀

सो वे कविराज भाट तीन भाई ब्राह्मण हते ॥ सो वे तीन्यों भाई अडेल आयकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक भये ॥ सो जब नॉम पाय समर्पण भयो ॥ तापाछें वे श्रीनाथजीके संनिधॉन नित्त नये नये कवित्त करिकें सुनावते ॥ ओर विनने श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके हू कवित्त बोहोत किये ॥ तातें आप श्रीआचार्यजी विन कविराजके उपर बोहोत प्रसंन रहते ॥ सो वे कविराज तीन्यो भाई आपके सेवक एसे कृपापात्र भगवदीय हते ॥ तातें विनकी वार्ता कहॉतॉई लिखिये॥ वैष्णव ७३ मो ॥

❀ (वार्ता ७४ मी. वैष्णव ७४ मो.) ❀

❀ (अथ गोपालदास इटोडाक्षत्रीय तिनकी वार्ता) ❀

सो विन गोपालदासकी श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके उपर बडी आसक्ति हती ॥ सो एक समे जादिन वे गोपालदास अडेल आये ॥ ताके दूसरेदिन श्रीआचार्यजीको जन्मोत्सव हतो ॥ सो जब आप श्रीआचार्यजी मार्कंडेय पूजा करविको बेठे ॥ ता समें विन गोपालदासनें एक नयो छंद करिकें गायो ॥ सो छंद ॥ (राग बिलावल) (माधव मासें भर वैशाखें श्रीवल्लभहरि जन्म लियो) सो जब यह छंद गायो ॥ तब सुनिकें आप श्रीआचार्यजी बोहोत प्रसॅन्न भये ॥ तापाछें विन गोपालदासनें बोहोत छंद किये हे ॥ तातें उनके उपर आप बहोंत प्रसन्न रहते ॥ वे गोपालदास श्रीआचार्यजीके एसे कृपापात्र भगवदीय हते ॥ सो इनकी वार्ता कहॉतॉई लिखीये ॥ वैष्णव ७४ मो ॥

❀ (वार्ता ७५ मी. वैष्णव ७५ मो) ❀

❀ अथ जनार्दनदासचोपडा क्षत्रीय तिनकी वार्ता) ❀

एकसमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु श्रीगिरिराजके श्रीजीद्वार पधारे

हते ॥ सो जब आप श्रीगोकुल आये ॥ तब जनार्दनदासहू श्रीगोकुल आये हते ॥ तिननें वहाँ जब श्रीआचार्यजीके दर्शन किये ॥ तब दर्शन करतमात्रही विनकों ऐसो भास्यो ॥ जो श्रीआचार्यजी आपतो साक्षात् ईश्वर हें ॥ तब विन जनार्दनदासनें श्रीआचार्यजीसों विनती करी ॥ जो महाराज मोकों शरणि लीजिये ॥ तब आपनें कह्यो ॥ जो तुम स्नान करि आवो ॥ तब वे स्नान करिकें आय श्रीआचार्यजीकों दंडोत कियो ॥ ओर विनती करी ॥ जो महाराज मोकों नाँम समर्पण करवाइये ॥ तब आपनें कृपा करिकें वाकों नॉम सुनायो ॥ तापाछें आप श्रीजीद्वार पधारे ॥ तब जनार्दनदासहू साथ आये ॥ पाछें श्रीनाथजीके सन्निधॉन श्रीआचार्यजीनें विन जनार्दनदासकों समर्पण करवायो ॥ तापाछें आपकी कृपातें वे भले भगवदीय भये ॥ तातें आप श्रीआचार्यजी विनके उपर वोहोत कृपा करते ॥ सो वे जनार्दनदास श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक एसे परम कृपापात्र भगवदीय वडे अनन्य वैष्णव भये ॥ तातें विनकी वार्ता कहाँतॉई लिखिये ॥ वैष्णव ७५ मो ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

❀ (वार्ता ७६ मी. वैष्णव ७६ मो.) ❀

❀ (गडुस्वामी ब्राह्मण श्रीवृंदावनमेंरहतेतिनकीवार्ता) ❀

सो वे गडुस्वामी आपहू स्वामी कहावते ॥ सो आप दूसरेनकों सेवक करते ॥ तब एकसमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप श्रीवृंदावन पधारे ॥ तब विन गडुस्वामीकों रात्रिके समें विनके श्रीठाकुरजीनें कृपा करिकें जतायो ॥ जो यहाँ श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप पधारे हें ॥ सो तूं उनकी शरणि जेयो ॥ पाछें सवारें वे गडुस्वामी स्नान करिकें जहॉ श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप उतरे हते ॥ तहॉ गये ॥ सो जायकें विननें श्रीआचार्यजीकों दंडवत प्रणाम करिकें विनती कीनीं ॥ जो महाराज मोकों श-

रणि लीजिये ॥ तब श्रीआचार्यजी आप, मुसिकायकें कहें ॥ जो तुम तो आप स्वामी हो ॥ तुमकों सेवक कैसें करिये ॥ तब विन गडुस्वामीनें विनती कीनी ॥ जो महाराज मोकों भगवदाज्ञा भई हे ॥ जो तूं श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी शरणि जेयो ॥ तातें महाराज आप मोकों शरणि लीजिये ॥ तब येह सुनिकें आपने वाकों नॉम दियो ॥ पाछें विन गडुस्वामीनें पेहेलें जो सेवक किये हते ॥ तिन सबनकों विनने श्रीआचार्यजीसों विनती करिकें नॉम दिवायो ॥ तापाछें वे गडुस्वामी भले भगवदीय भये ॥ तब श्रीआचार्यजी आप विनके उपर बोहोत प्रसन्न रहतें ॥ तातें वे गडुस्वामी एसे कृपापात्र भगवदीय हते ॥ तातें विनकी वार्ता कहॉतॉई लिखिये ॥ वैष्णव ७६ मो ॥

❀ (वार्ता ७७ मी. वैष्णव ७७ मो.) ❀

❀ (अथ कन्हैयासाल क्षत्रीय तिनकी वार्ता प्रारंभः) ❀

विन कन्हेयासाल क्षत्रीयकों श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें कृपा करिकें अपनें सब ग्रंथ सुनाये हते ॥ सोई सब ग्रंथ वानें श्रीगुसॉईजीके पास पढे ॥ सो वाकों श्रीआचार्यजीकी कृपातें भक्तिकी स्फुरति भइ ॥ तातें विनके उपर आप सदा प्रसंन रहते ॥ सो वे कन्हेयासाल श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके एसे कृपाधात्र भगवदीय हते ॥ तातें विनकी वार्ता कहॉतॉई लिखिये ॥ वैष्नव ७७ मो ॥ ७ ॥

❀ (वार्ता ७८ मी. वैष्णव ७८. मो) ❀

❀ (अथ नरहरदास गोडियाब्राह्मण तिनकी वार्ता) ❀

विन नरहरदासके घर श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनें श्रीमदनमोहनजीकों पाट बेठारे हते ॥ सो विन श्रीमदनमोहनजीकी सेवा विन नरहरदासनें बोहोत दिन तॉई भली भॉतिसों कीनी ॥ पाछें जब विनकों शरीर थक्यो ॥ तब विनने विचारी ॥ जोश्रीठाकुरजी अंत कहूँ सुख न पावेंगे ॥ तातें श्रीगुसॉईजीके घर पध-

रावें ॥ एसो निश्चय करिकें ॥ वो नरहरदासनें श्रीठाकुरजीकों श्रीगुसाँईजीके घर पधराये ॥ पाछें वे श्रीठाकुरजीकी सेवा श्रीगुसाँईजीनें श्रीरघुनाथजीके माथें पधराई॥ सो ठाकुरजी श्रीगोकुलचंद्रमाँजीके पास न्यारे सिंघासनपे विराजत हें ॥ विन नरहरदासके उपर श्रीगुसाँईजी बोहोत प्रसन्न रहते ॥ सो वे नरहरदास श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक एसे कृपापात्र भगवदीय वेष्णव हते ॥ तातें विनकी वार्ता कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव ७८ मो॥

❀ (वार्ता ७९ मी. वैष्णव ७९ मो.) ❀

❀ (अथ बादरायणदास पुष्करणाब्राह्मण तिनकी वार्ता) ❀

विन बादारायणदासको पहलो नाँम बादा हतो ॥ सो जब वे श्रीआचार्यजीके सेवक भये ॥ तब आपनें वाको नाँम बादरायणदास धन्यो ॥ सो वे बादरायणदास ओर वाकी स्त्री वे दोऊ मोरवी गाँममें रहते ॥ सो एकसमें वत्साभट्ट करिकें एक ब्राह्मण द्वारिका श्रीरणछोडजीके दर्शनकों जात हते ॥ तब मोरवीमें रात्रिको आय बसे ॥ सो बादरायणदासनें उनको अपनें घर राखे ॥ तापाछें विनकों बडे भगवदीय जाँनिकें बादरायणदासनें विन पेतें नाँम पायो ॥ ओर श्रीभागवतको संपूर्ण श्रवण कन्यो ॥ तापाछें विन बादरायणदासनें विन वत्साभट्टकों विदा किये ॥ तब वत्साभट्ट द्वारिका श्रीरणछोडजीके दर्शनकों आये ॥ तब केतेदिन पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभूहू आप श्रीरणछोडजीके दर्शनकों द्वारिका पधारे ॥ तब आपहूं मोरवीमें उतरे ॥ तहाँ पाछे बादरायणदास ओर वाकी स्त्रीनें फेरिकें श्रीआचार्यजीके पास नाँम पाय समर्पण करवायो ॥ पाछें जब श्रीआचार्यजी आप श्रीरणछोडजीके दर्शनकों पधारे ॥ तब बादरायणदास तथा वाकी स्त्री दोऊजनें आपके साथ श्रीरणछोडजीके दर्शनकों चले ॥ सो द्वारिका जाय पोंहोंचे ॥ पाछें तहाँ श्रीआ-

चार्यजी आप छे महिनाँलों विराजे ॥ तहाँ बादरायणदास ओर वाकी स्त्री दोउजनें श्रीआचार्यजीकी सेवामें रहे ॥ सो विननें एसी सेवा करी ॥ जो विन दोऊनके उपर आप बोहोत प्रसन्न भये ॥ पाछें जब आप द्वारिकातें पधारे ॥ तब वे दोऊ स्त्रीपुरुष मोरबीलों आपके साथ आये ॥ पाछें आप सों विदा होयकें वे दोऊजनें मोरबीमें अपनें घर रहे ॥ ओर श्रीआचार्यजी आप श्रीगोकुलजी पधारे ॥ सो वे बादरायणदास एसे कृपापात्र भगवदीय हते ॥ तातें तिनकी वार्ता कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव ७९ मो ॥

❀ (वार्ता ८० मी· वैष्णव ८० मो.) ❀

❀ (अथसाधूपाँडेतथामाँणिकचंदपाँडेसनाढ्यब्राह्मणतथासाधूपाडेकीस्त्रीभवानीओरबेटीनरोआन्योरमेंरहतेतिनकीवार्ता) ❀

जब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप पृथ्वीपरिकमाँ करत झाडखंडमें पधारे ॥ तब श्रीनाथजीनें वहाँ आपकूं दर्शन देकें आज्ञा करी ॥ जो तुम मेरी सेवा प्रगट करो ॥ हम व्रजमें श्रीगोवर्धन पर्वतपे तीन दमन नाँमसों हें ॥ १ देवदमन ॥ २ नागदमन ॥ ३ इंद्रदमन ॥ इन तिन नाँम करिकें प्रसिद्ध भये हें ॥ सो देवदमन मेरो मुख्य नाँम हे ॥ सो साधूपाँडेके बडेभाई माँणिकचंदपाँडे हें ॥ तहाँ हम प्रगट भये हें ॥ सो सुनिकें आप श्रीआचार्यजी तहाँ पाँव धारे ॥ तब सेवक पाँच सात आपके साथ हे ॥ सो १ दामोदरदासहरसाँनी ॥ २ कृष्णदासमेघन ॥ ३ रामदासजी ॥ ४ माधवदास ॥ इत्यादिक सब सेवक आपके संग आन्योरमें आये ॥ सो संध्यासमें वा साधूपाँडेके घरकें आगें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु पाँव धारे ॥ तहाँ वाके द्वारपास एक बडो चोतरा हतो ॥ वाके उपर आप बिराजे ॥ तब साधूपाँडेनें आयकें आपसों पूछी ॥ जो स्वामी कछू खाऊगे ॥ तब आपनें कह्यो ॥ जो हमतो कछू न खाँइगे ॥ तब कृष्णदासमे-

घन बोले ॥ जो ये तो अपनें सेवक विनाँ काहूको लेत नाहीं ॥ इतनेंमें श्रीनाथजी गोवर्द्धनपर्वतके उपरतें नरोकों पुकारे ॥ जो अरी नरो मेरो दूध लाउ ॥ तब वा साधूपाँडेकी बेटी नरोनें कह्यो ॥ जो महाराज आजतो हमारें पाहुनें आये हें ॥ तब श्रीनाथजीनें कही ॥ जो पाहुनें आये हें तो भली भई ॥ परि मेरोतो दूध लाउ ॥ तब नरो बोली ॥ जो वारी लाल लाई.॥ एसें कहिकें तब नरो कटोरा भरिकें दूध ले गई ॥ सो श्रीनाथजीकों प्याय आई ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आपनें दामोदरदाससों पूछ्यो ॥ जो दमला अबहीं जो कछू शब्द भयो सो तेनें सुन्यो ॥ तब वानें कही ॥ जो हाँ महाराज सुन्यो तो सही ॥ तब आप कहें ॥ जो यह शब्द ओर झाडखंडको शब्द एक मिलत हे ॥ तातें एसो जानि परत हे ॥ जो यहाँ हीं आप प्रगट भये हें ॥ तातें सवारें श्रीगिरिराज उपर चलेंगे ॥ इतनेंमें वो नरो जो दूध प्यायकें उपरतें आई ही ॥ तासों आपनें पूछी ॥ जो तूं कहाँ गई हती ॥ तब वानें कही ॥ जो महाराज में परवतपे देवदमनकों दूध प्यायकें आई हों ॥ तब आपनें वातें कही ॥ जो अरी कछू कटोरामें बच्योहे ॥ तब वानें कही ॥ जो हाँ रंचक हेतो सही ॥ तब आपनें कह्यो ॥ जो होय सो हमकों दे ॥ तब वह बोली ॥ जो राज घरमें ओर दूध बोहोत हे ॥ तब आपनें कही ॥ जो सोतो हमकों नाहीं चहियत ॥ तब साधूपाँडेनें विनती कीनीं ॥ जो महाराज ॥ अब हमकों कृपा करिकें नाँम दीजिये ॥ तब आपनें साधूपाँडे, माँणिकचंदपाँडे, भवानीं, नरो, इन सबनके माथें हाथ फेर्‍यो ॥ ओर उन सबनकों स्नान करवाय पाछें नाँम दियो ॥ तापाछें वो श्रीनाथजीको प्रसादी दूध जो कटोरामें बच्यो हो सो लियो ॥ तबतें उनके घरको दूध, दही सबकछू आपनें अंगीकार कियो ॥ तब आपनें वा साधू पाँडेसों

पूछ्यो ॥ जो कहो पॉडे यहॉ उपर देवदमन प्रगट भये हें ॥ सो कोंन रीतिसों प्रगटे हें ॥ सो हमसों कहो ॥ तब साधूपॉडेनें कह्यो ॥ जो महाराज हमारे गॉममें एक ग्वाल हतो ॥ सो सब गॉमकी गायनकों चरावतहतो ॥ ता गायनमें एक ब्राह्मणकी वडी गाय हती ॥ सो हू चरिवेकों जाती ॥ सो जब चरिकें आवती ॥ तब वह ब्राह्मण दुहिवेकों वेठतो ॥ तब वो दूध रंचक देती ॥ ओर सवारेंकी विरियॉ हू दूध थोरोसो देती ॥ तब वा ब्राह्मणनें विचारी ॥ जो मेरी एसी वडी गाय ओर दूध रंचक क्यों देतहे ॥ नहोयतो ग्वाल दुहि लेतहे ॥ तब वानें दूसरे दिन ग्वालसों पूछी ॥ जो भैया यह कहा कारण हे ॥ जो मेरी गाय दूध देत नाहीं ॥ तातें तुंतो दूहि लेत नाहीं ॥ तब वा ग्वालनें कह्यो ॥ जो मेंतो तेरी गाय नाहीं दुहि लेत ॥ परि अब में याकी ठीक राखूँगो ॥ तापाछें जब वह ग्वाल गाय चरावन गयो ॥ तब वो गाय सबनमें छोडिदीनीं ॥ ओर वा गायकों वो नजरिमें राखे ॥ तब वह गाय वा ग्वालकी नजरि बचायकें पर्वत उपर चढी ॥ तब वा ग्वालनें देखी ॥ सो वह ग्वाल हू वाके पीछें पर्वत उपर चढ्यो ॥ तब वो गाय उपर जायकें एक स्थलपे आपतें ठाढी श्रवत हीं ॥ तहॉ सबरो दूध डारिकें वो पर्वत उपरतें नीचें गायनमें उतरि आई ॥ तब वा स्थलपे वो ग्वाल जाय देखे तो वहॉ एक वडी शिला हे ॥ तामें एक छेद हे ॥ सो वा छेदमें वो गाय सबरो दूध डारि आई ॥ सो देखिकें वह ग्वाल परवतपेतें उतरि आयो ॥ सो फेरि सॉझके समें हू वह गाय पर्वत उपर चढी ॥ तब फेरि हू वह ग्वाल पर्वत उपर चढ्यो ॥ सो दूरितें देखे तो सवारेंकी नॉई वह गाय वाही स्थलपे ठाढी ठाढी श्रवत हीं ॥ सो सबरो दूध डारिकें वो गायनमें उतरि आई ॥ तब वह ग्वाल हू वाके पाछें उतरि आयो ॥ सो जब

साँझकों वो गाय लेकें घर अयो ॥ तब वा ग्वालनें वा ब्राह्मणसों कह्यो ॥ जो भाई तेरी गाय दोऊ विरियाँ पर्वत उपर जायकें श्रवति हे ॥ तहाँ एक बडी शिला हे ॥ तामें एक छेद हे ॥ तहाँ सवरो दूध डारिकें आई हे ॥ सुनिकें वा ब्राह्मणनें हम सबनसों कह्यो ॥ तब हम सब गाँमके मुकरदम बडे बडे भेले भये ॥ तब विचारी ॥ जो भाई यहाँ कहा चमत्कार हे ॥ तब हममें एक बोहोत वृद्ध हतो ॥ तानें कही ॥ जो भाई मेंनें तो एसें सुन्यो हे ॥ जो जहाँ कछू धन होय ॥ तहाँ गाय आपतें श्रवे ॥ तापीछें हम सब पर्वतपे वा ग्वालकों संग लेकें गये ॥ सो वा ग्वालनें हमकों शिला दिखाई ॥ सो हम सबन मिलिके वह शिला उठाई ॥ तब देखें तो वाके नीचें एक लरिका वर्ष सातको ठाढो हे ॥ ओर वा शिलामें जो छेद हतो ॥ सो वाके सुखके उपर हतो ॥ तामेंतें जो दूध भीतर जातो ॥ सो वो पीवत हो ॥ सो देखिकें हमनें विनकों देवता जानिकें पर्वत उपर एक फुँसको छप्पर छाय दीनों ॥ तामें वे बेठनलागे ॥ सो जब हमनें नाँम पूछ्यो ॥ तब विननें अपनो नाँम देवदमन बतायो ॥ तापाछें हम दूध, दही, माँखन, जो भोग धरें ॥ सो वे अरोगें ॥ ओर ब्रजवासीनके लरिकाँनमें खेलें ॥ या भाँतिसों यहाँ श्रीनाथजीको प्रागट्य भयो हे ॥ यह साधूपाँडेके सुखतें सुनिकें आप श्रीआचार्यजीमहाप्रभु दूसरे दिन प्रातःकाल नित्यविधी करिकें तुरंत श्रीगिरिराजपे जाय आप श्रीनाथजीके दर्शन करिकें मिले॥सो आपतो पूर्णपुरुपोत्तम हें ॥ आपुहीं लीला करत हें ॥ ओर आपुहीं पूछतहें॥ तातें वे.साधूपाँडे, माँणिकचंदपाँडे, भवाँनी, नरो, ॥ ये सब श्रीआचार्यमहाप्रभुनके एसे कृपापात्र भगवदीय हते ॥ जिनके पास आप श्रीनाथजी माँगि माँगिकें लेते ॥ सो वे श्रीनाथजीके एसे कृपापात्र हे ॥ ❀ (प्रसंग २ रो) ❀ ॥

ओर एकसमे श्रीनाथजी आप दूध पीवेकों विन साधूपाँडेके घर सोंनेको कटोरा लेकें पधारे ॥ तब आपनें नरोसों कह्यो ॥ जो मोकों दूध लाऊ ॥ तब वो नरो तो वा कटोरामें दूध डारति जाय ॥ ओर श्रीनाथजी आप पीवत जाँय ॥ सो वादिन दूध पीकें आपतो पधारे ॥ ओर कटोरा वहाँई छोडि आये ॥ पाछें जब सवारें मंगला आरतीके समें भीतरिया देखें तो मंदिरमें सोंनेको कटोरा नाहीं ॥ इतनेंमें वो नरो कटोरा लेकें आई ॥ ओर वानें कह्यो ॥ जो यह कटोरा लेउ ॥ रातिकों लरिका हमारे वहाँहीं भूलि आयो हे ॥ सो सुनिकें सबकोऊ बोहोत प्रसंन्न भये ॥ पाछें नरो अपनें घर आई ॥ सो वो श्रीनाथजीकी एसी कृपापात्र ही ॥ ❀ (प्रसंग २ रो) ❀ ॥ एकसमें श्रीनाथजीनें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु सों कह्यो ॥ जो मोकों एक गाय मँगाय देऊ ॥ तब आपनें दामोदरदाससों कह्यो ॥ जो श्रीनाथजीनें गायकेलियें आज्ञा करी हे ॥ सो यह मेरे हाथको सुवर्णको छल्ला लेउ ओर योकों वेचिकें जो रुपैया होय ताकी एक सुंदर गाय ले आवो ॥ ऐसें कहिकें आपनें वो छल्ला अपनें श्रीहस्तसों काढिदीनों ॥ सो लेकें दामोदरदास साधूपाँडेके घर आयकें विनसों कही ॥ जो श्रीआचार्यमहाप्रभुनें एक गाय मोल मँगवाई हे सो ले देउ ॥ तब विननें कह्यो ॥ जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु गायकों कहा करेंगे ॥ तब दामोदरदासनें कह्यो ॥ जो श्रीनाथजीनें आज्ञा करी हे ॥ताके लियें आपनें गाय मंगाई हे ॥ तब साधूपाँडेनें कह्यो ॥ जो मेरे गाय हें ॥ सोहूतो आपकी हें ॥ तातें जो चहिये सो लीजिये ॥ तब दामोदरदासनें कह्यो ॥ जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी एसी आज्ञा हे ॥ जो यह छल्ला वेचिकें गाय ले देऊ ॥ तब विननें दामोदरदासपेतें वा छल्ला लेकें वाकों वेचिकें दोय

गाय ले आये ॥ सो दोऊ गाय लेकें वे उपर गये ॥ तब आप श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें देखिकें प्रसँन्न होयकें वे दोनों गाय श्रीनाथजीकों समर्पी ॥ तब साधूपाँडेनें ओर अपनें घरकी दश गाय श्रीनाथजीकों भेट करीं ॥ तापाछें ओर सब वैष्णवनकों खबरि भई ॥ जो श्रीनाथजीनें गायनके लियें श्रीआचार्यजीसों आज्ञा करी हे ॥ तब सब वैष्णवननें गाय पठाई ॥ एसें करत गाय सोके आसेर भेलीं भई ॥ तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें यह जाँन्यो ॥ जो श्रीनाथजीकों गाय बोहोत प्रिय हें ॥ तबतें आपनें श्रीनाथजीको नाँम गोपाल प्रगट कियो ॥ पाछेंतें श्रीगु-सांईजीनें गोपाल नाँमसों "गोपालपुर" गाँम बसायो ॥ ओर सूरदासजीनें हू ॥ ताके अनुसार दीनताको पद प्रथम करिकें गाय सुनायो हो ॥ जो (अब हों नाँच्यो बोहोत गोपाल) यह पद सुनायो हो ॥ सो वे साधूपाँडे, माँणिकचंदपाँडे, भवानीं, नरो, यह सब श्रीआचार्यजीके सेवक भले कृपापात्र भगवदीय हते ॥ तातें इनकी एसी अनिर्वचनीय कितनींक वार्ता हें ॥ सो कहाँताई लिखिये ॥ वैष्णव ८० मो. ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

❀ (वार्ता ८१ मी. वैष्णव ८१ मो.) ❀

❀ (अथ नरहरदास संन्यासी तिनकी वार्ता प्रारंभः) ❀

विन नरहरदास संन्यासी पासतें एक वेंणा कोठारी करकें हते ॥ तिननें नाँम पायकें वे वैष्णव भये हते ॥ सो एकसमें जब श्रीआ-चार्यजीमहाप्रभु आप द्वारिका पधारे ॥ तब वे नरहरदास संन्यासी ओर वेंणा कोठारी हू आपके साथ हे ॥ सो जब द्वारिका गये ॥ तब श्रीआचार्यजी आप विन नरहरदास संन्या-सीके उपर बोहोत प्रसन्न भये ॥ तब वानें आपसों विनती कीनीं ॥ जो महाराज मेरे उपर कृपा करो ॥ तो मैं एक प्रार्थनाँ करूं ॥ तब आप मुसिकायकें कहे ॥ जो कहा प्रार्थनाँ करतहो ॥ तब

विननें कह्यो ॥ जो महाराज या वेंणा कोठारीकों शरणि लीजिये ॥ तव आपनें वाकों शरणि लेकें नाँम निवेदन करवायो ॥ तापाछें वे वेंणा कोठारी भले भगवदीय भये ॥ सो वे नरहरदास संन्यासी श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके एसे कृपापात्र भगवदीय हते ॥ तातें विनकी वार्ता अनिर्वचनीय हे ॥ सो कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव ८१ मो

❀ (वार्ता ८२ मी. वैष्णव ८२ मो.) ❀

❀ (गोपालदासजटाधारीश्रीनाथजीके खवासतिनकीवार्ता) ❀

सो वे गोपालदास श्रीनाथजीकी खवासी बोहोत भक्ति भावसों नीकि भाँतिसों करते ॥ तातें आप श्रीनाथजी उनसों सानुभव हते ॥ सो जव गरमीनके दिननमें भोग आवते तव वे गोपालदास नेत्र मूँदिकें ठाढे ठाढे पंखा करते ॥ ओर रात्रिकों जव श्रीनाथजी जगमोहनमें पोढते ॥ तव तहाँ हू वे गोपालदास चारि प्रहर ठाढे रही आँखि मूँदिकें पंखा करते ॥ तव श्रीठाकुरजीके ओर श्रीस्वामिनींजीके वचन सुनते ॥ तव कोइक समें आप श्रीनाथजी विनसों आज्ञा करते ॥ जो गोपालदास आँखि खोलिकें देखि ॥ तेरो पडदा केसो ॥ तव वो गोपालदास कहते ॥ जो महाराज मोकों श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी आज्ञा नाहीं ॥ तातें में आखें क्यों करि खोलूँ ॥ तव कवहूँक आप विनोदतें श्रीनाथजी अपनें श्रीहस्तसों वाके मुखमें प्रसाद मेलते ॥ एसी कृपा करते ॥ सो एसें करत केतेक दिन वीते ॥ तव एकसमें विन गोपालदासनें श्रीआचार्यजीसों हाथ जोरिकें विनती करि ॥ जो महाराज मोकों पृथ्वीपरिक्रमाँ करिवेकी इच्छा हे ॥ सो जो आप आज्ञा देओ तो मेरो मनोरथ सिद्ध होय ॥ तव आपनें कह्यो ॥ जो अवश्य करिये ॥ तापाछें गोपालदास आज्ञा माँगिकें विदा होय पृथ्वीपरिक्रमाँकों चले ॥ तव ओर वेष्णवननें श्रीआचार्यजी सो पूछी ॥ जो महाराज श्रीनाथजी

ओर आपके एसे कृपापात्रको एसो मन क्यों भयो ॥ तब आपनें श्रीमुखतें कह्यो ॥ जो वह गोपालदास पृथ्वीप्रदक्षणाकों गयो तो हे ॥ परि जाय सकेगो नाहीं ॥ कारण जब वो मजलि दोय चार जायगो ॥ तब वाकों विरह होयगो ॥ ता विरह करिकें वाकी देह छूटेगी ॥ तब सब वैष्णवननें श्रीआचार्यजीसों फिर विनती कीनीं ॥ जो महाराज विनकी देह या भाँतिसों क्यों पडे ॥ तब आपनें कह्यो ॥ जो जानें श्रीठाकुरजीको महद अपराध कन्यो होय ताकी देह याभाँतिसों पडे ॥ सो वा गोपालदासकों हूँ एक वडो अपराध पर्यो हे ॥ ताकेलियें वाकी यह गति होयगी ॥ तब फेरि आपसों वैष्णवननें पूछ्यो ॥ जो महाराज वानें असो महदपराध सो कोनसों कीनों हो ॥ तब आपनें कह्यो ॥ जो वह गोपालदास पहलें श्रीनाथजीके बागकी रखवारी करते ॥ सो एक श्रीठाकुरजीके सेवक ब्राह्मणको लरिका हतो ॥ सो रात्रिकों वा बागमें पेठिकें फूल चुरायकें ले जातो ॥ ताकों एकदिन विन गोपालदासनें देख्यो ॥ तब तहाँतें वह लरिका भाज्यो ॥ सो अपनें घरमें जाय श्रीठाकुरजीके मंदिरमें छिप्यो ॥ तब गोपालदासनें तहाँ भगवन्मंदिरकी मर्यादा न राखतें भीतर जायकें वाकों मूकीनसों मान्यो ॥ तातें श्रीठाकुरजीकी काँनि कछू रही नाहीं ॥ सो बात श्रीठाकुरजीकों सुधि आई ॥ ता महदपराध परेतें वाकों पृथ्वीपरिक्रमाँकी इछा भईहे ॥ पाछें जब वे गोपालदास मजलि चारि पाँच गये ॥ तब विनकों विरह भयो ॥ ता विरह करिकें वाकी देह छूटी ॥ सो यह बात एक वैष्णवनें आयकें आप श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके आगें कही ॥ तब आप श्रीमुखतें कहें ॥ जो गोपालदासके परलोकमें तो कछू हाँनि भई नाहीं ॥ वहतो श्रीनाथजीके चरणारविंदके पास पोंहोंच्यो ॥ परि वानें भगवन्मर्यादा तोडी ॥ ताको महदपराध भयो ॥

विननें कह्यो ॥ जो महाराज या वेंणा कोठारीकों शरणि लीजिये ॥ तब आपनें वाकों शरणि लेकें नाँम निवेदन करवायो ॥ तापाछें वे वेंणा कोठारी भले भगवदीय भये ॥ सो वे नरहरदास संन्यासी श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके एसे कृपापात्र भगवदीय हते ॥ तातें विनकी वार्ता अनिर्वचनीय हे ॥ सो कहाँताँइ लिखिये ॥ वैष्णव ८१ मो

❀ (वार्ता ८२ मी. वैष्णव ८२ मो.) ❀

❀ (गोपालदासजटाधारीश्रीनाथजीके खवासतिनकीवार्ता) ❀

सो वे गोपालदास श्रीनाथजीकी खवासी बोहोत भक्ति भावसों नीकि भाँतिसों करते ॥ तातें आप श्रीनाथजी उनसों सानुभव हते ॥ सो जब गरमीनके दिननमें भोग आवते तब वे गोपालदास नेत्र मूँदिकें ठाढे ठाढे पंखा करते ॥ ओर रात्रिकों जब श्रीनाथजी जगमोहनमें पोढते ॥ तब तहाँ हू वे गोपालदास चारि प्रहर ठाढे रही आँखि मूँदिकें पंखा करते ॥ तब श्रीठाकुरजीके ओर श्रीस्वामिनीजीके वचन सुनते ॥ तब कोइक समें आप श्रीनाथजी विनसों आज्ञा करते ॥ जो गोपालदास आँखि खोलिकें देखि ॥ तेरो पडदा केसो ॥ तब वो गोपालदास कहते ॥ जो महाराज मोकों श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी आज्ञा नाहीं ॥ तातें में आखें क्यों करि खोलूँ ॥ तब कबहूंक आप विनोदतें श्रीनाथजी अपनें श्रीहस्तसों वाके मुखमें प्रसाद मेलते ॥ एसी कृपा करते ॥ सो एसें करत केतेक दिन वीत ॥ तब एकसमें विन गोपालदासनें श्रीआचार्यजीसों हाथ जोरिकें विनती करि ॥ जो महाराज मोकों पृथ्वीपरिक्रमाँ करिवेकी इच्छा हे ॥ सो जो आप आज्ञा देओ तो मेरो मनोरथ सिद्ध होय ॥ तब आपनें कह्यो ॥ जो अवश्य करिये ॥ तापाछें गोपालदास आज्ञा माँगिकें विदा होय पृथ्वीपरिक्रमाँकों चले ॥ तब ओर वैष्णवननें श्रीआचार्यजी सो पूछी ॥ जो महाराज श्रीनाथजी

ओर कह्यो ॥ जो पाँव धोई ॥ तब वा स्त्रीनें वा बनियाँसों कह्यो ॥ जो मेरे पाँव कीचसों भरे नाहीं ॥ तब वा बनियाँनें कह्यो ॥ जो मार्गमें कीच तो वोहोत भई हे ॥ ओर तेरे पाँव कोरे क्यों रहे ॥ तब वानें वा बनियाँसों कह्यो ॥ जो तूँ पूछिकें कहा करेगो ॥ तब वानें कह्यो ॥ जो यह तो बात कही चहिये ॥ तब वा स्त्रीनें कह्यो ॥ जो मेरो भर्त्ता मोकों अपनों सत्य राखिवेकेलियें काँधे उपर चढायकें ले आयो हे ॥ तब यह बात सुनिकें वा बनियाँकों बडो आश्चर्य भयो ॥ तब वानें वा स्त्रीसों सब वृतांत पूछ्यो ॥ जो यह कहा कारण हे ॥ सो सब मेरे आगें विस्तारसों कहि ॥ तब वा स्त्रीनें जो प्रकार भयो हतो ॥ सो सब विस्तारिकें कह्यो ॥ सो सुनिकें वा बनियाँकों ज्ञान उपज्यो ॥ ओर अपनें जन्मकों धिकार करन लाग्यो ॥ ओर केहनलाग्यो ॥ जो धँन्य तुमारो जन्म हे ॥ जो जिनको मन एसो साँचो हे ॥ पाछें वा बनियाँनें वा स्त्रीसों दोऊ हाथ जोरिकें दंडवत कीनीं ॥ ओर कह्यो ॥ जो मेरी तो तूँ वेहेन हे ॥ तातें अब मेरो अपराध क्षमाँ करिये ॥ ओर मेरे उपर कृपा करो ॥ पाछें वा बनियाँ आप वा स्त्रीकों नये कपरा पहरायकें वाके घर पोंहोंचावन आयो ॥ तहाँ वाके पति कृष्णदाससों वा बनियाँनें विनती कीनीं ॥ ओर कह्यो ॥ जो महाराज में बडो अधम अपराधी हों ॥ तातें तुम दोउ जनें मेरो अपराध क्षमाँ करो ॥ मेरी तो यह बहनि हे ॥ ओर तुम मेरे पूज्य हो ॥ तापाछें विन कृष्णदासके उपदेशसूँ वह बनियाँ श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको सेवक भयो ॥ तब वाको नॉम आप श्रीआचार्यजीनें ज्ञानचंद धर्‍यो ॥ तापाछें वहं बनियाँ विन कृष्णदासके संगतें बडो भगवदीय भयो ॥ तातें संग करनों तो एसे भगवदीयनको ही करनों ॥ तापाछें वह बनियाँ कृष्णदाससों सदा सर्वदा

कुरजीकी सेवा करिकें आप व्याव्रत्तीकों गये ॥ पाछें स्त्रीनें रसो करिकें श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यों ॥ सो समायनुसार सरा श्रीठाकुरजीकों अनोसर करिकें महाप्रसाद ढाँकि राख्यो । सो जब वे कृष्णदास साँझकों अपनें घर आये ॥ तब सरि महाप्रसाद दोऊ जने स्त्रीपुरुषननें लीनों ॥ तापाछें जब रात्रिको अंधेरो भयो ॥ तब कृष्णदासनें अपनीं स्त्रीसों कह्यो ॥ जो तुमनें वा वनियाँसों काल्हि कोल कियो हे ॥ सो वह वनियाँ आज्ञ तुह्मारो पेंडो देखत होयगो ॥ तातें वाकों कोल पूरो कर्‍यो चहिये ॥ तब स्त्री आप उदास होयकें श्रीठाकुरजीको स्मरण करिके अपनों वचन सत्य करिवेकों तैयार भई ॥ तब श्रीठाकुरजीसों वानें विनती कीनीं ॥ जो महाराज मेरी लज्जा ओर धर्म राखियो ॥ मेरे घरतें वैष्णव विमुख न जाँयँ ॥ ताकेलियें में बचनतें बंधिगइ हों ॥ ताकी लज्जा आपकों हे ॥ असें कहिकें वस्त्र पहरिकें वो अपनें पतिकों संग लेकें चली ॥ सो वर्षाके दिन हते ॥ तातें मेह बरसि गयो हतो ॥ तासों मार्गमें कीच भई हती ॥ ताके लीयें विन कृष्णदासनें अपनी स्त्रीसों कह्यो ॥ जो वर्षा भयेतें मार्गमें कीच भई हे ॥ तातें तुं रपटि परेगी ॥ ओर तेरे पॉव कीचतें भरेंगे ॥ तातें तूं मेरे कँधापे बेठिले ॥ में तोकों लेकें पोंहोंचाउँ ॥ नॉतर वह वनियाँ तेरो अनादर करेगो ॥ तब वा स्त्रीनें निरउपायसों भगवत्स्मरण करिके अपनें पतिकी वात कबूली ॥ तब वाकों कृष्णदासनें अपनें कॉंधेपर चढायकें वा वनियाँकी हाट आगें उतारि दीनीं ॥ तब वा स्त्रीनें वा वनियाँकों हेला पारिकें कह्यो ॥ जो किंवाड खोली ॥ में मेरो वचन सत्य करिवेको आई हों ॥ तब वा वनियाँनें वाकों शब्द पहेचॉनिकें त्वरासों किंवाड खोलिकें ॥ तब वह पाँव धोयवेकों पाँनीं ले आयो ॥

लोंगी ॥ परि मोकों सीधो सामुग्री चहियत हे सो देउ ॥ अेसें अपनें मनमें विचार करिकें वह स्त्री चली ॥ सो वा वनियाँकी हाट उपर गई ॥ तव वा वनियाँनें वाकों टोकी ॥ तव वा स्त्रीनें वासों कही ॥ जो में तोसों कालि मिलोंगी ॥ परि आज तूँ मोकों सोदा चहियतहे सो देउ ॥ तव वा वनियाँनें कह्यो ॥ जो तूँ कोल करे तो में माँनूँ ॥ तव वा स्त्रीनें एक कोल कियो ॥ पाछें वा स्त्रीकों जो सीधो सामुग्री चहियत हतो ॥ सो सव वा वनियाँनें वाकों दीनों ॥ पाछें वा स्त्रीनें अपनें घर आयकें रसोंई करिकें श्रीठाकुरजीको भोग समर्प्यो ॥ पाछें समयानुसार भोग सरायकें श्रीठाकुरजीकों अनोसर करिकें ॥ विन समस्त वैष्णवनकों प्रसाद लिवायो ॥ तव विन वैष्णवननें भली भाँतिसों प्रसाद लियो ॥ तापाछें सांझकों कृष्णदास आये ॥ सो सव वैष्णवनकों देखिके दंडवत कीनीं ॥ ओर जयश्रीकृष्ण कहिकें घर भीतर गये ॥ तव विननें अपनीं स्त्रीसों कही ॥ जो कहा खवरि हे ॥ वैष्णवनकों प्रसाद लिवायो ॥ तव वा स्त्रीनें कही ॥ जो हाँ प्रसाद लिवायो ॥ तव विन कृष्णदासनें कह्यो ॥ जो सीधो सामुग्री कहाँतें लाई ॥ ताको तेनें कहा प्रकार कियो ॥ तव जो प्रकार वानें कियो हते ॥ सो सव वा स्त्रीनें अपनें पतिसों कहदियो ॥ सो सुनिकें वे कृष्णदास अपनीं स्त्रीकें उपर वोहोत प्रसंन भये ॥ ओर कही ॥ जो तेनें युक्तितो ठीक करिकों समय सँभारि लीनों ॥ पाछें स्त्री भ्रतार दोऊ जनेंननें सीरो महाप्रसाद लियो ॥ पाछें वे सव वैष्णवनके पास आयके वेठे ॥ तवतें सवरी रात्रि विनकों भगवद्वार्ता करत वीती ॥ सो जव सवारो भयो ॥ तव सव वैष्णव विन कृष्णदाससों विदा होयकें चले ॥ तव वे थोरीसी दूरि उनकों पोंहोंचावन गये ॥ पाछें आप घर आय स्नान करिकें श्रीठा-

तासों वाकों अंत समें श्रीनाथजी ओर मेरो वियोग भयो ॥ भगवदकी काँन तोडेतें विन गोपालदासकी यह गति भई ॥ तातें भगवदपराध सो अपराध ॥ ओर भगवदीयको अपराध सो महदपराध जाननें ॥ तामें आपनें राजा अंवरीषको उदाहरण कहेकें विन वैष्णवनको समाधाँन कियो ॥ तातें वे गोपालदास श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके एसे कृपापात्र भगवदीय हते ॥ तिनकी वार्ता अनिर्वचनीय हे ॥ सो कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव ८२ मो ॥

❀ (वार्ता ८३ मी. वैष्णव ८३ मो.) ❀

❀ (अथ कृष्णदास ब्राह्मण तिनकी वार्ता प्रारंभः) ❀

वे कृष्णदास एक गाँममें रहते ॥ सो वडे भगवदीय हे ॥ परि अकंचन हते ॥ तव एकसमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक जो न्यारे न्यारे गाँमनके हते ॥ सो परस्पर मिलिकें पचीसेक जनें इकठोरे होयकें श्रीआचार्यजीके दर्शनकों अडेल चले ॥ सो जा गाँममें वे कृष्णदास रहते ता गाँममें आये ॥ सो कृष्णदासके घर आय उतरे ॥ तासमें कृष्णदास तो कछु कार्यार्थे कोस दोय तीनपे एक गाँम हतो ॥ तहाँ गये हते ॥ परि वीनकी स्त्री घर हती ॥ तानें विन समस्त वैष्णवनकों साष्टांग दंडवत कीनीं ॥ पाछें श्रीकृष्णस्मरण करिकें वोहोत आदर सन्मानसों विनकों घरमें वेठारे ॥ पाछें घरमें जायकें वो अपनें मनमें विचार करन लागी ॥ जो अव कहा करिये ॥ घरमें इतनों साहित्य तो कछू हे नाहीं ॥ जो इनकों देउ ॥ तव वाकों सुधि आई ॥ जो वह देमान्यो वनियाँ मोकों नित्य टोकत हे ॥ ओर कहत हे ॥ जो तूँ मोसों मिलि ॥ में तूँ कहेगी सो देउँगो ॥ सो आज वाकी हाटपे जायकें वाकों आशा वताय सीधो सामुग्री लाय काँम तो चलाय लउँ ॥ पाछें श्रीठाकुरजी लाज राखवेवारे समर्थ हे ॥ तातें सांप्रत तो वासों कहोंगी ॥ जो कालि तोसों मि-

लेंगी ॥ परि मोकों सीधो सामुग्री चहियत हे सो देउ ॥ असें अपनें मनमें विचार करिकें वह स्त्री चली ॥ सो वा बनियाँकी हाट उपर गई ॥ तब वा बनियाँनें वाकों टोकी ॥ तब वा स्त्रीनें वासों कही ॥ जो में तोसों कालि मिलेंगी ॥ परि आज तूँ मोकों सोदा चहियतहे सो देउ ॥ तब वा बनियाँनें कह्यो ॥ जो तूँ कोल करे तो में मानूँ ॥ तब वा स्त्रीनें एक कोल कियो ॥ पाछें वा स्त्रीकों जो सीधो सामुग्री चहियत हतो ॥ सो सब वा बनियाँनें वाकों दीनों ॥ पाछें वा स्त्रीनें अपनें घर आयकें रसोंई करिकें श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यो ॥ पाछें समयानुसार भोग सरायकें श्रीठाकुरजीकों अनोसर करिकें ॥ विन समस्त वैष्णवनकों प्रसाद लिवायो ॥ तब विन वैष्णवननें भली भाँतिसों प्रसाद लियो ॥ तापाछें सांझकों कृष्णदास आये ॥ सो सब वैष्णवनकों देखिके दंडवत कीनीं ॥ और जयश्रीकृष्ण कहिकें घर भीतर गये ॥ तब विननें अपनीं स्त्रीसों कही ॥ जो कहा खबरि हे ॥ वैष्णवनकों प्रसाद लिवायो ॥ तब वा स्त्रीनें कही ॥ जो हाँ प्रसाद लिवायो ॥ तब विन कृष्णदासनें कह्यो ॥ जो सीधो सामुग्री कहाँतें लाई ॥ ताको तेंनें कहा प्रकार कियो ॥ तब जो प्रकार वानें कियो हते ॥ सो सब वा स्त्रीनें अपनें पतिसों कहदियो ॥ सो सुनिकें वे कृष्णदास अपनीं स्त्रीकें उपर बोहोत प्रसंन भये ॥ और कही ॥ जो तेंनें युक्ति तो ठीक करिकों समय सँभारि लीनों ॥ पाछें स्त्री भ्रतार दोऊ जनेंननें सीरो महाप्रसाद लियो ॥ पाछें वे सब वैष्णवनके पास आयके बेठे ॥ तबतें सबरी रात्रि विनकों भगवद्वार्ता करत बीती ॥ सो जब सवारो भयो ॥ तब सब वैष्णव विन कृष्णदाससों विदा होयकें चले ॥ तब वे थोरीसी दूरि उनकों पोंहोंचावन गये ॥ पाछें आप घर आय स्नान करिकें श्रीठा-

नमत रहिकें विनकी स्त्रीसों वहनिको संबंध राखतो ॥ सो वे कृष्णदास श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक एसे भगवदीय हते ॥ जिनको सत्य ओर विनकी स्त्रीको वचन तथा पातिव्रत्य श्रीठाकुरजीनें राख्यो ॥ तातें विनकी वार्ता कहाँताई लिखिये ॥ वैष्णव ८३ मो

❀ (वार्ता ८४ मी. वैष्णव ८४ मो.) ❀

❀ (अथ संतदास चोपडा क्षत्री तिनकी वार्ता प्रारंभः) ❀

सो वे संतदास पेहेले अपनें घरके बोहोत संपन्न हते ॥ तातें वे लाखनको व्योपार करते ॥ सो वो द्रव्य सर्व व्योपारहीमें हीं खोयो ॥ तापाछें जब टका चोवीसकी ,पूँजी रही ॥ तब वे सेउके बजारमें कोडी बेचन लागे ॥ सो जबतॉई वे पैसा अढाई कमावते ॥ तबलों वहाँहीं बेठे रहते ॥ सो कोडीनकी ढेरीं पैसा पैसाकी करि राखते ॥ सो जो ग्राहक आवतो सो पैसा धरिकें कोडीनकी ढेरी उठाय ले जातो ॥ ओर संतदास तो आप बेठे पोथी देखतही करते ॥ ओर मार्गमें काहूसों बोलते नाहीं ॥ केवल भगवदरसमेंही छके रहते ॥ तामें जो कोऊ भगवदभक्त वहाँ आवतो ॥ तासों बेठे भगवदवार्ता करते ॥ ताबिनॉ अन्यसों संभापण न करते ॥ सो जो वे पैसा अढाई कमावते ॥ ताहीसों अपनों सब निर्वाह करते ॥ सो रसोईकों तो केवल एक टकाही लगावते ॥ ओर अधेलाकी चबेनी ऑनि धरते ॥ सो रात्रिकों जो वैष्णव आय बेठते ॥ तिनकों उठतसमे वा चबेनींको महाप्रसाद बॉटि देते ॥ सो लेकें सब वैष्णव उठते ॥ सो वे संतदास या रीतिसों अपनों निर्वाह करते ॥ सो एसें करत केतेकदिन बीते ॥ तब विनके मित्र नारायणदास करकें जो गोडदेसमें गये हते ॥ तिननें वहाँ सुनीं ॥ जो संतदासकों खर्चेको बडो संकोच हे ॥ तब विननें एक पत्र लिखिकें अपनें मित्र संतदासकों एकसो मोहोरनकी

हुंडी पठाई ॥ सो हुंडी लेकें कासिद आयो ॥ तानें संतदाससों नमन करिकें कह्यो ॥ जो तुमकों यह पत्र नारायणदासनें पठायो हे ॥ तब वो पत्र लेकें संतदासनें बाँच्यो ॥ ओर तामें जो हुंडी निकसी सोहू बाँची ॥ तब वो हुंडी तो संतदासनें अडेल श्रीगुसाँईजीकों पठाई ॥ ओर एक टका वा कासिदकों दीनों ॥ फिर पाछो वा कासीदके संग पत्रको ज्ुवाब लिखि दियो ॥ तामें विननें आपनें मित्र नारायणदासकों लिख्यो ॥ जो तुमनें कृपा करिकें एकसो मोहरनकी हूंडी पत्रके संग कासीदके हाथ पठाइ ॥ सो पोहोंची ॥ सो हमनें प्रेम पूर्वक लेकें अडेल श्रीगुसाँइँजीकों पठाय दीनीं हे ॥ हमतो यहाँ श्रीठाकुरजीकी कृपातें वडे आनंदमें हें ॥ तातें तुम चिंता न करोगे ॥ कुशल रहोगे ॥ परि या तुमारी प्रभुतातें हमारी एकदिनाकी रसोइमें हानीं भई ॥ जो वा दिनकी कमाइ हमनें कासीदकों दीनीं हे ॥ या रीतिको वा पत्रको ज्ुवाब लेकें वह कासीद पाछो रवानें भयों ॥ यहाँ जब वह हूंडी अडेल पोंहोंची ॥ तब भंडारीनें लायकें आप श्रीगुसाँईजीकों दिखाई ॥ ओर कही ॥ जो यह हूंडी एकसो मोहोरनकी जो गोडदेशतें नारायणदासनें अपनें मित्र संतदासकों पठाई हे ॥ सो विन संतदासनें आपकी भेट करी हे ॥ सो यह हूंडी आई हे ॥ तब श्रीगुँसाँइजीनें कह्यो ॥ जो संतदासतो आप श्रीआचार्यजीके वडे कृपापात्र भगवदीय हें ॥ सो वे अन्योपार्जित वैष्णवको द्रव्य काहेकों राखेंगे ॥ ❀ (प्रसंग २ रो) ❀ ॥ वहूरि केतेकदिन पाछें आप श्री गुसाँईजीनें श्रीगोकुलवास कियो ॥ तब वे संतदास आगरेतें उत्सवनके दर्शननकों श्रीगोकुल श्रीगुसाँईजीके पास आवते ॥ ओर जब श्रीगुसाँईजी आप आगरे पधारते ॥ तब विन संतदासके घर विनु बुलाये पधारते ॥

विनकों आपनें पिता श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके अनँन्य सेवक जाँनिकें विनपे आप एसी कृपा करते ॥ तब केतेकदिन पाछें विन संतदासको शरीर थक्यो ॥ तब विननें श्रीगोकुलतें चाँपाभाई वैष्णवकों बुलवायो ॥ तब चाँपाभाई श्रीगुसाँईजीसों आज्ञा माँगिकें आगरे आये ॥ तब संतदासनें विनसों कह्यो ॥ जो यह घर हे सो तुह्मारो हे ॥ जाँनोतो कोईदिन स्त्रीकों रहन दीजो ॥ ओर जानोंतो बेचिकेंदाँम लेजैयो ॥ एसें कहिकें घरके खत पत्र वा चाँपाभाईकों सोपि दीनें ॥ सो लेकें वे चाँपाभाई श्रीगोकुल आये ॥ तहाँ श्रीगुसाँईजीकों सब समाँचार कहे ॥ पाछेंतें जब संतदास बोहोत असक्त भये ॥ तब वेष्णव आय जुरे ॥ ओर संतदाससों कहनलागे ॥ जो तुम कहो तो रेणुकास्थल अथवा मथुरा जहाँ कहो तहाँ लेचलियें ॥ तब विनसों संतदासनें कह्यो ॥ जो मोकों मथुरा रेणुका कहा कृतार्थ करेंगे ॥ तब विन वैष्णवननें कह्यो ॥ जो श्रीगोकुल ले चलें ॥ तऊहूँ विन संतदासनें कह्यो ॥ जो श्रीगोकुल जायकें कहा राख उडाउँगो ॥ मोकों तो यहाँहीं श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी काँनितें श्रीठाकुरजी कृतार्थ करेंगे ॥ एसे कहिकें वे कहूँ नगये ॥ सो आगरेहीमें देह छोडी ॥ तापाछें वैष्णवननें अग्निसंस्कारादि कृत्य वहाँई कियो ॥ पाछें वह वात वैष्णवननें जायकें श्रीगुसाँईजीके आगें कही ॥ तब आप कहें ॥ जो वे संतदास लक्षाधिपतितें एसे गरीब भये ॥ तोह विनकी व्रतिमें फरक न पर्यो ॥ एसो होंनों दुर्लभ हे॥ तातें वे वडे भगवदीयहें ॥ या भाँतिसों आपनें वाकी सराहनाँ करी ॥ सो वे संतदास श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके एसे कृपापात्र भगवदीय हते ॥ तातें विनकी वार्ताको पार नाहीं ॥ सो कहाँतांई लिखिये ॥ वैष्णव ८४ मो. ॥

❀ (वार्ता ८५ मी. वैष्णव ८५ मो.) ❀

❀ (सुंदरदासजो श्रीजगंनाथजीसों उरेमेंरहते तिनकीवार्ता) ❀

सो वे सुंदरदास श्रीजगंनाथरायजीसों कोस दस उरेमें एक गाँम हतो तामें रहते ॥ ता गाँममें एक वैष्णव कृष्णचैतन्यको सेवक माधवदास करकें हू रहतो ॥ सो उनको ओर सुंदरदासको परस्पर बडो स्नेह हतो ॥ सो जब वे दोनों इकठोरे बेठते ॥ तब सुंदरदास कछू श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी सराहनाँ करें ॥ तब वो माधवदास कहतो ॥ जो मेरें तो जो कछू हें ॥ सो कृष्णचैतन्यहीं हें ॥ सो तहाँ एकसमें श्रीआचार्यजी आप पाँव धारे हते ॥ तब वा सुंदरदासनें आपकों अपनें घर पधराये ॥ तब वाके आग्रहतें श्रीआचार्यजीनें उहाँई रसोई करिकें श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यो ॥ सो जब आपनें सरायो ॥ तब वा माधवदासनें देखिकें वा अपनें मित्र सुंदरदाससों कह्यो ॥ जो देखि तेरे गुरूके हाथको तो श्रीठाकुरजी कछू अरोगत नाहीं ॥ ओर जो में श्रीठाकुरजीकों अरोगावत हों ॥ ताको तो एकहू ग्रास थारमें रहत नाहीं ॥ तब यह बात वा सुंदरदासनें श्रीआचार्यजीसों कही ॥ जो महाराज यह माधवदास कृष्णचैतन्यको सिष्य एसें कहत हे ॥ तब श्रीआचार्यजीनें वा माधवदासकों बुलवायकें पूछयो ॥ तब वानें जो वृतांत हतो सो सब कह्यो ॥ तब आपनें वासों कही ॥ जो काल्हि हम तेरे घर श्रीठाकुरजीके दर्शनकों आवेंगे ॥ सो जो हमारे आगें तेरें श्रीठाकुरजी अरोगेंगे तो हम साँच माँनेंगे ॥ तापाछें दूसरेदिन श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप वा माधवदासके घर पधारे ॥ सो वाके श्रीठाकुरजीके दर्शन करिकें कहें ॥ जो अब तुँ थार श्रीठाकुरजीके आगें आँनि राखि ॥ तब वो माधवदास थार लेकें आयो ॥ सो थार वानें अपनें श्रीठाकुरजीके आगें धरिकें

वो किंवाड देकें मंदिरतें वाहिर आयो ॥ तव श्रीआचार्यजी आप मंदिरके द्वारपे वेठे ॥ सो वहाँ एक प्रेत नित्य आयकें श्रीठाकुरजीके आगेतें वो भोग खाय जातो ॥ सो वह प्रेत वाहूदिन आयो ॥ तव देखे तो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप विराजे हें ॥ तव वह प्रेत खिसियानों व्हेगयो ॥ ओर आपसों विनती करनलाग्यो ॥ जो महाराज हूँ भूखन मरुंगो ॥ तव आपनें वासों कह्यो ॥ जो तेनें अवतांई खायो सो तो खायो ॥ परि अव न खॉन पावेगो ॥ तातें अव यहॉतें जा ॥ तव वह प्रेत फिरिगयो ॥ पाछें जव वो माधवदास भोग सरावन गयो ॥ तव थार देखेतो ज्योंको त्यों प्रसादसों भन्यो धन्यो हे ॥ तव वानें श्रीआचार्यजीसों कह्यो ॥ जो महाराज तुह्मारे आयेतें मेरे श्रीठाकुरजीं अरोगे नाहीं सो भूखे रहे ॥ ऐसें वानें सॉमॉन्य वचन वोहोत कहे ॥ परि आपतो कछु वोले नाहीं ॥ ओर अपनें स्थानकों पधारे ॥ पाछें वा रात्रिकों जव वो माधवदास सोयो ॥ तव श्रीठाकुरजीनें आयेकें अपनें अनुचरन हाथ वाकों खाटतें ओंधो डरवायकें वोहोत मरवायो ॥ तव वानें उनसों कह्यो ॥ जो तुम मोकों क्यों मारत हो ॥ तव श्रीठाकुरजीनें कह्यो ॥ जो तूं श्रीआचार्यजीसों सॉमॉन्यवचन क्यों वोल्यो ॥ में तेरे यहाँ भोग कव अरोगत हो ॥ तूं जो भोग धरतहो ॥ सो तो एक प्रेत आयकें खाय जात हो ॥ सो आजि जव श्रीआ-चार्यजी वेठे हे ॥ तातें वो खाय न सक्यो ॥ सो तूं उनसों व्यर्थ बुरो क्यों वोल्यो ॥ वेतो मेरो सर्वस्व हें ॥ तव माधव-दासनें विनती करी ॥ जो में भूल्यो ॥ अव सवारो होतहीं श्री-आचार्यजीमहाप्रभुनके पास जाय विनसों मेरो अपराध क्षमॉ कर-वाऊँगो ॥ मेंनें एसो न जॉन्यो हो ॥ तव विन अनुचरननें वाकों छोव्यो ॥ पाछें प्रातःकाल होतहीं वो माधवदास श्रीआचा-र्यजीके पास आयो ॥ सो वानें साष्टांग दंडवत प्रणाम करिकें

विनती करी ॥ जो महाराज मेरो अपराध क्षमाँ करिये ॥ मेंनें आपकूँ जाँने नाहीं ॥ सो श्रीठाकुरजीनें कृपा करिकें जनाये ॥ नाँतर मेंतो अपराधीही रहतो ॥ तब श्रीआचार्यजी आप तो परम दयालु हें ॥ तातें प्रसन्न होयकें वासों कहें ॥ जो तेरो कहा अपराध हे ॥ हम तो तेरे उपर प्रसन्न हें ॥ तब माधवदासनें विनती कीनीं ॥ जो महाराज मोकूँ शरणि लेउ ॥ तब आपनें कही ॥ जो तुँ कृष्णचैतन्यको सिष्य हे सो हमारोही हे ॥ तब वा माधवदासनें माँनी नाहीं ॥ ओर बडो आग्रह कियो ॥ जो महाराज मोपे कृपा करिकें मेरे घर पाँव धरो ॥ तब आप वा माधवदासके उपर बोहोत प्रसन्न भये ॥ पाछें वाकों नाँम सुनाय निवेदन करवायो ॥ तापाछें वाके घर पधारिकें वाके श्रीठाकुरजीकों पंचामृत स्नान करवाय शृंगार करि सिंघासनपाठ वेठारे ॥ तापाछें श्रीआचार्यजी आपनें पाक करिकें वाके श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यो ॥ सो समयानुसार सराय श्रीकों अनोसर करिकें पाछें आपनें भोजन कियो ॥ तापाछें आपनें वा माधवदाससों कह्यो ॥ जो जितनें वैष्णव या गाँममें होय तिन सबनकों बुलाय लावो ॥ तब वानें कह्यो ॥ जो महाराज पाँच सात वैष्णवनकों बुलाय लाऊँ ॥ तब आपनें कह्यो ॥ जो पाँच सात कहा ॥ जितनें वैष्णव तेरे मनमें आवें ॥ तितनें सबनकों बुलाय लाउ ॥ तब वानें कह्यो ॥ जो महाराज प्रसाद तो थोरो हे ॥ ओर वैष्णव बोहोत हे ॥ सो केसें होयगी ॥ तब आपनें कह्यो ॥ जो या बातसों तेरें कहा परी हे ॥ भगवत् प्रसाद तो अखुट हे ॥ सो कबहू घट्यो हे ॥ तातें तेरे जितनें वैष्णव होंई ॥ तितनें सबनकों बुलाय लाव ॥ तब वो जायकें जीतनें वैष्णव वा गाँममें हते तितनें सबनकों बुलाय लायो ॥ तिनकों भलीभाँतिसों बेठारिकें सबनकों महाप्रसाद लिवायो ॥ सो जहाँ-

ताँई वे वैष्णव प्रसाद लेतगये ॥ तहाँताँई वह थार भऱ्योको भऱ्योही रह्यो ॥ सो जब वो वैष्णव प्रसाद ले गये ॥ तब घरकेन जितनों वा थारमें रह्यो ॥ सो सब घरकेननें वाके मित्र सुंदरदास समेत खूब अघायकें प्रसाद लियो ॥ तापाछें वा थारमेंतें निघऱ्यो ॥ तब आप श्रीआचार्यजीनें वा माधवदाससों कह्यो ॥ जो वैष्णवकों विश्वास मुख्य हे सो राख्यो चाहिये ॥ याभाँति श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें वा माधवदासको अंगीकार कियो ॥ सो विन सुंदरदासके संगतें वो माधवदास भले भगवदीय भये ॥ तातें संग करनों सो ऐसे वैष्णवनतें करनों ॥ सो वे सुंदरदास श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके एसे कृपापात्र भगवदीय हते ॥ तातें इनकी वार्ताको पार नाहीं ॥ सो कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव ८५ मो.

❀ (वार्ता ८६ मी. वैष्णव ८६ मो.) ❀

❀ (अथ मावजीपटेल तथा विनकी स्त्री विरजो तिनकी वार्ता) ❀

सो वे मावजीपटेल तथा विनकी स्त्री विरजो ॥ वर्षदिनमें दोयवेर श्रीगोकुल आवते ॥ सो श्रीगुसाँईजीके दर्शन करिकें श्रीगिरिराज श्रीनाथजीके दर्शनकों जाते ॥ तातें श्रीगुसाँईजी विनके उपर वोहोत प्रसँन्न रहते ॥ तापाछें जब विनकों कृष्णभट्टको संग भयो ॥ तब विरजोनें विन कृष्णभट्टसों कह्यो ॥ जो तुम हमारे माथें सेवा पधरावो तो भलो हे ॥ तब कृष्णभट्टनें श्रीगुसाँईजीसों विनती करिकें उनके माथें सेवा पधराई ॥ तिन श्रीठाकुरजीकों श्रीगुसाँईजीनें अपनें श्रीहस्तसों सिंघासन पाट बेठारे ॥ तिनकी वो मावजीपटेल स्त्रीपुरुष स्नेहपूर्वक सेवा करनलागे ॥ सो वे सेवा भलीभाँतिसों करें ॥ ओर जो वे श्रीठाकुरजीकों समर्पे ॥ सो श्रीठाकुरजी आप अरोगें ॥ ओर जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको उत्सव आवतो ॥ सो वे भलीभाँतिसों करते ॥ तब श्रीआचार्यजीके सेवक जितनें दस बीस कोसपे रहते ॥ ति-

तेनेंनकों आमंत्रण करिकें वे भलीभाँतिसों प्रसाद लिवावते ॥ ओसें वो बोहोत भलीभाँतिसों श्रीठाकुरजीकी सेवा करें ॥ ओर कृष्णभट्ट आदि देकें सब वैष्णवनके उपर बडो प्रेम राखते ॥ तातें सब कोउ विनपे प्रसन्न रहते ॥ ❀ (प्रसंग २ रो) ❀ ॥ एकसमें उत्सवके दिन वैष्णव सब महाप्रसाद लेवेकों बेठे हते ॥ तब वो विरजो विन वैष्णवनकों अनसखडी प्रसाद परोसत हती ॥ तासमें वा विरजोनें कृष्णभट्टसों विनती कीनीं ॥ जो मेरो एसो मनोरथ हे ॥ जो वैष्णवमंडली सब प्रसाद लेवे बेठी होय ॥ ओर में सखडी महाप्रसाद परोसों ॥ सो सुनिकें विन कृष्णभट्टनें कह्यो ॥ जो सो तो भक्ति भावसों होय ॥ परि यह द्रव्यसाध्य हे ॥ तब वा विरजोनें पूछ्यो ॥ जो महाराज द्रव्यसाध्य हे ॥ ताको अर्थ मोसों समुझायकें कहो ॥ तब विन कृष्णभट्टनें कह्यो ॥ जो यह वैष्णव मंडली लेकें श्रीगोकुल श्रीगुसाँईजीके दर्शनकों जैये ॥ तहाँ श्रीगुसाँईजीकी आज्ञा होय सो करिये ॥ तब सखडी महाप्रसाद लियो जाय ॥ तातें यह तो द्रव्यसाध्य बात हे ॥ जो मार्गमें सब खर्च होय ॥ तब वा विरजोनें अपने पति मावजीपटेलसों कह्यो ॥ जो मेरो यह मनोरथ हे ॥ सो तुमकों पूरो कर्यो चहिये ॥ तब विन पटेलनें कह्यो ॥ जो मेरे पास द्वेलक्ष रुपैया हें ॥ इतनेंसों कॉम होय तो सुखेन करो ॥ तब विन कृष्णभट्टनें कह्यो ॥ जो इतनेंनसों तो कॉम अवश्य होयगो ॥ तातें आपुन श्रीगुसाँईजीके पास चलिये ॥ सो जेसी आप आज्ञा देई तेसो करिये ॥ तब मावजीपटेलने चलवेकी सब तैयारी करिकें गॉठिमें जितनों द्रव्य हतो ॥ सो सब लेकें उज्जेनतें चले ॥ तब मार्गमेंतें कृष्णभट्टनें वैष्णवनकों इकठोरे करिकें सब मिलिकें श्रीगोकुलनाथजीके दर्शनकों श्रीगोकुल आये ॥ तब श्रीगुसाँईजीको दर्शन कियो ॥ पाछें कृष्णभट्टनें

श्रीगुसाँईजीसों विनती कीनीं ॥ जो महाराज विरजोको एसो मनोरथ हे ॥ जो सखडी महाप्रसाद वैष्णवनकों अपनें हाथसों लिवाऊँ ॥ तातें मार्गमें बडो खर्च करिकें वे आपके पास आये हें ॥ तब श्रीगुसाँईजीनें कह्यो ॥ जो यह मनोरथ तो पुरुषोत्तमक्षेत्र विनाँ पूर्ण न होयगो ॥ तब आपसों विदा होयकें वे सब वैष्णवमंडली लेकें वो विरजो श्रीजगंनाथरायजीके दर्शनकों चली ॥ सो तहाँ जाय पोंहोंचे ॥ तब सबननें श्रीजगंनाथरायजीके दर्शन किये ॥ पाछें जो विनको मनोरथ हतो ॥ सो नाँनाँप्रकारकी सामुग्री करवायकें श्रीजगन्नाथरायजीकों भोग समर्प्यो ॥ पाछें वह महाप्रसाद सखडी अनसखडी सब वा विरजोनें अपनें हाथतें सब वैष्णवनकों परोसिकें लिवायो ॥ पाछें कछूक दिनताँई वहाँ रहिकें ॥ वो विरजो अपनें मनोरथ पूर्ण करिकें पाछी वैष्णवनकी मंडली सहित श्रीगोकुल आयि ॥ तहाँ श्रीगुसाँईजीको दर्शन करिकें दंडवत कियो ॥ पाछें श्रीजगदीशमें जो वात करी सो सब आपके आगें कही ॥ पाछें अपनें संगको जो द्रव्य वच्यो हतो ॥ सो सब विननें आपकों भेट करि दीनों ॥ तब आप वा विरजोको भाव देखिकें श्रीगुसाँईजी वाके उपर बोहोत प्रसन्न भये ॥ पाछें सब वैष्णवनकों महा प्रसाद लिवायो ॥ पाछें वो विरजो तथा सब वैष्णव श्रीगुसाँईजीके साथही श्रीगोवर्द्धन आये ॥ तहाँ श्रीनाथजीको दर्शन कियो ॥ पाछें सब वैष्णव तथा विरजो श्रीनाथजीतें तथा श्रीगुसाँईजीतें विदा होयकें अपनें देसकों गये ॥ तापाछें वह विरजो वर्षदिनमें दोयवेर श्रीगोकुल आवती ॥ तब गाडा एक गुडको तथा गाडा एक घृतको भरिकें लावती ॥ तब एक महिनाँलों रहती ॥ सो पंद्रहदिन श्रीगोकुलमें तथा पंद्रहदिन श्रीगिरिराजके श्रीनाथद्वार रहती ॥ तब जो सामुग्री करिकें

वह भोग धरती सो सब सरायकें ढाँकि राखती ॥ सो जब श्रीनाथजीकी गायनके ग्वाल खिरकमें आवते ॥ तब सबनकों वो महाप्रसाद बूरा भात घृत चुपरिकें तहाँ जाय लिवावती ॥ ओर जब वो पाछी फिरती तब दोऊओर सब सेवकनको बेठारिकें पहरावनीं पहरावती ॥ तातें आप श्रीगुसाँईजी विरजोके उपर बोहोत प्रसन्न रहते ॥ ओर श्रीनाथजीके भीतरिया ओर सब सेवकहू वा विरजोके उपर बोहोत ही प्रसन्न रहते ॥ सो वह एसी परम भगवदीय हीं ॥ सो विन पद्मारावल ओर कृष्णभट्टके संगतें वे स्त्रिपुरुष दोनों भले भगवदीय भये ॥ तातें संग करनों ॥ सो तादृशी वैष्णवकोही करनों ॥ सो वे मावजीपटेल ओर विरजो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके एसे कृपापात्र भगवदीय हते ॥ तातें इनकी अनिर्वचनीय वार्ता कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णव ८६ मो ॥

❀ (वार्ता ८७ मी. वैष्णव ८७ मो.) ❀

❀ (अथ गोपालदास नरोडाके क्षत्रीय तिनकी वार्ता) ❀

विन गोपालदासकों श्रीआचार्यजीनें आज्ञा दीनीं हती ॥ जो तुमारे पास नाँम लेंनकों आवें तिनकों तुम नाँम दीजियो॥ तातें वे गोपालदास सबनकों नाँम सुनावते ॥ सो एकसमें आप श्रीआचार्यजी नरोडामें विन गोपालदासके घर पाँऊँ धारे ॥ तब वे स्वव्रत्तीकों गये हते ॥ तातें घर न हते ॥ परि वाके बेटा घर हते ॥ तब आपनें विन लरिकानतें पूछ्यो ॥ जो गोपालदास कहाँ गये हें ॥ तब विननें कह्यो ॥ जो वे तो कछू श्रीठाकुरजीके काँम काजकों गये हें ॥ यह सुनिकें आपको चित्त अति अप्रसन्न भयो ॥ तब आपनें मनमें बिचाऱ्यो ॥ जो गोपालदासके बेटा एसें बोलत हें ॥ तातें यहाँ रेहेनों उचित नाहीं ॥ तब फेरि आपनें विचाऱ्यो ॥ जो जहाँताँईं गोपालदास आवें तहाँताँईं ठेहेरियें ॥ देखियें जो वे केसें बोलत हें ॥ तापाछें गोपालदास

आये ॥ तिननें आपकों देखतेंहीं अति प्रसन्न होयकें दंडवतप्रणाम कियो ॥ तब आपनें पूछ्यो ॥ जो गोपालदास तुम कहाँ गये हे ॥ तब वानें कह्यो ॥ जो महाराज पेट लग्यो हे ॥ तातें व्याव्रतिकों गयो हतो ॥ यह सुनिकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप बोहोत प्रसन्न भये ओर कह्यो ॥ जो यह वैष्णवके लक्षण हें॥ जो व्याव्रतिमें श्रीठाकुरजीको नाँम न लेहि ॥ ❀ (प्रसंग २ रो) ❀ ॥ एकवार वे गोपालदासजी श्रीनाथजीके दर्शनकों आये ॥ तब साथ सेवक हतो ॥ तब तहाँ विन गोपालदासजीकों ज्वर आयो ॥ तातें लंघन द्वेचारि किये ॥ सो रात्रिकों तृषा लागी ॥ तब विननें अपनें सेवकके पासतें जल माँग्यो ॥ सो वो सेवक तो सोयगयो हतो ॥ तातें वानें सुन्यो नाहीं ॥ तब श्रीनाथजी आप अपनें जलपाँनकी झारी लेकें ॥ विनके पास पधारे ॥ सो आपनें गोपालदासकों जल पिवायो ॥ ओर झारी वहाँही धरि आये ॥ आपको हृदय अत्यंत कोमल तातें अपनें भक्तकी आर्ति सहि सके नाहीं ॥ ❀ (प्रसंग ३ रो) ❀ ॥ एकसमें विन गोपालदासनें विरह करिकें चोखरा कियो हो ॥ सो चोखरा ॥ (केकी शीखंडी श्यामघन कंट मनोहर हार ॥ धन्य ते दिन जेंणें देखिशूँनयणं नंदकुमार ॥) एसे विननें अनेक चोखरा किये हें ॥ ❀ (प्रसंग ४ थो) ❀ ॥ एकसमें श्रीगुसाँईजी आप नरोडा पधारे ॥ तब आपनें वा गाँम बाहिर डेरा कियो हतो ॥ तातें जब वे गोपालदास आपके पास उत्थापनके दर्शनके समें गये॥ तासमें तहाँ द्वे वैष्णव आये हते ॥ तिननें विनतें कह्यो ॥ जो हमकों श्रीगुसाँईजी पासतें नाँम दिवावो ॥ तब गोपालदासनें विनसों कह्यो ॥ जो हम नाँम देतहें ॥ तातें तुमकों घर जायकें नाँम देइंगे ॥ परि विन वैष्णवनको तो मन श्रीगुसाँईजीके पासतें नाँम पाइवेको हतो ॥ तातें तीनवार विननें

गोपालदाससों कह्यो ॥ जो हमकों तो श्रीगुसॉइजी पासतें नॉम निवेदन करवावो ॥ तव तिननें तीन्योंवार कह्यो ॥ जो घर जायकें तुमकों हम नॉम देंइंगे ॥ सो यह वात श्रीगुसॉईजीनें अपनें काननसों सुनीं ॥ तव आपनें उन वैष्णवनसों पूछ्यो ॥ जो तुम कहा कहत हो ॥ तव उन वैष्णवननें विनती करी ॥ जो महाराज हम नॉम निवेदनकी कहत हें ॥ तव आपनें अवश्य कहिकें विनकों नॉम सुनायो ॥ पाछें विन गोपालदाससों आपनें क्षोभ करिकें कह्यो ॥ जो गोपालदास तुमारो अंगीकार श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें कियो हे ॥ सो तो द्रढ भयो ॥ परि जिननें तुमारे पासतें नॉम पायो हे ॥ सो वे हमारे कवहूं न होंइगे ॥ तापाछें जिननकों गोपालदासनें नॉम दियो हतो ॥ तिन सवननें फिरिकें श्रीगुसॉईजीके पासतें नॉम निवेदन करवायो ॥ तव वे कृतार्थ भये ॥ ओर जो कोऊ विन गोपालदासके सेवक रहिगये सो ॥ वे पंक्ति तें न्यारे भये ॥ तिनसों आप श्रीगुसॉईजी गंगोज करिकें कहते ॥ विन गोपालदासनें अभिमॉनतें स्वामित्व लियो ॥ तातें उन जीवनको अकाज भयो ॥ परि वे गोपालदास श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके कृपापात्र भगवदीय हते ॥ जिनसों श्रीनाथजी सानुभव हते ॥ परि स्वामित्व लियेतें कछुक जीवनको विनतें अकाज भयो ॥ तातें भगवदीय कोंतो दीनतामेंहीं सदा रहनों ॥ सो विन गोपालदासकी वार्ता एसी हे ॥ सो कहॉतांइं लिखिये ॥ वैष्णव ८७ मो ॥ ❀ ॥ ॥ ७ ॥

इति श्रीआचार्यजीमहाप्रभु श्रीवल्लभाचार्यजी के परम कृपापात्र भगवदीय अंतरंग सेवक ८४ वैष्णव तथा तिनमेंके कुटुंव ३ की मिलिकें ८७ वैष्णवनकी वार्ता समाप्त भई ॥

॥ श्रीकृष्णायनमः ॥

अथ सूरदासजीकृत

श्रीकृष्णचंद्रकी जन्मपत्रिकाको पद.

॥ पद राग आसावरी ॥

नंदजु मेरे मन आँनंद भयो, में सुनि मथुरातें आयो ॥ लग्न शोधि ज्योतिषको गिनिकर चाहत तुह्मे सुनायो ॥ १ ॥ संवत्सर ईश्वरको भादों नाँमजु कृष्ण धर्यो हे ॥ रोहिणी बुध आठें अँधियारी हर्षन योग पर्यो हे ॥ २ ॥ वृष हे लग्न उच्चके उडपति तनकूँ अति सुखकारि ॥ दल चतुरंग चले संग इनके व्हेंहें रसिक विहारि ॥ ३ ॥ चोथी राशि सिंहके दिनमणि महीमंडलकों जीतें ॥ करिहें नाश कंस मातुलको निश्चें कछूदिन बीतें ॥ ४ ॥ पंचम बुध कन्याके शोभित पुत्र वढेंगे सोइ ॥ शष्टम शुक्र तुलाके शनियुत शत्रु बचे नाहिं कोई ॥ ५ ॥ नीच उँच युवती बहु भोगें सप्तम राहु पर्यो हे ॥ केतु सुरतिमें श्याम वरण चोरीमें चित्त धर्यो हे ॥ ६ ॥ भाग्यभवनमें मकर महीसुत अति ऐश्वर्य वढेगो ॥ द्विज गुरु जनको भक्त होयकें काँमिनिं चित्त हरेगो ॥ ७ ॥ नवनिधि जाके नाभि वसतहें मीन वृहस्पति केरी ॥ पृथ्वि भार उतारे निश्चें यह माँनों तुम मेरी ॥ ८ ॥ तवहिं नंद महरि आनंदे गर्ग पूजि पहरायो ॥ अशन वसन गज वाजि धेनु धन भूरि भंडार लुटायो ॥ ९ ॥ वंदिजन द्वारें यश गावें जो जाच्यो सो पायो ॥ व्रजमें कृष्ण जन्मको उत्सव सूरविमल यश गायो ॥ १० ॥

३
१
४
चं.के.२
बृ. १२
सू. ५
११
बु. ६
रा. ८
मं. १०
शु.श.७
९
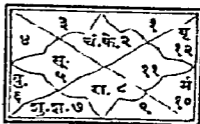
इति सूरसागरोक्त श्रीकृष्णजन्मपत्रिका समाप्त.

अथ प्रसिद्ध पदकर्ता भजनाँनंदी परम भगवदीय अष्टसखाकीवार्ता

जिर्णदुर्ग (जूनाँगढ) स्थ गोस्वामी श्रीव्रजवल्लभजी (मगनलालजी) महाराज कृत अष्टसखानके नाँमनको दोहा

कृष्ण जु कुंभनदास हें, सूर हि परमानंद;
नंद चतुर्भुजदास जू, छीतस्वामी, गोविंद ॥ १ ॥

इनमेंके श्रीआचार्यजीमहाप्रभु (श्रीवल्लभाचार्यजी) के मुख्य चार सखा महाकवी हते तिनकी वार्तानिको प्रारंभः

❀ ॥ (वार्ता १ ली- वैष्णवसखा १ लो) ॥ ❀

❀ (अथ श्रीसूरदासजी गौघाटपे रहते तिनकी वार्ता) ❀

एकसमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप अडेलतें व्रजकों पधारे ॥ सो केतकदिनमें आगरतें मथुराकों जात बीचमें गौघाट आये ॥ तहाँ आपनें डेरा कियो ॥ पाछें स्नान संध्या करि पाक करिवेकों बेठे ॥ ता समें आपके साथ सेवकनको समाज बोहोत हो ॥ सो वे सेवक हू अपनें अपनें श्रीठाकुरजीके लियें रसोई करन लागे ॥ सो वा गौघाटके उपर प्रज्ञाचक्षु (अंध) सूरदासजी करकें महा भगवदीय रहत हे ॥ तिनको स्थल हो ॥ सो वे सूरदासजी आप दूसरेनकों सेवक करते ॥ तातें विनकों सब सूरदास्वामी कहते ॥ वे बडे भगवद्भक्त ओर कवि हते ॥ सो गायन बोहोतही आछो करते ॥ जासमें श्रीआचार्यजी आप वा गौघाट उपर उतरे तिनकों देखिकें ॥ ता समें विन सूरदासजीके सेवकनें श्रीआचार्यजीके सेवकनतें पूछी ॥ जो आप कोंन हें ॥ तब विननें नाँम बतायो सो सुनिकें ॥ वानें सूरदासजीतें जाय कह्यो ॥ जो यहाँ श्रीआचार्यजीमहाप्रभु पधारे हें ॥

जिननें दक्षिणमें दिग्विजय करिकें सब पंडितकों जीते हें ॥ ओर मायावादको खंडन करि भक्तिमार्गको स्थापन किये हें ॥ सो सुनिकें विन सूरदासजीनें अपनें सेवकनकों कह्यों ॥ जो तूम जायकें वहाँ दूरि बेठि रहो ॥ सो जब श्रीआचार्यजी आप भोजन करिके विराजे ॥ तब मोतें खबरि करियो ॥ तब हम विनके दर्शननकों जाँयँगे ॥ तब विन सूरदासजीकों एक सेवक वहाँ गोंघाट उपर आयकें तनक दूरि बेठि रह्यो ॥ तब श्रीआचार्यजी आप पाक सिद्ध करिकें श्रीठाकुरजीकों भोग समर्पिकें समयानुसार सराय भोजन करिकें बीडी अरोगत गादी उपर आय विराजे ॥ तबताँई आपके सेवक हू सब पहुँचिकें आयकें आपके पास अपनें अपनें ठिकॉनें जाय बेठे ॥ तब विन सूरदासजीको सेवक आय बेठ्यो हतो ॥ तानें श्रीआचार्यजीकों विराजे देखिकें जाय सूरदासजीतें कह्यो ॥ जो स्वामीजी अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप पोहोंचिकें गादीउपर विराजे हें ॥ सो सुनिकें तब सूरदासजी अपनें स्थलतें एक सेवककों संग लेकें श्रीआचार्यजीके दर्शनकों आये ॥ तब आयकें आपकों दंडवत कियो ॥ तब आप श्रीआचार्यजी विनकों देखिकें बडे प्रसंन भये ॥ और आदर दे बेठारे ॥ पाछें आपनें कह्यो ॥ जो सूरदासजी प्रसंन हो ॥ तब विननें कह्यो ॥ जो मेरे बडे भाग्य जो आज आपके दर्शन भये ॥ तब आपनें कह्यो ॥ जो सूरदासजी कछू भगवदयश वर्णन करो ॥ तब सूरदासजी कहें ॥ जो आज्ञा ॥ एसें कहिकें ता समे सूरदासजीने आपके आगें गाये सो पद ॥ ॥ ❀ (पद १ लो. राग धनाश्री) ❀ ॥ हों हरि सब पतितनको नायक ॥ को करीसके बराबरि मेरी इते माँनलो लायक ॥ १ ॥ जो तुम अजामेल सों कीनीं सो पॉती लिख पाऊँ ॥ होइ विश्वास भलो जिय अपनें ओरों पतित बुलाऊँ ॥

॥ २ ॥ सिमिटि जहाँ तहाँ तें सब कोऊ आइ जुरे इकठोर ॥ अबकें इतनें आँनि मिलाऊँ बेर दुसरी ओर ॥ ३ ॥ होय होडी मन हुलास करि करे पाप भरि पेट ॥ सबहिनि ले पाइन तर पारों इहे हमारी भेट ॥ ४ ॥ एसी कितिक बनाऊँ प्राणपति सुमिरन हे भयो आडो ॥ अबकी बेर निबेर लेहु प्रभु सूर पतितको टाँडो ॥ ५ ॥ ❀ (पद २ रो. राग धनाश्री) ❀ ॥ प्रभु हों सब पतितनको टीको ॥ ओर पतित सब द्योस चारिके ॥ हों तो जन्मतहींको ॥ १ ॥ बधिक अजामिल गणिका तारी ओर पूतनाँहींकों ॥ मोहि छाँडि तुम ओर उधारे मिटे शूल केसे जीको ॥ २ ॥ कोऊ न समर्थ शुद्ध करनकों खेंचि कहत हों लीको ॥ मरियत लाज सूर पतितनमें कहत सबनमें नींको ॥ ३ ॥ ❀ ॥ जब ये दोय पद सूरदासजीनें श्रीआचार्यजीके आगें गाये ॥ सो सुनिकें आपनें कह्यो ॥ जो सूरदासजी कछू भगवदलीला वर्णन करो ॥ तब विननें कह्यो ॥ जो महाराज हों तो कछू समूझत नाहीं ॥ तब आपनें कह्यो ॥ जो तुम श्रीयमुनाजीमें स्नान करि आवो ॥ हम तुमकूँ समुझावेंगें ॥ तब सूरदासजी श्रीयमुनाजीके तीर आय ॥ स्नान करिकें अपरसहीमें पाछे आय आपके आगें ढाढे भये ॥ तब आपनें कह्यो ॥ जो सूरदासजी आगें आय वेठो ॥ तब सूरदासजी श्रीआचार्यजीके आगें आय बेठे ॥ तब आपनें प्रथमतो विनकों नाँम सुनायो ॥ तापाछें समर्पण करवायो ॥ पाछें श्रीभागवतके दसमस्कंधकी अनुक्रमणिका विनकों कही ॥ ओर आपनें जो नाँम सुनायो तातें तो विनके सकल दोष दूरि भये ॥ ओर श्रीभागवतदसमस्कंधानुक्रमणिका श्रवणतें दास्यपर्यंतकीं सात भक्ति विनकों प्राप्त भईं ॥ ओर जो आपनें निवेदन करवायो ॥ तातें श्रीनाथजीनें विनको अंगीकार कियो ॥ ओर सख्य आत्मनिवेदन ये दोय भक्ति प्राप्त

भई ॥ तातें विन सूरदासजीकों तुरंत नवधाभक्ति हीं सिद्ध भई ॥ ओर जो दसमकी अनुक्रमणिका आपनें कहीं ॥ तातें प्रेमलक्षणाभक्ति युक्त संपूर्ण भगवदलीला विन सूरदासजीके हृदयमें उपस्थित भई ॥ तातें विननें श्रीभगवदलीलाको वर्णन कियो ॥ ता समें प्रथम श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनें दसमकी सुबोधिनीजीके मंगलाचरणके कारिकाको प्रथम श्लोक कह्यो ॥ सो श्लोक ॥ (नमामि हृदयेशेषे लीलाक्षीराब्धिशायनं ॥ लक्ष्मीसहस्रलीलाभिः सेव्यमानं कलानिधिम् ॥ १ ॥) तव यह मंगलाचरणके अनुसार ॥ सूरदासजीनें वाहीसमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके संनिधाँन एक पद करिकें गायो ॥ सो पद ॥ ❀ (पद ३ रो. राग विलावल) ❀॥ चकईरी चलि चरन सरोवर जहाँ न प्रेम वियोग ॥ तहाँ भ्रम निशा होत्त नहीं कवहूँ वे सायर सुख जोग ॥ १ ॥ तनकसे हंस मीन सव मुनिजन नख रवि प्रभा प्रकाश ॥ प्रफुलित कमल निमेप न शशि डरँ गुंजत निगम सुवास ॥ २ ॥ जिहिं सर सुभग मुक्ति मुक्ताफल सुकृत विमल जल पीजें ॥ सो सर छाँडि कुबुद्धि विहंगम यहाँ कहा रहि कीजे ॥ ३ ॥ तहाँ श्री सहस्र सहित नित क्रीडत शोभित सूरज दास ॥ अव न सुहाय विपय रसछिल्लर वा समुद्रकी आस ॥ ४ ॥ ❀ ॥ सो यह पद दसमके मंगलचरणकी कारिकाके अनुसार सूरदासजीनें कियो ॥ जेसें मंगलाचरणकी कारिकामें कह्यो हे ॥ जो (लक्ष्मीसहस्रलीलाभिः ॥ सेव्यमानं कलानिधिं) तेसें सूरदासजीनें या पदमेंहू कह्यो हे ॥ (तहाँ श्री सहस्र सहित नित क्रीडत शोभित सूरज दास) ॥ सो जव विन सुरदासजीनें याभाँतिसों पद किये ॥ तव जाँनिपडी ॥ जो संपूर्ण सुबोधिनीं सूरदासजीकों स्फुरी ॥ तव श्रीआचार्यजीमहाप्रभु बोहोत प्रसंन्न भये ॥ ओर जाँने ॥ जो अनयाकों लीलाको अभ्यास

भयो ॥ तापाछें सूरदासजीनें नंदमहोत्सवको वर्णन कियो ॥ सो पद ॥ ❀ (पद ४ थो. राग देवगंधार) ❀ ॥ ब्रज भयो महरिकें पूत जब यह बात सुनी ॥ सो यह पद संपूर्ण करिकें श्रीआचार्यजीकों गाय सुनायो ॥ सो सुनिकें आप बोहोत प्रसन्न भये ॥ ओर श्रीमुखतें कह्यो ॥ जो श्रीकृष्णजन्म समें मॉनों सूरदासजी निकटही हते ॥ पाछें विन सूरदासजीनें जो अपनें सेवक किये हते ॥ तिन सबनकों श्रीआचार्यजी पास नॉम दिवायो ॥ तापाछें विन सूरदासजीनें बोहोत पद किये ॥ तामें संपूर्ण भगवदलीलाको वर्णन कियो ॥ पाछे श्रीआचार्यजीनें विन सूरदासजीकों पुरुषोत्तमसहस्रनॉम कह्यो ॥ तब तो सूरदासजीकों संपूर्ण श्रीभागवतकी स्फुर्ति भई ॥ तापाछें विननें जो पद किये ॥ सो श्रीभागवतके अर्थानुसार प्रथमस्कंधतें लेकें द्वादशस्कंध पर्यंत पद किये ॥ तातें वे सूरदासजी श्रीआचार्यजीकी कृपातें वडे भारी भगवदीय भये ॥ पाछें आप श्रीआचार्यजी वा गौघाटपे दिन दोय तीन रहे ॥ फेरि ब्रजकों पाउँ धारे ॥ तब वे सूरदासजीहू आपके साथ ब्रजकों आये ॥ ❀ (प्रसंग २ रो) ❀ ॥ तब जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप ब्रजकों पधारे ॥ सो प्रथम श्रीगोकुल आये ॥ तब सूरदासजीहू श्रीगोकुल आये ॥ तब आपनें विनसों कह्यो ॥ जो सूरदासजी श्रीगोकुलके दर्शन करो॥ तब वीननें श्रीगोकुलकों दडंवत कियो ॥ सो ता समें दंडवत करतमात्रही विनकों श्रीगोकुलकी समस्त बाललीला हृदेमें स्फुरि ॥ श्रीआचार्यजी आपनें तो प्रथमहीं विनके हृदेमें सकल भगवदलीला भागवत सुनायकें स्थापी हीं ॥ परंतु श्रीगोकुलके दर्शन करत मात्र हीं वो लीला स्फुरद्रुप होय आई ॥ तब विन सूरदासजीनें विचाऱ्यो ॥ जो कछूक श्रीगोकुलकी बाललीलाकों वर्णन करिकें आप श्रीआचार्यजीकों सुनाऊँ ॥ तातें विननें

अपनें मनमें विचार कियो ॥ जो आपकों वाललीलाके स्वरूपनमेतें श्रीनवनीतप्रियजीके उपर वडी आसक्ति हे ॥ तातें श्रीनवनीतप्रीयजीको पद करिकें सुनाईये ॥ क्यों जो जन्म लीलाको तो पद प्रथम करिकें सुनायोही हे ॥ पाछें श्रीगोकुलकी वाललीलाको श्रीनवनीतप्रियजीको पद वाहीसमें नयो करिकें सूरदासजीनें आपकों सुनायो सो पद ॥ ❀ (पद ५ मो. राग विलावल) ❀॥ शोभित कर नवनीत लियें ॥ घुटुरुन चलत रेणु तन मंडित ॥ मुख दधि लेप कियें ॥ १ ॥ चारु कपोल लोल लोचन छवि गोरोचन तिलक दियें ॥ लटकत मॉनों मत्त मधुप गण मादक मधुहीं पियें ॥ २ ॥ कठुला कंठ वज्र केहरिनख राजत रुचिर हियें ॥ धॅन्य सूर एको पल यह सुख कहा शत कल्प जियें ॥ ३ ॥ ❀ ॥ सो जव यह पद सूरदासजीनें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों गाय सुनायो ॥ तव सुनिकें आप वोहोतही प्रसंन भये ॥ तापाछें ओरहू वाललीलाके अनेक पद सूरदासजीनें आपकों सुनाये ॥ तव आपनें विचार्यो ॥ जो श्रीनाथजीके यहॉं ओरतो सव सेवाको मंडान भयो हे ॥ परि कीर्तनसेवाको मंडान नाहीं भयो ॥ सो सेवा इन सूरदासजीकों दीजिये ॥ पाछें आप श्रीआचार्यजी विन सूरदासजीकों संग लेकेंहीं श्रीगोवर्धननाथजीके दर्शनकों श्रीगिरिराजकों पधारे ॥ सो श्रीनाथजीद्वार पोंहोंचे ॥ तव आपतो स्नान करिकें मंदिरमें पधारे ॥ तव सूरदासजीसों कह्यो ॥ जो सूरदासजी श्रीनाथजीके दर्शन करो ॥ तव विननें मंदिरमें जाय श्रीनाथजीके दर्शन किये ॥ तव श्रीनाथजीके सन्निधॉन श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनें विन सूरदासजीसों कह्यो ॥ जो सूरदासजी अव कछू श्रीनाथजीकों सुनावो ॥ तव विननें प्रथमतो विज्ञप्तिके पद करिकें गाये सो पद ॥ ❀ (पद ६ ठो. राग धनाश्री) ❀ ॥ अव हों नॉच्यो वोहोत

गोपाल ॥ काँम क्रोधको पहरि चोलनाँ कंठ विषयकी माल ॥ १ ॥ महा मोहके नूपुर बाजत निंदा शब्द रसाल ॥ भ्रम भोंय मन भयो पखावज उड्डप हंसगति चाल ॥ २ ॥ तृष्णा नाद करत घट भीतर नाँनाँ विधिके ताल ॥ मायाको कटि फेंटा बाँध्यो लोभ तिलक दियो भाल ॥ ३ ॥ कोटिक कला काछि दिखराई जल थल सुधि नहीं काल ॥ सूरदासकी सबें अविद्या दूरि करहुँ नंद लाल ॥ ४ ॥ ❀ ॥ यह पद गाय सुनायो ॥ सो सुनिकें श्रीआचार्यजीनें कह्यो ॥ जो सूरदासजी अवतो तुह्मारेमें कछू अविद्या रही नाहीं ॥ तुह्मारी अविद्या तो प्रभुननें प्रथमहीं दूरि किये हें ॥ तातें कछू भगवदयश वर्णन करो ॥ तब सुरदासजीनें माहात्म्य अरु लीला एसों मिश्रित पद करिकें सुनायो सो पद ॥ ❀ (पद ७ मो. राग गोडी) ❀ ॥ कोंन सुकृत इन व्रजवासीनको वदत विरंचि शिव शेष ॥ श्रीहरि जिनके हेत प्रगटे मानुष वेष ॥ ध्रु० ॥ ज्योतिरुप जगधाँम जगतगुरु जगतपिता जगदीश ॥ योग यज्ञ जप तप व्रत दुर्लभ सो ग्रह श्रीगोकुलईश ॥ १ ॥ जाके उदर लोकत्रय जल थल पंचतत्व चोखाँन ॥ बालक व्हे झूलत व्रज पलनाँ यशुमति भवननिधाँन ॥ २ ॥ इक इक रोंम विराट कोटि सम अनंतकोटि ब्रह्मांड ॥ ताहि उछंग लियें मात यशोदा अपनें निज भुजदंड ॥ ३ ॥ रवि शशि कोटिकला भवलोचन त्रिविध तिमिर भजि जात ॥ अंजन देत हेत सुतके चक्षु लेकर काजर मात ॥ ४ ॥ क्षिति मिति त्रिपद करी करुणामय बली छलि दियो हे पतार ॥ देहरी उलंघि शक्त नहीं सो प्रभु खेलत नंदजूके द्वार ॥ ५ ॥ अनुदिन श्रवत सुधारस पंचम चिंतामणि श्री घेनुँ ॥ सो तजि यशुमतिको पय पीवत भक्तनकों सुख देनुँ ॥ ६ ॥ वेद वेदांत उपनिषद पटरस अर्पत भुगतें नाहिं ॥ सो हरि ग्वाल बाल मंडलमें हसि हसि

जूँन खाहिं ॥ ७ ॥ कमलानायक वेकुंठ दायक दुःख सुख जिनके हाथ ॥ काँधें कमरि लकुट नग्नपद विहरत वन वछ साथ ॥ ८ ॥ करण हरण प्रभु दाता भुक्ता विश्वंभर जग जाँनि ॥ ताहि लगाई माँखनकी चोरी वाँध्यो नंदजूकि राँनि ॥९॥ वकी वकासुर शकट तृणावर्त अघ धेनुक व्रप भास ॥ कंस केशीकों यह गति दीनीं राखे चरणकि पास ॥ १० ॥ भक्तवत्सल हरि पतित उधारण रहे सकल भरिपूर ॥ मारग रोकि पर्‍यो हरि द्वारें पतित शिरोमणी सूर ॥ ११ ॥ ❀ ॥ यह पद गाय सुनायो ॥ सो सुनिकें श्रीआचार्यजी आप गदगद कंठ होय वोहोत प्रसंन भये ॥ सो जेसो आपनें मार्ग प्रकाश कियो ताके अनुसार सूरदासजीनें पद किये ॥ श्रीआचार्यजीके मार्गको तो यह स्वरूप हे ॥ जो माहात्म्य ज्ञान पूर्वक श्रीठाकुरजीसे सुदृढ सर्वसे अधिक स्नेह करनो ओर स्नेहके आगें भगवाँनको माहात्म्य रहत नाँहीं ॥ तातें श्रीभगवाँन वेर वेर अपनें भक्तनकों अपनो माहात्म्य दिखावत हें ॥ तामें व्रजभक्तनके स्नेहकीतो परमकाष्ठा हे ॥ सो नाँम प्रकरणमें पूतनाँ, शकट, तृणावर्त्त, गर्गाचार्य, यमलार्ज्जुन, वक, धेनुक, काली, दावानल, गोवर्द्धन, वरुणलोक, वेकुंठदर्शन, करि एसी एसी लीला करि करिकें भगवाँननें वोहोत माहात्म्य दिखायो ॥ परि इन व्रजभक्तनको स्नेह परमकाष्ठापन्न हे ॥ तातें ताही समें तो माहात्म्य रहे ॥ परि पाछें तो विस्मृति होय जाय ॥ परि माहात्म्यकी विस्मृति होय ॥ सो भगवाँनकों न सुहाय ॥ काहेतें ॥ जो केवल स्नेहतो लोकिकमें अपनें पति पुत्रादिक-विषे हि होत हे ॥ परि माहात्म्य ज्ञान विनाँ अतिक्रमसे अपराध होय ॥ जेसें मातृचरण भगवाँनकों वाँधे ॥ ओर भगवाँन तो एककार्यमें अनेक लीला करतहें ॥ तातें भगवाँनकों माहात्म्य ज्ञान पूर्वक स्नेह वोहोत प्रियहे ॥ एसो भक्तिमार्गको सिध्दांत हे ॥ सो सूरदास

जीनें या पदमें वर्णन कियो ॥ तातें आप श्रीआचार्यजीमहाप्रभु बोहोत प्रसन्न भये ॥ पाछें सूरदासजीनें सहस्रावधी पद करिकें श्रीनाथजीकों सुनाये ॥ सो वे सूरदासजी एसे परम कृपापात्र भगवदीय हते ॥ ❀ (प्रसंग ३ रो.) ❀ ॥ एक समें सूरदासजी मार्गमें जात हते ॥ ता मार्गमें कोऊ चोपड खेलत हते ॥ सो वो चोपडके खेलमें एसे लीन हते ॥ जो कोऊ आवत जावतकी सुधि न रहे ॥ सो देखिकें सूरदासजीकों वडो खेद भयो ॥ जो देखो ये अपनों जमारो वृथा खोवत हें ॥ तातें अपनें संगजो भगवदीय हते तिनसों सूरदासजीनें कह्यो ॥ जो देखो प्राँणी अपनो जन्म केसो वृथा खोवत हें ॥ भगवाँननें तो कृपा करिकें एसी उत्तम मनुष्यदेह अपनीं सेवा भजनके लियें दीनीं ॥ सो इननें या हाड कूटिवेमें लगाई हे ॥ सो यामें न या लोककी सिद्धि ओर न परलोककी सिद्धि ॥ यातें या लोकमें तो अपयश ओर परलोकमें भगवाँनतें वहिर्मुखता ॥ तातें श्रीठाकुरजीनें जिनकों मनुष्यदेह दीनीं हे ॥ तिनकों तो चोपड एसी खेली चाहिये ॥ ता विषयको एक पद ताहीं समें करिकें सूरदासजीनें अपनें संगके वैष्णवनकों सुनायो सो पद ॥ ❀ (पद ८ मो. राग केदारो) ❀ ॥ मन तूँ समुझ सोच विचारि ॥ भक्ति विन भगवंत दुर्लभ कहत निगम पुकारि ॥ १ ॥ साधुसंगति डारि पासा फेरि रसनाँ सार ॥ दाव अवकें पर्‍यो पूरो उतरि पेहेलीपार ॥ २ ॥ वाक सत्रह सुनि अठारह पंचहींकों मारि ॥ दूरितें तजि तीनि काँनें चमकि चोक विचारि ॥ ३ ॥ काँम क्रोध मद लोभ भूल्यो ठग्यो ठगिनी नारि ॥ सूर हरिके पद भजन विन चल्यो दोऊकर झारि ॥ ४ ॥ ❀ ॥ या पदमें सूरदासजीनें अपनें संगके भगवदीयनसों यह जतायो ॥ जो मन, समुझ, सोच, विचार यह तीन्यों प्रकार चोपडमें चाहियें ॥ समझनाँम भले बुरेकी पेहेंचाँन ॥ सो जो न होय तो

साधु असाधू केसें पेहेचाँनेजाँय ॥ तातें समझ ये हे ॥ सोच नाँम चिंता ॥ सो जो भगवाँनके प्राप्तिकी चिंता न होय तो ॥ संसार उपर वैराग्य केसें आवें ॥ तातें सोच चहिये ॥ ओर विचार ॥ जो या जीवकों विचारही नहीं ॥ तो विद्या अविद्या कहा समुझे गो ॥ तातें विचार हू चहिये ॥ सो ये तीन्यो प्रकार होय तो भगवदीय होय ॥ तातें ये तीन्यों वस्तु भगवदीयकों परस्पर चहियें ॥ ओर चोपडमें हूँ यह तीन्यों वस्तु चहियें ॥ समुझ कहे ॥ जो गिननों न आवे तो गोट केसें चलें ॥ ओर सोच सो आगम ॥ जो मेरे यह दाव पडे तो यह गोट चलूँ ॥ विचार सो जो वाहीमें तन्मय ता ॥ जो यह तीन्यों होंय तो चोपड खेली जाय ॥ सो या पदको प्रगट अर्थ तो यह वतायो ॥ परि या पदमें अंतरलापिका हे ॥ ताको अर्थ वेदाँतपर हे ॥ सो यहाँ विस्तारके भयसुँ नहीं लिख्यो ॥ केवल लोकीक अर्थही दिखायो हे ॥ सो वे सूरदासजी एसे कृपापात्र हते ॥ ❀ (प्रसंग ४ थो) ❀ ॥ ओर सूरदासजीकों श्रीआचार्यजी आप सूरसागर कहते ॥ सो यातें जो इननें सहस्रावधि पद किये ॥ सो सव भक्तनमें प्रसिद्ध भये ॥ तापींछें सूरदासजीके पद कोउ ओर-के मुखतें देसाधिपतिनें सुने ॥ सो सुनिकें वानें यह विचार्यो जो काहू रीतिसों विन सूरदासजीसों मिलें ॥ सो भगवदइच्छासों वे एकसमें सूरदासजीसों मिले तव ॥ विनसों वा देशाधि-पतिनें कह्यो ॥ जो सूरदासजी मेंनें सुना हे ॥ जो तुमनें पद वोहोत अच्छे किये हें ॥ वास्ते कछू यश गाओ ॥ तव विननें देशा-धिपतिके आगें गायो सो पद ❀ ॥ (पद ९ मो. राग विलावल) ❀ ॥ मनाँ रे तूँ करि माधव सों प्रीति ॥ काँम क्रोध मद लोभ माया तूँ छाँडि सकल विपरीति ॥ ध्रुव० ॥ भ्रमरा भोगी वन भ्रमे रे मोद न माँने आपु ॥ सव सुमनन नीरस करें रे कमल

बँधावे आपु ॥ १ ॥ सुनि परमित पीय प्रेमकी रे चातक चितवे वारि ॥ घन आशा सब दुःख सहे रे अनत न जाचे वारि ॥ २ ॥ देखहु करनी कमलकी रे कीनों रविसों हेत ॥ प्राँन तजे प्रेम नॉ तजे रे सूख्यो सरहि समेत ॥ ३ ॥ दीपक पीर न जाँनही रे पावक परत पतंग ॥ तन तो तिंहिं ज्वाला जर्‍यो रे चित न भयो रस भंग ॥ ४ ॥ मींन वियोग न सहि सके रे नीर न पूछे वात ॥ देखिज्जु तूँ ताकी गति रे रति न घटीत न जात ॥ ५ ॥ परनिं परे वा प्रेमकी रे चित ले चढत अकाश ॥ तहाँ चढि ताहिज्जु देखहीं रे भोंपरि तजत उसास ॥ ६ ॥ सुमिरि स्नेह कुरंगको रे श्रवणनि राच्यो राग ॥ धरि न सक्यो पग पिछमनों रे सर सन्मुख उर लाग ॥ ७ ॥ देखि जरनि जड नारिकी रे जरति प्रेतके संग ॥ चिता न चित फीको भयो रे सो राची पियके रंग ॥ ८ ॥ लोक वेद वरजें सबें रे नेंनन देख्यो त्रासु ॥ चोर न जिय चोरी तजे रे अरु सब सहे विनासु ॥ ९ ॥ सब रसको रस प्रेम हे रे विषयी खेलें सार ॥ तन मन धन जोबन खस्यो रे तऊ न माँनी हार ॥ १० ॥ तें ज्जु रतन पायो भलो रे जाँन्यो साधन साज्जु ॥ प्रेम कथा अनुदिन सुँनी रे तऊ न उपजी लाज्जु ॥ ११ ॥ सदा संघाती आपनों रे अरु जीयको जीवन प्रान ॥ सो तो विसार्‍यो सहज ही रे हरि ईश्वर भगवॉन ॥ १२ ॥ वेद पुराँण स्मृति सबें रे सुरतरु सेवे जाहिं ॥ महा मोह अज्ञानमें रे क्यो न सँभारे ताहि ॥ १३ ॥ खग मृग मीन पतंगलों रे में सोधे सब ठोर ॥ जल थल जीव जिते किते रे कहूँ कहॉलग ओर ॥ १४ ॥ प्रभु पूरण पावन सखा रे प्राँननहींके नाथ ॥ परम दयालु कृपानिधि रे जीवन जिनके हाथ ॥ १५ ॥ गर्भवास अति त्रासमें रे जहॉ न एको अंग ॥ सुनि सठ तेरे प्राँण पति रे तहॉ हूं न छांड्यो संग ॥ १६ ॥

दिन राति पोपत रहे रे जेसें चोली पाँन ॥ वा दुखतें तोहि काढिकें रे गाहि दीनों पय पॉन ॥ १७ ॥ जिहिं जडतें चेतन कियो रे रचि पूरण तत्व विधाँन ॥ चरण चखुर कर नख दिये रे नेंन नाशिका काँन ॥ १८ ॥ अशन वसन वहुविध दिये रे ओसर ओसर आनिं ॥ मात पिता भैया मिले रे नइ रुचि नइ पेहेचाँनि ॥ १९ ॥ स्वजन कुटुंब परिकर वढ्यो रे दारा सुत धंन धाँम ॥ महा मोह विपयी भयो रे चित्त आकर्ष्यों कॉम ॥ २० ॥ खाँन पॉन परिधाँनमें रे यौवन गयो सव वीति ॥ ज्यों विट परत्रिय संग बस्यो रे भोर भये विपरीति ॥ २१ ॥ जेसें यौवन धन वढ्यो रे तेंसें तनहिं अनंग ॥ धूम वढ्यो लोचन खस्यो रे सखा न सूझ्यो संग ॥ २२ ॥ जव जॉन्यो सव जग सुन्यो रे वाढ्यो अजस अपार ॥ वीच न काहू तव कियो रे जव यम दूतन दीनीं मार ॥ २३ ॥ को जॉने केवार मुओ रे ऐसें कुमति कुमीच ॥ हरिसों हेत विसारिकें रे सुख चाहत हे नीच ॥ २४ ॥ जोपें जिय लज्या नहीं रे कहा कहों सो वार ॥ एकहु अंग न हरि भज्यो रे सुनि सठ सूर गमार ॥ २५ ॥ यह पद जो सूरदासजीनें वा देशाधिपतिके आगें गायो ॥ सो-ऐसो हे ॥ जो या पदको अहर्निश ध्यान रहे ॥ तो भगवद्-अनुग्रहकी सदा स्फूर्ति रहे ॥ ओर संसारतें सदा वैराग्य रहे ॥ दुःसंगको सदा भय रहे ॥ भगवदीयनके संगकी सदा इच्छा रहे ॥ श्रीठाकुरजीके चरणारविंद उपर सदा स्नेह रहे ॥ देहादिकपर आसक्ति न होय ॥ सो यह एसो पद सूरदासजीनें कह्यो ॥ सो सुनिकें देशाधिपति वोहोत प्रसन्न भयो ॥ ओर कह्यो ॥ जो सूरदासजी अव मुजे परमेश्वरनेंही राज्य दिया हे ॥ वास्ते सव गुणी लोक मेरा यश गाते हें ॥ सो तुम भी वडों गुनीं हो ॥ वास्तें कुछ मेराभी यश गाइये ॥ तव तिन

सूरदासजीनें यह पद गायो सो पद ॥ ❀(पद १०मो. राग केदारो)❀ नाँहिन रह्यो मनमें ठोर ॥ नंद नंदन अछिन केसें आनियें उर ओर ॥ १ ॥ चलत चितवत द्योस जागत स्वप्न सोवत राति ॥ व्हृदयतें यह मदनमूरति छिनु न इत उत जाति ॥ २ ॥ कहत कथा अनेक ऊधो लोक लोभ दिखाय ॥ कहा करों चित्त प्रेम पूरण घट न सिंधु समाय ॥ ३ ॥ श्याम गात्र सरोज आँनन ललित गति मृदुहास ॥ सूर एसे दरशकों यह मरत लोचन प्यास ॥ ४ ॥ ❀ ॥ यह पद जब सूरदासजीनें गायो ॥ तब देशाधिपति अकबरबादसाहनें सुनिकें मनमें विचाऱ्यो ॥ जो ये मेरा यश काहेकों गावेंगे ॥ जो इनकों कुछबातकी लालच होय तो ये मेरा यश गावें ॥ ये तो परमेश्वरके बंदे हैं ॥ और जो सूरदासजीनें या पदके समाप्तमें गायो जो ॥ (सूर एसे दरशकों यह मरत लोचन प्यास) ॥ ताके विषयमें वा देशाधिपतिनें विनसों पूछ्यो ॥ जो सूरदासजी तुमारे लोचन तो देखनेमें नहीं आते ॥ सो प्यासे केसें मरत हें ॥ ओर तुमतो विन देखे उपमाँ उपमेय देते हो ॥ सो तुम केसें देते हो ॥ तब सूरदासजी कछू बोले नाहीं ॥ तब फेरिकें देशाधिपतिनें कही ॥ जो इनके लोचन परमेश्वरके पास हैं ॥ जो वहाँ देखते हैं ॥ सो यहाँ वरणन करते हैं ॥ पाछें देशाधिपतिनें सूरदासजीके समाधाँनकी इच्छा कीनीं ॥ जो कछु इनकों दीजिये ॥ तब वीरबल प्रधाननें कही ॥ जो खाविंद ये कुछ न लेंगे ॥ ये तो भगवाँनके बंदे हैं ॥ वास्ते इनकों कोइबातकी इच्छा नहीं है ॥ सो सुनिकें तब सूरदासजीनें कही ॥ जो हम आपके राज्यमें भगवाँनकी बंदगी सुखसों करें है ॥ सो हमारे देवता सहित हमकुँ आपके आडीसुँ कुछ उपद्रव न होय ॥ वोही आप बिदा दिजिये ॥ तब बादशाहनें कही ॥ जो आपकूँ ओर आपके कोइ देवताकों मेरे राज्यमें कुछ उपद्रव नहीं

कर शकेगा ॥ सो सुनिकें वे सूरदासजी वा देशाधिपतितें विदा होयकें श्रीनाथद्वार आये ॥ ❀ (प्रसंग ५ मो) ❀ ॥ वहुरि सूरदासजी श्रीनाथद्वार आयकें वोहोत दिनताँई श्रीनाथजीकी सेवा किये ॥ बीच बीचमें वे श्रीनवनीतप्रियजीके दर्शनकों श्रीगुसाँईजीके पास श्रीगोकुल आवते ॥ सो एकसमें सूरदासजी श्रीगोकुल आये ॥ तहाँ श्रीनवनीतप्रियजीके दर्शन किये ॥ तब वाललीलाके पद श्रीनवनीतप्रियजीकों वोहोत सुनाये ॥ सो सुनिकें सूरदासजी उपर श्रीगुसाँईजी वोहोत प्रसन्न भये ॥ तब श्रीगुसाँईजीनें एक पालनों संस्कृतमें कियो हतो ॥ सो सूरदासजीकों सिखायो ॥ सो पलनाँ विन सूरदासजीनें जासमें श्रीनवनीतप्रियजी पालनें झूलें तासमें गायो सो पद ॥ पद ११ मो. ॥ ❀ (राग रामकली ताल चर्चरी) ❀ ॥ प्रेंखपर्यंकशयनम् चिरविरहतापहरमतिरुचिरमीक्षणं प्रकटय प्रेमायनम् ॥ ध्रु० ॥ तनुतरद्विजपंक्तिमतिललितानि हासितानि तव वीक्ष्य गायिकीनाम् ॥ यदवधि परमेतदाशया समभवज्जीवितं तावकीनाम् ॥ १ ॥ तोकतावपुपि तव राजते दृशि तु मदमानिनीमानहरणम् ॥ अग्रिमे वयसि किमुभावि कामेऽपि निजगोपिकाभावकरणम् ॥ २ ॥ व्रजयुवति हृद्यकनकाचलानारोढुमुत्सुकं तव चरणयुगलम् ॥ ते नु मुहुरुन्नमनमभ्यासमिव नाथ सपदि कुरुते मृदुलमृदुलम् ॥ ३ ॥ अधिगोरोचनातिलकमलकोद्ग्रथितविविधमणिमुक्ताफलविरचितम्॥ भूपणं राजते मुग्धतामृतभरस्यंदि वदनेंदुरसितम् ॥ ४ ॥ भ्रूतटे मातृरचितांजनविंदुरतिशयितशोभया दृग्दोपमपनयन् ॥ स्मरधनुपी मधु पिवन्नलिराज इव राजते प्रणीयसुखमुपनयनन् ॥ ५ ॥ वचनरचनोदारहाससहजस्मितामृतचर्यरातिभरमपनयनन् ॥ पालय सदास्मानस्मदीयश्रीविठ्ठले निजदास्यमुपनयन् ॥ ६ ॥ ❀ ॥ यह पद गायो ॥ पाछें वाके भावके अनुसार सूरदासजीतें वोहोत पद

करिकें श्रीनवनीतप्रियजीकों सुनाये ॥ सो सुनिकें श्रीगुसाँईजी वोहोत प्रसन्न भये ॥ तामेंको एक ॥ ❀ (पद १२ मो. राग विलावल) ❀ ॥ वाल विनोद आँगनमेंकी डोलनि ॥ मणिमय सुभग भूमि नंदालय वालि वालि गई तोतरी वोलनि ॥ १ ॥ कठुला कंठ रुचिर केहरिनख वज्रमाल वहु लई अमोलनि ॥ वदन सरोज तिलक गोरोचन लट लटकनि मधुपगण लोलनि ॥ २ ॥ लोन्यो कर परसत आँननपर कछूक खात कछू लग्यो कपोलनि ॥ कहे जन सूर कहा वनिआवे धंन्य नंदजी वनि जगतोलनि ॥ ३ ॥ ❀ (पद १३ मो. राग विलावल) ❀ ॥ गोपाल दुरेहें माँखन खात ॥ देखी सखी सोभाज्ञ वढी अति श्याम मनोहर गात ॥ १ ॥ उठि अवलोकी ओट ठाढी व्हे जिहिं विध नहिं लखिलेत ॥ चक्रत नेंन चहूँदिस चितवत ओर सवनि कोंदेत ॥ २ ॥ सुंदर करे आँनन समीप हरि राजत इहें आकार ॥ जनु जलरुह तजि वेरु विधिसों लियें मिलत उपहार ॥ ३ ॥ गिरि गिरि परत वदनतें उपर व्हे दधिसुतके विंदु ॥ माँनहुँ सरस सुधा कनवरखत प्रियजन आगम इंदु ॥ ४ ॥ वाल विनोद विलोकि सूर प्रभू थकित भई व्रजनारि ॥ स्फुरत न वचन वरजिवेकों मन रही विचार विचारि ॥ ५ ॥ ❀ (पद १४ मों. राग जेतश्री) ❀ ॥ कहाँलग वरनों सुंदरताई ॥ खेलत कुँमर कनक आँगमनें नेंन निरखि सुख पाई ॥ १ ॥ कुलह लसत श्याम सुंदरकें वहुविध रंगनि वनाई ॥ माँनहुँ नवघन उपर राजत मघवा धनुप चढाई ॥ २ ॥ स्वेत पीत अरु लसत लाल मणि लटकनि भाल रुराई ॥ माँनहूँ असुर देव गुरुसों मिलि भूमिज सों समूदाई ॥ ३ ॥ अति सुदेश मृदु चिहुर हरत मन मोहन सुख विगराई ॥ माँनहूँ मंजुल खंजन उपर अलिआवलि फिरि आई ॥ ४ ॥ दूधदंत छवि कही न जाति कछू अल्प तल्प झल-

कई ॥ किलकत हसत दुरत प्रगटित माँनों विधुमें विद्युलताई ॥ ५ ॥ खंडित वचन देत पूरण सुख अद्भुत यह उपमाई ॥ घुटुरुन चलत उठत प्रमुदित मन सूरदास बलि जाई ॥ ६ ॥ ४ ॥ ❁ ॥ (पद १५ मो. राग रामकली) ❁ ॥ देख्यो सखी एक अद्भुत रूप ॥ एक अंबुज मध्य देखियत बीस दधिसुत जूप ॥ १ ॥ एक अवली दोय जलचर ऊभें अर्क अनूप ॥ पंच वारिज ढिंगहि देखियंत कहों कहा स्वरुप ॥ २ ॥ सिशूगतिमें भई शोभा करोकोऊ विचारि ॥ सूर श्रीगोपालकी छबि राखो यह उर धारि ॥ ३ ॥ ❁ ॥ इत्यादि वोहोत पद विन सूरदासजीनें आपकों सुनाये ॥ सो सुनिकें श्रीगुसाँईजी वोहोत प्रसंन भये ॥ पाछें फेरि सूरदासजी श्रीगुसाँईजीके संग श्रीगिरिराजमें श्रीनाथद्वार आये ॥ ❁ (प्रसंग ६ ठो) ❁ ॥ या रीतिसों विन सूरदासजीनें श्रीनाथजीकी सेवा वोहोतदिन ताँई कीनीं ॥ ता उपराँत विन महा भगवदीय सूरदासजीनें जाँनीं ॥ जो अब प्रभुनकी इच्छा मोकों बुलायवेकी हे ॥ यह विचारिकें जाँहाँ प्रभु नित्य फलात्मक रासलीला करत हें ॥ एसी जो परासोली ॥ ताठौर वे आये ॥ तब श्रीनाथजीकी ध्वजा साँमनें मुख करिकें साष्टांग दंडवत करिकें सोये ॥ परि अंतःकरणमें यह जो ॥ श्रीआचार्यजीमहाप्रभु ओर श्रीगुसाँइजीनें बडो अनुग्रह करिकें मोकों दर्शन दीनें ॥ ओर फेरिहू आगें देहिंगे ॥ परि अब यह देहतो थकी ॥ तातें या देहसों या समें एकवार आपको दर्शन होय ॥ तो जाँनियें परम भाग्य हें ॥ वे तो कृपासिंधु हें ॥ भक्तनके मनोरथके पूर्ण कर्ता हें ॥ एसें विचारिकें वे श्रीगुसाँईजीके स्वरुपको चिंतन करत भये सूरदासजी सोये हें ॥ यहाँ श्रीगुसाँईजी विनकों छिन हू भूलत न हते ॥ सो जब आप नित्य श्रीनाथजीको शृंगार करते तब वे सूरदासजी नित्य मणिकोठामें ठाडे कीर्तन

करते ॥ सो तादिन आपनें श्रीनाथजीको शृंगार करत विन सूरदासजीकों कीर्तन करत न देखे ॥ तब आप श्रीगुसाँइंजीनें पूछी ॥ जो आज सूरदासजी नाँहि देखियत सो कहाँ हें ॥ तब एक सेवकनें कह्यो ॥ जो महाराज सूरदासजीकोंतो आज परासोलीकी ओर उतरत देखे हे ॥ तब आपनें जान्यो ॥ जो भगवद इच्छातें अब विनको अवसाँन समय हे ॥ तातें वे परासोली गयेहें ॥ तब आपनें श्रीमुखतें सेवकनसों यों कह्यो ॥ जो आज पुष्टिमार्गको जिहाज जात हे ॥ जाकों कछू लेनों होय सो ले लेऊ ॥ जो भगवदइच्छातें वे रहेंगे तो राजभोगआर्ती पाछें हमहूँ वहाँ आवत हें ॥ एसें कहिकें आप सेवामें पधारे ॥ सो तहाँतें आप सेवक पठाय वेर वेरमें विन सूरदासजीकी खबरि मंगायवो करे ॥ सो तहाँतें जो आवे सो योहीं कहे ॥ जो महाराज सूरदासजी अचेत हें ॥ कछू बोलत नाहीं ॥ एसें पूछत श्रीनाथजीकी राजभोगआर्तिको समो भयो ॥ तब आपनें आर्ति करि श्रीनाथजीकों अनोसर करि आप श्रीगिरराजतें उतरे ॥ सो परासोलीकों पधारे ॥ तब भीतरके सेवक राँमदासजी प्रभृति ॥ ओर बाहिरके सेवक कृष्णदासजी कुंभनदासजी प्रभृति ॥ ओर आप श्रीगुसाँईजीके सेवक गोविंदस्वामी ॥ चतुर्भुजदास इत्यादि सब आपके साथ परासोली आये ॥ सो आवतहीं आपनें विन सूरदासजीतें पूछ्यो ॥ जो सूरदासजी केसें हो ॥ तब विननें आप श्रीगुसाँईजीकों दंडवत करिकें कह्यो ॥ जो बावा आये ॥ में तो आपकी बाटही देखत हतो ॥ यह कहिकें सूरदासजीनें एक पद कह्यो सोपद ॥ (पद १६ मो. राग केदारो) ॥ देखो देखो हरिजूको एक सुभाय ॥ अति गंभीर उदार उदधि प्रभु जाँनि शिरोमणि राय ॥ १ ॥ राई जितनीं सेवाको फल माँनत मेरु समाँन ॥ समुझि दास अपराध सिंधुसम बूंद न एको जाँन

॥ २ ॥ वदन प्रसन्न कमल पद सन्मुख देखतहीं हें एसे ॥ विमुख भये कृपा या मुखकी जब देखों तब तेसे ॥ ३ ॥ भक्तविरहकातर करुणामय डोलत पाछें लागे ॥ सूरदास एसे प्रभुकों कित दीजें पीठि अभागे ॥ ४ ॥ ❀ ॥ यह पद सुनिकें श्रीगुसाँईजी वोहोत प्रसन्न भये ॥ ओर कह्यो ॥ जो एसो देन्य प्रभु अपनें सेवकनकों देहिं ॥ या देन्यके पात्रतो येही हें ॥ तब वाबेर श्रीगुसाँईजीके पास सब सेवक ठाढे हते ॥ तामें चतुर्भुजदास हू ठाढे हते ॥ तिननें कह्यो ॥ जो सूरदासजीनें वोहोत भगवदयश वर्णन कियो ॥ ओर सहस्रावधी पद किये ॥ परि कछू श्रीमहाप्रभुनको यश वर्णन न कियो ॥ यह सुनिकें सूरदासजी बोले ॥ जो मेंनेंतो सब महाप्रभुनकोही यश वर्णन कियोहे ॥ कछू न्यारो देखूं तो न्यारो वर्णन करूँ ॥ परि तेरेलियें कहतहूँ सो सुनि ॥ याभाँति कहिकें विन सूरदासजीनें कह्यो सो पद ॥ ❀ (पद १७ मो. राग सारंग) ❀ ॥ भरोसो दृढ इन चरणन केरो ॥ श्रीवल्लभ नखचंद्र छटा बिन सब जगमाँ जु अँधेरो ॥ १ ॥ साधन ओर नहीं या कलिमें जासों होय निवेरो ॥ सूर कहा कहे द्विविध आँधरो विनाँ मोलको चेरो ॥ २ ॥ ❀ ॥ यह पद कहे पाछें सूरदासजीकों मूर्च्छा आई ॥ तब श्रीगुसाईने पूछी ॥ जो सूरदासजी अब चित्तकी वृत्ति कहाँहे ॥ तब सूरदासजीनें एक पद ओर कह्यो सो पद ॥ ❀ (पद १८ मो. राग विहागरो) ❀ ॥ खंजन नेंन रुप रस माते ॥ धृ० ॥ वलि वलि हों कुमरि राधिका सुवन जासों रति मानी ॥ वे अति चतुर तुम चतुर शिरोमणि प्रीति करी केसें रहे छानीं ॥ १ ॥ वे जू धरत तन कनक पीत पट सो तो सब तेरी गति ठाँनीं ॥ तें पुनि श्याम सहज वे शोभा अंबर मिस अपनें उर आनीं ॥ २ ॥ पुलकित अंग अबहीं व्हे आयो निरखि देख निज देह सयानीं ॥ सूर सुजाँन सखिकें

बूझत प्रेम प्रकाश भयो विहसानीं ॥ ३ ॥ ❀ ॥ यह पद केहेतहीं सूरदासजीको चित्त श्रीठाकुरजीके स्वरुपमें निमग्न भयो ॥ लावण्यको समुद्र एसो जो श्रीठाकुरजीको श्रीमुख ॥ तामें करुणारसके भरे नेत्र देखे ॥ तब श्रीगुसाँईजीनें पूछी ॥ जो सूरदासजी नेत्रनकी व्रति कहाँ हे ॥ तब वा समें सूरदासजीनें पद कह्यो सो पद ॥ ❀ (पद १९ मो. राग बिहागरो) ❀ ॥ खंजन नेंन रुप रस माते ॥ अतिसें चारु चपल अनियारे पलक पिंजरा न समाते ॥ १ ॥ चलि चलि जात निकट श्रवणनिके उलटि फिरत ताटंक फंदाते ॥ सूरदास अंजन गुण अटके नाँतर अब उडि जाते ॥२॥ ❀ ॥ इतनों कहतहीं सूरदासजीनें यह शरीरको त्याग करिकें भगवदलीलामें निवेश कियो ॥ पाछें श्रीगुसाँईजी सब सेवकन सहित ॥ श्रीगोवर्द्धन आये ॥ पाछें तें वैष्णवननें विन सूरदासजीकी देहको संस्कार कियो ॥ वे सूरदासजी श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके एसे कृपापात्र भगवदीय हते ॥ जिनकों आप श्रीआचार्यजी तथा श्रीगुसाँईजी आप सूर (सूर्य) कहिकें बुलावते ओर अन्य महाकवीननेंहू जिनकी एसी प्रशंसा करी है ॥ सो दोहा ॥ सूर सूर तुलसी शशी; उडुगण केशवदास ॥

अबके कवि खद्योत सम ; जहाँ तहाँ करत प्रकाश ॥ १ ॥

तातें श्रीगुसाँईजी सदा विनके उपर प्रसन्न रहते ॥ तातें विनकी वार्ता अनिर्वयनीयहे सो कहाँताँई लिखिये ॥ वैष्णवसखा १ लो॥

❀ (वार्ता २ री. वैष्णवसखा २ रो.) ❀

❀ (अथ परमाँनंददास जिनके पद गाईयतुहे तिनकी वार्ता) ❀

सो वे परमाँनंददासजी परम भगवदीय लीलामध्यवर्ति ॥ श्रीठाकुरजीके परम सखा हे ॥ सो सब श्रीनाथजीकी आज्ञातें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप देवीजीवनके उद्धारार्थ भूतल उपर प्रगट भये ॥ ओर तेसेंहीं श्रीठाकुरजीको सब परिकरहू भूतलपे प्रगट

भयो ॥ ओर आपहू श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीगोवर्द्धनपर्वतमेंतें प्रगट भये ॥ ओर अनेक देशांतरमें देवीजीवहू प्रगट भये ॥ सो गोपालदासजीनेंहू श्रीवल्लभाख्यानमें कह्यो हे ॥ (अनेक जीवनें कृपा करेवा देशांतर परवेस) ॥ तातें इन परमाँनंददासजीकोहू जन्म भगवदइच्छातें कंनोजमें कंनोजिया ब्राह्मणके घर भयो ॥ सो वे परमॉनंददासजी वोहोत योग्य भये ॥ ओर महा कवि भये ॥ ओर भगवदकृपाके पात्र हते ॥ सो वे आपहू स्वामी कहावते ॥ ओर दूसरेनकों आप सेवक करते ॥ ओर कीर्तन आप वोहोत नीके वनायकें गावते ॥ तातें विनके साथ सदा समाज वोहोत रहतो ॥ सो वे परमाँनंददासजी भगवदइच्छातें एक समें कंनोजतें प्रयाग आये ॥ सो तहाँ वे अपनें डेरामें कीर्तन गावें ॥ सो वोहोत आछे गावें ॥ तातें वोहोत लोग विनके कीर्तन सुनिवेकों आवते ॥ ओर जो अडेलतें लोग कार्यार्थ प्रयाग आवते सो इनके कीर्तन सुनिकें ॥ पार अडेल आयकें वातें कहते ॥ जो एक परमाँनंदस्वामी प्रयागमें आये हें ॥ सो कीर्तन वोहोत आछे गावत हें ॥ तव श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनको एक सेवक जलघरिया क्षत्रीकपूर ॥ ताकी राग उपर वोहोत आसक्ति हती ॥ तानें सुनी परि वे वखत कोई न पावें ॥ जो प्रयाग जायकें विन परमॉनंददासजीके कीर्तन सुनें ॥ विनको मन तो वोहोत चले परि विनकों सेवामेंतें अवकाश न मिले ॥ जो प्रयाग जायसकें ॥ सो एकदिन एक वैष्णव प्रयागतें अडेल आयो ॥ वानें कह्यो ॥ जो आज एकादशी हे ॥ सो वहाँ जो परमाँनंदस्वामीकवि आये हें सो आज रात्रिकों जागरण करेंगे ॥ सो यह सुनिकें वा जलघरिया क्षत्रीकपूरनें मनमें विचारी ॥ जो आज विन परमॉनंदस्वामीके कीर्तन सुनिवेको वखत हे ॥ सो वह क्षत्रीकपूर अपनी सेवातें पोंहोंचिकें रात्रिको अपनें घर

आयो ॥ ताहँ आयकें मनमें विचारी ॥ जो याविरियाँ नावतो मिलेगी नाहिं ॥ तातें कहा कर्तव्य ॥ परि वे पेरिवेमें बोहोत निपुण हते ॥ तातें मनमें विचारि ॥ जो पेरिकें पार जैये ॥ सो वे एसो निश्चय करिकें पाछें अपनें घरतें चले ॥ सो श्रीयमुनाँजीके तीर आये ॥ तहाँ कपडा उतारि परदनी पहरि वस्त्र सब माथेंसों बाँधिकें श्रीयमुनाँजीमें पेरिकें पारआय वस्त्र सब पेहेरिकें प्रयागमें आये ॥ पाछें जाठोरें वे परमानंदस्वामी उतरे हते ॥ तहाँ वें पूछत आये ॥ विनकें ओर विन परमाँनंदस्वामीकें कछू पूर्वसों मिलाप नहतो ॥ तातें जहाँ सबलोग वेठे हते ॥ तहाँ वे जाय वेठे ॥ परि वे क्षत्रीकपूर श्रीआचार्यजीके सेवकसों प्रसिद्ध हते ॥ तातें विनकों सबकोऊ जॉनते ॥ तातें सबनें उनकों आदर करिके बेठाये ॥ तापाछें विन परमॉनंदस्वामीनें कीर्तननको आरंभ कीनों ॥ सो विननें श्रीठाकुरजीके विरहके पद गाये ॥ सो यातें जो प्रथमके वे लीलामध्यवर्ति श्रीठाकुरजीके परमसखा हे ॥ सो तहाँतें तो वे बिछुरे ॥ ओर यहाँतो अभी श्रीठाकुरजीको दर्शन नाहीं ॥ आप श्रीआचार्यजीके मार्गको तो यह सिद्धांतही हे ॥ जो जब कोउ भगवदीयको संग होय तो श्रीठाकुरजी कृपा करें ॥ ताहीकेलीये श्रीआचार्यजीनें विन परमाँनंदस्वामीके उपर अनुग्रह करिकें ॥ आपनें कृपापात्र भगवदीय क्षत्रीकपूरके अंतःकरणमें प्रेरणा करिकें विनकों यहाँ पठवाये ॥ सो आपके सेवक एसे हे ॥ जो जिनकों अहर्निश श्रीठाकुरजी एक क्षणहूँ छोडत नाहीं हे ॥ तातें सूरदासजीहू गाये हें ॥ (जो भक्तविरहकातर करुणामय डोलत पाछें लागे) ॥ ओर जगंनाथजोशीकीहू वार्तामें लिख्यो हे ॥ जो जब रजपूतनें विनपे तरवार काढी ॥ तब श्रीठाकुरजीनें वाको हाथ पकन्यो ॥ सो तातें परमाँनंदस्वामीनें हू विरहके पद गाये सो पद ॥ ❀ (पद १ लो. राग विहागरो)❀

व्रजके विरही लोग विचारे ॥ विनों गोपाल ठगेसे ठाढे अतिदुर्बल तन हारे ॥ १ ॥ माता यशोदा पंथ निहारे निरखत साँझ सवारे ॥ जो कोई कान्ह कान्ह कहि बोले अखियन बहत पनारे ॥ २ ॥ इह मथुरा काजरकी रेखा जे निकसें ते कारे ॥ परमाँनंदस्वामी विनु एसे जेसे चंद विनु तारे ॥ ३ ॥ ❀ (पद २ रो. राग विहागरो) ❀ ॥ गोकुल सब गोपाल उपासी ॥ जो गाहक साधनके ऊधो सो सब बसत ईश-पुर काशी ॥ १ ॥ यद्यपि हरि हम तजी अनाथ करी अब छाँडत क्यों रतिकी प्यासी ॥ अपनीं शीतलता नहीं छाँडत यद्यपि विधु राहु हे ग्रासी ॥ २ ॥ किहि अपराध जोग लिखि पठयो प्रेम भजनतें करत उदासी ॥ परमाँनंद एसीको विरहनि माँगे मुक्ति छाँडि गुणरासी ॥ ३ ॥ ❀ (पद ३ रो. कानरो) ❀ ॥ कोंन रसिक हे इन बातनको ॥ नंद नंदन विनु कासों कहिये ॥ सुनिरी सखी मेरे दुःख या तनको ॥ १ ॥ कहाँ वे यमुनाँ पुलिन मनोहर कहाँ वे चंद शरद रातिनिको ॥ कहाँ वे मंद सुगंध अनिल रस कहाँ वें षट्पद जलजातिनिको ॥ २ ॥ कहाँ वे सेज पोढिवो बनको फूल विछोंनाँ मृदु पातनिको ॥ कहाँ वे दरस परस परमानंद कमल-नयनि कमल गातानिको ॥ ३ ॥ ❀ (पद ४ थो. राग सोरठ) ❀ ॥ माईरी को मिलवे नंदकिशोरे ॥ एकवार को नेन दिखावे मेरे मनके चोरे ॥ १ ॥ जागत जाँम गिनत नहीं खूटत क्यों पाऊँगी भोरे ॥ सुनिरी सखी अब केसें जीजे सुनितमचर खग रोरे ॥ २ ॥ जो यह प्रीति सत्य अंतरगति जिनि काहू वनि-होरे ॥ परमानंद प्रभु आनि मिलहिंगे सखी सीस जिनि फोरे ॥ ३ ॥ ❀ ॥ इत्यादिक विरहके पद परमाँनंदस्वामीनें सगरी राति गाये ॥ सो तहाँ श्रीनवनीतप्रियजी हू जो विन परमाँनंद-दासपे अनुग्रह करिवेकों गुप्त पधारे हे ॥ विननें वा क्षत्रीकपूरकी

गोदमें बेठिकें सगरी रात्रि कीर्तन सुने ॥ सो जब पिछली घडी चारि रात्रि रही ॥ तब जो भाविक जन जागरणमें आये हते ते सब ऊठिकें अपनें अपनें घरकों गये ॥ ओर श्रीठाकुरजीहू पधारे ॥ तब वे जलघरिया क्षत्रीकपूर हू ॥ जो अनुग्रह करिवेकों इतनीं दूरि चलिकें आये हे ॥ वेहू कीर्तन सुनिकें बोहोत प्रसन्न भये हते ॥ तिननें हू ऊठिकें विन परमाँनंदस्वामीसों कह्यो ॥ जो जेसी हमनें तुमारी कीर्ति सुनी हती ॥ तातें तुमकों आज अधिक देखे ॥ तुमपर भगवदअनुग्रह पूर्ण हे ॥ एसें कहिकें वे क्षत्रीकपूर विनसों श्रीकृष्णस्मरण करिकें चले ॥ सो श्रीयमुनाँजीके तीरपे आये ॥ तहाँ विचार कियो ॥ जो अब नावकी गेल देखूँगो तो अबेर होयगी ओर सेवा छूटेगी ॥ ओर श्रीआचार्यजीमहाप्रभुहूं जाँनेंगे तो खीजेंगे ॥ तातें जेसें पेरिकें आयो हतो ॥ तेसें पेरिकें फेरि पार जाउँ ॥ एसो विचार करिकें वे पूर्ववत पाछे श्रीयमुनाँजीमें पेरे ॥ सो पार आवतहीं स्नान करिकें अपनीं सेवामें तत्पर भये ॥ तापाछें वहाँ प्रयागमें परमाँनंदस्वामी रात्रिके श्रमित हते तासों विनकी आँखि लागी ॥ सो नींद आयगई ॥ इतनेमें स्वप्न भयो ॥ सो वे स्वप्नमें देखेंतो जेसें रात्रिके जागरणमें श्रीआचार्यजीके सेवक क्षत्रीकपूर बेठे हते ॥ तेसें ही विनकों बेठे देखे ॥ ओर वाकी गोदमें श्रीनवनीतप्रियजीहू बेठेके दर्शन भये ॥ ता समें स्वप्नमें श्रीनवनीतप्रियजीनें वासों कह्यो ॥ जो आज मेंनें तेरे कीर्तन सुने ॥ इतनों आपनें श्रीसुखतें कहतमात्रही विनकी नींद खुलिगई ॥ तब श्रीठाकुरजीके श्रीमुखको सौंदर्य जो कोटिकंदर्पलावण्य स्वप्नमें देख्यो सो विननें अपनें हृदेमें धरिलियो ओर विनके मनमें चटपटी लागी ॥ जो वह दर्शन फेरि कब होंयगे ॥ तब विननें यह विचार कियो ॥ जो वह दर्शन तो उन क्षत्रीकपूर विनाँ न

होयगे ॥ तातें होयतो उन पास जैये ॥ सो जो वे मिले ॥ तो कार्य सिद्ध होय ॥ एसो विचारिकें वे परमाँनंददास तत्काल प्रयागतें ऊठिकें अडेलकों चले ॥ सो श्रीयमुनाँजीके तीर पर आय ठाढे भये ॥ तब प्रातःकालको समों हतो ॥ सो प्रथमहीं नाव चलत हती ॥ तापर बेठिकें वे पार उतरे ॥ सो वे आगें जायकें देखें तो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप स्नान करिकें संध्या वंदन करत हें ॥ विनको विन परमाँनंदस्वामीकों साक्षात् पूर्ण-पुरुषोत्तम श्रीकृष्णचंद्रके जेसो श्रीगुसाँईजीनें वल्लभाष्टकमें लिख्योहे ॥ जो (वस्तुतः कृष्णएव) तेसो दर्शन विनकों भयो ॥ सो देखतेंहीं विन परमाँनंदस्वामीके मनमें आई ॥ जो श्रीआ-चार्यजीके सेवक क्षत्रीकपूरकी गोदमें श्रीठाकुरजी काहे न वेठें ॥ जिनके माथें एसे महाप्रभु विराजत हें ॥ परि विन परमाँनंद-स्वामीके मनमें यह ॥ जो वे क्षत्रीकपूर मिलें तो आछो ॥ काहेतें जो जिनके दर्शनतें श्रीआचार्यजीके दर्शन भये ॥ तापाछें विननें आपके निकट आय दंडोत करी ॥ तब श्रीआचार्यजीनें अपनें श्रीमुखतें विनसों कह्यो ॥ जो परमाँनंददासजी तुम आये ॥ अब कछू भगवदयश वर्णन करो ॥ तब विननें जो विरहके पदगाये ॥ सो पद ॥ (पद ५ मो. राग सारंग) ❀ ॥ कोंन वेर भई चलेरी गोपालें ॥ हों ननसार गई ही न्योंते वार वार वूझत व्रजवालें ॥ १ ॥ तेरे तनको रुप कहाँगयो भाँमिनि अरु मुखकमल सुकाय रह्यो ॥ सव सोभाग्य गयो हरिके संग हृदो सुकोमल विरह दह्यो ॥ २ ॥ को वोले को नेन उघारे को प्रति उत्तर देहि विकल मन ॥ सो सरवस्व अक्रुर चूरायो परमाँ-नंदस्वामी जीवन धन ॥ ३ ॥ ❀ (पद ६ ठो. राग सारंग) ❀ ॥ जीयकी साधन जीयही रही री ॥ बहुरि गोपालें देखन न पाये विलपति कुंज अहीरी ॥ १ ॥ एकदिन साँझुसमें यह मारग

बेचन जात दही री ॥ प्रीतिकेलीयें दाँन मिस मोंहन मेरी बाँह गही री ॥ २ ॥ विनु देखें घरी जात कल्प सम विरह अनल दही री ॥ परमाँनंदस्वामी विनु दर्शन नेंनन नदी बही री ॥ ३ ॥ ❀ (पद ७ मो. राग सारंग) ❀ ॥ वह बातें कमलदलनें-नकी ॥ वार वार सुधि आवत सजनीं वह दुरि देंनि सेंनकी ॥ १ ॥ वह लीला वह रास शरदको गोरज रंजित आवनिं ॥ अरु वह ऊँची टेर मनोहर मिसु करि मोहि सुनावनिं ॥ २ ॥ वे बातें सालत उर अंतर को पर पीरहि पावे ॥ परमाँनंद कह्यो न परे कछू हीयो सु रुँध्यो आवे ॥ ३ ॥ ❀(पद ८ मो. राग सारंग)❀॥ सुधि करति कमलदलनेन की ॥ भरि भरि लेत नीर अति आ-तुर रति वृंदावन चेंन की ॥ १ ॥ दे दे गाढे आलिंगन मिलती कुंज लता द्रुम एन की ॥ वे बत्तियाँ केसेंके विसरत बाँह उसीसे सेन की ॥ २ ॥ बसि निकुंजमें रास खिलाये व्यथा गँवाई में-नकी ॥ परमाँनंदप्रभु सो क्यों जीवें जे पोखीं मृदु बेंन की ॥ ३ ॥ या भाँतिसों विन परमाँनंदस्वामीनें विरहके पद गाये ॥ सो सुनिकें आप श्रीआचार्यजीनें कह्यो ॥ जो परमाँनंददासजी अब कछू बाललीला वर्णन करो ॥ तब विननें विनती करी ॥ जो महाराज में कछू समुझत नाहीं ॥ तब आपनें कह्यो ॥ जो जाय स्नान करि आवो ॥ हम तुमकूँ समुझावेंगे ॥ तब विननें आ-पसों पूछ्यो ॥ जो महाराजको सेवक जलघरिया क्षत्रीकपूर कहाँहें ॥ तब आपनें कह्यो ॥ जो वो कछू सेवा टहलमें होयगो ॥ पाछें वे परमाँनंदस्वामी श्रीयमुनाँजी स्नानकों चले ॥ सो आगें जाँयँ तो श्रीयमुनाँजलकी गागरि लेकें वे क्षत्रीकपूर आवत हते ॥ सो सामें मिले ॥ उनकों देखिकें वे परमाँनंदस्वामी बोहोत प्रसन्न भये ॥ ओर दोऊ हाथसों विनकों नमस्कार कियो ॥ ओर क-ह्यो ॥ जो रात्रिके जागरणमें आप कृपाकरिकें पधारे हते ॥ तब

जो श्रीठाकुरजीनें आपकी गोदमें बेठिकें मेंरे कीर्तन सुने हे ॥ सो आपकी कृपातें श्रीठाकुरजीनें मोसों कह्यो ॥ जो में श्रीआचार्यजीके सेवक जलघरिया क्षत्रीकपूरकी गोदमें बेठिकें तेरे कीर्तन सुनतहो ॥ सो आपके अनुग्रहतें मेरो भाग्य सिद्ध भयो ॥ ताते में आपके दर्शनकों सवारेंही ॥ ऊठिकें आयो हों ॥ सो आवतही तुह्मारी कृपातें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके दर्शन किये ॥ सो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तम श्रीकृष्णचंद्र श्रीगोवर्द्धनधरको दर्शन भयो ॥ इतनीं बात सुनिकें वा जलघरिया क्षत्रीकपूरनें विनसों कह्यो ॥ जो एसें मति कहो ॥ जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु यह बात सुनेंगे तो खीजेंगे ॥ जो सेवा छोडिकें क्यों गयो हतो ॥ तातें यह बात मति कहो ॥ इतनों सुनिकें विन परमॉनंदस्वामीकों बोहोत आश्चर्य भयो ॥ जो धॅन्य ये हें ॥ जिन उपर श्रीठाकुरजीको इतनों अनुग्रह हे ॥ ओर येतो अपनों स्वरूप छिपावें हें ॥ पाछें वे परमॉनंदस्वामी तो स्नानकों गये ॥ ओर जलघरिया क्षत्रीकपूर जलकी गागरि लेके मंदिरमें गये ॥ पाछें परमॉनंदस्वामी श्रीयमुनॉजीमें स्नान करिकें ॥ तत्काल आय श्रीआचार्यजीकों साष्टांग दंडवत करिकें हाथ जोरिकें आपके आगें ठाढे भये ॥ तब आपनें कह्यो ॥ जो परमॉनंददास आगें आय बेठो ॥ तब वे श्रीआचार्यजीके आगें आय बेठे ॥ तब आपनें कृपा करिकें विनकों नॉम सुनायो ॥ पाछें मंदिरमें पधारिकें श्रीनवनीतप्रियजीकें सन्निधॉन ॥ विन परमॉनंददासकों ब्रह्मसंबंध करवायो ॥ पाछें अनुग्रह करिके विनकों श्रीभागवतकी अनुक्रमणिका सुनाई ॥ सो यातें ॥ जो प्रथम आपनें परमॉनंदस्वामीसों अपनें श्रीमुखतें कहे हे ॥ जो भगवदयश वर्णन करो ॥ तब विननें विरहके पद गाये ॥ तब आपनें श्रीमुखतें कह्यो ॥ जो कछू बाललीला गाओ ॥ तब विननें कह्यो हो ॥

जो राजमें कछू समुझत नाहीं ॥ सो विननें केसें कही ॥ जो वे समुझत न हते ॥ तो विननें विरहके पद केसें गाये ॥ ताकों समाधाँन यह ॥ जो विरहके पद तो विननें यातें गाये ॥ जो वे श्रीठाकुरजीतें बिछुरे हें ॥ सो बिछुरेके दुःखकी तो विनकों स्फुर्ति रही हे ॥ ओर जो संयोगको सुख हतो ताको तो विनकों विस्मरण भयो हे ॥ सो काहेतें ॥ जो सब लीलाविशिष्ट पूर्णपुरुषोत्तम तो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके घर पधारे हें ॥ पाछें जब श्रीआचार्यजीनें विन परमाँनंददासकों श्रीनवनीतप्रियजीके दर्शन करवाये ॥ तब सब लीलाकी विनकों स्फुर्ति भई ॥ ओर आप श्रीआचार्यजीनें विनकों अनुक्रमणिका सुनाई ॥ ताकों कारण यह जो आपको नाँम ॥ (श्रीभागवतपीयूषसमुद्रमथनक्षमः) ॥ यह है ॥ सो आपनें श्रीमद्भागवतके अमृतरुपी समुद्रको मथन कियो हे ॥ तामेंको रत्न जो दशमसस्कंद सो अनुक्रमणिका द्वारा आपनें विन परमाँनंददासके हृदेमें धऱ्यो ॥ जेसें आपनें सूरदासजीके हु हृदेमें धऱ्यो हो ॥ तातें वानीं सब अष्टसखाकी काव्यकी समाँन हे ॥ तामें ये दोऊ सूरदासजी ओर परमाँनंददासजी तो केवल सागरही भये ॥ सो याहीतें जो इन दोउनके हृदेमें आपनें श्रीभागवतरुपी अमृतको समुद्र धऱ्यो ॥ तातें विनकी काव्यकों सबकोऊ सूरसागर ओर परमाँनंदसागर कहत हें ॥ अब विन परमाँनंददासकों आप श्रीआचार्यजी श्रीमुखतें कहे ॥ जो अब तुम बाललीला वर्णन करो ॥ तब विननें तत्काल बाललीलाके पद करिकें श्रीनवनीतप्रियजीके सन्निधाँन गाये सो पद ॥ ❀ (पद ९ मो. राग आसावरी) ❀ ॥ माईरी कमलनेंन श्यामसुंदर झूलत हें पलनाँ ॥ बाललीला गावती सब गोकुलकी ललनाँ ॥ १ ॥ अरुण तरुण चरणकमल नख मणि शशि ज्योती ॥ कुंचित कच भंवराकृति लटकत गज-

मोती ॥ २ ॥ अँगूठा गहि कमलपाँणि मेलत मुख माँहीं ॥ अपनों प्रतिविंव देखि पुनि पुनि मुसिकाँई ॥ ३ ॥ यशुमतिके पुण्य पुंज निरखि निरखि लालें ॥ परमाँनंदस्वामि गोपाल सुत स्नेह पाले ॥ ४ ॥ ❀ (पद १० मो. राग विलावल) ❀ ॥ यशोदा तेरे भाग्यकी कछु कही न जाय ॥ जो मूरति ब्रह्मादिक दुर्लभ सो प्रगटे हें आय ॥ १ ॥ शिव नारद सनकादि महामुनि मिलिवे करत उपाय ॥ ते नंदलाल धूरि धूसर वपु रहत गोद लपटाय ॥ २ ॥ रतन जटित पोढाय पालनें वदन देखि मुसिकाय ॥ झूलो मेरे लाल जाऊँ वलिहारी परमाँनंद यश गाय ॥ ३ ॥ ❀ (पद ११ मो. राग विलावल) ❀ ॥ मणिमय आँगन नंदके खेलत दोऊ भैया ॥ गौर श्याम जोडी वनीं वलि कुँवर कन्हैया ॥ १ ॥ नूपुर कंकण किंकिणी रुनझुनुरुनझुनु वाजे ॥ मोहि रही व्रजसुंदरी मानसा सुत लाजें ॥ २ ॥ संग संग रोहिणी हितकारण मैया ॥ चुटकी दे दे नचावहीं सुत जाँनि कन्हैया ॥ ३ ॥ नील पीत पट ओढनीं देखत मोहि भावे ॥ वाललीला विनोदसों परमाँनंद गावे ॥४॥ ❀(पद १२ मो. राग विलावल)❀ ॥ हरिको विमल यश गावत गोपांगनाँ ॥ मणिमय आँगन नंदरायके वाल गोपाल तहाँ करें रिंगनाँ ॥ १ ॥ गिरि गिरि परत घुटुरुअन टेकत जाँनुं पाँणि मेरो छगनको मगनाँ ॥ धूसर धूरि उडाय गोद ले मात यशोदाके प्रेमको भजनाँ ॥ २ ॥ त्रिपद भूँमि नाँपी तव न आलस भयो ॥ अव जु कठिण भयो देहरी उलंघनाँ ॥ परमाँनंद प्रभु भक्तवत्सल हरि रुचिर हार वर कंठ सोहें वघनाँ ॥ ३ ॥ ❀ ॥ जव ये वाललीलाके पद विन परमाँनंददासजीनें गाये॥ सो सुनिकें श्रीआचार्यजी आप वोहोत प्रसन्न भये ॥ पाछें परमाँनंददासजीअडेलमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके पास रहे॥ तव आपनें विनकों कीर्तनकी सेवा दीनीं ॥ सो वे परमाँनंददास श्रीनवनी

त प्रियजीकों नित्य नये पद भाँति भाँतिके करिकें सुनावें ॥ सो जब श्रीठाकुरजी अनोसर होइँ ॥ तब वे श्रीआचार्यजीके आगें कीर्तन करें ॥ पाछें श्रीआचार्यजी आप जो नित्य कथा कहते ॥ सो वे परमॉनंददासजी सुनते ॥ सो वे जो प्रसंग कथामें सुनते ॥ ता प्रसंगक वे नित्य कीर्तन करिकें ॥ श्रीआचार्यजीकों सुनावते ॥ सो एकदिन विननें कथामें श्रीठाकुरजीके चरणारविंदको माहात्म्य सुन्यो ॥ सो ताको कीर्तन करिकें विननें श्रीआचार्यजीकों सुनायो ॥ सो वह पद परमॉनंदसागरके आदिमें धर्यो हे सो पद ॥ ❀ (पद १३ मो. राग कान्हरो) ❀॥ चरणकमल वंदो जगदीश जे गोधनके संग धाये ॥ जे पदकमल धूरि लपटानें कर गहि गोपिन उर लाये ॥ १ ॥ जे पदकमल युधिष्टिर पूजित राजसूयमें चलि आये ॥ जे पदकमल पितामह भीखम भारतमें देखन पाये ॥ २ ॥ जे पदकमल शंभु चतुरानन ऱ्हदेकमल अंतर राखे ॥ जो पदकमल रमा उर भूषण वेद पारगत मुनि भाखे ॥ ३ ॥ जे पदकमल लोक त्रयी पावन वलिराजाके पीठि धरे ॥ सो पदकमल दास परमॉनंद गावत प्रेम पियूष भरे ॥ ४ ॥ ❀ ॥ यह पद गायकें विननें श्रीआचार्यजीको स्वरुप ओर प्रार्थनाको पद गायो सो पद ॥ ❀ (पद १४ मो. राग कानरो) ❀ ॥ यह मॉगो गोपीजनवल्लभ ॥ मनुपजन्म ओर हरि सेवा व्रजवसिवो दीजें मोहि सुल्लभ ॥ १ ॥ श्रीवल्लभकुलको हों चेरो वैष्णवजनको दास कहाउँ ॥ श्रीयमुनॉजल नितप्रति न्हाऊँ मन वच कर्म कृष्ण गुण गाऊँ ॥ २ ॥ श्रीमद्भागवत श्रवण सुनों नित इन तजि चित कहूं अनत न लाऊँ ॥ परमॉनंददास इह मॉगत नित निरखों कबहूँ न अघाऊँ ॥ ३ ॥ ❀ ॥ यह पद सुनिकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु मनमें जानें ॥ जो मिस करिकें परमॉनंद-

दासनें ॥ यह पद सुनायकें व्रजके दर्शनकी प्रार्थना कीनीहे ॥ तातें व्रजकों अवश्य चलनों ॥ ❀ (प्रसंग २ रो) ❀ ॥ तब श्रीआचार्यजीनें यह विचारिकें आपनें व्रज पधारिवेको उद्यम कियो ॥ सो दामोदरदासहरसाँनी, कृष्णदासमेघन, परमाँनंददास. यादवेंद्रदास, जे अडवाई तथा रसोईकी सामुग्री साथ लेकें चलते सो ॥ ओर सब वैष्णव संग ले आप व्रजकों पाँऊ धारे ॥ सो आवत मार्गमें विन परमाँनंददासको गाँम कंनोज आयो ॥ तब विन परमाँनंददासनें आपसों विनती कीनीं ॥ जो महाराज मेरे घर पधारिये ॥ आपके अनुग्रहतें मेरो भाग्य तो सिद्ध भयो हे ॥ अब मेरो घर हू आप पावन करिये ॥ तब श्रीआ-चार्यजी आपतो कृपानिधाँन भक्तमनोरथ पूरक आप कृपा करिकें विनके घर पाँऊं धारे ॥ सो तहाँ विन परमाँनंददासनें आपकी सेवा आछीभाँतिसों कीनीं ॥ पाछें श्रीआचार्यजीनें रसोई करि श्रीठाकुरजीकों भोग समर्पिकें भोग सराय आप भो-जन करिकें गादीउपर विराजे ॥ तब आपनें परमाँनंददासकों कह्यो ॥ जो परमाँनंददास कछू भगवदयश गाओ ॥ तब विन नें मनमें विचाऱ्यो ॥ जो या समें श्रीआचार्यजी आपको मन-तो व्रजमें श्रीगोवर्द्धननाथजीके पास हे ॥ तातें विरहको पद एसो गाउँ जामें एक क्षणहू कल्प समाँन जाय ॥ एसें विचारिकें विननें गायो सो पद ॥ ❀ (पद १५ मो. राग सोरठ) ❀ ॥ हरि तेरी लीलाकी सुधि आवे ॥ कमलनयन मनमोहन मूरति मन मन चित्र बनावे ॥ १ ॥ एकवार जाहि मिलत मया करि सो केसें विसरावे ॥ मुख मुसिकानि नेंक अवलोकनि चाल म-नोहर भावे ॥ २ ॥ कबहूँक निविड तिमिर आलिंगन कबहूँक पिक सुर गावे ॥ कबहूँक संभ्रम क्वासि क्वासि कहि संग हीन उठि धावे ॥ ३ ॥ कबहूँक नेंन मूँदि अंतरगति मणिमाला प-

हिरावे ॥ परमानंद प्रभु श्याम ध्यान करि एसें विरह गमावे ॥ ४ ॥ ❀ ॥ सो यह पद जब परमाँनंददासजीनें आपके आगें गायो ॥ सो सुनिकें आप श्रीआचार्यजीकों मूर्छा आई ॥ सो जा लीलाको पद हतो ता लीला विषें आप निमग्न भये ॥ सो देहानुसंधान हू न रह्यो ॥ सो आपकों तीनदिन ताँई मूर्छा रही ॥ तव दामोदरदास प्रभृति सगरे सेवक आपके दर्शन् करें ॥ ओरपासे वेसेंही वेठे रहे ॥ सो जब चतुर्थदिनके प्रातः-काल आप पाछें सावधाँन भये ॥ तब सब वैष्णव प्रसन्न भये॥ तब परमाँनंददासजी मनमें डरपे ॥ जो फेरी एसो पद न गाऊँ॥ तापाछें विननें सूधे पद करिकें गाये ॥ सो पद ॥ ❀ (पद १६ मों. राग बिलावल) ❀ ॥ माईरी हों आनंद गुण गाउँ ॥ गोकुलकी चिंतामणि माधो जोइ माँगों सोइ पाऊँ ॥ १ ॥ जबतें कमलनयन व्रज आये सकल संपदा बाढी ॥ नंदरायके द्वारें देखो अष्ट महासिधि ठाढीं ॥ २ ॥ फूले फले सकल वृंदावन काँमधेनु दुहि लीजे ॥ माँगे मेघ इंद्र बरसावे कृष्ण कृपातें जीजे ॥ ३ ॥ कहति यशोदा सखीयन आगें हरि उत्कर्ष जनावे ॥ परमाँनंददासको ठाकुर मुरलीमनोहर भावे ॥ ४ ॥ ❀ ॥ यह पद गायो ॥ तापाछें संझाकों एक पद ओर गायो सो पद ॥ ❀ (पद १७ मो. राग गोडी) ❀ ॥ विमल यश वृंदावनके चंद्र को ॥ कहा प्रकाश सोम सूरजको जो मेरे गोविंद को ॥ १ ॥ कहति यशोदा सखीयन आगें वैभव आनंद-कंद को ॥ खेलत फिरत गोप बालक संग ठाकुर परमाँनंद को ॥ २ ॥ ❀ ॥ यह पद गाये ॥ पाछें परमाँनंददासजीनें फेरि एकदिन गाये सो पद ॥ ❀ (पद १८ मो. राग सारंग)❀॥ चलिरि नंदगाँम जाय बसियें ॥ खरिकें खेलत व्रजचंद्रसों हसियें ॥ १ ॥ वसत वर्तेन सबें सुख माई ॥ कठिन यह हे जो दूर

कन्हाई ॥ २ ॥ माँखन चोरत डुरि डुरि देखो ॥ सजनीं जन्म सफल करि लेखो ॥ ३ ॥ जलचर लोचन छिनु छिनु प्यास ॥ कठिन प्रीती परमाँनंददास ॥ ४ ॥ ❀ ॥ या पदमें परमाँनंददासनें गायो ॥ जो (चलिरि नंद गाँम जाय वसिये) सो सुनिकें आप श्रीआचार्यजी व्रजकों त्वरा करि पधारे॥ ❀ (प्रसंग ३रो) ❀ पाछें आप श्रीआचार्यजी कनोजतें व्रजकों पधारे ॥ तव सब वैष्णव आपके संग हे ॥ तब परमाँनंददासजी हूं संग हे ॥ तव प्रथम आप श्रीआचार्यजी श्रीगोकुल पधारे ॥ सो श्रीगोकुल आवतहीं आपनें श्रीयमुनाँजीमें स्नान करिकें तीरके उपर छोंकरके नीचें जहाँ आपकी बेठक हे ॥ तहाँ रात्रिकों विश्राम ओर-रसोई करिवेकी ठोर हे ॥ तहाँ आपको घर हतो सो जब आप श्रीगोकुल आवते तब वहाँ उतरते ॥ सो यह ॥ भीतरकी वेठक कहीजात हे ॥ तहाँ आप बिराजे ॥ पाछें सब वैष्णवननें श्रीयमुनाँजीनें स्नान कियो ॥ तब परमाँनंददासजीनें हूँ स्नान करिकें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके आगें श्रीयमुनाँजीके यश वर्णन किये सो पद ॥ ❀(पद १९ मो. राग रामकली)❀॥ श्रीयमुनाँजी यह प्रसाद हों पाऊँ ॥ तुमरे निकट रहों निशिवासर रॉम कृष्ण गुण गाऊँ ॥ १ ॥ मज्जन करों विमल पावन जल चिंता कलह बहाऊँ ॥ तुमरी कृपा भाँनुकी तनया हरिपद प्रीति वढाऊँ ॥ २ ॥ विनती करों यह वर माँगों अधम संग विसराऊँ ॥ परमाँनंद चारि फल दाता मदनगुपाल लडाऊँ ॥ ॥ ३ ॥ ❀ (पद २० मो. राग रामकली) ❀ ॥ श्रीयमुनाँजी दीन जॉनि मोहि दीजे ॥ नंदको लाल सदावर माँगो सब गोपिनकी दासी कीजे ॥ १ ॥ तुम हो परम कृपाल दयानिधि संतजनन सुख कारी ॥ तिहारे वश वर्तत राधावर तट क्रीडत गिरिधारी ॥ २ ॥ व्रजनारी सब खेलत हरि संग अद्भुत रास विलासी

तिहारे पुलिन मध्य कुंज द्रुम कमल पुहप हे वासी ॥ ३ ॥ श्रमजल सहित न्हात सब सुंदरि जलक्रीडा सुख कारी ॥ माँनहुँ तारामध्य चंद्र बिराजत भरि भरि छिरकत वारी ॥ ४ ॥ राँनीजूके पाँई परों नित्त ग्रहको काज सब कीजे ॥ परमाँनंददास दासीन्हे यह रस नेननि भरि भरि पीजे ॥ ५ ॥ ❀ ॥ एसे पद आपके आगें विन परमाँनंददासजीनें श्रीयमुनाजीके तीर उपर गाये ॥ ताउपरांत श्रीआचार्यजीनें कृपा करिकें परमाँनंददासकों वाललीलाविसिष्ट श्रीगोकुलके दर्शन करवाये ॥ तव विनको एसे दर्शन भये ॥ जो व्रजभक्त श्रीयमुनाँजल भरि भरिकें ले जात हें ॥ ओर श्रीठाकुरजी मार्गमें खेलत हें ॥ या भाँतिके दर्शन भये ॥ तव तेसेही पद करिकें परमाँनंददासजीनें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुकें आगें गाये सो पद ॥ ❀ (पद २१ मो. राग बिलावल) ❀॥ यमुनाँजल घट भरि चली चंद्रावलि नारी ॥ मार्गमें खेलत मिले घनश्याम मुरारी ॥ १ ॥ नेंननसों नेंनाँ मिले मन रह्यो लुभाई ॥ मोहन मूरति जिय बसी पग धर्‌यो न जाई ॥ २ ॥ तवकी प्रीति प्रगट भई यह पहली भेट ॥ परमाँनंद एसें मिले जेंसें गुड-चेंट ॥ ३ ॥ ❀ (पद २२ मो. राग बिलावल) ❀ ॥ नेंक लाल टेकहु मेरी बहियाँ ॥ ओघट घाट चढ्यो नहीं जाई रपटति हों कालिंदी महियाँ ॥ १ ॥ सुंदर श्याम कमलदललोचन देखि स्वरूप ग्वालिन अरुझाँनी ॥ उपजी प्रीति काम अंतरगति तव नागर नागरि पहचाँनी ॥ २ ॥ हसि व्रजनाथ गह्यो कर पल्लव जेंसें गगरी गिरन न पावे ॥ परमानंद ग्वालिनी सयानी कमलनयन तन परस्यो भावे ॥ ३ ॥ ❀ ॥ एसे पद गाये ॥ तापाछें विन परमाँनंददासजीनें वाललीलाके पद वोहोत कियो ॥ ओर श्रीगोकुलको स्वरूप हू जामें आवे एसे पद किये ॥ तामेंके पद ॥ ❀ (पद २३ मो. राग कान्हरो) ❀ ॥ गावत गोपी

मधुर मृदु बॉनीं ॥ जाके भवन बसत त्रिभुवनपति राजा नंद यशोदा रॉनीं ॥ १ ॥ गावत वेद भारती गावत गावत नारदादी मुनि ज्ञानीं ॥ गावत गण गंधर्व काल शिव गोकुलनाथ माहातम जॉनीं ॥ २ ॥ गावत चतुरानन जगनायक गावत शेष सहस्रमुख रास ॥ मन वच कर्म प्रीति पद अंबुज अब गावत परमॉनंद-दास ॥ ३ ॥ ❀ (पद २४ मो. राग कानरो) ❀ ॥ यशुमति ग्रह आवत गोपीजन ॥ बासर ताप निवारण कारण वार वार कमल मुख निरखन ॥ १ ॥ चाहत पकरि देहरि उलंघन किलकि किलकि हुलसत मनहीं मन ॥ राई लोंन उतारि दुहूँकर वारि फेरि डारत तन मन धन ॥ २ ॥ लेत उठाय चाँपत हीयो भरि प्रेम विवस लागे द्रग ढरकन ॥ चली ले पलनॉ पोढावनकों अलकसाय पोढे सुंदरघन ॥ ३ ॥ देत असीस सकल गोपीजन चिरंजियो जोलों जल गंग यमुन ॥ परमॉनंददासको ठाकुर भक्तव-त्सल भक्तन मन रंजन ॥ ४ ॥ ❀ (पद २५ मो. राग हमीर) ❀ ॥ गिरिधर सबें अंगको बॉको ॥ बॉकी चाल चलत गोकुलमें छेल छबीलो काको ॥ १ ॥ बॉके चरणकमल गति बॉकी बॉको हिरदो ताको ॥ परमॉनंददासको ठाकुर कियो खोर ब्रज साको ॥ २ ॥ ❀ (पद २६ मो. राग हमीर) ❀ ॥ चिते चिते चित चोऱ्योरि माई वाके लोचन नींके ॥ वह मूरति खेलन नेंननमें लाल भावते जीके ॥ १ ॥ एकबार मुसिकाय चले जब हृदे गडे गुन नीके ॥ परमॉनंद प्रभु ऑनि मिलाओ प्रौढ वर्ष एतीके ॥ २ ॥ ❀ ॥ असे पद बिन परमॉनंददासनें श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके आगें श्रीयमुनॉ किनारे बोहोत गाये ॥ तापाछें श्रीगोकुलके दर्शन करिकें बिन परमॉनंददासकों श्रीगोकुल उपर बोहोत आसक्ति भई ॥ तब एक एसो पद गायो ॥ जामें श्रीआचार्यजी ओर श्रीठा-कुरजीकीप्रार्थना कीनीं ॥ जो मोकों श्रीगोकुलमें आपके चरणार-

विंदके नीचें राखो ॥ जातें सर्व लीलाविसिष्ट नित्य प्रभुनके ओर श्रीयमुनाँजीके दर्शन करूँ सो पद॥❀(पद २७मो. राग कान्हरो) ❀ यह माँगों यशोदानंदन ॥ चरणकमल मेरो मन मधुकर या छवि नैंनन पाऊँ दर्शन ॥ १ ॥ चरणकमलकी सेवा दीजे दोऊ तन राजत विद्युलता घन ॥ नंद नंदन वृषभभाँनु नंदिनीं मेरे सरवस प्राण जीवन धन ॥ २ ॥ व्रज वसिवो यमुनाँजल अचिवो श्रीवल्लभको दास इहे पन ॥ महाप्रसाद पाऊँ हरिगुण गाऊँ परमाँनंददास दासीजन ॥ ३॥ ❀ (पद २८ मो. राग कानरो) ❀॥ जव लग यमुनाँ गाय गोवर्द्धन जवलग गोकुल गाँम गुसाँई ॥ जवलग श्रीभागवतकथारस तवलग भूतल कलियुग नाँई ॥ १ ॥ जवलग रस सेवक सेवारस नंदनंदनसों प्रीति लखाँई ॥ परमाँनंद तासों हरि क्रीडत श्रीवल्लभचरणरेणु जिनिपाई ॥ ॥ २ ॥ ❀ ॥ एसे एसे अनेक पद परमाँनंददासजीनें गाये ॥ तापाछें आप श्रीआचार्यजीमहाप्रभु केतेकदिन ताँई श्रीगोकुल विराजे ॥ तापाछें सव वैष्णवनको समाज तथा परमाँनंददासकों संग लेकें आप श्रीगोवर्द्धननाथजीके दर्शनकों श्रीगिरिराज पधारे ॥ ❀ (प्रसंग ४ थो) ❀ ॥ जव आप श्रीआचार्यजी श्रीगोकुलतें चले ॥ सो उत्थापनके समें श्रीगोवर्द्धन आय पोहोंचे ॥ सो तहाँ तुरंत स्नान करिकें पर्वत उपर श्रीगोवर्द्धननाथजीके मंदिरकों पधारे ॥ तव आपके संग वे परमाँनंददासजीहू पर्वत उपर श्रीगोवर्द्धननाथजीके मंदिरमें आये ॥ सो आवतहीं विननें श्रीनाथजीकों साष्टांग दंडवत करिकें दर्शन किये ॥ तव श्रीगोवर्द्धनधरको श्रीसुख देखिकें विनके नेत्र वहाँके वहाँहीं थँमि रहे ॥ सो देखिकें श्रीआचार्यजी आप श्रीसुखतें कहें ॥ जो परमाँनंददास कछू भगवद लीलाको गाँन करो ॥ तव विननें मनमें विचारी ॥ जो

अब में कहा गाँन करूँ ॥ तब एसो पद विचार्यो ॥ जो जामें अवतारलीला, बाललिला, निकुंजलीला, चरणारविंदकी वंदनाँ, भगवत्स्वरूपको वर्णन, तापाछें श्रीठाकुरजीको माहात्म्य आवे एसे पद करिकें परमाँनंददासजीनें गाये सो पद ॥ ❀ (पद २९ मो. राग मालवगोडी) ❀ ॥ मोहन नंदरायकुमार ॥ प्रगट ब्रह्म निकुंजनायक भक्त हित अवतार ॥ १ ॥ प्रथम चरण सरोज वंदू श्यामघन गोपाल ॥ मकर कुंडल गंड मंडित चारुनेंन विशाल ॥ २ ॥ बलिराँम सहित विनोद लीला शेष शंकर हेत ॥ दास परमाँनंद प्रभु हरि निगम बोले नेत ॥ ३ ॥ ❀ ॥ इह पद गायकें ओर आसक्ति को गायो सो पद ॥ ❀ (पद ३० मो. राग पूरवी) ❀ ॥ मेरो माई माधव सों मन माँन्यो ॥ अपनों तन ओर कमलनयनको एकमेक करि साँन्यो ॥ १ ॥ लोक वेदकी काँनि तजी में न्योति आपनें आँन्यो ॥ एक गोविंद चरणके कारणें वेर सबनसों ठाँन्यो ॥ २ ॥ अब क्यों भिन्न होय मेरी सजनीं दूध मिल्यो जेसें पाँन्यो ॥ परमाँनंद मिलिहों गिरिधरसों पहली हे पहिचान्यो ॥ ३ ॥ ❀ ॥ एसे पद विननें श्रीनाथजीके आगें बोहोत गाये ॥ पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप सेंनआर्ती उपराँत ॥ श्रीगोवर्द्धननाथजीकों पोढाई आप नींचें पधारे ॥ तब परमाँनंददास हू नीचें आय ॥ तब जहाँ आपनें स्थल बतायो हतो तहाँ आई बेठे ॥ तब राँमदासजी श्रीजीके भीतरियानें परमाँनंददासकों ॥ श्रीनाथजीको प्रसाद ओर प्रसादी दूध पठवायो ॥ सो दूध वे लेवे लगे ॥ सो तातो लग्यो ॥ तब वो दूध सीरो करिकें विननें लियो ॥ तापाछें जब परमाँनंददासजीकों राँमदासजी मिले ॥ तब राँमदासजीनें परमाँनंददासजीसों पूछ्यो ॥ जो तुमकों प्रसाद तथा प्रसादी दूध आयो ॥

तब विननें कह्यो ॥ जो हाँ आयो परि दूध बोहोत तातो हतो ॥ एसो तातो दूध श्रीनाथजी केंस अरोगें ॥ तातें दूध तो सुहातो धर्‍यो चहिये ॥ तब राँमदासजी कहें ॥ जो बोहोत नींको ॥ आप भगवदीय हो ॥ जेसें आज्ञा करो ॥ तेसें करेंगे ॥ पाछें सवारे सब सेवक स्नान करिकें श्रीनाथजीके सेवामें तत्पर भये ॥ ओर श्रीआचार्यजी आपहू स्नान करिके श्रीगिरिराज उपर पधारिकें श्रीगोवर्धननाथजीकों जगाये ॥ ता समें परमाँनंददासजीनें हू उपर जायकें ॥ श्रीठाकुरजीकों जगायवेके पद गाये सो पद ॥ ❀ (पद ३१ मो. राग विभास) ❀ ॥ जागो गोपाललाल देखों मुख तेरो ॥ पाछें ग्रहकाज करों नित्य नेंम मेरो ॥ १ ॥ विगत निशा अरुणदिशा उदित भयो भाँन ॥ गुंजत अलि पंकज वन जागहु भगवाँन ॥ २ ॥ द्वार ठाढे बंदीजन करतहें पुकार ॥ वंश प्रसंग गावत हरिलीला अवतार ॥ ३ ॥ परमाँनंदस्वामीं दयालु जगत मंगल रुप ॥ वेद पुराँण पढत ज्ञान माहिमाँ अनूप ॥ ४ ॥ ❀ (पद ३२ मो. राग रामकली) ❀ ॥ ग्वालिन पिछवारें व्हें बोल सुनायो ॥ कमलनेंन प्रभु करत कलेऊ कोर न मुखलों आयो ॥ १ ॥ एक गैया वन ब्याय रही हे वछरा वहीं बसायो ॥ मुरली न लई लकुटिया न लींनीं अरवराय कोऊ सखा न बुलायो ॥ २ ॥ चक्रत भई नंदजुकी राँनीं सत्य आहि किधों सपनों पायो ॥ फूले अंग न समात रसिकवर त्रिभुवनपति शिर छत्र जो छायो ॥ ३ ॥ जाय वेठे एकांत सघन वन विविध भाँति कियो मन भायो ॥ परमाँनंद सयानीं ग्वालिन उलटि अंक गिरधर पीय पायो ॥ ❀ ॥ ये पद परनाँनंददासजीनें गाये ॥ तापाछें श्रीगोवर्द्धननाथजीके मंगलाके दर्शन किये ॥ तब विन परमाँनंददासजीनें श्रीगोवर्द्धननाथजीसों विनती करी ॥ जो महाराज आप तातो दूध क्यो अरोगत हो ॥

तब आप श्रीनाथजी हसिकें कहे ॥ जो हमकों जेसो समर्पत हें ॥ तेसो हम अरोगत हें ॥ पाछें वे परमानंददासजी कीर्तनकी सेवा करें ॥ सो नित्य समें समेंके नये नये पद करिकें श्रीगोवर्द्ध-ननाथजीकों सुनावें ॥ तब एकदिवस काहू देशको राजा सहकुटुंब व्रजयात्राकों आयो हतो ॥ सो श्रीगोवर्धननाथजीके दर्शनकों गिरिराज आयो ॥ सो वा राजानें आयकें श्रीगोवर्धन-नाथजीके दर्शन किये ॥ पाछें अपनें डेरा आयकें वानें अपनीं रॉणीसों कह्यो ॥ जो श्रीगोवर्धननाथजी ठाकुर बोहोत सुंदर हें ॥ सो तूं जाइकें दर्शन करि आउ ॥ तब रॉणीनें कह्यो ॥ जो जेसें हमारि रीति हे ॥ ताभॉतिसों दर्शन होय तो करूँ ॥ तब राजानें कह्यो ॥ जो श्रीठाकुरजीके दर्शनको कहा पडदा ॥ परि रॉणीनें कह्यो मॉन्यो नॉहीं ॥ तब राजानें आयकें श्रीआचार्य-जीमहाप्रभुनसों विनती करि ॥ जो कृपानाथ मेंतों रॉणीसों दर्शनके लियें बोहोत कहत हों ॥ परि वे मॉनत नाहीं ॥ आप जो वाकों कृपा करिकें जनॉनीं रीतिसों दर्शन करवावो तो वे-करे ॥ स्त्रीजननकों हठ बोहोत होत हे ॥ तब श्रीआचार्यजी कहें ॥ जो हॉ हॉ ॥ विनकों बुलावो ॥ प्रथम एकांतमें विनकों दर्शन करवावेंगे ॥ तापाछें सब लोग दर्शन करेंगे ॥ तब वा राजानें अपनीं रॉणीकों बुलावायकें ॥ पडदासों श्रीगोवर्द्धनना-थजीके दर्शन करवाये ॥ तब सब लोक सरकिगये ॥ इतनेमें श्रीठा-कुरजीआपनें आयके सिधद्वारके किंवाड खोलि दिहे ॥ तब सब भीड दोरिकें वा रॉणीके उपर पडी ॥ तासों वा राणीको पडदा निकसि गयो ॥ ताते वो बोहोत लज्जितभई ॥ तब राजानेंवा अपनीं रॉणीसों कह्यो ॥ जो अरि मेंनें तो तोकों पेहेलेंहीं वरज्यो हतो ॥ जो ठाकुरजीके मंदिरमें पडदा केसो ॥ ये व्रजके ठाकुर हें ॥ काहूको पडदा राखत नाहीं ॥ तब ता समें परमानंददास-

जीनें एक पद गायो ॥ जो (कोन यह खेलिवेकी वानि ॥ मदनगोपाल लाल काहूकी राखत नाँहिन काँनि) ॥ जब यह तुक परमाँनंददासजीनें गाई ॥ तब श्रीआचार्यजीनें विनतें कह्यो ॥ जो परमाँनंददासजी एसें कहो ॥ जो भली यह खेलिवेकी बानि ॥ तब विन परमाँनंददासजीनें वो तुक फिरायकें गाई सो पद ॥ ❀ (पद ३३ मो. राग देवगंधार) ❀ ॥ भली यह खेलिवेकी बाँनि ॥ मदनगोपाल लाल काहूकी राखत नाँहिन काँनि ॥ १ ॥ अपनें हाथ ले देत बनचरनकों दूध भात घृत साँनि ॥ जो वरजों तो आँखि दिखावे परघर कूदि निदाँनि ॥ २ ॥ सुनिरि यशोदा करतब सुतके यह ले माँट मथाँनि ॥ फोरि ढोरि दधि डारि अजिरमें कोंन सहे नित हाँनि ॥ ३ ॥ ठाढी हसत नंदजूकी राँणी मूंदि कमलमुख पाँनि ॥ परमाँनंददास जानत हें बोलि बूझि धों आँनि ॥ ४ ॥ ❀ ॥ यह पद परमाँनंददासनें गायो ॥ पाछें वे नित्य अनेक लीलाके पद गावें ॥ सो जो जो लीला श्रीठाकुरजी करें ॥ ता ता लीलाके वे पद गावें ॥ एकदिन सब भगवदीय ॥ राँमदासजी, कृष्णदासजी सूरदासजी, कुंभनदासजी ॥ ओर सब वेष्णव मिलिकें ॥ जहाँ परमाँनंददासजी रहते तहाँ आये ॥ सो सब भगवदीय अपनें घर पधारे देखिकें ॥ वे परमाँनंददासजी बोहोत प्रसंन भये ॥ ओर बडो भाग्य माँनें ॥ जो आज मेरे घर भगवदीय पधारे हें ॥ तातें आज मेरो बडो भाग्य सिद्ध भयो ॥ काहेतें जो श्रीठाकुरजी आप भगवदीयनके हृदेमें सदा विराजि रहे हें ॥ सो जो भगवदीयनकी कृपा होय तो श्रीठाकुरजी अनुग्रह करें ॥ ओर श्रीआचार्यजीके मार्गको तो यह सिद्धांत ही हे ॥ जो भगवदीयनकी कृपा विनाँ श्रीठाकुरजी अनुग्रह न करें ॥ जेसें एकादशीके जागरणमें श्रीनवनीतप्रियजी पधारिकें क्षत्रीकपूरकी

गोदमें बेठे ॥ सो जब वा क्षत्रीकपूरको अनुग्रह भयो ॥ तापाछें श्रीनवनीतप्रियजीने अनुग्रह कियो ॥ तापूर्व क्यों न कियो ॥ सो एसे भगवदीय कृपापात्र मेरे घर पधारे ॥ सो इनकी न्योछावर करी चाहिये ॥ परि एसो तो कछू हे नाहीं ॥ जो इनकी न्योछावर करूं ॥ तातें में अपनों आप इनपर न्योछवर करूं ॥ यह विचारिकें परमॉनंददासजीनें ता उद्देशको पद करिकें विनकों सुनायो सो पद ॥ ❀ (पद ३४ मो. राग विहागरो) ❀ ॥ आये मेरे नंदनंदनके प्यारे ॥ माला तिलक मनोहर बॉनों त्रिभुवनके उजियारे ॥ १ ॥ प्रेम सहित वस्तु उर मोंहन नेंकहूं टरत न टारे ॥ हृदे कमलके मध्य बिराजत श्रीव्रजराज दुलारे ॥ २ ॥ कहा जॉनूं को पुण्य प्रगट भयो मेरे घर जो पधारे ॥ परमॉनंद करी न्योछावर वारि वारि हों वारे ॥ ३ ॥ ❀ ॥ यह पद करिकें भगवदीयनकी भेट करि अपने आप विन पर न्योछावर भये ॥ पाछें कछू भगवदयश सुनिकें वे भगवदीय विदा भये ॥ पाछें एसी रीतिसो विन परमॉनंददासजीनं बोहोत दिन तॉइ सेवा करिकें श्रीनाथजीकों बोहोत प्रसन्न किये हते ॥ सो वे परमॉनंददासजी श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके एसे परम कृपापात्र भगवदीय हे ॥ तातें विनकी वार्तानकों पार नाहीं ॥ सो कहॉतॉई लिखिये ॥ वेष्णव सखा २ रो ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

❀ (वार्ता ३ री. वैष्णव सखा ३ रो.) ❀

❀ (अथ कुंभनदास गोरवा तिनकी वार्ता प्रारंभः) ❀

सो वे कुंभनदास श्रीगोवर्द्धनके पास यमुनॉवतो गॉम हे तहॉं रहते ॥ वा गॉमको नॉम यमुनावतो यातें भयो हे ॥ जो सारस्वतकल्पमे श्रीयमुनॉजीको प्रवाह ॥ यां गॉमके निकट वहत हतो ॥ सो ता गॉममें वे कुंभनदासजी रहते ॥ ओर परासोली चंद्रसरोवरके उपर विनकी धरती हती ॥ सो वे खेती वहॉ करते ॥

तातें वे परासोलीमें सदा बेठे रहते ॥ सो वे कुंभनदासजी श्रीगोवर्द्धननाथजीके परम कृपापात्र सखा हे ॥ परि तव श्रीगोवर्द्धननाथजीको श्रीगोवर्द्धनपर्वतमेंतें प्राकट्य नाँही भयो हतो ॥ ओर श्रीआचार्यजीमहाप्रभुजी हू व्रजमें पधारे न हते ॥ सो जव श्रीगोवर्द्धननाथजी प्रकट भये ॥ तव श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकों बुलाये ॥ तव ये भगवदीय प्रसिद्ध भये ॥ ता समें जव श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप पृथ्वीपरिक्रमाँ करत झाडखंडमें हते ॥ सो तहाँ श्रीगोवर्द्धननाथजीनें आपकों आज्ञा दीनीं हती ॥ जो हम श्रीगोवर्द्धनपर्वतमेंतें प्रकट भये हें ॥ सो तुम आयकें हमकों पधरावो ॥ ओर हमारी सेवाको प्रकार प्रकट करो ॥ तव श्रीआचार्यजी परिक्रमाँकों वहाँताँई अधूरी छोडिकें वेग व्रजमें पाँऊ धारे ॥ तव वैष्णव दामोदरदासहरसाँनी, कृष्णदासमेघन, गोविंददुवे, जगंनाथजोशी, राँमदाससिकंदरपुरके ॥ ये पाँच सेवक आपके संग हते ॥ तव श्रीगोवर्द्धनकी तरहटी आयकें साधूपाँडेके चोतरा उपर बिराजे ॥ तापीछेंको साधूपाँडेको कुटुंव सहित शरणि आयवेको ओर श्रीजीके प्रकटवेको सव प्रकार विस्तारपूर्वक साधूपाँडेकी वार्तामें कह्यो ॥ ता समें राँमदासचोहाँन पूँछरीपे रहते ॥ सो श्रीआचार्यजीके सेवक भये ॥ तिनकों आपनें श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सेवा सोंपी ॥ ओर व्रजमें आपके सेवक व्रजवासी वोहोत भये ॥ तामें कुंभनदासजी हूँ सहकुटुंव आपकी शरणि आये हे ॥ तव श्रीआचार्यजीनें गोवर्द्धनपर्वत उंपर छोटोसो मंदिर सिद्ध करवाय ॥ तामें श्रीगोवर्द्धननाथजीकों पधराये ॥ तव राँमदासचोहाँनकों सेवाकी आज्ञा दीनी ॥ तव सव व्रजवासीलोग श्रीनाथजीकों दूध, दही, माँखन, वोहोत भोग धरन लागे ॥ सो आप श्रीनाथजी अरोगते ॥ ओर राँमदासकों जो कछू भगवद इच्छातें आय प्राप्त होतो ॥

सो श्रीगोवर्द्धननाथजीकों भोग समर्पिकें आप प्रसाद लेते ॥ तब जे व्रजवासी सेवक भये हते ॥ तिनसों श्रीआचार्यजी आज्ञा दिये ॥ जो यह ठाकुरजी मेरो सरवस्वहे ॥ तातें इनको सब बातसों यत्न राखनों ओर सेवामें तत्पर रहनों ॥ ओर कुंभनदासकों तथा सब सेवकनकों आपनें आज्ञा दीनीं ॥ जो तुम देवदमनके विनप्रसादी मति लीजियो ॥ या भाँतिसों आज्ञा करिकें आप श्रीआचार्यजीनें जो पृथ्वीपरिक्रमाँ झाडखंडमें अधूरी राखी हती ॥ सो पूरी करिवेकों आप पाछे झाडखंड पधारे ॥ तब वे कुंभनदासजी श्रीआचार्यजीकी आज्ञातें नित्य यमुनाँवतातें श्रीगोवर्द्धननाथजीके दर्शनकों श्रीगोवर्द्धन आवते ॥ सो वे कुंभनदासजी कीर्तन बोहोत नींके गावते ॥ सो विनको गरो बोहोत सुंदर रहतो ॥ जब श्रीआचार्यजीनें विन कुंभनदाजीकों नाँम देकरि ब्रह्मसंबंध करवायो हतो ॥ तब विनकों सब लीलाकी स्फुर्ति भई हती ॥ सो वे कुंभवनदासजी नित्य नये पद करिकें श्रीगोवर्द्धननाथजीकों सुनावें ॥ पाछें जब श्रीगोवर्द्धननाथजी परासोलीमें कुंभनदासजीके पास पधारें ॥ तब वहाँ क्रीडा करें ॥ ओर कुंभनदासजीके साथ खेलें ॥ वार्ता करें ॥ एसी बोहोत कृपा विन कुंभनदासजीके उपर आप करें ॥ तब राँमदासजीचोहाँन श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सेवा करें ॥ सो एक समें म्लेछको उपद्रव उठ्यो ॥ तब साधूपाँडे, माणिचंदपाँडे, रामदासचोहाँन, कुंभनदास, ओर सब श्रीआचार्यजीके सेवक व्रजवासी सबन मिलिकें विचार कियो ॥ जो यह म्लेछ आयो हे ॥ सो धर्मको ओर भगवत्स्वरूपको वडो द्वेषी हे तातें कहा कर्तव्य ॥ तब सबननें कह्यो ॥ जो यामें कर्तव्य कहा पूछनों ॥ ओर अपनों विचार्यो कहा होत हे ॥ तातें श्रीगोवर्द्धननाथजीसों पूछो ॥ जो आप आज्ञा करे

सो करिये ॥ तब सबननें मिलिकें श्रीगोवर्द्धननाथजीसों पूछ्यो ॥ जो महाराज अब कहा करें ॥ जेसें आप आज्ञा करो तेसें करें ॥ तब आपनें कह्यो ॥ जो आपन टोडके घनाँमें चलेंगे ॥ तब विन सेवकननें एक बडो भेंसा हतो सो मंगवायो ॥ तापर श्रीगोवर्द्धननाथजी विराजिकें टोडके घनाँमें पधारे ॥ तब सब सेवक संग आये ॥ ता समें आपको एक ओरतें तो राँमदासचोहाँन पकरें हे ॥ ओर एक ओरतें कुंभनदास पकरें हे ॥ ओर सब सेवकतो संग लगे जात हे ॥ सो वहाँ घनाँमें जाय काँटानमें वेंठे ॥ तासों सबनके वस्त्र फटे ॥ ओर शरीरमें काँटेहू लागे ॥ तातें दुःख बोहोत पाये ॥ सो वा घनाँके भीतर एक तलाव हे ॥ तहाँ रुखनको एक चोक हे ॥ तहाँ बडे रुखनके नीचें श्रीगोवर्द्धननाथजी आप विराजे ॥ तब कछू सामुग्री हती ॥ सो राँमदासजीनें भोग धरी ॥ ओर जलको करुवा भरिकें आगें धर्यो ॥ सो भोग धरिकें सब वेंठे हें ॥ तब श्रीगोवर्द्धननाथजीनें कुंभनदाससों कह्यो ॥ जो कुंभनदास कछू गावो ॥ ता समें वे कुंभनदासजीतो मनमें कुढि रहे हते ॥ तासों ता समे एक पद गायो सो पद ॥ ❀ (पद १ लो. राग सारंग) ❀ ॥ भावत हे तोहि टोडको घनो ॥ काँटा लगें गोखरू वूडें फाट्यो जात यह तनों ॥ १ ॥ सिंध कहा लोंखडीको डर यहाँ वानिक कहा वन्यों ॥ कुंभनदास तुम गोवर्द्धनधर वह कोंन राँड ढेढनीको जन्यो ॥ २ ॥ ❀ यह पद जब विन कुंभनदासजीनें गायो ॥ सो सुनिकें आप श्रीगोवर्द्धननाथजी मुसिकाये ॥ इतनमें श्रीगोवर्द्धनतें समाचार आये ॥ जो वा म्लेछकी फोज आई हती ॥ सो पाछी भाजि गई ॥ तब श्रीगोवर्द्धननाथजी फेर तहाँतें श्रीगोवर्द्धन पर्वत उपर अपनें मंदिरमें पधारे ॥ ❀ (प्रसंग २ रो) ❀ ॥ जब श्रीगोवर्द्धननाथजी पर्वत उपर अपने मंदिरमें विराजे ॥ तब

व्रजके लोकनकों बोहोत हर्ष भयो ॥ जो धंन्य ये देवदमन हें ॥ जिनके प्रतापतें एसो संकट मिटि गयो ॥ कछू जॉन्यो हू न पन्यो ॥ तब कुंभनदासजी प्रसन्न होयकें ॥ श्रीगोवर्द्धननाथजीके आगें माहात्म्यके पद गाये ॥ सो पद ॥ ❀ (पद २ रो. राग श्रीराग ताल चरचरी) ❀ ॥ जयति जयति श्रीहरिदासवर्य धरणें ॥ वारि वृष्टि निवारि घोप आरति टारि देवपति अभिमॉन भंग करणें ॥ १ ॥ जयति पट पीत दॉमिन रुचिरवर मृदुल अंग सॉवल सजल जलद वरणें ॥ कर धर वेंणु अधर गॉन कलरव सुशब्द सहज व्रज युवती जन चित्त हरणें ॥ २ ॥ जयति वृंदा विपिन भूमि डोलन अखिल लोक वंदन अंबुज रुहसि चरणें ॥ तरणि-तनया तीर विहार नंदगोपकुँमार तनय कुंभनदास तुवसी शरणे ॥ ३ ॥ ❀ (पद ३ रो. राग श्रीराग) ❀ ॥ कृष्ण तरणि-तनया तीर रासमंडल रच्यो अधर कर मधुर सुर वेंणु वाजे ॥ युवतीजन युथ संग नितर्त अनेक अंग निरखी अभिमॉन ताजि कॉम लाजे ॥ १ ॥ श्यामतन पीत कौशेय सुभ पद नखन चंद्रिका सकल भुव तिमिर भाजे ॥ ललित अवतंस भ्रूव धनुप लोचन चपल चितवनी मानों मदन बॉन साजे ॥ २ ॥ मुखर मंजिर कटि किंकणी क्वणित रव वचन गंभीर जनु मेघ गाजे ॥ दासकुंभन नाथ हरिदास वर्य धरण नख शिख स्वरूप अद्भुत निराजे ॥ ३ ॥ ❀ ॥ एसे वाहोत पद गाये ॥ पाछें नित्य नये नये पद करिकें कुंभनदासजी श्रीनाथजीकों सुनावें ॥ तातें विनके पद बोहोत भये ॥ सो जगतमें प्रसिद्ध भये ॥ सो सब लोक विनके पद गायवेलेगे ॥ तब कोईके पाससुं एककलामतिनें पद सुन्यो सो वानें सीख्यो ॥ सो वो फतेपुर सीकरीमें गयो ॥ जहाँ देशाधिपतिके टेरा बोहोत रहते ॥ तहॉ जायकें वानें देशाधि-पतिके आगें कुंभनदासजीको कियो भयो पद गायो ॥ सो

सुनिकें वा हाकिमको चित्त वा पदमें गडिगयो ॥ तातें वानें माथो धुनायो ओर कह्यो ॥ जो एसेभी महापुरुष होगये ॥ जो जिसकों एसे भगवदके दर्शन होतेथे ॥ तब वा कलामतनें अर्ज करी ॥ जो अजी खाविंद वे अभी मोजूद हे ॥ सो सुनिकें वो देशाधिपति बोहोत प्रसन्न भयो ॥ ओर वानें कलामततें पूछ्यो ॥ जो ओ किधरहें ॥ तब वानें कह्यो ॥ जो खाविंद वो गोवर्द्धनपर्वतके पास यमुनाँवता गाँम हे तहाँ रहते हें ॥ तब वा देशाधिपतिनें कह्यो ॥ जो उनकों इधर बुलाओ ॥ हम उनसें मिलेंगे ॥ पाछें वा देशाधिपतिनें अपनें प्रधानसूँ कहिकें मनुष्य ओर असावारी विन कुंभनदासजीकों बुलायवेकों पठाये ॥ सो यमुनाँवता आये ॥ तब कुंभनदासजी घरमेंतो हते नाहीं ॥ वे परासोली अपनें खेत उपर बेठे हते ॥ तातें विनके घरको मनुष्य संग आयकें कुंभनदासजीकों बतायदीनें ॥ तब देशाधिपतिके मनुष्यननें आयकें ॥ कुंभनदासजीसों कह्यो ॥ जो तुमकों देशाधिपतिनें याद किया है ॥ तब विननें कह्यो ॥ जो होंतो भैया कछू चाकर नाँहीं कछू काँमदार नाँहीं ॥ तातें मेरो देशाधिपतिकों कहा काँम पऱ्यो हे ॥ तब विन दूतननें कह्यो ॥ जो बाबासाहेब हमतो काँममें कुछ समझत नहीं ॥ हमकों तो देशाधिपतिका हुक्म है ॥ जो कुंभनदासजीकों इधर ले आवो ॥ वास्ते यह पालकी है, घोडा है ॥ जापर चाहो तापर बेठिकें आप चलिये ॥ हमतो आये हें सो आपकों लेकरकें जाँयगे ॥ तब कुंभनदासजीनें मनमें बिचारी ॥ जो अब वहाँ गये बिनाँ निर्वाह नाँहीं ॥ तब वे तत्काल जोडा पहरिकें चलें ॥ तब जो विनकों लेंन आये हते तिननें कह्यो ॥ जो बाबासाहेब आप असवारीपर बेठिकें चलिये ॥ तब विननें कह्यो ॥ जो भैया मेंतो असवारीपर कभी बेठ्यो नाँहीं ॥ पाछें वेसेंही चले सो फतेपुरसीकरी जहाँ देशाधिपतिके डेरा हते ॥ तहाँ

आय पोहोंचे ॥ तब विन मनुष्यननें जाय खबरि करवाई ॥ जो कुंभनदासजी आये हें ॥ तब देशाधिपतिनें कुंभनदासकों भीतर अपनें पास बुलवाये ॥ तब विनकों देशाधिपतिके मनुष्य प्रणाम करवावत ले चले ॥ सो जब वे हाकिमके नजीक जाय पोंहोंचे ॥ तब वा देशाधिपतिनें कह्यो ॥ जो कुंभनदासजी आओ ॥ तब वे आगें जायकें ठाढे भये ॥ तब वा हाकिमनें कह्यो ॥ जो तुम बेठो ॥ तब वे बेठे ॥ सो वह स्थल ऐसो हतो ॥ जो जडावकी रावटी तामें मोतिनकी झालरी लगी हें ॥ तामें वे कुंभनदासजी बेठे ॥ परि विनके मनमें बोहोत दुःख लाग्यो ॥ जो यासों तो हमारे व्रजकेही सनके रूख आछे ॥ जिनमें श्रीगोवर्धननाथजी आप खेलें हें ॥ इतनेंमें वो देशाधिपति बोल्यो ॥ जो कुंभनदास हम सुनते हें ॥ जो तुमनें पद बोहोत अच्छे किये हैं ॥ तुमरे उपर कन्हैयाकी वडी मेहेरबाँनगी हे ॥ इधर जो तुमकों मेंने बुलवाया हे ॥ सो कुछ सुननेके वास्ते बुलाया है ॥ वास्ते कुछ पद हमकोंभी इसवक्त सुनाओ ॥ तब कुंभनदासजी अपनें मनमें तो कुढि रहे हते ॥ तातें विचारे ॥ जो यहाँ कहा गाऊँ ॥ मेरी वाँणिके भोक्ता तो श्रीगोवर्द्धनधर हें ॥ परि कछू गाये विनाँ ये गोंहन छोडेगो नाहीं ॥ तातें एसो गाऊँ जो इह कुढिकें फेरि कभी मेरो नाँम न लेई ॥ जो याके संगतें मेरे प्रभु न छूटें ॥ तातें कछू कठोर वचन कहूँ ॥ तासों जो यह बूरो मॉनेगो तो मेरो कहा करेगो ॥ तब विन कुंभनदासजीके मनमें यह आई जो (जाको मनमोहन संग करे ॥ एको केस खिसे नहीं शिरतें जो जग वेर परे) यह विचारिकें एक नयो पद करिकें ॥ विननें वा ठोर गायो ॥ सो पद ॥ ❀ (पद ४ थो. राग सारंग) ❀ ॥ भक्तनको कहा सीकरी कॉम ॥ आवत जात पन्हैयाँ टूटीं विसरिगयो हरिनॉम ॥

॥ १ ॥ जाको मुख देखे दुख लागत ताकों करनों पर्‍यो प्रणाम कुंभनदास लाल गिरधर विनु यह सब झूठों धाँम ॥ २ ॥ ❀ ॥ यह पद गायो ॥ सो सुनिकें देशाधिपति अपनें मनमें कुढ्यो ॥ फेरि मनमें विचार्‍यो ॥ जो इनकों कोइ बातकी लालच होय तो ये मेरी खुसामादि करें ॥ इनका तो अपनें परमेश्वरसें सच्चा स्नेह है ॥ पाछें वा देशाधिपतिनें कुंभनदासकों सीख दीनीं ॥ तब कुंभनदासजी वहाँतें चले ॥ सो मार्गमें आवत मनमें अतिक्लेश भयो ॥ जो कब प्रभुनको श्रीमुख देखूँ ॥ सो एसें विचार करत कुंभनदासजी आवत हते ॥ ता समें गाये ॥ सो पद ॥ ❀ (पद ५ मो. राग धनाश्री) ❀ ॥ कब हों देखिहों इन नेंननु ॥ सुंदर श्याम मनोहर मूरति अंग अंग सुख देंननु ॥ १ ॥ वृंदावन विहार दिन दिन प्रति गोप वृंद संग लेंननु ॥ हसि हसि हरखि पतौवनि पीवनि बाँटि बाँटि पय फेंननु ॥ २ ॥ कुंभनदास कितेदिन बीते किये रेनि सुख सेननु ॥ अब गिरधर विन निस अरु वासर मन न रहत क्योंहूँ चेंननु ॥ ३ ॥ ❀ ॥ सो यह पद कुंभनदासजी मार्गमें गावत आये ॥ सो आयकें श्रीगोवर्द्धननाथजीके दर्शन किये ॥ सो दोय दिन दर्शन न भयो हतो ॥ तातें विन कुंभनदासजीकों माँनो दोय युग बीतें ॥ सो श्रीजीको श्रीमुख देखत मात्रहीं सब दुःख बिसरि गये ॥ तब गाये ॥ सो पद ॥ ❀ (पद ६ ठो. राग धनाश्री) ❀ ॥ नेंनभरि देखे नंदकुमार ॥ तादिनतें सब भूलिगयो हे विसर्‍यो पति परिवार ॥ १ ॥ विषय विषें हों विकल भईहों अंग अंग सब हारि ॥ तातें सुधि हे साँवरी मूरति लोचन भरि भरि वारि ॥ २ ॥ रुपराशि परमित नहीं माँनों केंसें मिलें कन्हाई ॥ कुंभनदास प्रभु गोवर्द्धनधर मिलो बहुरि री माई ॥ ३ ॥ ❀ (पद ७ मो. राग सारंग) ❀ ॥ हिलगन कठीन हे

या मनकी ॥ जाकेलियें देखि मेरी सजनी लाज गई सब तनकी ॥ १ ॥ धरम जाऊ अरु हसो लोग सब अरु गावो कुलगारी ॥ सो क्यों रहे जाही बिनु देखें जो जाको हितकारी ॥ २ ॥ रस लुब्धक एक निमिष न छाँडत जो अधीन मृग गानें ॥ कुंभनदास सनेह परम यह गोवर्द्धनधर जाँनें ॥ ३ ॥ ❀ ॥ एसे बोहोत पद विन कुंभनदासजीनें गाये ॥ तब श्रीठाकुरजी वडे प्रसंन भये जो धंन्य ए हे ॥ जिनकों मो बिन ओर कछू सुहात नाहीं ॥ ❀ (प्रसंग ३ रो) ❀ ॥ एकसमें राजा माँनसिंघ सबठोर दिग्विजय करिकें आगरेके देशाधिपतिके पास आये ॥ सो जब वापेंतें शीख माँगिकें अपनें देशकों चले ॥ तब मनमें विचार्‍यो जो बोहोतदिन पाछें यहाँ आयेहें ॥ तातें मथुरा वृंदावन होयकें घरकों चलेंगे ॥ सो यह निश्चय करिकें वा राजानें आगरेतें कूँच कियो ॥ सो प्रथम मथुरा आये ॥ तहाँ विश्रांतघाट स्नान करिकें ॥ वे केशवरायजीके दर्शन करिकें वृंदावन गये ॥ तब वहाँके सब महंतननें जाँनीं ॥ जो आज राजा माँनसिंघे हमारे यहाँ श्रीठाकुरजीके दर्शनकों आवेंगे ॥ तातें विननें अपनें श्रीठाकुरजीकों आछे आछे भारी जरीनके वागा बोहोतसे आभरण पेहेराये ॥ पिछवाई चंदोवा सब जरीनके बाँधे ॥ इतनेंमें राजा माँनसिंघजी दर्शनकों पधारे ॥ सो एक वडे महंतके मंदिरमें आये ॥ सो भीतर आयकें श्रीठाकुरकों दंडवत करि भेट धरी ॥ तब उष्णकालके दिन हते ॥ तासों बोहोत गरमीं पडे ॥ ताते राजा माँनसिंघतें वहाँ ठाढो रह्यो न गयो ॥ सो एसे चार पाँच जो वडे स्थल हते ॥ तहाँ सब ठोर दर्शन करिकें वे राजाजी बिदा होयकें अपनें डेरा आये ॥ सो आयकें यह विचारे ॥ जो होयतो यहाँतें अबहीं कूँच करें ॥ तब राजा वहाँतें तुरंत असवार होयकें चले ॥ सो तीसरेप्रहर गोवर्द्धन गाँममें आय पोंहोंचे ॥

तहाँ माँनसीगंगाके उपर श्रीहरदेवजीको मंदिर हे ॥ तहाँ आय राजानें दर्शन किये ॥ सो वहाँहू जेसें वृंदावनीननें वडे ठाठ वनाये हते ॥ तेसें इननेंहूँ राजाकों आवत जाँनिकें वनाय राखे हते सो राजा माँनसिंघ हरदेवजीके दर्शन करि भेट धरिकें तहाँतें चले ॥ तव काहूनें कह्यो ॥ जो राजाधिराज यहाँ श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीगोवर्द्धनपर्वतके उपर विराजत हें ॥ सो ठाकुर वोहोत सुंदर हें ॥ तहाँ दर्शनकों आप चलोगे ॥ तव राजानें कह्यो ॥ जो हाँहाँ तहाँतो अवश्य चलनों ॥ वे ठाकुर तो सव व्रजके राजा हें ॥ तातें विनके दर्शन तो अवश्य करनें ॥ तव राजाजी वहाँतें चले ॥ सो गोपालपुर आये ॥ तहाँ आयके वहाँके सेवकनसों राजानें पुछवाइ ॥ जो दर्शनको कहा समों हे ॥ तव काहूनें कह्यो ॥ जो राजाजी उपर तो वहाँ उत्थापनके दर्शनतो होयचुके ॥ अव तो भोगके दर्शन होंयगे ॥ यह सुनिकें राजा माँनसिंघ श्रीगोवर्द्धननाथजीके दर्शन करिवेकों श्रीगिरराज उपर चढे ॥ परि उष्णकालके दिन ओर मार्गमें श्रमित होतेभये दूरके चले आये हते ॥ सो गरमीतें राजा वोहोत व्याकुल होयगये ॥ इतनेंमें भोगके दर्शनके किंवाड खुले ॥ तव सेवकजन माँनपूर्वक राजा माँनसिंघकों भीतर मणिकोठामें दर्शन करवायवेकों लेगये ॥ तिन दिननमें श्रीजीकी सेवा वडे वैभवसों होत हती ॥ ओर वडो मंदिर सिद्ध भयो हो ॥ तामें श्रीगोवर्द्धननाथजीके आगें गुलावजलसों छिरकाव होयकें निजमंदिर, मणिकोठा, तिवारी ॥ सव जलमय होय रहे हे ॥ तासमें राजा माँनसिंघनें भीतर जायकें श्रीगोवर्द्धननाथजीके दर्शन किये ॥ ओर जो वे गरमीतें व्याकुल भये हते ॥ सो वा शीतलताईतें चेंन होयगयो ॥ ओर श्रीनाथजीको मुखचंद्र देखिकें राजाकों वहुत आनंद भयो ॥ ओर आपनें मनमें कह्यो ॥

जो साक्षात् श्रीकृष्ण वृंदावनचंद्र श्रीगोवर्द्धननाथजी जो आगें मेनें श्रीभागवतमें सुने हे ॥ सो आज प्रत्यक्ष देखे ॥ तातें मेरो भाग्य ओर आजको दिन धन्य भयो हे ॥ एसें मनमें विचारिकें राजा वोहोत प्रसन्न भये ॥ तब वह भोगके दर्शनको समों हो ॥ सो तो प्रभुनकी राजलीलाको समों हो ॥ तातें प्रभु विराजे हे ॥ आगें बीन मृदंग बाजरहे हे ॥ ओर कुंभनदासजी ठाढे कीर्तन करत हे ॥ सो सुनिकें राजा माँनसिंघको मन वा कीर्तनमें गडिगयो ॥ जेसोइ श्रीनाथजीको कोटिकंदर्पलावण्य रुप हे ॥ ते सोई कीर्तन वा समें कुंभनदासजी करत हते सो पद ॥ ❀ (पद ८ मो. राग नट) ❀ ॥ रुप देखि नेंना पलक लागें नहीं ॥ गोवर्द्धनधरके अंग अंग प्रति निरखि नेन मन रहत तहीं ॥ १ ॥ कहा कहों कछू कहत न बनिआवे चित चोर्‌यो माँगिवे दही ॥ कुंभनदास प्रभुके मिलनकी सुंदर बात सखीयनसों कही ॥ ❀ (पद ९ मो. राग श्रीराग) ❀ ॥ आवत मोंहन मन जो हर्‌यो हो ॥ हों अपनें ग्रह सचुसों बेठी निरखि वदन अँचरा विसर्‌यो हो ॥ १ ॥ रुपनिधॉन रसिक नंदनंदन निरखि नेंन धीरज्ज न धर्‌यो हो ॥ कुंभनदास प्रभु गोवर्द्धनधर अंग अंग प्रेम पीयूप भर्‌यो हो ॥ २ ॥ ❀ ॥ एसे पद कुंभनदासजी गावत हते ॥ इतनेंमें भोगके दर्शन होयचुके ॥ तब राजा माँनसिंघजी दंडवत करिकें अपनें डेराकों गये ॥ तापाछें वे कुंभनदासजी संझा तथा सेनआर्तीके दर्शन करिकें अपनी सेवातें पोंहोंचिकें अपने घर गये ॥ अब राजा माँनसिंघ अपनें डेरा जायकें अपनें पासवान मनुष्य हते ॥ तिनसों श्रीगोवर्द्धननाथजीके दर्शनकी ॥ शृंगारकी वार्ता कहिवेलागे ॥ ओर कह्यो ॥ जो श्रीठाकुरजीके आगें वे कोंन गावत हते ॥ एसे विननें विष्णुपद गाये हें ॥ जो कछू कहिवेमें न

आवे ॥ तब काहूनें कह्यो ॥ जो राजाधिराजजी वे व्रजवासी हें ॥ कुंभनदास विनको नाँम हे ॥ वे वडे त्यागी हें ॥ आपनें सुनींही होयगी ॥ जो देशाधिपतिसों वे मिले हते ॥ तब वो विनको गाँम देत हतो ॥ सोउ विनेनें न लियो ॥ तब राजा माँनसिंघनें कह्यो ॥ जो हमहूँ विनसों मिलें तो आछो ॥ तापाछें राजा माँनसिंघजी रात्रिको काँसो अरोगिकें पोढे सो वे सवारें उठे ॥ सो स्नान करि श्रीगिरराजकी परिक्रमाँकों निकसे ॥ सो परासोली आये ॥ ताहाँ वे कुंभनदासजी न्हायकें वेठे हे ॥ इतनेंमें श्रीनाथजी आप पधारे सो श्रीमुखतें कहे ॥ जो कुंभनाँ हों तोसों एक वात कहत हों ॥ इतनेंमें तो राजा माँनसिंघ आये सो विन कुंभनदासजीकों प्रमाण करिकें वेठे ॥ ओर श्रीनाथजी तो तहाँ तें भाजिकें दूर जाय ठाढे भये ॥ सो आपकों एक कुंभनदासजी देखें हें ॥ ओर कुंभनदासकी भतीजी देखे हे ॥ तासों विन कुंभनदासजीकी द्रष्टि तो श्रीनाथजीके आडी गई ॥ सो जहाँ श्रीनाथजी ठाढे हते ॥ तहाँवें देखीवो करे हें ॥ तब विनकी भतीजी वोली ॥ जो बाबा राजा वेठे हें ॥ ताके अडी तो देखो ॥ ओर विनको सन्मान करों ॥ तब कुंभनदासजीनें कह्यो ॥ जो अरी में कहा करूँ ॥ वेठेहें तो सुखेन वठो ॥ परि वे श्रीजी जो मोसों वात कहत हते ॥ सो भाजिगये ॥ सो अब न जानिये वे कहेंगे के न कहेंगे ॥ तब श्रीनाथजीनें दूरितें कह्यो ॥ जो हाँ हाँ में वो वात कहूँगो ॥ तब वे कुंभनदासजी प्रसन्न भये ॥ तब राजाजीके आडी देखिकें विननें सन्माँन कियो ॥ पाछें कुंभनदासजीनें ॥ अपनीं भतीजीतें कह्यो ॥ जो अमुकी आरसी तो ल्याऊ ॥ जातें तिलक करूँ ॥ तब वानें कही ॥ जो वावा आरसीतो पडिया पी गई ॥ तब राजानें वा छोरिसों पूछ्यो ॥ जो अरी छोरी पडिया कहा पी गई ॥ तब वह कठोटि लेकें

पाँनीकों गई ॥ सो वामें वो पाँनी ल्याइकें कुंभनदासजीके आगें लाय धरी ॥ तब वामें देखिकें वे तिलक करिवेलगे ॥ इतनेंमें राजा मॉंनसिंघनें अपनीं सोंनाँकी आरसी हती ॥ सो लेकें विनके आगें धरी ॥ ओर कह्यो ॥ जो बाबासाहेब यासों तिलक करिये ॥ तब कुंभनदासजी बोले ॥ जो अरे भैया याकों हों धरूं कहाँ ॥ हमारे तो छाँनके घर हें ॥ कोऊ याके पीछें हमारो जीवहू लेलेई ॥ तातें हमारे यह नाहीं चाहिये ॥ तब राजानें एक थेली मोहोरनकी विनके आगें धरी ॥ तबहू विननें कह्यो ॥ जो भैया यहतो हमारे काँमकी नाहीं ॥ हमारे तो खेती हे ॥ ताको धाँन उपजे हे ॥ सो हम खात हें ॥ ओर कछू हमारे चहियत नाँहि ॥ तब राजानें कह्यो ॥ जो आपको यह गाँम हे ॥ ताको लिख्यो करि देउँ ॥ जो यह आपकी भेट हे ॥ सो आप राखो ॥ हमकों याको हाँसील कछु मति दीजो ॥ तब कुंभनदासजीनें कह्यो ॥ जो भैया होंतो ब्राह्मण नाहीं ॥ जो तुमारो उदक लेउँ ॥ तुमारें देंनों होय तो काहू ब्राह्मणकों देउ ॥ मेरेंतो कछु चहीयत नाहीं ॥ तब फेरि राजानें कह्यो ॥ जो कछूतो आप मोकों आज्ञा करो ॥ तब विननें कह्यो ॥ जो हमारो कह्यो करोगे ॥ तब राजानें कह्यो ॥ जो आप आज्ञा करोगे सो करुँगो ॥ तब विन कुंभनदासजीनें कह्यो ॥ जो फेरि आप कृपा करिकें हमारे यहाँ मति पधारियो ॥ तब राजा माँनसिंघनें कह्यो ॥ जो धँन्य हो ॥ में सगरी पृथ्वी में फिर्‍यो तामें मायाके भक्त तो बोहोत देखे ॥ परि ठाकुरके भक्त तो एक आपहीकूं देखे ॥ यह कहिकें राजा कुंभनदासजीको दंडवत करिकें ऊठि चले ॥ तापाछे श्रीनाथजीनें आयकें जो बात कहत हते सो कुंभनदासजीसों कही ॥ ओर बोहोत प्रसन्न भये ॥ फेरि कुंभनदासजी गिरिराज उपर आयकें ॥ श्रीनाथजीकी सेवामें

तत्पर भये ॥ ❀ (प्रसंग ४ थो) ❀ ॥ ओर एकसमें वृंदावनके महंत हरिवंश प्रभृति कुंभनदासजीकों मिलिवे आये ॥ सो वे यह जाँनिकें आये ॥ जो वे वडे महापुरुष हें ॥ श्रीठाकुरजी साक्षात् विनसों वातें करत हें ॥ ओर जो विनकी काव्य सुनीहे ॥ सो कीर्तन बोहोत सुंदर किये हें ॥ एसें पद श्रीठाकुरजीके साक्षात्कार विनाँ न होयँ ॥ यह जाँनिके वे सव कुंभनदासजीकों आय मिले ॥ तव वे बोहोत प्रसन्न भये ॥ ओर कहें ॥ जो कुंभनदासजी आपनें श्रीठाकुरजीके जो पद किये हें ॥ सो तो हमनें बोहोत सुने हें ॥ परि आपको कियो श्रीस्वामिनींजीको कोइ पद हमनें नहीं सुन्यो हे ॥ तातें अव आप श्रीस्वामिनींजीको कोई पद सुनावो॥ तव कुंभनदासजीनें कह्यो ॥ जो हाँहाँ सुनिये ॥ असें कहिकें विननें श्रीस्वामिनींजीको पद गायो ॥ सो पद ॥ ❀ (पद १० मो. राग रामकली तालचर्चरी) ❀ ॥ कुँवरि राधिके तुँव सकल सौभाग्यसींव या वदनपर कोटिशत चंद्र वारों ॥ खंजन कुरंग शतकोटि नेंनन उपर वारणें करन जीयमें विचारों ॥ कदली शतकोटि जंघन उपर सिंह शतकोटि कटि पर न्योछावर उतारों ॥ मत्तगज कोटिशत चाल पर कुंभ शतकोटि इन कुचन पर वारि डारों ॥ २ ॥ कीर शतकोटि नासा उपर कुंद शतकोटि दशननि उपर कहि न पारों ॥ पक्क कंदूरबंधूक शतकोटि अधरनि उपर वारि रुचिर गर्व टारों ॥ ३ ॥ नाग शतकोटि वेनीं उपर कपोत शतकोटि ग्रीवा पर वारि दूरि सारो ॥ कमल शतकोटि करयुगल पर वारणें नाँहिन कोऊ लोक उपमाँजु धारों ॥ ४ ॥ दासकुंभन स्वामिनीं सुनख शिख अंग अद्भुत सुठांन कहाँलग सँभारों ॥ लाल गिरिवरधरन कहत मोहे ताँहिलो सुख जोंलों यह रुप छिनु छिनु निहारों ॥ ५ ॥ ❀ ॥ सो यह पद जव विन कुंभनदासजीनें

गायो ॥ तब सुनिकें वे संतमहंत बोहोत रीझे ॥ ओर कहें ॥ जो हमनें हू श्रीस्वामिनीजीके पद बोहोत किये हैं ॥ परि जहाँ उपमाँ दीनींहें तहाँ एकहीकी दीनीं हें ॥ ओर आपनें तो कोटिशतनकी उपमाँ देकें वारि डारी हें ॥ तातें आपतो बडे महापुरुष हो ॥ तातें आपकी सरहानाँ हम कहाँ ताँई करें ॥ पाछें वे महंत सब हरिवंश आदि ॥ कुंभनदासजीतें विदा होयकें अपनें घरकों वृंदावन गये ॥ ❀ (प्रसंग ५ मो) ❀ ॥ एकसमें श्रीगुसाँईजी श्रीगोकुलमें अपनें घरतें श्रीनवनीतप्रियजीसों आज्ञा लेकें देशाटणार्थ द्वारिकाको पधारे ॥ तब आप प्रथम श्रीनाथजीद्वार पधारे ॥ तहाँ आपनें श्रीनाथजीकी सेवा शृंगार सब किये ॥ पाछें जब आप भोजन करिकें गादी उपर विराजे तब सब सेवक आपके दर्शननकों आये ॥ तब बातें चलतमें विन कुंभनदासजीकी वार्ता चली ॥ तब काहू वैष्णवनें श्रीगुसाँईजीसों कही ॥ जो महाराज विन कुंभनदासजीकों द्रव्यको संकोच बोहोत हे ॥ सो यातें जो विनके घरमें परिवार बोहोत हे ॥ सात तो बेटा हें ॥ ओर विनकी बहू हें ॥ ओर उपजतो केवल एक खेती हे ॥ ताको जो धाँन आवे हे ॥ तामें वे निर्वाह करत हें ॥ तब यह बात सुनिकें श्रीगुसाँईजीनें वा समें तो अपनें मनमें राखी ॥ तापाछें जब कुंभनदासजी आपके पास आये ॥ तब विनतें श्रीगुसाँईजी आप श्रीमुखतें कहें ॥ जो कुंभनदास हम द्वारिका श्रीरणछोडजीके दर्शनकों चलें हें ओर विदेश हू होयगो ॥ कारण जो वेष्णवननें बोहोत आग्रह करिकें पत्र लिखेहें ॥ तातें तुम जो संग चलो ॥ तो विदेशमें हमकों भगवद्विरहको क्लेश बाधा न करेगो ॥ ओर भगवदद्विरहकाल हूँ आछें व्यतीत होय जायगो ॥ ओर मेंनें सुन्यो हू हे ॥ जो तुमारे द्रव्यकोहू संकोच बोहोत हे ॥ सोउ तुमारो कार्य सिद्ध

होयगो ॥ ओर तुह्मारी सेवाहू सिद्ध होयगी ॥ तातें सर्वथा तुमकों चल्यो चहिये ॥ तब कुंभनदासजीनें हाथ जोरिकें कही ॥ जो कृपानाथ आपकी आज्ञा ॥ इतनेंमें श्रीनाथजीके उत्थापनको समों भयो ॥ तब श्रीगुसाँईजी आप स्नान करिकें श्रीनाथजीके मंदिरमें पधारे ॥ तहाँकी सब सेवातें पोंहोंचिकें ॥ श्रीनाथजीकों पोढायकें आप श्रीगुसाँईजी नीचें पधारे ॥ ओर कुंभनदासजीकों आपनें शीख दीनीं ॥ जो तुम घरतें पोंहोंचिकें वेगे काल्हि आइयो ॥ हम काल्हि राजभोगआर्ती करिकें श्रीनाथजीसों शीख माँगिकें ॥ अप्सराकुंड उपर जाय रहेंगे ॥ तब कुंभनदासजीनें श्रीगुसाँईजीकों दंडवत करिकें अपुनें घर यमुनाँवता आये ॥ सो अपनें सब कुटुंबिनकों घर खेत सँभारिवेकी कहिकें सवारे वेगे पोंहोंचिकें श्रीगिरिराज उपर आय श्रीगोवर्द्धननाथजीके दर्शन किये ॥ ओर कीर्तन किये ॥ तब श्रीगुसाँईजी श्रीनाथजीको सेवा शृंगार करि राजभोगकी आरती करी श्रीगोवर्द्धन नाथजीसों शीख माँगिकें पर्वत उपरतें नींचें पधारे ॥ तापाछें आप भोजन किये ॥ तब सब सेवकननें महाप्रसाद लियो ॥ पाछें ताहि समेंको मुहूर्त हतो ॥ तासों आप तत्काल अप्सराकुंड पधारे ॥ तहाँ आपकेलियें डेरा अगाऊ गये हते ॥ सो अप्सराकुंडपे ठाढे कियेगये हते ॥ तामें आप श्रीगुसाँईजी पधारिकें पोढे ॥ इतनेंमें सब सेवक सामाँन सब लेकें वहाँ आये ॥ विनके संग वे कुंभनदासजीहू आये ॥ सो वे तहाँ बेठे बेठे विचार करत हें ॥ जो (प्राणनाथ बिछुरनकी वेदनाँ जाँनत नाँहिन कोऊ) ॥ यह विचार विचारत हें ॥ इतनेंमें श्रीठाकुरजीको उत्थापनको समों भयों ॥ तब श्रीगुसाँईजी आप भीतर डेरामें जागे ॥ ओर कुंभनदासजीकोंहू अपनें सेवाको समों भयो ॥ तब श्रीनाथजीके दर्शनकी सुधि आई ॥ सो वहाँ

पूँछरीके एक कोनॉमें ठाढे ठाढे वे कुंभनदासजी कीर्तन गायरहे हें ॥ ओर ऑखिनमेंतें जलको प्रवाह वहत हे ॥ सो जो पद वा समों विन कुंभनदासजीनें गायो सो पद ॥ ❀ (पद ११ मो. राग सारंग) ❀ ॥ केते दिन हेजु गये विनु देखें ॥ तरुण किशोर रसिक नंदनंदन कछुक उठत मुख रेखें ॥ १ ॥ वह सोभाग्य वह कांति वदनकी कोटिक चंद्र विसेखें ॥ वह चितवनि वह हास्य मनोहर वह नटवर वपु भेखें ॥ २ ॥ श्याम सुंदर मिलि संग खेलनकी आवत जीय अपेखें ॥ कुंभनदास लाल गिरिधर विनु जीवन जनम अलेखें ॥ ३ ॥ ❀ ॥ सो जब यह पद कुंभनदासजीनें गायो ॥ सो श्रीगुसॉईजी आपनें डेराके भीतर बेठे बेठे सुन्यो ॥ तब विन कुंभनदासजीको क्लेश आपतें सह्यो न गयो ॥ तातें आप श्रीगुसॉईजी वा डेरातें बाहिर पधारे ॥ ओर श्रीमुखतें कहें ॥ जो कुंभनदासजी तुम वेग पाछे जाऊ ॥ तुह्मारो विदेश होयचुक्यो ॥ जेसी तुह्मारी यहॉ दशा हे ॥ तेसी विन श्रीनाथजीकी वहॉ दशा हे ॥ जारीति श्रीअकाजीनें प्रथम अडेलमें विन क्षत्री गजनधावनकों श्रीनवनीतप्रियजीके लियें ॥ पॉन लेवेकों पठाये हे ॥ तब श्रीठाकुरजीतें विछूरतहीं विनकों ज्वर चढयो ॥ क्यों जो वे श्रीठाकुरजीतें क्षणमात्रहू न्यारे न होते ॥ राजभोगहू श्रीनवनीतप्रियजी तब अरोगते रहे ॥ जब वे गजनधावन निजमंदिरकी देहरी आगें बेठते ॥ सो थोडीदेर विनकों पॉन लेन पठाये ॥ तितनेंहीं विछोहेतें विन गजनधावनकों ज्वर आयकें मूर्छा आई ॥ ओर घरमें श्रीठाकुरजीनें अपनीं देहरीके आगें वाको शब्द न सुन्यो ॥ तातें आप राजभोग न अंरोगे ॥ तातें श्रीअकाजीकों तुरंत गजनको बुलायवेकों मनुष्य दोरावने परे हे ॥ सो जहॉतॉइ वे गजनधावन आये ॥ तहॉतॉई आप श्रीनवनीतप्रियजी

हाथ खेचिकें विराजे रहे ॥ परि आरोगे नाहीं ॥ सो जब वे गजन आये ॥ तब वाके कहतें आरोगे ॥ सो सब विस्तार पूर्वक गजनधावन क्षत्रीकी वार्तामें कह्योहे ॥ सो यह तो श्रीआचार्यजी-महाप्रभुनके मार्गकी मर्यादाही हे ॥ जो जितनों सेवकको स्नेह श्रीठाकुरजीके उपर होय ॥ तातें शतगुण अधिक स्नेह श्रीठाकुरजीको जीव उपर होय ॥ ताको सिद्धांत श्रीभगवाननें आपनें श्रीमुखतें अर्जुनको गीता कहत समें कह्यो हे ॥ जो (ये यथा मां प्रपद्यंते ताँस्तथैव भजाम्यहं) ॥ तातें वहाँ हू श्रीनाथजी आप तुह्मारो विरह करत हें ॥ तातें अब हम तुह्मकों शीखि देत हें ॥ तब विन कुंभनदासजी आपकों साष्टांग दंडवत प्रणाम करिकें विदा होयकें चले ॥ सो श्रीगिरिराज आयकें श्रीगोवर्द्धननाथजीके दर्शन किये ॥ तब भोगको समों हतो ॥ सो तहाँ आवतहीं विन कुंभनदासजीकों बडो आनंद भयो ॥ तासमें विननें एक पद करिकें गायो सो पद ॥ ❀ (पद १२ मो. राग सारंग) ❀ ॥ जोपें चोंप मिलनकी होई ॥ तो क्यों रह्यो परे विनु देखें लाख करों जो कोई ॥ १ ॥ जोपें विरह परस्पर व्यापे तो कछू जीय वनें ॥ लोक लाज कुलकी मर्यादा एको चित्त न गनें ॥ २ ॥ ❀ ॥ कुंभनदास प्रभु जाहि तन लागी ओर न कछू सुहाई ॥ गिरधरलाल तोहि विनु देखें छिनुछिनु कल्प विहाइ ॥ ३ ॥ ❀ ॥ सो जब यह पद विननें श्रीनाथजीके संनिधाँन गायो ॥ सो सुनिकें श्रीनाथजी वोहोत प्रसंन भये ॥ तब आपकों प्रसन्न देखिकें वे कुंभनदासजी हू वोहोत प्रसंन भये ॥ ❀ (प्रसंग ६ ठो.) ❀ ॥ एकसमें वे कुंभनदासजी श्रीगुसाँईजीके पास वेठे हते ॥ तब आपनें हसिकें श्रीमुखतें कह्यो ॥ जो कुंभनदासजी तुह्मारें वेटा केते हें. ॥ तब विननें कह्यो जो महाराज मेरें वेटा डेढ हे ॥ ओर हते तो सात वेटा तब श्रीगुसाँ

इँजी कहें ॥ जो कुंभनदासजी डेढको कारण कहा ॥ तव विननें कह्यो जो महाराज आखो वेटा तो चतुर्भुजदास हे ॥ ओर आधो वेटा कृष्णदास हे ॥ जो श्रीनाथजीकी गायनकी सेवा करत हे ॥ तव श्रीगुसाँइजीनें पूछी ॥ जो कुंभनदास तुम हमकों डेढ वेटा कहिवेको कारण वतावो ॥ तव विननें विनती करी ॥ जो महाराज याको हेतु यह हे ॥ जो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु पुष्टिमार्ग प्रगट किये हें ॥ तामेंको यह सिध्दांत हे ॥ जो (सेवा रीति प्रीति व्रजजनकी जनहित जग प्रगटाई) जो श्रीठाकुरजीके साँनिध्यमेंतो सदा सेवा करनीं ॥ ओर जव श्रीठाकुरजी वनमें पधारें ॥ तव गुन गाँन करनों ॥ सो जामें यह दोय वस्तु होयँ ॥ सो तो आखो कह्यो जाय ॥ ओर केवल गुनगाँन करे ॥ ओर सेवा न होय ॥ तो आधो कह्यो जाय ॥ ओर केवल सेवाई करे ओर गुनगॉन न करे तो हू आधो कहिये ॥ तातें चतुर्भुजदासमें सेवा ओर गुनगाँन दोऊ हें ॥ तातें वो आखो हे ॥ ओर कृष्णदासमें केवल एक सेवाही हे ॥ तातें वो आधो हे ॥ तव श्रीगुसाँईजी आप प्रसंन होयकें श्रीमुखतें कहें ॥ जो साँचवात हे ॥ जे भगवदीय हें ॥ तेई वेटा हें ॥ ओर वोहोत भये तो कहा काँमके (सो विन चतुर्भुजदासकी वार्ता विस्तार पूर्वक श्रीगुसाँईजीके सेवकनमें लिखी हे) ॥ सो वे कुंभनदासके आधे वेटा कृष्णदास श्रीनाथजीकी गाइनके ग्वाल हते ॥ तिनकों श्रीगुसाँईजीनें गौअनकी सेवा करिवेकी आज्ञा दीनीं हती ॥ तातें वे सदा गायनकीही सेवा करते ॥ सो सवारें वे खिरककी सेवामेंतें पोंहोंचिकें ॥ पीछें गाय चरायवेकों जाते ॥ सो सवरोदिन वरहेमें विन गायनके संगही रहते ॥ सो एकदिन वे कृष्णदास गाय चरायकें पूछरीकी पेहेली ओरतें आवत हतें ॥ तव सगरीं गाईं ॥ तो खिरकमें आई ॥ ओर एक गाय

जो बोहोत बडी हती ॥ वाको एन बोहोत भारी हतो ॥ तासों वह निपटही हरुवें हरुवें चलती ॥ सो वा गायके आवतमें अँधियारो परिगयो ॥ तब वहाँ पर्वतपेतें एक नाहर निकस्यो ॥ सो वा गायके उपर दोन्यो ॥ तब कृष्णदासनें पुकारिकें कही ॥ जो अरे अधर्मी यह श्रीगोवर्धननाथजीकी गाय हे ॥ ताको मत छुइओ ॥ जो तूँ भूखो होय तो भलें मेरे उपर आव ॥ तब इतनेंमें वो गायतो भाजिकें अपनें खिरकमें आय घुसि ॥ ओर वा नाहरनें तो दोरिकें कृष्णदासकों पकऱ्यो ॥ ओर यहाँ जो गाय सब खिरकमें आई ॥ तिनकों दूहाइबेकों कुंभनदासकों संग लेकें श्रीनाथजी आप खिरकमें पधारे ॥ तब ग्वाल सब ओर सब गाई दुहन लागे ॥ ओर जो वह बडी गाय नाहारपेतें भाजिकें आई ही ॥ ताकों आप श्रीनाथजी दुहिवे वेठे ॥ तब वे कृष्णदासजी जिनकों वा नाहारतें माऱ्यो हो ॥ सो वा गायको वछरा थाँभें ठाढे हें ॥ ताकों वह गाय चाटिरही हे ॥ एसे दर्शन जो वे कुंभनदासजी आपके संग आये हते ॥ तिनकों खिरकमें भये ॥ पाछें जब श्रीनाथजी आप गोदोहन करिकें गिरिराज उपर अपनें मंदिरमें पधारे ॥ तब श्रीगुसाँइजीनें सेंनभोग समर्प्यो ॥ ओर जो वे कुंभनदासजी खिरकतें आये ॥ सो डंडोती शिलाके पास आय ठाढे भये ॥ इतनेंमें समाचार आये ॥ जो कृष्णदासकों तो नाहरनें माऱ्यो ॥ सो सुनिकें वे कुंभनदासजीतो मूर्छाखायकें गिरे ॥ ओर देहानुसंधान कछू न रह्यो ॥ तब विन कुंभनदास-जीकों सबकोऊ बोहोत बुलावे ॥ परि वे बोलें नाहीं ॥ सो यह समाचार श्रीगुसाँइजीसों काहू सेवकनें दोरत आयकें कह्यो ॥ जो महाराज कृष्णदास ग्वालकों तो नाहरनें माऱ्यो ॥ परि वानें गायकों तो बचाई हे ॥ सो विनको देह वहाँहीं पऱ्यो हे ॥ तब श्रीगुसाँईजी आप श्रीमुखतें कहें ॥ जो वाकों गाय कबहूँ न छोडि

आवेगी ॥ अंतसमें जो केवल गायको संकल्प मात्र करत हें ॥ ताकों हू तो वो उत्तमलोककों ले जाति हें ॥ ओर कृष्णदासनें तो प्रत्यक्ष श्रीनाथजीकी गायकों बचाई हे ॥ तातें वो गाय वाकों केसें छोडि आवेगी ॥ तब काहू सेवकनें कही ॥ जो महाराज यह समाचार सुनिकें विन कुंभनदासकोंतो क्लेश बोहोत बाधा कियो हे ॥ वे श्रीगिरिराज उपर आवत हते ॥ तिनकों डंडोती शिलाके आगें काहूनें यह कृष्णदासके समाचार कहे ॥ सो सुनतहीं वे कुंभनदास मूर्छाखायकें गिरेहें ॥ सो विनकों लोग वहुतेरो बुलावत हें ॥ परि उनकों कछु सुधि नाहीं ॥ तब श्रीगुसांईजी आप आज्ञा कियें ॥ जो फेरि तुम विन कुंभनदासकी खबरि ल्याओ ॥ जो वे केसें हें ॥ तब वेष्णवनें तहाँ जायकें कुंभनदासजीको पुकारे ॥ परि वे कछू बोलें नाहीं ॥ तब यह समाचार फेरि आयकें विन वैष्णवननें श्रीगुसांईजीके आगें कहे ॥ जो महाराज वे कुंभनदासजीतो कछू बोलत नाहीं ॥ तब श्रीगुसांईजी आप ऊठिकें ॥ श्रीनाथजीको सेंन-भोग सराय आर्ती करि पोढायकें ॥ आप नींचें पधारे ॥ सो देखें तो मार्गमें वे कुंभनदास डंडोती शिलाके आगें परेहें ॥ ओर लोग चान्यो आडी ठाढे हें ॥ सो कहत हें ॥ जो देखो तो कुंभनदास केसे भगवदीय हे ॥ परि पुत्रशोक महा बुरो होत हे ॥ या माया मोहते कोऊ नाहीं बच्यो ॥ कारण जो पुत्र हे सो तो अपनीं आत्माँ कही हे ॥ यह बात लोगनके मुखकी श्रीगुसांईजी आप सुने ॥ सो सुनिकें आप विचारे ॥ जो यहाँ तो कारण कछू ओर हे ॥ ओर जगतकों तो कछू ओर भासे हे ॥ तातें अब भगवदीयको स्वरुप प्रगट करनों चहिये ॥ एसें विचारिकें तब श्रीगुसांईजी आप विन कुंभनदासके निकट आयकें श्रीमुखसों कहे ॥ जो कुंभनदास तुम एसे क्यों परे

हो ॥ सवारें वेगि आवोगे ॥ तब तुमकों श्रीगोवर्द्धननाथजीके दर्शन करवावेंगे ॥ तुम मनमें खेद मति करो ॥ जो भगवदइच्छा हती सो भई ॥ इतनों जब श्रीगुसाँईजी आप श्रीमुखतें कहे ॥ तब तत्काल वे कुंभनदासजी ऊठिकें ठाढे भये ॥ ओर प्रसंन होयकें आपकों दंडवत करिकें कुंभनदासजी अपनें घरकों गये ॥ तिननें जायकें अपनें दूसरे बेटानसों विन कृष्णदास बेटाकी संस्कारादि क्रिया करवाय जो कछू कार्य करनों हतो सो सब कियो ॥ पाछें सवारें भये वे कुंभनदासजी श्रीनाथजीके दर्शनकों आये ॥ तब श्रीगुसाँईजी श्रीनाथजीको शृंगार करिकें सेवकनतें कहे ॥ जो प्रथम तुम कुंभनदासकों दर्शन करवाय देउ ॥ तब विननें कुंभनदासजीकों दर्शन करवाये ॥ वे कुंभनदासजी जो पुत्रमरण सुनतहीं मूर्छा खायकें गिरे हे ॥ ताको कारण पुत्रशोकको न हतो ॥ विनकों तो यह ताप भयो ॥ जो अब मोकों सूतकमें श्रीजी कछुकदिन विछुरेगें ओर दर्शन न देईगे ताकों विरहताप भयो ॥ ता संतापतें विनकों तुरंत मूर्छा आई ॥ सो आशय एक श्रीगुसाँइजीनें ही जान्यो ॥ तातें आपनें विनके निकट आय आज्ञा करी ॥ जो हम तुमकों नित्य दर्शन करवागें ॥ तब विनकी मूर्छा उतरी ॥ तब वे अपनें घरकों गये ॥ सो तादिनतें विननें सब वैष्णवनके उपर वडो उपकार कियो ॥ नाहींतो सूतकीकों भगवन्मंदिरमें कोन जॉन देतो ॥ परि कुंभनदासजीके अनुग्रहतें सूतकमें सबकोऊ दर्शन करत हे ॥ सो वे कुंभनदासजी नित्य एक दर्शन करिकें ॥ परासोली जाय बेठे ॥ सो वहाँ वेठे बेठे विरहके पद गावे सो पद ॥ ❀ (पद १३ मो. राग विलावल) ❀ ॥ तुमारे मिलन बिनु दुखित गोपाल ॥ अति आतुर कुलवधु व्रजसुंदरि प्यारो विरह विहाल ॥ १ ॥ शीतल चंद तपन भयो दाहत किरननि कमलपत्र जनु गरल व्याल ॥ चंदन कुसुम सहाय न

घनसार लगत वाढी तन ज्वाल ॥ २ ॥ कुंभनदास प्रभु नवघन तुम विनु कनक लता मनो सूकी ग्रीषम काल ॥ अधरामृत सींचि लेहु चलहू गिरिधरन लाल ॥३॥ ❀ (पद १४मो. राग धनाश्री) ❀ ॥ अव दिन राति पहारसे भये ॥ तवतें निघटत नॉहिन जवतें हरि मधुपुरि गये ॥ १ ॥ यह जॉनियत विधाता युगसम कीनें यॉम नये ॥ जागत जात विहात न केहूँ एसे भीति ठये ॥ २ ॥ व्रजवासी सव परम दीन अति व्याकुल सोच लये ॥ जनु विनु-प्रॉण दुखित जलरुहगण दारुण हेम हये ॥ ३ ॥ कुंभनदास विछुरत नंदनंदन बहु संताप दये ॥ अव गिरिधर विनु रहत निरंतर लोचन नीर छये ॥ ४ ॥ ❀ (पद १५ मो. राग केदारो) ❀ ॥ ओरनकों समीप विछुरनों आयो मेरेही हिसा ॥ सवकोऊ सोवें सुख अपनें आली मोकों चॉहत जायँ चहूँदिसा ॥ १ ॥ नॉ-जानों यह विधाताकी गति मेरे ऑंक लिखे एसे कोन रिसा ॥ कुंभनदासप्रभु गिरिधर कहत कहत निसदिन रही रटत ज्यों चातक घन त्रशा ॥ २ ॥ ❀ ॥ एसे एसे विरहके बोहोत पदगा-यकें विननें सूतककें दिन निवर्त किये ॥ पाछें शुद्ध होय न्हायकें कुंभनदासजी भगवत्सेवामें गिरिराजपे आये ॥ सो जेसें सदा वे सेवा करत हते ॥ तेसें करन लागे ॥ एसी जिनको दर्श-नकी आर्ति ही ॥ सो वे कुंभनदासजी एसे बडे भारी श्रीआचा-र्यजीमहाप्रभुनके कृपापात्र भगवदीय सेवक सखा हते ॥ विनकी एसी एसी अनेक वार्ता हें सो कहांतांई लिखिये ॥ वैष्णवसखा ३ रो ॥

❀ (वार्ता ४ थी. वैष्णव सखा ४ थो.) ❀

❀ (अथ कृष्णदास अधिकारी तिनकी वार्ता प्रारंभः) ❀

सो वे कृष्णदास एकवेर श्रीद्वारिका गये हते ॥ सो श्रीरणछो-डजीके दर्शन करिकें तहॉतें चले ॥ सो मार्गमें आवत मीरॉबाइको-गॉम आयो ॥ तव वे मीरॉबाईके घर गये ॥ तहॉ हरिवंशव्यास

आदिदेकें स्वामी विशाष वेठे हते ॥ सो काहूकों आये आठ, काहूकों आये दस, काहूकों आये पंद्रह, दिन भये हतें ॥ तोहू तिनकी विदा न भई हती ॥ ओर कृष्णदासनें तो आवतखेंमही कही ॥ जों होंतो चलूँगो ॥ तब मीराँबाईनें कह्यो ॥ जो वेठो तो सही ॥ तब वे किंचित ठहरे ॥ तब कितनीक मोहोरें वा मीराँबाई श्रीनाथजीकों भेट देन लागी ॥ सो कृष्णदासनें न लीनीं ॥ ओर कह्यो ॥ जो तूँ श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी सेवक नाँही तातें तेरी भेट हम हाथ न छियेगे ॥ एसें कहिकें वे कृष्णदास वेसेंही ऊठि चले ॥ सो जब आगें आये ॥ तब एक वैष्णवनें विनसों कह्यो ॥ जो कृष्णदासजी तुमनें श्रीनाथजीकी भेट क्यों न लीनीं ॥ तब विननें कह्यो ॥ जों भेटकी कहाहे ॥ परि मीराँबाईके यहाँ जितनें स्वामी वेठे हते ॥ तिन सबनकी नाँक नीची करिवेकों मेंनें भेटकी मोहोरें फेरी हें ॥ इतनें महंत कहाँ इकठोरे मिलते ॥ जो वेऊ जाँनें जो एक कायस्थ श्रीआचार्यजीमहाप्रभुके सेवकनें अन्यमार्गियकी भेट न छूई ॥ तो तिनके धनींकी बात कहा होयगी ॥ ❀ (प्रसंग २ रो) ❀ ॥ प्रथम जब श्रीनाथजीकी सेवा बंगाली करते ॥ तब विनकों श्रीआचार्यजीनें मुकुट काछनीको वागा ॥ ओर मीनाँके आभरण सँवराय दियेहते ॥ सो वे नित्य श्रीजीकों धरते ॥ ओर जो भेट आवती सो सब नित्य खरचमें जाती ॥ ओर जों कछू बचती सो वे अपनें गुरुकों श्रीकुंडपे पोहोंचावते तातें कछू संग्रह न रहतो ॥ तब विन कृष्णदासकों श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनें आज्ञा दीनीं ॥ जो तुम श्रीगोवर्द्धनमें रहो ओर श्रीजीकी सेवा टेहल करो ॥ तब विननें कही ॥ जो आज्ञा ॥ पाछें आप श्रीआचार्यजीनें विनकों सब अधिकार दियो ॥ तब वे कृष्णदास अधिकारी भये ॥ सो सब अधिकार करन लागे ॥ पाछें एकदिन वे कृष्णदास मथुराकों चले ॥ सोअडिंगलों पोंहोंचे ॥

तब पेंडेमें विनकों अवधूतदास मिले ॥ सो वे बडे विरक्त महा-पुरुष हते ॥ सो सदा व्रजमें हीं फिरते ॥ तिनपे श्रीनाथजीकी बडी कृपा हती ॥ तातें आप विनसों जो इच्छा होती सों आज्ञा करते ॥ सो एकदिन विन अवधूतदाससों श्रीनाथजीनें कह्यो ॥ जो यह वंगाली सेवक मोकों दुःख देतहें ॥ जब मोकों भोग धरत हें ॥ तब उनकी चुटियामें एक छोटोसो देवीको स्वरुप हे ॥ सो वे मेरे साँमनें बेठारत हें ॥ सो जब वे भोग सरावत हें ॥ तब वाकों पाछी वे अपनीं चुटीयामें मेलिलेत हें ॥ सो वे एसें करत हें ॥ ओर वे मेरी भेट कछू रहन देत नाहीं ॥ सब अपनें गुरुको पोंहोंचावत हें ॥ तातें विनकों दूरि करवावो ॥ सो एसी आज्ञा विन अवधूतदासकों श्रीनाथजीकी भई हती ॥ तातें वीननें मार्गमें कृष्णदाससों पूछयो ॥ जो तुम कहाँकों चले ॥ तब विननें कह्यो ॥ जो हों मथुरा जात हों ॥ तहाँ कछू काँम हे ॥ तब विन अवधूतदासनें विनसों कह्यो ॥ जो अब श्रीनाथजीकों अपनों वैभव वढावनों हे ॥ तातें तुम विन वंगालीनकों दूरि क्यों नाँहीं करत ॥ तब विन कृष्णदासनें विनसों कह्यो ॥ जो श्रीगुसाँईजीकी आज्ञा विनाँ विनकों केसें काढें ॥ तब अवधूतदा-सनें कह्यो ॥ जो तुम अडेल जाय श्रीगुसाँईजीसों आज्ञा ल्यो ॥ ओर ज्यों वनें त्यों वंगालीनकों तुरंत काढो ॥ यह सुनिकें वे कृष्णदास आँडिगसोंहीं पाछे फिरे ॥ सो श्रीगोवर्द्धन आये ताहाँ वंगाली सेवकनसों विननें कह्यो ॥ जो हों अडेल श्रीगुसाँ-ईजीके पास जात हूँ ॥ वहाँ मोकों कछू काँम हे ॥ तातें तुम सावधानींसों रहियो ॥ हों थोडेही दिनमें आपके पास होयकें आवत हूँ ॥ तापाछें वे श्रीनाथजीसों विदा होयकें कृष्णदास चले ॥ सो दिन पंद्रहमें अडेल आय पोंहोंचे ॥ तहाँ श्रीगुसाँई-जीके पास आय आपकों दंडवत किये ॥ तब श्रीगुसाँईजीनें

विनसों पूछयो ॥ जो कृष्णदासजी तुम क्यों आये ॥ तब विननें कह्यो जो महाराज श्रीनाथजीको अपनों वैभव बढावनों हे ॥ ताकी आज्ञा अवधूतदास द्वारा मोकों भइहे ॥ जो बंगालीनकों तुरंत काढो ॥ ओर विन बंगाली सबननें तो माथो बोहोत ऊठायो हे ॥ जो भेट आवत हे ॥ सो सब वे ले जात हें ॥ सो अपनें गुरुकों सोंपत हें ॥ विनके गुरु श्रीकुंडउपर रहत हें ॥ तहाँ सब यहाँतें ले जायकें देत हें ॥ तब इतनों सुनिकें आप श्रीगुसाँईजीनें कह्यो ॥ जो जब श्रीआचार्यजीमहाप्रभु आप आसुरव्यामोहलीला दिखाये ॥ तापाछें कितनेकदिन रहिकें दादाजी श्रीगोपीनाथजी आपनें प्रथम पूरबको परदेश कियो हतो ॥ ता परदेशमें एकलक्षकी भेट आई हती ॥ तापाछें जब आप दादाजी अडेलकों पाछे आये ॥ तब आप श्रीगोपीनाथजीनें कह्यो ॥ जो यह पेहेलो परदेश हे ॥ तातें यामें जो आयो हे ॥ सो सब श्रीनाथजीको हे ॥ सो श्रीनाथजीकें विनियोग कियोही चहिये ॥ ऐसी आज्ञा करे पाछें आप श्रीगोपीनाथजी दिन दसबारह अडेलमें रहिकें श्रीनाथजीद्वार पधारे ॥ सो थोडेही दिननमें आप गिरिराजके श्रीनाथद्वार आय पहुँचे ॥ तहाँ आपनें श्रीनाथजीके दर्शन किये ॥ ओर जो लाये हते सो सब श्रीजीकें आगें भेट करी ॥ पाछें आभूषण सब जडाऊ समराये ॥ थार, कटोरा, डबरा, चमचा, झारी, दृष्टी, प्रभृति सब सोनाँ रुपाके किये ॥ पाछें आप दादाजी श्रीनाथजीसों विदा होयकें ॥ पाछे अडेलकों आये ॥ तापाछें वे बंगाली वर्ष एकके भीतर सब ऊठाय ले गये हते ॥ सो विननें सब अपनें गुरुके वहाँ दिये हते ॥ यह सब बात आप श्रीगुसाँईजीनें विन कृष्णदाससों कही ॥ ओर कह्यो जो तुम कहत हो ॥ जो विन बंगालीननें माथो बोहोत ऊठायो हे ॥ परि वे श्रीआचार्यजीमहाप्रभुके राखे भये हें ॥

सो केसें निकसेंगे ॥ तब विन कृष्णदासनें कह्यो ॥ जो महाराज मोकों आप दोय पत्र लिखि दीये ॥ सो एकतो राजा टोडरमलको ॥ ओर एक राजा वीरवलको ॥ तब आपनें कही जो ठीक हे ॥ तापाछें विन कृष्णदास अधिकारीकों कछू समय राखिकें श्रीगुसाँईजीनें दोय पत्र लिखि दीनें ॥ तामें लिख्यो ॥ जो कृष्णदासकों श्रीनाथजीद्वार भेजे हें ॥ सो वे जो तुमसों कहें ॥ सो सब करि देऊगे ॥ सो वे दोनों पत्र लेकें श्रीगुसाँईजीसों विदा होयकें वे कृष्णदास श्रीनाथद्वारकों चले ॥ सो आगरे आये ॥ तहाँ राजा टोडरमल वीरवलकों मिलिकें ॥ श्रीगुसाँईजी लिखे पत्र विनकों दिये ॥ तब विन दोनोंननें आपके पत्र वाँचिकें कृष्णदाससों कह्यो ॥ जो कहो तुमारी कहा आज्ञा हे ॥ सो जो तुम कहो सो करें ॥ तब कृष्णदासनें कह्यो ॥ जो अबतो हों बंगाली सेवकनकों श्रीनाथजीकी ओर श्रीगुसाँईजीकी आज्ञातें काढिवेकों श्रीनाथद्वार जात हों ॥ पाछें जो काँम पडेगो ॥ सो आपसों कहेंगे ॥ पाछें कृष्णदास राजा टोडरमल वीरवलसों विदा होयकें श्रीनाथद्वारकों चले ॥ सो मथुरा आये ॥ तहाँ भोजनादिक करिकें तहाँतें गिरिराजकों चले ॥ तब मार्गमें फिरि विनकों अवधूतदास मिले तब अवधूतदासनें विनसों कह्यो ॥ जो कृष्णदास कहा करि आये ॥ तब विननें सब हकीकत विस्तार पूर्वक विनसों कही ॥ तब विन अवधूतदासनें कही ॥ जो ढील कहा करी राखी हे ॥ बंगालीनकों काढो ॥ तब कृष्णदासजीनें कह्यो ॥ जो हों श्रीगुसाँईजीकी आज्ञा लेकें आयो हों ॥ अब जायकें विन बंगालीनकों जातमात्रहीं काढत हों ॥ सो इतनों कहिकें वे अधिकारीजी तहाँतें चले ॥ सो श्रीगोवर्द्धन आये ॥ तब वे बंगाली सब रुद्रकुंड उपर रहते ॥ तहाँ कृष्णदासजीनें

जातेंहीं विनकी झोपर्डी हतीं ॥ तिननें आगि लगाय दीनीं ॥ तब सोर भयो ॥ जो वंगालीनकी झोपडीमें आगि लगी ॥ तव वे वंगाली सब पर्वत उपरतें सेवा छोडि छोडिकें नीचें उतरि आयकें दोडे ॥ तब वो समो साधिकें विन कृष्णदासजी अधिकारीनें पर्वत उपर जायकें अपनें मनुष्य बेठायदीनें ॥ तब विन वंगालीननें नीचें आयकें सुनीं ॥ जो कृष्णदासजीनें झोपडीमें आगि लगाई हे ॥ तब सब मिलीकें वे वंगाली विन कृष्णदासजीसों लरिवेकों उपर जाय सिद्ध भये ॥ तब कृष्णदासनें डेचारनकूँ लठ्ठतें मारे ॥ तव वे वंगाली सब वहाँतें भागे ॥ सो मथुरामें आय रुपसनातन पास जायकें विनसों यह सब वात कही ॥ तापाछें विनके पीछें जो गिरिराजतें कृष्णदासहूँ मंदिरको वंदोवस्त करिकें निकसे हते ॥ जो देखें तो सही जो वे वंगाली कोंनके पास जाय पुकारत हें ॥ सो तहाँ मथुरामें कृष्णदासहू आय ठाढे भये तब रुपसनातननें कृष्णदाससों वोहोत खीजिकें कह्यो ॥ जो अरे शूद्र तूँ कोंन हे ॥ जो या ब्राह्मणनकों मारे ॥ तव कृष्णदासनें कह्यो ॥ जो होंतो शूद्र हों ॥ परि तुमहू तो अग्निहोत्री नाहीं ॥ तुमहूतो कायस्थ हो ॥ तब रुपसनातननें कह्यो ॥ जो यह वात जब पात्साह सुनेंगो ॥ तब वाकों तुम कहा ज्ववाव देउगे ॥ तब कृष्णदासनें कह्यो ॥ जो होंतो नीकें ज्ववाब देऊंगो ॥ परि तुमहींकों ज्ववाव न आवेगो ॥ जो कायस्थ होयकें ब्राह्मणनकों सेवक करिकें विनतें दंडोत करवावत हो ॥ ओर श्रीनाथजीको सबरो मंदिर लुटिवाय लियो हे ॥ तब वे रुपसनातन तो चुप्प व्हे रहे ॥ ओर वंगालीनसों कह्यो ॥ जो अब तुम जॉनो ओर ये जॉनें ॥ तब वे वंगाली सब मिलिकें वहाँ मथुराके हाकिम पास गये ॥ तब वहाँके हाकिमनें कृष्णदाससो बुलावायकें कह्यो ॥ जो भलो भयो सो तो भयो ॥ अब इनकों तुम पाछे राखो ॥ तव

कृष्णदासनें हाकिमसों कह्यो ॥ जो अवतो हम इनकों सर्वथा न राखेंगे ॥ कारण जो ये हमारे चाकर हते ॥ हमनें इनकों सेवा सोंपी हती ॥ सो छोडि छोडिकें सव नीचे क्यों उतरी आये ॥ पाछेतें कोउ मंदिरमें घुसिजाते तो केसें होती ॥ इनकी झोपडीमें आगि लगी हती ॥ तो हम इनकों नई वनवांय देते ॥ ये सेवा सूनीं छोडिकें नीचें क्यों उतरि आये ॥ तातें अवतो हम इनकों न राखेंगे ॥ तापर जो तुम आग्रह करिकें कहत हो ॥ तो हम श्रीगुसाँईजीकों यह सव प्रकार लिखें ॥ सो जेसी वहाँ तें आज्ञा लिखि आवे ॥ तेसे हम करें ॥ तापाछें वा हाकिमसों विदा होयकें ॥ पाछे कृष्णदास तो श्रीनाथद्वार आये ॥ पाछें तहाँतें विन कृष्णदासनें श्रीगुसाँईजीकों अडेल पत्र लिख्यो ॥ तामें बंगालीनकों काढे सो सव समाचार विस्तारपूर्वक लिखे ॥ ओर लिख्यो ॥ जो अव आप पधारिये तो भलो हे ॥ सो पत्र अडेल श्रीगुसाँईजीकों पोंहोंच्यो ॥ तापाछें श्रीगुसाँईजी तहाँतें तुरंत श्रीनाथद्वार पधारिवेको बिचार किये ॥ सो कछूकदिन पाछे आप अडेलसों पधारिकें श्रीनाथद्वार आय पहूँचे ॥ तव वो वंगाली सव पाछे आपके पास आये ॥ तव विननें श्रीगुसाँईजीसों कह्यो ॥ जो महाराज हमकों तो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुननें सेवापे राखे हते ॥ सो इन कृष्णदासनें काढे हें तव विनसों श्रीगुसाँईजीनें कह्यो ॥ जो तुम सेवा छोडिके क्यों नीचें उतरे हे ॥ ताते दोष तुमारो हे ॥ सो अवतो हम तुमको श्रीनाथजीकी सेवामें न राखेंगे ॥ तव वे बंगाली बोहोत विनती करन लागे ॥ जो महाराज तव हम खाँयँ कहा ॥ तव आपनें दया करिकें विनकों श्रीनाथजीके वदले श्रीमदनमोहनजीकी सेवा पधराय दीनी ॥ ओर कह्यो ॥ जो अवतें तुम इनकी सेवा करो ॥ ओर जो कछू आवे तामें निर्वाह करियो ॥ तव वे बंगाली कछुक

प्रसंन होयकें विन श्रीठाकुरजीकों पधरायकें अपनें स्थलकों गये ॥ तबतें वे बंगाली श्रीमदनमोहनजीकी सेवा करनलागे ॥ तापाछें विननें श्रीगोवर्द्धनको रहिवो छोडि दीनों ॥ तापाछेंतें भीतरिया गुजराती रहे ॥ तिनकों तथा सेवक सबनकों नेग ॥ जा भाँति श्रीनाथजी आपनें श्रीमुखतें कह्यो ॥ ता भाँतिसों श्रीगुसाँईजीनें बाँध्यो ॥ तबतें श्रीनाथजीकी सेवा प्रणालिकातें होंन लागी ॥ ओर अधिकार तो कृष्णदासही करनलागे हे ॥ सो जाप्रकारसों आप श्रीनाथजीकों वैभव बढावनों हतो ॥ ताप्रकारसों बढायो ॥ ❀ (प्रसंग २ रो.) ❀ ॥ बहुरि एकदिन श्रीनाथजीनें कृष्णदासअधिकारीकों आज्ञा दीनीं ॥ जो तुम श्याम कुंभारकों मृदंग सहित लेकें आज रात्रिकों परासोली आईयो ॥ कारण जो वो मृदंग बोहोत आछी बजावत हे ॥ तब कृष्णदासनें कही ॥ जो आज्ञा ॥ पाछें जब श्रीनाथजीको सेन आर्ति उपरांत अनोसर भयो ॥ तब वे कृष्णदास वा श्यामकुंभारके घर गये ॥ सो जायकें वासों कह्यो ॥ जो तोंकों श्रीनाथजीनें आज्ञा करी हे ॥ तातें तूँ मृदंग लेकें परासोली चलि ॥ तब वा श्यामकुंभारनें नमन करिकें कह्यो ॥ जो मोहूकों श्रीनाथजीनें आज्ञा दीनीं हें ॥ तातें चलिये ॥ तब श्यामकुंभार ओर कृष्णदासजी ये दोऊजनें परासोली आये ॥ तहाँ देखें तो श्रीनाथजी आप स्वामिनींजी सहित तहाँ विराजे हें ॥ तब श्रीनाथजीनें श्यामकुंभारकों देखिकें वासों कह्यो ॥ जो तूँ मृदंग बजाइ ॥ ओर विन कृष्णदाससों कह्यो ॥ जो तुम कीर्तन करो ॥ तब श्यामकुंभारनें मृदंग बजाई ॥ ओर कृष्णदासनें कीर्तन किये ॥ तब श्रीनाथजी ओर श्रीस्वामिनींजी नृत्य किये ॥ ता समें कृष्णदासजीनें गायो सो पद ॥ ❀ (पद १ लो राग केदारो) ❀ ॥ श्रीवृषभाँनुनंदिनीं हो नाँचत लालन गिरि-

धरन संग लाग डाट सुरपतीर पराग रंग राख्यो ॥ झंप ताल मिल्यो राग केदारो सप्त सुरन अवघरवर सुघरतांने गॉन रंग राख्यो ॥ १ ॥ पाई सुख सुरत सिद्ध भरत कॉम विविध रिद्ध अभिनय दल शत सुहाग हुलास रंग राख्यो ॥ वनिता शत यूथको पीय निरखि थकित सघनचंद्र वलिहारी कृष्णदास सुगर रंग राख्यो ॥ २ ॥ ❀ ॥ यह पद कृष्णदासजीनें गायो ॥ सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी कॉनितें विन कृष्णदासजी पर श्रीनाथजी एसी कृपा करते ॥ ❀ (प्रसंग ४ थो) ❀ ॥ विन कृष्णदासजी अधिकारीनें कीर्तन वोहोत किये ॥ तव एक समें विनसों सुरदासजीनें कह्यो ॥ जो कृष्णदासजी तुम जो पद करत हो ॥ तामें मेरी छाया आवत हे ॥ तव विननें कह्यो ॥ जो अवकें पद एसे करूँ ॥ जामें तुमारि छाया न आवे ॥ तापाछे-कृष्णदासजी एकांतमें वेठींकें एकाग्र चित्त करिकें एक नयो पद करनलागे ॥ सो ताकी तीन तुक तो किये ॥ परि आगें बने नाहीं ॥ तव वे घडी दोतीन तॉईतो विचारे ॥ परि आगें तुक तो न वनीं ॥ तव विननें अपनें मनमें कह्यो ॥ जो अवतो तुक आगें चलत नाहीं तो भलो प्रसाद लेकें विचारेंगे ॥ एसो विचारिकें जा पत्रामें वो पद लिखत हते ॥ सो पत्रा तथा द्वात लेखन वहॉई धरिकें वे प्रसाद लेवेकों उठे ॥ सो जव वे कृष्णदासजी प्रसाद लेवेकों वेठे ॥ तव श्रीनाथजीनें आयकें वा पदकी तीन तुक वॉचिकें चोथी तुकतें अपनें श्रीहस्तसों लिखिदीनों ॥ सो जो विन कृष्णदासजीनें आधो पद कियो हतो ॥ सो ताकों आप पूरो करीकें श्रीनाथजीतो पधारे ॥ तापाछें वे कृष्णदासजी प्रसाद लेकें पहुँचिकें वो अधुरो पद पूरो 'करिवेकों आय वेठे ॥ तव देखें तो श्रीनाथजी आप अपनें श्रीहस्तसों लिखिके वो पद पूरो करिकें गयेहें ॥ सो देखिकें वे वोहोत प्रसन्न भये ॥

ओर मनमें कहे ॥ जो सूरदासजी आवें तो यह पद सुनावें ॥ पाछें उत्थापनको समों भयो ॥ तब सूरदासजी श्रीनाथजीके दर्शनकों आये ॥ तब विन कृष्णदासजीनें कह्यो ॥ जो सूरदास-जी आज मेंनें एक नयो पद कियो हे ॥ तामें तुह्मारी छाया नाँहीं धरी ॥ तब सूरदासजीनें कह्यो ॥ वो पद तुम मोकों सुनावो तब जाँनूं ॥ तब विन कृष्णदासजीनें जो नयो पद कियो हतो सो विन सूरदासजीके आगें कहन लागे ॥ सो पद ॥ ❀ (पद २ रो. राग गोडी) ❀ ॥ आवत वने कान्ह गोप बालक संग नेंचुकी खुरेंणु छुरित अलकावली ॥ भोंह मन्मथ चाप वक्र लोचन बाँण सीस शोभित मत्त मयूरचंद्रावली ॥ १ ॥ उदित उडराज सुंदर शिरोमणि वदन निरखि फूली नवल युवती कुसुदावली ॥ अरुण सकूचत अधर बिंब फल उपहसत कछूक प्रकटित होत कुंद दशनावली ॥ २ ॥ श्रवण कुंडल भाल तिलक बेसरि नाक कंठ कौस्तुभमणि सुभग त्रिवलावली ॥ रत्न हाटक खचित उरसि पदकनिपाँति बीच राजत शुभ्र झलमलक मुक्तावली ॥ ३ ॥ (यहाँतें श्रीनाथजीकृत) वलय कंकण बाजू-बंद आजानु भुज मुद्रिका कर दल विराजत नखावली ॥ क्वणित कर मुरलिका मोहित अखिल विश्व गोपिकाजन मनसि ग्रथित प्रेमावली ॥ ४ ॥ कटि छुद्रघंटिका जटित हीरामयी नाभि अंबुज वलित भृंग रोंमाँवली ॥ धाइ कबहूँक चलत भक्त हित जाँनि पिय गंड मंडल रुचिर श्रमजल कणावली ॥ ५ ॥ पीत कौशेय परिधान सुंदर अंग चरण नूपुर वाद्य गीत शब्दा-वली ॥ हृदय कृष्णदास गिरवरधरन लालकी चरण नख चंद्रिका हरत तिमिरावली ॥ ६ ❀ ॥ सो यह पद जब कृष्ण-दासजीनें विन सूरदासजीके आगें कह्यो ॥ सो सुनिकें सूरदा-सजी तीन तुक ताँई तो कछु बोले नाहीं ॥ सो जब तीन तुक

तें आगें वो पद कृष्णदासजी कहन लागे ॥ तब विन सूरदास-जीनें कह्यो ॥ जो कृष्णदास मेरो तो तुमसों वाद हे ॥ कछू प्रभुनसों वाद नाहीं ॥ में प्रभुकी वॉणी पेहेचॉनत हूँ ॥ तब वे कृष्णदासजी चुप्प करिरहे ॥ तातें वे कृष्णदासजी श्रीआचार्य-जीमहाप्रभुनके एसे कृपापात्र हते ॥ जिनके लियें श्रीनाथजीनें आप पद पूरो कियो ॥ ओर सूरदासजीहू एसे कृपापात्र हते ॥ जिननें श्रीनाथजीकी वाणी तुरंत पेहेचॉनी ॥❀(प्रसंग ५मो.)❀ एकसमें श्रीनाथजीके भंडारमें कछू सामुग्री चहियत हती ॥ सो लेवेकों कृष्णदासअधिकारी गाडा लेकें आगरे आये ॥ वा आग-रेके वजारमें एक वेश्या नृत्य करत हती ॥ ओर ख्याल टप्पा गावत हती ॥ सो देखवेकों भीड भई हती ॥ ताको सब लोग ठाढे तमासो देखत हते ॥ सो लोगनकी भीड देखिकें वे कृष्णदासजीहू तहॉ जाय तमासामें ठाढे भये ॥ सो जब भीड सब सरकि गई ॥ तब वह वेश्या कृष्णदासजीके आगें नृत्य करन लागी ॥ ओर गावन लागी ॥ सो वह वेश्या बोहोतही सुंदर हती ॥ ओर वाको गायन ओर नृत्यहू तेसोही ॥ सुंदर हतो ॥ तासों कृष्णदासजी तो वापें रीझे ॥ तब मनमें कह्यो ॥ जो यह वस्तु तो श्रीनाथजीके लायक हे ॥ पाछें जब वा वेश्याको नृत्य गायन पूरो भयो ॥ तब वाकों कृष्णदासजीनें मुद्रा दस तो तहॉ दीनीं ॥ ओर कह्यो ॥ जो रात्रिकों समाज सहित तूं हमारे घर हवेलीमें आइयो ॥ पाछें कृष्णदास आप तो जायकें हवेलीमें उतरे ॥ ओर जो सामुग्री चहियत हती ॥ सो सब लेकरिकें गाडा लदाय सिद्धकरि राख्यो ॥ पाछें रात्रि प्रहर एक गई ॥ तब वह वेश्या समाज सहित वहॉ आई ॥ पाछें वहाँ वाको नृत्य गायन भयो ॥ तब कृष्णदासजी बोहोत रीझे ॥ तब मुद्रा एकशत वाकों दीनीं ॥ ओर वा वेश्यातें कह्यो ॥ जो तेरो

रूप नृत्य ओर गाँन सब आछो हे ॥ तातें तुँ हमारे सेठिकें श्रीगिरिराज चलिकें वाकों रिझावे तो तोकों सब कछू मिलेगो॥ परि हमारो सेठि हे सो तेरे ख्याल टप्पानपर न रिझेगो ॥ तातें हों कहों सो हमारे सेठिके आगें गाईयो ॥ तब कृष्णदासजीनें पूर्वी रागमें एक पद करिकें वा वेश्याकों सिखायो ॥ पाछें दूसरे दिन कृष्णदासजी वा वेश्याकों अपनें साथ लेकें आगरेतें चले ॥ सो दूसरे दिन गिरिराजके श्रीनाथजीद्वार पोंहोंचे ॥ तहाँ सामुग्री तो सब भंडारमें धराई॥ओर वा वेश्याकों उतरिवेको स्थल बतायो ॥ पाछें उत्थापन भोगके दर्शनके समें ॥ मणिकोठामें कीर्तनीयाँ तथा ओर काहूकों विन कृष्णदासजीनें जॉन न दीनें॥ केवल वा वेश्याकों समाज सहित वे मणिकोठामें ले गये ॥ तब मंदिरमें श्रीगुसाँईजी श्रीनाथजीकों ठाढे मूठा (मोरछल) करत हे ॥ ओर भीतरिया पास हे ॥ तब वा मणिकोठामें वेश्या जाय श्रीनाथजी तथा श्रीगुसाँईजीकों साष्टांग प्रणाम करिकें वो आपके आगें नृत्य करन लागी॥ओर वो कृष्णदासको सिखायोभयो पद गायो सो पद ॥ ❀ (पद ३ रो राग पूरवी) ❀ ॥ मो मन गिरिधर छविपर अटक्यो॥ललित त्रिभंगनि अंग अंगनिपर चलिगयो तहाँही ठक्यो ॥ १ ॥ सजल श्यामघन वरण नील व्हे फिरि चित अनत न भटक्यो ॥ कृष्णदास कियो प्राण न्योछावरि यह तन जग शिर पटक्यो ॥ २ ॥ ❀ ॥ यह पद वा वेश्यानें श्रीनाथजीके आगें नृत्य करत गायो ॥ सो गावत गावत जब पिछेली तुका आई ॥ जो (कृष्णदासकियो प्राँण न्योछावर यह तन जगशिर पटक्यो) इतनों कहत वा वेश्याके प्रॉण निकसि गये ॥ ओर दिव्य शरीर धरिकें वो तो लीलामें प्राप्त भई ॥ तब वा वेश्याके समाजी हते सो सब रोवन लागे॥ जो हॅमारी तो यातें जीविका हती ॥ अब हम खॉयगे कहा ॥ तब कृष्णदासनें

विनसों कह्यो ॥ जो तुम क्यों रोवत हो ॥ चलो नीचें हों तुमकों खाँनेंकों देउँगो॥तब विन समाजीननें वा वेश्याको मृतशरीर उठाय नीचें लाय संस्कार कियो ॥ तापाछें उन समाजीनको कृष्णदास-जीनें सहस्र मुद्रा देकें विदा किये ॥ विन कृष्णदासजीनें अपनें मनतें वह वेश्या श्रीनाथजीकों समर्पी ॥ तातें वाको श्रीनाथजीनें लीलामें अंगीकार कियो ॥ पाछें मंदिर शुद्ध करवायकें श्रीगुसाँईजी नीचें पधारे॥वह वेश्या दैवीजीव हती॥तातें वाको वह शरीर छुडाय दिव्य शरीर करिकें श्रीनाथजीनें लीलामें अंगीकार कियो ॥ सो आप श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकी काँनितें विनके सेवकनकी समर्पी वस्तुको श्रीनाथजी या भाँतिसों अंगीकार करत हें ॥ ❀ (प्रसंग ६ ठो) ❀ ॥ विन कृष्णदास अधिकारीजीको एक गंगाक्षत्रांणी करकें हती ॥ तासों बोहोत स्नेह हतो ॥ सो आप श्रीगुसाँईजीकों न सुहातो ॥ सो एकदिन श्रीगुसाँईजी श्रीनाथजीको राजभोग समर्पते हते ॥ ता समें वा सामुग्रीपे वा गंगाक्षत्रीणिकी द्रष्टि परी ही ॥ परि श्रीगुसाँईजीनें वो भोगतो समर्प्यो ॥ सो राजभोग श्रीनाथजी आप आरोगे नाहीं ॥ सो श्रीगुसाँईजीनें जाँनीं नाहीं ॥ सों पाछें जब समय भयो ॥ तब आरती करि श्रीजीकों अनोसर करि श्रीगुसाँईजी आप तो नीचें उतरे ॥ तापाछें सब सेवक भीतरियादिकननें वो महा प्रसाद जाँनिकें सबननें प्रसाद लियो ॥ तब श्रीगुसाँईजीहू भोजन करिकें पोढे ॥ तापाछें श्रीनाथजीनें एक भीतरियाके पास जाय वाकों लात मारिकें जगायो ॥ ओर वासों कह्यो ॥ जो हों भूख्यो हों ॥ तब भीतरियानें कह्यो ॥ जो महाराज आपकों भोग तो श्रीगुसाँईजीनें समर्प्यो हतो॥तो हू आप भूखे क्योंरहे ॥ तब श्रीनाथजीनें वासों कह्यो ॥ जो वा राजभोगकी सामुग्रीपे वा गंगाक्षत्राणीकी द्रष्टि परी ही ॥ तातें हों राजभोग अरोग्यो

नाहीं ॥ तब वह भीतरिया तुरंत ऊठिकें श्रीगुसाँइँजी पास दोन्यो आयो ॥ तासमें आप भोजन करिकें पोढे हते ॥ तब वह भीतरियानें आपकी शैयाके निकट आय श्रीगुसाँईजीके चरण दाबे ॥ तब आप चोंकि ऊठे ॥ तब देखें तो श्रीनाथजीको भीतरिया चरण दाबिरह्योहे ॥ तब आपनें वासों पूछ्यो ॥ जो अरे तुं या समें यहाँ क्यों आयो हे ॥ तब वा भीतरियानें कह्यो ॥ जो महाराज श्रीनाथजी तो आज भूखे रहे हें ॥ तातें आप श्रीनाथजीनें पधारिकें, मोकों लात मारिकें सोवततें जगायो हे ॥ ओर कह्यो ॥ जो आज हों भूखो हों ॥ तब मेंनें विनती करी ॥ जो महाराज आपकों भोगतो श्रीगुसाँइँजीनें समर्प्यो हो ॥ तब आपनें कह्यो ॥ जो राजभोगकी सामुग्रीपे वा गंगाक्षत्राणीकी द्रष्टि परि ॥ तातें में अरोग्यो नाहीं ॥ तब एसे वा भीतरियाके वचन सुनतहीं ॥ श्रीगुसाँईजीतो तत्काल स्नान करिकें आप उपर पधारे ॥ तब भीतरियाहू स्नान करिकें तुरंत आपके साथही आयो ॥ तब आपनें वा भीतरियासों कह्यो ॥ जो भात ओर वडी करो ॥ जो तत्काल सिध्द होंय ॥ तब वा भीतरियानें तुरंत भात वडी सिध्द करी ॥ ताको श्रीगुसाँइँजीनें श्रीनाथजीकों भोग समर्प्यो ॥ पाछें रसोईया भीतरिया सब स्नान करिकें उपर आये ॥ तब आप श्रीगुसाँईजीनें आज्ञा करी ॥ जो तुम राजभोगकी सामुग्री सब फेरी सिध्द करो ॥ तथा सेंनभोगकी हू सब सामुग्री सिध्द करो ॥ तब मुखिया भितरिया "जो आज्ञा" कहिके तुरंत सेवामें गये ॥ सो जबसब सामुग्री सिध्द भई ॥ तब राजभोग सेनभोग दोनों एक ठोर श्रीगुसाँइँजीनें समर्पे ॥ पाछें समें भयो ॥ तब भोग सरायो ॥ सेंन आरती करि श्रीनाथजीकों पोढाये ॥ पाछें महाप्रसाद सब नीचें ले आये ॥ तब जो पेहेलो भात वडीको भोग

समर्प्यो हतो ॥ सो एक डवरामें व्हाँहीं रहिगयो ॥ तब राम-दासजी भीतरियानें श्रीगुसाँईजीसों कह्यो ॥ जो महाराज प्रथमकों महाप्रसादतो यहाँहीं रह्यो ॥ तब श्रीगुसाँईजी आप पाछे फिरिकें वा डवरामेंतें महाप्रसाद ठलाइकें लेत उतरे ॥ तापाछें आपनें भीतरियानकों बुलायकें वामेंतें वडी भातको महाप्रसाद रंच रंच सबनकों बाँटि दियो ॥ तापाछें श्रीगुसाँईजी आप अरोगे ॥ सो वह वडी भातको महाप्रसाद अद्भुत अलौकिक अति सुस्वादिष्ट भयो हो ॥ सो तातें श्रीगुसाँईजी आप वाकों बोहोत सराहे ॥ तब कृष्णदास अधिकारी जी हू आप बोहोत सराहे ॥ ओर कहें जो महाराज आपुही करनहारे हो ॥ ओर आपुही अरोगनहारे हो ॥ तो सामुग्री उत्तम क्यों न होय ॥ तब श्रीगुसाँईजीनें हसिकें कह्यो ॥ जो यह तुह्मारेही किये भोग भोगवत हे ॥ ❀ (प्रसंग ७ मो) ❀ ॥ अब यह बात जों श्रीगुसाँईजीनें कृष्णदास अधिकारीसों कही ॥ जो यह तुह्मारेही किये भोग भोगवत हें ॥ सो या बात पेतें विन कृष्णदासजीनें श्रीगुसाँईजीके साथ विगारी ॥ सो तादिनतें वे श्रीगुसाँईजीके उपर बोहोत खुंनस करन लागे ॥ सो एकदिन विननें श्रीगुसाँईजीसों सेवाकों पधारत समें कह्यो ॥ जो तुम पर्वत ऊपर मति चढो ॥ तब आप श्रीगुसाँईजी तहाँतें पाछें फिरे ॥ सो परासोली आये ॥ तब मनमें विचारी ॥ जो कृष्णदासजी हमकों कहा मनें करेगो ॥ परि श्रीनाथजीकी इच्छाही एसी दीसत हे ॥ तातें आप श्रीनाथजीकी इच्छा मानिकें श्रीगुसाँईजीने विन कृष्णदाससों कछु न कह्यो ॥ ओर आप परासोलीमें आय रहे ॥ सो वहाँ ध्वजाके सामनें बेठिके आप विज्ञप्ति करें ॥ ताके पूर्व आप श्रीगुसाँईजी दिन तीन लों श्रीगोवर्द्धनमें रहते ॥ ओर दिन तीनलों श्रीगोकुलमें रहते ॥ सो जबतें कृष्णदासजी-

नें दर्शनकी मनें किये ॥ तबतें आप तीन दिन परासोली ॥ ओर तीन दिन श्रीगोकुल रहनलागे ॥ सो जब आप परासोली पधारते ॥ तब आप जो श्रीनाथजीके मंदिरकी खिरकी परासोलीकी ओर पडती ॥ ताके साह्में विराजते ॥ तब श्रीनाथजी वा खिरकीमें आयकें आपकों दर्शन देते ॥ सो बात कृष्णदास अधिकारीनें जाँनी ॥ जो श्रीनाथजी तो खिरकीमें जायकें श्रीगुसाँईजीकों दर्शन देत हें ॥ तातें विननें वो मंदिरकी खिरकी जो परासोलीकी ओर हती ॥ सो चुनवाय लीनीं ॥ तबतें आप श्रीगुसाँईजी परासोली पधारीकें ध्वजाके साह्में बेठिकें श्रीनाथजीकों विज्ञप्ति कियो करें ॥ सो जब जब आप श्रीगोकुलतें परासोलीकों आवें ॥ तब तब श्रीनाथजीके भितरिया रामदासजी आदि सब सेवक श्रीनाथजीकी राजभोगकी आरती भये उपराँत अनोसर करिकें आप श्रीगुसाँईजीके दर्शननकों परासोली आवते ॥ सो आपको दर्शन करिकें चरणोदक लेकें पाछें अपनें स्थलकों जाय प्रसाद लेते ॥ सों हू विन कृष्णदास अधिकारीजीकों सुहातो नाहीं ॥ परि वे करें कहा ॥ जो सेवकनसों तो विनको कछू चले नाहीं ॥ जो वे सेवकनतें कछू कहें तो वे कहें॥जो हम सब सेवा छोडीकें चले जाँयगे ॥ तातें वे कछू बोलें नाहीं ओर वे सेवक तो सब श्रीगुसाँईजीके सेवक हे ॥ सो वे आपके दर्शन किये बिनाँ प्रसाद कसें लेयँ ॥ तब जो श्रीगुसाँईजी आप विज्ञप्तिके[1] श्लोक करें सो एक पत्रपे लिखिकें राँमदासजी भीतरियाकों देते ॥ ओर कहते ॥ जो यह पत्र श्रीनाथजीकों दीजयो ॥ सो पत्र जब वें राँमदासजी सेवामें जाते तब श्रीनाथजीकों देते ॥ ताको प्रत्युत्तर आप श्रीनाथजी लिखिकें राजभोगकी आरती उपराँत विन राँमदासजीकों देते ओर कहते॥ जो कहते पत्र श्रीगु

१ वे श्लोक बृहत्स्तोत्रसरित्सागरभागदूसरोजामें २३७ ग्रंथहेतामेंछपेहें

साँईजीको दीजियो ॥ सो वो पत्र जब वे रामदासजी आप श्रीगुसाँईजीके दर्शनकों परासोली उतरें ॥ तब लायकें आपकों देते ॥ सो श्रीगुसाँईजी आप बाँचिकें तुरंत वा पत्रकों जलमें घोरिकें पी जाते ॥ याभाँतिसों छे महीनाँ बीते ॥ परि श्रीगुसाँईजीने विन कृष्णदासजीकों श्रीनाथजीके अधिकारी ओर श्रीआचार्यजी-महाप्रभुनके सेवक जाँनिके कछू न कहें ॥ परि आप श्रीनाथ-जीके विरहको खेद मनमें बोहोत करें ॥ या भाँतिसों छे म-हिनाँ भये ॥ पाछें एकदिन राजा बीरबल श्रीगोकुल आयनि-कसे ॥ तादिन श्रीगुसाँईजीतो आप परासोली हते ॥ परि विनके जेष्टपुत्र श्रीगिरिधरजी घर हते ॥ तब राजा बीरबलनें आपके घर मनुष्य पठायकें श्रीगुसाँईजीकी खबरि मंगवाई ॥ तब आपके पोरियानें कही ॥ जो आपतो परासोली पधारे हें ॥ परि श्रीगिरिधरजी घर हें ॥ सो समाँचार वा नोकरनें राजा बिर-बलसों विदित किये ॥ तब राजा बीरबल श्रीगिरिधरजीके दर्शनकों आये ॥ तब आप श्रीगिरिधरजीनें विनको सन्माँन कियो ॥ तब राजाबीरबलनें श्रीगुसाँईजीके कुशल समाचार पुछे ॥ तब आप श्रीगिरिधरजीनें कह्यो ॥ जो राजाजी श्रीजीको अधिकारी कृष्णदास काकाजीकों श्रीनाथजीके दर्शन करन नाँहीं देत ॥ तातें काकाजीकों बोहोत खेद होत हे ॥ सो आप काकाजी परासोलीमें जाय ध्वजाके दर्शन करत हें ॥ तब राजा बीरबलने श्रीगिरिधरजीसों कह्यो ॥ जो महाराज अबहीं हों कृष्णदासकों निकासत हों ॥ आप चिंता न करें ॥ यों कहिकें राजा बीरबल श्रीगिरिधरजीसों विदा होयकें ॥ मथुरा आये ॥ तहाँकी फोजदारी राजा बीरबलकी हती ॥ सो राजा बीरबलतो मथुराकों गये ॥ पाछेतें श्रीगुसाँईजी आप परा-सोलीतें श्रीगोकुल आये ॥ तापाछें राजा बीरबलनें मथुराजीतें

पाँचसे मनुष्य श्रीगोवर्द्धनकों भेजे ओर ऊनतें कह्यो ॥ जो तुम जायकें विन कृष्णदास अधिकारीकों पकडि ल्यावो ॥ तब वे मनुष्य राजा बीरबलकी आज्ञा तें श्रीगोवर्द्धन जायकें ॥ कृष्ण दासकों पकडिकें मथुरा ले आये ॥ तब राजा बीरबलनें विन कृष्णदासकों बंदीखाँनेंमें भेजिदिये ॥ सो खबरि श्रीगोकुलमें श्रीगिरिधरजीपें पोंहोंचतेहीं विननें जाय श्रीगुसाँईजीसों कह्यो ॥ जो काकाजी विन कृष्णदास अधिकारीकों तो राजा बीरबलनें बंदीखाँनेंमें दियो हे ॥ तब आप श्रीगुसाँईजी तो परम दयालु हें॥ तातें यह बात सुनतहीं आप तुरंत कह ऊठे ॥ जो हाय हाय श्रीआचार्यजीके सेवकनकों इतनों कष्ट ॥ पाछें आपनें श्रीगिरिधरजीसों कह्यों ॥ जो ये तुमनें बीरबलसों कह्यो होयगो ॥ तब श्रीगिरिधरजीनें विनती करी॥जो राजा बीरबल यहाँ आये हते॥ तिननें आपके समाँचार पूछे ॥तब हमनें विनतें सहजमें कह्यो हतो॥ जो अधिकारी कृष्णदासजीनें काकाजीकों श्रीनाथजीके दर्शन बंद किये हें ॥ तासों आपकों बोहोत खेद होत हे ॥सो आप परासोली श्रीजीकी ध्वजाके दर्शनकों पधारेहें ॥ तब श्रीगुसाँईजीनें कह्यो ॥ जो हों भोजन तब करुंगो जब कृष्णदासजी आवेंगे ॥ तब श्रीगिरिधरजी आप तुरंत घोडा मंगवाय तापे असवार होयकें आप तुरंत मथुरा आये॥ सो आवतखेम आपबीरबलसों मिले ॥ ओर आज्ञा किये जो श्रीगुसाँईजी तो श्रीगोकुल पधारेहें सो आपभोजन करत नाहीं ओर कहत हें ॥ जो जब कृष्णदास केदमेंतें छूटिकें आवेंगे ॥ तब में भोजन करुंगो॥तातें अब तुम कृष्णदासकों छोडिदेउ ॥तब बीरबलनें कृष्णदासकों केदमेंतें बूलवायकें श्रीगिरिधरजीके हवालें करिदीनें ॥ तब श्रीगिरिधरजी विनकों अपनें संग लेकें श्रीगोकुल आये ॥ तब श्रीगुसाँईजीनें हलकारा द्वारा सुनीं ॥ जो कृष्णदासकों लेकें श्रीगिरिधरजी आवत हें ॥ तब आप श्रीगुसाँईजी विन

कृष्णदासजीकों लेवेकों आगें पधारे ॥ सो आप श्रीठकुराँणी घाट पोंहोंचे ॥ ओर वा ओरतें श्रीगिरिधरजी सहित कृष्णदासजी आये ॥ सो विन कृष्णदासजीनें श्रीगुसाँइजीकों देखतेंही साष्टांग दंडवत कियो ॥ पाछें ऊठिकें यह पद नयो करिकें गायो ॥ सो पद ❀ (पद ४ थो. राग कान्हरो) ❀ ॥ श्रीविठ्ठलेशजूके चरणनकी बलि ॥ हमसे पतित उधारण कारण परम कृपालु आपुन आये चलि ॥ १ ॥ उज्वल अरुण दयारंग रंजित दश नखचंद विरहत मन निर्दलि ॥ शुभकर सुखकर शोभन पावन भक्त मुदित लालित कर अंजुलि ॥ २ ॥ अतिशय मृदुल सुगंध सुशीतल परसत त्रिविध ताप डारत मलि ॥ भजि कृष्णदास वार एक शिर धरि तेरो कहा करेगो रिपु कलि ॥ ३ ॥ ❀ ॥ सो यह पद करिकें विननें श्रीगुसाँईजीके आगें गायो ॥ पाछें श्रीगुसाँईजी विन कृष्णदासजीकों श्रीयमुनॉस्नान करवायकें अपनें घर ले आये ॥ तब विनसों आपनें कह्यो ॥ जो उठो प्रसाद लेऊ ॥ तब कृष्णदासनें कह्यो ॥ जो महाराज आप भोजन करिये ॥ पाछें हों आपकी जूँठनि लेऊँगो ॥ तब आप श्रीगुसाँईजी भोजनकों उठे ॥ तासमें कृष्णदासजीनें एक पद करिकें ओर गायो सो पद ॥❀ (पद ५ मो. राग कान्हरो)❀ ॥ ताहीकों शिर नाईये ॥ जो श्रीवल्लभसुतपदरज रति होय ॥ कीजें कहा आन ऊँचे पद तिनसों कहा सगाई मोय ॥ १ ॥ सारासार विचार मतो करि श्रुतिवच गोधन लियो निचोय ॥ तहाँ नवनीत प्रकट पुरुषोत्तम सहजहीं गोरस लियो विलोय ॥ २ ॥ जाके मनमें उग्र भरम हे ॥ श्रीविठ्ठल अरु श्रीगिरिधर दोय ॥ ताको संग विषम विषहुतें भूलिहु चतुर करो जिनि कोय ॥ ३ ॥ तेज प्रताप देखि अपनें चक्षु असमसार जो भिदे न तोहि ॥ कृष्णदास ते सुरतें असुर भये असुरतें सुरभये चरनन छोहि ॥४॥❀॥

यह पद सुनिकें श्रीगुसाँईजी आप बोहोत प्रसन्न भये पाछें भोजन करिकें आप बाहिर पधारे ॥ तब कृष्णदासजीकों आपनें भीतर पठाये ॥ तब श्रीगिरिधरजीनें विनकों श्रीगुसाँईजीकी जूठन-की पातरि धरि दीनी ॥ तब विन कृष्णदासजीनें प्रसाद लियो॥ पाछें वे अँचवायकें बाहिर आये ॥ तब विनकों बीडा दोय श्रीगु साँईजीनें दीनें ॥ पाछें वा रात्रिकों वे कृष्णदासजी वहाँई रहे ॥ पाछें जब पिछली रात्रि घडी दोय रही ॥ तब श्रीगुसाँईजी आप ऊठे ॥ सो देहकृत्य करिकें स्नान किये ॥ तापाछें श्रीनवनी तप्रियजीकी मंगला करि आपके दर्शन करिकें बाहिर आये ॥ सो श्रीनाथद्वार पधारिवेकी तैयारी किये ॥ तब घोडा दोय मंगवाये ॥ सो एक घोडापर तो आप श्रीगुसाँईजी असवार भये॥ ओर एक घोडापर कृष्णदासकों असवार किये ॥ पाछें आप श्रीगोकुलतें चले ॥ सो श्रीगिरिराजमें श्रीनाथद्वार सवाप्रहर दिन चढे आय पोंहोंचे ॥ ता समें वहाँ श्रीनाथजीको राज भोग आयो हतो ॥ तातें आप श्रीगुसाँईजी तत्काल स्नान करिकें उपर पधारे ॥ तापूर्व आप जो परासोलीसों श्रीनाथ जीको विज्ञप्तिपत्र लिखि पठावते ॥ ताको प्रत्युत्तर जो आवतो सो तो आप जलमें घोरिकें वाही समें पीजाते ॥ परि छेले दिनकी विज्ञप्तिके प्रत्युत्तरको पत्र श्रीनाथजीके हस्ताक्षरको श्रीगु साँईजी आप राखे हते ॥ सो पत्र वा समें आप अपनें साथ ले आये हते ॥ सो पत्र लियेंही आप श्रीगुसाँईजी उपर प-धारे ॥ पाछें श्रीनाथजीको राजभोग आयो हतो ॥ सो आप समो भयो तब सरायवेकों भीतर पधारे ॥ ता समें आप श्रीगुसाँईजी बडी आतुरतातें भीतर पधारे ॥ सो आपकों देखिकें श्रीनाथजी अति प्रसन्न भये ॥ ओर पूछे जो क्यों नींकें हो ॥ तब आपनें कह्यों ॥ जो आपकों देखे सोई दिन

नींको ॥ पीछें परस्पर आप दोऊ मुसिक्याये ॥ पाछें आपनें श्रीनाथजीकों आचमन करवायकें भोग सरायो ॥ ता पाछें वह पत्र जो आप संग लाये हते ॥ सो गवाखामें झाँपीमें धऱ्यो ॥ पाछें राजभोगके दर्शन भये ॥ तापाछे श्रीगुसाँईजीनें राजभोगकी आरति करि श्रीकों अनोसर करि नींचें उतरे ॥ तापाछें आपनें अपनें घर रसोई करि भोग समर्पि भोजन करिकें आप पोढे हते ॥ सो उत्थापनके समयतें घडी दोय पहलें ऊठे ॥ सो पाछें जब उत्थापनको समों भयो ॥ तब आप स्नान करिकें उपर पधारे ॥ तब शंखनाद करवायो ॥ तब श्रीनाथजीको उत्थापन भयों पाछें सेन आरती उपरांत जब सब दर्शन करिकें गये ॥ तब आप श्रीगुसाँईजीनें विन कृष्णदासजीकों बुलवायकें ॥ श्रीनाथजीके संनिधाँन कह्यो ॥ जो कृष्णदासजी जो अधिकार तुम प्रहले करत हते सो फेरि करो ॥ ओर श्रीनाथजीकी सेवा आछीभाँतिसों करियो ॥ तब विन कृष्णदासनें ताही समें श्रीनाथजीके संनिधाँन एक पद करिकें गायो सो पद ॥ ❀ (पद ६ डो. राग कान्हरो) ❀ परम कृपाल श्रीवल्लभनंदन करत कृपा निज हाथदे माथें ॥ जे जन शरण आय अनुसरहीं गहि सोंपत श्रीगोवर्द्धन नाथें ॥ १ ॥ परम उदार चतुर चिंतामणि राखत भव धारातें साथें ॥ भजि कृष्णदास काज सब सरहीं जो जानें श्रीविट्ठलनाथें ॥ २ ॥ ❀ ॥ यह पद गायो ओर विनती कीनी ॥ जो महाराज मेरो अपराध क्षमा करिये ॥ तब श्रीगुसाँईजीनें कह्यो ॥ जो तुमारो अपराध श्रीनाथजी क्षमाँ करेंगे॥तापाछें विन कृष्णदासकों विदा किये ॥ पीछें आप श्रीनाथजीकों पोढायकें श्रीगुसाँईजी नीचें उतरे ॥ आपतो परम दयालू हें ॥ तातें कृष्णदासकी कृति-कछू मनमें न आँनी ॥ सो अपनें पितृचरण श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके सेवक जाँनिकें वापे अनुग्रहही

कियो ॥ तापाछें श्रीगुसाँईजी तहाँ दिन दोय ओर रहे ॥ तापाछें आप पाछे श्रीगोकुल पधारे ॥ तबतें वे कृष्णदास पाछे पूर्ववत् श्रीनाथजीको अधिकार करनलागे ॥ ❀ (प्रसंग ८ मो) ❀ ॥ अब श्रीगुसाँईजीकी आज्ञातें वे कृष्णदासजी फिर अधिकार करनलागे ॥ सो बोहोत वर्षताँई विननें श्रीनाथजीके अधिकारकी सेवा आछिभाँतिसों किनीं ॥ तब एकसमें एक वैष्णव श्रीजीके दर्शनकों आयो हतो तानें विन कृष्णदासजीसों कह्यो ॥ जो अधिकारीजी मोकों यहाँ एक कूआ बनवावनों हे ॥ ओर अपनें देश जानों हे ॥ तातें में द्रव्य आपकों दे जात हों ॥ सो आप कूआ बनवाईयो ॥ तब कृष्णदासजी कहे ॥ जो आछो ॥ तब वा वैष्णवनें विनकों तीनशत रुपैया देकें वो तो अपनें देशकों गयो ॥ तब विन कृष्णदासजीनें विन रुपैयानमें तें एकसो रुपैया न्यारे काढिके एक कुल्हरामें धरिकें ॥ वा बागमेंही एक आँबके वृक्षके नीचें गाडि राखे ॥ सो यातें जो जब दोयसे रुपैया लगिचुकेंगे ॥ तब याकों काढेंगे ॥ पाछें आछो मुहूर्त देखिकें विननें रुद्रकुंड उपर एक कूवा खुदवायो ॥ सो केतेकदिनमें वो कूआ मोंहोडेताँई पक्को बँधिकें तैयार भयो ॥ तबताँइँ वे दोयसे रुपैया तो लागि गये ॥ पाछें जब मठोटा बनवावनों बाकी रह्यो ॥ तब वे कृष्णदासजी एकदिन श्रीगोवर्द्धननाथजीके उत्थापनके दर्शन करिकें वो कूआ देखन गये ॥ तब हाथमें आसा हो ॥ सो आसा टेकिकें वे कूआके उपर ठाढे भये और भीतरकों देखन लागे ॥ सो वो हाथमेंको आसा सरक्यो ॥ तातें वे कृष्ण दासजी कूआमें जाय पडे ॥ तब नजीकके लोगनमें सोर भयो ॥ जो कृष्णदासजी तो कूआमें गिरि पडे ॥ तब सब मनुष्य दोरे ॥ तामेंके दोय मनुष्य कूआमें उतरे ॥ तिननें बोहोत ढूंढे ॥ परि कृष्णदासजीको शरीर कूआमेंतें न मिल्यो ॥ तब सबननें

कह्यो ॥ जो यह कहा चमत्कार भयो ॥ तब ता समें श्रीगुसाँईजी हू श्रीगिरिराज पधारे हते ॥ तिनके आगें तुरंत आयकें वे सब समिचार रॉमदासजी भीतरियानें कहिकें कही ॥ जो महाराज (अधोगछंतितामसाः) तब श्रीगुसाँईजीनें कह्यो ॥ जो रामदासजी एसी न कहिये ॥ जो कृष्णदासजी कूआमें गिरे ॥ ओर विनको शरीर न मिल्यो ॥ वाको कारण यह हे ॥ जो कृष्णदासमें जो कोईके अलौकिक जीव हतो सोतो श्रीनाथजीकी लीलामें प्राप्त भयो ॥ ओर विनको लौकिकजीव ओर शरीरनें जो हमारी अवज्ञा करी हे ॥ सो वह शरीर ओर लौकिकजीव इन दोनोंनकों अपनों भोग भुगतनों हे ॥ सो कछुकदिन भुगतकें मुक्त होंयगे तापाछें विन कृष्णदासजीकी सद्य प्रेत योनीं होयकें पूँछरीकी ओर एक पीपरको रूख हतो ॥ ताउपर वे रहे ॥ सो श्रीगुसाँईजीकी अवज्ञातें विन कृष्णदासके शरीरकी यह गति भई ॥

❀ (प्रसंग ९ मो.) ❀ ॥ एकसमें श्रीनाथजीकी एक भेंसि खोयगई हती ॥ सो वा भेंसिकों ढूंढिवेकों गोपीनाथदासग्वाल तथा ओर चार पांच ग्वाल पूँछरीकी ओर गये ॥ सो वहाँ वरहामें वो भेंसि तो पाई ॥ सो लेकें वे सब ग्वाल आवत हते ॥ सो वे देखें तो पूँछरीके पास श्रीनाथजी आप खेलत हें ॥ ओर एक पीपरके रूख उपर वे कृष्णदास प्रेत व्हेकें बेठेहें ॥ तब विन कृष्णदासनें वा गोपीनाथदासग्वालकों बुलायकें कह्यो ॥ जो अरे भाई मेरी विनती तुम श्रीगुसाँईजीसों करियो ॥ जो कृष्णदासनें विनती करीहे ॥ जो कृपानाथ में आपको अपराधी हों ॥ तातें मेरी यह अवस्था हे ॥ यद्यपि हों श्रीनाथजीके पास हों ॥ तोहू मेरी गति होति नाहीं ॥ तातें आप कृपा करिकें मेरो अपराध क्षमाँ करो ॥ तो मेरी गति होय ॥ ओर वा बागमें एक आँब को रूख हे ॥ ताके नीचें एक कुल्हरामें एकशत मुद्रा गडि हें ॥

सो काढिकें वा कूआको मठोटा बाकी रह्यो हे ॥ सो बनवाओ तो में वा वैष्णवके रिणतें छूटों ॥ तब वा गोपीनाथग्वालनें विनसो हाँमी भरी ॥ पाछें गोवर्द्धन आयकें यह बात वानें सब श्रीगुसाँईजीसों कही ॥ तब श्रीगुसाँईजीनें वा आँबके रूखके नींचेंतें वे सो रुपैया कढवाय ॥ वा रुद्रकुंड उपरके कूआको मठोटा बनवायो ॥ तब वे कृष्णदास वा कूआ बनवायवेवारेके रिणमेंतें तो छूटे ॥ परि वे प्रेत योनीं मेंतें मुक्त न भये ॥ पाछें कृष्णदासकों वा प्रेत योनिं मेंहूँ श्रीनाथजी दर्शन देत हे ॥ ताको कारण यह हतो ॥ जो जब कृष्णदासजीनें प्रथम परम कृपाल श्रीवल्लभनंदन या पदकी तुकमें कह्योहो ॥ जो (जे जन शरणि आय अनुसरहीं गहि सोंपत श्रीगोवर्द्धननाथें) सो श्रीगुसाँईजी आपनें विन कृष्णदासकों श्रीनाथजीकों पाछें सोंपिकें अधिकार करिवेकी आज्ञा करी ही ॥ तब बाँह गहेकी लाज जाँनिकें आप श्रीनाथजी वाकों दर्शन देते ॥ ओर दूरतें बातें हू करते ॥ परि उद्धार न करते ॥ कारण जो जानें जाको अपराध कियो होय ॥ सोइ वापे क्षमाँ करे ॥ तब वो मुक्त होय ॥ तामें वा कृष्णदासकी वेद विहित कर्मसों उत्तर क्रिया हू भइ न हती ॥ सो तो अवश्य भइ चहिये ॥ कारण ताबिनाँ तो मुक्ति नही ॥ ऐसी वेदमें भगवदाज्ञा हे ॥ सो आपकी आज्ञा आप श्रीनाथजी केसें उल्लंघन करें ॥ तासों श्रीगुसाँईजीके वचनतें श्रीनाथजीनें कृष्णदासको अपराध तो क्षमाँ कियो ॥ जो प्रेत योनिंमेंहूँ विनकों दूरितें दर्शन देते बोलतें ॥ परि स्पर्श न कियो ॥ जो स्पर्श होय तो तो उद्धारही हो ॥ तब एकदिन विन प्रेत कृष्णदासजीनें श्रीनाथजीसों विनती करि ॥ जो महाराज आप मोकों दर्शन देतहो ॥ मोतें बोलत हो ॥ परि मेरो उद्धार काहे नाहीं करत ॥ तब श्रीनाथजीनें कह्यो ॥ जो हों तोकों दर्शन देत हों ॥ ओर तोसों बोलतहों ॥ सो केवल श्रीगुसाँईजीके वचनतें

वाँहगहेकी लाजके लियें ॥ नाँहितो प्रेत योनिमें तोकों दर्शन हू न देतो ॥ ओर तोतें बोलतो हू नाहीं ॥ परि उद्धार तो तेरो श्रीगुसाँईजीके हाथ हे ॥ जो तेनें श्रीगुसाँईजीको अपराध कियो हे ॥ तातें जो श्रीगुसाँईजी कृपा करिकें तेरी उर्ध्वदेहिक क्रिया करवावें तब तेरो उद्धार होय ॥ कारण क्रिया कर्म तो मुख्य हे ॥ तातें वो तो अवश्य भइ चहिये ॥ तापाछें श्रीगुसाँ-ईजी परम कृपालु हें ॥ तिननें वा कृष्णदासजी उपर दया करिकें बिचारी ॥ जो अब वाकों बहुतदिन भये दुःख पावतें ॥ अब तो वाको उद्धार होय तो भलो ॥ एसें जॉनिकें ॥ आप श्रीगुसाँई-जीनें मथुरा पधारिकें श्रीयमुनाँकिनारे ध्रुवघाटपे आयकें ॥ तिर्थो-पाध्यायद्वारा बिन कृष्णदासकी उत्तरक्रियादि कर्म करवायकें वाको उद्धार कियो ॥ तब बिन कृष्णदासजीको दिव्य शरीर होयकें वे लीलामें प्राप्त भये ॥ तापाछें आप श्रीगुसाँईजी वाकी सराहनाँ करते ॥ जो कृष्णदासजीनें तीन वस्तु बोहोत आछी कीनीं ॥ तामें एकतो बिननें जेसो श्रीनाथजीको अधिकार कियो तेसो फेरिकें कोऊ दूसरो न करेगो ॥ ओर दूसरे जो बिननें कीर्तन किये ॥ सो हू अति अद्भुत किये ॥ ओर तीसरी श्रीआचार्यजी-महाप्रभुनके सेवक होयकें जेसी सेवा बिननें करी तेसी सेवा हू ओर कोऊ न करेगो ॥ सो वे कृष्णदासजी अधिकारी एसे परम कृपापात्र भगवदीये ॥ तातें अबजो श्रीनाथजीके अधि-कारी बने वाको नाम कृष्णदास धर्यो जायहे ॥ बिनकी अनि-र्वचनीय वार्ता कहाँताँईलिखिये ॥ वैष्णवसखा ४ थो. ॥ ॥ ७ ॥

इति श्रीअष्टसखामेंके श्रीआचार्यजीमहाप्रभुजीके परम कृपापात्र भगवदीय चारि सखा महाकवी हते तिनकी वार्ता समाप्तः ॥

वैष्णवसखा ५ मो ॥ गोविंदस्वामीकी वार्ता.

श्रीनाथजीके अष्टसखा में च्यार श्रीमहाप्रभुजीके सेवक हते ओर च्यार श्रीगुसांईजीके सेवक हते ॥ श्रीविठ्ठलनाथजी (श्री गुसांईजी) के सेवक चार सखा तिन में प्रथम गोविंदस्वामी सनोडिया ब्राह्मण जो महाबनमें रहेते तिनकी वार्ता ॥ वे गोविंदस्वामी प्रथम आंतरी गाममें रहते ॥ ते ओरनकूं अपने सेवक करते ॥ तासूं स्वामी कहावते ॥ वे परम भगवद्भक्त हते ॥ श्रीभगवानके चरणारविंदकी प्राप्ति केसें होय ॥ याही बातकी निरंतर चिंता रखते ॥ सो एक दिन विनके मनमें श्रीठाकुरजीने एसी प्रेरणाकरी जो व्रज हे सो मेरो धाम हे ॥ तासूं वे आंतरी छोडके महावनमें आय रहे ॥ गोविंदस्वामी आछे कवि हते ॥ सो नित्य नये नये पद करके अपने शिष्यकूं शिखावते ॥ उनके शिष्यनने आयके वे पद एकदिना श्रीगुसांईजी की आगे गाये ॥ सो सुनके श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भये ॥ विन शिष्यनने आयके गोविंदस्वामीकूं कहा के आपके पद सुनके श्रीगुसांईजी बहुत प्रसन्न होवेहें ॥ ये सुनिके गोविंदस्वामीनें श्रीगुसांईजीकू मिलवेकी ईच्छा करी ॥ भगवदिच्छाते एकसमय श्रीगुसांईजीके सेवकको ओर गोविंदस्वामीको मिलाप भयो ॥ वाकी संग गोविंदस्वामी गोकुल आय श्रीगुसांईजीकूं मिले ॥ वासमे श्रीगुसांईजी संध्यावंदन ओर वैदिक कर्म करते हते ॥ सो देखके गोविंदस्वामी मनमें समझें ये कोई कर्ममार्गीय महापुरुष दिखेहे ॥ श्रीगुसांईजीने उनको आदर कियो ॥ तब गोविंदस्वामीने विचार कियो जो मोकूं कोई दिन देखे विना केसे जानगये ॥ ये कोईबडे महात्मा हे ॥ पीछे श्रीगुसांईजीकूं शरण लवेकूं विनतीकरी ॥ तब गुसांईजीनें कही न्हाय आवो ॥ वे न्हाय आये तब श्रीनवनीतप्रियजीके सान्निधान नाम निवेदन करायो ॥ तासूं श्रीको गोविंदस्वामीकूं साक्षात्कार भयो ॥

वैष्णवसख्या ६ ठो ॥ श्रीछीतस्वामीचोवेकी वार्ता ॥

वे छीतस्वामी मथुरामें रहते ॥ मथुरामें जा समय पांच चोवे वडे गुंडे हते ॥ विन पांचनमें छीतचोवे सबके सरदार हते ॥ सो विनने विचार कर्‍यो जो कोई गोकुलमें जायहे सो श्रीगुसांईजीकूं वस होयहे ॥ जासूं एसो लगेहे जो श्रीगुसांईजी कछू जादू टोना वहोत जानेहे ॥ परंतु हमारे पर टोनो चले तव साची मानी जाय ॥ एसो विचारी पांचो जने गोकुल आये ॥ वामेंके च्यार चोवा तो वहार वेठरहे ओर एक (छीतस्वामी) हाथमें खोटो नारियल ओर खोटो रुपैयो लेके भितर गयो ॥ श्रीगुसांईजीकूं पाय परके भेट धरी ॥ तव श्रीगुसांईजीने खवाससूं आज्ञाकरी ॥ जो या रुपैयाकी सांकर मंगाव ॥ ओर ये नारियल फोडके साकर ओर नारियल प्रसादी करके वांटदे ॥ सो खोटा नारियल ओर खोटा रुपैया खरा हो गया देखके छीतुस्वामी अचरत भये ॥ ओर श्रीगुसांईजीकूं कही जो मोकूं शरण लेओ ॥ तव श्रीगुसांईजीने वाकूं उपवास करवायके नाम सुनायो ॥ जबवे चार वहार वेठे हते विननें छीतस्वामीकूं बुलाये ॥ तव गुसांईजीने कही जो तुमारे संगी तुमकूं बुलावतहे ॥ सो तुम जाओ ॥ तव छीतस्वामीनें वहार आयके चारो चोवानसे कही मोकूं टोना लगगयोहे ॥ तुम भागजावो नहि तो तुमकूं लग जायगो ॥ ये सूनके वे चारो जने भाग गये ॥ वा समय छीतस्वामीने एक पद करिके गायो ॥ सो पद ॥ राग नट ॥ भई अव गिरिधरसों-पहेचान ॥ कपट रूप धरी छलवे आयो ॥ पुरुषोत्तम नहि जान ॥ १ ॥ छोटो वडो कछू न जान्यो छाय रह्यो अज्ञान ॥ छीतस्वामी देखत अपना यों जयजय कृपा निधान ॥ २ ॥ ये पद सूनके श्रीगुसांईजी वहुत प्रसन्न भये ॥ पाछे दुसरे दिन व्रतकरवायके छीतस्वामीकूं गुसांईजीने निवेदन करवायो ॥ तासूं विनकूं श्रींको साक्षात्कार भयो ॥ पाछे वे नित्य नये पद करके गावे लगे ॥

वैष्णवसखा ७ मो ॥ चतुर्भुजदासकी वार्ता ॥

श्रीनाथजीके सखा कुंभनदास हते ॥ वाकूं एकदिन श्रीगोवर्धन नाथजीने चार भुजा धरिके दर्शन दियो ॥ वाही दिन वाके घर बेटाको जन्म भयो जासूं वा बेटाको नाम चतुर्भुजदास धर्यो ॥ वे चतुर्भुजदास ११ दिनके भये ताहीं समय कुंभनदासजीने श्रीगुसांईजीके पास ले जायके नाम सुनवाये ॥ ओर जब ४१ दिनके भये तब श्रीगुसांजीकेपास ले जाय निवेदन करवाये ॥ तासूं चतुर्भुजदासमें श्रीनाथजीने अलौकिक सामर्थ्य दिनी ॥ एक दिन कुंभनदासजी शयनके दर्शनके पद गावे लगे ॥ सो प्रथम तुक ॥ वे देखो बरत झरोखन दीपक हरि पोढे ऊंची चित्रसारी ॥ ये तुक कुंभनदासजीने गाई तब ॥ चतुर्भुजदास एकदम गाय ऊठे जो ॥ सुंदर बदन निहारण कारण बहुत यतन राखे कर प्यारी ॥ ये सुनिकें कुंभनदासजीने निश्चयकिनो जो इनकुं श्रीभगवल्लीलाको अनुभव भयो हे ॥ एकदिन श्रीनाथजीके शृंगारके दर्शन चतुर्भुजदासजीने कीने ओर श्रीगुसांईजी आरसी दिखावत हते ॥ तासमें चतुर्भुजदासजीने ये पद गायो ॥ सुभग शृंगार निरख मोहनको ले दर्पण कर पियहि दिखावें ॥ आपन नेक निहारिये बलिजाउं आजकी छबि बरनि न जावे ॥ तब एक वैष्णव नें चतुर्भुजदाससों पूछी ॥ जो शृंगार करके श्रीगुसांईजी नित्य आरसी दिखावें हे ॥ सो आजकी पदको का अभिप्राय ॥ तब चतुर्भुजदासने ओर पद गायो ॥ माईरी आज और काल और छिनछिन और ओर ॥ या भातिसूं नित्य नये नये पद सेवाके अनुसार साभिप्राय बनायके चतुर्भुजदास गायवे लगे ॥ एसे पदसे भगवत्सेवामें चित दृढ होय हे ॥ तासूं सेवामें समे समे के कीर्तन की आवश्यकता दीखे हे ॥ वेसे बहुत जरूरीके पद चतुर्भुजदासनें किये हे ॥ तासूं इनकी वार्ता कहांताई लिखिये ॥

वैष्णवसखा ८ मो ॥ नंददासकी वार्ता ॥

प्रसिद्ध श्रीरामभक्त तुलसीदासजीके वे नंददास छोटेभाई हते ॥ विनकूं नाच तमासा देखवेको तथा गान सुनवेको बहुत शोख हतो ॥ एकदिन नंददासजीने श्रीरणछोडजीके दर्शनकूं द्वारिका जायवे की शीख मांगी ॥ तब तुलसीदासजीनें कह्यो, अपन तो श्रीरामचंद्रजीके अनन्यभक्त हे ॥ तासूं कांहीं जायवेकी जरूर नहि ॥ एकदिन नंददासजी बडे भाईकी रजाविना द्वारका जाने लगे ॥ सो मार्ग भूलगये ॥ सो कुरु क्षेत्रकी आडी नंदगाम जाय पहुचे ॥ वहां एक साहुकार रहतो हतो ॥ नंददासजी वाके घर भिक्षा लेवे गये ॥ वाकी स्त्री भिक्षा देने लगी ॥ वाको अतिसुंदर रूप देख नंददास मोहित होयगये ॥ तबसे नित्य जायके वाके दरवाजेमें बेठ रहते ॥ जब वा साहुकारकी स्त्रीको मुख देखलेते तब डेरापे आवते ॥ ऐसें करते बहुत दिन बीते ॥ गाममें वा स्त्रीकी लोक चर्चा करने लगे ॥ तब वास्त्रीके श्वसूर तथा पति विनने विचार किनो ये गाममें रहनो आछो नहीं ॥ सगरे कुटुंब नंदगाम छोडके गोकुल गये ॥ जब नंददासकूं खबर भई तब वेहु गोकुलतरफ चले ॥ पीछे व्रजमें पहुचे ॥ सो यमुनाजी उतरवेको समय आयो तब वा साहुकारने कछु मलाहनकु दिनो ॥ ओर ये कहींके या ब्राह्मणकूं मती उतारो ॥ ये हमकूं दुःख देतहे ॥ जब सब उतरके गोकुल गये ॥ श्रीगुसांईजीके दर्शन करे ॥ तब श्रीगुसांईजीने आज्ञाकरिजो वा ब्राह्मणकूं यमुनाके पार क्यों छोड आयहो ॥ तब वे पछतावे लग्यो ॥ श्रीगुसांईजीने मनुष्य पठायके वा ब्राह्मण (नंददास) कूं पारसो बुलायलीनो ॥ ओर वाकूं भगवत्स्वरूपके दर्शन करवाये ॥ साक्षात् कोटिकंदर्प लावण्य श्रीपूर्ण पुरुषोत्तमके दर्शन भये तब नंददासको मन वहांते छूटकें भगवत्स्वरूपमें लगगयो ॥ ये नंददासजी बडे पंडित ओर कवि हते ॥ विनने पांचोमंजरी ॥ भ्रमरगीत ॥ आदि बहुत ग्रंथ लिखेहे ॥ ओर आछे आछे बहुत पद कियेहे ॥

श्रीकृष्णायनमः।

श्रीआचार्यजीमहाप्रभुजी श्रीवल्लभाचार्यजी तथा उन्होंके वंशजके जन्मोत्सवकी यादी.

चैत्रमास.

सुदी १ श्रीगोकुलचंदजी श्रीअनुरुधजीके लालजी सवंत् १७८३.
,, २ श्रीमधुसूदनजी बडे श्रीजदुनाथजीके लालजी सं० १६३४.
,, २ श्रीद्वारिकानाथजी भावनावारे श्रीगिरिधरजीके लालजी सं० १७५१.
,, ३ श्रीपुरुषोत्तमजी श्रीघनश्यामजीके लालजी सं० १८२४.
,, ३ श्रीजसोदानंदजी श्रीरघुनाथजीके तीसरे लालजी सं० १६४८.
,, ३ श्रीदेवकीनंदनाचार्यजी श्रीगोविंदरायजीके लालजी सं०१९१५.
,, ३ श्रीगिरिधरजीके बडे श्रीदामोदरजीके लालजी सं० १७४५.
,, ४ श्रीघनश्यामजीके लालजी श्रीजीद्वारवारे सं० १८८१.
,, ४ श्रीवल्लभजी श्रीरणछोडजीके पुत्र कांकरोलीवारे सं० १७४९.
,, ४ श्रीगोकुलालंकारजी श्रीव्रजेश्वरजीके लालजी सं० १७०७.
,, ५ श्रीगिरिधारीजीके प्रथमपुत्र श्रीलालजी, सं० १८४१.
,, ६ श्रीगुसांईजीके छट्टे लालजी श्रीयदुनाथजी, सं० १६१३.
,, ६ श्रीजीवनजीके लालजी श्रीमधुसूदनजी कोटावारे १७९०.
,, ७ श्रीमाधवरायजी श्रीगोपालजीके लालजी सं० १८२६.
,, ७ श्रीमाधोरायजी श्रीगोकुलनाथजीके लालजी सं० १८३६.
,, ८ श्रीव्रजभूखनजी श्रीरघुनाथजीके लालजी सं० १७५६.
,, ८ श्रीव्रजरायजी संवत्. १७५७.
,, ८ श्रीव्रजभूषनजी कांकरोलीवारे सं० १८१८.
,, ८ श्रीव्रजभूषनजी श्रीबालकृष्णजीके तीसरे लालजी सं० १६३६.
,, ८ श्रीगिरिधरजी श्रीवल्लभजीकाकाके लालजी सं० १७२८.
,, ८ श्रीबालकृष्णजी श्रीविट्ठलरायजीके लालजी सं० १७२१.
,, ८ श्रीमथुरानाथजी श्रीगोवर्द्धनजीके लालजी सं० १८४४.
,, ९ श्रीवल्लभजीके प्रथम पुत्र श्रीलालजी सं० १८८६.
,, ९ श्रीगोकुलोत्सवजी श्रीव्रजभूखनजीके छट्टेलालजी सं० १८५६.
,, १० श्रीगिरिधरजी श्रीरणछोडजीकेलालजी सं० १६२६.
,, ११ श्रीचिमनजी श्रीगिरधरजीके दुसरेलालजी सं० १६६६.
,, ,, श्रीकृष्णचंद्रजी श्रीजगन्नाथजीके लालजी सं० १७३२.
,, १२ श्रीविट्ठलेशरायजीके तिसरे लालजी श्रीलक्ष्मणजी सं० १६६८.

चै सु. १३ श्रीजीवनजी श्रीबालकृष्णजीके नाती सं० १६१९.
" १४ श्रीकाकाजीके लालजी सं० १८७९.
" " श्रीकल्याणरायजीके तिसरेलालजी सं० १८३०.
" १५ श्रीपीतांबरजी उपनाम श्रीछंगुजी सं० १८४८.
वद १ श्रीकृष्णजी श्रीदीक्षितजीके चौथे लालजी सं० १६७५.
" २ श्रीअनुरुधजी श्रीरणछोडजीके लालजी सं० १७४७.
" ३ श्रीराजीवलोचनजी श्रीरामकृष्णजीके लालजी सं० १८५९.
" ४ श्रीगोकुलोत्सवजीके लालजी सूरतवारे सं० १८५९.
" ५ श्रीगोवर्धनजी श्रीगोपालजीके लालजी सं० १७९०.
" ६ श्रीव्रजाभरनजी श्रीरामकृष्णजीके लालजी सं० १८६८.
" ७ श्रीचीमनजी श्रीजगन्नाथजीके पिता माडवीवारे सं० १७७७.
" ८ श्रीबालकृष्णजी श्रीवल्लभजीके लालजी सं० १७२१. [सं० १८८१.
" ९ श्रीबच्छाजी (श्रीगोविंदरायजी) श्रीमगनजीके लालजी नगर वारे
" १० श्रीमोरलीधरजी श्रीघनश्यामजीके लालजी सं० १८०९.
" ११ श्रीमद्वल्लभाचार्यजीके प्राकट्यकोमहोत्सव सं० १५३५.
" ११ श्रीद्वारिकानाथजी भावनावारेके लालजी सं० १७८५.
" " श्रीवल्लभजीके लालजी श्रीरामकृष्णजीके नाती सं० १९१३.
" १२ श्रीबालकृष्णजी गोपालजीके लालजी सं० १९१३.
" " श्रीदामोदरजी श्रीगोपीनाथजीके लालजी सं० १८९९.
" १३ श्रीचिमनजी श्रीजदुनाथजीके लालजी सं० १७९०.
" १४ श्रीगोपीनाथजीके तिसरे लालजी चापासेनीवारे सं० १८९९.
" ३० श्रीविट्ठलरायजी दामोदरजीके पिता सं० १७९७.

वैशाखमास.

सुदी १ श्रीपुरुषोत्तमजी श्रीगोकुलनाथजीके लालजी सं० १८४६.
" " श्रीगिरिधरजी श्रीकल्याणरायजीके लालजी सं० १७३७.
" २ श्रीबालकृष्णजी श्रीद्वारिकानाथजीके लालजी सं० १८८२.
" ३ श्रीनथ्थुजी श्रीद्वारिकानाथजीके लालजी छोटेमथुरेसजीवारे सं१८४५
" " श्रीगोवर्द्धनजीके लालजी श्रीविट्ठलरायजी सं० १८४३.
" ४ श्रीगोवर्द्धनजी श्रीमथुरानाथजीके लालजी सं० १८२५.
" " श्रीव्रजउत्सवजी श्रीकृष्णरायजीके लालजी सं० १२०१.
" ५ श्रीव्रजपालजी श्रीगोपालजीके लालजी सं० १८५९.
" ५ श्रीविट्ठलनाथजी श्रीमुरलीधरजीके लालजी स. १८२५.

वै शु ६ श्रीगिरिधरलालजी श्रीगोकुलालंकारजीके लालजी सं० १८९८.
„ ७ श्रीगिरिधरजी श्रीविठ्ठलरायजीके लालजी सं० १७८९.
„ „ श्रीगोपालजी श्रीघनश्यामजीके लालजी ठठावारे सं० १८३७.
„ „ श्रीगोकुलचंद्रजी श्रीव्रजनाथजीके लालजी सं० १७६३.
„ „ श्रीव्रजपालजी श्रीव्रजभूखनजीके लालजी सं० १७८५.
„ ८ श्रीबालकृष्णजी श्रीगोकुलालंकारजीके लालजी सं० १८९३.
„ ९ श्रीकल्याणरायजी श्रीपुरुषोत्तमजीख्यालवारेके लाल सं० १८०९.
„ १० श्रीव्रजनाथजी श्रीजगन्नाथजी मांडवीवारेकेभाई सं० १८११.
„ „ श्रीगोकुलनाथजी श्रीजगन्नाथजी मांडवीवारेकेभाई सं० १८०९.
„ ११ श्रीगोपीकालंकारजी श्रीमट्टूजी (श्रीघनूजी) केलालजी सं० १८७९.
„ „ श्रीव्रजनाथजी श्रीगोवर्द्धनजी मुंबाईवारेके भाई सं० १८१०.
„ १२ श्रीजगन्नाथजी श्रीराजीवलोचनजीके लालजी श्रीव्रजरत्नजीके वडे भाई
„ १३ श्रीजसोदानंदजी श्रीराजीवलोचनजीके भाई सं० १८१७.[सं० १८११.
„ १४ श्रीद्वारिकेसजीवडे श्रीवालकृष्णजीके लालजी श्रीगुसाईजीके नाती
„ १५ श्रीअनुरुधजी श्रीद्वारिकेसजीके लालजी सं १६५८. [सं० १६२९.
वद १ श्रीगोपालजी श्रीवल्लभजीके पिता सं० १८२६.
„ २ श्रीगोपोत्सवजी श्रीजगन्नाथजी मांडवीवारेके भाई सं० १८०५.
„ ३ श्रीगोपालजी श्रीगिरिधरजीके लालजी सं० १७८५.
„ „ श्रीद्वारिकानाथजी कोटावारे सं० १८१८.
„ ४ श्रीमाधवरायजी श्रीकृष्णरायजीके लालजी सं० १६६६.
„ ५ श्रीजदुनाथजी श्रीगोपालजीके लालजी सं० १८०१.
„ ६ श्रीविठ्ठलनाथजी श्रीदामोदरजीके लालजी सं० १८५७.
„ „ श्रीवल्लभजी श्रीगोपालजीके पिता सं० १७८१.
„ ७ श्रीमधुसुदनजी श्रीगोपालजीके लालजी सं० १८०७.
„ ८ श्रीव्रजनाथजी श्रीगोकुलनाथजीके लालजी, सं० १६६०.
„ ९ श्रीमुरलीधरजी श्रीविठ्ठलनाथजीकेलालजी मथुराजीवारे सं. १८९९.
„ १० श्रीगोकुलनाथजी श्रीवल्लभजीके लालजी सं० १६९६.
„ ११ श्रीव्रजरत्नजी श्रीराजीवलोचनजीके लालजी सं० १८२१.
„ „ श्रीप्रद्युम्नजी श्रीमधुसूदनजीके लालजी सं० १६००.
„ १२ श्रीमुरलीधरजी श्रीव्रजभुखनजीके लालजी सं० १६९०.
„ १३ श्रीबालकृष्णजी श्रीमुरलीधरजीके लालजी सं० १८३८.
„ १४ श्रीगोविंदजी श्रीमुरलीधरजीके लालजी सं० १८३८.
„ „ श्रीविठ्ठलेसजी श्रीद्वारिकानाथजीके लालजी सं० १९०८.
„ ३० श्रीद्वारिकानाथजी श्रीमथुरानाथजीके लालजी सं० १७९७.

ज्येष्टमास.

सुदी १ श्रीजीवनजी रणछोडजीके लालजी सं० १७२९.
,, २ श्रीगोविंदरायजी श्रीहरिरायजीके बडे लालजी सं० १६७८.
,, २ श्रीबालकृष्णजी बडे श्रीजदुनाथजीके लालजी सं० १६४४.
,, ३ श्री मथुरानाथजी श्रीमधुसूदनजीके लालजी सं० १६८९.
,, ४ श्रीवल्लभजी श्रीपुरुषोत्तमजीके लालजी सं० १७८८.
,, ,, श्रीमोहनजी श्रीवल्लभजीके लालजी सं० १६७८.
,, ५ श्रीगोविंदरायजी श्रीरघुनाथजीके लालजी सं० १६८९.
,, ६ श्रीपुरुषोत्तमजी श्रीबालकृष्णजीके लालजी सं० १६४४.
,, ,, श्रीपीतांबरजी श्रीपुरुषोत्तमजी लेखवारेके पिता सं० १६८९.
,, ७ श्रीव्रजवल्लभजी नगरवारेके प्रथम लालजी सं० १८७७.
,, ,, श्रीव्रजनाथजी श्रीविठ्ठलनाथजी नगरवारेके लालजी सं० १८८८.
,, ,, श्रीविठ्ठलनाथजीके तृतिय पुत्रके लालजी, श्रीगोकुळचंद्रजी श्रीजयदेवजीके लालजी सं० १७१६.
,, ८ श्रीगोपेश्वरजी श्रीगोकुळउत्सवजी श्रीजीद्वारवारे सं० १८३४.
,, ९ श्रीविठ्ठलनाथजी सं० १८६४.
,, १० श्रीविठ्ठलेसजी मुंबाईवालेके लालजी सं० १८६४.
,, ११ श्रीव्रजभूखणजी श्रीमथुरानाथजीके लालजी सं० १७४३.
,, ,, श्रीपुरुषोत्तमजी श्रीमुरलीधरजीके लालजी सं० १७४८.
,, ,, श्रीजदुनाथजी श्रीगोकुळनाथजीके पिता सं० १७८३.
,, १२ श्रीकल्याणरायजी श्रीगिरिधरजीके लालजी सं० १७०१.
,, ,, श्रीघनूजी श्रीमथुरानाथजीके लालजी सं० १८५२.
,, ,, श्रीगोपेश्वरजी श्रीहरिरायजीके भाई सं० १७५०.
,, १३ श्रीगिरिधरजी श्रीगोविंदजी टीकेतके लालजी सं० १८९९.
,, १४ श्रीगोकुलेशजी श्रीव्रजालंकारजीके दुसरे लालजी सं० १६३४.
,, १५ श्रीमुरलीधरजी श्रीप्रद्युम्नजीके लालजी सं० १७५१.
,, ,, श्रीविठ्ठलेसरायजीके दुसरे लालजी मुंबाईवारे सं० १८६३.
,, १ श्रीघनश्यामजी श्रीगोपाळजीके पिता स० १८००.
,, २ श्रीलछमनजी श्रीव्रजनाथजीके लालजी सं० १८२८.
,, ३ श्रीजदुनाथजी श्रीगोपाळजीके लालजी सं० १७५६.
,, ,, श्रीवल्लभजी श्रीगोवर्धनजीके लालजी सं० १७०१.
,, ४ श्रीगोकुलोत्सवजी बडे श्रीगोविंदरायजीके लालजी, सं० १६०३.

ज्ये व. ५ श्रीकन्हैयालालजीके लालजी सं० १९१६.
,, ,, श्रीरणछोडजी श्रीवल्लभजीके लालजी सं० १६७७.
,, ,, श्रीरमणजी चाचा गोपेश्वरके लालजी सं० १७०४.
,, ६ श्रीव्रजनाथजी श्रीव्रजभूखनजीके लालजी सं० १७२१.
,, ७ श्रीनथुजी श्रीविठ्ठलरायजी सं० १६६२.
,, ८ श्रीकल्याणरायजी श्रीमाधवरायजीके लालजी सं० १७०२.
,, ९ श्रीमधुसूदनजी श्रीमुरलीधरजीके लालजी सं० १८३६.
,, १० श्रीविठ्ठलरायजी श्रीहरिरायजीके लालजी सं० १६७९.
,, ११ श्रीरामकृष्णजी श्रीगोपालजीके लालजी सं० १८३१.
,, १२ श्रीजसोदानंदनजी श्रीगोपेश्वरजीके लालजी सं० १६९०.
,, १३ श्रीवल्लभजी श्रीद्वारिकानाथजीके लालजी १८२०.
,, १४ श्रीत्रिकमजीके लालजी जोधपुरवारे सं० १८९७.
,, ३० श्रीगिरिधारीजी श्रीदाऊजी टीकायतके पिता सं० १८२५.

आषाढ मास.

सुदी १ श्रीगोरायजी श्रीहरिरायजीके लालजीके लालजी सं० १६००.
,, २ श्रीगोविंदरायजीके तिसरे लालजी सं० १९१७.
,, ,, श्रीगिरिधरलालजी श्रीद्वारिकानाथजी भावनावारेकेपिता सं. १९१७.
,, ३ श्रीगोपेश्वरजी श्रीगोविंदरायजीके दुसरे लालजी सं० १८५५.
,, ४ श्रीघनश्यामजी श्रीमुरलीधरजीके लालजी सं० १८८६.
,, ,, श्रीव्रजरमणजी श्रीव्रजोत्सवजीके लालजी सं० १७५१.
,, ,, श्रीघनश्यामजीके लालजी श्रीव्रजनाथजी सं० १९१०.
,, ,, श्रीघनश्यामजीके भाई श्रीगोपेश्वरजी सं० १८०३.
,, ,, श्रीजसोदानंदनजी श्रीगोविंदरायजीके दुसरे लालजी सं० १९१६.
,, ५ श्रीवल्लभजी हाथीवारेके लालजी सं० १८०४.
,, ६ श्रीदामोदरजी श्रीकल्याणरायजीके लालजी सं० १८२४.
,, ,, श्रीचिमनजी श्रीमधुसूदनजीके लालजी सं० १६९०.
,, ,, श्रीनरसिंगजी श्रीलक्ष्मीनृसिंगजीके लालजी सं० १८६३.
,, ७ श्रीकुंजविहारीजीके लालजी श्रीमथुरानाथजी सं० १९०३.
,, ८ श्रीद्वारिकानाथजी श्रीव्रजवल्लभजी नगर वारे सं० १८८९.
,, ,, श्रीबालकृष्णजी श्रीगिरिधरजीके लालजी सं० १७७८.
,, ९ श्रीवल्लभजी श्रीजदुनाथजीके लालजी सं० १७९३.
,, १० श्रीमथुरानाथजी श्रीगोपालजीके लालजी सं० १८६३.

भा शु ११ श्रीगोपालजीके तिसरे लालजी सं० १८६३,
,, १२ श्रीवल्लभजी श्रीविट्ठलरायजीके लालजी सं० १८६०.
,, ,, श्रीविट्ठलरायजी श्रीलालमणीजीके लालजी सं० १८९१.
,, ,, श्रीरणछोडजी श्रीविट्ठलरायजीके लालजी सं० १७१५.
,, १३ श्रीचिमनजी श्रीजीवनजीके भाई सं० १७७९.
,, १४ श्रीकल्याणरायजी श्रीअनुरुधजीके लालजी सं० १८२५.
,, १५ श्रीगोकुलेशजी श्रीगोविंदजी (श्रीवछाजी) श्रीवल्लभजी सं. १९०८.
वद १ श्रीगोकुलनाथजीके लालजी श्रीमथुरानाथजीके नाती सं० १८०१.
,, २ श्रीविट्ठलनाथजी श्रीवालकृष्णजीके पिता श्रीगिरिराजवारे सं० [१७८१.
,, ,, श्रीद्वारकानाथजी श्रीमथुरानाथजीके लालजी सं० १९०५.
,, ३ श्रीगोकुलनाथजीके लालजी कोटा वारे सं० १९५५.
,, ४ श्रीदामोदरजी श्रीद्वारिकेसजीके लालजी सं० १८२०.
,, ,, श्रीविट्ठलरायजीके लालजी श्रीमधुसूदनजी सं० १७७४.
,, ५ श्रीरामकृष्णजी श्रीद्वारिकानाथजीके लालजी सं० १८५२.
,, ६ श्रीमथुरानाथजी श्रीव्रजवल्लभजीके लालजी सं० १८९२.
,, ७ श्रीवालकृष्णजी श्रीविट्ठलनाथजीके लालजी सं० १७७७.
,, ,, श्रीवच्छाजी श्रीचिमनजीके लालजी सं० १८९९.
,, ,, श्रीमुरलीधरजी श्रीधनुजीके लालजी सं० १८३१.
,, ८ श्रीदामोदरजी श्रीव्रजरत्नजीके लालजी सं० १८८८.
,, ९ श्रीगोविंदरायजीके पिता श्रीरघुनाथजी सं० १७६३.
,, ,, श्रीअनुरुधजी श्रीमथुरामल्लजीके तिसरे लालजी सं० १८०४.
,, १० श्रीगोवर्धनजी श्रीमथुरानाथजीके लालजी सं० १८३४.
,, ११ श्रीगोकुलोत्सवजीके लालजी श्रीव्रजाभरनजी सं० १८५२.
,, ,, श्रीमथुरानाथजीके श्रीमोहनजीके लालजी सं० १७७५.
,, ,, श्रीमुरलीधरजी बडे श्रीवल्लभजी काकाके लालजी सं० १७३१.
,, ,, श्रीरघुनाथजी श्रीदेवकीनंदनजीके लालजी सं० १६६०.
,, १२ श्रीअच्युतरायजी श्रीलक्ष्मीनृसिंगजीके लालजी सं० १६७२.
,, ,, श्रीविट्ठरायजी श्रीमधुम्नजीके लालजी सं० १७१७.
,, १३ श्रीगोवर्धनरायजी श्रीविट्ठलरायजीके लालजी सं० १७६३.
,, ,, श्रीगोकुलेसजी श्रीविट्ठलेसजीके लालजी सं० १८८३.
,, ,, श्रीविट्ठलेशजी श्रीगिरिधरजीके लालजी सं० १७२६
,, १४ श्रीव्रजनाथजी श्रीरघुनाथजीके लालजी सं० १७४४.
,, ३० श्रीगोकुलचंद्रजी श्रीव्रजनाथजीके लालजी सं० १८००

श्रावणमास.

सुद	१	श्रीप्रद्युमनजी श्रीविट्ठलनाथजीके लालजी सेरगढवारे सं० १७६२.
,,	,,	श्रीगोपालजी श्रीमधुसूदनजीके लालजी सं० १७०९. [सं०१८७८.
,,	२	श्रीविट्ठलनाथजी (श्रीकन्हैया लालजी) श्रीवल्लभजीके लालजी
,,	,,	श्रीविट्ठलेसजी श्रीगोवर्द्धनेसजी नगरवारे सं० १८२०.
,,	,,	श्रीव्रजमोहनजी नगरवारेके भाई श्रीव्रजवल्लभजी सं० १८७९.
,,	,,	श्रीविट्ठलेसजीके दुसरे लालजी सं० १९१५.
,,	,,	श्रीजगन्नाथजी बडे श्रीजदुनाथजीके तीसरे लालजी सं० १६४२.
,,	३	श्रीगोकुलोत्सवजी श्रीगोपेश्वरजीके पिता सं० १८१५.
,,	,,	श्रीदामोदरजी श्रीकुंजविहारीजीके लालजी सं० १९०९.
,,	४	श्रीविट्ठलेश्वरजीके लालजी श्रीबालकृष्णजी सं० १७००.
,,	५	श्रीपुरुषोत्तमजी श्रीमाधवरायजीके लालजी सं० १९१०.
,,	६	श्रीव्रजनाथजी श्रीव्रजवल्लभजी काकाके लालजी सं० १७४०.
,,	७	श्रीदामोदरजीके तीसरे लालजी श्रीमुरलीधरजी सं० १७४८.
,,	,,	श्रीदामोदरजी श्रीविट्ठलरायजीके सं० १८७७.
,,	,,	श्रीगोविंदजी श्रीदीक्षितजीके तीसरे लालजी सं० १६१३.
,,	,,	श्रीसामलजी श्रीपीतांबरजीके लालजी सं० १६९१
,,	,,	श्रीविट्ठलरायजी श्रीव्रजालंकारजीके लालजी सं० १६९१
,,	,,	श्रीद्वारिकानाथजी श्रीगिरिधरजीके लालजी सं० १६७६.
,,	८	श्रीकृष्णरायजी श्रीगोपेश्वरजीके लालजी सं० १८९७.
,,	,,	श्रीबालकृष्णजी श्रीगिरराजवारे सं० १८२८.
,,	,,	श्रीमाधोरायजी श्रीवल्लभजीके लालजी सं० १७९६.
,,	,,	श्रीगोकुलनाथजी श्रीद्वारिकेसजी भावनावारेके लालजी सं० १७८७.
,,	,,	श्रीद्वारिकानाथजी श्रीप्रद्युमनजीके लालजी सं० १७०८.
,,	९	श्रीगोपीनाथजीके दुसरे लालजी नगरवारे सं० १८६०.
,,	,,	श्रीरणछोडजी कासीवारेके भाई सं० १८४४.
,,	१०	श्रीमुरलीधरजीके बडे श्रीगिरधरजीके लालजी सं० १६३०.
,,	,,	श्रीलक्ष्मनजी श्रीघनश्यामजीके लालजी सं० १८६४.
,,	,,	श्रीमुरलीधरजी श्रीमथुरानाथजीके लालजी सं० १८०८.
,,	११	श्रीविट्ठलनाथजीके तिसरे लालजी श्रीमुरलीधरजी सं० १७७४.
,,	,,	श्रीपुरुषोत्तमजी श्रीदामोदरजीके तिसरे लालजी सं० १८५२.
,,	,,	श्रीगोपीनाथजीके लालजीके लालजी सं० १८५६.

भा शु १२ श्रीउपहारजी चाचा गोपेस्वरजीके लालजी सं० १६८९.
„ १३ श्रीजगन्नाथजी (नथूजी) श्रीव्रजालंकारजीश्रीगोकुलजीवारे सं. १८४२.
„ „ श्रीगिरधरजी श्रीवल्लभजीके लालजी दुसरे जेपुरवारे सं० १८८८.
„ १४ श्रीदामोदरजीके लालजी श्रीविट्ठलरायजीके लालजी सं० १६५७.
„ „ श्रीत्रिकमजी श्रीगोकुलाधीसजीके लालजी सं० १७८४.
„ „ श्रीगोविंदरायजी श्रीविट्ठलरायजीके लालजी सं० १९०७.
„ १५ श्रीगिरधरजीके लालजी श्रीदामोदरजी सं० १६३२.
„ „ श्रीविट्ठलरायजी श्रीद्वारिकेसजीके नाती सं०
„ „ श्रीदेवकीनंदनजी श्रीरघुनाथजीके लालजी सं० १६९७.
„ „ श्रीलालजी श्रीगिरधरजीके लालजी सं० १८०५.
वद १ श्रीगिरधरजी श्रीमथुरानाथजीके लालजी सं० १८५५.
„ २ श्रीगोपालजीके दुसरे लालजी कोटावारे सं० १८६६.
„ ३ श्रीजदुनाथजीके पिता घनश्यामजी सं० १७७४.
„ ४ श्रीवावुरायजीके लालजी श्रीगोवर्धनजी सं० १७२९.
„ „ श्रीव्रजनंदनजी श्रीगिरधरजीके लालजी सं० १७७८.
„ ५ श्रीगोकुलोत्सवजी श्रीकृष्णरायजीके लालजी सं० १८२९.
„ „ श्रीव्रजनाथजी श्रीलछमनजीके तिसरे लालजी सं० १८२२.
„ „ श्रीचिमनजी श्रीघनश्यामजीके चौथे लालजी सं० १६९८.
„ „ श्रीजगन्नाथजी श्रीगिरधरजीके लालजी सं० १७८१.
„ ७ श्रीगोपालजी वडे श्रीरघुनाथजीके लालजी सं० १६३७.
„ ८ श्रीनथूजी गिरधारीजी टीकायतके लालजी सं० १८५९.
„ „ श्रीविट्ठलरायजीके चौथे लालजी सं० १८७२.
„ „ श्रीगोवर्धनजी श्रीविट्ठलरायजीके लालजी सं० १६६४.
„ „ श्रीद्वारिका नाथजीके लालजी सं० १८१३.
„ „ श्रीकृष्णजी श्रीलछमनजीके लालजी सं० १७००.
„ „ श्रीव्रजोत्सवजीके लालजी सं० १९१२.
„ „ श्रीविट्ठलरायजीके लालजी सं० १९१३.
„ ९ श्रीव्रजभूखनजी श्रीवल्लभजीके लालजी सं० १७२०.
„ „ श्रीव्रजकेसजी श्रीद्वारिकानाथजीके लालजी सं० १९१२.
„ १० श्रीगोपकेसजी श्रीविट्ठलेसजीके लालजी सं० १८८७. [सं० १८८७.
„ ११ श्रीवावुरायजी नगरवारेके दुसरे लालजी श्रीकल्याणरायजी
„ „ श्रीत्रिकमजी श्रीमाधोरायजीके लालजी सं० १८८३.
„ १२ श्रीद्वारिकानाथजी श्रीरणछोडजीके लालजी सं० १७४७.

श्रा व॰१३ श्रीरघुनाथजीके दुसरे लालजी सं॰ १७८७.
,, ,, श्रीविठ्ठरायजीके लालजी श्रीरघुनाथजीके परिवारेमें सं॰ १६९८.
,, १४ श्रीविठ्ठरायजीके चोथे लालजी सं॰ १७०३.
,, ,, श्रीवल्लभजी श्रीरामकृणजीके लालजी सं॰ १८८१.
,, ३० श्रीपुरुषोत्तमजी लेखवारेके लालजी सं॰ १७७४.

भाद्रपद.

सुद १ श्रीदामोदरजी श्रीमुरलीधरजीके लालजी सं॰ १७६१.
,, ,, श्रीद्वारिकानाथजी श्रीगिरिधरजीके भाई सं॰ १७४८.
,, २ श्रीत्रिलोकीभूपनजी श्रीगिरिधरजीके लालजी सं॰ १८८३.
,, ,, श्रीजयदेवजी श्रीवल्लभजीके लालजी सं॰ १७४६.
,, ,, श्रीजसोदानंदजी उपनाम श्रीमट्टूजी सं॰ १८९७.
,, ३ श्रीमोहनजी श्रीगोविंदरायजीके लालजी सं॰ १७२२.
,, ,, श्रीजयदेवजी श्रीवल्लभजीके लालजी सं॰ १७१६.
,, ,, श्रीमाधोरायजी श्रीचिमनजीके लालजी सं॰ १७००.
,, ४ श्रीकल्याणरायजी श्रीजदुनाथजीके लालजी सं॰ १८४७.
,, ,, श्रीगोविंदरायजी श्रीरणछोडजीके लालजी सं॰ १८७६.
,, ५ श्रीबालकृष्णजीके लालजी श्रीद्वारिकानाथजी सं॰ १७२२.
,, ,, श्रीरामकृष्णजी श्रीगोकुलाधीसजीके लालजी सं॰ १७७०.
,, ६ श्रीविठ्ठलरायजी श्रीदामोदरजीके लालजी सं॰ १७४३.
,, ,, श्रीमुरलीधरजीके तीसरे लालजी सं॰ १८८८.
,, ,, श्रीरामचंद्रजी बडे श्रीजदुनाथजीके लालजी सं॰ १६३८.
,, ७ श्रीगोकुलालंकारजी श्रीकृष्णरायजीके लालजी सं॰ १६७३.
,, ,, श्रीघनश्यामजी जदुनाथजीके लालजी सं॰ १९१२.
,, ८ श्रीव्रजोत्सवजी श्रीगिरधजीके लालजी सं॰ १७६०.
,, ,, श्रीगोपेन्द्रजी श्रीमुरलीधरजी गोकुलवारेके काका सं॰ १७२९.
,, ,, श्रीकल्यारायजी श्रीचिमनजीके लालजी सं॰ १७१४.
,, ,, श्रीमुरलीधरजी कुंजबिहारीजीके लालजी सं॰ १९०७.
,, ९ श्रीगिरधरलालजी श्रीव्रजभुष्पनजीके लालजी. सं॰ १८५४.
,, १० श्रीव्रजवल्लभजीके तीसरे लालजी सं॰ १८०९.
,, ११ श्रीदानीरायजी श्रीगिरधरजीके लालजी सं॰ १७५०.
,, ,, श्रीव्रजालंकारजी बडे श्रीबालकृष्णजीके लालजी सं॰ १६४१.
,, ,, श्रीपुरुषोत्तमजी श्रीपीतांबरजीके लालजी सं॰ १७१४.

मा सु.१२ श्रीगोविंदजी श्रीमोहनजीके लालजी सं० १८८१.
" " श्रीद्वारिकानाथजी वडे श्रीरघुनाथजीके लालजी सं० १६५०.
" १३ श्रीव्रजभुषनजीके लालजी श्रीगोपालजी सं० १६४५.
" " श्रीगिरधरजी श्रीगोविंदरायजीके लालजी सं० १८०६.
" १४ श्रीगोपीनाथजी श्रीगिरधरजीके लालजी सं० १७४५.
" " श्रीत्रिकमजीके दुसरे लालजी सं० १९०५.
" " श्रीव्रजपालजी श्रीसामलजीके लालजी सं० १६४९.
" " श्रीव्रजपालजीके घनश्यामजीके लालजी सं० १६५९.
सुदी १५ श्रीविट्ठलरायजीके लालजी श्रीनथुजी सं० १८६२.
" " श्रीलछमनजी श्रीगोपालजीके लालजी सं० १७८७.
" " श्रीमथुरानाथजी श्रीधनुजीके पिता सं० १८२९.
" " श्रीत्रिकमजी श्रीगोवर्द्धनजीके लालजी सं० १८५५.
" " श्रीवच्छाजी श्रीगोवर्धनजीके लालजी १८४४.
" " श्रीगोपालजी श्रीघनश्यामजीके लालजी सं० १८४४.
वद १ श्रीगोपालजी श्रीजदुनाथजीके लालजी सं० १७८१.
" " श्रीरघुनाथजी श्रीगोकुलचंदजीके लालजी. सं० १७११.
" २ श्रीव्रजाभरनजी आख्यानकी टीकावारे सं० १७४७.
" " श्रीव्रजेश्वरजी श्रीव्रजाधीसजीके काका सं० १७९४.
" ३ श्रीकल्याणरायजी श्रीअनुरुधजीके लालजी सं० १७८४.
" ४ श्रीगोकुलोत्सवजी श्रीदामोदरजीके लालजी सं० १८४८.
" " श्रीलक्ष्मीनरसिंगजी वडे श्रीगोविंदरायजीके लालजी सं० १६४१.
" " श्रीगोपाललालजी श्रीरामकृष्णजीके लालजी सं० १८९९.
" ५ श्रीदामोदरजीके लालजी श्रीबालकृष्णजी सं० १६५४.
" " श्रीहरिरायजी सिक्षापत्रवारे श्रीकल्याणरायजीके लालजी सं० १६४७.
" " श्रीचाचागोपेस्वरजी श्रीघनश्यामजीके लालजी सं० १६६३.
" " श्रीहरिरायजी श्रीचिमनजीके लालजी सं १७२५.
" ६ श्रीविट्ठलरायजी श्रीदामोदरजीके लालजी सं० १८४३.
" " श्रीगोपीनाथजी श्रीविट्ठलनाथजीके लालजी सं० १८५२.
" " श्रीव्रजवल्लभजी उपनाम मगनजी नगरवारेके लालजी सं० १८५६.
" " श्रीदेवकीनंदजीके काका श्रीजदुनाथजी सं० १७५२.
" ७ श्रीबालकृष्णजी श्रीविट्ठलनाथजीके लालजी सं० १८५०.
" ८ श्रीवडे श्रीगोपीनाथजीके लालजी श्रीपुरुषोत्तमजी सं० १७५१.
" " श्रीव्रजनाथजी श्रीव्रजरत्नजी सुरत वारेके लालजी सं० १८८३.

भा.व. ८ श्रीमाधोरायजी श्रीव्रजाभरनजीके भाई सं० १७४९.
,, ,, श्रीद्वारिकानाथजी श्रीचिमनजीके पिता सं० १७३४.
,, ,, श्रीविठ्ठलरायजीके चौथे लालजी सं० १८७४.
,, ,, श्रीरमनलालजीके दुसरे लालजी मथुरा वारे सं० १९२६.
,, ९ श्रीगोकुलाधीसजी श्रीबाबुरायजीके दुसरे लालजी सं० १७४६.
,, ,, श्रीद्वारिकानाथजी श्रीमधुसूदनजीके लालजी सं० १८००.
,, १० श्रीरसिकरायजी श्रीव्रजरत्नजीके लालजी सं० १८९६.
,, ११ श्रीवल्लभजी श्रीविठ्ठलनाथजीके लालजी सं० १८४१.
,, १२ श्रीगोपीनाथजी श्रीमहाप्रभुजीके वडे लालजी सं० १५६७.
,, ,, श्रीरणछोडजी मांडवी वारेके दुसरे लालजी सं० १८१८.
,, ,, श्रीलछमनजी श्रीगोकुलाधीसजीके दुसरे लालजी सं० १७७४.
,, १३ श्रीगुसांईजीके तिसरे लालजी श्रीबालकृष्णजी सं० १६०६.
,, ,, श्रीगोवर्धनेसजी श्रीबालकृष्णजीके लालजी सं० १८१३.
,, १४ श्रीवल्लभजीके दुसरे लालजी श्रीगोपालजी सं० १७२५.
,, ३० श्रीजदुनाथजी श्रीगोपालजीके लालजी सं० १८०१.

आस्वन.

सुद १ श्रीगोकुलचंद्रजी श्रीद्वारिकानाथजीके लालजी सं० १६९०.
,, ,, श्रीजदुनाथजी श्रीपीतांबरजीके लालजी सं० १६९४.
,, २ श्रीगिरधरजी श्रीजगन्नाथजीके लालजी सं० १७२९.
,, ,, श्रीगोपीनाथजीके लालजी श्रीगोपालमणिजी सं० १६६६.
,, ३ श्रीजगन्नाथजी श्रीविठ्ठलेसजीके लालजी सं० १८५९.
,, ,, श्रीगोपीनाथजी श्रीजदुनाथजीके पांचमे लालजी सं० १६४७.
,, ४ श्रीदामोदरजी टीकेटश्रीगिरधारजीके लालजी सं० १८५३.
,, ५ श्रीजगन्नाथजी मांडवीवारे सं० १७९६.
,, ,, श्रीव्रजेश्वरजी श्रीव्रजाभरनजीके तीसरे लालजी सं० १७९५.
,, ,, श्रीव्रजालंकारजी श्रीनथुजीके पिता सं० १७९६.
,, ,, श्रीगिरधरजी श्रीमुरलीधरजीके लालजी सं० १६३०.
,, ६ श्रीव्रजाधीसजी जोधपूरवाले सं० १८२९.
,, ७ श्रीव्रजाधीसजी जोधपूरवाले सं० १८२९.
,, ८ श्रीमथुरानाथजी श्रीघनस्यामजीके लालजी सं० १८०४.
,, ,, श्रीपुरुषोत्तमजी श्रीमथुरानाथजीके लालजी सं० १६८८.
,, ,, श्रीबालकृष्णजी गिरिधरजीके लालजी सं० १७७८.

आ शु ९ श्रीवल्लभजीकेलालजी श्रीविट्ठलनाथजी सं० १७९७.
,, १० श्रीगोकुलालंकारजी श्रीधनुजीके लालजी सं० १८७५.
,, ११ श्रीराजीवलोचनजी श्रीरामकृष्णजीके लालजी सं० १७८८.
,, १२ श्रीगोपालजी श्रीमथुरानाथजीके लालजी सं० १८२५.
,, १३ श्रीबालकृष्णजी श्रीव्रजनाथजीके लालजी सं० १८२५.
,, ,, श्रीरणछोडजी कासीवारेके दुसरे लालजी सं० १८७१.
,, ,, श्रीकाकाजी श्रीदामोदरजीके लालजी सं० १८५८.
,, ,, श्रीदामोदरजी श्रीप्रद्युम्नजीके लालजी सं० १८००.
,, ,, श्रीकीरतजी चाचा गोपेस्वरजीके लालजी सं० १७०१.
,, १४ श्रीव्रजपालजी श्रीबालकृष्णजी आरसीवारे के लालजी सं०१८५४.
,, ,, श्रीगोकुलनाथजीके लालजी श्रीगोपालजी सं० १६४२.
,, ,, श्रीगोपेंद्रजी श्रीगोपालजीके लालजी सं० १७७८.
,, १५ श्रीव्रजेस्वरजी गोकुलजीवारे सं० १८२०.
वद १ श्रीगोपीनाथजी श्रीरघुनाथजीके लालजी सं० १८३१.
,, २ श्रीगोकुलनाथजी श्रीमथुरामल्लजीके लालजी सं० १७९९.
,, ३ श्रीगोकुलनाथजी श्रीचिमनजीके लालजी सं० १७५५.
,, ,, श्रीगोकुलनाथजी वडे श्रीवल्लभजी काकाके सातमे लालजी सं०१७५०.
,, ४ श्रीव्रजपतजी उपनाम श्रीछोटाजी गोकुलवारे सं० १८३१.
,, ५ श्रीव्रजनाथजी श्रीबाबुरायजीके लालजी सं० १८७३.
,, ,, श्रीगिरधर लालजी श्रीव्रजवल्लभजीके लालजी सं० १७४५.
,, ६ श्रीघनस्यामजी श्रीरामकृष्णजीके लालजी सं० १६९३.
,, ७ श्रीव्रजपतिजी श्रीविट्ठलरायजीके लालजी सं० १६२०.
,, ८ श्रीबांकेलालजी श्रीव्रजरत्नजीके लालजी स० १८९६.
,, ९ श्रीद्वारिकेसजी श्रीराजीवलोचनजीके लालजी सं० १८२२.
,, १० श्रीविट्ठलरायजी श्रीगोविंदरायजीके लालजी सं० १८१०.
,, ,, श्रीगोकुलेसजी श्रीगोवर्धनेसजीके भाई सं० १८१८.
,, ११ श्रीनरसिंगजी श्रीव्रजरत्नजी सुरतवारे सं० १९०७.
,, ,, श्रीछगनजी श्रीव्रजरत्नजीके लालजी सं० १८७९.
,, १२ श्रीगोपालजी माधोरायजीके पिता सं० १७१८.
,, ,, श्रीविट्ठलरायजी श्रीव्रजपालजीके लालजी सं० १८१९.
,, १३ श्रीगोपीनाथजी श्रीद्वारिकेसजीके भाई सं० १७२५.
,, ,, श्रीरघुनाथजी श्रीरामकृष्णजीके तीसरे लालजी सं० १७१५.
,, ,, श्रीगोपेश्वरजीके श्रीजीवनजीके भाई सं० १७७५.

आ व १४ श्रीव्रजमोहनजी श्रीगोकुलउत्सवजीके लालजी सुरतवारे सं० १८५५.
" ३० श्रीबालकृष्णजी श्रीपुरुषोत्तमजीके लालजी नटवरजीवारे सं.१७२५

कार्तिक.

सुदी १ श्रीजदुनाथजीके प्रथमलालजी श्रीगोकुलनाथजी सं० १९०२.
" २ श्रीव्रजरत्नजी श्रीगोकुलउत्सवजीके लालजी सं० १८४३.
" " श्रीकृष्णरायजी श्रीमाधोरायजीकें लालजी सं० १६८०.
" " श्रीवल्लभजी श्रीजदुनाथजीके लालजी सं० १८६३.
" " श्रीगोकुलनाथजी कोटावारेके लालजी सं० १८६३.
" ३ श्रीजदुनाथजी श्रीघनस्यामजीके पिता सं० १८१६.
" ४ श्रीव्रजजीवनजीके प्रथम पुत्र श्रीलालजी सं० १८८४. [१८१५.
" ५ श्रीगोकुलउत्सवजी श्रीमुरलीधरजीके लालजी श्रीगोकुलवारे सं०
" " श्रीगोकुलउत्सवजी श्रीगोपीनाथजीके लालजी सं० १७३६.
" ६ श्रीपुरुषोत्तमजी श्रीमुरलीधरजीके लालजी सं० १७५२.
" " श्रीद्वारिकानाथजी व्रजपालजीके लालजी सं० १८६५.
" ७ श्रीगोपिकाधीसजी श्रीगिरधरजीके लालजी सं० १८८२.
" " श्रीविट्ठलनाथजीके लालजी श्रीलालमणिजी सं० १८७२.
" " श्रीगोपीनाथजी पोरबंदरवारे सं० १८०२.
" " श्रीव्रजाधीसजी श्रीजदुनाथजीके लालजी सं० १७६०.
" ८ श्रीरघुनाथजी श्रीविट्ठलरायजीके लालजी सं० १८९७.
" " श्रीगिरधरजी उपनाम श्रीनथुजी नगरवारेके लालजी सं० १८९२.
" ९ श्रीरामकृष्णजीके लालजी श्रीगोकुलनाथजी छोटेमथुरेसजीवारे सं०
" " श्रीव्रजनाथजी बडे बालकृष्णजीके लालजी सं० १६३२. [१८८९.
सुद १० श्रीगोविंदरायजी श्रीद्वारिकेसजीके लालजी सं० १८८२.
" ११ श्रीजगन्नाथजी श्रीगिरधरजीके लालजी सं० १७८४.
" " श्रीद्वारिकानाथजी श्रीजयदेवजीके लालजी सं० १७२५.
" १२ श्रीरघुनाथजीके प्रथम लालजी सं० १८२८.
" " श्रीगुसाईजीके बडे लालजी श्रीगिरधरजी सं० १५९७.
" " श्रीगुसाईजीके पांचमे लालजी श्रीरघुनाथजी सं० १६११.
" १३ श्रीजीवनजी श्रीद्वारिकानाथजीके लालजी सं० १७१५.
" १४ श्रीकल्याणरायजी श्रीगोविंदरायजीके लालजी सं० १७१८.
" " श्रीप्रभुजी श्रीरायजीके लालजी सं० १८०६.
" " श्रीगोविंदरायजी श्रीकृष्णरायजीके लालजी सं० १८७६.

का सु १४ श्रीव्यंकटेसजी श्रीवल्लभजीके लालजी सं० १७४२. -
,, १५ श्रीगोवर्धनेसजी काका वल्लभजीके लालजी सं० १७३५.
,, ,, श्रीव्रजरमनजी श्रीजदुनाथजीके दुसरे लालजी सं० १७३७.
,, ,, श्रीरणछोडजी कासीवारेके तृतीय लालजी सं० १८८२.
,, ,, श्रीरमनलालजी श्रीपुरुषोतमजीके लालजी सं० १९०५.
,, ,, श्रीगोकुलनाथजी श्रीअनुरुधजीके लालजी सं० १८००.
वद १ श्रीगोकुलनाथजी श्रीजदुनाथजीके लालजी सं० १८१७.
,, ,, श्रीजगन्नाथजी श्रीद्वारिकानाथजीके लालजी सं० १७४८.
,, २ श्रीबालकृष्णजी श्रीरघुनाथजीके लालजी सं० १७८७.
,, ,, श्रीगोविंदजी श्रीमुरलीधरजीके लालजी सं० १८३७.
,, ,, श्रीव्रजपालजी श्रीविठ्ठलेसजीके चोथे लालजी सं० १८६२.
,, ,, श्रीविठ्ठलनाथजी ग्वालवारेके पिता सं० १७४५.
,, ३ श्रीविठ्ठलरायजीके छट्ठे लालजी सं० १८८६.
,, ,, श्रीगोविंदजी श्रीप्रभुजीके लालजी दुसरे.
,, ४ श्रीविठ्ठलरायजी श्रीदामोदरजीके दुसरे लालजी सं० १८५१.
,, ,, श्रीमदसूदनजी श्रीगोवर्धनेसजीके दुसरे लालजी सं० १८५९.
,, ,, श्रीविठ्ठलरायजी श्रीव्रजाधीसजीके पिता सं० १७९६.
,, ,, श्रीगोवर्धनेसजी श्रीनथुजीके लालजी सं० १८६९.
,, ५ श्रीजगन्नाथजी श्रीरामकृष्णजीके लालजी स० १७०८.
,, ६ श्रीगोकुलनाथजी श्रीगिरधारीजीटीकेतकेभाई सं० १८२१.
,, ,, श्रीगोवर्धनेसजी छोटेमथुरेसजीवारे सं० १७७७.
,, ७ श्रीव्रजनाथजी श्रीचिमनजीके लालजी सं० १७६१.
,, ८ श्रीगुसांईजीके दुसरे लालजी श्रीगोविंदजी सं० १५९९.
,, ,, श्रीगिरधर लालजी श्रीद्वारिकेसजीसके लालजी सं० १६६२.
,, ९ श्रीलक्ष्मीनृसिंगजी श्रीगोकुल उत्सवजीके लालजी सं० १८९७.
,, ,, श्रीरमनलालजी श्रीविठ्ठलेसजीके दूसरे लालजी सं० १८८५.
,, १० श्रीदामोदरजी श्रीव्रजरत्नजीके लालजी त्रिभंगरायजीवारे सं०१८९९.
,, ११ मथुरानाथजीके प्रथम लालजी सं० १८८१.
,, १२ श्रीनृसिंगजी श्रीमथुरानाथजी सं० १८७३.
,, १३ श्रीगुसांईजीके सातमे लालजी घनस्यामजी सं० १६२८.
,, ,, श्रीव्रजरत्नजी उपनाम श्रीमगनजी सं० १८६७.
,, ,, श्रीवल्लभजी श्रीद्वारिकेसजी भांगनावारेके काका सं० १७७९.
,, १३ श्रीव्रजउत्सवजीके प्रथम लालजी सं० १९०९.

का.व.१४ श्रीगिरधरजी श्रीद्वारिकानाथजीके लालजी सं० १८४७.
,, ,, श्रीमथुरानाथजी श्रीदीक्षितजीके दुसरे लालजी सं० १६६२.
,, ,, श्रीगोकुलनाथजी श्रीपुरुषोत्तमजीके पिता सं० १८२२.
,, ,, श्रीपद्युम्नजी श्रीगोकुलनाथजीके लालजी सं० १८३६.
,, ३० श्रीमुरलीधरजी श्रीदामोदरजीके लालजी सं० १७६०. [१८८९.
,, ,, श्रीकृष्णजी उपनाम श्रीछोटजी श्रीरणछोडजीके लालजी सं० १८५०.
,, ,, श्रीव्रजनंदनजी श्रीलालमणिजीके भाई सं० १७७२.

मारगसिर.

सुद १ श्रीगोकुलनाथजी श्रीमभुजीकेतीसरे लालजी सं० १८००.
,, २ श्रीविठ्ठलनाथजी श्रीगिरधारीजी टीकेतके लालजी सं० १८४४.
,, ,, श्रीव्रजेश्वरजी श्रीगोकुलालंकारजीके लालजी सं० १६८९.
,, ,, श्रीव्रजभुखनजी श्रीगिरधरलालजीके लालजीकेलालजी सं० १७६९.
,, ,, श्रीलछमनजी श्रीदेवकीनंदनजीके लालजी सं० १६७१.
,, ३ श्रीगोविंदरायजीके लालजी श्रीगोपीनाथजी कोटावारे सं० १८३७.
,, ,, श्रीगोकुलनाथजी श्रीबालकृष्णजी आरसीवारेके लालजी सं० १८४७
,, ४ श्रीमुरलीधरजी श्रीदामोदरजीके लालजी सं० १८२९.
,, ,, श्रीद्वारिकेसजी श्रीबालकृष्णजीके लालजी सं० १७६०.
,, ५ श्रीजीवनजी श्रीगोकुलउत्सजीके लालजी सं० १८२५.
,, ६ श्रीगोकुलनाथजी श्रीलछमनजीके लालजी सं० १८८५.
,, ७ श्रीगुसांईजीके चोथे लालजी श्रीगोकुलनाथजी सं० १६०८.
,, ,, श्रीविठ्ठलरायजी श्रीदामोदरजीके लालजी सं० १७९१.
,, ,, श्रीगोवर्धनेसजी श्रीविठ्ठलरायजीके लालजी सं० १८४८.
,, ,, श्रीदेवकीनंदनजी वडे श्रीरघुनाथजीके लालजी सं० १६३४.
,, ,, श्रीव्रजपालजी चाचा गोपेस्वरजीके लालजी सं० १६८९.
,, ,, श्रीगोकुलनाथजी श्रीविठ्ठलनाथजीके लालजी सं० १८९९.
,, ,, श्रीव्रजनाथजी श्रीविठ्ठलनाथजीके लालजी मथुरावारे सं० १८९९.
,, ,, श्रीगोकुलनाथजी श्रीवल्लभजीके लालजी सं० १९०२.
,, ८ श्रीविठ्ठलरायजी श्रीदामोदरजीके लालजी सं० १८२६.
,, ,, श्रीवल्लभजी श्रीजगन्नाथजी मांडवीवारेके भाई सं० १८०६.
,, ९ श्रीलछमनजी श्रीलक्ष्मीनृसिंगजीके लालजी सं० १८५८.
,, ,, श्रीगोकुलउत्सवजीके लालजी सं० १८८३.
,, ,, श्रीमथुरानाथजी श्रीपुरुषोतमजीके लालजी सं० १८४३.

मा. शु श्रीमुरलीधरजी श्रीगोकुलवारे सं० १७८८.
,, ,, श्रीजीवनजी श्रीगोकुलवारे सं० १७७२.
,, ,, श्रीपुरुषोतमजी कल्याणरायजीके पिता सं० १८०६.
,, १० श्रीजीवनजी श्रीव्रजपतिजीके लालजी सं० १८७३.
,, ,, श्रीजयदेवजी श्रीगोपेंद्रजीके दुसरे लालजी सं० १७४९.
,, ,, श्रीव्रजजीवनजी श्रीव्रजपतिजीके छोटेभाई सं० १८३३.
,, ११ श्रीविट्ठलरायजी श्रीकृष्णरायजीके लालजी सं० १८८०. [१६४५.
,, १२ श्रीजमोदानंदजी श्रीरघुनाथजीके लालजी श्रीगुसांईजीके नाती सं०
,, ,, श्रीवल्लभजीके तीसरे लालजी श्रीरामकृष्णजीके नाती सं० १९१६.
,, १३ श्रीगिरधरजी श्रीविट्ठलनाथजीके लालजी सं० १८१४.
,, १४ श्रीद्वारिकेसजी श्रीबालकृष्णजीके लालजी कांकरोलीवारे.
,, १५ श्रीप्रद्युमनजी बडे श्रीव्रजाधीसजीके भाई सं० १७६३.
,, ,, श्रीव्रजाधीसजी श्रीगोवर्धनजीके लालजी सं० १६९७.
,, ,, श्रीगोपालजी श्रीगिरधरजीके पिता सं० १८८२.
,, ,, श्रीजीवनजी श्रीगिरधारीजीके लालजी सं० १७७५.
,, ,, श्रीघनस्यामजी श्रीजदुनाथजीके लालजी सं० १८४१.
,, ,, श्रीद्वारिकेसजी श्रीदामोदरजीके पिता सं० १७७४.
वद १ श्रीव्रजाभरनजी श्रीबालकृष्णजी आरसीवारेके लालजी सं० १८९१.
,, ,, श्रीनथूजीकेलालजी श्रीविट्ठलनाथजी सं० १८८८.
,, २ श्रीमुरलीधरजी श्रीगोविंदजीके लालजी सं० १६९९.
,, ,, श्रीगोकुलनाथजी श्रीमुरलीधरजीके लालजी सं० १८२५.
,, ,, श्रीगिरधरजी श्रीमथुरानाथजीके लालजी सं० १८९४.
,, ३ श्रीरघुनाथजी श्रीव्रजालंकारजीके लालजी कासीवारे सं० १८४५.
,, ,, श्रीगिरधरजी श्रीगोपालजीके लालजी कासीवारे सं० १८४७.
वदी ४ श्रीव्रजालंकारजीके तीसरे लालजी सं० १८४१.
,, ५ श्रीवंसीधरजी श्रीबालकृष्णजीके लालजी स० १८२१.
,, ६ श्रीदामोदरजी श्रीगिरधारीजी टीकायतकेभाई सं० १८२९.
,, ,, श्रीव्रजजीवनजीके लालजी पोरबंदरवारे सं० १८२६.
,, ,, श्रीगोपालजी श्रीकल्याणरायजीके लालजी सं० १९१७.
,, ७ श्रीगोवर्धनजी श्रीवल्लभजीके लालजी सं० १८४८.
,, ,, श्रीकल्याणरायजी बडे श्रीगोविंदरायजीके लालजी सं० १६२७.
,, ८ श्रीत्रिकमजी श्रीबालकृष्णजीके लालजी सं० १७४८. [सं० १५७२.
,, ९ श्रीविट्ठलनाथजी उपनाम श्रीगुसांईजी श्रीमहाप्रभूजीके दुसरे लालजी

मा.व.९ श्रीबालकृष्णजी श्रीगोवर्धनजीके पिता सं० १७८१.
,, ,, श्रीकाकाजीके दूसरे लालजी सं० १८८२.
,, १० श्रीविठ्ठलेसजी श्रीमथुरानाथजीके दूसरे लालजी सं० १८५९.
,, ,, श्रीजयदेवजी श्रीगोपेंद्रजीके दुसरे लालजी सं० १७६९.
,, ११ श्रीगोविंदजी श्रीविठ्ठलरायजीके दुसरे पुत्र सं० १७६९.
,, ,, श्रीगोपीनाथजी श्रीगिरधरजीके पांचमे लालजी सं० १७०७.
,, ,, श्रीगिरधरजी श्रीमथुरानाथजीके लालजी सं १८०६.
,, ,, श्रीकल्याणरायजी श्रीविठ्ठलनाथजीके लालजी सं० १८९५.
,, १२ श्रीगोविंदरायजी श्रीगिरधरजीके भाई सं० १६९७.
,, ,, श्रीव्रजभुखनजी श्रीरघुनाथजीके लालजी सं० १८३९.
,, १३ श्रीजदुनाथजी श्रीवल्लभजीके लालजी सं० १८७८.
,, ,, श्रीगोकुलनाथजी श्रीमथुरानाथजीके लालजी सं० १८२२.
,, ,, श्रीव्रजउत्सवजी रमनजीके लालजी सं० १७१९.
,, १४ श्रीमथुरामलजी श्रीगोपीनाथजीके लालजी सं० १७०४.
,, ,, श्रीविठ्ठलरायजी श्रीव्रजभूखनजीके पिता सं० १८११.
,, ,, श्रीजदुनाथजी श्रीगोकुलनाथजीके लालजी सं० १८२९.
,, ,, श्रीजदुनाथजी श्रीमद्युमनजीके लालजी सं० १६६९.
,, ,, श्रीपुरुषोत्तमजी श्रीचिमनजीके लालजी सं० १७११.
,, ३० श्रीकल्याणरायजी श्रीव्रजनाथजीके लालजी सं० १८२५.

पौससुदी.

सुद १ श्रीरघुनाथजी श्रीव्रजरायजी नटवरजीवारे सं० १८००.
,, ,, श्रीव्रजजीवनजी श्रीगोपीनाथजीके लालजी सं० १८६२.
,, २ श्रीव्रजजीवनजी श्रीगोपीनाथजीके लालजी सं० १८६७.
,, ३ श्रीगोवर्धनजी श्रीगोपोत्सवजीके लालजी सं० १६६८.
,, ४ श्रीव्रजनंदनजी श्रीव्रजालंकारजीके लालजी सं० १७५५.
,, ,, श्रीगोकुलालंकारजी श्रीव्रजेश्वरजीके लालजी सं० १७०७.
,, ५ श्रीव्रजवल्लभजी श्रीव्रजालंकारजीके लालजी सं० १७५७.
,, ६ श्रीदामोदरजी श्रीमोहनजीके लालजी सं० १७१९.
,, ,, श्रीदामोदरजी श्रीमोहनजीके दुसरे लालजी सं० १७२०.
,, ७ श्रीगोपीनाथजी श्रीजगन्नाथजीके लालजी सं० १८३१.
,, ,, श्रीगोपीनाथजी श्रीमुरलीधरजीके लालजी सं० १७१६.
,, ,, श्रीरणछोडजी श्रीकन्हैयालालजीके लालजी सं० १९०८.

माहाव १ श्रीविट्ठलनाथजी श्रीनथूजीके लालजी सं० १८८८.
,, २ श्रीचिमनजी श्रीगिरधारीजी टीकेतके दुसरे लालजी सं० १८५१.
,, ,, श्रीव्रजरायजी बडे श्रीबालकृष्णजीके पिता सं० १६८१.
,, ३ श्रीद्वारिकानाथजी श्रीजगन्नाथजी मांडवीवारे सं० १७९९.
,, ४ श्रीरघुनाथजी श्रीद्वारिकानाथजी भावनावारे सं० १७७४.[१८८२.
,, ५ श्रीमथुरानाथजी श्रीमुरलीधरजीके लालजीके छोटे मथुरेमजी वारे सं०
,, ,, श्रीराजीवलोचनजी श्रीरामकृष्णजीके लालजी सं० १७०४.[१८४४.
,, ६ श्रीगोकुलनाथजी श्रीपुरुषोतमजी ग्यालवारेके चोथे लालजी सं०
,, ७ श्रीगोपालजी श्रीगोपेंद्रजीके लालजी सं० १७७८.
,, ८ श्रीव्रजउत्सवजीके तृतीयलालजी श्रीकाकाजीके नाती सं० १९१३.
,, ९ श्रीव्रजनाथजी श्रीमथुरानाथजीके लालजी सूरतवारे सं० १८९१.
,, १० श्रीगोवर्धनजी श्रीव्रजरत्नजीके लालजी सूरतवारे सं० १८७५.
,, ११ श्रीगोकुलनाथजी श्रीकुंजविहारीजीके लालजी सं० १९१२.
,, १२ श्रीरघुनाथजी श्रीरणछोडजीके लालजी सं० १७३७.
,, ,, श्रीवछाजी श्रीव्रजभुषनजीके लालजी सं० १८९५. [१८५५.
,, १३ श्रीगोपीनाथजी श्रीगिरधारीजी टीकायतके चोथे लालजी सं०
,, ,, श्रीकृष्णरायजी जीवनजीके पिता स० १७४१.
,, ,, श्रीवल्लभजी श्रीगोपालजीके लालजी सं० १६९८.
,, ,, श्रीविट्ठलरायजी बडे श्रीगोकुलनाथजीके लालजी सं० १८४५.
,, १४ श्रीगोकुलाभरणजी श्रीविट्ठलनाथजीके लालजी सेरगढवारेसं० १८१७
,, ३० श्रीविट्ठलरायजी श्रीगोकुलनाथजीके लालजी सेरगढवारे सं० १८१७.

फाल्गुनमास.

सुद १ श्रीव्रजालंकारजी श्रीविट्ठलरायजीके लालजी सं० १७२१.
,, २ श्रीगोपीनाथजी श्रीविठ्ठलनाथजीके लालजी सं० १८१०.
,, ३ श्रीत्रिकमजीके लालजी श्रीगिरधरलालजी जोधपुरवारे सं० १८९८.
,, ४ श्रीव्रजपालजीके मथम लालजी श्रीविट्ठलरायजीके भाई सं० १८७१.
,, ,, श्रीरणछोडजी कासीवारेके मथम लालजी सं० १८४८.
,, ५ श्रीदामोदरजीके लालजी श्रीव्रजनाथजी सं० १८४४ [सं० १७७०.
,, ६ श्रीनथूजी श्रीलक्ष्मीनृसिंगजीके लालजी श्रीकृष्णावेटीजीके पिता
,, ७ श्रीवल्लभजी श्रीद्वारिकेसजीके लालजी श्रीदामोदरजीके छोटेभाई सं
,, ८ श्रीबालकृष्णजी श्री[illegible] सं० १७४०. [१८७८

फा शु ९ श्रीदामोदरजीके लालजीके लालजी श्रीविट्ठलनाथजी सं० १८५३
„ १० श्रीगोपालजी श्रीलछमनजीके लालजी सं० १८५३.
„ ११ श्रीविट्ठलनाथजी श्रीमुरलीधरजीके लालजी सं० १९१३.
„ १२ कुंजविहारीजी श्रीगोपीनाथजीके लालजी चापासेनीवारे सं०१८८१.
„ १३ श्रीव्रजपालजी श्रीकन्हैयालालजीके लालजी सं० १७४१.
„ १४ श्रीमोहनजी श्रीकल्याणरायजीके लालजी सं० १७४२.
„ १५ श्रीगोकुलचंद्रजी श्रीअनुरुद्धजीके लालजी नगरवारे सं० १७०५.
वद १ श्रीगोवर्धनजी मुंबईवारेके पिता श्रीमथुरानाथजी स० १७७१.
„ „ श्रीचिमनजी श्रीव्रजाधीसजीके भाई सं० १७६०.
„ „ श्रीपीतांवरजी वडे श्रीवालकृष्णजीके चोथे लालजी सं० १६३९.
„ २ श्रीगोवर्धनजी श्रीदाऊजी टीकायतके लालजी सं० १८७१.
„ „ श्रीवालकृष्णजी श्रीद्वारिकानाथजीके लालजी सं० १९१३.
„ „ श्रीवंसीधरजी वडे श्रीगोविंदरायजीके लालजी सं० १७०२.
„ „ श्रीरघुनाथजी श्रीघनस्यामजीके लालजी सं० १८१४.
„ ३ श्रीजदुनाथजी जोधपुरवारे वडे श्रीव्रजाधीसजीके पिता सं० १७२५.
„ „ श्रीवल्लभजी श्रीगोपालजीके लालजी सं० १८४३. [सं० १७३२.
„ ४ श्रीजदुनाथजी श्रीपुरुपोतमजीके लालजी वडे श्रीजदुनाथजीके पिता
„ ५ श्रीमोहनजी श्रीदामोदरजीके लालजी सं० १८५१. [१७११.
„ ६ श्रीवावूरायजीश्रीगोविंदरायजीके लालजी श्रीदीक्षितजीके नाती सं०
„ ७ श्रीदामोदरजी श्रीपुरुपोतमजीके लालजी सं० १७६०.
„ ८ श्रीवावूरायजी श्रीविट्ठलेसरायजी लालजी
„ „ श्रीकल्याणरायजी श्रीपुरुपोतमजीके लालजी १८३८.
„ ९ श्रीनथूजी श्रीपुरुपोतमजीके लालजी श्रीजीद्वारवारे सं० १८६१.
„ १० श्रीघनस्यामजी श्रीदेवकीनंदनजीके दूसरे लालजी सं० १८२९.
„ ११ श्रीगोकुलनाथजी श्रीजयदेवजीके दूसरे लालजी सं० १७३१.
„ १२ श्रीगिरधरजी श्रीविट्ठलनाथजीके लालजी श्रीगिरराजवारे सं०
„ „ श्रीदामोदरजी श्रीमुरलीधरजीके लालजी सं० १७२७. [१८३१.
„ „ श्रीगिरधरलालजी श्रीकृष्णरायजीके लालजी सं० १७८७.
„ १३ श्रीव्रजउत्सवजी श्रीकाकाजीके लालजी श्रीगोकुलवारे सं० १८८८.
„ „ श्रीव्रजवल्लभजी श्रीगोपालजीके लालजी सं० १८४९.
„ १४ श्रीव्रजनाथजी वडेश्रीव्रजाधीसजीके लालजी जोधपुरवारे सं० १८८०.
„ ३० श्रीलक्ष्मीनृसिंगजी श्रीगोपीनाथजीके लालजी श्रीगोकुलजीमें मदन मोहनजीवारे सं० १७५०.

माहाव१ श्रीविट्ठलनाथजी श्रीनथूजीके लालजी सं० १८८८.
,, २ श्रीचिमनजी श्रीगिरधारीजी टीकेतके दुसरे लालजी सं० १८५१.
,, ,, श्रीव्रजरायजी वडे श्रीबालकृष्णजीके पिता सं० १६८१.
,, ३ श्रीद्वारिकानाथजी श्रीजगन्नाथजी मांडवीवारे सं० १७९९.
,, ४ श्रीरघुनाथजी श्रीद्वारिकानाथजी भावनावारे सं० १७१४.[१८८२.
,, ५ श्रीमथुरानाथजी श्रीमुरलीधरजीके लालजीके छोटे मथुरेसजी वारे सं०
,, ,, श्रीराजीवलोचनजी श्रीरामकृष्णजीके लालजी सं० १७०४.[१८४४.
,, ६ श्रीगोकुलनाथजी श्रीपुरुषोत्तमजी ख्यालवारेके चोथे लालजी सं०
,, ७ श्रीगोपालजी श्रीगोपेंद्रजीके लालजी सं० १७७८.
,, ८ श्रीव्रजउत्सवजीके तृतीयलालजी श्रीकाकाजीके नाती सं० १९१३.
,, ९ श्रीव्रजनाथजी श्रीमथुरानाथजीके लालजी सूरतवारे सं० १८९१.
,, १० श्रीगोवर्धनजी श्रीव्रजरत्नजीके लालजी सूरतवारे सं० १८७५.
,, ११ श्रीगोकुलनाथजी श्रीकुंजविहारीजीके लालजी सं० १९१२.
,, १२ श्रीरघुनाथजी श्रीरणछोडजीके लालजी सं० १७३७.
,, ,, श्रीवछाजी श्रीव्रजभुखनजीके लालजी सं० १८९५. [१८५५.
,, १३ श्रीगोपीनाथजी श्रीगिरधारीजी टीकायतके चोथे लालजी सं०
,, ,, श्रीकृष्णरायजी जीवनजीके पिता सं० १७४१.
,, ,, श्रीवल्लभजी श्रीगोपालजीके लालजी सं० १६९८.
,, ,, श्रीविट्ठलरायजी वडे श्रीगोकुलनाथजीके लालजी सं० १८४५.
,, १४ श्रीगोकुलाभरणजी श्रीविट्ठलनाथजीके लालजी मेरगढवारेसं० १८९७.
,, ३० श्रीविट्ठलरायजी श्रीगोकुलनाथजीके लालजी सेरगढवारे सं० १८१७.

फाल्गुनमास.

सुद १ श्रीव्रजालंकारजी श्रीविट्ठलरायजीके लालजी सं० १७२१.
,, २ श्रीगोपीनाथजी श्रीविट्ठलनाथजीके लालजी सं० १८१०.
,, ३ श्रीत्रिकमजीके लालजी श्रीगिरधरलालजी जोधपुरवारे सं० १८९८.
,, ४ श्रीव्रजपालजीके प्रथम लालजी श्रीविट्ठलरायजीके भाई सं० १८७१.
,, ,, श्रीरसछोडजी कासीवारेके प्रथम लालजी सं० १८४८.
५ श्रीदामोदरजीके लालजी श्रीव्रजनाथजी सं० १८४४. [सं० १७७०.
श्रीनथूजी श्रीलक्ष्मीनृसिंगजीके लालजी श्रीकृष्णाबेटीजीके पिता
[illegible] श्रीद्वारिकेसजीके लालजी श्रीदामोदरजीके छोटे भाई सं
[illegible] जी सं० १७४०. [१८७८.

पो व ११ श्रीबालकृष्णजी श्रीपुरुषोत्तमजीके लालजी सं० १६९०.[सं०१८०३
„ १२ श्रीगिरधरजी श्रीद्वारिकेसजीके लालजी श्रीत्रिभंगीरायजीवारे
„ १३ श्रीरणछोडजी श्रीअनुरुधजीके लालजी सं० १७८१.
„ १४ श्रीविट्ठलेसजी श्रीदेवकीनंदनजीके लालजी जेपुरवारे सं० १८३१.
„ ३० श्रीगोवर्धनजी श्रीकृष्णरायजीके लालजी बडे श्रीगोविंदरायजीके नाती सं० १६४९.

माहसुदी.

सुद १ श्रीदानीरायजी श्रीजदुनाथजीके लालजी सं० १८५५.
„ „ श्रीगोपीनाथजी श्रीव्रजनाथजीके लालजी सं० १८५७.
„ २ श्रीगोपालजी श्रीवल्लभजी काकाके तीसरे लालजी सं० १७३३.
„ „ श्रीवल्लभजीके तीसरे लालजी श्रीरमनजी सं० १८८२.
„ „ श्रीवल्लभजी श्रीविट्ठलनाथजीके लालजी सं० १७१३.
„ ३ श्रीपुरुषोतमजी श्रीव्रजरत्नजी सुरतवारेके लालजी सं० १८७२.
„ „ श्रीमट्टूजीके लालजी सं० १९०९.
„ ४ श्रीगोवर्धनजी श्रीपुरुषोत्तमजी सुरतवारेके लालजी सं० १७००.
„ ५ श्रीद्वारिकानाथजी श्रीवल्लभजीके लालजी कांकरोली वारे सं०१८७५.
„ „ श्रीविट्ठलनाथजी श्रीव्रजपालजीके लालजी सं० १८७५.
„ ६ श्रीव्रजरायजी श्रीमथुरानाथजीके लालजी ठठावारे सं० १७६८.
„ ७ श्रीपीतांबरजी श्रीमुरलीधरजीके लालजी सुरतवारे सं० १७४९.
„ „ श्रीवल्लभजी श्रीदेवकीनंदनजीके लालजी सं० १६७३. [सं०१८३९.
„ ८ श्रीगोवर्धनेसजी श्रीद्वारिकानाथजीके लालजी श्रीजीद्वारवारे
„ ९ श्रीरणछोडजी श्रीगिरधरजीके लालजी छोटेमथुरेसजीवारे सं०१८५७.
„ „ श्रीमोहनजी श्रीकल्याणरायजीके लालजी सं० १८१७.
„ १० श्रीमथुरानाथजी श्रीमुरलीधरजीके लालजी सं० १७२८.
„ „ श्रीदेवकीनंदनजी श्रीगिरधरजीके लालजी सं० १८७६.
„ ११ श्रीगोपालजी श्रीगोपीनाथजीके लालजी पोरबंदरवारे सं० १८५६.
„ १२ श्रीगोपीनाथजी पोरबंदरवारेके तीसरे लालजी सं० १६९९.
„ १३ श्रीगोपिकाधीसजी श्रीगोवर्धनसेजीके लालजी सं० १६९९.
„ १४ श्रीवल्लभजी श्रीघनस्यामजीके लालजी जेपुरवारे सं० १८६१.
„ १५ श्रीकल्याणरायजीके लालजी श्रीनृसिंगजी सं० १८९५.
„ „ श्रीबंसीधरजी बडे श्रीबाबुरायजीके नाती सं० १७८०.
वद १ श्रीदामोदरजी श्रीविट्ठलरायजीके लालजी बूंदीवारे सं० १८२१.

पो शु.७ श्रीरणछोडजी कासीवारेके भाई श्रीविट्ठलनाथजी सं० १८९२.
,, ८ श्रीद्वारिकानाथजी श्रीलछमनजीके लालजी सं० १८७१.
,, ९ श्रीरणछोडजी मांडवीवारे श्रीचिमनजीके लालजी सं० १७७४.
,, ,, श्रीगोकुलाधीसजी श्रीव्रजवल्लभजीके लालजी सं० १७८७.
,, १० श्रीव्रजसुंदरजी श्रीव्रजालंकारजीके लालजी सं० १६६२.
,, ११ श्रीअनिरुद्धजी श्रीगोवर्धनजीके लालजी सं० १७७९.
,, ,, श्रीगिरधरलालजी श्रीद्वारिकानाथजीके लालजी सं० १७७९.
,, १२ श्रीगिरधरलालजी श्रीप्रभुजीके लालजी कोटावारे सं० १७१२.
,, १३ श्रीकल्याणरायजी श्रीलक्ष्मीनृसिंगजीके लालजी सं० १६९१.
,, १४ श्रीगोपीनाथजी वडे श्रीवल्लभजी काकाके पांचमे लालजी सं०१७३१.
,, ,, श्रीव्रजपालजी श्रीपुरुषोतमजी ख्यालवारेके लालजी सं० १८३९.
,, १५ श्रीगोकुल उत्सवजी श्रीमुरलीधरजीके लालजी सं० १८११.
वद १ श्रीव्यंकटेसजी श्रीकल्याणरायजीके लालजी सं० १७८४.
,, २ श्रीप्रभुजीश्रीगोपीनाथजीके लालजी श्रीमथुरामलजीके भाईसं०१७७१.
,, ,, श्रीपुरुषोतमजी श्रीव्रजपालजीके लालजी श्रीमथुराजीवारे सं०१८१८.
,, ,, श्रीवंसीधरजी श्रीगोवर्धनजीके लालजी सं० १८३०.
,, ३ श्रीवल्लभजी श्रीदीक्षितजीके लालजी मथुरेसजी वारे सं० १६६०.
,, ४ श्रीजीवनजी श्रीव्रजालंकारजीके लालजी सं० १७५२.
,, ५ श्रीरघुनाथजी श्रीलछमनजीके लालजी सं० १८३६.
,, ,, श्रीवल्लभजी श्रीगोवर्धनेसजी नगरवारे सं० १७६३.
,, ,, श्रीरणछोडजी उपनाम श्रीचीगडमलजी सं० १७७१.
,, ,, श्रीकृष्णरायजी वडे श्रीगोविंदरायजीके लालजी सं० १६३७.
,, ,, श्रीरघुनाथजी श्रीपुरुषोत्तमजीके लालजी सं० १८५१.
,, ६ श्रीगोपीनाथजी श्रीगिरधरजीके लालजी सं० १६३४.
,, ७ श्रीगोपीनाथजी श्रीजगन्नाथजीके लालजी मांडवीवारे सं० १८३१.
,, ,, श्रीगोविंदजी श्रीमुरलीधरजीके लालजी सं० १७६६.
,, ८ श्रीगोकुलालंकारजीके लालजी श्रीहरिरायजीके घरके सं० १६८३.
,, ,, श्रीरणछोडजी श्रीजगन्नाथजीके लालजी सं० १८२८.
,, ,, श्रीदामोदरजी टीकायत श्रीगिरधारीजीके लालजी सं० १७११.
,, ९ श्रीलालमणिजी श्रीलक्ष्मीनृसिंगजीके लालजी सं० १८६२.
,, १० श्रीमथुरानाथजी श्रीमुरलीधरजीके लालजी सं० १७५६.
,, ,, श्रीगोवर्धनजी श्रीमथुरानाथजीके लालजी सं० १६६२.
,, ,, श्रीगोपालजी श्रीगोकुलनाथजीके लालजी सं० १७२९.

फा.शु ९ श्रीदामोदरजीके लालजी श्रीविट्ठलनाथजी सं० १८९३
,, १० श्रीगोपालजी श्रीलछमनजीके लालजी सं० १८९१.
,, ११ श्रीविट्ठलनाथजी श्रीमुरलीधरजीके लालजी सं० १७१३.
,, १२ कुंजविहारीजी श्रीगोपीनाथजीके लालजी चापासेनीवारे सं०१८८१.
,, १३ श्रीव्रजपालजी श्रीकन्हैयालालजीके लालजी सं० १७४१.
,, १४ श्रीमोहनजी श्रीकल्याणरायजीके लालजी सं० १७४२.
,, १५ श्रीगोकुलचंद्रजी श्रीअनुरुधजीके लालजी नगरवारे सं० १७०५.
वद १ श्रीगोवर्धनजी मुबईवारेके पिता श्रीमथुरानाथजी सं० १७७१.
,, ,, श्रीचिमनजी श्रीव्रजाधीसजीके भाई सं० १७६०.
,, ,, श्रीपीतांबरजी वडे श्रीबालकृष्णजीके चोथे लालजी सं० १६३९.
,, २ श्रीगोवर्धनजी श्रीदाऊजी टीकायतके लालजी सं० १८७१.
,, ,, श्रीबालकृष्णजी श्रीद्वारिकानाथजीके लालजी सं० १९१३.
,, ,, श्रीवंसीधरजी वडे श्रीगोविंदरायजीके लालजी सं० १७०२.
,, ,, श्रीरघुनाथजी श्रीघनस्यामजीके लालजी सं० १८१४.
,, ३ श्रीजदुनाथजी जोधपुरवारे वडे श्रीव्रजाधीसजीके पिता सं० १७२५.
,, ,, श्रीवल्लभजी श्रीगोपालजीके लालजी सं० १८४३. [सं० १७३२.
,, ४ श्रीजदुनाथजी श्रीपुरुषोतमजीके लालजी वडे श्रीजदुनाथजीके पिता
,, ५ श्रीमोहनजी श्रीदामोदरजीके लालजी सं० १८९१. [१७११.
,, ६ श्रीवावूरायजीश्रीगोविंदरायजीके लालजी श्रीदीक्षितजीके नाती सं०
,, ७ श्रीदामोदरजी श्रीपुरुषोतमजीके लालजी सं० १७६०.
,, ८ श्रीवावूरायजी श्रीविठ्ठलेसरायजी लालजी
,, ,, श्रीकल्याणरायजी श्रीपुरुषोतमजीके लालजी १८३८.
,, ९ श्रीनथूजी श्रीपुरुषोतमजीके लालजी श्रीजीद्वारवारे सं० १८६१.
,, १० श्रीघनस्यामजी श्रीदेवकीनंदनजीके दूसरे लालजी सं० १८२९.
,, ११ श्रीगोकुलनाथजी श्रीजयदेवजीके दूसरे लालजी सं० १७३१.
,, १२ श्रीगिरधरजी श्रीविट्ठलनाथजीके लालजी श्रीगिरराजवारे सं०
,, ,, श्रीदामोदरजी श्रीमुरलीधरजीके लालजी सं० १७२७. [१८३१.
,, ,, श्रीगिरधरलालजी श्रीकृष्णरायजीके लालजी सं० १७८७.
,, १३ श्रीव्रजउत्सवजी श्रीकाकाजीके लालजी श्रीगोकुलवारे सं० १८८८.
,, ,, श्रीव्रजवल्लभजी श्रीगोपालजीके लालजी सं० १८४९.
,, १४ श्रीव्रजनाथजी वडे श्रीव्रजाधीसजीके लालजी जोधपुरवारे सं० १८८०.
,, ३० श्रीलक्ष्मीनृसिंगजी श्रीगोपीनाथजीके लालजी श्रीगोकुलजीमें मदन मोहनजीवारे सं० १७५०.

माहाव१ श्रीविट्ठलनाथजी श्रीनथूजीके लालजी सं० १८८८.
" २ श्रीचिमनजी श्रीगिरधारीजी टीकैतके दुसरे लालजी सं० १८५१.
" " श्रीव्रजरायजी वडे श्रीवालकृष्णजीके पिता सं० १६८१.
" ३ श्रीद्वारिकानाथजी श्रीजगन्नाथजी मांडवीवारे सं० १७९९.
" ४ श्रीरघुनाथजी श्रीद्वारिकानाथजी भावनावारे सं० १७७४.[१८८२.
" ५ श्रीमथुरानाथजी श्रीमुरलीधरजीके लालजीके छोटे मथुरेसजी वारे सं०
" " श्रीराजीवलोचनजी श्रीरामकृष्णजीके लालजी सं० १७०४.[१८४४.
" ६ श्रीगोकुलनाथजी श्रीपुरुषोत्तमजी ख्यालवारेके चोथे लालजी सं०
" ७ श्रीगोपालजी श्रीगोपेंद्रजीके लालजी सं० १७७८.
" ८ श्रीव्रजउत्सवजीके तृतीयलालजी श्रीकाकाजीके नाती सं० १९१३.
" ९ श्रीव्रजनाथजी श्रीमथुरानाथजीके लालजी सूरतवारे सं० १८९१.
" १० श्रीगोवर्धनजी श्रीव्रजरत्नजीके लालजी सूरतवारे सं० १८७५.
" ११ श्रीगोकुलनाथजी श्रीकुंजविहारीजीके लालजी सं० १९११.
" १२ श्रीरघुनाथजी श्रीरणछोडजीके लालजी सं० १७३७.
" " श्रीवछाजी श्रीव्रजभुखनजीके लालजी सं० १८९५. [१८५५.
" १३ श्रीगोपीनाथजी श्रीगिरधारीजी टीकायतके चोथे लालजी सं०
" " श्रीकृष्णरायजी जीवनजीके पिता सं० १७४१.
" " श्रीवल्लभजी श्रीगोपालजीके लालजी सं० १६९८.
" " श्रीविट्ठलरायजी वडे श्रीगोकुलनाथजीके लालजी सं० १८४५.
" १४ श्रीगोकुलाभरणजी श्रीविट्ठलनाथजीके लालजी सेरगढवारेसं० १८१७.
" ३० श्रीविट्ठलरायजी श्रीगोकुलनाथजीके लालजी सेरगढवारे सं० १८१७.

फाल्गुनमास.

सुद १ श्रीव्रजालंकारजी श्रीविट्ठलरायजीके लालजी सं० १७२१.
" २ श्रीगोपीनाथजी श्रीविट्ठलनाथजीके लालजी सं० १८१०.
" ३ श्रीत्रिकमजीके लालजी श्रीगिरधरलालजी जोधपुरवारे सं० १८९८.
" ४ श्रीव्रजपालजीके प्रथम लालजी श्रीविट्ठलरायजीके भाई सं० १८७१.
" " श्रीरणछोडजी कासीवारेके प्रथम लालजी सं० १८४८.
" ५ श्रीदामोदरजीके लालजी श्रीव्रजनाथजी सं० १८४४ [सं०१७७०.
" ६ श्रीनथूजी श्रीलक्ष्मीनृसिंगजीके लालजी श्रीकृष्णाबेटीजीके पिता
" ७ श्रीवल्लभजी श्रीद्वारिकेसजीके लालजी श्रीदामोदरजीके छोटेभाई सं
" ८ श्रीवालकृष्णजी श्रीगोकुलनाथजीके लालजी सं० १७४०.[१८७८.

श्रीगोकुलनाथजीके वचनामृतम् व्रजके माससूं देखनो. तीज तेरस एक ओर पांचम पून्यो एक. चौदस अमावस तजनी. यावचनामृतपें विश्वास राखिकें प्रयाण करे तो मनोरथ सिद्ध होय.

पो.	मा.	फा.	चै.	वै.	जे.	आषा	श्रा.	भा.	आसो	का.	मा.	
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	वहोत सुख होय, क्लेश न होय, अर्थ पूर्ण होय.
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	महाभारत होय, अशुभ, जीवनाश होय.
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	अर्थ पूर्ण होय, मनोरथ सिद्ध होय, कामना पूर्ण होय.
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	क्लेश होय, जीवनाश होय, कुशलसूं घर नहिं आवे.
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	वस्तुलाभ होय, मित्र मिले, व्याधि मिटे. लाभ होय.
६	७	.८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	महाचिंता होय, वियोग होय, कदाचित् घर आवे.
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	सौभाग्य पावे, रत्नसहित भलीभातिसूं घर आवे.
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	मिलवो न होय, वहोत बूरो होय, जीवनाश होय, दुःखपावे.
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	आशा पूर्ण होय, सौभाग्य पावे, कामना सिद्ध होय.
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	सौभाग्य पावे, दिन वहोत लगे, कुशलसें घर आवें.
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	क्लेश होय, जीवनाश नहिं, सौभाग्य पावे नहिं.
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	मार्गमें सिद्धि होय,मित्रमिळे, विघ्न मिटे, धनको शीघ्र लाभ होय.

बृहत्स्तोत्रसरित्सागर भाग २ रो. संस्कृत.

गोस्वामीवर्य श्रीदेवकीनंदनाचार्यजीके असल फोटोग्राफके चित्र समेत.

और पांच गोस्वामी बालकनकी सम्मतियुक्त अपूर्व ग्रंथ

जामें श्रीवल्लभाचार्यसंप्रदायके नित्य पाठ करवेके, शास्त्रार्थके, वादके, ओर धर्मशास्त्रके मिल २१७ अपूर्व ग्रंथनको शोधनपूर्वक समावेश करवेमें आयो है एसो अपूर्व ग्रंथ आजतक नहि छप्यो. कि० रु. १ ट. ख. ०।० (नीचे अनुक्रमणिका बांचो) यामेंते कोई ग्रंथ न्यारो न मिलेगो.

(अथ बृहत्स्तोत्रसरित्सागरे द्वितीयभागस्यानुक्रमणिका.)

श्रीवल्लभाचार्यकृतग्रंथाः

श्रीकृष्णजन्मपत्रिका.
पुरुषोत्तमनामसहस्रम्.
यमुनाष्टकम्.
बालबोधः
सिद्धांतमुक्तावली.
पुष्टिप्रवाहमर्यादाभेदः
सिद्धांतरहस्यम्
नवरत्नस्तोत्रम्
अंतःकरणप्रबोधः.
विवेकधैर्याश्रय.
कृष्णाश्रयः.
चतुःश्लोकी.
भक्तिवर्धिनी.
जलभेदः.
पंचपद्यानि.
संन्यासनिर्णयः
निरोधलक्षणम्
सेवाफलम्.
सेवाफलविवरणम्.
परिवृढाष्टकम्
श्रीमधुराष्टकम्.
तत्वदीपनिबंधस्य १ प्रथम-
शास्त्रार्थप्रकरणम्
पत्रावलंबनम्
श्रीभागवतैकादशस्कधार्थ
निरूपणकारिका.
श्रीकृष्णप्रेमामृतम्.
श्रीनंदकुमाराष्टकम्.
श्रीगिरिराजधार्यष्टकम्.
श्रीकृष्णाष्टकम्
श्रीगोपीजनवल्लभाष्टकम्
पंचश्लोकी.
न्यासादेशः.
श्रीमद्भागवतदशमस्कंधा-
नुक्रमणिका.
गायत्रीभाष्यम्.
गायत्र्यव्याख्या.
त्रिविधलीलानामावली.
श्रुतिगीता.
पूर्वमीमांसाकारिकाः.
श्रीभगवत्पीठिका.
सुबोधिनीप्रथमस्कंध-
कारिका.
शिक्षाश्लोकाः.
श्रीवल्लभाचार्याणांजन्म
पत्रिका.

श्रीविठ्ठलेश्वर (गुंसाईजी) कृतग्रंथाः

श्रीमंगलाचरणम्
श्रीसर्वोत्तमस्तोत्रम्
श्रीवल्लभाष्टकम्.
मंगलार्तिकार्या.
पर्यंकः (पालनों)
राजभोगार्तिकार्या.
संध्यार्तिकार्या.
शयनार्तिकार्या.
स्फुरत्कृष्णप्रेमामृतस्तोत्रं
यमुनाष्टपदी.
भुजंगप्रयाताष्टकम्.
राधाप्रार्थनाचतुःश्लोकी.
श्रीगोकुलाष्टकम्
अष्टाक्षरनिरूपणम्
ललितत्रिभंगस्तोत्रम्
आत्मसुतेभ्यः पत्रम्
विज्ञप्तिः
भक्तचर्याष्टपदी.
श्रीस्वामिनीप्रार्थना.
श्रीस्वामिन्यष्टकम्
श्रीस्वामिनीस्तोत्रम्
दानलीलाष्टकम्.
रससर्वस्वम्
शृंगाररसमंडनस्यप्रथम०
स्वप्नदर्शनम्
प्रबोधः.
गुप्तरसः.
रक्षास्मरणम्
वृत्तचतुःश्लोकी.
द्वितीया चतुःश्लोकी.
नव विज्ञप्तयः
द्वितीयः पर्यंकः (पालनों)
श्रीविठ्ठलेश्वरस्यजन्मपत्रि.

श्रीरघुनाथजीकृतग्रंथाः

श्रीमद्वल्लभभुजंगप्रयाता०
विठ्ठलेशस्तवः.
श्रीविठ्ठलेशाष्टकम्.
षड्वीस्तुस्तव..
नामरत्नाख्यस्तोत्रम्.
नामचिंतामणिस्तोत्रम्.
श्रीगोकुलेशाष्टकम्
श्रीगिरिधार्यष्टकम्.
श्रीकृष्णचंद्राष्टकम्.
गोपालस्तवः.
राधिकास्तोत्रम्.
श्रीयमुनाष्टकम्
नामकौस्तुभाख्यस्तोत्रम्

द्वि. श्रीरघुनाथजीकृतग्रंथाः

श्रीविठ्ठलस्तोत्रम्
श्रीकृष्णशरणाष्टकम्.
राधाकृष्णाष्टकम्.

श्रीहरिरायजीकृतग्रंथाः

प्रातःस्मरणम्.
श्रीगुर्वष्टकम्
श्रीनवनीतप्रियाष्टकम्.
जन्मवैफल्यनिरूपणाष्टक
कामाख्यदोषविवरणम्.
वल्लभशरणाष्टकम्.
श्रीनिजाचार्याष्टकम्.
श्रीवल्लभपंचाक्षरस्तोत्रम्.
श्रीवल्लभभावाष्टकम्
द्वि० श्रीवल्लभभावाष्टकम्.
श्रीवल्लभचरणविज्ञप्तिः
दैन्याष्टकम्
विज्ञप्तिः.
श्रीमहाप्रभोरष्टोत्तरशतना-
मावलिः
हाहादैन्याष्टकम्
स्वस्वामिपाणिगुलाष्टकम्
श्रीविठ्ठलेश्वराष्टोत्तरशतना-
मावलिः
भुजंगप्रयाताष्टकम्.
स्वप्रभुस्वरूपनिरूपणाष्टकं
गोपीजनवल्लभाष्टकम्
द्वि० गोपीजनवल्लभाष्टकम्
स्मरणाष्टकम्.
श्रीकृष्णशरणाष्टकम्.
द्वि० श्रीकृष्णशरणाष्टकम्.

सम्मतियुक्त आज्ञापत्र.

वामी श्रीगोविंदात्मजश्रीदेवकीनंदनाचार्यजी, टीकेत श्रीकाँमवनवारे.
गोस्वामी श्रीगिरिधरात्मजश्रीजीवनलालजी, टीकेत श्रीकाशीजीवारे.
गोस्वामी श्रीवल्लभात्मजश्रीजीवनेशाचार्यजी, श्रीपोरबंदरवारे.
गोस्वामी श्रीद्वारकानाथजीसुतश्रीविट्ठलेशजी, श्रीपोरबं-
दरवारे. गोस्वामी श्रीचिमनलालात्मजश्रीवनःश्या-
मलाल, मुंबईवारे.

श्रीवल्लभाचार्य संप्रदायके समस्तज्ञातके वैष्णवनकों हमारी एसी आज्ञा हे. जो
जकाल अपनें संप्रदायके बोहोत प्राचीनग्रंथ लेखकदोषसों अशुद्ध होय कोई के बाँचि-
देखिवेमें के बाँचिवेमें भी आवें नहींहें तातें अपूर्व संस्कृत ग्रंथनको नष्ट होते देखिकें
परिश्रमसों उपलब्धकर द्रव्यद्वारा शास्त्रीनपे शुद्ध करवाय उत्तम कागदपे सुशो-
त टाईपके अक्षरनसूं सर्वमें श्रेष्ट छापेखाँनेमें छपवाय प्रसिद्ध करिवेको महादुर्घट काँम
णवश्रेष्ठ लक्ष्मीदासके चिरंजीव गोवर्धनदासभाई प्राचीन ग्रंथप्रकाशकनें धर्माभिमा-
नों माथे उठायो हे. वामें अवश्य नित्य पाठ करिवेके, शास्त्रार्थके, ओर निर्णयके मिलिकें
१७ ग्रंथ एकही पुस्तकमें प्रसिद्ध करे हे. यह कार्य बोहोतही स्तुतिपात्र हे. कारण,
अशुद्ध लिखेभये ग्रंथ बोहोतसे दाँमसों फुटकर लेवेसुं कल्पवृक्ष जेसे एकही ग्रंथके
प्रहसों सबही गरज पुरी पडसके जा ग्रंथको, नाम विन्ने "बृहत्स्तोत्रसरित्सागरको
तृतीयभाग" एसो राख्यो हे. वो हमनें तपास देखतें व्यवस्था बोहोतही अच्छी करिवेमें
ाइहे. मेंहेंनत देखतें इन्ने राखीभई न्योछावर रु० ३ तीन कछु बढती नहीं हे. मुंबईते
हार मंगायवेवारेकों टपालखर्च न्यारो ठीकही हे. तातें जिन गृहस्थनकों लिखतें बाचतें
आवतो होय उनहूँकूं दूसरेकेपास बँचवायकें सुनिवेकेलिये यह श्रीकृष्णमयग्रंथ अपनें
र हृदय पवित्र करिवेकेताँई ओर देहके सार्थकके लिये अवश्य संग्रहमें राखनों. एसे एकत्र
त्नसंग्रहको ग्रंथ आजदिनताँईमें कोईनेंभी छपाय प्रसिद्ध कियो नहींहे. तातें ऐसे उत्तम
रिश्रमको फल प्रभु या ग्रंथप्रकाशककों अवश्य देओ. या ग्रंथको अवश्य संग्रह करि-
की हम साँचे प्रेमभावपूर्वक समस्त वैष्णवनको भलामन करें हें. जासुं प्रसिद्धकरिवेवारकूं
त्तिजन मिल अपनें धर्मके नष्ट होते ग्रंथनको जीर्णोद्धार होय. ओर अन्यहू अनेक ग्रंथ
सिद्ध करिवेकी उमेद बढे. या गृहस्थके आडीसो आजताँईमे जो जो प्राचीन ग्रंथ प्रसिद्ध
रिवेमें आये हें सो सर्व उत्तम होयवेसूं अवश्य संग्रह करिवेलायक हें. ओर यापाछे हूं
अपनों येही प्रयत्न हमेशा शुरूहि राखेंगे. ओर इनके हाथसुं उत्तमोत्तम ग्रंथ प्रसिद्ध
ायगे एसी पूर्ण आशा हे. एसे सदुद्योगकरके आनंदित होय या गृहस्थको धन्यवाद-
क यह सम्मतियुक्त आज्ञापत्र हमनें दियो हे. संवत् १९४८ ज्येष्ट, भाद्रपद,
आश्विन, मुकाम भावनगर ओर मुंबई.

सम्मतिपत्रमिदम्.

❀ (श्रीगोकुलेन्दुर्जयतितराम्) ❀

गोस्वामी श्रीगोविंदत्मज श्रीदेवकीनंदनाचार्यः ।

गोस्वामीजी श्री ६ गोविंदात्मज श्रीदेवकीनंदनाचार्य कॉ
वननिवासीके आडीसों यह सम्मति युक्त आज्ञापत्र दियो हे जो य
वंशीय भाटियाज्ञातीय श्रेष्ठ ठक्कर लक्ष्मीदासात्मज गोवर्धनदासभा
इन्ने जो वर्तमाँनकालकों अनुसरके हरएक तन्हेके प्राचीन ग्रन्
नको जीर्णोद्धार होयवेके लिये अतिपरिश्रमसों पुरातनपुस्तक उप
लब्धकर शुद्धकरवायकें छपवाय प्रसिद्ध करवेको स्तुतिपात्रका
माथें उठायो हे । वामेंके इन्ने आजपर्यन्त मुद्रित कियेभये ग्रन्थ हमने
अवलोकन किये हैं । सो अत्युत्तम संग्रहकरवेके योग्य हैं । ओर
आश्रय मिलेसूँ उत्तमोत्तम ग्रन्थ जो नष्ट होतेजाँय हे उनको पुन
रुज्जीवन इनके हस्तसों होयवेको संभव हे या बातसों हम अत्यन्त
प्रसन्न होय या उत्तमकार्यकों प्रशंसनीय और वर्णनीय जाँनि
समस्त वैष्णव और इतर विद्वान् लोगनकों यह भलामन करेंहें जो
या गृहस्थके सदुद्योगकों इनके छपवायेभये पुस्तक खरीद अवश्य
आश्रय देनों उचितहे । कारण कुलीनपिताके गर्भश्रीमन्त पुत्रकों
अल्पावस्थामें विश्वासघाती लोगननें स्वाहितार्थ जालमें फसाय लक्षा
वधि रुपैयानकी दोलत डुबोय दीनीं । तोहु इन्ने शान्तवृत्तिसूँ स्वधर्मकी
दृढता राख संकटकों ईश्वरीतंत्र माँनिकें संतोषयुक्त आर्यधर्मकी
रक्षाको सर्वोत्कृष्टोद्योग हातमें लियो हे । तातें इनकी धर्ममें प्रवृत्ति
पवित्रबुद्धि ओर धर्मकार्यमें दक्षता देख वहोत प्रसन्नतापूर्वक या गृह
स्थकों धन्यवाद दे यह सम्मतियुक्त आज्ञापत्र दियो हे । किमधिकमिति
शम् । भाद्रपद कृष्ण ५ भृगुः । संवत् १९४६ बंबई (सही आंग्ललिपि
") हस्ताक्षराँणि श्रीक्षेत्र वटेश्वरनिवासिनो वासुदेवशास्त्रिणः सन्ति